# खुतबाते मुहर्रम

लेखक
फकीहे मिल्लत मुफ़्ती
जलालुददीन अहमद अमजदी

मुहर्रम के लिए 12 बयानात का मजमूआ

# ख़ुतबाते मुहर्रम


**लेखक**

फ़क़ीहे मिल्लत

मुफ़्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी

रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह

**संस्थापक**— मर्कज़ तर्बियते इफ़ता दारुल उलूम अमजदिया

अरशदुल उलूम ओझागंज, ज़िला बस्ती (यू. पी.)


**प्रकाशक**

**कुतुब ख़ाना अमजदिया**

425/7, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली-6

नाम किताब :—— **ख़ुतबाते मुहर्रम**

लेखक :——फ़क़ीहे मिल्लत मुफ़्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी
(रहमतुल्लाहि तआला अलैह)

पृष्ठ :—— 608

पहला एडीशन :—— 1432 हि0 मुताबिक़ 2011 ई0

मूल्य :—— **.200=00**

प्रकाशक :—— **कुतुब ख़ाना अमजदिया, दिल्ली-६**

मिलने का पता

# कुतुब ख़ाना अमजदिया

425/7, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली-6
Phone & Fax: 011-23243187, Mob: 9136469264
E-mail: kkamjadia@yahoo.co.uk
Website: www.kutubkhanaamjadia.com

## *शर्फ़े इन्तिसाब*

फर्ज़न्दे रसूल जिगर गोश-ए-बतूल सैय्यिदुश शुहदा हज़रते
**इमाम हुसैन** रज़ियल्लाहु तआला अन्हु
और उन तमाम मुसलमानों के नाम
जिन्हों ने दीन की हिफाज़त के लिये
ख़ुलूस के साथ अपना ख़ून या पसीना बहाया।

*और*

बिरादरे गिरामी जनाब **निज़ामुद्दीन** अहमद मरहूम
के नाम जो मेरी दस्तार बन्दी से आठ साल क़ब्ल
मुझे आलिमे दीन बनाने की तमन्ना लेकर
दुनिया से रुख़्सत हो गए।
**ख़ुदावन्दे कुद्दूस** उनकी क़ब्र को अनवार व तजल्लियात से
मामूर फरमाए। आमीन

जलालुद्दीन अहमद अमजदी

# खुत्बाते मुहर्रम मुन्द्रजा ज़ैल किताबों से तैयार की गई है

| कुरआने मजीद | शर्ह अक़ाइद नसफी | असदुल ग़ाबह | कामिल इब्ने असीर |
|---|---|---|---|
| तफ्सीरे कबीर | दुर्रे मुख़्तार | इसाबा फी तम्यीज़िस सहाबा | बिदाया निहाया |
| तफ्सीर रूहुल बयान | रद्दुल मुहतार | ख़साइसे कुबरा | तारीख़े तबरी |
| तफ्सीरे ख़ाज़िन | शर्हे विक़ाया | हुज्जतुल्लाहि अलल आलमीन | वफाउल वफा |
| तफ्सीर मआलिमुत तंज़ील | उम्दतुर रिआया | अश्शर्फुल मोअब्बद | तारीखुल खुलफा |
| तफ्सीराते अहमदिया | मराक़िउल फलाह | बरकाते आले रसूल | सवाइक़े मुहर्रक़ा |
| तफ्सीर ख़ज़ाइनुल इरफ़ान | फतावा आलमगीरी | अश्र-ए-मुबश्शरा | नूरुल अबसार |
| बुख़ारी शरीफ | फतावा अज़ीज़िया | करामाते सहाबा | नुज़्हतुल मजालिस |
| मुस्लिम शरीफ | फतावा रज़विय्यह | सियरुस् सहाबियात | रौज़तुश् शुहदा |
| तिर्मिज़ी शरीफ | बहारे शरीअत | तोहफए अस्ना अशरिया | सवानेहे करबला |
| अबू दाऊद शरीफ | तंज़ीहुल मकानतुल हैदरिया | अद्दौलतुल मक्किया | शामे करबला |
| मिश्कात शरीफ | हक्कुल् ऐब | अन्नाहिया | नक़्शे वफा |
| मोअत्ता इमाम मुहम्मद | अअ्ज़बुल इमदाद | अमीरे मुआविया पर एक नज़र | शर्हुस् सुदूर |
| अनवारुल हदीस | अल-इंतिबाह | गुन्यतुत् तालिबीन | फज़ाइले मदीना |
| ऐनी शर्हे बुख़ारी | हुज्जते दाहिरा | कश्फुल महजूब | अल-मलफ़ूज़ |
| मिर्क़ात शर्हे मिश्कात | नसीमुर रियाज़ | मक्तूबात इमामे रब्बानी | इश्क़ की सरफराज़ी |
| अश्अ़तुल् लमआ़त | मदारिजुन नुबुव्वत | महबूबे यज़दानी | इस्तिक़ामत |
| शर्ह फिक़्हे अक्बर | शवाहिदुन नुबुव्वत | मसनवी मौलाना रूम | |

# फेहरिस्त मज़ामीन

# निगाहे अव्वलीं

मुहर्रम शरीफ की मजालिस का सिलसिला साल-बसला बढ़ता ही जा रहा है कि अब शहरों के अलावा देहातों में भी इस तरह के प्रोग्राम आम होते जा रहे हैं जिन में बारह रोज़ मुसलसल एक ही स्टेज पर बयान करने के लिय नए मुक़र्रिरीन को सख़्त दुश्वारियां पेश आ रही हैं।

इस लिये अरसे से एक ऐसी किताब की शदीद ज़रूरत महसूस की जा रही थी जो मुस्तनद रिवायात पर मुश्तमिल होने के साथ बारह वअ़ज़ों का मज्मूआ़ हो ताकि मुक़र्रिरीन ग़ैर मोअ़तबर रिवायात बयान करने से बचें और बारह रोज़ मुसलसल वअ़ज़ कहने पर आसानी के साथ क़ादिर हो सकें।

और साथ ही सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम, खुलफाए अरबा, हज़रत अमीर मुआ़विया, हज़रत इमाम हसन और सय्यिदुश-शुहदा हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम अज्मईन पर बद-मज़्हबों की तरफ से किये गए एतराज़ात के मुदल्लल जवाबात भी हों ताकि अवाम और बाज़ ख़्वास भी जो इन हज़रात की जानिब से ग़लत फहमी में मुब्तला कर दिये गए हैं वह गुमराह होने से बचें और अपनी आक़िबत को बरबाद होने से बचायें।

इन ज़रूरतों के पेशे नज़र हम ने क़लम उठाया, दर्सो-तदरीस और दीगर ज़रूरी कामों से वक़्त निकाल कर थोड़ा-थोड़ा लिखा यहां तक कि अल्हम्दु लिल्लाह किताब मुकम्मल हो गई और किताबत वग़ैरा की बड़ी बड़ी परेशानियों से गुज़रने के बाद ज़ेवरे तबा से आरास्ता होकर आप के हाथों में पहुंची।

अगरचे मैं इस तरह की किताब लिखने का अहल नहीं था इस लिये कि तक़्रीरी किताब लिखने के लिये मुसन्निफ को अदीब होना चाहिये और मुफ्ती उमूमन अदीब नहीं होते। फत्वा नवीसी में अदबी अल्फाज़ से एहतराज़ करते हैं इस तरह मा-फिज़्ज़मीर को मुख़्तसर और जामेअ़ अल्फाज़ में अदा करने के आदी हो जाते हैं।

लेकिन जो लोग कि इसके अहल हैं जब उन्हों ने इस तरफ तवज्जोह नहीं की तो हमें मजबूरन इस के लिये क़लम उठाना पड़ा। और किसी तरह किताब मुकम्मल करके हम ने क़ौम के सामने पेश कर दिया। लिहाज़ा जो लोग अदबी अल्फाज़ या बाज़ारी बातों के शाइक़ हैं उनकी तिश्नगी इस किताब से दूर न होगी। सिर्फ ठोस मज़ामीन और मुस्तनद रिवायात व वाक़िआत तलाश करने वालों के लिये बेइन्तिहा मुफीद साबित होगी और हत्तल इम्कान मुशकिल अल्फाज़ लिखने से भी बचने की कोशिश की गई है ताकि औरतें और कम पढ़े लिखे लोग भी ज़्यादा से ज़्यादा इस किताब से फायदा उठा सकें।

किताब के आख़िर में हम ने अपने हालात भी दर्ज कर दिये हैं जो बहुत सी मुफीद मज़्हबी और दीनी मालूमात पर मुशतमिल हैं। उनका भी ज़रूर मुतालआ करें।

नबी के अलावा दुनिया में कोई बड़ा से बड़ा इल्म वाला ऐसा नहीं हुआ है कि जिसे बोलने या लिखने में कहीं लग़ज़िश न हुई हो तो बहुत मुमकिन है कि इस किताब की तरतीब में कहीं हमारा क़लम भी बहक गया हो। इस लिये अहले इल्म से गुज़ारिश है कि अगर इस में कोई ग़लत बात नज़र आए तो लोगों में इस किताब की अहमियत न घटायें बल्कि बज़रिये तहरीर हम को मुत्तला करें ताकि नए एडीशन में उसकी तस्हीह कर दी जाए।

अज़ीज़े गिरामी हज़रत मौलाना गुलाम अब्दुल क़ादिर साहब अलवी साहिबज़ादा शुऐबुल औलिया हज़रत शाह मुहम्मद यार अली साहब क़िब्ला रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह ने इस किताब का अक्सर हिस्सा पढ़ा और मुफीद मशवरा दिया।

और जनाब मौलाना क़ाज़ी अताउल हक़ साहब उस्मानी गोंडवी की याद देहानी से किताब में बाज़ अहम मज़ामीन का इज़ाफा हुआ।

और मौलवी मुहम्मद शमीम बढ़यावी फाज़िल फैज़ुर रसूल ने बाज़ किताबें फराहम कीं जो इस मज्मूऐ की तस्नीफ में बहुत मुआ़विन साबित हुईं।

लेकिन जो लोग कि इसके अहल हैं जब उन्हों ने इस तरफ तवज्जोह नहीं की तो हमें मजबूरन इस के लिये क़लम उठाना पड़ा। और किसी तरह किताब मुकम्मल करके हम ने क़ौम के सामने पेश कर दिया। लिहाज़ा जो लोग अदबी अल्फ़ाज़ या बाज़ारी बातों के शाइक़ हैं उनकी तिश्नगी इस किताब से दूर न होगी। सिर्फ ठोस मज़ामीन और मुस्तनद रिवायात व वाक़िआत तलाश करने वालों के लिये बेइन्तिहा मुफ़ीद साबित होगी और हत्तल इम्कान मुशकिल अल्फ़ाज़ लिखने से भी बचने की कोशिश की गई है ताकि औरतें और कम पढ़े लिखे लोग भी ज़्यादा से ज़्यादा इस किताब से फायदा उठा सकें।

किताब के आख़िर में हम ने अपने हालात भी दर्ज कर दिये हैं जो बहुत सी मुफ़ीद मज़्हबी और दीनी मालूमात पर मुशतमिल हैं। उनका भी ज़रूर मुतालआ करें।

नबी के अलावा दुनिया में कोई बड़ा से बड़ा इल्म वाला ऐसा नहीं हुआ है कि जिसे बोलने या लिखने में कहीं लग़ज़िश न हुई हो तो बहुत मुमकिन है कि इस किताब की तरतीब में कहीं हमारा क़लम भी बहक गया हो। इस लिये अहले इल्म से गुज़ारिश है कि अगर इस में कोई ग़लत बात नज़र आए तो लोगों में इस किताब की अहमियत न घटायें बल्कि बज़रिये तहरीर हम को मुत्तला करें ताकि नए एडीशन में उसकी तस्हीह कर दी जाए।

अज़ीज़े गिरामी हज़रत मौलाना गुलाम अब्दुल क़ादिर साहब अलवी साहिबज़ादा शुऐबुल औलिया हज़रत शाह मुहम्मद यार अली साहब क़िब्ला रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने इस किताब का अक्सर हिस्सा पढ़ा और मुफ़ीद मशवरा दिया।

और जनाब मौलाना क़ाज़ी अताउल हक़ साहब उस्मानी गौंडवी की याद देहानी से किताब में बाज़ अहम मज़ामीन का इज़ाफा हुआ।

और मौलवी मुहम्मद शमीम बदायावी फ़ाज़िल फ़ैज़ुर रसूल ने बाज़ किताबें फ़राहम कीं जो इस मज्मूए की तस्नीफ़ में बहुत मुआविन साबित हुईं।

ख़ुदाए अ़ज़्ज़ व जल्ल इन सब के इल्म व अ़मल में रोज़ अफ्ज़ूं तरक़्क़ी अता फरमाए और ख़ुलूस के साथ दीने मतीन की बेश अज़ बेश ख़िदमत की तौफीक़े रफीक़ बख़्शे।

और दुआ है कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इस किताब से अहले सुन्नत व जमाअ़त को तक़वियत बख़्शे। आख़िरी दम तक ख़ुलूस के साथ दीन की ख़िदमतें लेता रहे, हमारी औलाद को भी इस्लाम व सुन्नियत की नशर व इशाअ़त का सही जज़्बा अता फरमाए, ईमान पर हमारा ख़ातिमा हो, क़ियामत की हवलनाकियों से महफ़ूज़ रखे और हुज़ूर पुर नूर शाफेए यौमुन नुशूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की शफाअ़त नसीब फरमाए। आमीन

بحرمة النبی الکریم الامین وعلیٰ اله افضل الصلوات واکمل التسلیم۔

*बिहुर्मतिन् नबिय्यिल् करीमिल् अमीन व अ़ला आलिही*
*अफ्ज़लुस् सलवाति व अक्मलुत्-तस्लीम।*

**जलालुद्दीन अहमद अमजदी**
25 जमादिउल उख़रा 1408 हि0
14 फरवरी 1988 ई0

# मर्तबए शहादत

الحمدللّٰہ الذی اکرام الشہداء بالحیاۃ، بقولہ وَلَاتَقُوْلُوْا لِمَنْ یُّقْتَلُ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰہِ اَمْوَاتٌ۔ والصلوۃ والسلام علی صاحب الشفاعات وعلی الہ واصحابہ الذین فازوا بالشہادات۔ امابعد فاعوذ باللّٰہ من الشیطن الرجیم۔بسم اللّٰہ الرحمن الرحیم ۔ وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِیْنَ قُتِلُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰہِ اَمْوَاتاً بَلْ اَحْیَاءٌ عِنْدَ رَبِّہِمْ یُرْزَقُوْنَ (پ:٤،ع٨)

صدق اللّٰہ العلی العظیم وصدق رسولہ النبی الکریم ونحن علی ذٰلک لمن الشاھدین والشاکرین والحمدللّٰہ رب العلمین۔

एक मर्तबा हम और आप सब लोग मिल कर मक्का के सरकार मदीना के ताजदार दोनों आलम के मालिक व मुख़्तार जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के दरबार दुरर बार में बुलंद आवाज़ से दुरूद व सलाम का नज़्राना और हदिया पेश करें।

صلی اللّٰہ علی النبی الامی والہ صلی اللّٰہ تعالی علیہ وسلم صلاۃً وسلاماً علیک یارسول اللّٰہ۔

*सल्लल्लाहु अलन्नबिय्यिल उम्मियी व आलिही सल्लल्लाह तआला अलैहि व सल्लम सलातंव् व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।*

*शहादत आख़िरी मंज़िल है इंसानी सआदत की*
*वो ख़ुश क़िस्मत हैं मिल जाए जिन्हें दौलत शहादत की*

*शहादत पा के हस्ती ज़िंदए जावेद होती है*
*ये रंगीं शाम सुब्हे ईद की तम्हीद होती है*

दुनिया के लिहाज़ से इंसान के मुख़्तलिफ दर्जे हैं, कोई चौकीदार है तो कोई कानेस्टबल, कोई सब-इंक्सपेक्टर है तो कोई एस0 पी0 यहां तक कि कोई वज़ीरे आज़म है तो कोई सदर जमहूरिया। और बाज़ इंतिहाई ज़िल्लत व पस्ती में हैं जैसे कोढ़ी वग़ैरा कि इन के घर वाले भी इन से नफरत और घिन करते हैं।

इसी तरह इस्लामी एतबार से भी इंसान की दो क़िस्में हैं, एक मुस्लिम दूसरे काफिर। काफिरों में भी मुख़्तलिफ दर्जे हैं, उन में मुर्तद सब से बदतर काफिर है कि उसे जीने का भी हक़ नहीं है। और मुसलमानों में सब से ऊंचा दर्जा सैय्यिदुर रुसुल नबिय्युल अंबिया जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व सल्लम का है। फिर रुसुले इज़ाम का फिर दीगर अंबियाए किराम अलैहिमुस सलातु वस्सलाम का, फिर सिद्दीक़ीन फिर शुहदा और फिर सालिहीन यानी औलियाए किराम का रज़ियल्लाहु तआ़ाला अन्हुम।

फिर औलियाए किराम में भी ग़ौस, कुतुब और अब्दाल व औताद वग़ैरा मुख़्तलिफ दर्जात हैं और फिर उलमाए इस्लाम हैं वह भी मुख़्तलिफ दर्जे वाले हैं, फिर मोमिन मुत्तक़ी हैं, फिर फासिक़ और मुसलमानों में सब से कम दर्जा गुमराह व बद मज़्हब का है जिस की बद मज़्हबी हद्दे कुफ्र को नहीं पहुंची है।

नबी उस मोहतरम हस्ती को कहते हैं जिस पर अल्लाह तआ़ाला की जानिब से वही नाज़िल की गई हो, इबादत व रियाज़त से कोई नबी नहीं हो सकता बल्कि अल्लाह तआ़ाला अपने फज़्ल से जिसे चाहता है नुबुव्वत से सरफराज़ फरमाता है। मगर हमारे नबीए अकरम सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व सल्लम के बाद अब कोई नबी नहीं हो सकता कि वह ख़ातिमुल अंबिया हैं और सिद्दीक़ या वली बनना भी बड़ा मुश्किल काम है, और शहीद बनना आसान भी है और मुश्किल भी।

मुश्किल तो इस लिहाज़ से है कि इंसान को अपनी जान बहुत ज़्यादा प्यारी होती है और आसान इस एतबार से है कि थोड़ी ही देर में दर्जए शहादत हासिल हो जाता है यानी शहीद एक ही जस्त में ज़मीन की पस्ती से आसमान की बुलंदी पर पहुंच जाता है।

## अब्दुल क़ैय्यूम का वाक़िआ़

1934 का वाक़िआ़ अब्दुल क़ैय्यूम का मशहूर है जो विक्टोरिया गाड़ी चलाता था, जो कोचवानी करके अपनी और अपने घर वालों की

रोज़ी हासिल करता था, उस की रात झोंपड़े में बसर होती थी और दिन विक्टोरिया चलाने में। घोड़े की लगाम पकड़े पकड़े उसकी हथेलियों का चमड़ा मोटा और खुरदुरा हो गया था। पूरे शहर कराची में जहां वह रहता था कोई उस का हमदर्द व ग़मगुसार नहीं था अगर कोई उस का दोस्त और शनासा था तो उसका प्यारा घोड़ा मोती था।

अब्दुल क़ैय्यूम को मालूम हुआ कि एक शख़्स ने अपनी किताब में सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की शान में गुस्ताख़ी व बे अदबी की है जिस पर मुक़द्दमा चल रहा है और आज उस की तारीख़ है, वह फ़ौरन विक्टोरिया लेकर कचहरी की तरफ़ चल पड़ा, एक किनारे अपनी गाड़ी खड़ी की और फ़ातिहाना शान की तरह चल कर जज के कमरे में पहुंच गया जो आदमियों से खछा खछ भरा हुआ था। दो अंग्रेज़ अभी क़ानूनी दफ़आत का चेहरा देखने में लगे हुए थे कि उस ने इस तरह चाकू मारा जो उस की गर्दन में उतरता चला गया लाश तड़प कर ठंडी हो गई और अब्दुल क़ैय्यूम ने बग़ैर किसी मुज़ाहमत के अपने आप को पुलिस के हवाले कर दिया।

अब्दुल क़ैय्यूम जो अपने ही शहर में अजनबी था और कोई उसे जानता पहचानता न था थोड़ी ही देर में सिर्फ़ कराची नहीं बल्कि पूरा हिन्दुस्तान उसे जान गया और सारे मुसलमानों की मुहब्बतों का मर्कज़ बन गया, उस ज़मानत पर छुड़ाया गया और मुक़द्दमा शुरू हुआ, वक़्त के माहिर क़ानून दानों, बड़े बड़े वकीलों और बैनल अक़्वामी शोहरत रखने वाले बैरिस्टरों ने अब्दुल क़ैय्यूम के मुक़द्दमे की पैरवी करनी चाही और उस से कहा बस अपना बयान ज़रा बदल दो हम तुम्हें बचा लेंगे। कहने वालों ने बहुत कहा, मिन्नत समाजत करने वालों ने बहुत मिन्नत समाजत की मगर अब्दुल क़ैय्यूम के पास हर शख़्स के लिये सिर्फ़ एक ही जवाब था कि मैं ने जान बूझ का मर्तबए शहादत ख़रीदा है, आप इस नेअ्मत से मुझ को महरूम करने की कोशिश न करें मैं इक़्बाले बयान बदल कर अपनी आक़िबत नहीं ख़राब करूंगा।

रोज़ी हासिल करता था, उस की रात झोंपड़े में बसर होती थी और दिन विक्टोरिया चलाने में। घोड़े की लगाम पकड़े पकड़े उसकी हथेलियों का चमड़ा मोटा और खुरदुरा हो गया था। पूरे शहर कराची में जहां वह रहता था कोई उस का हमदर्द व ग़मगुसार नहीं था अगर कोई उस का दोस्त और शनासा था तो उसका प्यारा घोड़ा मोती था।

अब्दुल कैय्यूम को मालूम हुआ कि एक शख़्स ने अपनी किताब में सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की शान में गुस्ताख़ी व बे अदबी की है जिस पर मुक़द्दमा चल रहा है और आज उस की तारीख़ है, वह फौरन विक्टोरिया लेकर कचहरी की तरफ चल पड़ा, एक किनारे अपनी गाड़ी खड़ी की और फातिहाना शान की तरह चल कर जज के कमरे में पहुंच गया जो आदमियों से खछा खछ भरा हुआ था। दो अंग्रेज़ अभी कानूनी दफआ़त का चेहरा देखने में लगे हुए थे कि उस ने इस तरह चाकू मारा जो उस की गर्दन में उतरता चला गया लाश तड़प कर ठंडी हो गई और अब्दुल कैय्यूम ने बग़ैर किसी मुज़ाहमत के अपने आप को पुलिस के हवाले कर दिया।

अब्दुल कैय्यूम जो अपने ही शहर में अजनबी था और कोई उसे जानता पहचानता न था थोड़ी ही देर में सिर्फ कराची नहीं बल्कि पूरा हिन्दुस्तान उसे जान गया और सारे मुसलमानों की मुहब्बतों का मर्कज़ बन गया, उस ज़मानत पर छुड़ाया गया और मुक़द्दमा शुरू हुआ, वक़्त के माहिर क़ानून दानों, बड़े बड़े वकीलों और बैनल अक्वामी शोहरत रखने वाले बैरिस्टरों ने अब्दुल कैय्यूम के मुक़द्दमे की पैरवी करनी चाही और उस से कहा बस अपना बयान ज़रा बदल दो हम तुम्हें बचा लेंगे। कहने वालों ने बहुत कहा, मिन्नत समाजत करने वालों ने बहुत मिन्नत समाजत की मगर अब्दुल कैय्यूम के पास हर शख़्स के लिये सिर्फ एक ही जवाब था कि मैं ने जान बूझ का मर्तबए शहादत ख़रीदा है, आप इस नेअ़मत से मुझ को महरूम करने की कोशिश न करें मैं इक़्बाले बयान बदल कर अपनी आक़िबत नहीं ख़राब करूंगा।

अब्दुल क़ैय्यूम की रिहाई के लिये मस्जिदों में दुआएं की गईं, औरतों ने मिन्नतें मानीं और बूढ़ों के लरज़ते हाथ, नौजवानों के दिल और बच्चों की उदासियों ने मालिके हक़ीक़ी से उस की ज़िंदगी की भीक मांगी मगर अब्दुल क़ैय्यूम ही की तमन्ना पूरी हुई। क़ानून के मुहाफिज़ों ने उस की मौत का हुक्म सुना दिया, वह मौत कि ज़िस पर हर दिल ग़मज़दा और हर घर मातम कदा बना हुआ था जैसे कि यह उसी के घर का अलमिय्या हो।

फिर जब अब्दुल क़ैय्यूम का जनाज़ा उठा तो उस में 25 लाख से ज़्यादा आदमी शरीक हुए, छतों और बाला ख़ानों से औरतें आंचलों से आंसू पोछती जाती थीं और फूल निछावर करती जाती थीं। कराची की तारीख़ गवाह है इस से पहले किसी भी शख़्स के जनाज़े में इतने इंसान नहीं शरीक हुए। फिर यह तो इंसानों की तादाद थी जो 25 लाख से ज़ाइद थी और फिरिश्ते कितने करोड़ थे फिर महबूबे काइनात सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने किस प्यार व मुहब्बत से अब्दुल क़ैय्यूम को ख़ुश आमदेद कहा होगा? उसे कौन जान सकता है?

*रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह।*

देखा आप ने वह अब्दुल क़ैय्यूम कि जो विक्टोरिया चलाता था, कोचवान था, पूरे शहर में उसे कोई जानता पहचानता नहीं था, लोगों के लिये अजनबी था, समाज और मुआ़शरे के पस्त तबक़े का एक ना क़ाबिले तवज्जोह आदमी था मगर एकी ही जस्त में रिफअ़तों की सारी मंज़िलों को तैय कर लिया और थोड़ी ही देर में उस मक़ामे रफीअ़ को पा लिया कि जहां बरसहा बरस के मुजाहिदों और ज़िंदगी भर की रियाज़तों के बाद भी हर इंसान नहीं पहुंच पाता।

*ये रुत्बए बुलंद मिला जिस को मिल गया*
*हर शख़्स के नसीब में दारो-रसन कहां*

और जब अब्दुल क़ैय्यूम जैसा एक मामूली इंसान राहे हक़ में शहीद होकर लोगों के दिलों की धड़कन बन गया तो सैय्यिदुश शुहदा

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो महबूबे खुदा सैय्यिदुल अंबिया सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के नवासे हैं, अली मुर्तज़ा के लख़्ते जिगर हैं और फातिमा ज़हरा के नूरे नज़र हैं और जो तमाम अज़ीज़ व अक़ारिब यहां तक कि जवान बेटे अली अक्बर और शीर-ख़्वार साहिब ज़ादे की दर्दनाक शहादत के बावजूद हिम्मत नहीं हारे और राहे हक़ में कुर्बान हो गए वह शहीद हो कर हमेशा के लिये मुसलमानों की दिलों की धड़कन बन गए और उनकी मुहब्बतों के मर्कज़ बन गए।

यही वजह है कि हर साल जब उन की तारीख़े शहादत क़रीब आती है और मुहर्रम का चांद नमूदार होता है तो पूरा माहौल सोगवार हो जाता है, उन की याद लोगों के दिलों को तड़पा देती है, जगह जगह उन के ज़िक्र की मज्लिसें क़ाइम होती हैं, खाने खिलाए जाते हैं, खिचड़े पकाए जाते हैं, सबीलें क़ाइम की जाती हैं और तरह तरह से उन की बारगाह में नज़्र व नियाज़ पेश की जाती हैं और इंशा अल्लाह यह सिलसिला क़ियामत तक ऐसे ही जारी रहेगा, यज़ीदियों की हज़ार मुख़ालिफतों के बा वजूद कभी नहीं मिटेगा।

*रहेगा यूं ही उन का चर्चा रहेगा*
*पड़े ख़ाक हो जाएं जल जाने वाले*

صلى الله على النبى الامى وآله صلى الله تعالى عليه وسلم صلاة وسلاما عليك يارسول الله

*सल्लल्लाहु अ़लन् नबिय्यिल् उम्मियी व आलिही सल्लल्लाह तआ़ला अ़लैहि व सल्लम, सलातंव् व सलामन् अ़लैक या रसूलल्लाह।*

## शहीद की क़िस्में

शहीद की तीन क़िस्में हैं:

1- शहीदे हक़ीक़ी, 2- शहीदे फिक़्ही और 3- शहीदे हुक्मी।

जो अल्लाह की राह में क़त्ल किया जाए वह शहीदे हक़ीक़ी है। और शहीदे फिक़्ही उसे कहते हैं कि आक़िल बालिग़ मुसलमान जिस पर गुस्ल फर्ज़ न हो वह तलवार व बंदूक़ वग़ैरा आलए जारिहा से

ज़ुल्मन क़त्ल किया जाए और क़त्ल के सबब माल न वाजिब हुआ हो और न ज़ख़्मी होने के बाद कोई फायदा दुनिया से हासिल किया हो और न ज़िन्दों के अहकाम में से कोई हुकम उस पर साबित हुआ हो।

यानी अगर पागल, ना बालिग़ या हैज़ व निफास वाली औरतें और जुनुब शहीद किये जाएं तो वह शहीदे फिक़्ही नहीं। और अगर क़त्ल से माल वाजिब हुआ हो जैसे कि लाठी से मारा गया या क़त्ले ख़ता कि मार रहा था शिकार को और लग गया किसी मुसलमान को, या ज़ख़्मी होने के बाद खाया पिया, इलाज किया, नमाज़ का पूरा वक़्त होश में गुज़रा और वह नमाज़ पर क़ादिर था या किसी बात की वसिय्यत की तो वह शहीदे फिक़्ही नहीं।

मगर शहीदे फिक़्ही न होने का यह मअ़ना नहीं कि वह शहीद होने का सवाब भी नहीं पाएगा बल्कि इस का मतलब सिर्फ इतना है कि उसे गुस्ल दिया जाएगा और शहीदे फिक़्ही नमाज़े जनाज़ा तो पढ़ी जाएगी मगर उसे गुस्ल नहीं दिया जाएगा वैसे ही ख़ून के साथ दफन कर दिया जाएगा। और जो चीज़ें कि अज़ क़िस्म कफन नहीं होंगी उन्हें उतार लिया जाएगा जैसे ज़िरह, टोपी और हथियार वग़ैरा। और कफन मस्नून में अगर कमी होगी तो उसे पूरा किया जाएगा। पाजामा नहीं उतारा जाएगा और सारे कपड़े उतार कर नए कपड़े नहीं दिये जाएंगे कि मक्रूह है।

और शहीदे हुक्मी वह है कि जो ज़ुल्मन नहीं क़त्ल किया गया मगर क़ियामत के दिन वह शहीदों के गिरोह में उठाया जाएगा। हदीस शरीफ में है कि सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने फरमाया कि खुदाए तआ़ला की राह में शहीद किये जाने के अलावा सात शहादतें और हैं, जो ताऊन में मरे शहीद है, जो डूब कर मर जाए शहीद है, जो ज़ातुल जुनब (नमूनिया) में मरे शहीद है, जो पेट की बीमारी में मर जाए शहीद है, जो आग में जल जाए शहीद है, जो इमारत के नीचे दब कर मर जाए वह शहीद है और जो औरत बच्चे

की पैदाइश के वक़्त मर जाए वह भी शहीद है। (मिश्कात शरीफ़:136)

इन के अलावा और भी बहुत सी सूरतें हैं जिन में शहादत का सवाब मिलता है। उन में से चन्द यह हैं: हालते सफर में मरा, सिल की बीमारी में मरा, सवारी से गिर कर मरा या मिरगी से मरा, बुख़ार में मरा, जान व माल या अहल व अ़याल या किसी हक़ के बचाने में क़त्ल किया गया, इश्क़ में मरा बशर्ते कि पाक दामन हो और छुपाया हो, किसी दरिन्दे ने फाड़ खाया, बादशाह ने ज़ुल्मन क़ैद किया या मारा और मर गया, किसी मूज़ी जानवर के काटने से मरा, इल्मे दीन की तलब में मरा, मोअज़्ज़िन जोकि तलबे सवाब के लिये अज़ान कहता हो, रास्त-गो ताजिर जिस समन्दर के सफर में मतली कैय आई और मर गया, जो अपने बाल बच्चों के लिये सई (कोशिश) करे उन में अम्रे इलाही क़ाइम करे और उन्हें हलाल खिलाए, जो हर रोज़ 25 बार यह दुआ पढ़े: اَللّٰھُمَّ بَارِکْ لِیْ فِی الْمَوْتِ وَفِیْمَا بَعْدَ الْمَوْتِ जो चाश्त की नमाज़ पढ़े हर महीने में तीन रोज़े रखे ओर वित्र को सफर व हज़र में कहीं तर्क न करे, फसादे उम्मत के वक़्त सुन्नत पर अमल करने वाला उस के लिये सौ शहीदों का सवाब है। जो मर्ज़ में لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ चालीस मर्तबा कहे और उसी मर्ज़ में इन्तेक़ाल कर जाए और अच्छा हो गया तो उस की मग़फिरत हो जाएगी, कुफ्फार से मुक़ाबला के लिये सरहद पर घोड़ा बांधने वाला, जो शख़्स हर रात सूरए यासीन शरीफ पढ़े, जो बा वज़ू सोया और मर गया, जो नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम पर सौ मर्तबा रोज़ाना दुरूद शरीफ पढ़े, जो सच्चे दिल से यह दुआ़ करे कि अल्लाह की राह में क़त्ल किया जाऊं और जो शख़्स जुमा के रोज़ इन्तिक़ाल करे। (रद्दुल मोहतार, बहारे शरीअ़त)

इन तमाम क़िस्मों में सब से अअ़्ला शहीद वह है जो अल्लाह की राह में क़त्ल किया गया और शहादते हक़ीक़िय्या से सरफराज़ हुआ। इस के फज़ाइल में कई आयतें और बेशुमार हदीसें वारिद हैं।

## शुहदा के फज़ाइल

ख़ुदाए अ़ज़्ज़ व जल्ल शुहदाए किराम की फज़ीलत बयान करते

हुए कुरआने मजीद में इरशाद फरमाता है।

وَلَاتَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتٌ بَلْ اَحْيَآءٌ وَّ لٰكِنْ لَّا تَشْعُرُوْنَ ٥

जो ख़ुदा की राह में क़त्ल किये जाएं उन्हें मुर्दा मत कहना बल्कि वह ज़िंदा हैं लेकिन तुम्हें ख़बर नहीं। (पाराः2 रुकूअ़ः3)

और इरशाद फरमाता हैः

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا بَلْ اَحْيَآءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ ٥

जो लोग अल्लाह की राह में क़त्ल किये गए उन्हें मुर्दा हरगिज़ न ख़्याल करना बल्कि वह अपने रब के पास ज़िंदा हैं, रोज़ी दिये जाते हैं। (पाराः4 रुकूअ़ः8)

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु फरमाते हैं कि मैं ने इस आयते करीमा का मअ़्ना रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम से दर्याफ्त किया तो आप ने इरशाद फरमाया कि शहीदों की रूहें सब्ज़ परिन्दों के जिस्म में हैं, उन के रहने के लिये अर्शे इलाही के नीचे क़िन्दीलें लटकाई गई हैं। जन्नत में जहां उन का जी चाहता है वह सैर करते हैं और उसके मेवे खाते हैं। (मुस्लिम, मिश्कातः330)

और सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम शुहदाए इस्लाम की अज़्मत बयान करते हुए इरशाद फरमाते हैं कि शहीद के लिये ख़ुदाए तआ़ला के नज़्दीक छः ख़ूबियां हैंः (1) ख़ून का पहला क़तरा गिरते ही उसे बख़्श दिया जाता है और रूह निकलने ही के वक़्त उस को जन्नत में उस का ठिकाना दिखा दिया जाता है। (2) क़ब्र के अज़ाब से महफूज़ रहता है। (3) उसे जहन्नम के अज़ाब का ख़ौफ नहीं रहता। (4) उस के सर पर इ़ज़्ज़त व वक़ार का ताज रखा जाएगा कि जिस का बेश बहा याकूत दुनिया और दुनिया की तमाम चीज़ों से बेहतर होगा। (5) उस के निकाह में बड़ी-बड़ी आंखों वाली 72 हूरें दी जाएंगी। (6) और उसके अज़ीज़ों में से 70 आदमियों के लिये उस की शफाअ़त क़बूल की जाएगी। (तिर्मिज़ी, मिश्कातः333)

और सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम इरशाद फरमाते हैं कि जो लोग लड़ाई में क़त्ल किये जाते हैं उन की

तीन क़िस्में हैं: एक वह मोमिन जो अपनी जान और अपने माल से अल्लाह की राह में लड़े और दुश्मन से ख़ूब मुक़ाबला करे यहां तक कि क़त्ल कर दिया जाए। यह वह शहीद है जो सब्र और मशक़्क़त के इम्तिहान में कामियाब हुआ। यह शहीद ख़ुदाए तआला के अर्श के नीचे ख़ुदा के ख़ेमे (यानी अल्लाह तआला के हुज़ूर और उस के क़ुर्ब में) होगा। (अश्अतुल् लमआत:3/260) لَا يَفْضُلُهُ النَّبِيُّوْنَ إِلَّا بِدَرَجَةِ النُّبُوَّةِ अंबियाए किराम इस से सिर्फ दर्जए नुबुव्वत में ज़्यादा होंगे यानी मर्तबए नुबुव्वत और उस से जो कमालात मुतअल्लिक़ हैं उन के अलावा हर मर्तबा और हर कमाल उस शहीद को हासिल होगा।

और दूसरा वह मोमिन जिस के आमाल दोनों तरह के हों यानी कुछ अच्छे और कुछ बुरे, वह अपनी जान व माल से ख़ुदा की राह में जिहाद करे, जिस वक़्त दुश्मन से सामना हो उस से लड़े यहां तक कि क़त्ल कर दिया जाए। यह ऐसी शहादत है जो गुनाहों और बुराइयों को मिटाने वाली है। फिर फरमाया: إِنَّ السَّيْفَ مَحَّاءٌ لِلْخَطَايَا وَاُدْخِلَ مِنْ اَيِّ اَبْوَابِ الْجَنَّةِ شَاءَ यानी बेशक तलवार गुनाहों को बहुत ज़्यादा मिटाने वाली है और यह शहीद जिस दरवाज़े से चाहेगा जन्नत में चला जाएगा।

और तीसरा वह मुनाफ़िक़ है जिस ने अपनी जान और अपने माल से जिहाद किया और जब दुश्मन से मुक़ाबिला हुआ तो ख़ूब लड़ा यहां तक कि मारा गया। यह शख़्स दोज़ख़ में जाएगा। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: इस लिये कि إِنَّ السَّيْفَ لَا يَمْحُو النِّفَاقَ निफ़ाक़ यानी छिपे हुए कुफ़्र को तलवार नहीं मिटाती है। (दारमी, मिश्कात:336)

इस हदीस शरीफ से जहां यह मालूम हुआ कि अल्लाह की रहा में शहीद होने वाला मर्तबए नुबुव्वत और उस के मुतअल्लिक़ा कमालात के अलावा सारे दरजात से सरफराज़ किया जाता है और उस के तमाम गुनाह माफ कर दिये जाते हैं साथ ही यह भी वाज़ेह हुआ कि अगर दिल में कुफ़्र छिपाए हो और सिर्फ ज़ाहिर में मुसलमान हो तो चाहे ज़िंदगी भर जिहाद करे यहां तक कि अपनी अज़ीज़ तरीन जान भी क़ुर्बान कर दे मगर वह जहन्नम ही में जाएगा।

इसी तरह जो लोग महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के बुग़ज़ व अ़दावत का कुफ़्र अपने दिलों में छिपाए हुए हैं और उन की अज़मत के दुश्मन हैं अगर वह दिन रात इबादत करें और ज़िंदगी भर सारी दुनिया में इस्लाम की नशर व इशाअ़त करें और तब्लीग़ करते फिरें यहां तक कि उसी हाल में मर जाएं तो उन का ठिकाना जहन्नम ही होगा। इसी लिये इस तरह की किसी भी नेकी से कुफ़्र नहीं माफ होता।

صلی اللہ علی النبی الامی والہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم صلاۃً وسلاماً علیک یارسول اللہ

*सल्लल्लाहु अ़लन्नबिय्यिल् उम्मियी व आलिही सल्लल्लाह तआ़ला अ़लेहि व सल्लम, सलातंव् व सलामन् अ़लैक या रसूलल्लाह।*

## शहीद और ऐहसासे ज़ख़्म

मैदाने जंग में शहीद हर तरह से ज़ख़्मी होता है कभी हाथ कटता है, कभी पांव घायल होता है, कभी उस के सीने में नेज़ा दाख़िल किया जाता है, ख़ून का फव्वारा जारी होता है, कभी गर्दन कट के अलग हो जाती है और शहीद ख़ून में नहा कर ज़मीन पर गिर जाता है जिस से बज़ाहिर यह मालूम होता है कि उस को सख़्त तक्लीफ व अज़िय्यत होती है लेकिन हक़ीक़त यह है कि उस को बहुत मामूली सी तक्लीफ होती है और उसे उन ज़ख़्मों का पूरा ऐहसास नहीं होता। मुख़्बिरे सादिक़ सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम इरशाद फरमाते हैं:

اَلشَّهِيْدُ لَايَجِدُ اَلَمُ الْقَتْلِ اِلَّا كَمَا يَجِدُ اَحَدُكُمْ اَلَمَ الْقَرْصَةِ۔

शहीद क़त्ल की सिर्फ इतनी ही तक्लीफ महसूस करता है जितनी कि तुम चुटकी भरने या चींवटी के काटने की तक्लीफ महसूस करते हो।

(तिर्मिज़ी, मिश्कात:33)

मुमकिन है कोई कहे कि यह कैसे हो सकता है कि शहीद के हाथ पांव काट दिये गए और उसकी गर्दन भी जुदा कर दी गई मगर उसको सिर्फ इतनी तक्लीफ हुई जितनी चींवटी काटने या चुटकी भरने से होती है।

तो इस शुब्हा का जवाब यह है कि शहीद से वह शहीदे हक़ मुराद है जिस के दिल में अल्लाह और उस के रसूल की मुहब्बत इस दर्जा पैदा हो गई हो कि उस का दिल चाहता है कि एक नहीं बल्कि करोड़ों जानें हों तो मैं सब को अपने महबूब पर कुर्बान कर दूं। अअ्ला हज़रत अज़ीमुल बरकत रहमतुल्लाहि तआला अलैह फरमाते हैं:

*करूं तेरे नाम पे जां फिदा न बस एक जां दो जहां फिदा*
*दो जहां से भी नहीं जी भरा करूं क्या करोरों जहां नहीं*

जैसे डॉक्टर मरीज़ को दवा सुंघा देता है फिर उस के जिस्म को चीरता और फाड़ता है, हड्डियां तोड़ता है और टांके लगाता है मगर चूंकि दवा का असर उस पर ग़ालिब होता है इस लिये मरीज़ को कोई तक्लीफ नहीं महसूस होती। बिल्कुल इसी तरह वह शहीदे हक़ कि जिस के दिल में अल्लाह व रसूल की मुहब्बत ग़ालिब हो गई तो उस का जिस्म कटता है, हड्डियां टूटती हैं, ख़ून बहता है और गर्दन जुदा होती है मगर उसे तक्लीफ का ऐहसास नहीं होता।

## मिस्र की औरतें

मिस्र के शरीफ घर की औरतों ने जब ज़ुलैख़ा को हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम की मुहब्बत पर मलामत की और तअ्ना दिया तो ज़ुलैख़ा ने उन औरतों को बुलाया, उन के लिये दस्तर ख़्वान बिछवाया जिस पर तरह तरह के खाने और मेवे चुने गए फिर ज़ुलैख़ा ने हर औरत को फल वग़ैरा काटने के लिये एक-एक छुरी दी और हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम से अर्ज़ किया आप इन औरतों के सामने आ जाएं। जब आप तशरीफ लाए और औरतों ने उनके जमाले जहां आरा को देखा तो उन के हुस्न ने औरतों पर इतना असर किया कि बजाए लीमू के उन्हों ने अपने-अपने हाथों को काट लिया और ख़ून बहने लगा मगर उन लोगों को हाथों के कटने का एहसास नहीं हुआ इसी लिये उन्हों ने यह नहीं कहा कि हाए! हम तो अपने हाथ काट लिये बल्कि यह कहा कि यह इंसान नहीं हैं फिरिश्ता हैं। وَقَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا هٰذَا بَشَرًا اِنْ هٰذَا اِلَّا مَلَكٌ كَرِيْمٌ (सूरए यूसुफ पारा:12, रुकूअ्:14)

और जब हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम के हुस्न का औरतों पर ऐसा असर हुआ कि उन को हाथ कटने की तक्लीफ का ऐहसास नहीं हुआ तो जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम जिन का चेहरए अक़्दस ऐसा रौशन व ताबनाक था कि बक़ौल रावियाने हदीस आप के चेहरे में चांद व सूरज तैरते थे। जिस पर उन के हुस्नो-जमाल् का असर होता है और उन की मुहब्बत का ग़लबा होता है उस का सर भी कट जाता है मगर उसे ऐहसास नहीं होता।

*हुस्ने यूसुफ पे कटें मिस्र में अंगुश्ते ज़नां*
*सर कटाते हैं तेरे नाम पे मर्दाने अरब*

☆☆☆

# शहादत की लज़्ज़त

दुनिया की बेशुमार नेअ़मतों से इंसान लुत्फ व लज़्ज़त हासिल करता है, किसी नेअ़मत को खाता है, किसी को पीता है, किसी को सूंघता है, किसी को देखता है, किसी को सुनता है और इन के अलावा मुख़्तलिफ तरीक़ों से तमाम नेअ़मतों को इस्तेमाल करता है और उन से महज़ूज़ होता है लेकिन मर्दे मोमिन को शहादत की जो लज़्ज़त हासिल होती है उस के सामने दुनिया की सारी लज़्ज़तें हेच हैं। यहां तक कि शहीद जन्नत की तमाम नेअ़मतों से फाइदा उठाएगा और उन से लुत्फ अंदोज़ होगा मगर जब उस को अल्लाह व रसूल की मुहब्बत में सर कटाने का मज़ा याद आएगा तो जन्नत की भी सारी नेअ़मतों का मज़ा भूल जाएगा और तमन्ना करेगा कि ऐ काश! मैं दुनिया में वापस किया जाऊं और बार-बार शहीद किया जाऊं।

हदीस शरीफ में है सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने फरमाया कि जन्नत में दाख़िल होने के बाद फिर कोई जन्नती वहां की राहतों और नेअ़मतों को छोड़ कर दुनिया में आना पसंद न करेगा कि जो चीज़ें हमें ज़मीन में हासिल थीं वह फिर मिल जाएं।

إِلَّا الشَّهِيْدُ يَتَمَنّٰى اَنْ يَّرْجِعَ إِلَى الدُّنْيَا فَيُقْتَلَ عَشْرَ مَرَّاتٍ۔

मगर शहीद आरज़ू करेगा कि वह फिर दुनिया की तरफ वापस होकर अल्लाह की राह में दस मर्तबा क़त्ल किया जाए। (बुख़ारी, मुस्लिम, मिश्कातः330)

صلی اللہ علی النبی الامی وآلہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم صلاۃً وسلاماً علیک یارسول اللہ

*सल्लल्लाहु अ़लन्नबिय्यिल् उम्मियी व आलिही सल्लल्लाह तआ़ला अ़लेहि व सल्लम, सलातंव् व सलामन् अ़लैक या रसूलल्लाह।*

## बेमिस्ल शहादत

इस्लाम की नशर व इशाअ़त और उस की बक़ा के लिये बेशुमार मुसलमान अब तक शहीद किये गए मगर इन तमाम लोगों में सैय्यिदुश- शुहदा हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की शहादत बेमिस्ल है कि आप जैसी मुसीबतें किसी दूसरे शहीद ने नहीं उठाईं। आप तीन दिन के भूके प्यासे शहीद किये गए, इस हाल में कि आप के तमाम रुफक़ा, अज़ीज़ व अक़ारिब व अहल व अ़याल भी सब भूके प्यासे थे और छोटे बच्चे पानी के लिये तड़प रहे थे। यह आप के लिये और ज़्यादा मुसीबत की बात थी इस लिये कि इंसान अपनी भूक व प्यास तो बर्दाश्त कर लेता है लेकिन अहल व अ़याल और ख़ास कर छोटे बच्चों की भूक व प्यास उसे पागल बना देती है।

और जब पानी का वुजूद नहीं होता तो प्यास की तक्लीफ कम होती है लेकिन जब कि पानी की बोहतात हो जिसे आम लोग हर तरह से इस्तेमाल कर रहे हों यहां तक कि जानवर भी उस से सैराब हो रहे हों मगर कोई शख़्स जो तीन दिन का भूका प्यासा हो उसे न पीने दिया जाए तो उस के लिये ज़्यादा तक्लीफ की बात है।

और मैदाने करबला में यही नक़्शा था कि आदमी और जानवर सभी लोग दरियाए फुरात से सैराब हो रहे थे, मगर इमामे आली मक़ाम और उनके तमाम रुफक़ा पर पानी बन्द कर दिया गया था यहां तक कि आप अपने बीमारों और छोटे बच्चों को भी एक क़तरा नहीं पिला सकते थे।

*उस की कुद्रत जानवर तक आब से सैराब हों*
*प्यास की शिद्दत में तड़पे बे ज़बाने अहले बैत*

और फिर ग़ैर ऐसा करे तो तक्लीफ का ऐहसास कम होगा और यहां हाल यह है कि खाना पानी रोकने वाले अपने को मुसलमान ही कहलाते हैं, कलमा पढ़ते हैं, नमाज़ें अदा करते हैं और उनके नाना जान का इस्मे गरामी अज़ानों में बुलन्द करते हैं मगर नवासे पर ज़ुल्म व सितम का पहाड़ तोड़ते हैं।

अगर्चे हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु पर भी पानी बन्द कर दिया गया था मगर वह अपने घर और अपने वतन में थे और इमामे आली मक़ाम अपने घर से दूर और बे वतन हैं, इस के साथ तेज़ धूप, तपती हुई ज़मीन और गर्म हवाओं के थपेड़ें भी हैं।

और आप को यह अंदेशा भी दामनगीर था कि मेरी शहादत के बाद मेरा तमाम साज़ व सामान लूट लिया जाएगा, ख़ेमा जला दिया जाएगा, मस्तूरात बेसहारा हो जायेंगीं और उन्हें क़ैद कर लिया जाएगा।

इन हालात में अगर रुस्तम भी होता तो उस के हौसले पस्त हो जाते और वह अपनी गर्दन झुका देता लेकिन सैय्यिदुश शुहदा हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु उन मसाइब व आलाम के हुजूम में भी बातिल के मुक़ाबिले के लिये सब्र व रज़ा का पहाड़ बन कर क़ाइम रहे और आप के पाए इस्तिक़्लाल में लग़ज़िश नहीं पैदा हुई यहां तक कि 73 ज़ख़्म खा कर शहीद हो गए और आप की लाशे मुबारक घोड़ों की टापों से रौन्दी भी गई।

आप की यह शहादत बे मिस्ल है जिस ने यज़ीदिय्यत को मुर्दा कर दिया, उसे दुनिया में नहीं फैलने दिया और दीने इस्लाम को मस्ख़ होने से बचा लिया। इसी लिय सुल्तानुल हिन्द हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ अजमेरी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह फरमाते हैं:

*शाह अस्त हुसैन बादशाह अस्त हुसैन*
*दीन अस्त हुसैन दीं पनाह अस्त हुसैन*

*सर दाद, नदाद दस्त दर दस्ते यज़ीद*
*हक़्क़ा कि बिनाए ला इलाह अस्त हुसैन*

## शहीदों की ज़िंदगी

शहीद जो अल्लाह की राह में क़त्ल किये जाते हैं वह ज़िंदा हैं, पारए दोम, रुकूअ् 3 की आयते करीमा وَلَا تَقُوْلُوا الخ में ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस ने शहीदों को मुर्दा कहने से रोक दिया और फरमाया कि वह ज़िंदा हैं लेकिन तुम शऊर नहीं रखते हो और नहीं समझते हो कि वह कैसे ज़िंदा हैं।

मगर इंसान जबकि देखता है कि शहीद के हाथ पांव कट गए, उस की गर्दन जुदा हो गई, वह बेहिस व हरकत हो गया और सांस की आमद व रफ्त भी बन्द हो गई फिर उस को ज़मीन के नीचे दफन कर दिया गया, वारिसों ने उस के माल को आपस में तक़्सीम कर लिया और बीवी ने इद्दत गुज़ार कर दूसरा निकाह भी कर लिया तो हो सकता था कि ज़ाहिरी हाल देख कर वह गुमान करता शहीद मुर्दा हैं अल्बत्ता जब अल्लाह तआला ने मना फरमा दिया है तो उसे मुर्दा नहीं कहा जाएगा। तो ख़ुदाए अज़्ज़ व जल्ल ने पारए चहारुम, रुकूअ् 8 की आयते मुबारका وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوا में शहीदों को मुर्दा गुमान करने से भी रोक दिया और ताकीद के साथ फरमाया कि ऐसे लोगों को मुर्दा हरगिज़ गुमान मत करना बल्कि वह ज़िंदा हैं और बारगाहे इलाही से रोज़ी दिये जाते हैं।

क़ुरआने करीम की इन आयाते मुबारका से वाज़ेह तौर पर साबित हुआ कि शुहदाए किराम ज़िंदा हैं, उन को मुर्दा कहना क़ुरआने मजीद की मुख़ालफत करना है बल्कि उन्हें मुर्दा गुमान करने से भी सख़्ती से रोका गया गया, यानी मुर्दा कहना तो बड़ी बात है उनको मुर्दा ख़्याल भी नहीं कर सकते इस लिये कि वह अल्लाह की राह में क़त्ल हो कर ज़िंदए जावेद हो जाते है, रिज़्क़ आख़िरत से खाते पीते हैं और जहां ख़ुदाए तआला चाहता है जन्नत वग़ैरा की सैर करते हैं।

*आवाज़ आ रही है शहीदों की ख़ाक से*
*मर कर मिली है ज़िंदगिए जाविदां मुझे*

صلی اللہ علی النبی الامی والہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم صلاۃً وسلاماً علیک یارسول اللہ

*सल्लल्लाहु अ़लन्नबिय्यिल् उम्मियी व आलिही सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लेहि व सल्लम, सलातंव् व सलामन् अ़लैक या रसूलल्लाह।*

## तीन मुजाहिद

शहीदों की ज़िंदगी के लिये बेशुमार वाक़िआ़त मोअ़्तबर किताबों में दर्ज हैं। उन में एक वाक़िआ़ हम आप लोगों के सामने पेश करते हैं जिस को अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती ने शर्हुस् सुदूर में और अअ़्ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फाज़िल बरैलवी ने अपने रिसालए मुबारका *"अल्-इंतिबाह फी हल्लि निदाए या रसूलल्लाह"* में तहरीर फरमाया है।

तीन भाई मुल्के शाम में रहते थे जो बड़े जरी और बहादुर थे, हमेशा अल्लाह की राह में जिहाद किया करते थे, रूमियों ने एक मर्तबा उनको गिरफ्तार कर लिया और अपन ईसाई बादशाह के सामने पेश किया, उसने कहा कि तुम लोग मज़हबे इस्लाम छोड़ दो और ईसाई बन जाओ, उन तीनों ने बयक ज़बान कहा कि यह हरगिज़ नहीं हो सकता।

बादशाह ने कहा اِنِّیۡ اَجۡعَلُ فِیۡکُمُ الۡمُلۡکَ وَاُزَوِّجُکُمۡ بَنَاتِیۡ यानी मैं तुम लोगों को सलतनत दूंगा और अपनी लड़कियों से शादी भी कर दूंगा, तुम लोग ईसाई हो जाओ, मगर मुजाहिदीन इस पर भी ईसाई बनने के लिये तैयार न हुए। बादशाह ने कहा अगर हमारी बात नहीं मानोंगे तो क़त्ल कर दिये जाओगे, मुजाहिदीन ने कहाः

*गुलामाने मुहम्मद जान देने से नहीं डरते*
*यह सर कट जाए या रह जाए कुछ परवा नहीं करते*

बादशाह ने हुक्म दिया कि तीन देगों में ज़ैतून का तेल खौलाया जाए, जब तैल खौल गया तो मुजाहिदीन को उन देगों के पास लाया गया और कहा गया कि अगर ईसाई नहीं बनोंगे तो इसी खौलते हुए

तेल में डाल दिये जाओगे, अब भी मौक़ा है ख़ूब सोच लो, उन बहादुरों ने कहा कि हमारी आख़िरी सांस का जवाब यही होगा कि हम जान तो दे सकते हैं मगर मुस्तफा का दिया हुआ ईमान नहीं दे सकते।

उन्हों ने या मुहम्मदाह! पुकारा, फिर ईसाइयों ने बड़े भाई को तेल के खौलते हुए देग़ में डाल दिया, उस के बाद फिर बाक़ी दोनों भाईयों को समझाने की कोशिश की गई मगर आंखों से अपने भाई का यह अंजाम देखने के बावजूद उन के अन्दर कुछ फर्क़ पैदा नहीं हुआ, वह अब भी ख़ुशी के साथ अल्लाह की राह में शहीद होने के लिये तैयार रहे, आख़िर मंझले भाई को भी खौलते हुए तेल में डाल दिया गया।

छोटे भाई की उभरती जवानी देख कर वज़ीर ने बादशाह से कहा कि इसे हमारे सुपुर्द कर दीजिये, हम एक तरकीब से निहायत आसानी के साथ इस को ईसाई बना लेंगे, बादशाह ने उनको वज़ीर के सुपुर्द कर दिया, वज़ीर ने उन्हें एक मकान में बन्द कर दिया और अपनी हसीन लड़की को उन्हें बहकाने के लिये मुक़र्रर किया, रात के वक़्त लड़की दाख़िल हुई, वह मर्दे मुजाहिद रात भर नफ़्ल नमाज़ें पढ़ता रहा और हसीना की तरफ नज़र उठा कर भी न देखा और कैसे देखता, जिन निगाहों में हुस्ने मुस्तफा बस चुका हो वह निगाहें भला किसी और की तरफ कैसे उठ सकती हैं।

*दर पर आंख न डाले कभी शैदा तेरा*
*सब से बेगाना है ऐ प्यारे शनासा तेरा*

लड़की के लिये यह मन्ज़र बड़ा ही अजीब था कि जिस की एक झलक देखने के लिये दुनियाय बेताब है, यह जवान उस को एक नज़र भी देखने के लिये तैयार नहीं। सुब्ह के वक़्त वह नाकामी के साथ वापस आई और अपने बाप को बताया कि आज उस की इबादत की कोई रात थी, मगर इसी तरह चालीस रातें गुज़र गईं और वह मर्दे मुजाहिद उस की तरफ मुतवज्जह नहीं हुआ, आख़िर में ख़ुद वह लड़की मुतअस्सिर हो गई और कहा कि ऐ पाकबाज़ नौजवान तू किस का शैदाई और फिदाई है कि मेरी तरफ निगाह उठा कर भी नहीं देखता।

फरमायाः

*मैं मुस्तफा के जामे मुहब्बत का मस्त हूं*
*ये वो नशा नहीं जिसे तुरशी उतार दे*

लड़की सिदक़ दिल से لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ पढ़ कर मुसलमान हो गई और अस्तबल से दो घोड़े लाई, रात ही में दोनों वहां से फरार हो गए और अभी ज़्यादा दूर नहीं पहुंचे थे कि पीछे से घोड़ों के आने की आहट मालूम हुई और जल्द ही वह क़रीब आ गए, देखा तो नौजवान के वही दोनों भाई हैं जो खौलते हुए तेल में डाले गए थे, साथ में फिरिश्तों का एक गिरोह भी था, नौजवान मुजाहिद ने हाल पूछा तो उन लोगों ने बताया कि مَا كَانَتْ اِلَّا الْغَطْسَةَ الَّتِىْ رَاَيْتَ حَتّٰى خَرَجْنَا فِى الْفِرْدَوْسِ यानी बस वही तेल का एक ग़ोता था जो तुम ने देखा उस के बाद हम जन्नतुल फिरदौस में पहुंच गए, फिर दोनों भाइयों ने फिरिश्तों की मौजूदगी में उस लड़की का निकाह अपने भाई से कर दिया और वापस चले गए।

*ज़िंदा हो जाते हैं जो मरते हैं हक़ के नाम पर*
*अल्लाह, अल्लाह मौत को किस ने मसीहा कर दिया*

इस वाक़िआ से जहां यह साबित हुआ कि अल्लाह की राह में क़ुर्बान होने वाले शहीद मरते नहीं हैं बल्कि ज़िंदा हो जाते हैं साथ ही यह भी मालूम हुआ कि मदद के लिये या रसूलल्लाह पुकारना जाइज़ है कि मुजाहिदीन ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व सल्लम को पुकारा था अगर दूर से पुकारना शिर्क होता तो उन्हें जन्नतुल फिरदौस में जगह न मिलती और न छोटे भाई की शादी में फिरिश्तों की शिर्कत होती।

صلى الله على النبى الامى واله صلى الله تعالى عليه وسلم

صلاةً وسلاماً عليك يارسول الله

*सल्लल्लाहु अ़लन्नबिय्यिल् उम्मियी व आलिही सल्लल्लाह तआ़ला अ़लेहि व सल्लम, सलातंव् व सलामन् अ़लैक या रसूलल्लाह।*

# मुहब्बत वाले

शहीदों के अलावा दूसरे लोग जो अल्लाह व रसूल से सच्ची मुहब्बत रखने वाले हैं, मरने के बाद वह भी ज़िंदा रहते हैं।

1933 ई0 का वाक़िआ है कि इराक़ पर हुक्मरानी के ज़माने में शाह फैसल अव्वल को हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के जलीलुल क़द्र सहाबी हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़्वाब में ज़ियारत हुई, उसी हालत में शाह फैसल से फरमाया कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का सहाबी हुज़ैफ़ा हूं, मुझे और हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह को अपनी अपनी क़ब्रों में बेइन्तिहा तक्लीफ पहुंच रही है, हम दोनों को मौजूदा क़ब्रों से निकाल कर दरियाए दजला के कुछ फासिले पर दफ़न किया जाए, मेरी क़ब्र में पानी आ रहा है और जाबिर की क़ब्र में बहुत ज़्यादा नमी आ गई है।

शाह फैसल बेदार हुआ तो हुकूमत के कामों में इस तरह मसरूफ हो गया कि वह रात के ख़्वाब की हिदायत बिल्कुल ही भूल गया। दूसरी रात में हज़रत हुज़ैफ़ा ने फिर उसी तरह हिदायत फरमाई, मगर उस ज़माने में मुल्की और सियासी मामलात में इस क़द्र पेचीदगी पैदा हो गई थी कि शाह फैसल जल्द मुक़द्दस जिस्मों को नई क़ब्रों में मुन्तक़िल न कर सके, उस के बाद हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने ख़्वाब में इराक़ के मुफ्तिए आज़म को इस तरफ तवज्जोह दिलाई और बताया कि वह दो बार शाह फैसल को भी इस के लिये हिदायत कर चुके हैं मगर अभी तक इस पर अमल नहीं हुआ, इस लिये तुम शाह फैसल के पास जा कर कहो कि उन की राय से हमारे जिस्मों को मुनासिब मक़ाम पर मुन्तक़िल किये जाने का इन्तेज़ाम करें।

दूसरे दिन सुब्ह बेदार होते ही मुफ्तिए आज़म नूरी अस्सईद पहले वज़ीरे आज़म इराक़ के पास पहुंचे और उन को अपने साथ लेकर शाह फैसल के सामने बयान किया, शाह फैसल ने उन की ताईद की और

कहा कि बेशक मुसलसल दो रात मुझे इस की हिदायत की गई है मगर मैं अब तक कुछ तो सियासी उलझनों और कुछ मज़हबी पाबंदियों के सबब इस की तरफ तवज्जोह न कर सका, उस के बाद मुफ्तिए आज़म से कहा गया कि अगर आप इस के मुतअल्लिक़ फत्वा सादिर करें तो मैं फौरन इन हज़राते सहाबा के जिस्मों को मुनासिब मक़ाम पर दफन कराके मज़ार तामीर करने का मुकम्मल इन्तेज़ाम कर दूंगा।

मुफ्तिए आज़म ने अपनी आंखों से उन क़ब्रों को देखा, दर हक़ीक़त क़ब्रों तक दरियाए दजला का पानी पहुंच चुका था और यह अंदेशा पैदा हो गया था कि अगर इन मुक़तद्र सहाबए किराम के जिस्मों को जल्द ही दूसरी जगह मुन्तक़िल न किया गया तो मुम्किन है कुछ दिनों बाद दरियाए दजला का सैलाब इन को बहा ले जाए, इस अंदेशे के पेशे नज़र मुफ्तिए आज़म ने सहाबए किराम के जिस्मों को दूसरे मक़ाम पर दफन करने का फत्वा दे दिया और अख़्बारात के ज़रिये इस का ऐलान भी हो गया कि ख़ास ईदुल अज़्हा के दिन बाद नमाज़े ज़ुहर मज़कूरा सहाबियों की क़ब्रें खोली जायेंगी और उनके बा बरकत जिस्मों को एक दूसरी जगह पर दफन कर दिया जाएगा।

अख़्बारात में ऐलान छपते ही यह ख़बर पूरी दुनियाए अरब में फैल गई, हज का ज़माना था, दुनिया के चारों तरफ से तौहीद व रिसालत के परवाने फरीज़ए हज की अदाइगी और ज़ियारत रौज़ए अनवर की ग़रज़ से मक्का मुअज़्ज़मा और मदीना तैय्यिबा में हाज़िर थे लेकिन चूंकि ख़ास ईदुल अज़्हा के दिन सहाबा के जिस्मों को मुन्तक़िल किया जाने वाला था इस लिये जो लोग हज करने गए थे वह इस मौक़े पर शर्फ अंदोज़ नहीं हो सकते थे। तो शाहे इराक़ से दरख़्वास्त की गई कि इन दोनों सहाबियों की क़ब्रों से उन के ज़िस्मों को उस वक़्त निकाला जाए जब हज का ज़माना गुज़र जाए ताकि तमाम मुल्कों के मुसलमान इस सआ़दत में हिस्सा ले सकें।

शाह ने तारीख़ की तब्दीली की मंज़ूरी कर ली और यह ऐलान कर

दिया गया कि मुक़द्दस जिस्मों को मुन्तक़िल करने का काम 20 ज़िल्-हिज्जा को अंजाम दिया जाएगा और साथ ही ऐसा इन्तिज़ाम कर दिया गया कि दरियाए दजला का पानी उन क़ब्रों को कोई मज़ीद नुक़्सान न पहुंचा सके। हस्बे ऐलान 20 ज़िल्-हिज्जा की सुब्ह ही को लाखों मुसलमानों का अज़ीमुश्-शान इज्तिमाअ् इस सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमु की क़ब्रों के गिर्द हो गया। उन तमाम मुसलमानों की मौजूदगी में जब दोनों सहाबियों की क़ब्रें खोली गई तो वाक़ई हज़रत हुज़ैफा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की क़ब्र शरीफ़ में पानी आ रहा था और हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मज़ारे मुबारक में भी ग़ैर मामूली नमी देखी गई।

जब क़ब्रों से मुक़द्दस जिस्म निकाले गए तो लोगों ने देखा कि तेरह सौ साल की लम्बी मुद्दत गुज़र जाने के बा वजूद भी जिस्म बिल्कुल तरो- ताज़ा हैं और अजीब व ग़रीब ख़ुश्बू से महक रहे हैं। ऐसा मालूम होता था कि इन बुज़ुर्गों को विसाल फरमाए हुए शायद मुश्किल से चन्द घन्टे हुए होंगे। उनके चेहरों पर ऐसा नूर फैला हुआ था कि देखने से क़ल्बो-नज़र को सुरूर हासिल होता था और उन पर नज़र नहीं ठहर सकती थी यहां तक कि कफन का कपड़ा भी बिल्कुल ताज़ा मालूम होता था और रीशे मुबारक (दाढ़ी) के बाल बिल्कुल सलामत थे।

और एक बात यह भी निहायत अजीब हुई कि हज़रत हुज़ैफा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के जिस्मे मुबारक को उठाने के लिये स्ट्रीचर का सामने लाया गया तो किसी को हाथ लगाने की ज़रूरत पेश नहीं आई बल्कि वह ख़ुद बख़ुद स्ट्रीचर पर आ गया और हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का जिस्मे अक़्दस भी ऐसे ही आ गया, हाथ लगाने की ज़रूरत नहीं हुई। इन दोनों जिस्मों को उस के बाद दो शीशे ताबूतों में रख दिया गया और फिर बड़ी ऐहतियात के साथ नए मज़ारात में दफन कर दिया गया।

इस मौक़े पर शाह फैसल अव्वल, मुफ्तिए आज़म, वज़ीर आज़म

और दूसरे मुल्कों के बड़े-बड़े उमरा व सुफ़रा भी मौजूद थे। जब यह वाक़िआ अख़्बारात के सफ़हात पर आया तो सारी दुनिया को यह हक़ीक़त तस्लीम करनी पड़ी कि अल्लाह के महबूब बन्दे बादे विसाल भी ज़िंदा रहते हैं।

*आसी शहीदे इश्क़ हूं मुर्दा न जानियो*
*मर कर मिली है ज़िंदगिए जाविदां मुझे*

صلی اللہ علی النبی الامی والہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم
صلاۃ وسلاما علیک یارسول اللہ

*सल्लल्लाहु अलन्नबिय्यिल् उम्मियी व आलिही सल्लल्लाह तआला अलैहि व सल्लम, सलातंव् व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।*

☆☆☆

# विसाल रसूले अक्रम

सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम

الحمدللّٰه رب العالمين، والصلوة والسلام على سيدالمرسلين وعلى اله
واصحابه اجمعين۔ اما بعد فقد قال الله تعالى فى القران المجيد والفرقان الحميد
اعوذ باللّٰه من الشيطٰن الرجيم بسم الله الرحمن الرحيم ۔ وَمَامُحَمَّدٌ اِلَّارَسُوْلٌ قَدْ
خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ اَفَائِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰى اَعْقَابِكُمْ وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰى عَقِبَيْهِ
فَلَنْ يَّضُرَّاللّٰهَ شَيْئًا وَسَيَجْزِى اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ٥(پ:٤،ع:٦)
صدق الله العلى العظيم وصدق رسوله النبى الكريم ونحن على ذٰلك لمن الشاهدين
والشاكرين والحمدللّٰه رب العٰلمين۔

एक बार आप तमाम हज़रात सारी काइनात के आक़ा व मौला जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की बारगाहे बेकस पनाह में बुलंद आवाज़ से दुरूद शरीफ का नज़्राना और हदिया पेश करें।

صلى الله على النبى الامى واله صلى الله تعالىٰ عليه وسلم صلاةً وسلاماً عليك يارسول الله

*सल्लल्लाहु अ़लन्नबिय्यिल् उम्मियी व आलिही सल्लल्लाह तआ़ला अ़लैहि व सल्लम, सलातंव् व सलामन् अ़लैक या रसूलल्लाह।*

जब कोई शख़्स किसी मक़सद और किसी ग़र्ज़ से अपना मर्कज़ छोड़ कर दूसरे मक़ाम पर जाता है तो मक़सद पूरा हो जाने और मतलब हल हो जाने के बाद वह अपने मर्कज़े अस्ली की तरफ वापस हो जाता है हमारे और आप के प्यारे नबी जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के दुनिया में तशरीफ लाने का मक़सद था दीने इस्लाम के अह्काम ख़ुदा के बन्दों तक पहुंचाना और उन को तौहीद परस्त बना कर उन के नुफूस को मुकम्मल तज़्किया फरमाना।

जब आप का मक़सद पूरा हो गया और ख़ुदाए अ़ज़्ज़ व जल्ल ने आयते करीमा اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ (पाराः6,रुकूअ़.5) नाज़िल फरमा कर

आप के दीन के कामिल होने की खुशख़बरी सुनाई और अपनी नेअ्मतें आप पर पूरी फरमा दीं तो आप को अपने मर्कज़े अस्ली मक़ामे कुदस की तरफ जाने का वक़्त क़रीब आ गया, जिस का इल्म आप को बहुत पहले से था इसी लिये हज्जतुल विदाअ् के मौक़े पर आप ने लोगों से फरमाया कि "शायद इस के बाद मैं तुम्हारे साथ हज न कर सकूं।"

मिश्कात शरीफ में हैं हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा फरमाते हैं कि जब सूरए *इज़ा जाअ नस्रुल्लाहि* नाज़िल हुई तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने अपनी लख़्ते जिगर, नूरे नज़र साहिबज़ादी हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा को बुलाया और उन से फरमायाः نُعِيَتْ اِلَىَّ نَفْسِى यानी मुझ को मेरे सफरे आख़िरत की ख़बर दी गई है। यह सुन कर हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा रोने लगीं हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने फरमाया لَا تَبْكِىْ فَاِنَّكِ اَوَّلُ اَهْلِىْ لَاحِقٌ بِىْ यानी ऐ फातिमा! रोओ नहीं, मेरे अहले बैत में तुम ही सब से पहले मुझ से मुलाक़ात करोगी। यह सुन कर हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा हंसने लगीं। यह देख कर अज़्वाजे मुतह्हरात में से बाज़ बीवियों ने हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से दर्याफ्त किया कि पहले हम ने आप को रोते देखा और फिर हंसते देखा, इस का मतलब क्या है? हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा ने कहा कि हुज़ूर ने मुझ को बताया कि आप को आप के सफरे आख़िरत की ख़बर दी गई है। यह सुन कर मैं रोने लगी। आप ने फरमाया रोओ नहीं, मेरे अहले बैत में सब से पहले तू ही मुझ से मिलेगीं यह सुन कर मैं हंसने लगी।

दारमी शरीफ की हदीस है, हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम अपनी उस अलालत में कि जिस में आप ने विसाल फरमाया घर से बाहर तशरीफ लाए इस हाल में कि अपने सर पर कपड़ा बांधे हुए थे, हम लोग उस वक़्त मस्जिद में थे, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला

अलैहि व सल्लम मस्जिद में दाख़िल हो कर मिम्बर की तरफ़ तशरीफ़ ले गए और उस पर रौनक़ अफ़रोज़ हुए। फिर आप ने एक ख़ुत्बा दिया और फ़रमायाः وَالَّذِیْ نَفْسِیْ بِیَدِہٖ اِنِّیْ لَاَنْظُرُ اِلَی الْحَوْضِ مِنْ مَقَامِیْ ھٰذَا यानी क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़ए क़ुद्रत में मेरी जान है कि मैं इस मिम्बर पर बैठे हुए हौज़े कौसर को देख रहा हूं। फिर फ़रमायाः ख़ुदा का एक बन्दा है जिस के सामने दुनिया व आख़िरत की ज़ीनत पेश की गई मगर उस ने आख़िरत को इख़्तियार कर लिया।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का बयान है कि हुज़ूर के इस इरशाद को हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के अलावा और कोई नहीं समझ सका। उन की आंखों से आंसू जारी हो गए और वह रो पड़े और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! हम अपने मां-बाप के साथ आप पर क़ुर्बान हो जाएं। सहाबए किराम हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की इस बात को सुनकर बहुत मुतअज्जिब हुए कि वह ऐसा क्यों फ़रमा रहे हैं, यहां तक कि बाज़ लोगों ने कहा कि इस बूढ़े को देखो, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तो एक बन्दे का हाल बयान फ़रमा रहे हैं कि जिस को ख़ुदाए अज़्ज़ व जल्ल ने दुनिया की तरो-ताज़गी और आख़िरत के दरमियान इख़्तियार दिया है। और वह यह कह रहे हैं कि हम और हमारे मां-बाप आप पर क़ुर्बान हो जाएं, लेकिन राज़दारे नुबुव्वत फ़ौरन समझ गया था कि वह बन्दा ख़ुद हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हैं।

*अस्दकुस्-सादिक़ीन सैय्यिदुल मुत्तक़ीन*
*राज़दारे नुबुव्वत पे लाखों सलाम*

☆☆☆

# शुहदाए उहुद को अपनी ज़ियारत से मुशर्रफ फरमाया

बुख़ारी और मुस्लिम में हज़रत उक़्बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने शुहदाए उहुद पर आठ बरस के बाद नमाज़े जनाज़ा पढ़ी। "हज़रत मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाहि तआला अलैह मिर्क़ात में फरमाते हैं कि यह हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम या शुहदाए उहुद की ख़ुसूसियात में से है कि आप ने आठ बरस के बाद उनपर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी" गोया आप ज़िंदों और मुर्दों को रुख़्सत फरमा रहे हैं। शुहदाए उहुद को अपनी ज़ियारत से मुशर्रफ फरमाने के बाद लौटे तो मिम्बर पर रौनक़ अफ्रोज़ हुए और फरमायाः मैं तुम से पहले जा रहा हूं, मैं तुम लोगों के दअ्वते इस्लाम के क़बूल करने और इताअत व फरमां बरदारी के बजा लाने पर गवाह हूं। और तुम से हमारी मुलाक़ात का मक़ाम हौज़े कौसर है। और मैं इस जगह से हौज़े कौसर को देख रहा हूं। और फरमायाः إِنِّي قَدْ أُعْطِيتُ مَفَاتِيحَ خَزَائِنِ الْأَرْضِ यानी नी बेशक मुझ को ज़मीन के ख़ज़ानों की कुंजियां दी गई हैं।

## आख़िरी वसिय्यत

हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी बुख़ारी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को बुला कर फरमाया कि ऐ बिलाल! जाकर ऐलान कर दो कि सब लोग मस्जिद में जमा हो जाएं, मैं उन को वसिय्यत करूंगा और कह दो कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की यह आख़िरी वसिय्यत होगी, जब हज़रते बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मदीना शरीफ के बाज़ारों और गलियों में ऐलान किया कि रसूलुल्ला

सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की आख़िरी वसिय्यत सुनने के लिय मस्जिदे नबवी में सब लोग जमा हो हाज़िर हो जाएं। तो इस ऐलान को सुन कर लोग इस क़द्र घबरा गए कि दुकानों और घरों को ऐसे ही खुले हुए छोड़ कर मस्जिद में हाज़िर हो गए। और इतने लोग जमा हुए कि मस्जिदे नबवी में गुंजाइश न रही। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम मिम्बर शरीफ पर रौनक़ अफ्रोज़ हुए और तवील खुत्बा फरमाया जो वक़्त और हाल के मुनासिब नसीहत और अह्कामे शरअ़ पर मुश्तमिल था। और फरमाया कि ऐ लोगो! मेरा सफरे आख़िरत क़रीब है, जान व माल और सामान वग़ैरा का कोई भी हक़ किसी शख़्स का मुझ पर हो तो उसका बदला मुझ से ले ले।

(मदारिजुन् नुबुव्वत)

नबीए करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम का यह ऐलान इस लिये था ताकि हुकूकुल इबाद की अहमियत व ज़रूरत उन की उम्मत पर अच्छी तरह वाज़ेह हो जाए और वह एक दूसरे के हुकूक़ की पामाली से हमेशा दूर रहे।

## हुकूक़ की तफ्सील

बिरादराने मिल्लत! हुकूक़ की दो क़िस्में हैं: एक हुकूकुल्लाह दूसरे हुकूकुल इबाद। फिर हुकूकुल्लाह की दो क़िस्में हैं। एक वह कि अगर उन के बारे में बन्दा से कुसूर वाक़ेअ् हुआ, तो वह सिर्फ तौबा से माफ हो सकते हैं जैसे कि शहर में जुमा और ईदैन की नमाज़ छूट जाने के गुनाह, या शराब पीने और नाच वग़ैरा देखने के गुनाह। और दूसरे वह जो सिर्फ तौबा से नहीं माफ हो सकते जैसे नमाज़ न पढ़ने, रोज़ा न रखने, ज़कात व फित्रा न अदा करने और हज व कुर्बानी वग़ैरा न करने के गुनाह कि इनके माफ होने की सूरत सिर्फ तौबा नहीं है बल्कि छूटी हुई नमाज़ों और रोज़ों की क़ज़ा करे, जितने सालों की ज़कात और फित्रा न दिया हो अब अदा करे, साहिबे निसाब होकर जितने साल

कुर्बानी न की हो हर साल के बदले एक बकरा की कीमत सदका करें, खुद हज न कर सकता हो तो हज्जे बदल कराए। माल न रह गया हो तो हज्जे बदल कराने की वसिय्यत करे और तौबा करे तो माफ हो सकते हैं। यानी तौबा के साथ उन की अदाइगी भी ज़रूरी है कि यह चीज़ें सिर्फ तौबा से नहीं माफ हो सकतीं।

और रहे हुकूकुल इबाद यानी बन्दों के हुकूक़ तो वह हुकूकुल्लाह की दूसरी क़िस्म से भी अहम हैं। इस लिये कि खुदाए तआला अर्हमुर् राहिमीन है अगर वह चाहे तो अपने हर क़िस्म के हुकूक़ माफ कर दे लेकिन वह किसी बन्दे का हक़ हरगिज़ नहीं माफ करेगा जब तक कि वह बन्दा न माफ कर दे कि जिस की हक़ तल्फी की गई है। इसी लिये सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने आख़िरी वसिय्यत में ख़ास तौर पर इस की अहमियत को ज़ाहिर फरमाया। और ज़मानए सेहत में भी हमेशा इस की ताकीद फरमाते रहे। मिश्कात शरीफ की हदीस है हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने सहाबए किराम से दर्याफ्त फ़रमायाः أَتَدْرُوْنَ مَا الْمُفْلِسُ यानी क्या तुम लोग जानते हों कि मुफ्लिस और कंगाल कौन है? सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! हम में मुफ्लिस वह शख़्स है कि जिस के पास न पैसे हों और न सामान। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मेरी उम्मत में दरअसल मुफ्लिस वह शख़्स है कि जो क़ियामत के दिन नमाज़, रोज़ा और ज़कात वग़ैरा लेकर इस हाल में आएगा कि उस ने किसी को गाली दी होगी, किसी पर तोहमत लगाई होगी, किसी का माल खा लिया होगा, किसी का ख़ून बहाया होगा और किसी को मारा होगा। तो अब उन लोगों को राज़ी करने के लिये उस शख़्स की नेकियां उन मज़्लूमों के दरमियान तक़्सीम की जाएंगी। अगर उस की नेकियां ख़त्म हो जाने के बाद भी लोगों के हुकूक़ उस पर बाक़ी रह जाएंगे तो अब हक़दारों के गुनाह लाद दिये जायेंगे यहां तक कि उसे

दोज़ख़ में फेंक दिया जाएगा। العياذ بالله تعالى *अल्-इयाज़ु बिल्लाहि तआला*

बेशक मेरे सरकार ने सहीह फ़रमाया, हक़ीक़त में मुफ़्लिस और ग़रीब वही शख़्स है कि जिस के पास क़ियामत के दिन नेकियां नहीं होंगी। या वह बहुत सी नेकियां लेकर आएगा मगर हुक़ूक़ुल इबाद में गिरफ़्तार होगा। मां-बाप को सताया होगा, पड़ोसी को तक्लीफ़ दी होगी। भाई का हक़ मार लिया होगा। मां-बाप के मरने पर बहन का हक़ नहीं दिया होगा या दादा के इन्तेक़ाल पर फूफी का हक़ ग़सब कर लिया होगा। तो क़ियामत के दिन उस की सारी नेकियां उन लोगों को दे दी जायेंगी जिस की उस ने हक़ तल्फ़ी की होगी, यहां तक कि उस के पास कोई नेकी नहीं रह जाएगी। तो हक़ीक़त में ग़रीब वही शख़्स है, इस लिये कि दुनिया का ग़रीब अगर उस के पास खाना न हो तो मांगने से कहीं मिल जाएगा, कपड़ा न हो तो वह भी कहीं से पा जाएगा। सर्दी में रज़ाई या कम्बल न हो तो किसी का रहम आ जाएगा वह भी हासिल हो जाएगा और रहने के लिये घर न हो तो सर छुपाने के लिये कहीं कोई जगह मिल ही जाएगी, लेकिन क़ियामत के दिन जब नेकियां नहीं होंगी तो वह कहीं से नहीं मिलेंगी। पारा:21, रुकूअ्:13 में इरशादे ख़ुदा वन्दी है: يَٰٓأَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمْ وَاخْشَوْا يَوْمًا لَّا يَجْزِي وَالِدٌ عَن وَلَدِهِ وَلَا مَوْلُودٌ هُوَ جَازٍ عَن وَالِدِهِ شَيْئًا यानी ऐ लोगो! अपने रब से डरो, और उस दिन का ख़ौफ़ करो जिस में कोई बाप अपने बच्चे के काम न आएगा और न कोई काम वाला बच्चा अपने बाप को कुछ फ़ायदा पहुंचाएगा। और पारए 30 सूरए अबस में इरशादे रब्बे ज़ुल्-जलाल है: يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ وَأُمِّهِ وَأَبِيهِ وَصَاحِبَتِهِ وَبَنِيهِ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُغْنِيهِ यानी क़ियामत का दिन वह हवलनाक दिन होगा कि आदमी अपने भाई से भगेगा, अपने मां-बाप से भागेगा यहां तक कि अपनी बीवी और बेटों से भी राहे फ़रार इख़्तियार करेगा। उन में से हर एक को उस दिन अपनी नजात की एक फ़िक्र होगी कि वही उस के लिये बस होगी। मतलब यह है कि कोई किसी की मदद करने और नेकी देने को तैयार न होगा। तो

हक़ीक़त में ग़रीब वही शख़्स है कि जिस के पास क़ियामत के दिन नेकियां न रहेंगी। (दुरूद शरीफ़)

बाज़ लोग इस ग़लत फ़हमी में मुब्तला हैं कि हज करने से छोटा बड़ा सारा गुनाह माफ़ हो जाता है, ज़िंदगी भर नमाज़ नहीं पढ़ते, रोज़ा नहीं रखते, ज़कात नहीं देते, दूसरों की ज़मीनों, दुकानों और जायदादों पर ना जाइज़ क़बज़ा कर लेते हैं, ग़लत कामों में पूरी ज़िंदगी गुज़ारते हैं और जब देखते हैं कि मरने का वक़्त आ गया तो हज कर लेते हैं और समझते हैं कि सारा गुनाह माफ़ हो गया और हम ऐसे हो गए जैसे कि अभी मां के पेट से पैदा हुए हों।

तो ऐ मुसलमानों! आला हज़रत पेशवाए अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह अपने रिसालए मुबारका अअ्ज़बुल इमदाद में इस मस्अले की नफ़ीस तहक़ीक़ फ़रमाई जिस का ख़ुलासा हम आप के सामने पेश करते हैं ताकि हज से गुनाहों की माफ़ी का मस्अला अच्छी तरह वाज़ेह हो जाए।

वह फ़रमाते हैं कि जिस ने पाक माल, पाक कमाई, पाक नियत से हज किया और उस में लड़ाई झगड़ा नीज़ हर क़िस्म के गुनाह और ना फ़रमानी से बचा फिर हज के बाद फ़ौरन मर गया, इतनी मोहलत न मिली कि जो हुक़ूक़ुल्लाह या हुक़ूक़ुल इबाद उस के ज़िम्मे थे उन्हें अदा करता या अदा करने की फ़िक्र करता तो हज क़बूल होने की सूरत में उम्मीदे क़वी है कि अल्लाह तआला अपने तमाम हुक़ूक़ को माफ़ फ़रमा दे और हुक़ूक़ुल इबाद को अपने ज़िम्मए करम पर लेकर हक़ वालों को क़ियामत के दिन राज़ी करे और ख़ुसूमत से नजात बख़्शे।

और अगर हज के बाद ज़िंदा रहा और हत्तल इम्कान हुक़ूक़ का तदारुक कर लिया, यानी सालहाए गुज़िश्ता मा बक़िया ज़कात अदा कर दी, छूटी हुई नमाज़ और रोज़े की क़ज़ा की, जिस का हक़ मार लिया था उस को या मरने के बाद उसके वारिसीन के दे दिया, जिसे तक्लीफ़ पहुंचाई थी माफ़ करा लिया, जो साहिबे हक़ न रहा उस की तरफ़ से

सदका कर दिया। अगर हुकूकुल्लाह और हुकूकुल इबाद में से अदा करते करते कुछ रह गया तो मौत के वक़्त अपने माल में से उन की अदाइगी की वसिय्यत कर गया। खुलासा यह कि हुकूकुल्लाह और हुकूकुल इबाद से छुटकारे हर मुम्किन कोशिश की तो उस के लिये बख़्शिश की और ज़्यादा उम्मीद है। हां अगर हज के बाद कुद्रत होने के बा वजूद इन उमूर से गफ्लत बरती, इन्हें अदा न किया, तो यह सब गुनाह अज़ सरे नौ उस के ज़िम्मे होंगे, इस लिये कि हुकूकुल्लाह और हुकूकुल इबाद तो बाक़ी ही थे, उन की अदाइगी में ताख़ीर करना फिर ताज़ा गुनाह हुआ जिस के इज़ाले के लिये वह हज काफी न होगा, इस लिये कि हज गुज़रे हुए गुनाहों यानी वक़्त पर नमाज़ और रोज़ा वग़ैरा अदा न करने की तक़्सीर धोता है। हज से कज़ा शुदा नमाज़ और रोज़ा हरगिज़ नहीं माफ होते और न आइन्दा के लिये परवानए आज़ादी मिलता है। انتهى كلامه

और हज़रत अल्लामा इब्ने आबिदीन शामी रहमतुल्लाहि अलैह इस मस्अले पर बहस करने के बाद तहरीर फरमाते हैं। खुलाए कलाम यह है कि कर्ज़ की अदाइगी में देर लगाना और नमाज़ व ज़कात वग़ैरा को अदा करने में ताख़ीर करना चूंकि यह हुकूकुल्लाह में से हैं इस लिये फक़त ताख़ीर का गुनाह जो माज़ी में हो चुका वह माफ हो जाएगा लेकिन असल कर्ज़ और नमाज़ व ज़कात वग़ैरा फराइज़ की अदाइगी में जो आइन्दा ताख़ीर होगी वह माफ नहीं होगी। अल्लामा शामी बहरुर राइक़ के हवाले से लिखते हैं कि हज जो गुनाहों का कफ्फारा हो जाता है, उस का यह मतलब नहीं है कि कर्ज़ की अदाइगी और सौम व सलात की कज़ा उसके ज़िम्मे से साकित हो जाती है जैसा कि बहुत से लोगों का वहम है, इस लिये कि उम्मत में से कोई भी इस का काइल नहीं है। फिर अल्लामा शामी तहरीर फरमाते हैं कि तो यक़ीन के साथ नहीं कहा जा सकता कि हज उन कबीरा गुनाहों का कफ्फारा हो जाता है जो हुकूकुल्लाह हैं तो फिर भला हुकूकुल इबाद का कफ्फारा क्यों कर

हो सकता है?

दुआ है कि खुदाए अज़्ज़ व जल्ल हम सब को पूरे-पूरे हुकूकुल्लाह और हुकूकुल इबाद अदा करने की तौफीके रफ़ीक़ बख़्शे। और दुनिया व आख़िरमत में हमें मुफ्लिसी के अज़ाब से महफूज़ रखे। आमीन

(दुरूद शरीफ)

शेख़ मोहक्क़िक़ लिखते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने आख़िरी वसिय्यत के खुत्बे में यह भी फरमाया कि ऐ लोगो! जिस शख़्स पर कोई हक़ हो उसे चाहिये कि वह अदा करे और यह ख़्याल न करे कि रुस्वाई होगी इस लिये कि दुनिया की रुस्वाई आख़िरत की रुस्वाई से बहुत आसान हैं। आप के इस ऐलान पर एक सहाबी उठे और उन्हों ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! हम ने माले ग़नीमत में ख़्यानत की थी और उस में से तीन दिरम ले लिया था, हुज़ूर ने उन से दरियाफ्त फरमाया कि किस चीज़ ने तुम को ख़्यानत करने पर मजबूर किया, उन्हों ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मुझे तीन दिरम की ज़रूरत थी, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने हज़रते फज़ल रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को हुक्म फरमाया कि इन से तीन दिरम ले लो। (मदारिजुन् नुबुव्वत)

कितने अच्छे थे वह कि उन्हों ने आख़िरत की रुस्वाई से बचने के लिये भरे मजमे में दुनिया की रुस्वाई इख़्तियार की, अपनी ख़्यानत का ऐलान कर दिया और आख़िरत की रुस्वाई से बचने के लिये दुनिया की रुस्वाई में कोई आर नहीं महसूस की। दुआ है कि खुदाए ज़ुल जलाल हम सब को हुज़ूर और उनके सहाबा के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफीक़ मरहमत फरमाए और आख़िरत की रुस्वाई से बचने का पूरा जज़्बा नसीब फरमाए। आमीन (दुरूद शरीफ)

## अ़लालत की इब्तिदा

हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के मरज़े वफात की कब इब्तिदा हुई? इस के बारे में लोगों ने इख़्तिलाफ किया है। हज़रत शेख़

अब्दुल हक मोहद्दिसे देहलवी बुख़ारी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि जब माहे सफर के ख़त्म होने में एक या दो रोज़ बाक़ी रह गए थे तब अलालत की इब्तिदा हुई, यानी सर में दर्द पैदा हुआ। और हज़रत सुलैमान तैमी जोकि सिक़ह (मोअ्तबर) लोगों में से हैं उन्हों ने इस बात पर जज़्म किया है कि 22 सफर को मिजाज़े मुबारक नासाज़ हुआ।

(अश्अतुल् लमआत)

मिजाज़े अक्दस की नासाज़ी के ज़माने में आप पांच दिन तक अज़ राहे अद्ल बारी-बारी एक-एक ज़ौजए मोहतरमा के हुजरे में तशरीफ़ ले जाते रहे, जब मरज़ में बहुत शिद्दत पैदा हो गई तो अज़्वाजे मुतह्हरात की इजाज़त से हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के हुजरए मुबारका में क़ियाम फरमाया और जब तक ताक़त रही आप खुद ही मस्जिदे नबवी में नमाज़ें पढ़ाने के लिये तशरीफ़ लाते रहे।

बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस है हज़रत अबू मूसा अश्अरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के मरज़ ने जब ग़लबा किया तो आप ने फरमायाः مُرُوا اَبَا بَكرٍ فَلْيُصَلِّ بِالنَّاسِ यानी अबू बकर से कहो कि वह लोगों को नमाज़ पढ़ाएं। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! वह नर्म दिल आदमी हैं, आपकी जगह खड़े होकर नमाज़ नहीं पढ़ा सकेंगे, दोबारा फरमायाः अबू बकर से कहो कि वह नमाज़ पढ़ाएं, हज़रत सिद्दीक़ा ने फिर वही उज़्र पेश किया तो हुज़ूर ने तीसरी बार वही हुक्म बताकीद फरमाया तो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने नमाज़ पढ़ाई। हुज़ूर की हयाते ज़ाहिरी में उन्हों ने कुल 17 नमाज़ें पढ़ाईं। उलमाए किराम फरमाते हैं कि इस हदीस में बहुत वाज़ेह दलालत है कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मुतलक़न तमाम सहाबा से अफ्ज़ल और ख़िलाफ़त व इमामत के सब से ज़्यादा हक़दार हैं।

# हदीसे किरतास

बुख़ारी व मुस्लिम में है कि वफात से चार दिन पहले जुमेरात को जब सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का दर्द बहुत बढ़ गया तो आप ने फरमाया कि मेरे पास शानह का हड्डी लाओ, मैं तुम्हारे लिये एक तहरीर लिख दूं ताकि उस के बाद तुम न बहको तो सहाबा में इख़्तिलाफ हो गया, हज़रत उमर फारूक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा कि इस वक़्त हुज़ूर को बीमारी की तक्लीफ ज़्यादा है, तुम्हारे पास कुरआन है, वही अल्लाह की किताब तुम्हारे लिये काफी है। बाज़ लोग कहते थे कि हुज़ूर के पास लिखने का सामान रख दो। और कई लोगों ने कहा مَا شَأْنُهُ أَهَجَرَ اسْتَفْهِمُوهُ यानी हुज़ूर का क्या हाल है? क्या जुदाई का वक़्त क़रीब आ गया? आप से दरयाफ्त करो। बाज़ सहाबा ने लिखने के बारे में आप से दरयाफ़्त करना शुरू किया तो जवाब में आप ने फरमाया कि मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो। इस लिये कि मैं जिस हालत में हूं वह उस से बेहतर है कि जिस की तरफ तुम मुझे बुला रहे हो।

बाज़ लोगों का ख़्याल है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ख़िलाफत का मामला लिखना चाहते थे मगर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के रोक देने से यह अहम मामला रह गया तो इस शुब्हा का जवाब यह है कि ख़िलाफत का मामला लिखना हरगिज़ मनज़ूर न था, इस लिये कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िलाफत के मुतअल्लिक़ हुज़ूर न उसी मरज़ में इरादा फरमाया था जैसा कि मुस्लिम शरीफ:2/273, में है कि हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से फरमाया कि अपने बाप अबू बकर और अपने भाई को बुलाओ ताकि मैं उन के लिये वसिय्यत नामा लिख दूं। इस लिये कि मैं डरता हूं कि कोई आरज़ू करने वाला आरज़ू करे या कोई कहने वाला कहे कि मैं अफ्ज़ल हूं, हालां कि ख़ुदाए तआला और मोमिनीन अबू बकर के अलावा किसी को कबूल न करेंगे,

मगर ऐसा इरादा फरमाने के बाद फिर हज़रत उमर या किसी दूसरे की मुमानअ़त के बग़ैर हुज़ूर ने ख़ुद बख़ुद लिखना मौकूफ कर दिया। और फिर अगर ख़िलाफत के लिये वसिय्यत ही करनी थी तो इस के लिये लिखना ज़रूरी न था बल्कि जो लोग हुजरए मुबारका में मौजूद थे उन के सामने ज़बानी वसिय्यत कर देना ही काफी था।

नोटः इस मस्अले के बारे में हमारा रिसाला "बाग़े फिदक और हदीसे क़िरतास" देखें। अमजदी

बुख़ारी और मुस्लिम में है कि एक दिन ज़ुहर की नमाज़ के वक़्त आप को कुछ इफाक़ा हुआ तो आप खड़े हुए और हज़रत अब्बास व हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा के सहारे मस्जिद में तशरीफ लाए, हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु नमाज़ पढ़ा रहे थे, जब उन्हों ने आप की आहट महसूस की तो पीछे हटने लगे, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने उन्हें इशारा फरमाया कि न हटो, आप हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की बाईं जानिब बैठ गए, यानी उन को अपने दाहिने किया और इस तरह आप ने बैठ कर नमाज़ पढ़ाई। आप को देख कर हज़रत अबू बकर, और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को देख कर दूसरे लोग नमाज़ के अर्कान अदा करते रहे। नमाज़ के बाद आप ने एक ख़ुत्बा दिया जिस में आप ने सहाबए किराम को बहुत सी वसिय्यतें फरमाईं।

हदीस शरीफ में है जब कि आप की अलालत बहुत सख़्त हो चुकी थी आप को याद आया कि मेरी मिलकियत में 6-7 अशरफियां हैं, आप ने हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा को हुक्म फरमाया कि इसे ख़ैरात कर दें मगर वह मशग़ूलियत के सबब ख़ैरात न कर सकीं। तो हुज़ूर ने ख़ुद उन अशरफियों को मंगा कर ख़ैरात कर दिया और फरमाया कि अल्लाह का नबी ख़ुदाए तआ़ला से इस हाल में मिले कि अशरफियां उस के क़बज़े में हों तो यह मक़ामे नुबुव्वत के मनाफी है। (अश्अ़तुल् लमआ़त)

मरज़ में कमी बेशी होती रहती थी। दोशंबा के रोज़ जिस दिन आप की वफात हुई, सुब्ह के वक़्त आप की तबीअ़त बज़ाहिर पुर सुकून थी मगर दिन जैसे जैसे बढ़ता जाता था आप पर बार-बार ग़शी तारी होती थी और फिर इफाक़ा हो जाता था।

बुख़ारी शरीफ में है हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा फरमाती हैं कि वफात से कुछ पहले मेरे सीने से टेक लगाए बैठे थे कि मेरे भाई अब्दुर रहमान बिन अबू बकर इस हाल में आए कि उन के हाथ में मिस्वाक थी, मैं ने देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम अब्दुर रहमान की तरफ देख रहे हैं, मैं जानती थी कि आप मिस्वाक को बहुत पसंद फरमाते हैं, मैं ने अर्ज़ किया, क्या मैं अब्दुर रहमान से आप के लिये मिस्वाक ले लूं, आप ने सर के इशारे से फरमाया कि हां ले लो, मैं ने अब्दुर रहमान से मिस्वाक लेकर आप को दे दी मगर आप को उस मिस्वाक को चबाना दुश्वार मालूम हुआ इस लिये कि वह सख़्त थी, मैं ने अर्ज़ किया क्या मैं इस मिस्वाक को नर्म कर दूं, आप ने इजाज़त दे दी, तो मैं ने मिस्वाक को नर्म कर दिया और आप ने उस को अपने दांतों पर फेरा। (दुरूद शरीफ)

आप के सफरे आख़िरत का वक़्त क़रीब आ रहा था। सांस की घर- घराहट सीने में महसूस होती थी। इसी दरमियान में लबे मुबारक हिले तो लोगों ने यह अल्फाज़ सुने اَلصَّلٰوۃُ وَمَا مَلَکَتْ اَیْمَانُکُمْ यानी नमाज़ और गुलाम व बांदी।

मिश्कात शरीफ में है कि वफात के दिन हज़रत जिब्रील अलैहिस् सलाम आए तो उन के साथ एक फिरिश्ता और था जो एक लाख फिरिश्तों का अफ्सर था जिन में से हर एक फिरिश्ता एक-एक लाख फिरिश्तों का अफ्सर था। उस फिरिश्ते ने हाज़िरी की इजाज़त तलब की, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने जिब्रील से उस के बारे में पूछा, हज़रत जिब्रील ने अर्ज़ किया कि यह मौत का फिरिश्ता है, हाज़िरी की इजाज़त चाहता है। और आज से पहले न तो इस ने

किसी से इजाज़त तलब की है और न आइन्दा इस के बाद किसी आदमी से इजाज़त तलब करेगा। आप ने फरमाया उस को बुला लो। तो हज़रत जिब्रील ने उसे बुला लिया, उस ने हाज़िर हो कर सलाम किया और फिर अर्ज़ किया या रसूलल्लाह!

खुदाए तआला ने मुझे आप की ख़िदमत में भेजा है, अगर आप हुक्म देंगे तो मैं आप की रूह को कब्ज़ करूंगा वरना छोड़ दूंगा, सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया क्या तू मेरी मरज़ी के मुताबिक़ अमल करेगा, मौत के फिरिश्ते ने अर्ज़ किया हां, मुझ को यही हुक्म दिया गया है कि जो कुछ आप फरमाएं उसी के मुताबिक़ अमल करूं। रावी का बयान है कि यह सुन कर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत जिब्रील की तरफ देखा, जिब्रील अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! إِنَّ اللّٰهَ قَدِ اشْتَاقَ إِلٰى لِقَائِكَ यानी अल्लाह तआला आप की मुलाकात का मुश्ताक़ है। तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मौत के फिरिश्ते से फरमाया कि जिस बात का तुझ को हुक्म दिया गया उस पर अमल कर।

बुख़ारी और मुस्लिम में हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फरमाती हैं कि जब मौत का फिरिश्ता हाज़िर हुआ उस वक़्त हुज़ूर का सरे मुबारक मेरी रान पर था, आप पर ग़शी तारी हुई फिर होश आया तो आप छत की तरफ देखने लगे। और बुख़ारी शरीफ की एक और रिवायत में है कि ऐने विसल के वक़्त हुज़ूर का सरे मुबारक हज़रत आइशा के सीने और हलक़ के दरमियान था और क़रीब में पानी का एक बर्तन रखा हुआ था, आप उस पानी में हाथ डालते और उन को चेहरे पर फेर लेते और फरमाते थे *'लाइलाह इल्लल्लाह'* और मौत के सख़्तियां हैं। फिर हुज़ूर ने आसमान की तरफ हाथ उठाए और फरमाने लगे فِي الرَّفِيقِ الْأَعْلٰى यानी ऐ अल्लाह! मुझे रफीक़े अअ्ला में कर दे। या यह मतलब था कि मैं रफीक़े अअ्ला में आना चाहता हूं। और एक रिवायत में है कि फरमायाः اِخْتَرْتُ الرَّفِيقَ الْأَعْلٰى यानी मैं ने रफीक़े

अअ्ला को इख़्तियार किया। (अश्अतुल् लमआत) यही कहते-कहते हाथ लटक गए और रूहे कुदसी आलमे कुदुस में पहुंच गई। إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।* (दुरूद शरीफ)

## विसाल का असर

बिरादराने इस्लाम! सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की वफात हस्रते आयात से अहले बैत और सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम को जो सद्मा पहुंचा वह बयान से बाहर है। लोग हुज़ूर की मुहब्बत में होश व हवास खो बैठे, उन की समझ में नहीं आता था कि अब क्या करें। हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की यह हालत हो गई कि उन पर सक्ता तारी हो गया, बोलने की ताक़त नहीं रह गई, हालते बेक़रारी में इधर से उधर आते जाते थे। मगर किसी से कुछ कहते नहीं थे। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इस क़द्र ग़म से निढाल हो गए कि एक जगह बैठ गए और हिलने की ताक़त नहीं रखते थे। और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का यह हाल हुआ कि वह नंगी तलवार लेकर मदीना शरीफ के बाज़ार और गलियों में घूमते थे और फरमाते थे कि जो कहेगा कि हुज़ूर की वफात हो गई, मैं इसी तलवार से उस की गर्दन उड़ा दूंगा। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु विसाल के वक़्त अपने घर थे, जब यह ख़बर सुनी तो रोते हुए और वा मुहम्मदाह! के नारे लगाते हुए मस्जिद शरीफ में हाज़िर हुए, देखा कि सहाबए किराम हैरान व परेशान हैं, आप ने किसी से कुछ बात नहीं की और न किसी की तरफ मुतवज्जह हुए, सीधे हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के हुजरए मुबारका में पहुंचे। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के मुबारक चेहरे से चादर हटाई और पेशानिए अनवर को बोसा दिया, रोते हुए बाहर निकले। ख़ुदाए तआला का उन पर यह ख़ालिस फ़ज़्ल हुआ कि हुज़ूर से इन्तिहाई मुहब्बत के बा वजूद उन के होश व हवास बजा रहे। आप मस्जिद में तशरीफ लाए, उस वक़्त हज़रत उमर

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मस्जिद में मौजूद थे, आप ने उन से फरमाया ऐ उमर! बैठ जाओ, उन्हों ने इनकार कर दिया और कहा कि हम नहीं बैठेंगे। तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उन्हें छोड़ दिया और लोगों की तरफ मुतवज्जह होकर ख़ुत्बा देना शुरू किया।

फरमायाः ऐ लोगो! कान खोल कर सुन लो, जो शख़्स मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की इबादत करता था तो वह जान ले कि उन का विसाल हो गया और जो ख़ुदाए तआला की इबादत करता था वह सुन ले कि ख़ुदा ज़िंदा है वह कभी नहीं मरेगा, उस पर कभी मौत नहीं तारी हो सकती, फिर आप ने वह आयते करीमा तिलावत फरमाई जिस के पढ़ने का शर्फ हम इब्तिदाए तक़रीर में हासिल कर चुके हैं, وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तो एक रसूल हैं قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ उन से पहले और रसूल हो चुके, اَفَاِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰى اَعْقَابِكُمْ तो क्या अगर वह इन्तिक़ाल फरमाएं या शहीद हों तो तुम उल्टे पांव फिर जाओगे? وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰى عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْـًٔا और जो उल्टे पांव फिरेगा तो वह अल्लाह का कुछ नुक़्सान न करेगा وَسَيَجْزِى اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ और अन्क़रीब अल्लाह तआला शुक्र करने वालों को सिला अता फरमाएगा। यानी जो अपने दीन पर साबित रहेंगे और नहीं फिरेंगे वह गिरोह शाकिरीन में से हैं, ख़ुदाए तआला उन को अज्रे अज़ीम अता फरमाएगा।

बुख़ारी शरीफ में है कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के इस आयते करीमा की तिलावत फरमाने से लोगों को ऐसा मालूम हुआ कि गोया कोई इस आयते करीमा को जानता ही न था, उन से सुन कर अब इसी आयते करीमा को हर शख़्स पढ़ने लगा। और मदारिजुन् नुबुव्वत में है, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि जब हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मैं ने यह आयते करीमा सुनी तो मुझे ऐसा महसूस हुआ कि इस से पहले मैं ने इस आयते करीमा को सुना ही न था, सुनने के बाद मुझे

मालूम हो गया कि वाक़ई रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का विसाल हो गया। इस यक़ीन के बाद मेरे बदन में लर्ज़ा पैदा हुआ और मैं ज़मीन पर गिर पड़ा। और हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा का बयान है कि गोया हमारी निगाहों पर पर्दा पड़ा हुआ था जिसको हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के खुत्बे ने उठा दिया, उनसे सुनकर अब इसी आयते करीमा को हर शख़्स पढ़ने लगा जिससे लोगों को कुछ सुकून हासिल हो गया। (दुरूद शरीफ)

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने जब कुरआने मजीद की आयते करीमा पढ़ कर सुनाई तो अगर्चे इस से लोगों को कुछ सुकून हासिल हो गया लेकिन अब इतना वक़्त नहीं बाक़ी रह गया था कि उसी रोज़ तजहीज़ व तक्फ़ीन हो सके, इस लिये दूसरे रोज़ सह शंबा (मंगल) को यह काम अंजाम पाया।

## तजहीज़ व तक्फ़ीन

मदारिजुन् नुबुव्वत में है कि वसिय्यत के मुताबिक़ जब अज़ीज़ व अक़ारिब ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को वफात के बाद गुस्ल देना चाहा तो आवाज़ आई कि अल्लाह के रसूल को गुस्ल न दो कि वह पाक व साफ हैं, उन्हें गुस्ल की हाजत नहीं, आवाज़ किस ने दी और किधर से आई? लोगों ने बहुत छान बीन की मगर कुछ पता नहीं चला, मालूम हुआ कि ग़ैब से अवाज़ आई है तो बाज़ लोगों ने चाहा कि ग़ैबी आवाज़ पर अमल किया जाए और गुस्ल न दिया जाए तो हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने फरमाया कि ऐसी आवाज़ के सबब जिस की हक़ीक़त से हम वाक़िफ नहीं है कि वह कहां से आई है और कहने वाला कौन है हम इस्लाम के तरीक़े को हरगिज़ नहीं छोड़ सकते, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को हम गुस्ल ज़रूर देंगे, इतने में फिर दूसरी ग़ैबी आवाज़ आई कि अल्लाह के रसूल को गुस्ल दिया जाए, पहली आवाज़ इब्लीस की

थी और मैं ख़िज़र हूं।

हज़रत ख़िज़र अलैहिस्सलाम की आवाज़ के बाद जब लोगों ने ग़ुस्ल का इरादा किया तो फिर एक दूसरा इख़्तिलाफ पैदा हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को उनके पैराहन मुबारक में ग़ुस्ल दिया जाए या दूसरे लोगों की तरह बरहना करके नहलाया जाए? अभी कोई फैसला नहीं हो पाया था कि एक तरफ से फिर ग़ैबी आवाज़ आई, अल्लाह के रसूल को बरहना मत करों, उन को उन्हीं के पैराहन मुबारक में ग़ुस्ल दो। अब हज़रत अली, हज़रत अ़ब्बास, हज़रत फज़ल बिन अब्बास, हज़रत कुस्म बिन अब्बास, हज़रत उसामा बिन ज़ैउ रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने मिल-जुल कर आप को ग़ुस्ल दिया और हज़रत औस बिन ख़ौला अन्सारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पानी का घड़ा भर-भर कर लाते थे, ग़ुस्ल के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व सल्लम की नाफे मुबारक और पल्कों पर पानी के जो क़तरे और तरी रह गई थी, जोशे अक़ीदत में हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उसको अपनी ज़बान से चाट कर पी लिया। आप फरमाते थे कि उस की बरकत से मेरा इल्म और कुव्वते हाफिज़ा बहुत बढ़ गई।

अश्अ़तुल् लमआ़त में है कि ग़ुस्ल के बाद हुज़ूर को तीन सफेद सूती कपड़ों का कफन दिया गया जो यमन के एक गांव "सहोल" के बने हुए थे।

## क़ब्र शरीफ

सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व सल्लम को कहां दफन किया जाए, इस के मुतअ़ल्लिक़ सहाबा में इख़्तिलाफ हुआ, एक जमाअ़त ने कहा कि उसी हुजरे में दफन किया जाए जहां आप की वफात हुई, और एक गिरोह ने मशवरा दिया कि मस्जिदे नबवी आप का मदफन होना चाहिये। बाज़ सहाबा ने राय दी कि जन्नतुल बक़ीअ् जो मदीना शरीफ का आम क़ब्रिस्तान है उस में दफन किया जाए और कुछ लोगों ने कहा कि बैतुल मुक़द्दस में आप की क़ब्र होनी चाहिये इस

लिये कि वहां बहुत से अंबियाए किराम की कब्रें हैं। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि मैं ने रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से सुना है कि हर नबी वहीं दफन किया गया जहां उस की वफात हुई है। और एक रिवायत में है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि रूए ज़मीन पर खुदाए तआला के नज़्दीक उस जगह से बढ़ कर कोई जगह अज़मत और बुज़ुर्गी वाली नहीं है कि जहां अल्लाह के रसूल का विसाल हुआ है। इस गुफ्तगू के बाद तमाम सहाबए किराम हुजरए आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा में हुज़ूर को दफन करने पर मुत्तफिक़ हो गए और वही जगह क़ब्र शरीफ के लिये मुतअय्यन हो गई। (दुरूद शरीफ)

मिश्कात शरीफ में है हज़रत उर्वा बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि मदीना शरीफ में दो आदमी क़ब्र खोदा करते थे, एक उन में हज़रत अबू तलहा अन्सारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु थे, जो मदीना शरीफ के रेवाज के मुताबिक़ लहद यानी बग़ली क़ब्र खोदा करते थे और दूसरे हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु थे जो बग़ली नहीं खोदते थे, बल्कि शक़ यानी संदूक़ी क़ब्र बनाते थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के विसाल पर सहाबा में इख़्तिलाफ हुआ कि किस तरह की क़ब्र खोदी जाए, तो लोगों ने आपस में यह तैय किया कि दोनों साहिबों के पास आदमी भेजा जाए जो उन में से पहले आएगा वह अपना काम करेगा। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने दुआ की या रब्बल आलमीन! क़ब्र के बारे में अपने प्यारे रसूल के लिये वह सूरत इख़्तियार फरमा जो तुझे महबूब व पसंदीदा हो। और क़ब्र खोदने वालों के पास बुलाने के लिये आदमी भेजे गए तो पहले हज़रत अबू तल्हा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आए जो लहद खोदा करते थे तो उन्हों ने सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के लिये बग़ली क़ब्र तैयार की।

# नमाज़े जनाज़ा

अअ़्ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरेलवी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह फतावा रज़विया जि0:4 में तहरीर फरमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के जनाज़ए अक़्दस पर नमाज़ के बारे में फुक़हाए किराम की मुख़्तलिफ राएं हैं, बहुत से उलमा आम लोगों की नमाज़े जनाज़ा की तरह मानते हैं। वह फरमाते हैं कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के दस्ते हक़ परस्त पर जब तक बैअ़त न हुई थी लोग फौज दर फौज हुजरए मुबारका में आते और जनाज़ए अक़्दस पर नमाज़ पढ़ते जाते, जब बैअ़त हो गई तो वलिए शरअ़ हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ हुए, उन्हों ने जनाज़ए मुबारका पर नमाज़ पढ़ी फिर उन के बाद किसी ने नहीं पढ़ी कि वली के पढ़ने के बाद फिर किसी को नमाज़े जनाज़ा पढ़ने का इख़्तियार नहीं होता। और बाज़ लोग कहते हैं कि जिस तरह नमाज़े जनाज़ा आम तौर पर होती है, हुज़ूर की नमाज़े जनाज़ा उस तरह नहीं हुई बल्कि लोग गिरोह दर गिरोह हाज़िर होते और सलात व सलाम अर्ज़ करते जिस की ताईद हदीस शरीफ से भी होती है। बैहक़ी और तबरानी वग़ैरा में है हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह ने फरमाया कि जब मेरे गुस्ल व कफन से फारिग़ हो जाओ तो मुझे नअ़्शे मुबारक पर रख कर बाहर चले जाओ, सब से पहले जिब्रील मुझ पर सलात करेंगे फिर मीकाईल फिर इस्राफील फिर मलकुल् मौत अपने सारे लश्करों के साथ और फिर गिरोह दर गिरोह मेरे पास हाज़िर हो कर मुझ पर दुरूद व सलाम अर्ज़ करते जाओ। इन्तहा कलामहू

जिस हुजरए मुबारका में विसाल हुआ, गुस्ल व कफन के बाद वहीं रखा गया, लोग हर चहार तरफ से नमाज़े जनाज़ा के लिये टूट पड़े लेकिन चूंकि हुजरए मुबारका में जगह कम थी इस लिये थोड़े-थोड़े करके पहले मर्द हाज़िर हुए फिर औरतें और फिर बच्चे। इस सबब से

दफ़न में भी ताख़ीर हुई जिस को बाज़ ना समझ दूसरी ग़लत बातों पर महमूल करते हैं।

बहरहाल सब लोग जब नमाज़े जनाज़ा या दुरूद व सलाम पढ़ चुके तो हज़रत अली, हज़रत इब्ने अब्बास, हज़रत फज़्ल बिन अब्बास और हज़रत कुस्म बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम ने आप के जिस्मे अक्दस को क़ब्रे अनवर में उतार कर किब्ला रू दाहिने पहलू पर लिटाया। और बाज़ हदीस शरीफ की रिवायतों से मालूम होता है कि हज़रत उसामा बिन ज़ैद और हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा भी आप की क़ब्रे मुबारक में उतरे थे।

## रब्बि उम्मती-उम्मती

मदारिजुन् नुबुव्वत में है कि आप की क़ब्रे मुबारक से जो आख़िर में निकले वह कुस्म बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा हैं। वह फरमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के चेहरए अनवर की जब आख़िरी ज़ियारत हम ने की तो देखा कि आप के लबहाए मुबारक हिल रहे हैं, हम ने अपना कान क़रीब कर दिया तो सुना कि हुज़ूर *"रब्बि उम्मती-उम्मती"* फरमा रहे हैं।

कुर्बान जाइये अपने मेहरबान आक़ा व मौला जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम पर कि वह हमेशा हम गुनहगारों की फिक्र में रहे, यहां तक कि हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा फरमाती हैं कि उम्मत के गुनाहों के ग़म से हुज़ूर कभी पूरी एक रात बिस्तर पर आराम से नहीं सोए। और कभी ऐसा होता कि रात-रात भर हम लोगों के लिये ख़ुदाए तआ़ला से दुआएं मांगने और बख़्शिश के इन्तिज़ार में रोते थे। अअ्ला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह फरमाते हैं:

*अश्क शब भर इन्तिज़ारे अफ़्वे उम्मत में बहें*
*मैं फिदा और चांद यूं अख़्तर शुमारी वाह वाह*

और एक शाइर यूं कहता है:

*तुम्हारे ही लिये था ऐ गुनहगारो सियह कारो*
*वो शब भर जागना और रात भर रोना मुहम्मद का*
*(सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम)*

अगर काली घटा छा जाती तो हमारे मेहरबान आक़ा प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम बेचैन हो जाते, कभी हुजरए मुबारका में आते और कभी मस्जिद में पहुंच कर उम्मत की हिफाज़त के लिये दुआ़ फरमाते। अगर आंधी आती तो बारगाहे इलाही में सज्दा रेज़ हो जाते, देर तक सर न उठाते, अज़ाब से मामून रहने की खुदाए तआ़ला से दुआ़ए करते और इस क़द्र रोते कि ज़मीन आंसुओं से तर हो जाती। ग़रज़ेकि हमेशा हमारी फिक्र में रहे कभी हम को फरामोश नहीं फरमाया। अपने हुजरए मुबारका में रहे तो वहां याद फरमाया, मस्जिद में तशरीफ लाए तो वहां याद फरमाया, जंगल व बियाबान में याद फरमाया, पहाड़ की घाटियों में याद फरमाया, यहां तक कि क़ब्रे अनवर में लिटाए गए तो वहां भी याद फरमाया।

ऐ खुदाए ज़ुल् जलाल! हम गुनहगारों की तरफ से हमारे मेहरबान आक़ा व मौला जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की बारगाहे बेकस पनाह में दुरूद व सलाम की डालियां निछावर फरमा। और क़ियामत के दिन हम सब को उन की शफाअ़त नसीब फरमा कर जहन्नम के अज़ाब से हिफाज़त फरमा और जन्नतुल फिरदौस में बेहतरीन जगह इनायत फरमा (एक बार हम सब मिल कर बुलंद आवाज़ से दुरूद शरीफ पढ़ें)।

अश्अ़तुल् लमआ़त में है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम का विसाल दो शंबा मबारका को हुआ और सह शंबा यानी मंगल का दिन गुज़र कर रात में सहाबए किराम आप की तजहीज़ व तक्फीन से फारिग़ हुए।

बुख़ारी शरीफ की रिवायत है कि जब सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु

तआला अलैहि व सल्लम को दफन कर दिया गया उस के बाद सहाबए किराम हज़रत फातिमा के पास बतौर तअ्ज़ियत आए, तो हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने फरमाया कि अनस! और ऐ सहाबा! तुम को यह कैसे गवारा हुआ कि तुम ने अल्लाह के रसूल पर मिट्टी डाल दी, सहाबा ने कहा ऐ फातिमा! (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) हम भी यही सोचते थे कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर कैसे मिट्टी डालें लेकिन अल्लाह के फैसला और शरीअत का हुक्म से कोई चारए कार नहीं, इस लिये मजबूरन हम को ऐसा करना पड़ा। फिर हुज़ूर की जुदाई में सब लोग ज़ारो-क़तार रोए।

☆☆☆

## हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का ग़म

रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की वफात का असर यूं तो हर मुसलमान पर बहुत हुआ कि ऐसा मुसीबत का दिन उन्हों ने कभी देखा ही नहीं था। हदीस शरीफ में है, सहाबा फरमाते हैं कि जिस दिन हुज़ूर मदीना में तशरीफ लाए उस से अच्छा और पुरमसर्रत दिन हम ने मदीना शरीफ में कभी नहीं देखा कि इस शहरे मुबारक की हर चीज़ रौशन और ताबनाक हो गई और जिस दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की वफात हुई उस दिन से ज़्यादा अलमनाक और बुरा दिन हम ने मदीना तैय्यिबा में कभी नहीं देखा कि सब चीज़ों पर तारीकी छा गई, हर घर से रोने और गिर्या व ज़ारी की आवाज़ आती थी, पूरा मदीना शरीफ मातम कदा बना हुआ था लेकिन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा पर ग़म का पहाड़ टूट पड़ा था कि उन का हुजरए मुबारका जिस में हुज़ूर का विसाल हुआ था दफन के बाद वह 'बैतुल् हुज़्न वल्-फिराक़' हो गया था कि शबो-रोज़ हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा बैठी रोया करती थीं। और ख़ास कर हुज़ूर की लख़्ते जिगर, नूरे नज़र हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को बेइन्तिहा ग़म हुआ कि वह रात

भर और दिन भर हुज़ूर की जुदाई में आंसू बहाया करती थीं। हदीस शरीफ में है कि हुज़ूर के विसाल फरमाने के बाद कभी किसी ने उन को हंसते हुए नहीं देखा। (दुरूद शरीफ)

मदारिजुन् नुबुव्वत में है कि दफन के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की बारगाह में हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा आप के सरहाने हाज़िर हुईं, मज़ारे मुबारक से थोड़ी मिट्टी उठा कर अश्क आलूद और आंसुओं से भरी हुई अपनी आंखों पर रखा और फरमायाः

مَاذَا عَلٰی مَنْ شَمَّ تُرْبَةَ اَحْمَدَ
اَنْ لَّا يَشُمَّ مَدَى الزَّمَانِ غَوَالِيَا

यानी क्या हरज होता है कि जो शख़्स हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की क़ब्रे मुबारक को सूंघ ले तो वह कभी बेश क़ीमत ख़ुश्बू को न सूंघे। मतलब यह है कि हुज़ूर की तुर्बते अनवर से ऐसी ख़ुश्बू आ रही है कि जो शख़्स उसे सूंघ ले तो फिर किसी दूसरी ख़ुश्बू को सूंघने की उसे हाजत नहीं।

और फरमायाः

صُبَّتْ عَلَیَّ مَصَائِبُ لَوْاَنَّهَا
صُبَّتْ عَلَى الْاَيَّامِ صِرْنَ لَيَالِيَا

यानी मुझ पर ऐसी मुसीबतें आ गईं कि अगर यह मुसीबतें रोज़े रौशन पर आ जाएं तो वह मारे ग़म के रात बन जाए। (एक बार फिर बुलंद आवाज़ से दुरूद शरीफ पढ़िये।)

## अंबियाए किराम अ़लैहिमुस् सलातु वस्सलाम ज़िंदा हैं

बाज़ लोगों का अ़क़ीदा है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम अब ज़िंदा नहीं बल्कि मर कर मिट्टी में मिल गए, जैसा कि वहाबियों देवबंदियों के पेश्वा मौलवी इस्माईल देहलवी ने अपनी किताब तक़्वियतुल् ईमान सफ्हाः42 पर लिखा है, मगर यह अक़ीदा मज़हबे हक़ अहले सुन्नत व जमाअ़त के ख़िलाफ है और बातिल है।

हदीस शरीफ की मोअ्तमद और मशहूर किताब मिश्कात शरीफ सफ्हा:121 पर हैः إِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ عَلَى الْأَرْضِ أَنْ تَأْكُلَ أَجْسَادَ الْأَنْبِيَاءِ فَنَبِيُّ اللّٰهِ حَيٌّ يُرْزَقُ यानी सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने फरमाया कि खुदाए अज़्ज़ व जल्ल ने ज़मीन पर अंबियाए किराम अ़लैहिमुस् सलातु वस्सलाम के जिस्मों को खाना हराम फरमा दिया है। लिहाज़ा अल्लाह के नबी ज़िंदा हैं, रिज़्क़ दिये जाते हैं।

अश्अ़तुल् लमआ़तः1/576 पर इस हदीस शरीफ की शरह में हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मोहद्दिस देहलवी बुख़ारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि तहरीर फरमाते हैं कि *"पैग़म्बरे खुदा ज़िंदा अस्त ब हक़ीक़ते हयाते दुन्यावी"* यानी खुदाए तआ़ला के नबी दुनियावी ज़िंदगी की हक़ीक़त के साथ ज़िंदा हैं।

और मिर्क़ातः2/212 पर रईसुल् मोहद्दिसीन हज़रत मुल्ला अ़ली क़ारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि इस हदीस की शरह में लिखते हैं कि لَا فَرْقَ لَهُمْ فِي الْحَالَيْنِ وَلِذَا قِيْلَ أَوْلِيَاءُ اللّٰهِ لَا يَمُوْتُوْنَ وَلٰكِنْ يَنْتَقِلُوْنَ مِنْ دَارٍ إِلَى دَارٍ यानी अंबियाए किराम की क़ब्ले विसाल और बादे विसाल की ज़िंदगी में कोई फर्क़ नहीं। इसी लिये कहा जाता है कि महबूबाने खुदा मरते नहीं बल्कि एक दार से दूसरे दार यानी एक घर से दूसरे घर की तरफ मुन्तक़िल हो जाते हैं।

और हदीस की इसी मशहूर किताब मिश्कात शरीफ सफ्हा:120 पर अबू दाऊद, नसाई, दारमी, बैहक़ी और इब्ने माजा यानी हदीस की पांच मोअ्तमद किताबों से रिवायत है إِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ عَلَى الْأَرْضِ أَنْ تَأْكُلَ أَجْسَادَ الْأَنْبِيَاءِ यानी रसूले करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने फरमाया कि खुदाए अज़्ज़ व जल्ल ने अंबियाए किराम अलैहिमुस् सलातु वस्सलाम के जिस्मों को ज़मीन पर खाना हराम फरमा दिया है।

रईसुल् मोहद्दिसीन हज़रत मुल्ला अ़ली क़ारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि मिर्क़ातः2/209 पर इसी हदीस की शरह में तहरीर फरमाते हैं إِنَّ الْأَنْبِيَاءَ فِي قُبُوْرِهِمْ أَحْيَاءٌ यानी अंबियाए किराम अलैहिमस् सलातु वस्सलाम अपनी

क़ब्रों में ज़िंदा हैं।

और सैय्यिदुल् मोहक्क़िक़ीन हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मोहद्दिस देहलवी बुख़ारी रहमतुल्लाहि तआला अलैह अश्अ़तुल् लमआत:1/574 पर इस हदीस के तहत फरमाते हैं कि *"हयाते अंबिया मुत्तफ़क़ अ़लैह अस्त हेच कस रा दर वेय ख़िलाफे नीस्त हयाते जिस्मानी दुन्यावी हक़ीक़ी न हयाते मअ़नवी रूहानी चुनां कि शुहदा रास्त"* अंबियाए किराम अलैहिमस् सलातु वस्सलाम ज़िंदा हैं और उन की ज़िंदगी सब मानते आए हैं, किसी को इस में इख़्तिलाफ नहीं है। उन की ज़िंदगी जिस्मानी हक़ीक़ी दुनियावी है। शहीदों की तरह सिर्फ मअ़नवी और रूहानी नहीं है।

हज़रत शैख़ मुहक़्क़िक़ की इस शरह से यह भी मालूम हुआ कि उन के ज़मानए हयात ग्यारहवीं सदी हिज्री तक यह मस्अला मुत्तफ़क़ अलैह रहा कि अंबियाए किराम बादे विसाल भी ज़िंदा रहते हैं, इस में किसी को इख़्तिलाफ नहीं। यानी जो लोग कि अंबियाए किराम को ज़िंदा नहीं मानते चाहे वह देवबंदी हों या वहाबी उन का मज़हब और उन का अक़ीदा नया है। अहले सुन्नत वल जमाअ़त हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के फरमाने के मुताबिक़ हमेशा यही अक़ीदा रखते रहे कि अंबियाए किराम अलैहिमस् सलातु वस्सलाम अपनी क़ब्रों में ज़िंदा हैं और रोज़ी दिये जाते हैं।

और ज़ाहिर है कि अंबियाए किराम अलैहिमस् सलातु वस्सलाम अगर बादे वफात ज़िंदा न होते और मर कर मिट्टी में मिल गए होते (मआ़ज़ल्लाहि तआ़ला) तो मेअ़राज की रात हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के पीछे नमाज़ पढ़ने के लिये बैतुल मुक़द्दस में कैसे आते। मालूम हुआ कि बेशक अंबियाए किराम अ़लैहिमस् सलातु वस्सलाम ज़िंदा हैं। एक बार हम सब मिल कर बुलन्द आवाज़ से दुरूद शरीफ पढ़ें।

और यह भी ख़ूब अच्छी तरह ज़ेहन नशीन कर लीजिये कि

अंबियाए किराम अलैहिमस् सलातु वस्सलाम की ज़िंदगी जिस्मानी हक़ीक़ी दुनियावी है। शहीदों की तरह सिर्फ मअ्नवी और रूहानी नहीं है। यही वजह कि अंबियाए किराम अलैहिमस् सलातु वस्सलाम का तरका नहीं तक़्सीम किया जाता और न उनकी बीवियां दूसरे से निकाह कर सकती हैं। और शहीदों का तरका तक़्सीम होता है और उन की बीवियां इद्दत गुज़ारने के बाद दूसरे से निकाह कर सकती हैं।

और यह भी वाज़ेह रहे कि अंबियाए किराम अलैहिमस् सलातु वस्सलाम की ज़िंदगी बरज़ख़ी नहीं है बल्कि दुनियावी है, बस फर्क़ सिर्फ इतना है कि वह हम जैसे लोगों की निगाहों से ओझल हैं जैसा कि नूरुल् ईज़ाह की शरह मराकिउल फलाह मअ् तहतावी मतबूआ मिस्र सफ्हा:447 में हज़रत हसन शुरुंबलानी रहमतुल्लाहि अलैह तहरीर फरमाते हैं: وَمِمَّا هُوَ مُقَرَّرٌ عِنْدَ الْمُحَقِّقِيْنَ اَنَّهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَيٌّ يُرْزَقُ مُتَمَتِّعٌ بِجَمِيْعِ الْمَلَاذِّ وَالْعِبَادَاتِ غَيْرَ اَنَّهٗ حُجِبَ عَنْ اَبْصَارِ الْقَاصِرِيْنَ عَنْ شَرِيْفِ الْمَقَامَاتِ यानी यह बात अर्बाबे तहक़ीक़ के नज़्दीक साबित है कि सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम (हक़ीक़ी दुनियावी ज़िंदगी के साथ) ज़िंदा हैं, उनपर रोज़ी पेश की जाती है, सारी लज़्ज़त वाली चीज़ों का मज़ा और इबादतों का सुरूर पाते हैं, लेकिन जो लोग कि बुलंद दर्जों तक पहुंचने से क़ासिर हैं उन की निगाहों से ओझल हैं।

*तू ज़िन्दा है वल्लाह तू ज़िन्दा है वल्लाह*
*मेरी चश्मे आलम से छुप जाने वाले*

और शहाबुल उलूम हज़रत अल्लामा शहाबुद्दीन ख़फाजी अलैहिर रहमत नसीमुर रियाज़ शर्ह शिफा क़ाज़ी अ़याज़ 1/196 में तहरीर फरमाते हैं: اَلْاَنْبِيَاءُ عَلَيْهِمُ السَّلَامُ اَحْيَاءٌ فِيْ قُبُوْرِهِمْ حَيَاةً حَقِيْقَةً यानी अंबियाए किराम अलैहिमस् सलातु वस्सलाम हक़ीक़ी ज़िंदगी के साथ अपनी क़ब्रों में ज़िंदा हैं।

और रईसुल मोहद्दिसीन हज़रत मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि मिर्क़ात शर्ह मिश्कात:1/484 में तहरीर फरमाते हैं: لَـــا

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمْ حَيٌّ يُرْزَقُ وَيُسْتَمَدُ مِنْهُ الْمَدَدُ الْمُطْلَقُ यानी बेशक हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ज़िंदा और बा हयात हैं, उन्हें रोज़ी पेश की जाती है और उन से हर क़िस्म की मदद तलब की जाती है।

और सैय्यिदुल् मोहक़्क़िक़ीन हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मोहद्दिस देहलवी बुख़ारी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि अपने मक्तूब *"सुलूक अक़्रबुस् सुबुल बित्तवज्जुहि इला सैय्यिदिर रुसुल" मअ़ अख़्बारिल अख़्यार मतबूआ रहीमिया देवबन्द सफ़्हा:161 में फरमाया कि "बा चंदीं इख़्तिलाफ़ व कस्रते मज़ाहिब कि दर उलमाए उम्मत अस्त यक कस् रा दरीं मस्अला ख़िलाफ़े नीस्त कि आं हज़रत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम बहक़ीक़ीते हयात बे शाइबा मजाज़ व तवह्हुम तावीले दाइम व बाक़ी अस्त व बर आमाले उम्मत हाज़िर व नाज़िर व मर तालिबाने हक़ीक़त रा व मुतवज्जिहाने आं हज़रत रा मुफ़ीज़ व मुरब्बी"* यानी उलमाए उम्मत में इतने इख़्तिलाफ़ात व कस्रत मज़ाहिब के बा वजूद किसी शख़्स को इस मस्अले में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं है कि आं हज़रत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हयाते (दुनियावी) की हक़ीक़त के साथ क़ाइम और बाक़ी हैं। इस हयाते नबवी में मजाज़ की आमेज़िश और तावील का वहम नहीं है। और उम्मत के आमाल पर हाज़िर व नाज़िर हैं। नीज़ तालिबाने हक़ीक़त के लिये और उन लोगों के लिये कि आं हज़रत की जानिब तवज्जोह रखते हैं हुज़ूर उन को फ़ैज़ बख़्शने वाले और उन के मुरब्बी हैं।

और पारा:23 आख़िरी रुकूअ़ की आयते करीमा إِنَّكَ مَيِّتٌ में जो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के लिये मौत आने का ज़िक्र फ़रमाया गया है तो इस से मुराद इस आलमे दुनिया से मुन्तक़िल होना है और अहादीसे करीमा व अक़्वाले अइम्मा में हयात से बाद विसाल की हक़ीक़ी ज़िंदगी मुराद है। (एक बार हम सब मिल कर बुलंद आवाज़ से दुरूद शरीफ़ पढ़ें)।

## हयाते अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम वाक़िआ़त की रौशनी में

बिरादराने मिल्लत! आक़ाए दो आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम और दीगर अंबियाए किराम अलैहिमस् सलातु वस्सलाम बादे विसाल ज़िंदा हैं। इस के बारे में अहादीसे करीमा और अइम्मए इज़ाम के बहुत से अक़्वाल आप लोगों ने सुन लिया। अब हम चन्द वाक़िआ़त बयान करते हैं जिन से यह बात अच्छी तरह वाज़ेह और रौशन हो जाएगी कि नबी बादे विसाल ज़िंदा रहता है मरता नहीं है।

अल्लामा समहूदी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि अपनी मशहूर किताब "वफाउल् वफा बि- अख़्बारि दारिल् मुस्तफा"1/466 में तहरीर फरमाते हैं कि सुल्तान नूरुद्दीन रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह जो आदिल बादशाह और बड़े मुत्तक़ी थे, उन की रात का बहुत सा हिस्सा तहज्जुद और वज़ीफे में ख़र्च होता था। 557 ई0 में एक रात जब कि तहज्जुद की नमाज़ पढ़ने के बाद वह सोए तो ख़्वाब में सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की ज़ियारत उन को नसीब हुई, सरकार ने दो कैरी आंख वालों की तरफ इशारा करते हुए बादशाह से इरशाद फरमाया कि इन दोनों से मेरी हिफाज़त करो, बादशाह घबरा कर उठे, वज़ू किया और जब कुछ नवाफिल पढ़ कर दोबारा सोए तो फिर बिऐनिही वही ख़्वाब देखा कि हुज़ूर फरमा रहे हैं कि इन दोनों से मेरी हिफाज़त करो। बादशाह फिर बेदार हो गए, वज़ू किया और तीसरी बार कुछ नवाफिल पढ़ कर सोए तो फिर वही ख़्वाब देखा, उठ कर फरमाया कि अब नीन्द की कोई गुंजाइश नहीं, रात ही को फौरन अपने वज़ीर को बुलाया जो नेक और सालिह आदमी थे, नाम जमालुद्दीन बताया जाता है, उन को सारा क़िस्सा सुनाया, वज़ीर ने कहा अब ताख़ीर का मौक़ा नहीं है, फौरन मदीना मुनव्वरा चलिये मगर इस ख़्वाब का ज़िक्र किसी से न कीजिये। बादशाह ने फौरन रात ही को तैयारी की, वज़ीर और 20 मख़्सूस ख़ादिमों को साथ लेकर तेज़ रफ्तार

ऊंटनियों पर बहुत सामान और माल व मताअ़ लदवा कर मदीना मुनव्वरा के लिये रवाना हो गए और दिन रात चलते रहे यहां तक कि सोलहवें रोज़ मिस्र से मदीना तैय्यिबा पहुंचे, शहर से बाहर गुस्ल किया और निहायत अदब व ऐहतिराम से मस्जिदे नबवी में हाज़िर हुए, जन्नत की कियारी में दो रकअ़त नमाज़ नफ्ल पढ़ी और हुज़ूर की बारगाह में हाज़िर हो कर सलात व सलाम अर्ज़ किया फिर निहायत मुतफिक्कर हो कर बैठे सोचते रहे कि अब क्या करें? वज़ीर ने ऐलान किया कि बादशाह नूरुद्दीन ज़ियारत के लिये आए हैं और बहुत सा माल अपने हमराह यहां के लोगों पर तक़्सीम करने के लिये लाए हैं। लिहाज़ा सब लोग उन से मुलाक़ात करें। इस ऐलान के बाद लोगों की आमद शुरू हो गई। बादशाह हर आने वाले को निहायत गहरी निगाह से देखते रहे। सब लोग यके बाद दीगरे बादशाह से मुलाक़ातें कीं और अ़ताएं लेकर चले गए मगर कैरी आंख वाले वह दो शख़्स कि जिन को ख़्वाब में देखा था नज़र न आए। बादशाह ने कहा कि और कोई बाक़ी रह गया हो तो उस को भी बुला लिया जाए। मालूम हुआ कि अब कोई नहीं बाक़ी रह गया है। मगर बादशाह के बार-बार कहने पर लोगों ने बहुत ग़ौर व ख़ोज़ किया तो कहा कि दो नेक मर्द निहायत मुत्तक़ी और परहेज़गार मग़्रिबी बुज़ुर्ग हैं वह किसी से कोई चीज़ नहीं लेते बल्कि खुद ही बहुत कुछ सदक़ात व ख़ैरात अहले मदीना पर करते रहते हैं, गोशा नशीन लोग हैं, सब से अलग थलग रहते हैं। बादशाह ने उन दो आदमियों को भी बुलवाया और जब वह आए तो देखते ही पहचान लिया कि यही वह दो आदमी हैं जो ख़्वाब में दिखलाए गए थे। बादशाह ने उन लोगों से पूछा कि तुम कौन हो? उन लोगों ने कहा कि हम मग़्रिब के बाशिन्दे हैं, हज के लिये आए हुए थे, उस से फारिग़ होकर मदीना तैय्यिबा ज़ियारत के लिये हाज़िर हुए और सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के पड़ोस में रहने की तमन्ना हुई तो यहां ठहर गए, बादशाह ने कहा सही-सही बता दो, उन्हों ने जो

पहले कहा फिर उसी जवाब को दोहराया, बादशाह ने सही बात बताने पर बहुत इस्रार किया मगर उन लोगों ने कुछ और नहीं बताया बल्कि हर बार यही कहते रहे कि हम लोग हज के लिये आए थे फिर ज़ियारत के लिय हाज़िर हुए और कुछ रोज़ के लिये हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के पड़ोस में कियाम कर लिया, बादशाह ने उन की कियामगाह दरियाफत की, मालूम हुआ कि रौज़ए मुबारक के करीब ही एक रिबात में रहते हैं। बादशाह ने हुक्म दिया कि इन दोनों को यहीं रोके रखें और ख़ुद उन की कियामगाह पर गए, वहां पहुंच कर बहुत कुछ देखा भाला तो माल व मताअ् बहुत सा मिला और किताबें भी रखी हुई मिलीं लेकिन कोई ऐसी चीज़ नहीं मिली जिस से ख़्वाब के मज़मून की ताईद होती।

बादशाह बहुत परेशान और मुतफक्किर था कि ख़्वाब सच है, यह दोनों आदमी वही हैं जो ख़्वाब में दिखलाए गए लेकिन इनके हालात से मामले का कोई सुराग़ नहीं मिलता। और मदीना तैय्यिबा के लोगों का हाल यह था कि बहुत से लोग सिफारिश के लिये आए और बयान दिया कि यह दोनों नेक बुजुर्ग दिन भर रोज़ा रखते हैं, हर नमाज़ जन्नत की कियारी में पढ़ते हैं, हुज़ूर की बारगाह में हाज़िर होकर सलात व सलाम अर्ज़ करते हैं, रोज़ाना जन्नतुल बकीअ् की ज़ियारत करते हैं, हर सनीचर मस्जिदे कुबा जाते हैं, किसी साइल को बग़ैर कुछ दिये हुए वापस नहीं करते। इस कहत के साल में इन्हों ने मदीना शरीफ वालों के साथ बहुत हमदर्दी और ग़मगुसारी की है, बादशाह उन के हालात सुन कर तअज्जुब करते थे और उन की कियामगाह में इधर उधर मुतफिक्कर फिर रहे थे, यका यक उन के मुसल्ले को उठाया जो एक चटाई पर बिछा हुआ था और चटाई के नीचे एक पत्थर बिछा हुआ था, जब उस को उठाया गया तो उस के नीचे एक सुरंग ज़ाहिर हुई जो बहुत गहरी खोदी गई थी और बहुत दूर तक चली गई थी यहां तक कि हुज़ूर की कब्रे अनवर तक पहुंच गई थी, यह देख कर सब लोग दंग रह

गए, बादशाह ने उन को इन्तिहाई गुस्से में कांपते हुए मारना शुरू किया और कहा कि सही-सही वाक़िआ बताओ, उन लोगों ने बताया कि वह दोनों नस्रानी हैं, ईसाई बादशाहों ने उन को बहुत सा माल दिया है और आइन्दा बहुत ज़्यादा देने का वादा किया है, हम लोग हाजियों की सूरत बना कर इस लिये आए हैं ताकि क़ब्रे अनवर से हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के जिस्मे मुबारक को निकाल ले जाएं, हम दोनों रात को यह जगह खोदते थे और जो मिट्टी निकलती थी उस को चमड़े की दो मश्कों में भरकर रात ही जन्नतुल बक़ीअ़ में डाल आया करते थे।

बादशाह इस बात पर कि ख़ुदाए अ़ज़्ज़ व जल् ने और उस के प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने इस ख़िदमत के लिये उन को मुन्तख़ब किया बहुत रोए। उन दोनों को क़त्ल कराया और हुजरए मुबारका के चारों तरफ इतनी गहरी ख़न्दक़ खुदवाई कि पानी निकल आया फिर उस ख़न्दक़ को रांगा या सीसा पिघला कर भरवा दिया ताकि सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के जिस्मे मुबारक तक कभी किसी की रसाई न हो सके। (एक बार हम सब मिल कर उस ज़िंदा नबी पर ज़िंदा दिली के साथ दुरूद शरीफ का नज़्राना पेश करें।)

इस वाक़िआ से रोज़े रौशन की तरह वाज़ेह हो गया कि हमारे आक़ा व मौला जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ज़िंदा हैं अगर वह (मआ़ज़ल्लाह सद बार मआ़ज़ल्लाह) मर कर मिट्टी में मिल गए होते जैसा कि वहाबियों और देबन्दियों का अ़क़ीदा है तो बादशाह नूरुद्दीन को विसाल के तक़रीबन साढ़े पांच सौ साल बाद हिफाज़त का हुक्म देने का सवाल ही नहीं पैदा होता। साबित हुआ कि अल्लाह के रसूल ज़िंदा हैं और वहाबियों और देबन्दियों का अक़ीदा बातिल है। और यह भी मालूम हुआ कि नस्रानियों का भी यह अक़ीदा है कि अल्लाह का नबी विसाल फरमाने

के बाद मिट्टी में नहीं मिल जाता वरना कई सौ साल बाद वह हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के जिस्मे अक्दस को निकाल कर ले जाने का प्रोग्राम न बनाते।

## एक सवाल और उस का जवाब

रहा यह सवाल कि हमारे अक़ीदे के मुताबिक़ जबकि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ख़ुद दूसरों की मदद करते हैं और मुश्किलें हल फरमाते हैं तो उन्हों ने अपनी हिफाज़त के लिये बादशाह नूरुद्दीन से क्यों कहा और नसानियों को ख़ुद ही क्यों नहीं हलाक कर दिया और जब वह ख़ुद अपनी हिफाज़त नहीं कर सकते और अपने दुश्मनों को हलाक नहीं कर सकते तो वह दूसरों की मदद क्या कर सकते हैं? तो इस सवाल का जवाब यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ख़ुदाए अज़्ज़ व जल्ल की अ़ता की हुई ताक़त से अपनी हिफाज़त फरमा सकते थे और बादशाह नूरुद्दीन की मदद के बग़ैर उन के दुश्मन हलाक हो सकते थे, जैसा कि इसी किताब वफाउल् वफाः1/471 में एक दूसरा वाक़िआ़ दर्ज है कि हलब की एक जामअ़त से मदीना का एक हाकिम मिल गया और बहुत सा माल रिश्वत लेकर उन को हज़रत अबू बकर व उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा के जिस्मे मुबारक को निकाल ले जाने की इजाज़त दे दी और जब वह लोग ज़मीन खोदने के बहुत से हथियार लेकर बाबुस् सलाम से अन्दर दाख़िल हुए और हुजरह शरीफ की तरफ चले तो हज़रत शैख़ शमसुद्दीन सव्वाब रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह जो ख़ादिमैन हरमे नबवी के अफ्सर थे और इस वाक़िआ़ के रावी हैं वह फरमाते हैं وَاللّٰهِ مَا وَصَلُوا الْمِنْبَرَ حَتّٰى ابْتَلَعَتْهُمُ الْاَرْضُ جَمِيْعَهُمْ بِجَمِيْعِ مَا كَانَ مَعَهُمْ مِنَ الْاٰلَاتِ وَلَمْ يَبْقَ لَهُ اَثَرٌ यानी ख़ुदा की क़सम वह लोग अभी मिम्बर शरीफ तक भी न पहुंचे थे कि अचानक उन को और उनके सारे साज़ व सामान को ज़मीन निगल गई और उन का नाम व निशान मिट गया।

तो इसी तरह वह दोनों नस्रानी भी हलाक हो सकते थे, मगर अल्लाह व रसूल (अज़्ज़ व जल्ल व सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम) बादशाह नूरुद्दीन की किसी नेकी पर सारी दुनियाए इस्लाम में उनके नाम को रौशन व मुनव्वर फरमाना चाहते थे और आख़िरत में उन को मर्तबए जलीला पर फाइज़ करना चाहते थे, इस लिये यह ख़िदमत उन के सुपुर्द फरमाई।

तेकिन अगर अब भी कोई बद बख़्त ना माने और यही बकता रहे कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम को अपने दुश्मनों के हलाक करने की ताक़त नहीं थी इस लिये बादशाह नूरुद्दीन से हलाक करवाया, तो उस बद बख़्त को यह भी मानना पड़ेगा कि अल्लाह तआ़ला को भी अपने महबूब के दुश्मनों को हलाक करने की ताक़त नहीं थी इस लिये वह खुद हलाक नहीं कर सका बल्कि दूसरे से हलाक करवाया।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम बादे विसाल भी ज़िंदा हैं, इस सिलसिले में एक वाक़िआ़ और समाअ़त फरमाइये। हज़रत अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह अपनी किताब अल-हावी में तहरीर फरमाते हैं कि हज़रत सैय्यद अहमद रिफाई रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह जो मश्हूर बुज़ुर्ग अकाबिरे सूफिया में से हैं उन का वाक़िआ़ मशहूर है कि जब वह 555 हि0 में हज से फारिग़ हो कर सरकार आज़म सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की ज़ियारत के लिये मदीना तैय्यिबा हाज़िर हुए और क़ब्रे अनवर के सामने खड़े हुए तो यह दो शेअ़र पढ़ेः

فِیْ حَالَةِ الْبُعْدِ رُوْحِیْ کُنْتُ اُرْسِلُهَا
تُقَبِّلُ الْاَرْضَ عَنِّیْ وَهِیَ نَائِبَتِیْ

यानी मैं दूर होने की हालत में अपनी रूह को ख़िदमते मुबारका में भेजा करता था जो मेरी नाइब बन कर हुज़ूर के आस्तानए मुक़द्दस को चूमा करती थी।

وَهٰذِهٖ دَوْلَةُ الْاَشْبَاحِ قَدْ حَضَرَتْ
فَامْدُدْ يَمِيْنَكَ كَيْ تَحْظٰى بِهَا شَفَتِىْ

यानी अब जिस्मों की हाज़िरी का वक़्त आया है, लिहाज़ा अपने दस्ते अक़्दस को अता फरमाइये ताकि मेरे होंट उस को चूमें।

हज़रत सैय्यद अहमद रिफाई रहमतुल्लाहि तआला अलैह की इस अर्ज़ पर सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि ने क़ब्रे अनवर से अपने दस्ते मुबारक को बाहर निकाला जिस को उन्हों ने चूमा।

"अल-बुनयानुल् मुशय्यिद" में है कि उस वक़्त कई हज़ार का मजमअ् मस्जिदे नबवी में था जिन्हों ने इस वाक़िआ को देखा और हुज़ूर के दस्ते अक़्दस की ज़ियारत की। उन लोगों में महबूबे सुब्हानी हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी यानी ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का नामे नामी भी ज़िक्र किया जाता है। खुलासए कलाम यह है कि:

*अंबिया को भी मौत आनी है — मगर ऐसी कि फकत आनी है*
*बस उसी आन के बाद उनकी हयात — मिस्ल साबिक़ वही जिस्मानी है*

## औलियाउल्लाह भी ज़िन्दा हैं

वहाबियों देबन्दियों को तो अंबियाए किराम अलैहिमुस् सलातु वस्सलाम की ज़िंदगी के बारे में भी कलाम है यहां तक कि सैय्यिदुल अंबिया और नबिय्युल अंबिया जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा के बारे में यह अक़ीदा रखते हैं कि वह मर कर मिट्टी में मिल गए। हालां कि औलियाए किराम व बुज़ुर्गाने दीन को हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ग़ुलामी में यह मर्तबा मिला कि वह बादे वफात ज़िंदा रहते हैं, सुबूत के लिये बर वक़्त सिर्फ दो वाक़िआ समाअत फरमाएं।

हज़रत बायज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाहि तआला अलैह जो मशहूर बुज़ुर्गों में से हैं उन का वाक़िआ आरिफ बिल्लाह हज़रत मौलाना रूम

रहमतुल्लाहि तआला अलैह अपनी मस्नवी शरीफ के दफ्तर चहारुम में तहरीर फरमाते हैं कि एक रोज़ बायज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाहि तआला अलैह अपने मुरीदों के साथ एक रास्ते से गुज़र रहे थे कि अचानक शहरे रेय के इलाके में ख़रक़ान की तरफ से उन्हें ख़ुश्बू महसूस हुई, हज़रत उस ख़ुश्बू से इस क़द्र मस्त हुए कि चेहरे का रंग कभी सुर्ख़ होता था और कभी सफेद। एक मुरीद ने अर्ज़ किया हुज़ूर क्या मामला है कि मैं हज़रत के चेहरे का रंग बदलता हुआ पाता हूं? फरमाया कि इस तरफ से एक दोस्त की ख़ुश्बू आ रही है कि जहां दर्जए विलायत व क़ुतबिय्यत का एक बहुत बड़ा बादशाह इतने साल के बाद फुलां तारीख़ को तशरीफ लाने वाला है, किसी ने पूछा कि उन का नाम क्या है? फरमाया कि उन का नाम अबुल हसन है, फिर सर से लेकर पांव तक उन का पूरा हुलिया बयान फरमाया।

हज़रत के बयान के मुताबिक़ अबुल हसन ख़रक़ानी रहमतुल्लाहि तआला अलैह की तारीख़े पैदाइश को नोट कर लिया और जब हज़रत बायज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाहि तआला अलैह की वफात के बाद वही तारीख़ आई तो ख़रक़ान में हज़रत अबुल हसन ख़रक़ानी रहमतुल्लाहि तआला अलैह पैदा हुए (और सिन्ने बुलूग़ को पहुंचे) तो लोगों ने उन से बयान किया कि हज़रत बायज़ीद बुस्तामी फरमाया करते थे कि अबुल हसन मेरा अक़ीदत मन्द होगा और मेरी क़ब्र पर आकर मुझ से फैज़ हासिल करेगा। आप ने फरमाया कि मैं ने भी इसी मज़मून का ख़्वाब देखा है, फिर रोज़ाना सुबह के वक़्त हज़रत बायज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाहि तआला अलैह की क़ब्रे मुबारक के पास हाज़िर होते और चाश्त के वक़्त तक उन के मज़ार के सामने बाअदब खड़े रहते और फैज़ हासिल करते।

एक रोज़ सुबह के वक़्त जबकि आप उस क़ब्रिस्तान में तशरीफ ले गए कि जहां हज़रत का मज़ार था तो देखा कि सारी क़ब्रें बर्फ से छुपी हुई हैं, आप हज़रत की क़ब्रे मुबारक को पहचान नहीं सके जिस के

सबब बहुत परेशान हुए तो फिर उस के बाद क्या हुआ? इसे मौलाना रूम रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह की ज़बान से सुनियेः

*बांगश आमद अज़ हज़ीरए शेख़ हय्य*
هَا اَنَا اَدْعُوْكَ كَيْ تَسْعٰى اِلَيَّ

यानी अचानक बायज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह जो ज़िंदा हैं उनकी क़ब्रे मुबारक से आवाज़ आई कि मैं तुम्हें पुकारता हूं तुम मेरी तरफ आओ।

बेशक बायज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह वफात के बाद भी ज़िंदा हैं। अगर वह मर कर मिट्टी में मिल गए होते और ज़िंदा न होते तो उन की क़ब्रे मुबारक से इस तरह की आवाज़ हरगिज़ न आती।

*हयाते जाविदां पाता है 'आसी'*
*क़तीले तैग़ आबरूए मुहम्मद*

*सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम*

(एक बार हम सब मिल कर बुलंद आवाज़ से फिर दुरूद शरीफ पढ़ें)

औलियाए किराम भी बादे विसाल ज़िंदा रहते हैं, इस सिलसिले में दूसरा वाक़िआ़ यह समाअ़त फरमाएं। हज़रत मख़्दूम अशरफ जहांगीर समनानी कछौछवी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह के तज़्किरे में लिखा है कि जब अपने पीर व मुरशिद हज़रत अलाउल हक़ वद्दीन रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह के आस्तानए मुबारका "पंडोह शरीफ" की हाज़िरी के लिये गुलबरगा शरीफ (दकन) से रवाना हुए तो जिस रोज़ सूबए बिहार में मुनीर शरीफ के क़रीब पहुंचे उसी रोज़ हज़रत शर्फुद्दीन यहया मुनीरी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह का विसाल हुआ। वफात से कुछ पहले उन्हों ने वसिय्यत फरमाई थी कि एक सैय्यद सहीहुन नसब जो तारिके सल्तनत हैं और सातों क़िराअत के हाफिज़ हैं वह अन्क़रीब आने वाले हैं, वही मेरी जनाज़े की नमाज़ पढ़ाएंगे, हज़रत का विसाल हो गया और जनाज़ा भी तैयार हो गया मगर जिनके बारे में हज़रत ने वसिय्यत

फरमाई थी वह नहीं पहुंचे तो शेख़ जिलाई नाम के एक शख़ आप की तलाश में निकले, जब आबादी के बाहर पहुंचे तो उन्हें दूर से एक काफिला आता हुआ नज़र आया, काफिला क़रीब पहुंचा तो शेख़ जिलाई आप को तलाश करने लगे, लोगों की भीड़ में उन को ऐसा चेहरा नज़र आया कि जिन की पेशानी में नूरे विलायत जगमगा रहा था, पूछा कि हुज़ूर सैय्यिद हैं? फरमाया कि हां। फिर सातों क़िराअत के हाफिज़ होने और तर्के सल्तनत के बारे में दरियाफत किया, जब इत्मीनान हो गया कि आप ही के बारे में हज़रत ने वसिय्यत फरमाई है तो बड़े ऐजाज़ व इक्राम के साथ आप को लाए और हस्बे वसिय्यत हज़रत की नमाज़े जनाज़ा आप ने पढ़ाई और वह दफन कर दिये गए।

कुछ वक़्फ़ा बाद मख़दूम साहब को इत्तिलाअ् मिली कि हज़रत शरफुद्दीन मुनीरी रहमतुल्लाहि तआला अलैह का मुबारक हाथ क़ब्र शरीफ से बाहर निकल आया है और बहुत से लोग वहां जमा हो गए हैं मगर किसी की समझ में नहीं आता कि मामला क्या है। हज़रत मख़दूम साहब मज़ार शरीफ के पास पहुंचे, जब क़ब्र के बाहर निकले हुए हाथ को देखा तो आप ने वहीं बैठ कर मुराक़बा फरमाया और जब सर उठाया तो लोगों को बताया कि हज़रत शेख़ मुनीरी रहमतुल्लाहि तआला अलैह को मर्दाने ग़ैब से एक टोपी मिली थी जिस के बारे में हज़रत ने वसिय्यत फरमाई थी कि वह मेरे साथ क़ब्र में रख दी जाए मगर आप लोग भूल गए। हज़रत शेख़ उसी टोपी को तलब फरमा रहे हैं, लोगों ने तस्दीक़ की कि वाक़ई हज़रत ने टोपी के मुतअल्लिक़ वसिय्यत फरमाई थी कि वह मेरे साथ क़ब्र में रख दी जाए जिसे हम लोग भूल गए, अब वह टोपी लाई गई और जब हज़रत शेख़ के मुबारक हाथ पर रखी गई तो आप ने फौरन अपना हाथ अन्दर कर लिया।

यह वाक़िआ भी बबांगे दुहल ऐलान कर रहा है कि औलियाए किराम भी बादे विसाल ज़िंदा रहते हैं अगर ज़िंदा न रहते तो हज़रत

शरफ़ुद्दीन यह्या मुनीरी रहमतुल्लाहि तआला अलैह दफ़न के बाद क़ब्र से बाहर हाथ न निकालते। और औलियाए किराम क्यों न ज़िंदा रहें कि वह तो अल्लाह ही के नाम पर मरते हैं और जो अल्लाह तआला के नाम पर मरते हैं वह हमेशा ज़िंदा रहते हैं।

एक शाइर कहता है:

*ज़िंदा हो जाते हैं जो मरते हैं उस के नाम पर*
*अल्लाह! अल्लाह! मौत को किस ने मसीहा कर दिया*

तक़रीर बहुत तवील हो गई, बस दुआ है कि ख़ुदाए अज़्ज़ व जल्ल हम सब को मज़हबे अहले सुन्नत व जमाअत पर क़ाइम रखे और गुमराही से बचने की तौफ़ीक़े रफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन

بحرمۃ النبی الکریم الامین علیہ وعلی الہ افضل الصلوۃ واکمل التسلیم

*बिहुर्मतिन् नबिय्यिल करीमिल् अमीन*
*अलैहि व अला आलिही अफ़्ज़लुस् सलाति*
*व अक्मलुत् तस्लीम।*

# अमीरुल मोमिनीन हज़रत अबू बकर सिद्दीक़

## *रज़ियल्लाहु तआला अन्हु*

الحمدلله الذى هدانا الى الصراط المستقيم والصلوة والسلام على من اختص بالخُلُقِ العَظِيم وعلى اله واصحابه الذين قاموا بنصرة الدين القويم۔ اما بعد فقد قال الله تعالى فى كتابه العظيم، اعوذ بالله من الشيطٰن الرجيم بسم الله الرحمن الرحيم ۔ وَالَّذِىْ جَآءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهٖ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ٥(پ:١٤،ع:١)صدق الله العلى العظيم وبلغنا رسوله النبى الامين وعلى اله افضل الصلوات والتسليم۔

एक बार आप तमाम हज़रात बुलंद आवाज़ से प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के दरबारे गुहर बार में दुरूदो-सलाम का नज़्राना पेश करें।

اللهم صل على سيدنا ومولانا محمد وعلى ال سيدنا ومولانا محمد معدن الوجود والكرم وعلى اله واصحابه وبارك وسلم۔

*अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला सैय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिंव् व अ़ला आलि सैय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिन् मअ़्दनिल् जूदि वल्करम व अ़ला आलिही व अस्हाबिही व बारिक व सल्लिम।*

एक बाकमाल उस्ताद को जो बहुत सी ख़ूबियों का जामेअ़् होता है अपने जिस शागिर्द में जिस ख़ूबी की मुमताज़ सलाहियत पाता है उसी ख़ूबी में उसे बाकमाल बनाता है, जिस में फक़ीह बनने की ज़्यादा सलाहियत पाता है उसे फक़ीह बनाता है, जिस में मुक़र्रिर बनने की सलाहियत वाज़ेह होती है उसे कामयाब मुक़र्रिर बनाता है और जिस में मुसन्निफ बनने की सलाहियत ग़ालिब होती है उसे बाकमाल मुसन्निफ ही बनाता है तो हमारे आक़ा व मौला जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने अपने जिस सहाबी में जिस ख़ूबी की मुमताज़ सलाहियत पाई उसी वस्फे ख़ास में उसे क़ामिल बनाया। लिहाज़ा अपने प्यारे सहाबी हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु में सिद्दीक़ बनने की सलाहियत को वाज़ेह तौर पर महसूस फरमाया तो उसी वस्फ में उन को मुमताज़ व कामिल

बनाया। और सिद्दीक़ होना ऐसा वस्फ़ है जो बहुत सी ख़ूबियों का जामेअ् है और इस वस्फे ख़ास के सब से ज़्यादा मुस्तहिक़ सिर्फ हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की ज़ाते गिरामी थी इसी लिये वह इस से सरफराज़ फरमाए गए।

*अस्दकुस् सादिक़ीन सैय्यिदुल् मुत्तक़ीन*
*चश्म व गोशे विज़ारत पे लाखों सलाम*

## आप की ख़िलाफत

आक़ाए दो आलम नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की वफात के बाद यह सवाल पैदा हुआ कि उन का नाइब और ख़लीफा किस को मुक़र्रर किया जाए? हदीस शरीफ की मशहूर किताब बैहक़ी में हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से रिवायत कि ख़िलाफत के मामले को हल करने के लिये सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुम हज़रत सअ़द बिन उबादा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के मकान पर जमा हुए, जिन में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़, उमर फारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा और दूसरे बहुत से अजिल्लए सहाबा मौजूद थे।

सब से पहले एक अन्सारी खड़े हुए और उन्हों ने लोगों से इस तरह ख़िताब किया कि ऐ मुहाजिरीन! आप लोगों को मालूम है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम आप में से किसी शख़्स को कही आमिल मुक़र्रर फरमाते थे तो अन्सार में से भी एक शख़्स को उस के साथ कर दिया करते थे। लिहाज़ा इसी तरह हम चाहते हैं कि ख़िलाफत के मामले में भी एक शख़्स मुहाजिरीन में से हो और एक अन्सार में से हो। फिर एक दूसरे अन्सारी खड़े हुए और उन्हों ने भी इसी क़िस्म की तक़रीर फरमाई।

इन लोगों की तक़रीरों के बाद हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु खड़े हुए और उन्हों ने फरमाया, हज़रात! क्या आप लोगों को मालूम नहीं है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम

मुहाजिरीन में से थे लिहाज़ा उन का नाइब और ख़लीफा भी मुहाजिरीन ही में से होगा और जिस तरह हम लोग पहले हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व सल्लम के मुआ़विन व मददगार रहे अब उसी तरह ख़लीफए रसूल के मददगार रहेंगे यह फरमाने के बाद उन्हों हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु का हाथ पकड़ा और कहा कि अब यह तुम्हारे वाली हैं और फिर हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने आप से बैअ़त की, इस के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने और फिर तमाम अन्सार व मुहाजिरीन ने आप से बैअ़त की।

इस के बाद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु मिम्बर पर रौनक़ अफ्रोज़ हुए और एक निगाह डाली तो उस मजमअ़ में हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को नहीं पाया, फरमाया कि उन को बुलाया जाए, जब हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु आए तो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने उन से फरमाया कि आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की फूफी के साहिबज़ादे और हुज़ूर के ख़ास सहाबियों में से हैं, मुझे उम्मीद है कि आप मुसलमानों में इख़्तिलाफ नहीं पैदा होने देंगे। यह सुन कर उन्हों ने कहा कि ऐ ख़लीफए रसूलुल्लाह! आप कोई फिक्र न करें, यह कहने के बाद खड़े हुए और आप से बैअ़त कर ली।

फिर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने मजमअ़ पर एक नज़र डाली तो उस में हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु मौजूद न थे, फरमाया कि अली भी नहीं हैं, उन को भी बुलाया जाए, जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु तशरीफ लाए तो आप ने फरमाया कि ऐ अबू तालिब के साहिबज़ादे! आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के चचा- ज़ाद भाई और उन के दामाद हैं, मुझे उम्मीद है कि आप इस्लाम को कमज़ोर होने से बचाने में हमारी मदद करेंगे, उन्हों ने भी हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआ़ला

अन्हु की तरह कहा कि ऐ ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह! आप कुछ फ़िक्र न करें, यह कह कर उन्हों ने भी बैअ़त कर ली। (तारीख़ुल् ख़ुलफ़ा) और मदारिजुन् नुबुव्वत में है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने फ़रमायाः قَدَّمَكَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَمَنِ الَّذِىْ يُؤَخِّرُكَ यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने आप को आगे बढ़ाया तो फिर कौन शख़्स आप को पीछे कर सकता है।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के इस फ़रमान में उस वाकिआ़ की जानिब इशारा है जो सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने अपनी अलालत के ज़माने में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को आगे बढ़ाया और आपही को तमाम सहाबा का इमाम बनाया। यहां तक कि इब्ने जुमआ़ की हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने लोगों को हुक्म दिया कि वह अबू बकर के पीछे नमाज़ पढ़ें मगर इत्तिफ़ाक़ से उस वक़्त हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु मौजूद न थे तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु आगे बढ़े ताकि वह लोगों को नमाज़ पढ़ाएं लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः لَا لَا لَا يَأْبَى اللّٰهُ وَالْمُسْلِمُوْنَ اِلَّا اَبَابَكْرٍ يُصَلِّىْ بِالنَّاسِ اَبُوْبَكْرٍ यानी नहीं, नहीं, नहीं अल्लाह और मुसलमान अबू बकर ही से राज़ी हैं वही लोगों को नमाज़ पढ़ाएंगे। (तारीख़ुल् ख़ुलफ़ा:43)

बहरहाल इस तरह हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को मुत्तफ़क़ा तौर पर ख़लीफ़ा तस्लीम कर लिया गया और किसी ने इख़्तिलाफ़ नहीं किया। और अल्लाह के महबूब दानाए ख़िफ़ाया व गुयूब (छुपी और पोशीदा को जानने वाले) जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम का फ़रमान हर्फ़ बहर्फ़ सही हुआ कि मेरे बाद ख़िलाफ़त के बारे में ख़ुदाए तआ़ला और मोमिनीन अबू बकर के अलावा किसी को क़बूल न करेंगे। और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लभ का फ़रमान क्यों न सही हो कि

वह अल्लाह के प्यारे महबूब हैं, तो नदी का बहता हुआ धारा रुक सकता है, दरख़्त अपनी जगह से खिसक सकता है बल्कि पहाड़ भी अपनी जगह से टल सकता है मगर अल्लाह के प्यारे महबूब का फरमान नहीं टल सकता है। (एक बार सब लोग मिल कर बुलंद आवाज़ से दुरूद शरीफ पढ़े।)

## आप की ख़िलाफत पर आयाते कुरआनी

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की ख़िलाफत का इस्तिदलाल उलमाए किराम की एक जमाअ़त ने इस आयते करीमा से किया है: يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَنْ يَّرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَسَوْفَ يَاْتِى اللّٰهُ بِقَوْمٍ يُّحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهٗۤ اَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ يُجَاهِدُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَخَافُوْنَ لَوْمَةَ لَاۤئِمٍ यानी ऐ ईमान वालो! तुम में से जो कोई अपने दीन से फिर जाएगा तो अन्क़रीब अल्लाह तआ़ला ऐसे लोगों को लाएगा कि वह अल्लाह के प्यारे हैं और अल्लाह उन का प्यारा है। वह लोग मुसलमानों पर नर्म होंगे और काफिरों पर सख़्त। अल्लाह की राह में वह लोग जिहाद करेंगे और किसी मलामत करने वाले की मलामत से नहीं डरेंगे। (पाराः6,रुकूअ़:12)

मुफस्सिरीने किराम इस आयते करीमा की तफ्सीर में फरमाते हैं कि "क़ौम" से मुराद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु और उन के अस्हाब हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की वफात के बाद जब कुछ अरब इस्लाम से बरगश्ता हो गए तो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु और उन के अस्हाब ही ने मुरतदों से जिहाद किया और फिर उन को मुसलमान बनाया। और हज़रत अबू क़तादा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के विसाल फ़रमाने के बाद जब अरब के कुछ लोग मुरतद हुए और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने उन से क़िताल फरमाया तो उस ज़माने में हम लोग आपस में कहा करते थे कि आयते करीमा: فَسَوْفَ يَاْتِى اللّٰهُ بِقَوْمٍ

يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهُ हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु और उन के अस्हाब ही की शान में नाज़िल हुई है।

और पारा:26, रुकूअ़:10 में हैं: قُلْ لِلْمُخَلَّفِيْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ اِلٰى قَوْمٍ اُولِىْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ تُقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ يُسْلِمُوْنَ यानी इन गवारों से फरमाओ जो कि पीछे रह गए कि अन्क़रीब एक सख़्त लड़ाई वाली क़ौम की तरफ बुलाए जाओगे कि उन से लड़ो या वह मुसलमान हो जाएं।

हज़रत सदरुल् अफाज़िल मौलाना मुहम्मद नईमुद्दीन साहब मुरादाबादी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह इस आयते करीमा की तफ्सीर में तहरीर फरमाते हैं कि उस क़ौम से बनी हुनैफा यमामा के रहने वाले जो मुसैलमए क़ज़्ज़ाब की क़ौम के लोग हैं वह मुराद हैं जिन से हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने जंग फरमाई और ऐसा ही तबरानी में ज़ुहरी से मरवी है। इसी लिये हज़रत इब्ने अबी हातिम और इब्ने क़ुतैबा फरमाते हैं कि यह आयते करीमा हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की ख़िलाफत पर हुज्जत और वाज़ेह दलील है इस लिये कि आप ही ने मुरतदों से क़िताल की तरफ दअ़्वत दी।

और हज़रत शेख़ अबुल हसन अश्अ़री रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह कहते हैं कि मैं ने अबू अब्बास बिन शुरैह को यह फरमाते हुए सुना है कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की ख़िलाफत क़ुरआने करीम की इस आयत से साबित है, इस लिये कि तमाम उलमाए किराम का इस बात पर इत्तिफाक़ है कि इस आयते करीमा के नाज़िल होने के बाद जिन लोगों ने कि ज़कात अदा करने से इनकार कर दिया यानी उस की फर्ज़िय्यत के मुन्किर हो गए थे और जो लोग कि मुरतद हो गए थे सिर्फ हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने लोगों को उन से क़िताल की दअ़्वत दी और उन से जंग की। लिहाज़ा यह आयते करीमा आप की ख़िलाफत पर दलालत करती है और आप की इताअ़त को लोगों पर फर्ज़ करती है। इस लिये कि अल्लाह तआ़ला ने आयते करीमा के आख़िर में वाज़ेह अल्फाज़ के

साथ फरमा दिया है कि जो कोई उस को नहीं मानेगा वह दर्दनाक अज़ाब में मुब्तला होगा।

## आप अफ्ज़लुल् बशर बादल् अंबिया हैं

### अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम व रज़ियल्लाहुत तआला अन्हु

उलमाए अहले सुन्नत व जमाअत का इस बात पर इज्माअ् व इत्तिफाक़ है कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम के बाद तमाम लोगों में सब से अफ्ज़ल हैं। हदीस शरीफ में हैं कि सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: مَا طَلَعَتِ الشَّمْسُ وَلَا غَرَبَتْ عَلَى اَحَدٍ اَفْضَلَ مِنْ اَبِیْ بَکْرٍ اِلَّا اَنْ یَکُوْنَ نَبِیًّا यानी सिवाए नबी के और कोई शख़्स ऐसा नहीं कि जिस पर आफताब तुलूअ् और गुरूब हुआ हो और वह हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से अफ्ज़ल हो। मतलब यह है कि दुनिया में नबी के बाद उन से अफ्ज़ल कोई पैदा नहीं हुआ। और एक दसूरी हदीस में आक़ाए दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने यूं इरशाद फरमाया है: اَبُوْبَکْرِنِ الصِّدِّیْقُ خَیْرُ النَّاسِ اِلَّا اَنْ یَکُوْنَ نَبِیًّا यानी हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लोगों में से सब से बेहतर हैं अलावा इस के कि वह नबी नहीं हैं।

एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मिम्बर पर रौनक़ अफरोज़ हुए और फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के बाद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अफ्ज़लुन् नास यानी लोगों में सब से अफ्ज़ल हैं, अगर किसी शख़्स ने इस के ख़िलाफ कहा तो वह मुफ्तरी और कज़्ज़ाब है, उस को वह सज़ा दी जाएगी जो इफ्तिरा परदाज़ों के लिये शरीअ़त ने सज़ा मुक़र्रर की है।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं: خَیْرُ هٰذِهِ الْاُمَّةِ بَعْدَ نَبِیِّهَا اَبُوْبَکْرٍ وَّ عُمَرُ यानी इस उम्मत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के बाद सब से बेहतर हज़रत अबू बकर व उमर रज़ियल्लाहु

तआला अन्हुमा हैं। अल्लामा ज़हबी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फरमाते हैं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का यह कौल उन से तवातुर के साथ मरवी है। (तारीखुल् खुलफा:31)

और बुखारी शरीफ में है कि हज़रत मुहम्मद बिन हनफिय्यह रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फरमाते हैं कि मैं ने अपने वालिदे गिरामी हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से पूछा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के बाद लोगों में कौन सब से अफ्ज़ल है? قَالَ أَبُوبَكْرٍ फरमाया कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सब से अफ्ज़ल हैं, मैं ने अर्ज़ किया कि फिर उन के बाद? قَالَ عُمَرُ फरमाया कि उन के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सब से अफ्ज़ल हैं। हज़रत मुहम्मद बिन हनफिय्यह फरमाते हैं: خَشِيتُ أَنْ يَقُولَ عُثْمَانُ यानी मैं डरा कि अब इस के बाद हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का नाम लेंगे तो मैं ने कहा कि इस के बाद आप सब से अफ्ज़ल हैं قَالَ مَا أَنَا إِلَّا رَجُلٌ مِنَ الْمُسْلِمِينَ हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि मैं तो मुसलमानों में से एक आदमी हूं यानी अज़ राहे इन्किसारी फरमाया कि मैं एक मामूली मुसलमान हूं। (मिश्कात शरीफ:555)

और बुखारी शरीफ में है कि हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फरमाते हैं कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ज़ाहिरी हयात में हम लोग हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बराबर किसी को नहीं समझते थे यानी वही सब से अफ्ज़ल व बेहतर करार दिये जाते थे। फिर हज़रत उमर को और उन के बाद हज़रत उस्मान को रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फिर हज़रत उस्मान के बाद हम सहाबए किराम को उन के हाल पर छोड़ देते थे और उन के दरमियान किसी को फज़ीलत नहीं देते थे। (मिश्कात शरीफ:555)

और हज़रत अबू मन्सूर बग़दादी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फरमाते हैं कि इस बात पर उम्मते मुस्लिमा का इज्माअ् और इत्तिफाक है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के बाद हज़रत

अबू बकर सिद्दीक, उन के बाद हज़रत उमर फारूक फिर हज़रत उस्माने उन के बाद हज़रत अली और फिर अशरए मुबश्शरा के बाक़ी हज़रात सब से अफ्ज़ल हैं। उन के बाद बाक़ी अस्हाबे बद्र फिर बाक़ी अस्हाबे उहद, उन के बाद बैअ़तुर रिज़्वान के सहाबा फिर दीगर अस्हाबे रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम तमाम लोगों से अफ्ज़ल हैं। (तारीखुल् खुलफा:30) एक बार सब लोग मिल कर बुलंद आवाज़ से दुरूद शरीफ पढ़ें।

## सिद्दीके अक्बर और आयाते कुरआनी

बिरादराने इस्लाम! हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की तारीफ व तौसीफ में कुरआने मजीद की बहुत सी आयाते करीमा नाज़िल हुई हैं, यहां तक कि बहुत से बुजुर्गों ने इस मौज़ूअ् पर मुस्तकिल किताबें लिखी हैं। हम उन में से चन्द आयाते करीमा आप लोगों के सामने पेश करते हैं

खुदाए अज़्ज़ व जल् इरशाद फरमाता है: وَالَّذِیْ جَآءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهٖ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ यह आयते मुबारका 24वें पारा के पहले रुकूअ् की है जिस की तिलावत का शर्फ हम आज की शुरू तक़रीर में पहले हासिल कर चुके हैं। इस आयते करीमा का मतलब यह है कि जो सच्चाई लाया यानी सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम और जिन्होंने उन की तस्दीक की यानी हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु यही लोग मुत्तक़ी हैं।

इस आयते करीमा की तफ्सीर में हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से ऐसे ही मरवी है اَلَّذِیْ جَآءَ بِالصِّدْقِ यानी से मुराद रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम हैं और صَدَّقَ से मुराद हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु हैं जिन्हों ने सब से पहले हुज़ूर की तस्दीक की। ऐसा ही तफ्सीरे मदारिक में भी है। और इसी को हज़रत इमाम राज़ी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह ने तरजीह दी है। और तफ्सीरे रूहुल बयान ने भी। लिहाज़ा इन मुफस्सिरीने किराम के बयान

से साबित हुआ कि खुदाए अज़्ज़ व जल् ने इस आयते मुबारका में रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के साथ हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को भी मुत्तक़ी फरमाया है। मालूम हुआ कि वह इस उम्मत के सब से पहले मुत्तक़ी हैं और क़ियामत तक पैदा होने वाले सारे मत्तक़ियों के सरदार और सैय्यिदुल मुत्तक़ीन हैं। इसी लिये अअ़्ला हज़रत फाज़िले बरैलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फरमाते हैं:

*अस्दकुस् सादिक़ीन सैय्यिदुल् मुत्तक़ीन*
*चश्म व गोशे विज़ारत पे लाखों सलाम*

और पाराः10, रुकूअ्:11 में है:

إِلَّا تَنْصُرُوْهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللّٰهُ إِذْ أَخْرَجَهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ إِذْ يَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا فَأَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهٗ بِجُنُوْدٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا السُّفْلٰى وَكَلِمَةُ اللّٰهِ هِيَ الْعُلْيَا وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ٥

तमाम मुफस्सिरीने किराम का इस बात पर इत्तिफाक़ है कि यह आयते करीमा हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शान में नाज़िल हुई है। अब इस आयते करीमा का मतलब मुलाहेज़ा फरमाएं। खुदाए अज़्ज़ जल् इरशाद फरमाता है: إِلَّا تَنْصُرُوْهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللّٰهُ إِذْ أَخْرَجَهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ यानी ऐ मुसलमानो! अगर तुम लोग मेरे रसूल की मदद न करो तो बेशक अल्लाह ने उन की मदद फरमाई जब काफिरों की शरारत से उन्हें बाहर तशरीफ ले जाना हुआ सिर्फ दो जान से जब वह दोनों यानी हुज़ूर सैय्यिदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ग़ार में थे, إِذْ يَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا जब रसूल अपने यारे ग़ार हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फरमाते थे कि ग़म न कर बेशक अल्लाह हमारे साथ है, فَأَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهٗ بِجُنُوْدٍ لَّمْ تَرَوْهَا तो अल्लाह ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर अपना सकीना उतारा। यानी उन के दिल को इत्मीनान अता फरमाया और

ऐसी फौजों से उस की मदद फरमाई जिन को तुम लोगों ने नहीं देखा। और वह मलाइका थे जिन्हों ने कुफ्फार के रुख़ फेर दिये यहां तक कि वह लोग आप को देख ही न सके وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا السُّفْلٰى और काफिरों की बात को नीचे कर दी, यानी उन की दअ़्वते कुफ्र व शिर्क को पस्त कर दिया, وَكَلِمَةُ اللّٰهِ هِيَ الْعُلْيَا وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ और अल्लाह ही का बोल बाला है और अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है।

इस आयते करीमा में जो आक़ाए दो आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम का यह क़ौल नक़्ल किया गया है कि आप ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से फरमाया لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا यानी ग़म मत करो कि अल्लाह हमारे साथ है तो इस मौक़े पर हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को अपना ग़म नहीं था बल्कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम का ग़म था आप फरमाते थे اِنْ قُتِلْتُ فَاَنَا رَجُلٌ وَاحِدٌ وَاِنْ قُتِلْتَ هَلَكَتِ الْاُمَّةُ यानी अगर मैं क़त्ल कर दिया गया तो सिर्फ एक फर्द हलाक होगा और ऐ अल्लाह के रसूल! अगर आप क़त्ल कर दिये गए तो पूरी उम्मत हलाक हो जाएगी।

बहरहाल यह आयते करीमा हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की तारीफ व तौसीफ में बिल्कुल वाज़ेह है और आप के सहाबी होने पर नस्से क़तई है कि ख़ुदाए अ़ज़्ज़ व जल् ने اِذْ يَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ फरमाया। इसी लिये हज़रत हुसैन बिन फज़्ल रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह ने फरमाया कि مَنْ قَالَ اِنَّ اَبَا بَكْرٍ لَمْ يَكُنْ صَاحِبَ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَهُوَ كَافِرٌ لِاِنْكَارِهٖ نَصَّ الْقُرْاٰنِ यानी जो शख़्स कहे कि हज़रत अबू बकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के सहाबी नहीं थे तो वह नस्से क़ुरआनी के इनकार करने के सबब काफिर है।

और 23वें पारे सूरए वल्लैल की आयते करीमा है وَسَيُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى الَّذِيْ يُؤْتِيْ مَالَهٗ يَتَزَكّٰى यानी और जहन्नम से बहुत दूर रखा जाएगा वह शख़्स जो कि सब से बड़ा परहेज़गार है जो कि अपना माल देता है ख़ुदाए तआ़ला के नज़्दीक सुथरा होने के लिये न कि रिया, सुमअ़ा या इन के

अलावा किसी दूसरे मक़सद के लिये ख़र्च करता है।

यह आयते मुबारका भी हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की फज़ीलत में नाज़िल हुई है। हज़रत सदरुल् अफ़ाज़िल मौलाना मुहम्मद नईमुद्दीन साहब मुरादाबादी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि जब हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत बिलाल को बहुत गिरां क़ीमत पर ख़रीद कर आज़ाद कर दिया तो कुफ्फार को हैरत हुई और उन्होंने कहा कि हज़रत सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने ऐसा क्यों किया, शायद बिलाल पर उन का कोई ऐहसान होगा जो उन्हों ने इतनी गिरां क़ीमत देकर ख़रीदा और आज़ाद कर दिया। इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और ज़ाहिर फरमा दिया गया कि हज़रत सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का यह फेअ्ल मेहज़ अल्लाह तआला की रज़ा के लिये है किसी के ऐहसान का बदला नहीं और उन पर हज़रत बिलाल वग़ैरा कोई ऐहसान है।

इस आयते करीमा में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ को "اَتْقٰى" यानी सब से बड़ा परहेज़गार फरमाया गया है। और पारा:26, रुकूअ्:14 की आयते मुबारका है اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰكُمْ यानी बेशक अल्लाह के यहां तुम में सब से ज़्यादा मुकर्रम और इज़्ज़त वाला वह है जो सब से बड़ा परहेज़गार है। तो इन दोनों आयाते करीमा के मिलाने से मालूम हुआ कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु खुदाए अज़्ज़ व जल् के नज़्दीक सब से ज़्यादा मुकर्रम और इज़्ज़त वाले हैं।

## सिद्दीक़े अक्बर और अहादीसे करीमा

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की फज़ीलत और उन की अज़्मत के इज़्हार में बहुत सी हदीसें वारिद हैं। तिर्मिज़ी शरीफ की हदीस है कि सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया مَانَفَعَنِىْ مَالُ اَحَدٍ قَطُّ مَانَفَعَنِىْ مَالُ اَبِىْ بَكْرٍ यानी किसी शख़्स के माल ने मुझ को इतना फाइदा नहीं पहुंचाया जितना फाइदा कि अबू

बकर के माल ने पहुंचाया है। (मिश्कात शरीफ:555)

और यह हदीस शरीफ भी तिर्मिज़ी में है कि आक़ाए दो आलम ﷺ ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फरमाया اَنْتَ صَاحِبِیْ فِی الْغَارِ وَصَاحِبِیْ فِی الْحَوْضِ यानी ग़ारे सौर में तुम मेरे साथ रहे और हौज़े कौसर पर भी तुम मेरे साथ रहोगे।

और तिर्मिज़ी शरीफ में हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से मरवी है कि मेरे वालिदे गिरामी हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ख़िमदत में हाज़िर हुए तो हुज़ूर ने फरमाया اَنْتَ عَتِيْقُ اللّٰهِ مِنَ النَّارِ यानी तुझे अल्लाह ने जहन्नम की आग से आज़ाद कर दिया है। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फरमाती हैं कि उसी रोज़ से मेरे वालिदे मोहतरम का नाम अतीक़ पड़ गया। (मिश्कात शरीफ:556)

और अबू दाऊद शरीफ की हदीस है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को मुख़ातब करते हुए फरमाया اَمَا اِنَّكَ يَا اَبَا بَكْرٍ اَوَّلُ مَنْ يَّدْخُلُ الْجَنَّةَ مِنْ اُمَّتِیْ यानी ऐ अबू बकर सुन लो कि मेरी उम्मत में सब से पहले तुम जन्नत में दाख़िल होगे। (मिश्कात शरीफ:556)

और हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि एक चांदनी रात में जब कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का सरे मुबारक मेरी गोद में था मैं ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या किसी शख़्स की नेकियां इतनी भी हैं जितनी कि आसमान पर सितारे हैं, आप ने फरमाया हां, उमर की नेकियां इतनी ही हैं। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फरमाती हैं कि फिर मैं ने पूछा और अबू बकर की नेकियों का क्या हाल है? हुज़ूर ने फरमाया उमर की सारी उम्र की नेकियां अबू बकर की एक नेकी के बराबर हैं रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा। (मिश्कात शरीफ:560)

और हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने फरमाया حُبُّ اَبِیْ بَکْرٍ وَشُکْرُہٗ وَاجِبٌ عَلٰی کُلِّ اُمَّتِیْ यानी अबू बकर से मुहब्बत करना और उन का शुक्र अदा करना मेरी पूरी उम्मत पर वाजिब है। (तारीखुल खुलफा:40)

और हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फरमाते हैं कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की बारगाहे अक़्दस में हाज़िर था कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु आए और सलाम के बाद उन्हों ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! मेरे और उमर बिन ख़त्ताब के दरमियान कुछ बातें हो गईं हैं फिर मैं ने नादिम होकर उन से मअ़ज़िरत तलब की लेकिन उन्हों ने मअ़ज़िरत क़बूल करने से इनकार कर दिया। यह सुन कर हुज़ूर ने तीन बार इरशाद फरमाया कि ऐ अबू बकर अल्लाह तआ़ला तुम को माफ फरमाए।

थोड़ी देर के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु भी हुज़ूर की बारगाह में आ गए, उन को देखते ही हुज़ूर के चेहरए अक़्दस का रंग बदल गया, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम को रंजीदा देख कर हज़रत उमर दो ज़ानू बैठे और अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! मैं इन से ज़्यादा कुसूर वार हूं, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने फरमाया اِنَّ اللّٰہَ بَعَثَنِیْ اِلَیْکُمْ فَقُلْتُمْ کَذَبْتَ وَقَالَ اَبُوْبَکْرٍ صَدَقْتَ وَوَاسَانِیْ بِنَفْسِہٖ وَمَالِہٖ فَھَلْ اَنْتُمْ تَارِکُوْنِیْ صَاحِبِیْ यानी जब अल्लाह ने मुझे तुम्हारी जानिब मब्ऊस फरमाया तो तुम लोगों ने मुझे झुठलाया मगर अबू बकर ने मेरी तस्दीक़ की और अपनी जान व माल से मेरी ग़मख़्वारी मदद की तो क्या आज तुम लोग मेरे ऐसे दोस्त को छोड़ दोगे? और इस जुमला को हुज़ूर ने दो बार फरमाया। (तारीखुल् खुलफा:37)

हज़रत मिक़दाम रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से हज़रत अक़ील बिन अबी तालिब ने कुछ सख़्त कलामी की मगर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने हुज़ूर की क़राबत दारी का ख़्याल करते हुए हज़रत अक़ील रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को कुछ नहीं कहा और हुज़ूर

सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में पूरा वाक़िआ़ बयान किया, हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से पूरा माजरा सुन कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला व अलैहि व सल्लम मजलिस में खड़े हुए और फरमाया اَلَا تَدَعُوْنَ لِیْ صَاحِبِیْ مَاشَاْنُکُمْ وَشَانُہٗ فَوَاللّٰہِ مَامِنْکُمْ رَجُلٌ اِلَّاعَلٰی بَابِ بَیْتِہٖ ظُلْمَۃٌ اِلَّابَابُ اَبِیْ بَکْرٍ فَاِنَّ عَلٰی بَابِہِ النُّوْرَ فَوَاللّٰہِ لَقَدْ قُلْتُمْ کَذَبْتَ وَقَالَ اَبُوْبَکْرٍ صَدَقْتَ وَاَمْسَکْتُمُ الْاَمْوَالَ وَجَادَلِیْ بِمَالِہٖ وَخَذَلْتُمُوْنِیْ وَوَاسَانِیْ وَاتَّبَعَنِیْ यानी ऐ लोगो! सुन लो, मेरे दोस्त को मेरे लिये छोड़ दो, तुम्हारी क्या हैसियत है? और उनकी हैसियत क्या है? तुम्हें कुछ मालूम है? ख़ुदा की क़सम तुम लोगों के दरवाज़ों पर अंधेरा है मगर अबू बकर के दरवाज़े पर नूर की बारिश हो रही है। ख़ुदाए ज़ुलजलाल की क़सम तुम लोगों ने मुझे झुठलाया और अबू बकर ने मेरी तस्दीक़ की, तुम लोगों ने माल ख़र्च करने में बुख़्ल से काम लिया, अबू बकर ने मेरे लिये अपना माल ख़र्च किया और तुम लोगों ने मेरी मदद नहीं की मगर अबू बकर ने मेरी ग़मख़्वारी की और मेरी इत्तिबाअ़ की। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा:37)

और मिश्कात शरीफ़:556 में है कि एक रोज़ हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के सामने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का ज़िक्र किया गया तो वह रोने लगे और फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के ज़ाहिरी ज़माने में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु एक दिन रात में जो अमल और बेहतरीन काम किये हैं काश कि मेरी पूरी ज़िंदगी का अमल उनकी एक दिन रात के अमल के बराबर होता। उन की एक रात का अमल तो यह है कि जब वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के साथ हिज्रत की रात ग़ारे सौर पहुंचे (जो तक़रीबन ढाई किलो मीटर बुलंद है) तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम से अर्ज़ किया وَاللّٰہِ لَاتَدْخُلُہٗ حَتّٰی اَدْخُلَ قَبْلَکَ यानी ख़ुदा की क़सम आप ग़ार में दाख़िल नहीं होंगे जब तक कि आप के पहले मैं न दाख़िल हो जाऊं ताकि अगर कोई मूज़ी (तक्लीफ़ देने वाली) चीज़ सांप

वगै़रा हो तो उस से तक्लीफ मुझी को पहुंचे और आप महफू़ज़ रहें। फिर आप ग़ार के अन्दर दाख़िल हुए और उस को ख़ूब साफ किया और जब ग़ार के अन्दर उन को कुछ सुराख़ नज़र आए तो उन को उन्हों ने अपनी लुंगी में से कपड़ा फाड़ कर भर दिया और दो सुराख़ों पर उन्हों ने अपनी ऐड़ियां लगा दीं, इस के बाद रसूले करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम से अर्ज़ किया कि अब आप अन्दर तशरीफ लाइये, हुज़ूर ग़ार के अन्दर तशरीफ ले गए और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की गोद में सर रख कर सो गए, अभी हुज़ूर आराम ही फरमा रहे थे कि उसी हालत में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के पांव में सूराख़ के अन्दर से सांप ने काट लिया मगर आप ने हरकत नहीं की और उसी तरह बैठे रहे, इस लिये कि कहीं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की आंख न खुल जाए लेकिन सांप के ज़हेर की इन्तिहाई तक्लीफ के सबब आप की आंखों से आंसू निकल पड़े जो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के चेहरए अक़्दस पर गिरे, हुज़ूर की आंख खुल गई और आप से दरियाफत फ़रमाया अबू बकर क्या हुआ? قَالَ لُدِغْتُ فِدَاكَ اَبِیْ وَاُمِّیْ अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे मां बाप आप पर क़ुर्बान हों मुझ को सांप ने काट लिया है, हुज़ूर रहमते आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने उन के ज़ख़्म पर अपना लुआ़बे दहन लगा दिया तो फौरन उनकी तक्लीफ जाती रही, मगर अरसए दराज़ के बाद सांप का वही ज़हेर फिर लौट आया जो आप के विसाल का सबब बना यानी उसी ज़हेर की वजह से आप की वफात हुई।

और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के एक दिन का बेहतरीन अमल यह है कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की वफात के बाद अरब के कुछ लोग मुरतद हो गए और उन्हों ने कहा कि हम ज़कात नहीं देंगे यानी उस की फर्ज़िय्यत के

मुन्किर हो गए तो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि अगर मुझ को ऊंट की रस्सी जो लोगों पर वाजिब होगी उस के देने से भी इनकार करेंगे तो मैं उन से जिहाद करूंगा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि उस वक़्त मैं ने उनसे अर्ज़ किया يَاخَلِيْفَةَ رَسُوْلِ اللّٰهِ تَاَلَّفِ النَّاسَ وَارْفُقْ بِهِمْ यानी लोगों के साथ उल्फत से पेश आइये और नर्मी से काम लीजिये तो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि तुम अय्यामे जाहिलिय्यत में तो बड़े सख़्त और ग़ज़बनाक थे क्या इस्लाम में दाख़िल हो कर ज़लील व ख़्वार और पस्त हिम्मत हो गए हो اِنَّهٗ قَدِ انْقَطَعَ الْوَحْیُ وَتَمَّ الدِّیْنُ اَیَنْقُصُ وَاَنَا حَیٌّ यानी वही का आना बन्द हो गया है और दीने इस्लाम कामिल हो चुका है तो क्या मेरी ज़िंदगी में वह कमज़ोर व नाक़िस हो जाएगा? मतलब यह है कि मैं दीने इस्लाम को अपनी ज़िंदगी में कमज़ोर व नाक़िस हरगिज़ नहीं होने दूंगा और जो लोग कि ज़कात देने से इनकार कर रहे हैं मैं उन से जिहाद ज़रूर करूंगा। एक बार हम सब मिल कर बुलंद आवाज़ से सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और उन के अस्हाबे किबार पर दुरूद व सलाम का नज़्राना पेश करें।

यह चन्द हदीसें हम ने आप के सामने अफ्ज़लुल् बशर बादल् अंबियाए हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शान में पेश की हैं। इन के अलावा और भी बहुत सी हदीसें इसी क़िस्म के मज़्मून की हज़रत सिद्दीक़े अक्बर की तारीफ व तौसीफ में वारिद हुई हैं। जिन से साफ ज़ाहिर होता है कि सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के नज़्दीक सारे सहाबा में सब से ज़्यादा मुक़र्रब, सब से ज़्यादा प्यारे और सब से ज़्यादा फज़ीलत व अज़्मत वाले हज़रत सिद्दीक़े अक्बर ही हैं और हुज़ूर ख़ातिमुल् अंबिया सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की जा नशीनी के सब से पहले मुस्तहिक़ वही हैं। *रज़ियल्लाहु तआला अन्हु व अर्ज़ाहु अन्हु व अन् साइरिल मुस्लिमीन।*

# आप का नाम व नसब

बिरादराने इस्लाम! आप का नाम अब्दुल्लाह है और अबू बकर से जो आप मशहूर हैं तो यह आप की कुन्नियत है और सिद्दीक़ व अतीक़ आप का लक़ब है। आप के वालिद का नाम उस्मान और कुन्नियत अबु कुहाफा है और आप की वालिदा का नाम सलमा है जिन की कुन्नियत उम्मुल्-ख़ैर है। आप का सिलसिलए नसब सातवीं पुश्त में मुर्रा बिन कअ्ब पर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के शजरए नसब से मिल जाता है। आप वाक़िए फील के तक़रीबन ढाई बरस बाद मक्का शरीफ में पैदा हुए।

# अ़हदे तिफ्ली में बुत-शिकनी

ज़मानए जाहिलिय्यत में भी आप ने कभी बुत-परस्ती नहीं की है। आप हमेशा इस के ख़िलाफ रहे, यहां तक कि आप की उम्र शरीफ जब चन्द बरस की हुई तो उसी ज़माने में आप ने बुत-शिकनी फरमाई। जैसा कि अअ्ला हज़रत इमाम अहले सुन्नत फाज़िले बरैलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह अपने रिसालए मुबारका "तंज़ीहुल् मकानतिल हैदरिया" सफ्हा:13 में तहरीर फरमाते हैं कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु के वालिद माजिद हज़रत अबू कुहाफा रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु (कि वह भी बाद में सहाबी हुए) ज़मानए जाहिलिय्यत में उन्हें बुत-ख़ाना ले गए और बुतों को दिखा कर उन से कहा هٰذِهٖ اٰلِهَتُكَ الشُّمُّ الْعُلٰى فَاسْجُدْ لَهَا यानी यह तुम्हारे बुलंद व बाला खुदा हैं, इन्हें सज्दा करो। वह तो यह कह कर बाहर चले गए। सैय्यिदना सिद्दीके अक्बर रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु क़ज़ाए मुबरम की तरह बुत के सामने तशरीफ लाए और बराए इज़हारे इज्ज़े सनम (बुतों की आजिज़ी को ज़ाहिर करने के लिये) व जेहल सनम परस्त (बुतों की पूजा करने वालों की जहालत को ज़ाहिर करने के लिये) इरशाद फरमाया اِنِّیْ جَائِعٌ فَاَطْعِمْنِیْ मैं भूका हूं मुझे खाना दे, वह कुछ न बोला,

फरमाया اِنِّیْ عَارِنًا كُسِنِی यानी मैं नंगा हूं मुझे कपड़ा पहना। वह कुछ न बोला। सिद्दीके अक्बर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने एक पत्थर हाथ में लेकर फरमाया मैं तुझ पर पत्थर मारता हूं فَاِنْ كُنْتَ اِلٰهًا فَامْنَعْ نَفْسَكَ अगर तू ख़ुदा है तो अपने आप को बचा। वह अब भी निरा बुत बना रहा। आख़िर आप ने बकुव्वते सिद्दीक़ी उस को पत्थर मारा तो वह ख़ुदाए गुमराहां (गुमराहों का ख़ुदा यानी बुत) मुंह के बल गिर पड़ा। उसी वक़्त आप के वालिद माजिद वापस आ रहे थे, यह माजरा देख कर फरमाया कि एक मेरे बच्चे तुम ने यह क्या किया? फरमाया कि वही किया जो आप देख रहे हैं। आप के वालिद उन्हें उन की वालिदा माजिदा हज़रत उम्मुल ख़ैर के पास रज़ियल्लाहु तआला अन्हा (कि वह भी सहाबिया हुईं) लेकर आए और सारा वाक़िआ उन से बयान किया। उन्हों ने फरमाया इस बच्चे से कुछ न कहो कि जिस रात यह पैदा हुए मेरे पास कोई न था, मैं ने सुना कि हातिफ कह रहा है يَا اَمَةَ اللّٰهِ عَلَى التَّحْقِيْقِ اَبْشِرِیْ بِالْوَلَدِ الْعَتِيْقِ اِسْمُهٗ فِی السَّمَاءِ الصِّدِّيْقُ لِمُحَمَّدٍ صَاحِبٌ وَّرَفِيْقٌ यानी ऐ अल्लाह की सच्ची बन्दी! तुझे ख़ुशख़बरी हो उस आज़ाद बच्चे की जिस का नाम आसमानों में सिद्दीक़ है और जो मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का यार व रफीक़ है।

رواه القاضی ابو حسین احمد بن محمد الزبیدی بسنده فی معالی الفرش الی عوالی العرش۔

## आप अहदे जाहिलिय्यत में

ज़मानए जाहिलिय्यत में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपनी बिरादरी में सब से ज़्यादा मालदार थे, मुरव्वत व ऐहसान का मुजस्समा थे, क़ौम में बहुत मोअज़्ज़ समझे जाते थे, गुमशुदा की तलाश आप का शेवा रहा और मेहमानों की आप ख़ूब मेज़बानी फरमाते थे। आप का शुमार रुअसाए कुरैश में होता थे, वह लोग आप से मशवरा लिया करते थे और आप से बे इन्तिहा मुहब्बत करते थे। आप कुरैश के उन ग्यारह लोगों में से हैं जिन को अय्यामे जाहिलिय्यत और ज़मानए इस्लाम दोनों में इज़्ज़त व बुज़ुर्गी हासिल रही

कि आप अहदे जाहिलिय्यत में "ख़ूं बहा" और जुर्माने के मुक़द्दमात का फैसला किया करते थे जो उस ज़माने का बहुत बड़ा ऐज़ाज़ समझा जाता था।

आप ने अहदे जाहिलिय्यत में कभी शराब नहीं पी। एक बार सहाबए किराम के मजमअ में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से दरियाफत किया गया कि आप ज़मानए जाहिलिय्यत में शराब पी है, आप ने फरमाया खुदा की पनाह! मैं ने कभी शराब नहीं पी। लोगों ने कहा क्यों? फरमाया كُنْتُ اَصُوْنُ عِرْضِىْ وَاَحْفَظُ مُرُوَّتِىْ यानी मैं अपनी इ़ज़्ज़त व आबरू को बचाता था और मुरव्वत की हिफाज़त करता था। इस लिये कि जो शख़्स शराब पीता है उस की इ़ज़्ज़त व नामूस और मुरव्वत जाती रहती है। जब इस बात की ख़बर हुज़ूर रहमते आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम को पहुंची तो आप ने दोबार फरमाया अबू बकर ने सच कहा, अबू बकर ने सच कहा। रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु। (तारीखुल खुलफा)

## आप का हुलिया

एक शख़्स ने हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से अर्ज़ किया आप हम से हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का सरापा और हुलिया बयान फरमाएं तो हज़रत सिद्दीक़ा ने फरमाया कि आप का रंग सफेद था, बदन एकहरा था, दोनों रुख़्सार अन्दर को दबे हुए थे, पेट इतना बड़ा था कि आप की लुंगी अक्सर नीचे खिसक जाया करती थी, पेशानी पर हमेशा पसीना रहता था, चेहरे पर ज़्यादा गोश्त नहीं था, हमेशा नज़रें नीची रखते थे, पेशानी बुलंद थी, उंगलियों की जड़ें गोश्त से ख़ाली थीं यानी खाइयां खुली रहती थीं, हिना और कतम का ख़िज़ाब लगाते थे।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम मदीना तैय्यिबा तशरीफ लाए तो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के अलावा

किसी के बाल सियाह व सफेद मिले हुए खिचड़ी नहीं थे। आप उन खिचड़ी बालों पर हिना यानी मेंहदी और कतम का ख़िज़ाब लगाया करते थे। (तारीख़ुल खुलफा:22) हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बारे में यह जो बयान किया गया है कि आप कतम का ख़िज़ाब लगाते थे, इस से आप के मुतअ़ल्लिक़ सियाह ख़िज़ाब का गुमान करना यह इस से नील और हिना मिले हुए कि मुतलक़न जाइज़ समझ लेना महेज़ गलती है। तफ्सील के लिये अअ़्ला हज़रत फाज़िल बरैलवी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह के रिसालए मुबारका "हक्कुल ऐब फी हुरमति तस्वीदिश् शैब" का मुतालआ़ करें।

## आप का क़बूले इस्लाम

बिरादराने मिल्लत! बहुत से सहाबए किराम व ताबईन इज़ाम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम फरमाते हैं कि सब से पहले इस्लाम क़बूल करने वाले हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं। इमाम शअ़बी फरमाते हैं कि मैं ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से पूछा कि सब से पहले इस्लाम लाने वाला कौन है? तो उन्हों ने फरमाया हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और सुबूत में हज़रत हस्सान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के वह अश्आर पढ़े जो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तारीफ व तौसीफ में हैं और उन में सब से पहले आप के इस्लाम लोने का ज़िक्र है। और इब्ने असाकिर ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की है, उन्हों ने फरमाया اَوَّلُ مَنْ اَسْلَمَ مِنَ الرِّجَالِ اَبُوْبَكْرٍ यानी सब से पहले मर्दों में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इस्लाम लाए। और इब्ने सअ़द ने सहाबिए रसूल हज़रत अूब अरवी दौसी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की है उन्हों ने फरमाया اَوَّلُ مَنْ اَسْلَمَ اَبُوْبَكْرٍ الصِّدِّيْقُ यानी सब से पहले जो इस्लाम लाए वह अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं। यहां तक कि हज़रत मैमून बिन मेहरान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से जब दरियाफत किया गया कि

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ पहले मुसलमान हुए या हज़रत अली? तो उन्हों ने जवाब में फरमाया وَاللّٰهِ لَقَدْ اٰمَنَ اَبُوْبَكْرٍ بِالنَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ زَمَنَ بَحِيْرَا الرَّاهِبِ यानी क़सम है खुदाए अज़्ज़ व जल्ल की कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बहीरा राहिब ही के ज़माने में नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर ईमान ला चुके थे, जब कि हज़रत अली पैदा भी नहीं हुए थे। (तारीखुल खुलफा:23)

और मुहम्मद बिन इस्हाक़ फरमाते हैं कि मुझ से मुहम्मद बिन अब्दुर रहमान तमीमी ने बयान किया कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने बयान फरमाया कि जब मैं ने किसी को भी इस्लाम की दअ्वत दी तो उस को तरद्दुद हुआ अलावा अबू बकर के कि जब मैं ने उन पर इस्लाम पेश किया तो उन्हों ने बग़ैर तरद्दुद के इस्लाम क़बूल कर लिया। इमाम बैहक़ी फरमाते हैं कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साबिकुल इस्लाम होने का सबब यह है कि आप नुबुव्वत व रिसालत की निशानियां क़ब्ल अज़ इस्लाम ही मालूम कर चुके थे इस लिये जब उन को इस्लाम की दअ्वत दी गई तो उन्हों ने फौरन इस्लाम क़बूल कर लिया।

और बाज़ मोहद्दिसीन यूं फरमाते हैं कि ऐलाने नुबुव्वत के क़ब्ल ही हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के दोस्त थे और आप के अख़्लाक़ की उम्दगी, आदत की पाकीज़गी और आप की सच्चाई व दियानतदार पर यक़ीने कामिल रखते थे तो जब सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उनपर इस्लाम पेश किया तो उन्हों ने फौरन क़बूल कर लिया। इस लिये कि जो शख़्स ज़िंदगी के आम हालात में झूठ नहीं बोलता और न ग़लत बात कहता है तो भला वह खुदाए ज़ुल-जलाल के बारे में कैसे झूठ बोल सकता है कि उस ने मुझे रसूल बना कर मब्ऊस फरमाया है। इसी बुनियाद पर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फौरन बिला तअम्मुल मुसलमान हो गए।

इन तमाम शवाहिद से मालूम हुआ कि हज़रत सिद्दीके अक्बर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तमाम सहाबा में सब से पहले इस्लाम कबूल किये हैं। इस लिये बाज़ हज़रात ने यहां तक दअ्वा किया है कि आप के सब से मुसलमान होने पर इज्माअ् है। लेकिन बाज़ लोग कहते हैं कि सब से पहले हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ईमान लाए। और बाज़ लोगों का ख़्याल है कि उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने सब से पहले इस्लाम कबूल किया। तो इन तमाम अक्वाल में हमारे इमामे आज़म अबू हनीफा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इस तरह ततबीक फरमाई है कि मर्दों में सब से पहले हज़रत अबू बकर सिद्दीक़, औरतों में सब से पहले हज़रत ख़दीजा और लड़कों में सब से पहले हज़रत अली ईमान लाए हैं। *रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन।*

## आप का कमाले ईमान

हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का ईमान सारे सहाबा में सब से ज़्यादा कामिल था, जिस का सुबूत बहुत से वाकिआत से मिलता है। हुदैबिया में जिन शर्तों पर सुलह हुई उन में एक शर्त यह भी थी कि मक्का के मुसलमानों या काफिरों में से अगर कोई शख़्स मदीना चला जाए तो वह वापस कर दिया जाएगा लेकिन अगर कोई मुसलमान मदीने से मक्का चला आए तो उसे वापस नहीं किया जाएगा, अभी सुलह नामे पर तरफ़ैन (दोनों गिरोह) के दस्तख़त नहीं हुए थे कि अबू जन्दल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो मुसलमान हो चुके थे, मक्का मुअज़्ज़मा से गिरते पड़ते और अपनी बेड़ियां घसीटते हुए हुदैबिया मकाम पर मुसलमानों के दरमियान आ गए, सुहैल बिन अम्र जो अबू जन्दल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का बाप था और कुफ्फारे मक्का की तरफ से सुलह की गुफ्तगू करने के लिये हुदैबिया आया हुआ था, जब उस ने अपने बेटे को देखा तो कहा कि अबू जन्दल को आप मेरी तरफ वापस कर दें। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व

सल्लम ने फरमाया कि अभी तो सुलह नामे पर फरीकैन के दस्तख़त ही नहीं हुए हैं। लिहाज़ा यह मुआहिदा तुम्हारे और हमारे दस्तख़त हो जाने के बाद ही नाफिज़ होगा। उस ने कहा तो जाइये हम आप से सुलह नहीं करेंगे, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने फरमाया ऐ सुहैल! अबू जन्दल को मेरे पास रहने की तुम अपनी तरफ से इजाज़त दे दो, उस ने कहा मैं इस बात की हरगिज़ इजाज़त नहीं दे सकता।

जब हज़रत अबू जन्दल रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने देखा कि अब मैं फिर मक्का लौटा दिया जाउंगा तो उन्हों ने सहाबए किराम से फर्याद की और कहा कि ऐ मुसलमानो! देखो में काफिरों की तरफ लौटया जा रहा हूं, हालां कि मैं मुसलमान हो चुका हूं और आप लोगों के पास आ गया हूं। और हज़रत अबू जन्दल के बदन पर काफिरों की मार के जो निशानात थे आप मुसलमानों को वह निशानात दिखा दिखा कर रोने लगे, तो मुसलमानों को बड़ा जोश पैदा हो गया यहां तक कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु अल्लाह के महबूब दानाए ख़ुफाया व ग़ुयूब जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की बारगाह में पहुंच गए और अर्ज़ किया, क्या आप अल्लाह के सच्चे रसूल नहीं हैं? इरशाद फरमाया क्यों नहीं, यानी हां मैं अल्लाह का सच्चा रसूल हूं, फिर हज़रत उमर ने अर्ज़ किया, क्या हम हक़ पर और कुफ्फार बातिल पर नहीं हैं? हुज़ूर ने फरमाया क्यों नहीं? यानी बेशक हम हक़ पर हैं और कुफ्फार बातिल पर हैं। इस जवाब पर हज़रत उमर ने कहा तो फिर हम दीन के मामले में दब कर क्यों सुलह करें? हुज़ूर ने फरमाया ऐ उमर! बेशक मैं अल्लाह का रसूल हूं, मैं उस की नाफरमानी कभी नहीं कर सकता और मेरा मददगार वही है। फिर हज़रत उमर ने कहा क्या आप यह नहीं फरमाया करते थे कि हम बैतुल्लाह शरीफ का तवाफ करेंगे? हुज़ूर ने फरमाया ठीक है; मगर हम ने यह कब कहा था कि इसी साल तवाफ करेंगें। हज़रत उमर ने कहा कि हां यह सही है कि आप ने इसी साल के लिये नहीं फरमाया था।

फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास गए और उन से भी इसी क़िस्म की गुफ्तुगू की, तो हज़रत सिद्दीके अक्बर ने फरमाया اِلْزَمْ غَرْزَهٗ यानी उन की रकाब थामे रहो और उन के दामन से लगे रहो, बेशक वह अल्लाह के रसूल हैं और अल्लाह उन का मुआविन और मददगार है। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के इस जवाब से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का जोश ठंडा हो गया।

हुदैबिया में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने जिस तरह सुलह फरमाई उस से मुसलमानों की नागवारी और रंज व ग़म का यह आलम रहा कि तक्मीले मुआहिदा के बाद तीन बार हुज़ूर ने फरमाया कि उठो क़ुर्बानी करो और सर मुंडा कर एहराम खोल दो मगर कोई उठने को तैयार न होता था यहां तक कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जोश में आकर हुज़ूर सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की बारगाह में ऐसी गुफ्तुगू की कि जिस पर वह ज़िंदगी भर अफ्सोस करते रहे और माफी के लिये बहुत सी नेकियां करते रहे, मगर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को जो जवाब दिया वह ईमान अफ्रोज़ जवाब बता रहा है कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपनी जगह पर बिल्कुल मुत्मइन थे कि हुज़ूर अल्लाह के रसूल हैं वह जो कुछ कर रहे हैं सब हक़ है। हर हाल में अल्लाह उन की मदद फरमाएगा।

इस वाक़िआ से साफ ज़ाहिर होता है कि हुज़ूर की रिसालत व नुबुव्वत पर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का ईमान सारे सहाबा में सब से ज़्यादा कामिल व अक्मल था जिस ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के जोश को भी ठंडा कर दिया।

और शबे मेअ़राज की सुबह बहुत से मुश्रिकीन हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास आए और कहा कि आप को

कुछ ख़बर है? आप के दोस्त मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) कह रहे हैं कि उन्हों रात का बैतुल मुक़द्दस और आसमान वग़ैरह की सैर कराई गई है। आप ने कहा क्या वाक़ई वह ऐसा फरमा रहे हैं? उन लोगों ने कहा हां, वह ऐसा ही कह रहे हैं, तो आप ने फरमाया إِنِّي لَأُصَدِّقُهُ بِأَبْعَدَ مِنْ ذٰلِكَ यानी अगर वह इस से भी ज़्यादा बईद अज़ क़यास और हैरत अंगेज़ ख़बर देंगे तो बेशक मैं उस की तस्दीक़ करूंगा।

और ग़ज़्वए बद्र में आप के साहिबज़ादे हज़रत अब्दुर रहमान कुफ्फ़ारे मक्का के साथ थे। इस्लाम क़बूल करने के बाद उन्हों ने अपने वालिद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से कहा कि आप जंगे बद्र में कई बार मेरी ज़द में आए लेकिन मैं ने आप से सर्फे नज़र की और आप को क़त्ल नहीं किया। इस के जवाब में सिद्दीक़े अक्बर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया لَوْ أَهْدَفْتَ لِي لَمْ أَنْصَرِفْ عَنْكَ यानी ऐ अब्दुर रहमान! कान खोल कर सुन लो कि अगर तुम मेरी ज़द में आ जाते तो मैं सर्फे नज़र न करता बल्कि तुम को क़त्ल करके मौत के घाट उतार देता।

इन वाक़िआत से भी वाज़ेह तौर पर मालूम हुआ कि हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का ईमान सारे सहाबा में सब से ज़्यादा कामिल था, बल्कि दर्जए कमाल की इन्तिहा को पहुंचा हुआ था, यहां तक कि इमामे बैहक़ी ने शोअ़बुल ईमान में हज़रत उमर फारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का यह क़ौल नक़ल किया है कि पूरी ज़मीन के मुसलमानों का ईमान और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का ईमान अगर वज़न किया जाए तो हज़रत हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ईमान का पल्ला भारी होगा। रज़ियल्लाहु तआला अन्हु। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा:40)

एक बार हम सब मिल कर सरकारे मदीना और उन के अस्हाब पर बुलंद आवाज़ से दुरूद व सलाम की डालियां पेश करें।

# आप की शुजाअ़त

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु सारे सहाबा में सेब से ज़्यादा शुजाअ़ और बहादुर भी थे। अल्लामा बज़्ज़ार रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह ने अपनी मुस्नद में तहरीर फरमाते हैं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने लोगों से दरियाफत किया कि बताओ सब से ज़्यादा बहादुर कौन है? उन लोगों ने कहा कि सब से ज़्यादा बहादुर आप हैं, हज़रत अली ने फरमाया मैं तो हमेशा अपने जोड़ से लड़ता हूं, फिर कैसे मैं सब से बहादुर हुआ, तुम लोग यह बताओ कि सब से ज़्यादा बहादुर कौन है? लोगों ने कहा कि हज़रत हम को नहीं मालूम है, आप ही बताएं. आप ने फरमाया कि सब से ज़्यादा शुजाअ़ और बहादुर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु हैं, सुनो! जंगे बद्र में हम लोगों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के लिये एक अरीश यानी झोंपड़ा बनाया था ताकि गर्द व गुबार और सूरज की धूप से हुज़ूर महफ़ूज़ रहें तो हम लोगों ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के साथ कौन रहेगा? कहीं ऐसा न हो कि उन पर कोई हमला कर दे فَوَاللّٰهِ مَا دَنَا مِنَّا اَحَدٌ اِلَّا اَبُوْبَكْرٍ यानी तो खुदा की क़सम इस काम के लिये सिवाए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के कोई आगे नहीं बढ़ा, आप शमशीरे बरहना हाथ में लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के पास खड़े हो गए फिर किसी दुश्मन को आप के पास आने की जुर्अत नहीं हो सकी और अगर किसी ने जुर्अत भी की तो आप उस पर टूट पड़े। इस लिये अबू बकर सिद्दीक़ ही सब से ज़्यादा शुजाअ़ और बहादुर थे। (तारीखुल खुलफ़ा:25)

और हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फरमाते हैं कि एक बार का वाक़िआ़ है कि काफिरों ने रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम को पकड़ लिया और कहने लगे कि तुम ही हो जो

कहते हो कि खुदा एक है, हज़रत अली ने फरमाया तो क़सम खुदा की इस मौके पर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ अलावा कोई हुज़ूर के क़रीब नहीं गया, आप आगे बढ़े और काफिरों को मारा और उन्हें धक्के दे दे के हटाया और फरमाया तुम पर अफ्सोस है कि तुम लोग ऐसी ज़ात को तक्लीफ पहुंचा रहे हो जो यह कहता है कि मेरा परवरदिगार सिर्फ अल्लाह है। और हज़रत अली ने फरमाया कि लोग अपने ईमान को छुपाते थे मगर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने ईमान को अलल् ऐलान ज़ाहिर फरमाते थे इस लिये आप सबसे ज़्यादा बहादुर थे। (तारीखुल खुलफा:25)

और अल्लामा हैसम अपनी मुस्नद में तहरीर फरमाते हैं कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने खुद फरमायाः لَمَّا كَانَ يَوْمُ أُحُدٍ اِنْصَرَفَ النَّاسُ كُلُّهُمْ عَنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَكُنْتُ أَوَّلُ مَنْ فَاءَ कि यानी जंगे उहद के दिन सब लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को तन्हा छोड़ कर इधर उधर हो गए तो सब से पहले मैं हुज़ूर के पास पहुंच कर उन की हिफाज़त की। (तारीखुल खुलफा:25)

इन शवाहिद से रोज़े रोशन की तरह वाज़ेह हो गया कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सारे सहाबा में सबसे ज़्यादा शुजाअ् और बहादुर भी थे। *रज़ियल्लाहु तआला अन्हु व अरज़ाहु अन्ना*

## आप की सख़ावत

हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने और सख़ावत करने के बारे में भी सारे सहाबा पर फौक़ियत रखते थे। हदीस शरीफ की दो मशहूर किताबें तिर्मिज़ी और अबू दाऊद में हैं, हज़रत उमर फारूक़ आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने एक रोज़ हम लोगों को अल्लाह की राह में सदक़ा और ख़ैरात करने का हुक्म दिया और हुस्ने इत्तिफाक़ से इस मौक़े पर मेरे पास काफी माल

था, मैं ने अपने दिल में कहा कि अगर हज़रत अबू बकर से आगे बढ़ जाना किसी दिन मेरे लिये मुम्किन होगा तो आज का दिन होगा। मैं काफी माल ख़र्च करके आज उन से सब्क़त ले जाउंगा। हज़रत उमर फरमाते हैं तो मैं आधा माल लेकर खिदमत में हाज़िर हुआ तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने मुझ से दरियाफ्त फरमाया مَا اَبْقَيْتَ لِاَهْلِكَ यानी अपने घर वालों के लिये तुम ने कितना छोड़ा? हज़रत उमर फरमाते हैं कि मैं ने अर्ज़ किया कि आधा माल उन के लिये छोड़ दिया है, फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु जो कुछ उनके पास था सब ले आए, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने उन से पूछा مَا اَبْقَيْتَ لِاَهْلِكَ यानी ऐ अबू बकर! अपने अहल अयाल के लिये क्या छोड़ आए हो? यानी हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने अर्ज़ किया कि उन के लिये मैं अल्लाह और उस के रसूल को छोड़ आया हूं। मतलब यह है कि मेरे और मेरे अहल व अयाल के लिये अल्लाह व रसूल काफी हैं।

*परवाने को चिराग़ है बुलबुल को फूल बस*
*सिद्दीक़ के लिये है ख़ुदा का रसूल बस*

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फरमाते हैं قُلْتُ لَا اَسْبِقُهُ اِلٰى شَيْءٍ اَبَدًا यानी मैं ने अपने दिल में कहा किसी चीज़ में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु पर मैं कभी सब्क़त नहीं ले जा सकूंगा। (मिश्कात शरीफ:556)

और हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से रिवायत है जिस रोज़ मेरे वालिद बुज़ुर्गवार हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु इस्लाम से मुशर्रफ हुए उस रोज़ आप के पास चालीस हज़ार दीनार मौजूद थे और एक रिवायत में है कि चालीस हज़ार दिरहम थे, आप ने यह सारा माल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के हुक्म पर ख़र्च कर दिया। और हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला

अन्हुमा से मरवी है कि जिस हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ईमान लाए तो उन के पास चालीस हज़ार दिरहम थे और जब आप मदीना तैय्यिबा हिज्रत करके आए तो उस माल में से आप के पास सिर्फ पांच हज़ार बाक़ी रह गए थे। मक्का मोअज़्ज़मा में आप ने 35 हज़ार दिरहम मुसलमान गुलामों के आज़ाद कराने और इस्लाम की मदद में ख़र्च कर डाला था।

हज़रत सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना मुहम्मद नईमुद्दीन साहब मुरादाबादी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि जब हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु राहे ख़ुदा में चालीस हज़ार दीनार ख़र्च किये, दस हज़ार रात में, दस हज़ार दिन में, दस हज़ार छुपा कर, दस हज़ार अ़लानिया तो अल्लाह तआ़ला ने उन के हक़ में यह आयते करीमा नाज़िल फरमाई: اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ यानी जो लोग अपने माल ख़ैरात करते हैं रात में और दिन में, छुपा कर और अलानिया, तो उन के लिये उन के रब के पास उन का अज्र है और न उनको कुछ ख़ौफ होगा और न वह लोग ग़मगीन होंगे। (पाराः3 रुकूअ़ः6)

तिर्मिज़ी शरीफ में रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जिस किसी ने भी मेरे साथ एहसान किया था मैं ने हर एक का एहसान उतार दिया अलावा अबू बकर के एहसान के। उन्हों ने मेरे साथ ऐसा एहसान किया है जिस का बदला क़ियामत के दिन उन को ख़ुदाए तआ़ला ही अता फरमाएगा। وَمَا نَفَعَنِىْ مَالُ اَحَدٍ قَطُّ مَا نَفَعَنِىْ مَالُ اَبِىْ بَكْرٍ यानी और हरगिज़ किसी के माल ने मुझे इतना फायदा नहीं पहुंचाया जितना फायदा कि अबू बकर के माल ने पहुंचाया है।

(मिश्कात शरीफः555)

एक बार हम सब मिल कर सरकारे मदीना और उन के अस्हाब पर बुलन्द अवाज़ से दुरूद व सलाम का नज़्राना पेश करें।

# हुज़ूर से मुहब्बत

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को बहुत चाहते थे और उनसे बेइन्तिहा मुहब्बत फरमाते थे, शुरू ज़मानए इस्लाम में जो शख़्स मुसलमान होता था वह हत्तल इम्कान अपने इस्लाम को छुपाए रखता था और सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम भी छुपाने की तल्क़ीन फरमाते थे ताकि काफिरों से अज़िय्यत न पहुंचे। जब मुसलमानों की तादाद तक़रीबन 40 हुई तो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से दरख़्वास्त की कि अब इस्लाम की तब्लीग़ खुल्लम खुल्ला और अलल् ऐलान की जाए, पहले तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इनकार फरमाया लेकिन जब सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बहुत इसरार किया तो आप ने क़बूल फरमा लिया और सब लोगों को साथ लेकर मस्जिदे हराम में तशरीफ ले गए। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने खुत्बा शुरू फरमाया और यह सब से पहला खुत्बा है जो इस्लाम में पढ़ा गया। हुज़ूर के चचा हज़रत अमीरे हम्ज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उसी रोज़ इस्लाम लाए, खुत्बा का शुरू होना था कि चारों तरफ से मुश्रिकीन मुसलमानों पर टूट पड़े। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की अज़्मत व शराफत मक्का मुअज़्ज़मा में मुसल्लम थी, इस के बावजूद आप को इस क़दर मारा कि पूरा चेहरा और कान व नाक सब लहू लहान हो गए और ख़ून से भर गए और हर तरह से आप को बहुत मारा यहां तक कि बेहोश हो गए। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के क़बीले बनू तमीम के लोगों को ख़बर हुई तो वह आपको वहां से उठा कर लाए और किसी को भी यह उम्मीद नहीं थी कि मुश्रिकीन की इस मार के बाद आप ज़िंदा बच सकेंगे। आप के क़बीले के लोग

मस्जिदे कअ़्बा में आए और ऐलान किया कि अगर हज़रत अबू बकर इस हादिसे में इन्तेक़ाल कर गए तो हम उन के बदले में उत्बा बिन रबीआ़ को क़त्ल करेंगे कि उस ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को मारने में बहुत ज़्यादा हिस्सा लिया था।

शाम तक आप बेहोश रहे और जब होश में हुए तो सब से पहला लफ्ज़ यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम का क्या हाल है? लोगों ने आप को बहुत मलामत की कि उन्हीं के साथ रहने की वजह से यह मुसीबत पेश आई और दिन भर बेहोश रहने के बाद बात की तो सब से पहले उन्हीं का नाम लिया। और सब से पहले उन का नाम क्यों न लें कि उन के ख़ून में एक-एक क़त्रा में सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की मुहब्बत मोजज़न थी। कुछ लोग बद दिली के सबब और बाज़ लोग इस ख़्याल से उठकर चले गए कि जब बोलने लगे हैं तो अब आप की जान बच जाएगी। जाते हुए लोग आप की वालिदा मोहतरमा हज़रत उम्मुल ख़ैर (रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा कि बाद में वह भी मुसलमान हुई) उन से कह गए कि हज़रत अबू बकर के खाने पीने के लिये किसी चीज़ का इन्तिज़ाम कर दें। वह कुछ तैयार करके लाईं और खाने के लिये बहुत कहा मगर आशिक़े सादिक़ हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की वही एक सदा थी कि मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम का क्या हाल है? और उन पर क्या गुज़री? आप की वालिदा ने फरमाया कि मुझे कुछ नहीं मालूम कि उन का क्या हाल है? आप ने फरमाया कि हज़रत उमर क़ी बहन उम्मे जमील (रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) के पास जाकर दरियाफ्त करो कि हुज़ूर का क्या हाल है? वह अपने साहिबज़ादे की इस बेताबाना दरख़्वास्त को पूरी करने के लिये दौड़ी हुई उम्मे जमील के पास गईं और सैयिदना मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम का हाल दरियाफ्त किया, वह भी उस वक़्त तक अपने इस्लाम को छुपाए हुए थीं, उन्होंने टाल दिया, कोई वाज़ेह जवाब

नहीं दिया और कहा कि अगर तुम कहो तो मैं चल कर तुम्हारे बेटे हज़रत अबू बकर को देखूं कि उन का क्या हाल है, उन्हों ने कहा कि हां चलो। हज़रत उम्मे जमील (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) उन के घर गईं और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की हालत देख कर बरदाश्त न कर सकीं, बेतहाशा रोने लगीं, हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ने उन से पूछा कि हुज़ूर का क्या हाल है? हज़रत उम्मे जमील ने आप की वालिदा की तरफ इशारा करते हुए फरमाया कि वह सुन रही हैं, आप ने फरमाया कि उन से न डरो, तो उम्मे जमील ने फरमाया कि हुज़ूर बख़ैरो-आफियत हैं, आप ने दरियाफ्त फरमाया कि इस वक़्त कहां हैं? उन्हों ने कहा कि हज़रत अरक़म के घर तशरीफ रखते हैं, फरमाया क़सम है ख़ुदाए ज़ुलजलाल की कि मैं उस वक़्त तक कुछ नहीं खाउंगा जब तक हुज़ूर की ज़ियारत नहीं कर लूंगा।

आप की वालिदा मोहतरमा तो बहुत ज़्यादा बेक़रार थीं कि आप कुछ खा पी लें मगर आप ने क़सम खा ली जब तक हुज़ूर की ज़ियारत नहीं कर लूंगा कुछ नहीं खाउंगा तो आप की वालिदा ने लोगों की आमदो रफ्त बन्द हो जाने का इन्तेज़ार किया ताकि ऐसा न हो कोई आप को देख कर फिर अज़िय्यत पहुंचा दे, जब रात का बहुत सा हिस्सा गुज़र गया और लोगों की आमदो-रफ्त बन्द हो गई तो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को उनकी वालिदा मोहतरमा लेकर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हज़रत अरक़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के घर पहुंचीं, हज़रत अबू बकर हुज़ूर से लिपट गए और हुज़ूर भी अपने आशिक़े सादिक़ से लिपट कर रोए और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की हालत देख कर सब रोने लगे। (तारीख़ुल ख़ुलफा वग़ैरा)

इस वाक़िआ से साफ ज़ाहिर होता है कि आक़ाए दो आलम नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को ग़ायत दर्जे मुहब्बत थी और क्यों न होः

*मुहम्मद है मताए आलम ईजाद से प्यारा*
*पिदर मादर बिरादर जानो-माल से प्यारा*

*मुहम्मद की मुहब्बत दीने हक़ की शर्ते अव्वल है*
*इसी में हो गर ख़ामी तो सब कुछ ना मुकम्मल है*

*सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम*

और हज़रत सदरुल अफाज़िल रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने जैशे उसामा की तन्फीज़ की जिस को हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने अपने अहदे मुबारक के आख़िर में शाम की तरफ रवाना फरमाया था, अभी यह लश्कर थोड़ी ही दूर पहुंचा था और मदीना तैयिबा के क़रीब मक़ामे ज़ी ख़शब ही में था कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने इस आलम से पर्दा फरमाया, यह ख़बर सुन कर अतराफ मदीना के अरब इस्लाम से फिर गए और मुरतद हो गए, सहाबए किराम ने मुज्तमा होकर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु पर ज़ोर दिया कि आप उस लश्कर को वापस बुला लें, इस वक़्त उस लश्कर का रवाना करना किसी तरह मस्लहत नहीं। मदीना गिर्द तो अरब के तवाइफे कसीरा मुरतद हो गए और लश्कर शाम को भेज दिया जाए? इस्लाम के लिये यह नाज़ुक तरीन वक़्त था, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की वफात से कुफ्फार के हौसले बढ़ गए थे और उन की मुर्दा हिम्मतों में जान पड़ गई थी। मुनाफिक़ीन समझते थे कि अब खेल खेलने का वक़्त आ गया, ज़ईफुल ईमान दीन से फिर गए, मुसलमान एक ऐसे सदमे में शिकस्ता दिल और बेताब व नातवां हो रहे हैं जिस का मिस्ल दुनिया की आंख ने कभी नहीं देखा, उन के दिल घायल हैं और आंखों से अश्क जारी हैं, खाना पीना बुरा मालूम होता, ज़िंदगी एक नागवार मुसीबत नज़र आती है। उस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के जानशीन को नज़्म क़ायम करना, दीन का संभालना,

मुसलमानों की हिफ़ाज़त करना, इरतिदाद के सैलाब को रोकना किस क़दर दुश्वार था, बावजूद इस के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के रवाना किये हुए लश्कर को वापस करना और मरज़िए मुबारक के ख़िलाफ जुर्अत करना सिद्दीक़ सरापा सिदक़ का राब्तए नयाज़मन्दी गवारा न करता था और उस को वह हर मुश्किल से सख़्त तर समझते थे, इस पर सहाबा का इस्रार कि लश्कर वापस बुला लिया जाए और खुद हज़रत उसामा का लौट कर आना और हज़रत अबू सिद्दीक़ से अर्ज़ करना कि क़बाइले अरब आमादए जंग और दरपए तख़्रीबे इस्लाम (यानी इस्लाम को बर्बाद करने पर आमादा) हैं और कार आज़मा बहादुर मेरे लश्कर में हैं, उन्हें इस वक़्त रूम भेजना और मुल्क को ऐसे दिलावर मर्दाने जंग से ख़ाली कर देना किसी तरह मुनासिब नहीं मालूम होता, यह हज़रत सिद्दीक़ के लिये और मुश्किलात थीं।

सहाबए किराम ने ऐतिराफ किया है कि उस वक़्त हज़रत सिद्दीक़ की जगह दूसरा होता तो हरगिज़ मुस्तक़िल न रहता और मसाइब व अफ्कार का यह हुजूम और अपनी जमाअत की परेशान हालत मबहूत कर डालती। मगर अल्लाहु अक्बर! हज़रत सिद्दीक़ के पाए सबात को ज़र्रा भर लग़ज़िश न हुई और उन के इस्तिक़्लाल में एक शिम्मा (ज़र्रा बराबर) फर्क़ न आया आप ने फरमाया कि अगर परिन्द मेरी बोटियां नोच खाएं तो मुझे यह गवारा है मगर हुज़ूर अनवर सैयिदे आलम की मरज़ीए मुबारक में अपनी राय को दख़्ल देना और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के रवाना किये हुए लश्कर को वापस करना गवारा नहीं, यह मुझ से नहीं हो सकता। चुनांचे ऐसी हालत में आप ने लश्कर को रवाना फरमा दिया, इस से हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की हैरत अंगेज़ शुजाअत व लियाक़त और कमाले दिलेरी व जवांमर्दी के अलावा उन के तवक्कुले सादिक़ का पता चलता है और दुश्मन भी इंसाफन यह कहने पर मजबूर होता है कि खुदाए तआला ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के बाद

ख़िलाफत व जा नशीनी की अऊ्ला क़ाबिलिय्यत व अहलियत हज़रते सिद्दीक़ को अता फरमाई थी।

अब यह लश्कर रवाना हुआ और जो क़बाइल मुरतद होने के लिये तैयार थे वह यह समझ चुके थे कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के बाद इस्लाम का शीराज़ा ज़रूर दरहम बरहम हो जाएगा और उस की शान व शौकत बाक़ी न रहेगी। उन्हों ने देखा कि लश्करे इस्लाम रूमियों की सर कोबी के लिये रवाना हो गया, उसी वक़्त उन के ख़्याली मन्सूबे ग़लत हो गए और उंन्हों ने समझ लिया कि सैयिदे आलाम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अपने अहदे मुबारक में इस्लाम के लिये ऐसा ज़बर्दस्त नज़्म फरमा दिया है जिस से मुसलमानों का शीराज़ा दरहम बरहम नहीं हो सकता और वह ऐसे ग़म व अन्दोह के वक़्त में भी इस्लाम की तब्लीग़ व इशाअ़त और उस के सामने अक़्वामे आलम को सर निगूं करने के लिये एक ज़बर्दस्त क़ौम पर फौज कशी करते हैं। लिहाज़ा यह ख़्याल ग़लत है कि इस्लाम मिट जाएगा और उस में कुव्वत बाक़ी न रहेगी बल्कि अभी सब्र के साथ देखना चाहिये कि यह लश्कर किस शान से वापस होता है। फज़्ले इलाही से यह लश्कर ज़फ़रे पैकर फतहयाब हुआ, रूमियों को हज़ीमत व शिकस्त हुई, जब यह फातेह लश्कर वापस आया उस वक़्त वह तमाम क़बाइल जो मुरतद होने का इरादा कर चुके थे उस नापाक क़स्द से बाज़ आए और इस्लाम पर सच्चाई के साथ क़ायम हो गए। बड़े-बड़े जलीलुल क़दर साइबुर राय सहाबा जो इस लश्कर की रवानगी के वक़्त निहायत शिद्दत से इख़्तिलाफ फरमा रहे थे अपनी फिक्र की ख़ता और हज़रत सिद्दीक़ की राय मुबारक के साइब और उनके इल्म की वुस्अ़त के मोअ़्तरिफ हुए। (सवानेहे करबला)

और बैहक़ी व इब्ने असाकिर में है कि हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने फरमाया कि क़सम है उस ज़ात की जिस के सिवा कोई माबूद नहीं अगर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआ़ला

अन्हु ख़लीफा मुक़र्रर न हुए होते तो रूए ज़मीन पर खुदाए तआ़ला की इबादत बाक़ी न रह जाती। इसी तरह क़सम के साथ आप ने तीन बार फरमाया, लोगों ने आप से अर्ज़ किया ऐ अबू हुरैरा! आप ऐसा क्यों कह रहे हैं? आप ने फरमाया कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने हज़रत उसामा को अमीरे लश्कर मुक़र्रर करके शाम की तरफ रवाना फरमाया था और वह अभी ज़ी ख़शब मक़ाम पर थे कि हुज़ूर का विसाल हो गया इस ख़बर को सुन कर अतराफे मदीना के अरब मुरतद हो गए। सहाबए किराम हज़रत अबू बकर की ख़िदमत में आए और इस बात पर ज़ोर दिया कि उसामा के लश्कर को वापस बुला लें, आप ने फरमायाः وَالَّذِیْ لَآاِلٰہَ اِلَّاھُوَ لَوْجَرَّتِ الْکِلَابُ بِاَرْجُلِ اَزْوَاجِ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ مَارَدَدْتُ جَیْشًا وَجَّھَہٗ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ यानी क़सम है उस ज़ात की जिस के सिवा कोई मअ़बूद नहीं, अगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की पाक बीवियों के पांव कुत्ते पकड़ कर घसीटें तब भी मैं उस लश्कर को वापस नहीं बुला सकता जिस को अल्लाह के रसूल ने रवाना फरमाया था और न मैं उस परचम को सर निगूं करूंगा जिस को मेरे हुज़ूर ने लहराया था।

पस हज़रत उसामा को आगे बढ़ने का हुक्म दिया, वह रवाना हुए तो मुरतद क़बीले दहश्तज़दा हो गए यहां तक कि वह सलतनते रूम की हद में पहुंच गए, तरफ़ैन में जंग हुई, मुसलमानों का लश्कर फतहयाब हो कर वापस हुआ तो इस तरह इस्लाम का बोल बाला हो गया।

(तारीखुल खुलफा:51)

महबूबे दो आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम से हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को जो बेइन्तहा और ग़ायत दर्जा मुहब्बत थीं उसी मुहब्बत का यह असर है कि ऐसे नाज़ुक वक़्त में सहाबए किराम के ज़ोर डालने के बावजूद हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के लश्कर को वापस बुलाना और प्यारे मुस्तफा के लहराए हुए झण्डे को सरनिगूं करना आप ने गवारा न किया

जिस का नतीजा यह हुआ कि दुश्मनों के हौसले पस्त हो गए और इस्लाम का फिर से बोल बाला हो गया। इसे यूं भी कहा जा सकता है कि हुज़ूर से हज़रत सिद्दीक़ की मुहब्बत ने इस्लाम को ज़िंदए जावेद बना दिया। एक बार फिर बुलन्द आवाज़ से दुरूद शरीफ पढ़िये।

## मानिईने ज़कात

रहमते आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के विसाल फरमाने पर बाज़ लोग तो इस्लाम के सारे अहकाम के मुन्किर हो कर मुरतद हो गए थे और कुछ लोगों ने कहा कि हम ज़कात नहीं देंगे। यानी उस की फरज़ियत के मुन्किर हो गए और ज़कात की फरज़ियत चूंकि नस्से क़तई से साबित है तो उस के मुन्किर होकर वह भी मुरतद हो गए। इसी लिये शारिहीने हदीस व फुक़हाए किराम मानिईने ज़कात को भी मुरतदीन में शुमार करते हैं।

हज़रत हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने उन से जिहाद का इरादा फरमाया तो हज़रत उमर और बाज़ दूसरे सहाबा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुम ने उन से कहा कि इस वक़्त मुन्किरीने ज़कात से जंग करना मुनासिब नहीं, आप ने फरमाया खुदाए ज़ुलजलाल की क़सम अगर वह लोग एक रस्सी या बकरी का एक बच्चा भी हुज़ूर के ज़माने में ज़कात दिया करते थे और अब उस के देने से इनकार करेंगे तो मैं उन से जंग करूंगा। (तारीखुल खुलफा:51) फिर आप मुहाजिरीन व अन्सार को साथ लेकर अअ़राब की तरफ निकल पड़े और जब वह भाग खड़े हुए तो हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को आप अमीरे लश्कर बना कर वापस आ गए, उन्हों ने अअ़राब को जगह-जगह घेरा तो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें हर जगह फतह अता फरमाई। अब सहाबए किराम खुसूसन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने आप की राय के सहीह होने का ऐतराफ किया और कहा कि खुदा की क़सम, अल्लाह तआ़ला ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ का सीना खोल दिया है और उन्हों ने जो कुछ किया वह हक़ है।

और वाकिआ भी यही है कि अगर उस वक्त मानिईने ज़कात की सर कोबी न की जाती और उन्हें छूट दे दी जाती तो फिर कुछ लोग नमाज़ के भी मुन्किर हो जाते और बाज़ लोग रोज़े से भी इनकार कर देते और कुछ लोग बाज़ दूसरी चीज़ों का इनकार कर देते तो इस्लाम अपनी शान व शौकत के साथ बाकी न रहता बल्कि खेल बन जाता और उस का निज़ाम दरहम बरहम हो जाता।

मानिईने ज़कात और उन से हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के जिहाद के नतीजे में हज़रत सदरुल अफाज़िल रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं: यहां से मुसलमानों को सबक़ लेना चाहिये कि हर हालत में हक़ की हिमायत और ना हक़ की मुख़ालफत ज़रूरी है और जो कौम ना हक़ की मुख़ालफत में सुस्ती करेगी वह जल्द तबाह हो जाएगी। आज कल बाज़ सादा लौह बातिल फिरक़ों के रद करने को भी मना करते हैं और कहते हैं कि इस वक़्त आपस की जंग मौकूफ करो, उन्हें हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के तरीक़े अमल से सबक़ लेना चाहिये कि आप ऐसे नाज़ुक वक़्त में भी बातिल की सर शिकनी में तवक़्कुफ न फरमाया, जो फिरक़े इस्लाम को नुक़्सान पहुंचाने के लिये पैदा हुए हैं उन से ग़फलत बरतना यक़ीनन इस्लाम की नुक़्सान रसानी है। (सवानेहे करबला)

इस वाक़िआ से यह भी मालूम हुआ कि सिर्फ कलिमा और नमाज़ मुसलमान होने के लिये काफी नहीं बल्कि इस्लाम की सारी बातों को मानना ज़रूरी है। लिहाज़ा अगर कोई शख़्स इस्लाम के सारे अहकाम पर ईमान रखता हो लेकिन ज़रूरियाते दीन में से किसी एक बात का इनकार करता हो तो वह काफिर व मुरतद है जैसे कि मानिईने ज़कात एक बात का इनकार करके काफिर व मुरतद हुए। نعوذ بالله من ذالك

और मुसैलमा के साथी व मानिईने ज़कात के काफिर व मुरतद होने से यह भी साबित हुआ कि "अरब में काफिर व मुरतद न होंगे" यह कहना ग़लत है।

# ग़लत इल्ज़ाम

राफ़ज़ी लोग हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु पर इल्ज़ाम लगाते हैं कि उन्हों ने हुज़ूर के बाग़ फदक को ग़सब कर लिया और हज़रत फा़तिमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा को नहीं दिया, तो उस का जवाब यह है कि अंबियाए किराम किसी को अपने माल का वारिस नहीं बनाते वह जो कुछ छोड़ जाते हैं सब सदक़ा होता है, जैसा कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से हदीस शरीफ मरवी है कि सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने फरमायाः لَا نُوْرِثُ مَا تَرَكْنَاهُ صَدَقَةٌ यानी हम गिरोहे अंबिया किसी को अपना वारिस नहीं बनाते हम जो कुछ छोड़ जाते हैं वह सब सदक़ा है।

(बुख़ारी, मुस्लिम, मिश्कातः550)

और मुस्लिम शरीफ 2/91 पर है कि हुज़ूर के विसाल फरमा जाने के बाद अज़्वाजे मुतह्हरात ने चाहा कि हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के ज़रिये हुज़ूर के माल से अपना हिस्सा तक़्सीम करवाएं तो हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा ने फरमायाः أَلَيْسَ قَدْ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا نُوْرِثُ مَا تَرَكْنَاهُ صَدَقَةٌ यानी क्या हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने यह नहीं फरमाया है कि हम किसी को अपने माल का वारिस नहीं बनाते हम जो कुछ छोड़ जाएं वह सब सदक़ा है।

और बुख़ारी 2/575 व मुस्लिम 2/90 पर हज़रत मालिक बिन औस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मरवी है कि मजमए सहाबा जिन में हज़रत अब्बास, हज़रत उस्मान, हज़रत अली, हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ, हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम और हज़रत सअ़द बिन वक़्क़ास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम मौजूद थे, हज़रत उमर फारूक़ आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने सब को क़सम देकर फरमाया क्या आप लोग जानते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने फरमाया है कि हम किसी को वारिस नहीं बनाते हम जो कुछ छोड़ें वह

फदका है तो सब ने इक़रार किया कि हां हुज़ूर ने ऐसा फरमाया है।

इन अहादीसे करीमा के सहीह होने का सुबूत यह है कि जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िलाफत का ज़माना आया और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का तरका ख़ैबर और फदक वग़ैरा उनके क़बज़े में हुआ और फिर उन के बाद हस्नैन करीमैन वग़ैरा के इख़्तियार में रहा मगर उन में से किसी ने अज़्वाजे मुतह्हरात हज़रत अब्बास और उन की औलाद को बाग़े फदक वग़ैरा से हिस्सा न दिया। लिहाज़ा मानना पड़ेगा कि नबी के तरके में वरासत जारी नहीं होती। इसी लिये हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को बाग़े फदक नहीं दिया न कि बुग़ज़ व अदावत के सबब जैसा कि राफज़ियों का इल्ज़ाम है। (इस मस्अले के मुतअल्लिक़ मुफ़स्सल बहस हमारे रिसाला "बाग़े फदक और हदीसे क़िरतास" में देखें।) *अल्-अमजदी*

और आयते करीमा وَوَرِثَ سُلَيْمٰنُ دَاوٗدَ या इसके अलावा कुरआने मजीद व हदीस शरीफ में जहां भी कही अंबियाए कराम की वरासत का ज़िक्र है उस से इल्मे शरीअत व नबुव्वुत ही मुराद है न कि दिरहम व दीनार।

## अलालत और वफात

वाक़िदी और हाकिम में है, हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने बयान फ़रमाया कि वालिदे गिरामी हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की अलालत की इब्तिदा यूं हुई कि आप ने 7 जुमादल उख़रा, पीर के रोज़ गुस्ल फरमाया, उस रोज़ सरदी बहुत ज़्यादा थी जो असर कर गई। आप को बुख़ार आ गया और 15 दिन आप अलील रहे, इस दरमियान में आप नमाज़ के लिये भी घर से बाहर तशरीफ नहीं ला सके, आख़िर कार बज़ाहिर उसी बुख़ार के सबब 63 साल की उम्र में 2 साल 2 माह से कुछ ज़ाइद उमूरे ख़िलाफत अंजाम देने के बाद 22 जुमादल उख़रा 13 हि० को आप की वफात हुई

और अक़ाए दो आलम सल्लल्लाहु तआ़ाला अलैहि व सल्लम के मुबारक पहलू में मदफून हुए। إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।*

## आप की करामतें

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ाला अन्हु से कई करामतें ज़ाहिर हुई हैं जिन में चन्द करामतों का ज़िक्र यहां किया जाता है।

हज़रत अब्दुर रहमान बिन अबू बकर रज़ियल्लाहु तआ़ाला अन्हुमा से रिवायत है उन्हों ने फरमाया कि एक बार मेरे बाप हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ाला अन्हु अस्हाबे सुफ्फा में से तीन आदमियों को अपने घर लाए और उन को खाना खिलाने का हुक्म फरमा कर खुद रसूले करीम सल्लल्लाहु तआ़ाला अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में चले गए, यहां तक कि रात का खाना आप ने हुज़ूर ही के यहां खा लिया और बहुत ज़्यादा रात गुज़र जाने के बाद अपने मकान पर तशरीफ लाए। उन की बीवी ने कहा कि मेहमानों के पास आने से आप को किस चीज़ ने रोक रखा? आप ने फरमाया क्या तुम ने अभी तक मेहमानों को खाना नहीं खिलाया, उन्हों ने अर्ज़ किया कि मैं ने खाना पेश किया था मगर मेहमानों ने आप के बग़ैर खाना खाने से इनकार कर दिया, यह सुन कर आप अपने साहिबज़ादे हज़रत अब्दुर रहमान रज़ियल्लाहु तआ़ाला अन्हु पर सख़्त नाराज़ हुए और उन को बहुत बुरा भला कहा कि उस ने मुझ को मुत्तला क्यों नहीं किया, फिर खाना मंगा कर मेहमानों के साथ खाने के लिये बैठ गए।

रावी का बयान है कि اَيْمُ اللّٰهِ مَا كُنَّا نَاْخُذُ مِنَ اللُّقْمَةِ اِلَّا رَبَا مِنْ اَسْفَلِهَا اَكْثَرُ مِنْهَا यानी खुदा की क़सम हम में जो भी लुक़्मा उठाए उस के नीचे खाना उस से ज़्यादा हो जाता, यहां तक कि हम सब शिकम सैर हो गए और जितना खाना पहले था उस से भी ज़्यादा बच रहा। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ाला अन्हु ने मुतअ़ज्जिब हो कर अपनी बीवी से फरमाया कि यह क्या मामला है कि बरतन में खाना पहले से कुछ

ज़्यादा नज़र आता है? आप की बीवी ने क़सम खा कर कहा कि बिला शुब्हा यह खाना पहले से तीन गुना ज़्यादा है, फिर वह खाना उठा कर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में ले गए, सुबह तक खाना बारगाहे रिसालत में रहा, मुसलमान और काफ़िरों के दरमियान एक मुआहेदा हुआ था जिस की मुद्दत ख़त्म हो गई थी तो उस रोज़ सुबह के वक़्त एक लश्कर तैयार किया गया जिस में बहुत काफी आदमी थे पूरी फौज ने उस खाने को शिकम सैर होकर खाया फिर भी उस बरतन में खाना कम नहीं हुआ। (बुख़ारी:1/506)

मेहमानों के खाने के बाद पहले से भी खाने का तीन गुना ज़्यादा हो जाना और सुबह के वक़्त पूरी फौज का उस खाने को शिकम सैर हो कर खाना फिर भी बरतन में खाने का कम न होना यह हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की अज़ीम करामत है।

और हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से मरवी है उन्हों ने फरमाया कि मेरे बाप हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने मरज़े मौत में मुझे वसिय्यत करते हुए इरशाद फरमाया कि मेरी प्यारी बेटी! मेरे पास जो कुछ मेरा माल था आज वह माल वारिसों का हो चुका है, मेरी औलाद में तुम्हारे दो भाई अब्दुर रहमान व मुहम्मद हैं और तुम्हारी दो बहनें हैं। लिहाज़ा मेरे माल को तुम लोग कुरआन मजीद के फरमान के मुताबिक़ तक़्सीम करके अपना अपना हिस्सा ले लेना। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने अर्ज किया कि अब्बा जान! मेरी तो एक ही बहन बीबी अस्मा हैं। यह मेरी दूसरी बहन कौन है? आप ने इरशाद फरमाया कि तुम्हारी सौतेली मां हबीबा बिन्ते ख़ारिजा जो हामिला है उस के पेट में लड़की है वही तुम्हारी दूसरी बहन है। चुनांचे आप के विसाल फरमाने के बाद आप के फरमान के मुताबिक़ हबीबा बिन्त ख़ारिजा के पैट से लड़की (उम्मे कुलसूम) ही पैदा हुई। (मोअत्ता इमाम मुहम्मद बाबुन नहली:348)

इस हदीस शरीफ से हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ की दो करामतें

साबित होती हैं पहली करामत यह कि वफात से पहले आप को इस बात का इल्म हो गया था कि मैं इसी मरज़ में इन्तिकाल कर जाउंगा इसी लिये आप ने वसिय्यत के वक्त यह फरमाया कि आप मेरा माल मेरे वारिसों का माल हो चुका है। और दूसरी करामत यह साबित होती है कि हामिला के पेट में लड़की है आप यक़ीन के साथ जानते थे इसी लिये हज़रत आइशा सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से फरमाया कि हबीबा बिन्ते खारिजा जो हामिला है उस के पेट में लड़की है वही तुम्हारी बहन है। और इन दोनों बातों का इल्म यक़ीनन ग़ैब का इल्म है जो बेशक हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की दो अज़ीमुश शान करामतें हैं।

## आप की खुसूसियात

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु में बहुत सी खुसूसियात पाई जाती हैं जिन में से चन्द खुसूसियात को हम आप के सामने पेश करते हैं। इब्ने असाकिर हज़रत इमामे शअबी से रिवायत करते हैं उन्हों ने फरमाया कि हज़रत सिद्दीके अक्बर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को खुदाए अज़्ज़ व जल् ने ऐसी चार खस्लतों से मुख़्तस फरमाया जिन से किसी को सरफराज़ नहीं फरमाया। अव्वल आप का नाम सिद्दीक़ रखा और किसी दूसरे का नाम सिद्दीक़ नहीं। दूसरे आप रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के साथ ग़ारे सौर में रहे। **तीसरे** आप हुज़ूर की हिज्रत में रफीके सफर रहे, **चौथे** सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने आप को हुक्म फरमाया कि आप सहाबए किराम को नमाज़ पढ़ाएं और दूसरे लोग आप के मुक़्तदी बनें। एक बहुत बड़ी खुसूसियत आप की यह भी है कि आप सहाबी, आप के वालिद अबू कुहाफा सहाबी, आप के साहिबज़ादे अब्दुर रहमान सहाबी और उन के साहिबज़ादे अबू अतीक़ मुहम्मद सहाबी। यानी आप की चार नस्ल सहाबी हैं। रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अज्मईन।

*सायए मुस्तफा मायए इस्तिफा*
*इज़्ज़ो-नाज़े खिलाफत पे लाखों सलाम*

*यानी उस अफ्ज़लुल ख़ल्क़ बादर रुसुल*
*सानिइस नैने हिज्रत पे लाखों सलाम*

दुआ है कि खुदाए अज़्ज़ व जल् हम सब को हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की सच्ची गुलामी अता फरमाए और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के नक्शे क़दम पर चलने की तौफीक़े रफीक़ बख़्शे। आमीन

بجاہ حبیبک سید المرسلین صلوات اللہ تعالی وسلامہ علیہ

وعلیہم اجمعین وبرحمتک یاارحم الراحمین

*बिजाहि हबीबिक सैय्यिदिल् मुरसलीन सलवातुल्लाहि तआला व सलामहू अलैहि व अलैहिम अजमईन व बिरहमतिक या अरहमर्राहिमीन।*

# अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फारूके आज़म

## रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى مَنْ كَانَ نَبِيًّا وَّاٰدَمُ بَيْنَ الْمَآءِ وَالطِّيْنِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ۔ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ تَرٰهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا (پ:٢٦، ع:١٢)صَدَقَ اللّٰهُ مَوْلٰينا العظيم وصدق رسوله النبى الكريم الامين عليه وعلى اله اكرم الصلوات والتسليم۔

एक बार हम और आप सब लोग मिल कर तमाम आलम के मोहसिने आज़म, रहमते आलम, नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के दरबारे दुरर बार में दुरूदो-सलाम की डालियां पेश करें।

صلى الله على النبى الامى واله صلى الله عليه وسلم صلاة وسلاما عليك يارسول الله

*सल्लल्लाहु अलन् नबिय्यिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि*
*व सल्लम सलातुवं व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।*

हक़ीक़त में कमाल व ख़ूबी वाला वह शख़्स है जो दूसरों को कमाल व ख़ूबी वाला बना दे तो हमारे आक़ा व मौला जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलेहि व सल्लम हक़ीक़त में कमाल व ख़ूबी वाले है जिन्हों ने बेशुमार लोगों को कमाल व ख़ूबी वाला बना दिया और उनका यह फैज़ हमेशा जारी रहेगा कि क़ियामत तक अपने जां निसारों को कमाल व ख़ूबी वाला बनाते रहेंगे।

और प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने जिन लोगों को कमाल व ख़ूबी वाला बनाया उन में से एक मशहूर-व मारूफ अमीरुल मोमिनीन उमर फारूके आज़म हैं कि जो अफ्ज़लुल बशर बादल अंबिया हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बाद तमाम सहाबा में सब से अफ्ज़ल हैं।

## नाम व नसब

आप का नाम उमर है। रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कुन्नियत अबू हफ्स और लक़ब फ़ारूक़े आज़म है। आप के वालिद का नाम ख़त्ताब और मां का नाम अन्तमा है जो हिशाम बिन मुग़ीरा की बेटी यानी अबू जहल की बहन हैं। आठवीं पुश्त में आप का शजरए नसब सराकरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के ख़ांदानी शजरा से मिलता है। आप वाक़िए फील के तेरह साल बाद पैदा हुए। नुबुव्वत के छठे साल 27 बरस की उम्र में इस्लाम से मुशर्रफ हुए। आप ने उस वक़्त इस्लाम क़बूल फरमाया जबकि 40 मर्द और ग्यारह औरतें ईमान ला चुकी थीं और बाज़ उलमा का ख़्याल है कि आप ने 39 मर्द और 23 औरतों के बाद इस्लाम क़बूल किया। (तारीखुल ख़ुलफ़ा)

तिर्मिज़ी शरीफ की हदीस में है कि सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम दुआ फरमाते थे या इलाहल आलमीन उमर बिन ख़त्ताब और अबू जहल बिन हिशाम में से जो तुझे प्यारा हो उस से तू इस्लाम को इज़्ज़त अता फरमा। और हाकिम की रिवायत में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से है कि हुज़ूर ने इस तरह दुआ फरमाईः اَللّٰهُمَّ اَعِزَّ الْاِسْلَامَ بِعُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ خَاصَّةً यानी या अल्लाह! ख़ास तौर से उमर बिन ख़त्ताब को मुसलमान बना कर इस्लाम को इज़्ज़त व कुव्वत अता फरमा। तो अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की यह दुआ बारगाहे इलाही में मक़्बूल हो गई और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इस्लाम से मुशर्रफ हो गए।

## आप के क़बूले इस्लाम का वाक़िआ

दिन बदिन मुसलमानों की तादाद बढ़ते हुए देख कर एक रोज़ कुफ्फारे मक्का जमा हुए और सब ने यह तय किया कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) को क़त्ल कर दिया जाए। *मआज़ल्लाहि रब्बिल आलमीन*। मगर सवाल पैदा हुआ कि कौन क़त्ल

करे, मजमा में ऐलान हुआ कि है कोई बहादुर जो मुहम्मद को क़त्ल कर दे, सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम, इस ऐलान पर पूरा मजमा तो ख़ामोश रहा मगर हज़रत उमर ने कहा कि मैं उन को क़त्ल करूंगा। लोगों ने कहा बेशक तुम ही उन को क़त्ल कर सकते हो, फिर हज़रत उमर उठे और तलवार लटकाए हुए चल दिये, इसी ख़्याल में जा रहे थे कि एक साहब क़बीलए ज़ुहरा के जिन का नाम हज़रत नुऐम बिन अब्दुल्लाह बताया जाता है और बाज़ लोगों ने दूसरों का नाम लिखा है, बहरहाल उन्हों ने पूछा कि ऐ उमर! कहा जा रहे हो? कहा मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम) को क़त्ल करने जा रहा हूं, हज़रत नुऐम ने कहा इस क़त्ल के बाद तुम बनी हाशिम और बनी ज़ुहरा से किस तरह बच सकोगे, वह तुम्हें उन के बदले में क़त्ल कर देंगे, इस बात को सुन कर वह बिगड़ गए और कहने लगे मालूम होता है कि तुम ने भी अपने बाप दादा का दीन छोड़ दिया है, तो लाओ मैं पहले तुझी को निपटा दूं, यह कह कर तलवार खींच ली और हज़रत नुऐम ने भी यह कहा कि हां मैं मुसलमान हो गया हूं अपनी तलवार संभाल ली, अन्क़रीब दोनों तरफ से तलवार चलने को थी कि हज़रत नुऐम रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने कहा कि तू पहले अपने घर की ख़बर ले, तेरी बहन फातिमा बिन्ते ख़त्ताब और बहनोई सईद बिन ज़ैद दोनों अपने बाप दादा का दीन छोड़ कर मुसलमान हो चुके हैं, यह सुन कर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को बे इन्तिहा गुस्सा पैदा हुआ, वहीं से पलट पड़े और सीधे अपनी बहन के घर पहुंचे, वहां हज़रत ख़ब्बाब रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु दरवाज़ा बन्द किये हुए उन दोनों मियां बीवी का क़ुरआन मजीद पढ़ा रहे थे, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने दरवाज़ा खोलने के लिये कहा, उन की आवाज़ सुन कर हज़रत ख़ब्बाब रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु घर के एक हिस्से में छुप गए, बहन ने दरवाज़ा खोला, आप घर में दाख़िल हुए और पूछा तुम लोग क्या कर रहे थे? और यह आवाज़ किस की थी? आप

के बहनोई ने टाल दिया और कोई वाज़ेह जवाब नहीं दिया, कहने लगे मुझे मालूम हुआ कि तुम लोग अपने बाप दादा का दीन छोड़ कर दूसरा दीन इख़्तियार कर लिये हो, बहनोई ने कहा हां बाप दादा का दीन बातिल है और दूसरा दीन हक़ है, यह सुनना था कि बेतहाशा टूट पड़े, उन की दाढ़ी पकड़ कर खींची और ज़मीन पर पटख़ कर ख़ूब मारा, उन की बहन छुड़ाने के लिये दौड़ीं तो उन के मुंह पर एक घूंसा इतनी ज़ोर से मारा कि वह ख़ून से तर बतर हो गईं, आख़िर वह भी हज़रत उमर ही की बहन थीं, कहने लगीं कि उमर हम को इस वजह से मार रहे हो कि हम मुसलमान हो गए हैं, कान खोल कर सुन लो कि <u>तुम मार-मार कर हमारे ख़ून का एक-एक कतरा निकाल लो, यह हो सकता है लेकिन हमारे दिलों से ईमान निकाल लो यह हरगिज़ नहीं हो सकता।</u> और आप की बहन ने कहा कि मैं गवाही देती हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) अल्लाह तआला के बन्दे और उसके रसूल हैं। बेशक हम लोग मुसलमान हो गए हैं, तुझ से जो हो सके तू कर ले, बहन के जवाब और उनको ख़ून में तर बतर देख कर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का गुस्सा ठंडा हुआ, आप ने फरमाया कि अच्छा मुझे वह किताब दो जो तुम लोग पढ़ रहे थे ताकि मैं भी उस को पढ़ूं, आप की बहन ने कहा कि तुम नापाक हो और उस मुक़द्दस किताब को पाक लोग ही हाथ लगा सकते हैं, हज़रत उमर ने हर चन्द इस्रार किया मगर वह बग़ैर गुस्ल के देने को तैयार न हुईं, आख़िर हज़रत उमर ने गुस्ल किया फिर किताब लेकर पढ़ी, उस में सूरए ताहा लिखी हुई थी, उस को पढ़ना शुरू किया जिस वक़्त इस आयते करीमा पर पहुंचेः اِنَّنِیْۤ اَنَا اللّٰہُ لَاۤ اِلٰہَ اِلَّاۤ اَنَا فَاعْبُدْنِیْ وَاَقِمِ الصَّلٰوۃَ لِذِکْرِیْ यानी बेशक मैं अल्लाह हूं मेरे अलावा कोई माबूद नहीं तो मेरी इबादत करो और मेरी याद के लिये नमाज़ क़ायम करो (पाराः16,रुकूअ़ः10) तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कहने लगे कि मुझे मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ख़िदमत

में ले चलो, जिस वक़्त हज़रत ख़ब्बाब रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने यह बात सुनी तो आप बाहर निकल आए और कहा कि ऐ उमर! मैं तुम को ख़ुशख़बरी देता हूं कि कल जुमेरात की शब में सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने दुआ़ मांगी थी कि या इलाहल आलमीन! उमर और अबू जहल में जो तुझे महबूब व प्यारा हो उस से इस्लाम को कुव्वत अता फरमा, मालूम होता है कि रसूलुल्लाह की दुआ़ तुम्हारे हक़ में क़बूल हो गई।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लेहि व सल्लम उस वक़्त सफा पहाड़ी की क़रीब हज़रत अरक़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के मकान में तशरीफ फरमा थे, हज़रत ख़ब्बाब रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु आपको साथ लेकर रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की ख़िमदत में हाज़िर होने के इरादे से चले, हज़रत अरक़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के दरवाज़े पर हज़रत हमज़ा, हज़रत तलहा और कुछ दूसरे सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम हिफाज़त और निगरानी के लिये बैठे हुए थे, हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने आप को देख कर फरमाया कि उमर आ रहे हैं, अगर अल्लाह तआ़ला को उन की भलाई मनज़ूर है तब तो यह मेरे हाथ से बच जायेंगे और अगर उनकी नियत कुछ और है तो इस वक़्त उन का क़त्ल करना बहुत आसान है। इसी दरमियान में आक़ाए दो आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लेहि व सल्लम पर इन हालात के बारे में वही नाज़िल हो चुकी थी, सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लेहि व सल्लम ने मकान से बाहर तशरीफ लाकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का दामन और उन की तलवार पकड़ ली और फरमाया ऐ उमर! क्या यह फसाद तुम उस वक़्त तक बरपा करते रहोगे जब तक कि तुम पर ज़िल्लत व रुस्वाई मुसल्लत न हो जाए, यह सुनते ही हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने कहा: أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَأَنَّكَ عَبْدُ اللّٰهِ وَرَسُوْلُهٗ यानी मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं गवाही देता हूं कि

आप अल्लाह तआला के बन्दे और उसके रसूल हैं। (तारीखुल खुलफा वग़ैरा)

इस तरह अल्लाह के प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलेहि व सल्लम की दुआ हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हक़ में मक़बूल हुई। आला हज़रत रहमतुल्लाहि तआला अलैह फरमाते हैं:

*इजाबत का सेहरा इनायत का जोड़ा*
*दुल्हन बन के निकली दुआए मुहम्मद*
*सल्लल्लाहु तआला अलेहि व सल्लम*

और फरमाते हैं:

*इजाबत ने झुक कर गले से लगाया*
*बढ़ी नाज़ से जब दुआए मुहम्मद*
*सल्लल्लाहु तआला अलेहि व सल्लम*

चले थे हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अल्लाह के महबूब प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलेहि व सल्लम को क़त्ल करने के लिये (*मआज़ल्लाहि तआला*) मगर खुद ही क़तीले तेग़ आबरूए मुहम्मद हो गए (यानी मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलेहि व सल्लम के जांनिसार हो गए)।

*शुद गुलामे कि आबे जू आरद*
*आबे जू आमद व गुलाम बबुरद*

इस वाक़िआ से यह बात वाज़ेह तौर पर मालूम हुई कि इस्लाम बज़ोरे शमशीर नहीं फैला, देखिये इस्लाम क़बूल करने वाले के हाथ में शमशीर है और इस्लाम फैलाने वाले का हाथ शमशीर से खाली है।

(एक मर्तबा सब लोग मिल कर बुलन्द आवाज़ से दुरूद शरीफ पढ़ें)

## फारूक़ लक़ब

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि जब मैं कलिमए शहादत पढ़ कर मुसलमान हो गया तो मेरे इस्लाम क़बूल करने की खुशी में उस वक़्त जितने मुसलमान हज़रत अरक़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के घर में मौजूद थे इतनी ज़ोर से नारए

तक्बीर बुलन्द किया कि उस को मक्का के सब लोगों ने सुना। मैं ने रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलेहि व सल्लम से अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या हम हक़ पर नहीं हैं? हुज़ूर ने फरमाया क्यों नहीं? यानी बेशक हम हक़ पर हैं। इस पर मैंने अर्ज़ किया फिर यह पोशीदगी और पर्दा क्यों है। इस के बाद हम सब मुसलमान उस घर से दो सफ़ें बना कर निकले, एक सफ में हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु थे, दूसरी सफ़ में मैं था और इसी तरह हम सब सफों की शकल में मस्जिदे हराम में दाख़िल हुए, कुफ्फारे कुरैश ने मुझे और हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को जब मुसलमानों के गिरोह के साथ देखा तो उनको बे इन्तिहा मलाल हुआ, उस रोज़ सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलेहि व सल्लम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को फारूक़ का लक़ब अता फरमाया, इस लिये इस्लाम ज़ाहिर हो गया और हक़ व बातिल के दरमियान फर्क़ वाज़ेह हो गया। (तारीखुल खुलफा:78)

## इज़्हारे इस्लाम

हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि मैं जब मुसलमान हो गया तो उस के बाद अपने मामूं अबू जहल बिन हिशाम के पास पहुंचा, अबू जहल ख़ानदाने कुरैश में बहुत बा असर समझा जाता था और उस को भी रईसे कुरैश की हैसियत हासिल थी, मैं ने उस के दरवाज़े की कुंडी खट खटाई, उस ने अन्दर से पूछा कौन है? मैं ने कहा मैं उमर हूं और मैं तुम्हारा दीन छोड़ कर मुसलमान हो गया हूं, उस ने कहा उमर! ऐसा कभी मत करना, मगर मेरे डर के सबब बाहर नहीं निकला बल्कि अन्दर से दरवाज़ा बन्द कर लिया, मैं ने कहा यह क्या तरीक़ा है? मगर उस ने कोई जवाब नहीं दिया और न दरवाज़ा खोला, मैं उसी तरह देर तक बाहर खड़ा रहा, फिर वहां से कुरैश के एक दूसरे सरदार और बा असर शख़्स के पास पहुंचा, मैं ने उस को पुकारा, वह निकला तो जो बात मैं ने अपने मामूं अबू जहल से कही थी कि मैं मुसलमान हो गया हूं, वही बात उस से भी कही, तो

उस ने भी कहा ऐसा मत करना, फिर मेरे ख़ौफ से घर के अन्दर दाख़िल होकर दरवाज़ा बन्द कर लिया, मैं ने अपने दिल में कहा यह क्या मामला है कि मुसलमान मारे जाते हैं और मैं नहीं मारा जाता हूं, कोई मुझ से कुछ तआरुज़ नहीं करता, मेरी यह बातें सुन कर एक शख़्स ने कहा कि तुम अपना इस्लाम और दीन इस तरह ज़ाहिर करना चाहते हो, मैंने कहा हां मैं उसी तरह ज़ाहिर करूंगा, उस ने कहा वह देखो पत्थर के पास कुछ लोग बैठे हुए हैं, उन में फुलां शख़्स ऐसा है कि अगर उस से तुम कुछ राज़ की बात कहो तो वह फौरन ऐलान कर देगा, उस से अपने इस्लाम लाने का वाक़िआ बयान कर दो, हर जगह ख़बर हो जाएगी, एक एक आदमी के घर जाने की ज़रूरत नहीं। मैं वहां पहुंचा और उस से अपने इस्लाम क़बूल करने को ज़ाहिर किया, उस ने कहा क्या वाक़ई तुम मुसलमान हो चुके हो? मैं ने कहा हां बेशक मैं मुसलमान हो चुका हूं, यह सुनते ही उस ने बुलन्द आवाज़ से ऐलान किया कि ऐ लोगो! उमर बिन ख़त्ताब हमारे दीन से निकल गया, यह सुनते ही इधर उधर जो मुश्रिकीन बैठे हुए थे मुझ पर टूट पड़े, फिर देर तक मार पीट होती रही, शोरो-गुल की आवाज़ मेरे मामूं अबू जहल ने सुनी, उस ने पूछा क्या मामला है? लोगों ने कहा कि उमर मुसलमान हो गया है. मेरा मामूं अबू जहल एक पत्थर पर चढ़ा और कहा कि मैं ने अपने भांजे को पनाह दे दी, यह सुनते ही जो लोग मुझसे उलझ रहे थे अलग हो गए मगर यह बात मुझे बहुत नागवार हुई कि दूसरे मुसलमानों से मार पीट हो और मुझ को पनाह दे दी जाए, मैं अबू जहल के पास फिर पहुंचा और कहा: جِوَارُكَ رَدٌّ عَلَيْكَ यानी तेरी पनाह मैं तुझे वापस करता हूं, मुझे तेरी पनाह की ज़रूरत नहीं। फिर कुछ दिनों तक मार पीट का सिलसिला जारी रहा यहां तक कि खुदाए तआला ने इस्लाम को ग़लबा अता फ़रमाया। (तारीखुल खुलफा:77)

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है वह फरमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का मुसलमान होना

इस्लाम की फतह थी, उन की हिज्रत नुस्रते इलाही थी और उन की ख़िलाफत रहमते ख़ुदावन्दी थी। हम में से किसी की यह हिम्मत व ताक़त नहीं थी कि हम बैतुल्लाह शरीफ के पास नमाज़ पढ़ सकें मगर जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मुसलमान हो गए तो उन्हों ने मुश्रिकीन से इस क़दर जंग व जिदाल किया कि उन्हों ने आजिज़ आकर मुसलमानों का पीछा छोड़ दिया तो हम बैतुल्लाह शरीफ के पास इत्मिनान से नमाज़ पढ़ने लगे।

और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि जिस ने सब से पहले अपना इस्लाम अलल् ऐलान ज़ाहिर किया वह हज़रत उमर फारूक़ आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं।

और हज़रत सुहैब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है उन्हों ने फरमाया कि जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ईमान लाए तब इस्लाम ज़ाहिर हुआ, यानी इस से पहले लोग अपना इस्लाम क़बूल करना ज़ाहिर नहीं करते थे, उन के ईमान लाने के बाद लोगों को इस्लाम की तरफ खुल्लम खुल्ला बुलाया जाने लगा और हम बैतुल्लाह शरीफ के पास मजलिसें क़ायम करने, उस का अलानिया तवाफ करने, काफिरों से बदला लेने और उन को जवाब देने के क़ाबिल हो गए।

(तारीख़ुल ख़ुलफा:79)

## आप की हिज्रत

हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की हिज्रत भी बेमिसाल है, हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के अलावा हम किसी ऐसे शख़्स को नहीं जानते जिस ने अलानिया हिज्रत की हो, जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हिज्रत की नियत से निकले तो आप ने अपनी तलवार गले में लटकाई और कमान कंधे पर और तरकश से तीर निकाल कर हाथ में ले लिया फिर बैतुल्लाह शरीफ के पास हाज़िर हुए, वहां बहुत से अशराफे (सरदारे) क़ुरैश बैठे हुए थे, आप ने इत्मिनान से

कअ्बा शरीफ का तवाफ किया, फ़िर बहुत इत्मिनान से मक़ामे इब्राहीम के पास दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी, फिर अशराफे क़ुरैश की जमाअ़त के पास आ कर एक एक शख़्स से अलग अलग फरमायाः شَاهَتِ الْوُجُوْهُ यानी तुम लोगों के चेहरे बद शकल हो जायें, बिगड़ जायें और तुम्हारा नास हो जाए, उस के बाद फरमाया مَنْ اَرَادَ اَنْ تَثْكَلَهُ اُمُّهُ وَيُوْتَمَ وَلَدُهُ وَتُرْمَلَ زَوْجَتُهُ فَلْيَلْقَنِيْ وَرَاءَ هٰذَا الْوَادِيْ यानी जो शख़्स कि अपनी मां को बे औलाद, अपने बच्चों को यतीम और अपनी बीवी को बेवा बनाने का इरादा रखता हो तो वह इस वादी के उस तरफ आकर मेरा मुक़ाबला कर ले, आप के इस तरह ललकारने के बावजूद उन अशराफे क़ुरैश में से किसी माई के लाल की हिम्मत न हुई कि वह आप का पीछा करता।

(तारीख़ुल ख़ुलफा:79)

हज़रत बरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फरमाते हैं कि हमारे पास मदीना तैयिबा में सब से पहले हिज्रत करके मुस्अब बिन उमैर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु आए, फिर हज़रत इब्ने उम्मे मक्तूम और उनके बाद हज़रत उमर फारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु बीस सवारों के साथ तशरीफ लाए, हम ने उन से पूछा कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम का इरादा क्या है? उन्हों ने फरमाया कि वह पीछे तशरीफ लाएंगे, तो आप के बाद सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम मदीना तैयिबा तशरीफ लाए, हुज़ूर के साथ हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु भी थे।

(तारीख़ुल ख़ुलफा)

इमामे नववी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह फरमाते हैं कि हज़रत उमर फारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु नबीए करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के साथ तमाम ग़ज़वात में शरीक रहे और आप वह बहादुर है कि गज़वए उहद में जबकि जंग का नक़्शा बदल गया और मुसलमानों में अफरा तफरी पैदा हो गई तो उस हालत में आप साबित क़दम रहे। (तारीख़ुल ख़ुलफा)

## आप का हुलिया

हज़रत ज़िर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का रंग गंदुमी था, आप के सर के बाल ख़ोद पहनने की वजह से गिर गए थे, क़द आप का लम्बा था, आप का सर दूसरों लोगों के सरों से ऊंचा मालूम होता था, देखने में ऐसा महसूस होता था कि आप किसी जानवर पर सवार हैं।

और अल्लामा वाक़दी फरमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का रंग जो लोग गंदुमी बतलाते हैं उन्हों ने क़हत के ज़माने में आप को देखा होगा, इस लिये कि उस ज़माने में ज़ैतून का तेल इस्तेमाल करने के सबब रंग आप का गंदुमी हो गया था।

और इब्ने सअ़द ने रिवायत की है कि हज़रत इब्ने उमर ने अपने बाप हज़रत उमर फारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का हुलिया इस तरह बयान किया है कि आप का रंग सुरख़ी माइल सफेद था, आख़िरी उम्र में सर के बाल झड़ गए थे और बुढ़ापे के आसार ज़ाहिर थे। और इब्ने रजा से इब्ने असाकिर ने रिवायत की है उन्हों ने फरमाया कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तवीलुल कामत और मोटे बदन के आदमी थे, सर के बाल बहुत ज़्यादा झड़े हुए थे, रंग बहुत गोरा था, जिस में सुरख़ी झलकती थी, आप के गाल अन्दर को धंसे हुए थे, मूंछों के किनारे का हिस्सा बहुत लम्बा था और उन के अतराफ में सुरख़ी थी। (तारीख़ुल ख़ुलफा:89)

## फारूक़े आज़म और अहादीसे करीमा

हज़रत उमर फारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की फज़ीलत में बहुत सी हदीसें वारिद हुई हैं, तिर्मिज़ी शरीफ की हदीस है, सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलेहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया: لَوْ كَانَ بَعْدِىْ نَبِىٌّ لَكَانَ عُمَرَبْنَ الْخَطَّابِ यानी अगर मेरे बाद नबी होते तो उमर होते। (मिश्कात शरीफ:558) सुब्हानल्लाह! यह है मर्तबा हज़रत उमर

रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का कि अगर नबीए अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ख़ातिमुन नबिय्यीन न होते तो आप नबी होते। इस हदीस शरीफ में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की फज़ीलत का अज़ीमुश शान बयान है।

और हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: إنِّی لَأنظُرُ إلٰی شَیَاطِینِ الجِنِّ وَالإنسِ قَدْ فَرُّوْا مِنْ عُمَرَ यानी मैं बिला शुब्हा निगाहे नुबुव्वत से देख रहा हूं कि जिन्न के शैतान भी और इंसान के शैतान भी दोनों मेरे उमर के ख़ौफ से भागते हैं रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु (मिश्कात शरीफ:558) यह रुअ़ब व दबदबा है हज़रत उमर फारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का कि चाहे जिन्न का शैतान हो या इंसान का दोनों उन के डर से भाग जाते हैं।

और मदारिजुन नुबुव्वत:2/426 में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि *उमर बा मन अस्त व मन बा उमरम व हक़ बा उमर अस्त हर जा कि बाशद* यानी उमर मुझ से हैं और मैं उमर से हूं और उमर जिस जगह भी होते हैं हक़ उन के साथ होता है रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु।

और हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से बुख़ारी और मुस्लिम में रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मैं सो रहा था कि ख़्वाब देखा कि लोग मेरे सामने पेश किये जा रहे हैं और मुझ को दिखाए जा रहे हैं, वह सब कुरते पहने हुए थे, जिन में कुछ लोगों के कुरते ऐसे थे जो सिर्फ सीने तक थे और बाज़ लोगों के कुरते उस से नीचे थे। फिर उमर बिन ख़त्ताब को पेश किया गया जो इतना लाम्बा कुर्ता पहने हुए थे कि ज़मीन पर घिस्टते हुए चलते थे। लोगों ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! इस ख़्वाब की ताबीर क्या है? हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि दीन। (मिश्कात शरीफ:557) इस हदीसे शरीफ में इस बात

का वाज़ेह बयान है कि हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु दीनदारी और तक़्वा शिआरी में बहुत बढ़े हुए थे।

और तिर्मिज़ी शरीफ में हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: إِنَّ اللّٰهَ جَعَلَ الْحَقَّ عَلٰى لِسَانِ عُمَرَ وَقَلْبِهٖ यानी अल्लाह तआला ने उमर की ज़बान और क़ल्ब पर हक़ को जारी फरमा दिया है। (मिश्कात शरीफ:557) मतलब यह है कि हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हमेशा हक ही बोलते हैं उन के क़ल्ब और ज़बान पर बातिल कभी जारी नहीं होता।

और तबरानी औसत में हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया: مَنْ اَبْغَضَ عُمَرَ فَقَدْ اَبْغَضَنِیْ وَمَنْ اَحَبَّ عُمَرَ فَقَدْ اَحَبَّنِیْ यानी जिस शख़्स ने उमर से दुश्मनी रखी उस ने मुझ से दुश्मनी रखी और जिस ने उमर से मुहब्बत की उस ने मुझ से मुहब्बत की। और खुदाए तआला ने अरफा वालों पर उमूमन और उमर पर खुसूसन फख़र व मुबाहात की है रज़ियल्लाहु तआला अन्हु। और जितने अंबियाए किराम अलैहिमुस् सलाम दुनिया में मबऊस हुए (भेजे गए), हर नबी की उम्मत में एक मुहद्दिस ज़रूर हुआ है। और अगर कोई मोहद्दिस मेरी उम्मत में है तो वह उमर हैं। सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! मुहद्दिस कैसा होता है? हुज़ूर ने फरमाया कि जिस की ज़बान से मलाइका बात करें वह मुहद्दिस होता है। (तारीखुल खुलफा:81)

और हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से बुख़ारी व मुस्लिम में रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: لَقَدْ كَانَ فِيْمَا قَبْلَكُمْ مِنَ الْاُمَمِ مُحَدَّثُوْنَ فَاِنْ يَّكُ اَحَدٌ فِیْ اُمَّتِیْ فَاِنَّهٗ عُمَرُ यानी तुम से पहले उम्मतों में मुहद्दिस हुए हैं। अगर मेरी उम्मत में कोई मुहद्दिस है तो वह उमर हैं रज़ियल्लाहु तआला अन्हु। (मिश्कात शरीफ:556)

हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास दुनिया नहीं आई और न उन्हों ने इस की ख़्वाहिश व तमन्ना फरमाई मगर हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास दुनिया बहुत आई लेकिन उन्हों ने उसे क़बूल नहीं किया बल्कि ठुकरा दिया। (तारीखुल खुलफा:82) बेशक हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास दुनिया आई कि उन के ज़मानए ख़िलाफत में बहुत ममालिक फतह हुए और बेशुमार शहरों पर क़बज़ा हुआ जहां से बेइन्तिहा माले ग़नीमत हासिल हुआ और वहां से इस क़द्र माले ग़नीमत हासिल हुआ कि इस से पहले किसी शहर के फतह होने पर नहीं हासिल हुआ था। शहरे मदाइन के माले ग़नीमत का अन्दाज़ा इस से लगाया जा सकता है कि उस शहर के फतह करने वाले लश्कर के सिपाही साठ हज़ार थे, बैतुल माल का पांचवां हिस्सा निकालने के बाद हर सिपाही को बारह हज़ार दिरहम नक़द मिला था। और यह माल किस्रा बादशाह के उस फर्श के अलावा था जो सोने चांदी और जवाहेरात से बना हुआ था जिस को मख़्सूस दरबारों में किस्रा बादशाह के लिये बिछाया जाता था, यह फर्श लश्कर की इजाज़त से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में भेज दिया गया, इस फर्श की क़ीमत का अन्दाज़ा इस से लगाया जा सकता है कि इस के एक बालिशत मुरब्बा टुक्ड़े की क़ीमत हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को बीस हज़ार की रक़म मिली थी। तो इस तरह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास दुनिया आती थी मगर आप हमेशा उसे ठुक्राते रहे।

हज़रत हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को तहरीर फरमाया कि लोगों को उन की तन्ख़्वाहें और उस के साथ अतियात के तौर पर भी माल तक़सीम कर दो, उन्हों ने आप को लिखा कि मैं ने ऐसा ही किया है लेकिन इस के बावजूद अभी

माल बहुत ज़्यादा मौजूद है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने उनको तहरीर फ़रमाया कि कुल माल "माले ग़नीमत" है जो ख़ुदाए तआ़ला ने मुसलमानों को दिया है लिहाज़ा वह सब माल उन्हीं पर तक़्सीम कर दो, वह माल उमर या उस की औलाद का नहीं है। *रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम अजमईन।* (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा:98)

## आप की राय से क़ुरआन की मुवाफ़क़त

हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की एक बहुत बड़ी फ़ज़ीलत यह है कि क़ुरआन मजीद आप की राय के मुवाफ़िक़ नाज़िल होता था। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि क़ुरआने करीम में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की राय मौजूद हैं और हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से रिवायत है कि अगर किसी मामले में लोगों की राय दूसरी होती और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की राय दूसरी तो क़ुरआने मजीद हज़रत उमर की राय के मुवाफ़िक़ नाज़िल होता था। हज़रत मुजाहिद से मरवी है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु किसी मामले में जो कुछ मशवरा देते थे, क़ुरआन शरीफ़ की आयतें उसी के मुताबिक़ नाज़िल होती थीं। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा:83) हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि उन के रब ने उनसे 21 बातों में मुवाफ़क़त फ़रमाई है, उन में चन्द बातों का आप लोगों के सामने ज़िक्र किया जाता है।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि मैं ने सरकार अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम से अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर! आप की ख़िदमत में हर तरह के लोग आते जाते हैं और हुज़ूर की ख़िदमत में अज़्वाजे मुतह्हरात भी होती हैं, बेहतर है कि आप उन को पर्दा करने का हुक्म फ़रमाएं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि मेरी इस अ़र्ज़ के बाद उम्महातुल मोमिनीन के पर्दा के बारे में यह आयते करीमा नाज़िल हुई: وَإِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ مَتَاعًا فَسْئَلُوهُنَّ مِنْ وَرَآءِ

حجاب यानी और जब तुम उम्महातुल मोमिनीन से इस्तेमाल करने की कोई चीज़ मांगो तो पर्दे के बाहर से मांगो। (पारा:22,रुकूअ:4)(तारीखुल खुलफा)

मुल्के शाम से एक क़ाफिले के साथ अबू सुफियान के आने की ख़बर पाकर रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम अपने अस्हाब के साथ उन के मुक़ाबले के लिये रवाना हुए, मक्का मुअ़ज़्ज़मा से अबू जहल कुफ्फारे क़ुरैश का एक भारी लश्कर लेकर क़ाफिला की इमदाद के लिये रवाना हुआ। अबू सुफियान तो रास्ते से हट कर अपने क़ाफिला के साथ समन्दर के साहिल की तरफ चल पड़े। तो अबू जहल से उस के साथियों ने कहा कि क़ाफिला तो बच गया अब मक्का मुअ़ज़्ज़मा वापस चलो मगर उस ने इनकार कर दिया और हुज़ूर सैयिदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम से जंग करने के इरादे से बद्र की तरफ चल पड़ा। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम से जंग करने के बारे में मश्वरा किया तो बाज़ लोगों ने कहा कि हम इस तैयारी से नहीं चले थे, न हमारी तादाद ज़्यादा है, न हमारे पास काफी सामान अस्लिहा है, मगर उस वक़्त हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने बद्र की तरफ निकल कर काफिरों से मुक़ाबला करने ही का मश्वरा दिया तो यह आयते करीमा नाज़िल हुई: كَمَآ اَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْۢ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ لَكٰرِهُوْنَ यानी ऐ महबूब! तुम्हें तुम्हारे रब ने तुम्हारे घर से हक़ के साथ (बद्र की तरफ) बर आमद किया और बेशक मुसलमानों का एक गिरोह इस पर नाखुश था। (पारा:9, रुकूअ:15) (तारीखुल खुलफा)

हज़रत अब्दुर रहमान बिन अबू यअ़्ला बयान फ़रमाते हैं कि एक यहूदी हज़रत उमर फारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मिला और आप से कहने लगा कि जिब्रील फिरिश्ता जिस का तज़्किरा तुम्हारे नबी (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम) करते हैं, वह हमारा सख़्त दुश्मन है, उस के जवाब में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने

फरमाया: مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِلّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَرُسُلِهٖ وَجِبْرِيْلَ وَمِيْكٰلَ فَاِنَّ اللّٰهَ عَدُوٌّ لِّلْكٰفِرِيْنَ यानी जो कोई दुश्मन हो अल्लाह और उस के फिरिश्तों और उस के रसूलों और जिब्रील व मीकाईल का तो अल्लाह दुश्मन है काफिरों का।

(पाराः1, रुकूअ्ः12) (तारीखुल खुलफाः84)

तो जिन अल्फाज़ के साथ हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने यहूदी को जवाब दिया बिल्कुल उन्हीं अल्फाज़ के साथ कुरआने मजीद की यह आयते करीमा नाज़िल हुई। आयते मुबारका के आखिरी जुम्लाः فَاِنَّ اللّٰهَ عَدُوٌّ لِّلْكٰفِرِيْنَ से मालूम हुआ कि अंबिया व मलाइका की अदावत कुफ्र है और महबूबाने हक़ से दुश्मनी करना खुदाए तआ़ला से दुश्मनी करना है।

पहली शरीअ़तों में रोज़ा इफ्तार करने के बाद खाना पीना और हम-बिस्तरी करना इशा की नमाज़ तक जाइज़ था। बाद नमाज़े इशा यह सारी चीज़ें रात में भी हराम हो जाती थीं। यह हुक्म हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के ज़मानए मुबारका तक बाकी रहा, यहां तक कि रमज़ान शरीफ की रात में बाद नमाज़े इशा हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से हम-बिस्तरी हो गई, जिस पर वह बहुत शर्मिन्दा हुए, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की बारगाह में हाज़िर हुए और वाक़िआ़ बयान किया तो इस पर यह आयते मुबारका नाज़िल हुईः اُحِلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ اِلٰى نِسَآئِكُمْ इस आयते करीमा का मतलब यह है कि रोज़ों की रातों में अपनी औरतों के पास जाना (यानी उनसे हम-बिस्तरी करना) तुम्हारे लिये हलाल हो गया।

(पाराः2,रुकूअ्ः7)

बिशर नामी एक मुनाफिक़ था, उस का एक यहूदी से झगड़ा था, यहूदी ने कहा चलो सैयिदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम से फैसला करा लें, मुनाफिक़ ने ख़्याल किया हुज़ूर हक़ फैसला करेंगे, कभी किसी की तरफदारी और रिआ़यत न फरमायेंगे जिस से उस का मतलब हासिल न हो सकेगा, इस लिये उस ने मद्दईये ईमान होने (यानी

ईमान का दावा करने) के बावजूद कहा कि हम कअ्‌ब बिन अशरफ यहूदी को पंच बनायेंगे। यहूदी जिस का मामला था वह ख़ूब जानता था कि कअ्‌ब रिश्वत ख़ोर है और जो रिश्वत ख़ोर होता है उस से सहीह फैसले की उम्मीद रखना ग़लत है। इस लिये कअ्‌ब के हम मज़हब होने के बावजूद यहूदी ने उस को पंच तस्लीम करने से इनकार कर दिया तो मुनाफ़िक़ को फैसले के लिये सरकारे अक़्दस के यहां मजबूरन आना पड़ा, हुज़ूर ने जो हक़ फैसला किया वह इत्तिफ़ाक़ से यहूदी के मुवाफ़िक़ और मुनाफ़िक़ के मुख़ालिफ हुआ। मुनाफ़िक़ हुज़ूर का फैसला सुनने के बाद फिर यहूदी के दरपै हुआ और उसे मजबूर करके हज़रत उमर फारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास लाया, यहूदी ने आप से अर्ज़ किया कि मेरा और इस का मामला हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तय फरमा चुके हैं लेकिन यह हुज़ूर के फैसले को नहीं मानता, आप से फैसला चाहता है, आप ने फरमाया ठहरो मैं अभी आकर फैसला किये देता हूं, यह फरमा कर मकान में तशरीफ ले गए और तलवार लाकर उस मुनाफ़िक़ मुद्दई को क़त्ल कर दिया और फरमाया <u>जो अल्लाह और उस के रसूल के फैसले को न माने उस के मुतअल्लिक़ मेरा यही फैसला है।</u> तो बयाने वाक़िआ के लिये यह आयते करीमा नाज़िल हुई: اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يَزْعُمُوْنَ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّتَحَاكَمُوْٓا اِلَى الطَّاغُوْتِ وَقَدْ اُمِرُوْٓا اَنْ يَّكْفُرُوْا بِهٖ وَيُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّضِلَّهُمْ ضَلٰلًاۢ بَعِيْدًا (प:5,रु:6) क्या तुम ने उन्हें न देखा जिन का दावा है कि वह ईमान लाए उस पर जो तुम्हारी तरफ उतरा और उस पर जो तुम से पहले उतरा, फिर चाहते हैं कि अपना पंच शैतान को बनाएं और उन को तो यह हुक्म था कि उसे हरगिज़ न मानें और इब्लीस यह चाहता है उन्हें दूर बहका दे। (तफ्सीरे जलालैन व सावी)

फिर किसी ने सैयिदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को इत्तिला दी कि हज़रत उमर ने उस मुसलमान को क़त्ल कर दिया जो हुज़ूर के दरबार में फैसले के लिये हाज़िर हुआ था, आप ने फरमाया

कि मुझे उमर से ऐसी उम्मीद नहीं कि वह किसी मोमिन के क़त्ल पर हाथ उठाने की जुर्अत कर सके तो अल्लाह तबारक व तआ़ला ने फिर मन्द्रजा ज़ैल आयते मुबारका नाज़िल फरमाई। (तारीखुल खुलफा:84)

فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ حَتّٰى يُحَكِّمُوْكَ فِيْمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ٥

तर्जमाः यानी ऐ महबूब! तुम्हारे रब की क़सम, वह लोग मुसलमान न होंगे जब तक अपने आपस के झगड़ों में तुम्हें हाकिम न तस्लीम कर लें। फिर जो कुछ तुम हुक्म फरमा दो, अपने दिलों में उसे रुकावट न पाएं और दिल से मान लें। (पाराः5,रुकूअ़:6)

इन वाकिआ़त से खुदावन्दे कुद्दूस की बारगाह में हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की इज़्ज़त व अज़्मत का पता चलता है कि उन की बातों के मुवाफिक़ वही-ए-इलाही और कुरआने मजीद की आयतें नाज़िल होती थीं, मज़ीद तफ्सील जानने के लिये तारीखुल खुलफा वग़ैरा का मुतालेआ़ करें।

एक बार सब मिल कर बुलन्द आवाज़ से दुरूद शरीफ पढ़ें।

## आप की ख़िलाफत

हज़रत फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की ख़िलाफत का वाकिआ़ अल्लामा वाकिदी की रिवायत के मुताबिक़ यूं है कि जब हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की तबीअ़त अलालत के सबब बहुत ज़्यादा नासाज़ हो गई तो आप ने हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को बुलाया जो अशरए मुबश्शरा (वह दस सहाबए किराम जिन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने दुनिया में ही जन्नती होने की खुशख़बरी दी थी, हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ उन्हीं) में से हैं और उन से फरमाया कि उमर के बारे में तुम्हारी क्या राय है? उन्हों ने कहा कि मेरे ख़्याल

में तो वह उस से बढ़ कर हैं जितना कि आप उन के बारे में ख़्याल फरमाते हैं, फिर आप ने हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को बुला कर उन से भी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बारे में दरियाफ्त फरमाया, उन्हों ने भी यही कहा कि मुझ से ज़्यादा आप उन के बारे में जानते हैं, हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इरशाद फरमाया कि कुछ तो बतलाओ, हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा कि उन का बातिन उन के ज़ाहिर से अच्छा है और हम लोगों में उन का मिस्ल कोई नहीं। फिर आप ने सईद बिन ज़ैद, उसैद बिन हुज़ैर और दीगर अंसार व मुहाजिरीन हज़रात से भी मशवरा लिया और उन की राएं मालूम कीं। हज़रत उसैद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा कि खुदाए तआला ख़ूब जानता है कि आप के बाद हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) सबसे अफ़ज़ल हैं, वह अल्लाह की रज़ा पर राज़ी रहते हैं और अल्लाह जिस से नाखुश होता है उस से वह भी नाखुश रहते हैं, उन का बातिन उन के ज़ाहिर से भी अच्छा है और कारे ख़िलाफत के लिये उन से ज़्यादा मुस्तइद और कवी शख़्स कोई नज़र नहीं आता, फिर कुछ और सहाबए किराम आए, उन में से एक शख़्स ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से कहा कि हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) की सख़्त मिज़ाजी से आप वाकिफ हैं इस के बावजूद अगर आप उन को ख़लीफा मुकर्रर करेंगे तो खुदाए तआला के यहां क्या जवाब देंगे? आप ने फरमाया ख़ुदा की क़सम तुम ने मुझ को खौफ ज़दा कर दिया मगर मैं बारगाहे ख़ुदावन्दी में अर्ज़ करूंगा कि या इलाहल आलमीन! मैं ने तेरे बन्दों में से बेहतरीन शख़्स को ख़लीफा बनाया है और ऐ ऐतराज़ करने वाले यह जो कुछ मैं ने कहा है तुम दूसरे लोगों को भी पहुंचा देना।

उस के बाद आप ने हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

को बुला कर फरमाया लिखिये: *बिस्मिल्लाहिर् रहमानिर् रहीम,* यह वसियत नामा है जो अबू बकर बिन कुहाफा ने अपने आख़िरी ज़माने में दुनिया से रुख़्सत होते वक़्त और अहदे आख़िरत के शुरू में आलमे बाला में दाख़िल होते वक़्त लिखाया है, यह वह वक़्त है जबकि एक काफिर भी ईमान ले आता है, एक फासिक़ व फाजिर भी यक़ीन की रौशनी हासिल कर लेता है और एक झूठा भी सच बोलता है, मुसलमानों! अपने बाद मैं ने तुम्हारे ऊपर उमर बिन ख़त्ताब को ख़लीफा मुन्तख़ब किया है, उन के अहकाम को सुनना और उन की इताअ़त व फरमां बरदारी करना, मैं ने हत्तल इम्कान खुदा व रसूल, दीन और अपने नफ्स के बारे में कोई तक़्सीर व ग़लती नहीं की है और जहां तक हो सका तुम्हारे साथ भलाई की है, मुझे यक़ीन है कि वह (यानी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) अदल व इंसाफ से काम लेंगे, अगर उन्हों ने ऐसा किया तो मेरे ख़्याल के मुताबिक़ होगा और अगर उन्हों ने अदल व इंसाफ को छोड़ दिया और बदल गए तो हर शख़्स अपने किये का जवाबदेह होगा। और ऐ मुसलमानों! मैं ने तुम्हारे लिये नेकी और भलाई ही का क़सद किया है: وَسَيَعْلَمُ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَيَّ مُنْقَلَبٍ يَنْقَلِبُونَ (प:19-रु:15) यानी और ज़ालिम अन्क़रीब जानेंगे कि व किस करवट पर पलटा खायेंगे। *वस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू।*

फिर आप ने उस वसियत नामा को सर बमोहर करने का हुक्म फरमाया, जब वह मोहर बन्द हो गया, तो आप ने उसे हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के हवाले कर दिया, जिसे लेकर वह गए, लोगों ने राज़ी खुशी से हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के दस्ते हक़ परस्त पर बैअ़त की। उस के बाद आप ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को तन्हाई में बुला कर कुछ वसियतें फरमाईं और जब वह चले गए तो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने बारगाहे इलाही में दुआ़ के लिये हाथ उठाया और अर्ज़

किया या इलाहल आलमीन! यह जो कुछ मैं ने किया है इस से मेरी नियत मुसलमानों की फलाह व बहबूद है, तू इस बात से ख़ूब वाक़िफ है कि मैं ने फित्ना व फसाद रोकने के लिये ऐसा काम किया है, मैं ने इस के बारे में अपनी राय के इज्तिहाद से काम लिया है, मुसलमानों में जो सब से बेहतर है, मैं ने उस को उन का वाली बनाया है और वह उन में सब से क़वी और नेकी पर हरीस है।

और या इलाहल आलमीन! मैं तेरे हुक्म से तेरी बारगाह में हाज़िर हो रहा हूं, खुदावन्दा तू ही अपने बन्दों का मालिक व मुख़्तार है और उन की बाग डोर तेरे ही दस्ते कुद्रत में है, या इलाहल आलमीन उन लोगों में दुरुस्तगी और सलाहियत पैदा करना और उमर (रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) को खुलफाए राशिदीन में से करना और उन के साथ उन की रअ़य्यत को भी अच्छी ज़िंदगी बसर करने की तौफीक़े रफीक़ अता फरमा।

## एक ऐतराज़ और उस का जवाब

राफज़ी लोग कहते हैं कि (हज़रत) अबू बकर ने जो अपनी ज़िंदगी में ख़लीफा मुन्तख़ब किया तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की मुख़ालफत की इस लिये कि हुज़ूर ने अपनी ज़ाहिरी ज़िंदगी में किसी को ख़लीफा नहीं बनाया हालां कि वह अच्छाई व बुराई को ख़ूब जानते थे और अपनी उम्मत पर पूरी पूरी शफ्क़त व राफत रखते थे मगर इस के बावजूद आप ने उम्मत पर किसी को ख़लीफा नामज़द नहीं किया और (हज़रत) अबू बकर ने (हज़रत) उमर को अपनी ज़िंदगी में ख़लीफा नामज़द कर दिया जो हुज़ूर की खुली हुई मुख़ालफत है।

इस ऐतराज़ के तीन जवाब हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब मोहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह तहरीर फरमाए हैं और वह यह हैं। पहला जवाब यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम का अपनी ज़ाहिरी ज़िंदगी में उम्मत पर ख़लीफा न बनाना खुला हुआ झूठ और बोहतान है इस लिये कि राफज़ी सब के सब इस बात

के क़ाइल हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को ख़लीफा बनाया था। लिहाज़ा अगर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने भी सुन्नते नबवी की पैरवी में ख़लीफा मुन्तख़ब कर दिया तो इस में मुख़ालफत कहां से लाज़िम आ गई। और अगर जवाब की बुनियाद मज़्हबे अहले सुन्नत पर रखें तो अहले सुन्नत के मुहक़्क़िक़ीन इस बात के क़ाइल हैं कि सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को नमाज़ और हज में अपना नाइब व ख़लीफा बनाया है। और सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम जो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के रमज़ शनास (इशारा पहचानने वाले), आप के कामों की बारीकियों से आगाह और आप के इशारों को अच्छी तरह समझते थे उन के लिये इतना ही इशारा काफी था और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने सिर्फ इस नुक्तए नज़र से ख़िलाफत नामा लिखवाया कि अरब व अजम के नौ मुस्लिम बग़ैर तसरीह व तन्सीस के इस से वाक़िफ न हो सकेंगे।

और दूसरा जवाब यह है कि सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इस वजह से ख़लीफा नहीं मुक़र्रर फरमाया कि आप वही-ए-इलाही से पूरे यक़ीन के साथ जानते थे कि आप के बाद हज़रत अबू बकर ही ख़लीफा होंगे, सहाबा उन्हीं पर इत्तिफाक़ करेंगे और कोई दूसरा उस में दख़ल अन्दाज़ी नहीं कर सकेगा। चुनांचे अहादीसे करीमा जो अहले सुन्नत की किताबों में मौजूद हैं इस बात पर वाज़ेह तरीक़े से दलालत करती हैं मसलन हुज़ूर ने फरमाया: يَأْبَى اللّٰهُ وَالْمُؤْمِنُوْنَ إِلَّا أَبَا بَكْر यानी अल्लाह और मुसलमान अबू बकर के सिवा किसी को क़बूल न करेंगे। और हदीस शरीफ में है: فَإِنَّهُ الْخَلِيْفَةُ مِنْ بَعْدِي यानी मेरे बाद अबू बकर ख़लीफा होंगे रज़ियल्लाहु तआला अन्हु। और जब हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का यक़ीने कामिल था कि ख़लीफा

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ही होंगे तो ख़िलाफ़त नामा लिखने की कोई हाजत न थी। चुनांचे मुस्लिम शरीफ में है कि मरज़े वफ़ात में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और उनके साहिबज़ादे को बुलाया ताकि ख़िलाफत नामा लिखें, फिर फरमाया कि खुदाए तआला और मुसलमान अबू बकर के अलावा किसी और को ख़लीफा नहीं बनाएंगे, लिखने की हाजत क्या है? तो आप ने इरादा तरक फरमाया दिया। बख़िलाफ हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के कि आपके पास वही नहीं आती थी और न आप को इस बात का क़तई इल्म था कि मेरे बाद लोग बिला शुब्हा उमर बिन ख़त्ताब को ख़लीफा बनाएंगे और अपनी अक्ल से इस्लाम और मुसलमानों के लिये हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िलाफत को अच्छा समझते थे इस लिये उन पर ज़रूरी था कि जिस चीज़ में उम्मत की भलाई देखें उस पर अमल करें, *बिहम्दिल्लाहि तआला* आप की अक्ल ने सहीह काम किया कि इस्लाम की शौकत, इन्तिज़ाम उमूरे सल्तनत और काफिरों की ज़िल्लत जिस क़द्र हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हाथों हुई तारीख़ उस की मिसाल पेश करने से आजिज़ है।

और तीसरा जवाब यह है कि ख़लीफा न बनाना और चीज़ है और ख़लीफा बनाने से मना करना और चीज़ है, मुख़ालफत जब लाज़िम आती कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ख़लीफा बनाने से रोके होते और हज़रत अबू बकर ख़लीफा बना देते और अगर ख़लीफा बनाना हुज़ूर की मुख़ालफत करना है तो लाज़िम आएगा कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत इमाम हसन को ख़लीफा बना कर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की मुख़ालफत की। *अल्-इयाज़ु बिल्लाहि तआला।* (तोहफ़ए इस्ना अशरिया)

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत उमर

फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अपने बाद ख़लीफा बना कर निहायत अक्ल और दानिशमन्दी से काम लिया। इस लिये कि वह जानते थे, इस्लाम अपनी सच्चाई की बिना पर रोज़ बरोज़ फैलता ही जाएगा, बड़ी-बड़ी सल्तनतें ज़ेरे नगीं होंगी और बड़े-बड़े ममालिक फत्ह होंगे, जहां से बहुत माले ग़नीमत आएगा, लोग ख़ुशहाल व मालदार हो जायेंगे और मालदारी के बाद अक्सर दुनियादारी आ जाती है दीनदारी कम हो जाती है, इस लिये अब मेरे बाद उमर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) जैसे शख़्स को ख़लीफा होना ज़रूरी है जो दीन के मामले में बहुत सख़्त हैं और शरीअत के मामले में किसी की परवाह नहीं करते हैं।

हज़रत सुफियाने सौरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि जिस शख़्स ने यह ख़्याल कया कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ और हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से ज़्यादा ख़िलाफत के मुस्तहिक़ और हक़दार हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु थे तो उस ने हज़रत अबू बकर व हजरत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा को ख़ताकार ठहराने के साथ तमाम अन्सार व मुहाजिरीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम को भी ख़ताकार ठहराया। *अल्-इयाज़ु बिल्लाहि तआला।* (तारीख़ुल ख़ुलफा:83)

## आप की करामतें

हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से बहुत सी करामतें भी ज़ाहिर हुई हैं जिन में से चन्द करामतों का ज़िक्र आप के सामने किया जाता है। अल्लामा अबू नुऐम ने दलाइल में हज़रत उमर बिन हारिस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की है कि हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जुमा का ख़ुत्बा फरमा रहे थे यका यक आप ने दरमियाने ख़ुत्बा छोड़ कर तीन बार यह फरमायाः يَا سَارِيَةُ الْجَبَل यानी ऐ सारिया! पहाड़ की तरफ जाओ, ऐ सारिया! पहाड़ की तरफ जाओ, ऐ सारिया! पहाड़ की तरफ जाओ। इस तरह हज़रत

सारिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को पुकार कर पहाड़ की तरफ जाने का हुक्म दिया और उस के बाद फिर खुत्बा शुरू फरमा दिया। हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बाद नमाज़ हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से दरियाफ्त किया कि आप तो खुत्बा फ़रमा रहे थे फिर यका यक बुलंद आवाज़ से कहने लगे يَا سَارِيَةُ الْجَبَل तो यह क्या मामला था? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमायाः क़सम है खुदाए जुल जलाल की मैं ऐसा कहने पर मजबूर हो गया था رَأَيْتُهُمْ يُقَاتِلُوْنَ عِنْدَ جَبَلٍ يُؤْتَوْنَ مِنْ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ فَلَمْ اَمْلِكْ اَنْ قُلْتُ يَا سَارِيَةُ الْجَبَل यानी मैं ने मुसलमानों को देखा कि वह पहाड़ के पास लड़ रहे हैं और कुफ्फार उन को आगे और पीछे से घेरे हुए हैं, यह देख कर मुझ से ज़ब्त न हो सका और मैं ने कह दिया ऐ सारिया! पहाड़ की तरफ जाओ।

इस वाक़िआ के कुछ रोज़ बाद हज़रत सारिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का क़ासिद एक ख़त लेकर आया जिस में लिखा था कि हम लोग जुमा के दिन कुफ्फार से लड़ रहे थे और क़रीब था कि हम शिकस्त खा जाते कि ऐने जुमा की नमाज़ के वक़्त हम ने किसी की आवाज़ सुनी يَا سَارِيَةُ الْجَبَل ऐ सारिया! पहाड़ की तरफ हट जाओ, इस आवाज़ को सुन कर हम पहाड़ की तरफ चले गए तो खुदाए तआला ने काफिरों को शिकस्त दी, हम ने उन्हें क़त्ल कर डाला, इस तरह हम को फत्ह हासिल हो गई। (तारीखुल खुलफा:86)

हज़रत सारिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु निहावन्द में लड़ाई कर रहे थे जो ईरान के सूबए आज़र बाइजान के पहाड़ी शहरों में से है और मदीना तैयिबा से इतनी दूर है कि उस ज़माने में वहां से चल कर एक माह के अन्दर निहावन्द नहीं पहुंच सकते थे, जैसा कि हाशिया अश्अतुल् लम्आत:4/601 में है कि ''<u>निहावन्द दर (ईरान) सूबा आज़र बाइजान अज बिलादे जिबाल अस्त कि अज़ मदीना बयक माह आंजा</u> *<u>ना रसीद</u>*'' *तो जब निहावन्द मदीना तैयिबा से इतनी दूर है कि उस*

ज़माने में आदमी वहां से चल कर एक माह में निहावन्द नहीं पहुंच सकता था मगर हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने मस्जिद नबवी में खुत्बा फरमाते हुए हज़रत सारिया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को निहावन्द में लड़ते हुए मुलाहेज़ा फरमाया और आप ने यह भी देखा कि दुश्मन मुसलमानों को आगे पीछे से घेरे हुए हैं और पहाड़ क़रीब में है, फिर आप ने उन्हें आवाज़ देकर पहाड़ की तरफ जाने का हुक्म फरमाया और बग़ैर किसी मशीन की मदद के अपनी आवाज़ को वहां तक पहुंचा दिया, यह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की खुली हुई करामत है।

*हर कि इश्क़े मुस्तफा सामाने ऊस्त*
*बहरो-बर दर गोशए दामाने ऊस्त*

हज़रत उमर फारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की इस करामत को इमाम बैहक़ी ने हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से भी रिवायत है की है जो हदीस की मशहूर व मोअ़तमद किताब मिश्कात शरीफ पेजः 546 पर भी लिखी हुई है।

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से रिवायत है कि हज़रत उमर फारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने एक शख़्स से पूछा कि तुम्हारा नाम क्या है? उसने कहा कि जुमरा यानी चिंगारी, फ़िर आप ने उसके बाप का नाम दरियाफत फरमाया तो उस ने कहा शिहाब यानी शोला। फिर आप ने उस से पूछा तुम्हारे क़बीले का नाम क्या है? उस ने कहा हरक़ा यानी आग और जब आप ने उस के रहने की जगह दरियाफत की तो उस ने हुर्रा बताया यानी गरमी। आप ने पूछा कि हुर्रा कहां है? उस ने कहा ज़ाते लज़ा यानी शोले वाली जगह में, इन सारे जवाबात को सुनने के बाद हज़रत उमर फारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फरमायाः أَدْرِكْ أَهْلَكَ فَقَدِ احْتَرَقُوْا यानी अपने अहल व अयाल की ख़बर लो कि वह सब जल कर मर गए, जब वह शख़्स अपने घर वापस हुआ तो देखा वाक़ई उस के घर को आग लग गई थी और सब

लोग जल कर मर गए थे। (तारीखुल खुलफा:86)

हज़रत अबुश शैख़ किताबुल इस्मत में हज़रत कैस बिन हज्जाज रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत करते हैं कि जब हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ज़मानए ख़िलाफत में मिस्र को फत्ह किया तो अहले अजम एक मुक़र्ररा दिन पर हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास आए और कहाः يَاأَيُّهَاالْاَمِيْرُ اِنَّ لِنِيْلِنَا هٰذَا سُنَّةً لَايَجْرِيْ اِلَّابِهَا यानी एक हाकिम! हमारे इस दरियाए नील के लिये एक पुराना तरीक़ा चला आ रहा है कि जिस के बग़ैर जारी नहीं रहता है बल्कि खुश्क हो जाता है और हमारी खेती का दारो मदार इसी दरियाए नील के पानी पर ही है। हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उन लोगों से दरियाफत फरमाया कि दरियाए नील के जारी रहने का वह पुराना तरीक़ा क्या है? उन लोगों ने कहा कि ज़ब उस महीने की चांद की ग्यारहवीं तारीख़ आती है तो हम लोग एक कुंवारी लड़की को मुन्तख़ब करके उस के मां बाप को राज़ी करते हैं फिर उसे बेहतरीन क़िसम के ज़ेवरात और कपड़े पहनाते हैं, उस के बाद लड़की को दरियाए नील में डाल देते हैं। हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमायाः اِنَّ هٰذَا لَايَكُوْنُ اَبَدًا فِى الْاِسْلَامِ यानी इस्लाम में ऐसा कभी नहीं हो सकता है, यह तमाम बातें लग़व और बेसरो-पा हैं, इस्लाम इस क़िस्म की तमाम बातिल बातों को मिटाने आया है, वह लड़की को दरियाए नील में डालने की इजाज़त हरगिज़ नहीं दे सकता, आप के इस जवाब के बाद लोग वापस चले गए, कुछ दिनों के बाद वाक़ई दरियाए नील बिल्कुल खुश्क हो गया, यहां तक कि बहुत से लोग वतन छोड़ने पर आमादा हो गए। हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने यह मामला देखा तो एक ख़त लिख कर हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को सारे हालात से मुत्तला (आगाह) किया, आप ने ख़त पढ़ने के बाद हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को तहरीर फरमाया

कि तुम ने मिस्रियों को बहुत उम्दा जवाब दिया, बेशक इस्लाम इस क़िसम की तमाम लग़्व और बेहूदा बातों को मिटाने के लिये आया है। मैं इस ख़त के हमराह एक रुक़्आ रवाना कर रहा हूं तुम इस को दरियाए नील में डाल देना।

जब वह रुक़्आ हज़रत अम्र बिन आ़स रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को पहुंचा तो आप ने उसे खोल कर पढ़ा उस में लिखा हुआ था कि:

مِنْ عَبْدِاللّٰهِ عُمَرَ اَمِيْرِالْمُؤْمِنِيْنَ اِلٰى نِيْلِ مِصْرَ اَمَّا بَعْدُ فَاِنْ كُنْتَ تَجْرِىْ مِنْ قِبَلِكَ فَلَا تَجْرِ

وَاِنْ كَانَ اللّٰهُ يُجْرِيْكَ فَاَسْاَلُ اللّٰهَ الْوَاحِدَ الْقَهَّارِ اَنْ يُّجْرِيَكَ۔

यानी अल्लाह के बन्दे उमर अमीरुल मोमिनीन की तरफ से मिस्र के दरियाए नील को मालूम हो कि अगर तू बज़ाते ख़ुद जारी होता है तो मत जारी हो। और अगर ख़ुदाए अ़ज़्ज़ व जल्ल तुझ को जारी फरमाता है तो मैं अल्लाह वाहिदुल क़ह्हार से दुआ़ करता हूं कि वह तुझे जारी फरमा दे।

हज़रत अम्र बिन आ़स रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के उस रुक़्आ को रात के वक़्त दरियाए नील में डाल दिया। मिस्र वाले जब सुबह को नीन्द से बेदार हुए तो देखा कि अल्लाह तबारक व तआ़ला ने उस को इस तरह जारी फरमा दिया कि सोला हाथ पानी ऊपर चढ़ा हुआ है। फिर दरियाए नील उस तरह कभी नहीं सूखा और मिस्र वालों को यह जाहिलाना रस्म हमेशा के लिये ख़त्म हो गई। (तारीख़ुल ख़ुलफा:87)

यह हज़रत उमर फारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की बहुत बड़ी करामत है कि आप ने दरियाए नील के नाम ख़त लिखा और ख़ुदाए अ़ज़्ज़ व जल्ल से दुआ़ की, तो वह दरियाए नील जो हर साल एक कुंवारी लड़की की जान लिये बग़ैर जारी नहीं होता था हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के ख़त से हमेशा के लिये जारी हो गया। मालूम हुआ कि आप बहरो-बर दोनों पर हुकूमत फरमाते थे। एक

शायर ने बहुत ख़ूब कहा हैः

*याद ऊ गर मोनिस जानत बूद*
*हर दो अलाम ज़ेरे फरमानत बूद*

ख़िलाफते फारूक़ी का ज़माना था एक अजमी शख़्स मदीना तैयिबा आया जो हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को तलाश कर रहा था, किसी ने बताया कि कहीं आबादी के बाहर कहीं सो रहे होंगे, वह शख़्स आबादी के बाहर निकल कर आप को तलाश करने लगा, यहां तक कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को इस हालत में पाया कि वह ज़मीन पर सर के नीचे ज़िरह रखे हुए सो रहे थे, उसने सोचा कि सारी दुनिया में इस शख़्स की वजह से फित्ना बरपा है इस लिये कि उस वक़्त ईरान और दूसरे मुल्कों में इस्लामी फौजों ने तहलका मचा रखा था, लिहाज़ा इस को क़त्ल कर देना ही मुनासिब है और आसान भी है, इस लिये कि आबादी के बाहर सोते हुए शख़्स को मार डालना कोई मुश्किल बात नहीं, यह सोच कर उस ने नियाम से तलवार निकाली और आप की ज़ात बा बरकात पर वार करना ही चाहता था कि अचानक ग़ैब से दो शेर नमूदार हुए और उस अजमी की तरफ बढ़े, इस मन्ज़र को देख कर वह चीख़ पड़ा, उस की आवाज़ से हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जाग उठे, आप के बेदार होने पर उस ने अपना सारा वाक़िआ बयान किया और फिर मुसलमान हो गया। (सीरत ख़ुलफाए राशिदीन)

यह भी आप की एक करामत है कि शेर जो इंसानों के जान लेवा हैं वह आप की हिफाज़त के लिये नमूदार हो गए और क्यों न हो किः مَنْ كَانَ لِلّٰهِ كَانَ اللّٰهُ لَهٗ यानी जो अल्लाह तआला का हो जाता है अल्लाह तआला उस का हो जाता है और हर तरह उस की हिफाज़त फरमाता है।

## मक़ामे रफीअ

हज़रत अल्लामा इमाम राज़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैह सूरए

कहफ की आयते करीमा की तफ्सीर में बुख़ारी शरीफ की हदीसः إِذَا أَحْبَبْتُهُ كُنْتُ سَمْعَهُ الَّذِي يَسْمَعُ بِهِ وَبَصَرَهُ الَّذِي يُبْصِرُ بِهِ وَيَدَهُ الَّتِي يَبْطِشُ بِهَا وَرِجْلَهُ الَّتِي يَمْشِي بِهَا (मिश्कात शरीफ़:197) नक़ल फरमाने के बाद तहरीर फरमाते हैं: اَلْعَبْدُ إِذَا وَاظَبَ عَلَى الطَّاعَاتِ بَلَغَ الْمَقَامَ الَّذِي يَقُولُ اللّٰهُ كُنْتُ لَهُ سَمْعًا وَبَصَرًا فَإِذَا صَارَ نُوْرُ جَلَالِ اللّٰهِ سَمْعًا لَهُ سَمِعَ الْقَرِيْبَ وَالْبَعِيْدَ وَإِذَا صَارَ ذَالِكَ النُّوْرُ بَصَرًا لَهُ رَأَى الْقَرِيْبَ وَالْبَعِيْدَ وَإِذَا صَارَ ذٰلِكَ النُّوْرُ يَدًا لَهُ قَدَرَ عَلَى التَّصَرُّفِ فِي السَّهْلِ وَالصَّعْبِ وَالْقَرِيْبِ وَالْبَعِيْدِ (तफ्सीरे कबीर:5/480) यानी जब कोई बन्दा नेकियों पर हमेशगी इख़्तियार करता है तो उस मक़ामे रफीअ़ तक पहुंच जाता है कि जिस के मुतअल्लिक़ अल्लाह तआ़ला ने كُنْتُ لَهُ سَمْعًا وَّ بَصَرًا फरमाया है। तो जब अल्लाह के जलाल का नूर उस की समअ़ हो जाता है तो वह दूर व नज़्दीक की आवाज़ को सुन लेता है। और जब यही नूर उस की बसर हो जाता है तो वह दूर व नज़्दीक की चीज़ों को देख लेता है और जब यही नूरे जलाल उस का हाथ हो जाता है तो वह बन्दा आसान व मुश्किल और दूर व नज़्दीक की चीज़ों में तसर्रुफ करने पर क़ादिर हो जाता है।

☆☆☆

# हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु
## और
# ग़स्सानी बादशाह जब्ला बिन अल-ऐहम

औस व ख़ज़रज के बाज़ क़बीलों ने मुल्के शाम में एक चश्मे पर जिस का नाम ग़स्सान था डेरा डाला और उस इलाक़े के कुछ शहरों पर क़ब्ज़ा कर लेने के बाद एक अज़ीमुश शान सल्तनत क़ाइम कर दी और मुलूके ग़स्सानिया के मुअज़्ज़ज़ नाम से मश्हूर हो गए। मुलूके ग़स्सान में सब से पहला बादशाह जुफ्ना हुआ और सब से आख़िरी बादशाह जब्ला बिन अल-ऐहम। वह पहले बुत-परस्त थे, फिर रूमी बादशाहों के साथ तअ़ल्लुक़ की वजह से अपना क़दीम मज़हब छोड़ कर ईसाई हो गए थे। क़ुरैशे मक्का के बाद सब से ज़्यादा जिन को इस्लाम की क़ुव्वत तोड़ देने और उस को सफ़्हए हस्ती से मिटा देने की फ़िक्र थी वह मुलूक ग़स्सान थे, अरब के दूसरे क़बीले अगर्चे मुक़ाबले के लिये आमादा हुए थे लेकिन उन के पास बाक़ाइदा लश्कर न था और न किसी क़िस्म का अहम साज़ो-सामान था मगर ग़स्सानियों की सल्तनत निहायत बाक़ाइदा और मुनज़्ज़म थी, उन का लश्कर भी आरास्ता था और सब से ज़्यादा यह कि एक ज़बर्दस्त बादशाह क़ैसरे रूम से उन के तअ़ल्लुक़ात थे जो हर वक़्त उनकी इम्दाद पर आमादा और मुस्तइद था।

मलिके (बादशाहे) ग़स्सान मुसलमानों को सफ़्हए हस्ती से मिटाने के लिये सोच ही रहा था कि इसी दरमियान में सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के क़ासिद हज़रत शुजाअ़ बिन वहब अल-अस्अ़दी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उसके नाम हुज़ूर का ख़त लेकर ऐसे वक़्त पहुंचे जबकि क़ैसरे रूम किस्रा के मुक़ाबले से फ़ारिग़ होकर शुक्राना अदा करने के लिये बैतुल मुक़द्दस आया हुआ था और ग़स्सान का बादशाह उस की दअ़्वत में मश्ग़ूल था, इसी सबब से कई रोज़ तक हुज़ूर के क़ासिद हज़रत शुजाअ़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को

वहां ठहरना पड़ा और कई रोज़ तक रसाई न हो सकी। आख़िर किसी तरह एक रोज़ हुज़ूर के क़ासिद मलिक ग़स्सान के सामने पेश हुए और उन्हों ने जो नामए (ख़ते) मुबारक उस को दिया उस का मज़्मून यह था: اِنِّیْ اَدْعُوْکَ اِلٰی اَنْ تُؤْمِنَ بِاللّٰہِ وَحْدَہٗ یَبْقٰی لَکَ مُلْکُکَ यानी मैं तुम को सिर्फ एक खुदा पर ईमान लाने की तरफ बुलाता हूं, अगर तुम ईमान ले आए तो तुम्हारा मुल्क तुम्हारे लिये बाक़ी रहेगा।

शाहे ग़स्सान सैयिदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का ख़त पढ़ कर भड़क उठा और गुस्से से कहा कि मेरा मुल्क कौन छीन सकता है? मैं खुद मदीना पर हम्ला करूंगा और उस की ईंट से ईंट बजा दूंगा और क़ासिद से कहा कि जाकर यही बात मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) से कह देना।

हज़रत शुजाअ् रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि मदीना तैयिबा पहुंच कर जब मैं ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से ग़स्सान के बादशाह की पूरी कैफियत बयान की तो हुज़ूर ने इरशाद फरमाया: بَادَ مُلْکُہٗ यानी उस का मुल्क तबाह व बरबाद हो गया।

सीरते हलबिया में है कि हुज़ूर का नामए मुबारक हारिस ग़स्सानी के नाम था और इब्ने हिशाम वग़ैरा दूसरे मुवर्रिख़ीन ने लिखा है कि हज़रत शुजाअ् रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हुज़ूर का नामए मुबारक जब्ला बिन अल-ऐहम के यहां लेकर गए थे।

अलग़रज़ हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के नामए मुबारक भेजने का यह असर हुआ कि जो आग अन्दर ही अन्दर सुलग रही थी वह भड़क उठी और मलिके ग़स्सान अपनी पूरी कुव्वत के साथ आमदए जंग हुआ, यहां तक कि ग़स्सानियों ही की अदावत के नतीजे में मूता का सख़्त तरीन मारिका हुआ (जंग हुई) जिस में मुसलमानों को बहुत बड़ा नुक़्सान उठाना पड़ा कि बहुत से सिपाही और कई एक चीदा और बरगुज़ीदा सिपह सालार इस जंग में शहीद हो गए।

मदीना तैयिबा पर ग़स्सानी बादशाह के हम्ले की ख़बर जब क़ासिद

के ज़रिये पहुंची तो मुसलमान बहुत तश्वीश और फ़िक्र में हुए कि अगर्चे अल्लाह के महबूब दानाए ख़िफ़ाया व ग़ुयूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के इरशाद के मुताबिक़ मलिक ग़स्सान ख़ाइब व ख़ासिर होगा और उस का मुल्क तबाह व बरबाद होगा लेकिन मदीना शरीफ पर उस के हम्ले से न मालूम कितनी जानें ज़ाए होंगी, कितनी औरतें बेवा हो जायेंगी और न मालूम कितने बच्चे यतीम हो जायेंगे, मगर अल्लाह तआला ने उस के हम्ले से मदीना तैयिबा को महफ़ूज़ रखा। ग़स्सानी बादशाह जिस के मदीना शरीफ पर हम्ले की ख़बर गर्म थीं वह हारिस था या जब्ला बिन अल-ऐहम? इस में इख़्तिलाफ है, तब्रानी में अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से जो रिवायत है उस से मालूम होता है कि वह ग़स्सानी बादशाह जब्ला बिन अल-ऐहम था।

अलग़रज़ जब्ला बिन अल-ऐहम ने मुसलमानों से दुश्मनी ज़ाहिर करने में कोई कमी नहीं रखी मगर इसके बावजूद इस्लाम की ख़ूबियों से वाक़िफ था, उसके कानों तक इस्लाम की अच्छाइयां पहुंचती रहती थीं, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की सच्चाई की दलीलों और निशानियों का भी इल्म उसे होता रहा था। अंसार हज़रात का मुसलमान होकर सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को अपने यहां ठहराना और उन की हिफ़ाज़त व हिमायत में जान व माल का कुर्बान कर देना भी आहिस्ता आहिस्ता उस के अन्दर इस्लाम की मुहब्बत पैदा कर रहा था इस लिये अंसार और जब्ला दोनों एक ही क़बीले से तअल्लुक़ रखते थे। बिल-आख़िर इस्लाम की मुहब्बत उस के दिल में बढ़ती गई, यहां तक कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ज़माने में वह मुहब्बत इस क़द्र बढ़ गई कि उस ने ख़ुद हज़रत उमर फारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को लिखा कि मैं इस्लाम में दाख़िल होने के लिये आप की ख़िदमत में हाज़िर होना चाहता हूं, आप ने निहायत ख़ुशी से तहरीर फरमाया कि तुम बिला खटक चले आओ

لَكَ مَالَنَا وَعَلَيْكَ مَاعَلَيْنَا यानी हर हाल में तुम हमारी तरह हो जाओगे।

जब्ला बादशाह अपने क़बीलए उक और ग़स्सान के पांच सौ आदमियों को हमराह लेकर रवाना हुआ, जब मदीना मुनव्वरा सिर्फ़ दो मंज़िल रह गया तो उस ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में इत्तिला भेजी कि मैं हाज़िर हो रहा हूं और अपने लश्कर के दो सौ सवारों को हुक्म दिया कि ज़र्बफ्त व हरीर (रेशम व कामख़्वाब) की सुर्ख़ व ज़र्द वरदियां पहनें और घोड़ों पर दीबाज की झूलें डाल कर उन के गले में सोने के तौक़ पहनाएं और अपना ताज सर पर रख कर पूरी शान दिखलाने के लिये अपने ख़ानदान की बेहतरीन और माया नाज़ कुर्ते मारिया ताज में लगायें, मारिया तमाम ग़स्सानी बादशाहों की दादी थी, उस के पास दो बालियां थीं, जिन में दो मोती कबूतर के अन्डे के बराबर लगे हुए थे, यह बालियां अपनी ख़ूबसूरती और बेश क़ीमत मोतियों की वजह से बेमिस्ल समझी जाती थीं। कहा जाता है कि पूरी दुनिया के बादशाहों के ख़ज़ानों में ऐसे मोती और ऐसी बालियां नहीं थीं। मुलूके ग़स्सान को उन पर फ़ख़्र था और वह उन बेश क़ीमत और नादिर होने के अलावा अपनी साहिबे इक़्बाल दादी की यादगार समझ कर उन बालियों का निहायत ऐहतराम करते थे और इसी वजह से जब्ला ने यह दिखलाने को कि अपनी उस शाहाना हैसियत और हालते आज़ादी व ख़ुद मुख़्तारी छोड़ कर दीने इस्लाम में दाख़िल होकर अमीरुल मोमिनीन की पैरवी को गवारा करता हूं, उन बेश क़ीमत बालियों को भी अपने ताज में लगा लिया था। इस तरह बड़ी शान व शौकत के साथ मदीना तैयिबा में दाख़िल होने के लिये तैयार हुआ।

हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मुसलमानों को जब्ला के इस्तेक़्बाल करने और ताज़ीम व तकरीम के साथ उतारने का हुक्म दिया। मदीना मुनव्वरा में ख़ुशी और मसर्रत का जोश फैला हुआ था, बच्चे और बूढ़े सभी उस जुलूस के नज़्ज़ारे को देखने के लिये अपने अपने घरों से निकल पड़े। मुसलमानों के लिये हक़ीक़त में इस से

बढ़ कर खुशी की और कौन सी बात हो सकती थी कि मज़हबे इस्लाम जिस के फैलाने की ख़िदमत उन के सपुर्द हुई थी, उस के अन्दर इस तरह राज़ी और खुशी से बड़े बड़े बादशाह दाख़िल हों। मगर उस वक़्त यह खुशी इस वजह से और ज़्यादा दोबाला हो रही थी कि वही ग़स्सान का बादशाह जिस के हम्ले का चर्चा मदीना तैयिबा में घर घर था और जिस के डर से सब सहम रहे थे, आज वही बादशाह इस तरह सरे तस्लीम ख़म किये हुए मदीना तैयिबा में दाख़िल हो रहा है। यह खुदाए तआ़ला की कुद्रत और इस्लाम की एक करामत थी और इसी वजह से सब छोटे बड़े उस जुलूस को देखने के लिये निकल खड़े हुए।

अलग़रज़ बड़ी शान व शौकत और निहायत ताज़ीम व तक्रीम से इस्तक्बालिया जमाअ़त के झुर्मुट में शाहाना जुलूस के साथ जब्ला मदीना तैय्यिबा में दाख़िल हुआ, हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने मेहमान दारी के मरासिम में कोई कसर न रखी और मदीना तैयिबा में उन नए मेहमानों की आमद से ख़ूब चहल पहल रही। इत्तिफ़ाक़ से ज़मानए हज क़रीब था, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु हर साल हज के लिये मक्कए मोअ़ज़्ज़मा हाज़िर हुआ करते थे, इस साल जब वह हज के लिये निकले तो जब्ला भी साथ में रवाना हुआ, वहां बद क़िस्मती से यह बात पेश आ गई कि तवाफ की हालत में जब्ला की लुंगी पर जो बवजह शाने बादशाही ज़मीन पर घिसटती हुई जा रही थी, क़बीलए फज़ारा के एक शख़्स का पैर पड़ गया, जिस के सबब लुंगी खुल गई, जब्ला को गुस्सा आया और उस ने इतनी ज़ोर से मुंह पर घूंसा मारा कि उस की नाक टेढ़ी हो गई।

यह मुक़द्दमा ख़िलाफत की अदालत में पेश हुआ, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने बग़ैर किसी रिआ़यत के हक़ फैसला करते हुए जब्ला से फरमाया कि या तो तुम किसी तरह मुद्दई को राज़ी कर लो वरना बदला देने के लिये तैयार हो जाओ, जब्ला जो अपने को बड़ी शान व शौकत वाला समझता था यह ख़िलाफे उम्मीद फैसला उसे सख़्त

नागवार गुज़रा। और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ख़ूब जानते थे कि जब्ला को यह फैसला नागवार गुज़रेगा मगर आप उस की कोई परवाह न की और बादशाह का लिहाज़ किये बग़ैर हक़ फैसला सुना दिया, उस ने कहा एक मामूली आदमी के ऐवज़ मुझ से बदला लिया जाएगा, मैं बादशाह हूं और वह एक मामूली आदमी है। हज़रत ने फरमाया कि बादशाह और रिअय्यत (जनता) को इस्लाम ने अपने अहकाम में बराबर कर दिया है। किसी को किसी पर फज़ीलत है तो तक़्वा और परहेज़गारी के सबब إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِندَ اللَّهِ أَتْقَاكُمْ (पारा:26, रुकूअ:14)

जब्ला ने कहा मैं तो यह समझ कर दाइरए इस्लाम में दाख़िल हुआ था कि मैं पहले से ज़्यादा मुअ़ज़्ज़ज़ और मोहतरम होकर रहूंगा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि इस्लामी क़ानून का फैसला यही है जिस की पाबंदी हम पर और तुम पर लाज़िम है, इस के ख़िलाफ कुछ हरगिज़ नहीं हो सकता, तुम को अपनी इज़्ज़त क़ाइम रखनी है तो उस को किसी तरह राज़ी कर लो वरना आम मज्मअ् में बदला देने को तैयार हो जाओ। जब्ला ने कहा तो मैं फिर ईसाई हो जाउंगा, आप ने फरमाया तो अब इस सूरत में तेरा क़त्ल ज़रूरी होगा, इस लिये कि जो मुरतद हो जाता है इस्लाम में उस की सज़ा यही है। जब्ला ने कहा कि अपने मामले में ग़ोर व फिक्र करने के लिये आप मुझे एक रात की मोहलत दें। हज़रत ने उस की यह दरख़्वास्त मनज़ूर फरमा ली और उसे एक रात की मोहलत दे दी, तो जब्ला उसी रात को अपने लश्कर के साथ पोशीदा तौर पर मक्का मुअ़ज़्ज़मा से भाग गया और कुस्तुंतुनिया पहुंच कर नस्रानी बन गया। *अल-इयाज़ु बिल्लाहि तआ़ला।*

यह हज़रत उमर फारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बेमिसाल अदालत कि आप ने एक मामूली आदमी के मुक़ाबले में ऐसी शान व शौकत वाले बादशाह की कोई परवाह न की, उसे मुद्दई को राज़ी करने के या बदला देने पर मजबूर किया और इस बात का ख़्याल

बिल्कुल न फरमाया कि ऐसे जलीलुल् क़दर बादशाह पर इस फैसला का रद्दे अमल क्या होगा। लिहाज़ा मानना पड़ेगा कि खुलफाए राशिदीन ने अपनी इस क़िस्म की ख़ूबियों से इस्लाम की जड़ों को मज़्बूत फरमाया और उसे ख़ूब रौशन और ताबनाक बनाया। *रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हुम अजमईन।*

## इंतिबाह

बाज़ लोग आप के अदल व इंसाफ की तारीफ करते हुए बयान करते हैं कि आप के साहिब ज़ादे अबू शहमा ने शराब पी और फिर उसी नशे की हालत में ज़िना किया, इन बातों पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु ने उन को कोड़े लगवाए, यहां तक कि उसी तक्लीफ से बीमार होकर उनका इन्तेक़ाल हो गया। तो हज़रत अबू शहमा रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु की जानिब ज़िना और शराब नोशी की निस्बत ग़लत है। मशहूर और मोतबर किताब मज्मउल बिहार में है कि ज़िना की निस्बत सहीह नहीं, अल्बत्ता उन्हों ने नबीज़ पी थी और नबीज़ उस पानी को कहते हैं जिस में खजूर भिगाई गई हो और उस की मिठास पानी में उतर आई हो। उम्दतुर रिआ़या हाशिया शरह विक़ाया जिल्द अव्वल मजीदी, पेज:87 में है: هوالماء الذی تبذ فیه تمرات فتخرج حلاوتها और नबीज़ दो तरह की होती है एक वह कि उस में नशा नहीं होता ऐसी नबीज़ हलाल व पाक है और हज़रत सैयिदना इमामे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु के नज़्दीक उस से वज़ू बनाना भी जाइज़ है बशर्ते कि रिक़्क़त व सैलान बाक़ी हो (शरहे विक़ाया में उसी सफ्हा पर है) और एक नबीज़ वह होती है जिस में नशा पैदा हो जाता है और वह हराम व नजिस होती है। हज़रत अबू शहमा रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु ने नबीज़ पी यह समझ कर कि यह हलाल है, नशा वाली नहीं है मगर वह नशा वाली साबित हुई तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु ने उनकी गिरिफ्त फरमाई और अज़ राहे अदल व इंसाफ उन्हें सज़ा दी।

# गवर्नरों से शराइत

हज़रत इब्ने साबित रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु जब किसी को कहीं का वाली मुक़र्रर फरमाते तो उस से चन्द शरतें लिखवा लेते थे, अव्वल यह कि वह तुरकी घोड़े पर सवार नहीं होगा दूसरे यह कि वह अअ़ला दर्जे का खाना नहीं खाएगा, तीसरे यह कि वह बारीक कपड़ा नहीं पहनेगा, चौथे यह कि हाजत वालों के लिये अपने दरवाज़े को बन्द नहीं करेगा और दरबान नहीं रखेगा।

फिर जो शख़्स इन शराइत की पाबन्दी नहीं करता था उस के साथ निहायत सख़्ती से पेश आते थे। हाकिमे मिस्र अ़याज़ बिन ग़नम के बारे में मालूम हुआ कि वह रेशम पहनता है और दरबान रखता है तो आप ने हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा को हुक्म दिया कि अ़याज़ बिन ग़नम को जिस हालत में भी पाव गिरफ्तार करके ले आओ, जब अ़याज़ ख़लीफतुल मुस्लिमीन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के सामने लाए गए तो आप ने उन को कम्बल का कुर्ता पहनाया और बकरियों का एक रेवड़ उन के सुपुर्द किया और फरमाया कि जाओ इन बकरियों को चराओ, तुम इंसानों पर हुकूमत के करने के क़ाबिल नहीं हो। यानी अ़याज़ बिन ग़नम को गवर्नर से एक चरवाहा बना दिया। यही वजह है कि पूरी मम्लकते इस्लामिया के हुक्काम और गवर्नर आप की हैबत से कांपते रहते थे। आप फरमाया करते थे कि ख़िलाफत का कारोबार उस वक़्त तक दुरुस्त नहीं होता जब तक कि उस में इतनी शिद्दत न की जाए जो जबर न बन जाए और इतनी नरमी न बरती जाए जो सुस्ती से ताबीर हो।

इमाम शअ़बी फरमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का यह तरीक़ा था कि जब आप किसी हाकिम को किसी तौर पर मुक़र्रर फ़रमाते तो उस के तमाम माल व असासे की फेहरिस्त लिखवा कर अपने पास महफूज़ कर लिया करते थे। एक बार आप ने अपने

तमाम उम्माल को हुक्म फरमाया कि वह अपने अपने मौजूद माल व असासे की एक एक फेहरिस्त बना कर उन को भेज दें, उन्हीं उम्माल में हज़रत सअ्द बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु भी थे जो अशरए मुबश्शरा में से हैं, जब उन्हों ने अपने असासों की फेहरिस्त बना कर भेजी तो हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने उन के सारे माल के दो हिस्से किये जिन में से एक हिस्सा उन के लिये छोड़ दिया और एक हिस्सा बैतुल माल में जमा कर दिया।

(तारीख़ुल ख़ुलफा:96)

## रातों में गश्त

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु रिआ़या की ख़बरगीरी के लिये बदवी का लिबास पहन कर मदीना तैयिबा के अतराफ में रातों को गश्त लगाया करते थे, एक बार हस्बे मामूल आप गश्त लगा रहे थे कि उन्हों ने सुना एक औरत कुछ अश्आ़र पढ़ रही है, जिस का ख़ुलासा यह है कि:

"रात बहुत हो गई और सितारे चमक रहे हैं मगर मुझे यह बात जगा रही है कि मेरे साथ कोई खेलने वाला नहीं है। तो मैं ख़ुदाए तआ़ला की कसम खा कर कहती हूं कि अगर मुझे अल्लाह के अज़ाब का ख़ौफ न होता तो इस चारपाई की चूलें हिलतीं लेकिन मैं अपने नफ्स के साथ उस निगहबान और मोअक्किल से डरती हूं जिस का कातिब कभी नहीं थकता।"

अश्आ़र को सुन कर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने उस औरत से दरियाफ्त फरमाया कि तेरा क्या मामला है कि इस क़िस्म के अश्आ़र पढ़ रही है? उस ने कहा कि मेरा शौहर कई माह से जंग पर गया हुआ है, उसी की मुलाक़ात के शौक़ में यह अश्आ़र पढ़ रही हूं। सुबह होते ही आप ने उस के शौहर को बुलाने के लिये क़ासिद रवाना फरमा दिया और चूंकि आप की ज़ौजए मोहतरमा वफात पा चुकी थीं इस लिये आप ने अपनी साहिब ज़ादी उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ्सा

रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से दरियाफ्त फ़रमाया कि औरत कितने ज़माने तक शौहर के बग़ैर रह सकती है? इस सवाल को सुन कर हज़रत हफ्सा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा ने शर्म से अपना सर झुका लिया और कोई जवाब नहीं दिया, आप ने फरमाया कि खुदाए तआ़ला हक़ बात में शर्म नहीं करता, तो हज़रत हफ्सा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा ने हाथ के इशारे से फ़रमाया कि तीन महीने या ज़्यादा से ज़्यादा चार, तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने हुक्म जारी फरमा दिया कि: لَا يُحْبَسُ الْجُيُوشُ فَوْقَ اَرْبَعَةِ اَشْهُرٍ यानी चार महीने से ज़्यादा किसी सिपाही को जंग में न रोका जाए। (तारीखुल खुलफ़ा)

एक रात आप गश्त फरमा रहे थे कि एक मकान से आवाज़ आई बेटी दूध में पानी मिला दे, दूसरी आवाज़ आई जो लड़की की थी, मां अमीरुल मोमिनीन का हुक्म तुझ को याद नहीं रहा जिस में ऐलान किया गया है कि दूध में कोई शख़्स पानी न मिलाए, मां ने कहा अमीरुल मोमिनीन यहां देखने नहीं आयेंगे, पानी मिला दे, लड़की ने कहा कि मैं ऐसा नहीं कर सकती कि ख़लीफा के सामने इताअ़त का इक़रार और पीठ पीछे नाफरमानी। उस वक़्त हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के साथ हज़रत सालिम रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु थे, आप ने उन से फरमाया कि इस घर को याद रखो और सुबह के वक़्त हालात मालूम करके मुझे बताओ। हज़रत सालिम रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने दरबारे ख़िलाफत में रिपोर्ट पेश की कि लड़की बहुत नेक जवान और बेवा है, कोई मर्द उन का सरपरस्त नहीं है, मां बेसहारा है, आप ने उसी वक़्त अपने लड़कों को बुला कर फरमाया कि तुम में से जो चाहे उस लड़की से निकाह कर ले तो हज़रत आसिम रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु तैयार हो गए, आप ने उस बेवा लड़की को बुला कर हज़रत आसिम से अक़्द करके अपनी बहू बना लिया। (अशरए मुबश्शरा)

इस वाक़िआ़ को एक ग़ैर मुक़ल्लिद मौलवी ने एक जल्सा में बयान करने के बाद इन लफ्ज़ों में तब्सिरा किया कि देखो! हज़रत उमर

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इतने अअ्ला ख़ानदान के होते हुए अपने लड़के की शादी एक गुवालन से कर दी, लिहाज़ा हनफियों का कुफ्व वाला मस्अला ग़लत है, इत्तिफाक़ से उस जल्से की तक़रीर सुनने के लिये एक सुन्नी हनफी मौलवी भी गए थे, ग़ैर मुक़ल्लिद की इस तक़रीर से मुतअस्सिर होकर उन्हों ने यह ख़्याल क़ायम कर लिया कि वाक़ई कुफ्व का मस्अला ग़लत मालूम होता है, यह बात उन्हों ने एक सुन्नी हनफी मुफ्ती से बयान की, तो हज़रत मुफ्ती साहब ने फरमाया कि ग़ैर मुक़ल्लिद ने फरेब से काम लिया जिसे आप भांप न सके, हनफियों के यहां लड़के की तरफ से कुफ्व होने का ऐतबार नहीं है, वह छोटी से छोटी बिरादरी और बहुत कम दर्जे की लड़की से भी निकाह कर सकता है। कुफ्व होने का ऐतबार सिर्फ लड़की की तरफे से है कि बालिग़ होने के बावजूद अपने वली की रज़ा के बग़ैर वह ग़ैर कुफ्व से निकाह नहीं कर सकती जैसा कि फिक़्हे हनफी की आम किताबों में मज़्कूर है, तो मौलवी साहब ने इक़्रार किया कि वाक़ई मैं ग़ैर मुक़ल्लिद के फरेब में आ गया था, इस पर हज़रत मुफ्ती साहब ने फरमाया कि इसी लिये बद मज़्हबों की तक़रीर सुनने से मना फरमाया गया है कि जब आप दस साल इल्मे दीन हासिल करने के बावजूद उस के फरेब में आ गए तो अवाम का क्या हाल होगा, किसी मौलवी की तक़रीर का सुनना भी दीन का हासिल करना है और हदीस शरीफ में है: اُنْظُرُوْا عَمَّنْ تَاْخُذُوْنَ دِيْنَكُمْ यानी देख लो कि तुम अपना दीन किस से हासिल कर रहे हो।

(रवाहु मुस्लिम, मिश्कात:37)

लिहाज़ा किसी बद मज़्हब की तक़रीर सुनना हराम व ना जाइज़ है। और जो लोग यह कहते हैं कि हम पर किसी बद मज़्हब की तक़रीर का असर नहीं हो सकता वह बहुत बड़ी ग़लत फहमी में मुब्तला हैं, जब दस साल के पढ़े हुए मौलवी पर बद मज़्हब की तक़रीर का असर पड़ गया तो दूसरे लोगों की क्या हक़ीक़त है। बस दुआ है कि ख़ुदाए तआला ऐसे लोगों को समझ अता फरमाए और बद मज़्हबों की तक़रीर

से दूर रहने की तौफीक़े रफीक़ बख़्शे। आमीन

## बैतुल माल से वज़ीफा

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु दिन रात ख़िलाफत के काम अंजाम देते थे मगर बैतुल माल से कोई ख़ास वज़ीफा नहीं लेते थे, जब आप ख़लीफा बनाए गए तो कुछ दिनों के बाद आप ने लोगों को जमा करके इरशाद फरमाया कि मैं पहले तिजारत किया करता था और अब तुम लोगों ने मुझ को ख़िलाफत के काम में मश्गूल कर दिया है तो अब गुज़ारे की सूरत क्या होगी, लोगों ने मुख़्तलिफ मिक़्दारें तज्वीज़ (मुक़र्रर) कीं। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फरमाया कि मुतवस्सित तरीक़े पर जो आप के घर वालों के लिये और आप के लिये काफी हो जाए वहीं मुक़र्रर फरमाएं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने इस राय को पसंद फरमाया और क़बूल कर लिया, इस तरह बैतुल माल से मुतवस्सित मिक़्दार आप के लिये मुक़र्रर हो गई। कुछ दिनों के बाद एक मजलिस जिस में हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु भी थे यह तय पाया कि ख़लीफतुल मुस्लिमीन के वज़ीफे में इज़ाफा करना चाहिये कि गुज़र में तंगी होती है मगर किसी की हिम्मत न हुई कि वह आप से क[illegible] तो उन लोगों ने उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ्सा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा को वसीला बनाया और ताकीद कर दी कि हम लोगों का नाम न बताइयेगा, जब हज़रत हफ्सा ने आप से इस का तज़किरा किया तो आप का चेहरा गुस्से से तमतमा उठा, आप ने लोगों के नाम दरियाफ्त किये, हज़रत हफ्सा ने कहा पहले आप की राय मालूम हो जाए, आप ने फरमाया कि अगर मुझे उन के नाम मालूम हो जाते तो मैं उन को सख़्त सज़ा देता। यानी आप ने लोगों की राय के बावजूद वज़ीफे के इज़ाफे को मनज़ूर नहीं फरमाया बल्कि उनपर और नाराज़गी ज़ाहिर फरमाई। رضی اللہ تعالی عنہ وارضاہ عنا وعن سائر المسلمین

*रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु व अरज़ाहु अ़न्ना व अ़न् साइरिल् मुस्लिमीन।*

## वसीला

आप के ज़मानए ख़िलाफ़त में एक बार ज़बर्दस्त क़हत पड़ा, आप ने बारिश तलब करने के लिये हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साथ नमाज़े इस्तिस्क़ा अदा फरमाई। हज़रते इब्ने औन फरमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का हाथ पकड़ा और उस को बुलंद करके इस तरह बारगाहे इलाही में दुआ की: اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَتَوَسَّلُ اِلَيْكَ بِعَمِّ نَبِيِّكَ اَنْ تُذْهِبَ عَنَّا الْمَحْلَ وَاَنْ تَسْقِيَنَا الْغَيْثَ यानी या इलाहल आलमीन! हम तेरे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के चचा को वसीला बना कर तेरी बारगाह में अर्ज़ करते हैं क़हत और ख़ुश्कसाली को ख़त्म फरमा दे और हम पर रहमत वाली बारिश नाज़िल फरमा, यह दुआ मांग कर अभी आप वापस भी नहीं हुए थे कि बारिश शुरू हो गई और कई रोज़ तक मुसलसल होती रही। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा:90) मालूम हुआ कि हुज़ू सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से निस्बत रखने वालों को अपनी किसी हाजत के लिये वसीला बनाना शिर्क नहीं है बल्कि हज़रत उमर फारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का तरीक़ा और उन की सुन्नत है और हुज़ूर का इरशादे गरामी है: عَلَيْكُمْ بِسُنَّتِيْ وَسُنَّةِ الْخُلَفَاءِ الرَّاشِدِيْنَ यानी मेरी और मेरे ख़ुलफ़ाए राशिदीन की सुन्नत को इख़्तियार करो। (मिश्कात शरीफ़:30)

## आप की शहादत

बुख़ारी शरीफ़ में है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बारगाहे इलाही में दुआ की: اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِيْ شَهَادَةً فِيْ سَبِيْلِكَ وَاجْعَلْ مَوْتِيْ فِيْ بَلَدِ رَسُوْلِكَ यानी या इलाहल आलमीन! मुझे अपनी राह में शहादत अता फरमा और अपने रसूल के शहर में मुझे मौत नसीब फरमा। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा:90)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की दुआ इस तरह क़बूल हुई कि हज़रत मुग़ीरा बिन शोअ्बा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मजूसी ग़ुलाम अबू लूअ्लू ने आप से शिकायत की कि उस के आक़ा हज़रत

मुग़ीरा रोज़ाना उस से चार दिरहम वसूल करते हैं आप उस में कमी करा दीजिये, आप ने फरमाया कि तुम लोहार और बढ़ई का काम ख़ूब अच्छी तरह जानते हो और नक़्क़ाशी भी बहुत उम्दा करते हो तो चार दिरहम यौमिया तुम्हारे ऊपर ज़्यादा नहीं हैं, इस जवाब को सुन कर वह गुस्से से तिलमिलाता हुआ वापस चला गया, कुछ दिनों के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उसे फिर बुलाया और फरमाया कि तू कहता था कि "अगर आप कहें तो मैं ऐसी चक्की तैयार कर दूं जो हवा से चले" उसने तेवर बदल कर कहा कि हां, मैं आप के लिये ऐसी चक्की तैयार कर दूंगा जिस का लोग हमेशा ज़िक्र किया करेंगे। जब वह चला गया तो आप ने फरमाया कि यह लड़का मुझे क़त्ल की धमकी देकर गया है। मगर आप ने उस के ख़िलाफ कोई काररवाई नहीं की। अबू लुअ्लू ने आप के क़त्ल का पुख़्ता इरादा कर लिया, एक ख़न्जर पर धार लगाई और उस को ज़हेर में बुझा कर अपने पास रख लिया, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फज्र की नमाज़ के लिये मस्जिदे नबवी तशरीफ ले गए और उनका तरीक़ा था कि वह तक्बीर तहरीमा से पहले फरमाया करते थे कि सफें सीधी कर लो, यह सुन कर अबू लुअ्लू आप के बिल्कुल क़रीब सफ में आकर खड़ा हो गया और फिर आप के कंधे और पहलू पर ख़न्जर से दो वार किया जिस से आप गिर पड़े, उस के बाद उस ने और नमाज़ियों पर हम्ला करके 13 आदमियों को ज़ख़्मी कर दिया, जिन में से बाद में छः अफराद का इन्तेक़ाल हो गया, उस वक़्त जब्कि वह लोगों को ज़ख़्मी कर रहा था एक इराक़ी ने उस पर कपड़ा डाल दिया और जब वह उस कपड़े में उलझ गया तो उस ने उसी वक़्त खुदकुशी कर ली। चूंकि अब सूरज निकलना ही चाहता था इस लिये हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने दो मुख़्तसर सूरतों के साथ नमाज़ पढ़ाई। और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को आप के मकान पर लाए, पहले आप को नबीज़ पिलाई गई, जो ज़ख़्मों के रास्ते से बाहर

निकल गई, फिर दूध पिलाया गया मगर वह भी ज़ख़्मों से बाहर निकल गया। किसी शख़्स ने आप से कहा कि आप अपने फर्ज़न्द अब्दुल्लाह को अपने बाद ख़लीफा मुक़र्रर कर दें, आप ने उस शख़्स को जवाब दिया कि अल्लाह तआ़ला तुम्हें ग़ारत् करे, तुम मुझे ऐसा ग़लत मशवरा दे रहो जिसे अपनी बीवी को सहीह तरीक़े से तलाक़ देने का सलीक़ा भी न हो, क्या मैं ऐसे शख़्स को ख़लीफा मुक़र्रर कर दूं? फिर आप ने हज़रत उस्मान, हज़रत अली, हज़रत तल्हा, हज़रत ज़ुबैर, हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ और सअ़द रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम की इन्तिख़ाबे ख़लीफा के लिये एक कमेटी बना दी और फरमाया कि इन्हीं में से किसी को ख़लीफा मुक़र्रर किया जाए। उस के बाद आप ने अपने साहिबज़ादे हज़रत अब्दुल्लाह से फरमाया कि बताओ हम पर कितना क़र्ज़ है, उन्हों ने हिसाब करके बताया कि तक़रीबन 86 हज़ार क़र्ज़ है, आप ने फरमाया कि यह रक़म हमारे माल से अदा कर देना, अगर उस से पूरा न हो तो बनू अदी से मांगना और अगर उन से भी पूरा न हो तो कुरैश से लेना, फिर आप ने फरमाया कि जाओ हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से कहो कि उमर अपने दोनों दोस्तों के पास दफ्न होने की इजाज़त चाहता है, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा के पास गए और अपने बाप की ख़्वाहिश को ज़ाहिर की, उन्हों ने फरमाया कि यह जगह तो मैं ने अपने लिये महफ़ूज़ कर रखी थी, मगर मैं आज अपनी ज़ात पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को तरजीह देती हूं, जब आप को यह ख़बर मिली तो आप ने ख़ुदा का शुक्र अदा किया। 26 ज़िलहिज्जा 23 हिजरी, बुध के दिन आप ज़ख़्मी हुए, तीन दिन बाद 10 बरस, छेः माह चार दिन उमूरे ख़िलाफत को अंजाम देकर 63 साल की उम्र में वफात पाई। إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।*

*वह उमर जिस के अअ़्दा पे शैदा सक़र*

*उस ख़ुदा दोस्त हज़रत पे लाखों सलाम*

*तर्जुमाने नबी हमज़ुबाने नबी*
*जाने शाने अदालत पे लाखों सलाम*

हज़रत उर्वा बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि ख़लीफा वलीद बिन अब्दुल मलिक के ज़माने में जब रौज़ए मुनव्वरा की दीवार गिर पड़ी और लोगों ने उस की तामीर (87 हिजरी में) शुरू की तो (बुनियाद खोदते वक़्त) एक क़दम (घुटने तक) ज़ाहिर हुआ तो सब लोग घबरा गए और लोगों को ख़्याल हुआ कि शायद रसूलुल्लाह ﷺ का क़दम मुबारक है और वहां कोई जानने वाला नहीं मिला तो हज़रत उर्वा बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने कहा لَا وَاللّٰهِ مَا هِيَ قَدَمُ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا هِيَ إِلَّا قَدَمُ عُمَرَ यानी ख़ुदा की क़सम यह हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम का क़दम शरीफ नहीं है बल्कि यह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का क़दम मुबारक है।

(बुख़ारी शरीफ़:1/186)

ख़ुलासा यह कि तक़रीबन 64 बरस के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का जिस्मे मुबारक बदस्तूर साबिक़ रहा, उस में किसी क़िस्म की तब्दीली नहीं हुई थी और न कभी होगी। एक शायर ने ख़ूब कहा है कि:

*ज़िंदा हो जाते हैं जो मरते हैं उस के नाम पर*
*अल्लाह, अल्लाह मौत को किस ने मसीहा कर दिया*

وصلى الله تعالى على خير خلقه سيدنا محمد وعلى اله واصحابه
وذرياته اجمعين برحمتك يا ارحم الراحمين

*व सल्लल्लाहु तआ़ला अला ख़ैरि ख़ल्क़िही सैय्यिदिना मुहम्मदिंव्*
*व अला आलिही व अस्हाबिही व ज़ुर्रियातिही अज्मईन*
*बिरहमतिक या अर्हमर् राहिमीन।*

☆☆☆

# अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी
## रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

الحمدلله نحمده ونستعينه ونستغفره ونؤمن به ونتوكل عليه ونعوذ بالله من شرور انفسنا ومن سيات اعمالنا من يهده الله فلامضل له ومن يضلله فلاهادي له ونشهد ان لااله الاالله وحده لاشريك له ونشهد ان سيدنا ونبينا محمدا عبده ورسوله۔ اما بعد فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم بسم الله الرحمن الرحيم۔ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ تَرٰهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا (پ:٢٦،ع:١٢)صَدَقَ الله العلى العظيم وبلغنا رسوله النبى الكريم ونحن على ذالك من الشاهدين والشاكرين والحمدلله رب العالمين۔

एक बार सब लोग मिल कर मक्का के सरकार मदीना के ताजदार दोनों आलम के मालिक व मुख़्तार जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के दरबारे गुहर बार में दुरूदो-सलाम का नज़राना पेश करें।

صلى الله على النبى الامى واله صلى الله عليه وسلم صلاة وسلاما عليك يارسول الله

*सल्लल्लाहु अलन् नबिय्यिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सलातुवं व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।*

तक़रीबन एक लाख 24 हज़ार अंबियाए किराम इस दुनिया में मब्ऊस फरमाए गए, या कुछ कमो-बेश 2 लाख 24 हज़ार अंबियाए किराम अलैहिमस् सलातु वस्सलाम ने अपने कुदूमे मैमनत लुज़ूम (तशरीफ लाने की बरकत) से इस दुनिया को सरफराज़ फरमाया, वह लोग साहिबे औलाद भी हुए, लड़का वाले हुए और लड़की वाले भी हुए, तो जिन लोगों के साथ अंबियाए किराम अलैहिमस् सलातु वस्सलाम ने अपनी साहिब ज़ादियों को मन्सूब फ़रमाया वह यक़ीनन इज़्ज़त व अज़मत वाले हुए, इस लिये कि अल्लाह के नबी का दामाद होना एक बहुत बड़ा मर्तबा है, जो खुशनसीब इंसानों ही को नसीब हुआ है, मगर

इस सिलसिले में जो खुसूसियत और जो इन्फिरादियत हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को हासिल है वह किसी को नहीं, कि हज़रत आदम अलैहिस् सलाम से लेकर हुज़ूरे ख़ातिमुल अंबिया सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तक किसी के निकाह में नबी की दो बेटियां नहीं आई हैं लेकिन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के निकाह में सिर्फ नबी नहीं बल्कि नबिय्युल अंबिया और सैयिदुल अंबिया जनाब अहमद मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की दो साहिब ज़ादियां यके बाद दीगरे निकाह में आईं।

और सिर्फ यही नहीं बल्कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से यहां तक रिवायत है उन्हों ने फरमाया कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का यह इरशाद सुना है कि आप हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फरमा रहे थे कि अगर मेरी चालीस लड़कियां भी होतीं तो यके बाद दीगरे मैं उन सब का निकाह ऐ उस्मान तुम से कर देता, यहां तक कि कोई भी बाक़ी न रहती। (तारीखुल खुलफा:104)

और बैहकी ने अपनी सुनन में लिखा है कि अब्दुल्लाह जौफी बयान फरमाते हैं कि मुझ से मेरे मामू हुसैन जौफी ने दरियाफ्त किया कि तुम्हें मालूम है कि हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का लक़ब ज़ुन्नूरैन क्यों है? मैं ने कहा कि नहीं। उन्हों कहा कि हज़रत आदम अलैहिस् सलाम से लेकर क़ियामत तक हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के अलावा किसी शख़्स के निकाह में किसी नबी की दो साहिब ज़ादियां नहीं आयेंगी, इसी लिये आप को ज़ुन्नूरैन कहते हैं, अअ़्ला हज़रत फाज़िल बरैलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फरमाते हैं:

*नूर की सरकार से पाया दो शाला नूर का*
*हो मुबारक तुम को ज़ुन्नूरैन जोड़ा नूर का*

सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने क़ब्ले ऐलाने नुबुव्वत अपनी साहिब ज़ादी हज़रत रुक़य्या रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का निकाह आप से किया था जो ग़ज़वए बद्र के मौक़ा पर बीमार थीं और उन्हीं की तीमारदारी के सबब हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उस जंग में शिरकत नहीं फरमा सके और सैय्यिदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की इजाज़त से मदीना तैयिबा ही में रह गए थे, मगर चूंकि हुज़ूर ने हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को बद्र के माले ग़नीमत से हिस्सा अता फरमाया था इसी लिये आप बद्रियों में शुमार किये जाते हैं। ग़ज़्वए बद्र में मुसलमानों के फतह पाने की खुशख़बरी लेकर जिस वक़्त हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मदीना मुनव्वरा पहुंचे उस वक़्त हज़रत रुक़य्या रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को दफन किया जा रहा था। उन के इन्तेक़ाल फरमा जाने के बाद हुज़ूर सैय्यिदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अपनी दूसरी साहिब ज़ादी हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का निकाह हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से कर दिया तो उन का भी 9 हिजरी में विसाल हो गया। ग़रज़ कि इस तरह हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ज़ुन्नूरैन हुए। आप के एक साहिब ज़ादे हज़रत बीबी रुक़य्या रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के शिकमे मुबारक से पैदा हुए थे जिन का नाम 'अब्दुल्लाह' था, वह अपनी मां के बाद 6 बरस की उम्र पाकर इन्तेक़ाल कर गए और हज़रत बीबी उम्मे कुल्सूम रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से आप की कोई औलाद नहीं हुई।

एक बार सब लोग मिल कर बुलंद आवाज़ से दुरूद शरीफ पढ़ें।

صلى الله على النبى الامى واله صلى الله عليه وسلم صلاة وسلاما عليك يارسول الله

*सल्लल्लाहु अलन् नबिय्यिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सलातव् व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।*

## नाम व नसब

आप का नाम उस्मान, कुनिय्यत अबू उमर और लक़ब जुन्नूरैन है। आप का सिलसिलए नसब इस तरह हैः उस्माने बिन अफ्फ़ान अबुल आ़स बिन उमैया बिन अब्दे शमस बिन अब्दे मनाफ यानी पांचवीं पुश्त में आप का सिलसिलए नसब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के शजरए नसब से मिल जाता है। आप की नानी उम्मे हकीम जो हज़रत अब्दुल मुत्तलिब की बेटी थीं वह हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के वालिदे गरामी हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के साथ एक ही पेट से पैदा हुई थीं, इस रिश्ता से हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की वालिदा हुज़ूर सैय्यिदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की फूफी की बेटी थीं, आप की पैदाश आम्मुल फील के छः साल बाद हुई। रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु।

## क़बूले इस्लाम और मसाइब

हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु उन हज़रात में से हैं जिन को हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने इस्लाम की दअ़वत दी थी, आप क़दीमुल इस्लाम हैं यानी इब्तिदाए इस्लाम ही में ईमान ले आए थे। इब्ने इस्हाक़ कहते हैं कि आप ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़, हज़रत अली, हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम के बाद इस्लाम कुबूल किया।

इब्ने सअ़द मुहम्मद बिन इब्राहीम से रिवायत करते हैं कि हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु जब हल्क़ए बगोश इस्लाम हुए उन का पूरा ख़ानदान भड़क उठा, यहां तक आप का चचा हिकम बिन अबिल आ़स इस क़दर नाराज़ और बरहम हुआ कि आप को पकड़ कर एक रस्सी से बांध दिया और कहा कि तुम ने अपने बाप दादा का दीन छोड़ कर एक दूसरा नया मज़हब इख़्तियार कर लिया है, जब तक कि तुम इस नए मज़हब को नहीं छोड़ोगे, हम तुम्हें नहीं छोड़ेंगे, इसी तरह

बांध कर रखेंगे। यह सुन कर आप ने फरमायाः وَاللّٰهِ لَا اَدَعُهٗ اَبَدًا وَلَا اُفَارِقُهٗ यानी खुदाए जुल जलाल की क़सम मज़्हबे इस्लाम को मैं कभी नहीं छोड़ सकता और न कभी इस दौलत से दस्तबरदार हो सकता हूं, मेरे जिस्म के टुक्ड़े टुक्ड़े कर डालो यह हो सकता है मगर दिल से दीने इस्लाम निकल जाए यह हरगिज़ नहीं हो सकता। हिकम बिन अबिल आस ने जब इस तरह आप का इस्तिक़्लाल देखा तो मजबूर होकर आप को रिहा कर दिया।

## आप का हुलिया

हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु का हुलिया और सरापा इब्ने अ़साकिर चन्द तरीक़ों से इस तरह बयान करते हैं कि आप दरमियानी क़द के ख़ूबसूरत शख़्स थे, रंग में सफेदी के साथ सुरख़ी भी शामिल भी, चेहरे पर चेचक के दाग़ थे, जिस्म की हड्डियां चौड़ी थीं, कंधे काफी फैले हुए शे, पिंडलियां भरी हुई थीं, हाथ लम्बे थे जिन पर काफी बाल थे, दाढ़ी बहुत घनी थी, सर के बाल घुंघरियाले थे, दांत बहुत ख़ूबसूरत थे और सोने के तार से बंधे हुए थे, कंपटियों के बाल कानों से नीचे तक थे और पीले रंग का ख़िज़ाब किया करते थे

और इब्ने असाकिर अब्दुल्लाह बिन हज़म माज़नी से रिवायत करते हैं उन्हों ने फरमाया कि मैं ने हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को देखाः فَمَا رَاَيْتُ قَطُّ ذَكَرًا وَلَا اُنْثٰى اَحْسَنَ وَجْهًا مِّنْهُ यानी मैं ने औरतों और मर्दों में से किसी को उन से ज़्यादा हसीन व खूबसूरत नहीं पाया।

(तारीख़ुल ख़ुलफा)

और इब्ने असाकिर हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से रिवायत करते हैं वह फरमाते हैं कि एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने गोश्त का एक बड़ा प्याला देकर हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के पास भेजा, जब मैं आप के घर में दाख़िल हुआ तो हज़रत बीबी रुक़य्या रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा भी बैठी हुई थीं, मैं कभी हज़रत बीबी रुक़य्या के चेहरे

की तरफ देखता और कभी हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की सूरत देखता था, जब मैं आप के घर से वापस होकर रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमते मुबारका में हाज़िर हुआ तो रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने मुझ से दरियाफ्त फरमाया कि उस्मान (रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के घर के अन्दर तुम गए थे, मैं ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! जी हां, मैं घर के अन्दर गया था, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया: तुम ने उन मियां बीवी से हसीन व ख़ूबसूरत किसी मियां बीवी को देखा है? मैं ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! कभी नहीं देखा। (तारीख़ुल ख़ुलफा)

यह वाक़िआ ग़ालिबन आयते हिजाब के नाज़िल होने से पहले का है।

और इब्ने अदी हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से रिवायत करते हैं उन्हों ने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के साथ अपनी साहिबज़ादी उम्मे कुल्सूम का निकाह किया तो उनसे फरमाया कि तुम्हारे शौहर उस्माने ग़नी तुम्हारे दादा हज़रत इब्राहीम और तुम्हारे बाप मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम) से शक्लो-सूरत में बहुत मुशाबह हैं। (तारीख़ुल ख़ुलफा)

## हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु और आयाते कुरआनी

हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के हक़ में भी कुरआन मजीद की आयाते करीमा नाज़िल हुई हैं। जंगे तबूक का वाक़िआ ऐसे वक़्त में पेश आया जबकि मदीना मुनव्वरा में सख़्त क़हत पड़ा हुआ था और आम मुसलमान बहुत ज़्यादा तंगी में थे, यहां तक कि दरख़्त की पत्तियां खा कर लोग गुज़ारा करते थे, इसी लिये उस जंग के लश्कर को जैशे उस्रा कहा जाता है यानी तंगदस्ती का

लश्कर। तिर्मिज़ी शरीफ में हज़रत अब्दुर रहमान इब्ने ख़ब्बाब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है वह फरमाते हैं कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में उस वक़्त हाज़िर था जबकि आप जैशे उस्रा की मदद के लिये लोगों को जोश दिला रहे थे। हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आप के पुर जोश लफ़्ज़ सुन कर खड़े हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैं सौ ऊंट पालान और समान के साथ ख़ुदाए तआला की राह में पेश करूंगा, उसके बाद फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम को सामाने लश्कर के बारे में तरग़ीब दी और इम्दाद के लिये मुतवज्जह फरमाया, तो फिर हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु खड़े हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैं दो सौ ऊंट मअ़ साज़ व सामान अल्लाह के रास्ते में नज़्र करूंगा। उसके बाद फिर रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने सामाने जंग की दुरुस्तगी और फराहमी की तरफ मुसलमानों को रग़बत दिलाई, फिर हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु खड़े हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैं तीन सौ ऊंट पालान और सामान के साथ ख़ुदाए तआला की राह में हाज़िर करूंगा। हदीस के रावी हज़रत अब्दुर रहमान बिन ख़ब्बाब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं मैं ने देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मिम्बर से उतरते जाते थे और फरमाते जाते थे: مَاعَلٰى عُثْمَانَ مَا عَمِلَ بَعْدَ هٰذِهٖ،مَاعَلٰى عُثْمَانَ مَا عَمِلَ بَعْدَ هٰذِهٖ यानी एक ही जुम्ला को हुज़ूर सैय्यिदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने दो बार फरमाया, इस जुम्ला का मतलब यह है कि अब उस्मान को वह अमल कोई नुक़सान नहीं पहुंचाएगा जो इस के बाद करेंगे।

मुराद यह है कि हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का यह अमले ख़ैर ऐसा अअ़्ला, इतना मक़्बूल है कि अब और नवाफ़िल न करें जब भी यह उन के मदारिजे उलिया (ऊंचा मर्तबा) के लिये काफ़ी

है और इस मक्बूलियत के बाद कोई उन्हें अंदशए ज़रर नहीं है।

(मिश्कात शरीफ:561)

तफ्सीरे खाज़िन और तफ्सीरे मआलिमुत तंज़ील में है कि आप ने साज़ व सामान के साथ एक हज़ार ऊंट इस मौका पर चन्द दिया थ।

और हज़रत अब्दुर रहमान बिन समुरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जैशे उस्रा की तैयारी की ज़माने में एक हज़ार दीनार अपने कुर्ते की आस्तीन में भर कर लाए (दीनार साढ़े चार माशा सोने का होता है), उन दीनारों को आप ने रसूले मक्बूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की गोद में डाल दिया। रावीए हदीस हज़रत अब्दुर रहमान बिन समुरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं मैं ने देखा कि नबीए करीम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उन दीनारों को अपनी गोद में उलट पलट कर देखते जाते थे और फरमाते थे जाते थे: مَا ضَرَّ عُثْمَانَ مَا عَمِلَ بَعْدَ الْيَوْمِ مَرَّتَيْن यानी आज के बाद उस्मान को उन का कोई अमल नुक्सान नहीं पहुंचाएगा। सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उन के बारे में इस जुम्ला को दो बार फरमाया। मतलब यह है कि फर्ज़ कर लिया जाए कि अगर हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से कोई ख़ता वाकेअ् हो जाए तो आज का उन का यह अमल उन की ख़ता के लिये कफ्फारा बन जाएगा। (मिश्कात शरीफ:561)

तफ्सीरे ख़ाज़िन और तफ्सीरे मआलिमुत तंज़ील में है कि जब हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने जैशे उस्रा की इस तरह मदद फरमाई कि एक हज़ार ऊंट साज़ो-सामान के साथ पेश फरमाया और एक हज़ार दीनार भी चन्दा दिया और हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सदका के चार हज़ार दिरहम बारगाहे रिसालत में पेश किये तो इन दोनों हज़रात के बारे में यह आयते करीमा नाज़िल हुई: اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُوْنَ مَا اَنْفَقُوْا

مَنًّا وَّلَآ اَذًى لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ यानी जो लोग कि अपने माल को अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं, फिर देने के बाद न ऐहसान रखते हैं और न तक्लीफ देते हैं तो उन का अज्र व सवाब उन के रब के पास है और न उन पर कोई ख़ौफ तारी होगा और न वो ग़म्गीन होंगे। (पारा:3, रुकूअ़:4)

हज़रत सदरुल अफाज़िल मौलाना मुहम्मद नईमुद्दीन साहब मुरादाबादी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि ने भी अपनी तफ्सीर ख़ज़ाइनुल इरफान में तहरीर फरमाया कि आयते मुबारका हज़रत उस्माने ग़नी और हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा के हक़ में नाज़िल हुई।

एक बार सब मिल कर बुलंद आवाज़ से दुरूद शरीफ पढ़ें:

صلى الله على النبى الامى واله صلى الله عليه وسلم صلاة وسلاما عليك يارسول الله

*सल्लल्लाहु अ़लन् नबिय्यिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सलातव् व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।*

हज़रत सहल बिन सअ़द रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि एक रोज़ नबीए करीम सल्लल्लाहु तआ़ला व सल्लम, हज़रत अबू बकर सिद्दीक़, हज़रत उमर फारूक़े आज़म और हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम उहुद पहाड़ पर थे कि यका यक वह हिलने लगा तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला व सल्लम ने फरमाया: اُثْبُتْ اُحُدُ فَمَا عَلَيْكَ اِلَّا نَبِيٌّ اَوْ صِدِّيْقٌ اَوْ شَهِيْدَانِ यानी ऐ उहुद! तू ठहर जा, कि तेरे ऊपर सिर्फ एक नबी या सिद्दीक़ या दो शहीद हैं। (तफ्सीर मआ़लिमुत तंज़ील:6/216)

इस हदीस शरीफ से मालूम हुआ कि हुज़ूर सैय्यिदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला व सल्लम पहाड़ों पर भी अपना हुक्म नाफ़िज़ फरमाते थे और यह भी साबित हुआ कि ख़ुदाए तआ़ला ने आप को इल्मे ग़ैब अता फरमाया थे कि बरसों पहले हज़रत उमर फारूक़े आज़म और हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा के शहीद होने के

बारे में हुज़ूर ख़बर दे रहे हैं। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फाज़िल बरैलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फरमाते हैं:

*और कोई ग़ैब क्या तुम से निहां हो भला*
*जब न ख़ुदा ही छुपा तुम पे करोड़ों दुरूद*

और हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ख़ूब जानते थे कि नदी का बहता हुआ धारा रुक सकता है, दरख़्त अपनी जगह से हट सकता है बल्कि पहाड़ भी अपनी जगह से टल सकता है मगर अल्लाह के महबूब दानाए ख़िफ़ाया व ग़ुयूब जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला व सल्लम का फरमान नहीं टल सकता, इस लिये आप अपनी शहादत का इन्तेज़ार फरमा रहे थे, तो यह और उन के अलावा दूसरे लोग जो अपनी शहादत के मुन्तज़िर थे जैसे कि दुल्हा दुल्हन अपनी शादी की तारीख़ के मुन्तज़िर होते हैं, तो उन के हक़ में यह आयते करीमा नाज़िल हुई: فَمِنْهُمْ مَنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَمِنْهُمْ مَنْ يَّنْتَظِرُ यानी तो उन में से कोई वह है जो अपनी मिन्नत पूरी कर चुका (जैसे हज़रत हम्ज़ा व मुस्‌अब रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा कि यह लोग जिहाद पर साबित रहे, यहां तक कि जंगे उहद में शहीद हो गए) और उन में से कोई वह है जो अपनी शहादत का इन्तेज़ार कर रहा है (जैसे हज़रत उस्मान और हज़रत तलहा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा)।

और हज़रत अल्लामा इस्माईल हक्क़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि मदीना मुनव्वरा में एक मुनाफिक़ रहता था, उस का दरख़्त एक अंसारी पड़ोसी के मकान पर झुका हुआ था जिस का फल उन के मकान में गिरता था, अंसारी ने सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला व सल्लम से इसका ज़िक्र किया, उस वक़्त तक मुनाफिक़ का निफाक़ लोगों पर ज़ाहिर नहीं हआ था, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला व सल्लम ने उस से फरमाया कि तुम दरख़्त अंसारी के हाथ के बेच डालो, उस के बदले तुम्हें जन्नत का दरख़्त मिलेगा, मगर मुनाफिक़ ने अंसारी को दरख़्त देने से इनकार कर दिया, जब इस वाक़िआ की ख़बर हज़रत

उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को हुई कि मुनाफ़िक़ ने हुज़ूर के फ़रमान को मन्ज़ूर नहीं किया तो आप ने पूरा एक बाग़ देकर दरख़्त को उस से ख़रीद लिया और अंसारी को दे दिया, इस पर हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तारीफ़ और मुनाफ़िक़ की बुराई में यह आयते करीमा नाज़िल हुई: سَيَذَّكَّرُ مَنْ يَّخْشٰى وَيَتَجَنَّبُهَا الْاَشْقَى الَّذِىْ يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرٰى यानी अन्क़रीब नसीहत मानेगा जो डरता है और उस से वह बड़ा बद बख़्त दूर रहेगा जो सब से बड़ी आग में जायेगा।

(पारा:30,रुकूअ:12)

इस आयते मुबारका में مَنْ يَّخْشٰى से मुराद हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं और الْاَشْقَى से मुराद उस दरख़्त का मालिक मुनाफ़िक़ है। (तफ्सीर रूहुल बयान:10/408)

## हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और अहादीसे करीमा

हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के फ़ज़ाइल व मनाक़िब में बहुत सी हदीसें भी वारिद हैं। तिर्मिज़ी और इब्ने माजा में हज़रत मुर्रा बिन कअ़ब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है वह फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ज़मानए आइन्दा में होने वाले फ़ित्नों का ज़िक्र फ़रमा रहे थे कि इतने में एक साहब सर पर कपड़ा डाले हुए उधर से गुज़रे तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि यह शख़्स उस रोज़ हिदायत पर होगा। हज़रत मुर्रा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर से यह अल्फ़ाज़ सुन कर मैं उठा और उस शख़्स की तरफ़ गया तो देखा कि वह हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं। फिर मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की तरफ़ उन का रुख़ किया और पूछा क्या यह शख़्स उन फ़ित्नों में हिदायत पर होंगे? तो हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया कि हां यही।

और तिर्मिज़ी में हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से

रिवायत है, वह फरमाते हैं कि रसूल मक़्बूल सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने मुस्तक़्बिल में होने वाले फित्नों का ज़िक्र किया तो इरशाद फरमाया कि यह शख़्स उस फित्ने में ज़ुल्म से क़त्ल किया जाएगा, यह कहते हुए आप ने हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की तरफ इशारा फरमाया।

और बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत अबू मूसा अश्अ़री रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है वह फरमाते हैं कि मैं मदीना तैयिबा के एक बाग़ में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के हम्राह था कि एक साहब आए और उस बाग़ का दरवाज़ा खुलवाए तो नबीए करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: اِفْتَحْ لَهٗ وَبَشِّرْهُ بِالْجَنَّةِ यानी दरवाज़ा खोल दो और आने वाले शख़्स को जन्नत की बशारत दो, मैं ने दरवाज़ा खोला तो देखा वह हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु हैं, मैं ने उन को हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के फरमान के मुताबिक जन्नत की ख़ुशख़बरी दी। इस पर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने ख़ुदाए तआ़ला का शुक्र अदा किया और उस की हम्द व सना की। फिर एक साहब और आए और उन्हों ने दरवाज़ा खुलवाया, हुज़ूर ने उन के बारे में भी फरमाया: اِفْتَحْ لَهٗ وَبَشِّرْهُ بِالْجَنَّةِ यानी इनके लिये भी दरवाज़ा खोल दो और इन को भी जन्नत की बशारत दो, मैं ने दरवाज़ा खोला तो देखा कि वह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु हैं, मैं ने उन को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की ख़ुशख़बरी से मुत्तला किया, उन्हों ने ख़ुदाए अ़ज़्ज़ व जल्ल की हम्दो-सना की और उस का शुक्र अदा किया। फिर एक तीसरे साहब ने दरवाज़ा खुलवाया तो नबीए करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने मुझ से इरशाद फरमाया: اِفْتَحْ لَهٗ وَبَشِّرْهُ بِالْجَنَّةِ عَلٰى بَلْوٰى تُصِيْبُهٗ यानी आने वाले के लिये दरवाज़ा खोल दो और उन मुसीबतों पर जो इस शख़्स को पहुंचेंगी जन्नत की ख़ुशख़बरी दो। राविए हदीस हज़रत अबू मूसा अश्अ़री रज़ियल्लाहु

तआ़ला अ़न्हु फरमाते हैं कि मैं ने दरवाज़ा खोला तो देखा कि आने वाले शख़्स हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु हैं, मैं ने उन को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के इरशाद के मुताबिक़ ख़ुशख़बरी दी और हुज़ूर के फरमान से उनको आगाह किया, उन्हों ने ख़ुदाए तआ़ला की हम्द व सना की, उसका शुक्र अदा किया और फरमाया: اللہ المستعان यानी आने वाली मुसीबतों पर अल्लाह तआ़ला से मदद तलब की जाती है।

और मुस्लिम शरीफ में हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से रिवायत है वह फरमाती हैं कि एक रोज़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम अपने मकान में लेटे हुए थे और आप की रान[1] या पिंडली मुबारक से कपड़ा हटा हुआ था, इतने में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु आए और उन्हों ने हाज़िरी की इजाज़त चाही, हुज़ूर ने उन को बुला लिया और वह अन्दर आ गए मगर हुज़ूर उसी तरह लेटे रहे और गुफ्तगू फरमाते रहे। उसके बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु भी आ गए, उन्हों ने अन्दर आने की इजाज़त तलब की, हुज़ूर ने उन को भी इजाज़त दे दी और वह भी अन्दर आ गए लेकिन हुज़ूर फिर भी बदस्तूर उसी तरह लेटे रहे यानी रान या पिंडली से कपड़ा हटा रहा। फिर हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु आ गए और आप ने अन्दर आने की इजाज़त चाही तो आप उठ कर बैठ गए और कपड़ों को दुरुस्त कर लिया, उस के बाद हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को अंदर आने की इजाज़त मरहमत फरमाई।

रावियए हदीस हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा फरमाती हैं कि जब यह लोग चले गए तो मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला

---

1-शक रावी अस्त पस इस्तिदलाल नबूद हर कसे रा कि रफ्ता अस्त बआं कि फख़्ज़े औरत नेस्त ज़ेरा कि मोहतमल सलाहियते हुज्जते नदारद, व बाज़े तावील करदा अन्द कश्फ आं रा कि अज़ क़मीस बूद न मीज़ रौ गुफ्ता अन्द कि ज़ाहिर अज़ हाल शरीफ वय सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ईस्त। واللہ اعلم, (अश्अ़तुल लमआ़तः4/655)

अलैहि व सल्लम से दरियाफ्त फरमाया या रसूलल्लाह! क्या वजह है कि मेरे बाप हज़रत सिद्दीके अकबर आए तो आप बदस्तूर लेटे रहे, फिर हज़रत फारूके आज़म आए मगर आप बदस्तूर लेटे रहे और जुंबिश नहीं फरमाई लेकिन जब हज़रत उस्माने ग़नी आए तो आप उठकर बैठ गए और कपड़ों को दुरुस्त कर लिया। हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के इस सवाल के जवाब में सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमायाः اَلَا اَسْتَحْيِیْ مِنْ رَجُلٍ تَسْتَحْیِیْ مِنْہُ الْمَلَائِکَۃُ यानी क्या मैं उस शख़्स से हया न करूं जिस से फिरिश्ते भी हया करते हैं।

सुब्हानल्लाह! हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का दर्जा क्या ही बुलंद व बाला और अज़्मत वाला है कि फिरिश्ते आप से हया करते हैं यहां तक कि सैय्यिदुल अंबिया और नबिय्युल अंबिया जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम भी आप से हया फरमाते हैं।

तिर्मिज़ी शरीफ में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है वह फरमाते हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मक़ामे हुदैबिया में बैअ़ते रिज़्वान का हुक्म फरमाया उस वक़्त हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के क़ासिद की हैसियत से मक्का मुअज़्ज़मा गए हुए थे, लोगों ने हुज़ूर के हाथ पर बैअ़त की, जब सब लोग बैअ़त कर चुके तो रसूल मक्बूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि उस्मान खुदा और रसूले खुदा के काम से गए हुए हैं, फिर अपना एक हाथ दूसरे हाथ पर मारा यानी हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तरफ से खुद बैअ़त फरमाई, लिहाज़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का मुबारक हाथ हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के लिये उन हाथों से बेहतर है जिन्हों ने अपने हाथों से अपने लिये बैअ़त की।

हज़रत शैख़ मोहद्दिसे देहलवी बुख़ारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि व सल्लम अश्अ़तुल लमआ़त में इस हदीस के तहत फरमाते हैं कि सरकार अक्दास सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने अपने दस्ते मुबारक को हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु का हाथ क़रार दिया। यह वह फज़ीलत है जो हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के साथ ख़ास है यानी इस फज़ीलत से उनके सिवा और कोई दूसरा सहाबी कभी मुशर्रफ नहीं हुआ।

तिर्मिज़ी शरीफ और इब्ने माजा में हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा से रिवायत है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने एक रोज़ हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से फरमाया कि ऐ उस्मान! ख़ुदाए तआ़ला तुझ को एक क़मीस पहनाएगा यानी ख़िल्अ़ते ख़िलाफत से सरफराज़ फरमाएगा, फिर अगर लोग उस क़मीस के उतारने का तुझ से मुतालेबा करें तो उन की ख़्वाहिश पर उस क़मीस को मत उतारना यानी ख़िलाफत को मत छोड़ना। इसी लिये जिस रोज़ उन को शहीद किया गया उन्हों ने हज़रत अबू सहला रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से फरमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने मुझ को ख़िलाफत के बारे में वसियत फरमाई थी, इसी लिये मैं उस वसियत पर क़ाइम हूं और जो कुछ मुझ पर बीत रही है उस पर सब्र कर रहा हूं।

हाकिम ने हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से रिवायत की है कि हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने दो बार जन्नत ख़रीदी है, एक बार तो बिअ़्रे रोमा ख़रीद कर और दूसरी बार जैशे उस्रा के लिये सामान देकर। जैशे उस्रा के लिये जो सामान आप ने फराहम किया था उस का बयान पहले हो चुका है। और बिअ़्रे रोमा की ख़रीदारी का वाक़िआ यह है कि जब सरकार अक्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम मक्का मुअ़ज़्ज़मा से हिज्रत फरमा कर मदीना तैयिबा तशरीफ लाए तो उस ज़माने में वहां पर बिअ़्रे रोमा के अलावा

और किसी कुएं का पानी मीठा न था, यह कुआं वादिए अक़ीक़ के किनारे एक पुर-फ़िज़ा बाग़ में है जो मदीना तैयिबा से तक़रीबन चार किलो मीटर के फ़ासिले पर है, इस कुएं का मालिक यहूदी था जो उस का पानी फ़रोख़्त किया करता था और मुसलमानों को पानी की सख़्त तक्लीफ़ थी तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की तरग़ीब पर हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आधा कुआं बारह हज़ार दिरहम में ख़रीद कर मुसलमानों पर वक़्फ़ कर दिया और तय यह पाया कि एक रोज़ मुसलमान पानी भरेंगे और दूसरे दिन यहूदी, मगर जब यहूदी ने देखा कि मुसलमान एक रोज़ में दो रोज़ का पानी भर लेते हैं और मेरा पानी ख़ातिर ख़्वाह नहीं बिकता तो परेशान होकर बक़िया आधा भी हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हाथ आठ हज़ार दिरहम में बेच दिया। उस कुएं को आज कल बिअ्रे हज़रत उस्मान कहते हैं। رضی اللہ تعالی عنہ وارضاہ عنا وعن سائر المسلمین

*रज़ियल्लाहु तआला अन्हु व अर्ज़ाहु अन्ना व अन् साइरिल् मुस्लिमीन।*

हज़रत उस्मान बिन अब्दुल्लाह बिन मौहब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मिस्र का रहने वाला एक शख़्स हज के इरादे से बैतुल्लाह शरीफ़ आया, उस ने एक जगह कुछ लोगों को बैठे हुए देखा तो पूछा कि यह कौन लोग हैं? जवाब दिया गया कि यह लोग कुरैश हैं, उस ने पूछा कि इन लोगों का शैख़ कौन है? जवाब दिया गया कि इन लोगों के शैख़ हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा हैं। अब उस ने हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा की तरफ़ मुतवज्जह होकर कहा कि ऐ इब्ने उमर! मैं कुछ सवाल करना चाहता हूं आप उसका जवाब दें, क्या आप को मालूम है कि उस्मान उहद की जंग से भाग गए थे, हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने फ़रमाया कि हां ऐसा हुआ था, फिर उस शख़्स ने दरियाफ़्त किया क्या आप को मालूम है कि बद्र की लड़ाई से उस्मान ग़ाइब थे और मअ्रिकए बद्र में वह शरीक न हुए थे, हज़रत इब्ने उमर

रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने जवाब दिया कि हां वह बद्र के मअ्‌रिके में मौजूद न थे। फिर उस शख़्स ने पूछा क्या आप को मालूम है कि उस्मान बैअ़ते रिज़्वान के मौके़ पर भी ग़ाइब थे और उस में शरीक न हुए थे, हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने फरमाया कि हां वह बैअ़ते रिज़्वान के मौके़ पर मौजूद न थे और उस में शामिल न थे। हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से तीनों बातों की तस्दीक़ सुन कर उस शख़्स ने *अल्लाहु अक्बर* कहा। बज़ाहिर उस मिस्री शख़्स का सवाल था लेकिन हक़ीक़त में हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ज़ाते गरामी पर उस का ऐतराज़ था, हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने उस से फरमाया कि इधर आ, मैं तुझ से हक़ीक़ते हाल बयान करके तेरे शुब्हात दूर कर दूं। उहद के मअ्‌रिके से हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के भाग जाने के मुतअ़ल्लिक़ मैं तुझ से यह कहता हूं कि खुदाए ज़ुलजलाल ने उन की ग़लती को माफ फरमा दी जैसा कि कुरआन मजीद में इरशादे खुदावंदी है: إِنَّ الَّذِينَ تَوَلَّوْا مِنكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ إِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطَانُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوا وَلَقَدْ عَفَا اللَّهُ عَنْهُمْ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ यानी बेशक वह लोग जो तुम से फिर गए जिस दिन दोनों फौजें मिली थीं, उन के बाज़ आमाल के सबब उन्हें शैतान ही ने लग़ज़िश दी और बेशक अल्लाह ने उन्हों माफ फरमा दिया, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला हिल्म वाला है। (पारा:4 रुकूअ़:7)

और जंगे बद्र में हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का मौजूद न होना उस का वाक़िआ यह है कि हज़रत रुक़ैय्या रज़ियल्लाहु तआला अन्हा यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की साहिबज़ादी और हज़रत उस्माने ग़नी की बीवी उस ज़माने में बीमार थीं, हुज़ूर ने हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को उन की देख भाल के लिये मदीना तैयिबा में छोड़ दिया था और फरमाया कि उस्माने ग़नी को जंगे बद्र में शरीक होने वालों में से एक मुजाहिद का सवाब मिलेगा और माले ग़नीमत में से भी एक शख़्स का हिस्सा दिया

जाएगा। अब रहा मामला बैअ़ते रिज़वान से हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का ग़ाइब होना तो उसकी वजह यह है कि अगर मक्का मुअज़्ज़मा हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से ज़्यादा बा इज़्ज़त और हर दिल अज़ीज़ कोई और शख़्स होता तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम उसी को मक्का मोअज़्ज़मा भेजते मगर चूंकि हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से ज़्यादा हरदिल अज़ीज़ और बा इज़्ज़त मक्का शरीफ वालों की निगाह में कोई और शख़्स न था इस लिये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने उन्हीं को मक्का मोअज़्ज़मा रवाना फरमाया ताकि वह आप की तरफ से कुफ़्फ़ारे मक्का से बात-चीत करें, तो हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के हुक्म से मक्का मोअज़्ज़मा चले गए थे इस तरह उनकी ग़ैर मौजूदगी में बैअ़ते रिज़्वान का वाक़िआ़ पेश आया और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने बैअ़ते रिज़्वान के वक़्त अपने दाहिने हाथ को उठा कर फरमाया कि यह उस्मान का हाथ है और फिर उस हाथ को अपने दूसरे हाथ पर मार कर फरमाया कि यह उस्मान की बैअ़त है। उसके बाद हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा ने फरमाया कि अभी जो मैं ने तेरे सामने बयान किया है तू इस को ले जा कि यही तेरे सवालात के मुकम्मल जवाबात हैं। रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु। (बुख़ारी शरीफ)

## आप की ख़िलाफत

हज़रत अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह अपनी मशहूर किताब तारीख़ुल ख़ुलफा में तहरीर फरमाते हैं कि ज़ख़्मी होने के बाद हज़रत उमर फारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की तबीअ़त जब ज़्यादा नासाज़ हुई तो लोगों ने आप से अर्ज़ किया कि या अमीरल मोमिनीन आप हमें कुछ वसियतें फरमाइये और ख़िलाफत के

लिये किसी का इन्तिख़ाब फरमा दीजिये, तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने इरशाद फरमाया कि ख़िलाफत के लिये अलावा उन छेः सहाबा के जिन से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम राज़ी हौर खुश रह कर इस दुनिया से तशरीफ ले गए हैं मैं किसी और को मुस्तहिक़ नहीं समझता हूं। फिर आप ने हज़रत उस्मान, हज़रत अली, हज़रत तल्हा, हज़रत ज़ुबैर, हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ और हज़रत सअ़द बिन वक़्क़ास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम के नाम लिये और फरमाया कि मेरे लड़के अब्दुल्लाह मज्लिसे शूरा में उन के साथ रहेंगे लेकिन ख़िलाफत से उन्हें कोई सरोकार न होगा। अगर सअ़द बिन वक़्क़ास का इन्तेख़ाब हो जाए तो वह उस का हक़ रखते हैं, वरना उन छेः सहाबियों में से जिस को चाहें मुन्तख़ब कर लें और मैं ने सअ़द बिन वक़्क़ास को किसी आजिज़ी और ख़्यानत की वजह से मअ़ज़ूल नहीं किया था। फिर आप ने फरमाया कि मैं अपने बाद होने वाले ख़लीफा को वसियत करता हूं कि वह अल्लाह तआ़ला से डरता रहे और सब अंसार व मुहाजिरीन और सारी रिआ़या के साथ भलाई से पेश आता रहे।

जब हज़रत उमर फारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का विसाल हो गया और लोग उन की तज्हीज़ व तक्फीन से फारिग़ हो गए तो तीर रोज़ बाद ख़लीफा को मुन्तख़ब करने के लिये जमा हुए, हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने लोगों से फरमाया कि पहले तीन आदमी अपना हक़ तीन आदमियों को देकर दस्त बरदार हो जाएं, लोगों ने इस बात की ताईद की, तो हज़रत ज़ुबैर हज़रत अली को, हज़रत सअ़द बिन वक़्क़ास हज़रत अब्दुर रहमान को और हज़रत तल्हा हज़रत उस्मान को अपना हक़ देकर दस्त बरदार हो गए *रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम अजमईन।*

यह तीनों हज़रात राय मश्वरा करने के लिये एक तरफ चले गए, वहां हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने

फरमाया कि मैं अपने लिये ख़िलाफत पसंद नहीं करता, अब आप लोगों में से भी जो ख़िलाफत की ज़िम्मेदारी से दस्त बरदार होना चाहे वह बता दे, इस लिये कि जो बरी होगा हम ख़िलाफत उसी के सुपुर्द कर देंगे। और जो शख़्स ख़लीफा हो उस के लिये ज़रूरी है कि वह हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की उम्मत में सब से अफ्ज़ल हो और इस्लाहे उम्मत की बहुत ख़्वाहिश रखता हो। इस बात के जवाब में हज़रत उस्मान और हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा यानी दोनों हज़रात चुप रहे, तो हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने फरमाया कि अच्छा आप लोग इस इन्तिख़ाब का काम हमारे सुपुर्द कर दें, क़सम ख़ुदा की मैं आप लोगों में से बेहतर और अफ्ज़ल शख़्स का इन्तिख़ाब करूंगा, दोनों हज़रात ने फरमाया कि हमें मन्ज़ूर है, हम इन्तिख़ाबे ख़लीफा का काम आप के सुपुर्द करते हैं।

अब इस के बाद हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को लेकर एक तरफ गए और उनसे कहा कि ऐ अली! आप इस्लाम क़बूल करने में साबिक़ीन अव्वलीन में से हैं और आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के क़रीबी अज़ीज़ हैं, लिहाज़ा अगर आप को अगर मैं ख़लीफा मुक़र्रर कर दूं तो आप क़बूल फरमा लें और अगर मैं किसी दूसरे को आप पर ख़लीफा मुक़र्रर कर दूं तो उस की इताअ़त करें। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने फरमाया कि मुझे मनज़ूर है।

इस के बाद हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को लेकर एक तरफ गए और उनसे भी तन्हाई में उसी क़िस्म की गुफ्तगू की तो उन्हों ने भी दोनों बातों को तस्लीम कर लिया, जब इन दोनों हज़रात से हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने इस क़िस्म का अहद व पैमान ले लिया तो उस के आप ने हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के हाथ पर बैअ़त कर ली और उन के बाद

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने भी बैअत कर ली।

तारीख़ुल ख़ुलफ़ा में इब्ने असाकिर के हवाले से है कि हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बजाए हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को इस लिये ख़लीफ़ा मुन्तख़ब किया कि जो भी साइबुर राय तन्हाई में उन से मिलता वह यही मश्वरा देता कि ख़िलाफ़त हज़रत उस्मान ही को मिलनी चाहिये, वह उस के लिये सब से ज़्यादा मुस्तहिक़ हैं। चुनांचे एक रिवायत में यूं आया है कि हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हम्दो-सलात के बाद हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फ़रमाया ऐ अली! मैं ने सब लोगों की राय मालूम कर ली है, ख़िलाफ़त के बारे में सब की राय हज़रत उस्मान के लिये है रज़ियल्लाहु तआला अन्हु यह कह कर आप ने हज़रत उस्मान का हाथ पकड़ा और कहा कि मैं सुन्नते ख़ुदा, सुन्नते रसूल और दोनों ख़ुलफ़ा की सुन्नत पर आप से बैअत करता हूं। इस तरह सब से पहले हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से बैअत की, फिर तमाम मुहाजिरीन व अंसार ने उन से बैअत की।

और मुस्नद इमाम अहमद में हज़रत अबू वाइल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से इस तरह मरवी है, उन्हों ने फ़रमाया कि मैं ने हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से दरियाफ़्त किया कि आप ने हज़रत अली को छोड़ कर हज़रत उस्मान से क्यों बैअत की? उन्हों ने फ़रमाया कि इस में मेरा क़ुसूर नहीं है, मैं ने पहले हज़रत अली ही से कहा कि मैं किताबुल्लाह, सुन्नते रसूलुल्लाह और हज़रत अबू बकर व हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा की सुन्नत पर आप से बैअत करता हूं, तो उन्होंने फ़रमाया कि मैं इस की इस्तिताअत नहीं रखता। उस के बाद मैं ने हज़रत उस्मान से इसी क़िस्म की गुफ़्तगू की तो उन्हों ने क़बूल कर लिया। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा:24)

गुनियतुत तालिबीन जो हज़रत ग़ौस पाक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तस्नीफ मशहूर है उस में भी यही रिवायत मज़्कूर है।

तो इस रिवायत की बुनियाद पर यह कहा जाएगा कि ग़ालिबन हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उस वक़्त ख़िलाफत से इस लिये इनकार कर दिया कि उन पर सहाबा का रुजहान ज़ाहिर हो चुका था कि वह मेरे बजाए हज़रत उस्मान को ख़लीफा मुक़र्रर करना चाहते हैं तो आप ने सहाबा की मरज़ी के ख़िलाफ ज़बर्दस्ती उन का ख़लीफा बनना पसंद न फरमाया। रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम।

और एक रिवायत में यह भी है कि हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि मैं ने तन्हाई में हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से दरियाफ्त किया कि अगर मैं आप से बैअ़त न करूं तो मुझे आप किस से बैअ़त करने का मश्वरा देंगे? उन्हों ने फरमाया कि अली से। रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फिर मैं ने इसी तरह तन्हाई में हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से कहा कि अगर मैं आप की बैअ़त न करूं तो आप मुझे किस की बैअ़त का मश्वरा देंगे? उन्हों ने फरमाया उस्मान से, रज़ियल्लाहु तआला अन्हु। फिर मैं ने हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को बुला कर इसी तरह तख़्लिया में उन से दरियाफ्त किया कि अगर मैं आप की बैअ़त न करूं तो आप मुझे किस से बैअ़त करने की राय देंगे? उन्हों ने फरमाया कि हज़रत अली या हज़रत उस्मान से। रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि फिर मैं ने हज़रत सअ़द रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को बुलाया और उन से कहा कि मेरा और आप का इरादा ख़लीफतुल मुस्लिमीन बनने का तो है नहीं तो फिर आप मुझे किस से बैअ़त करने का मश्वरा देते हैं? उन्हों ने फरमाया कि हज़रत उस्मान से। रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फिर हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने तमाम मुहाजिरीन व अंसार से मश्वरा किया तो अक्सर लोगों की राय

हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बारे में पाई। इसलिये उन्हों ने हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से बैअ़त की।

एक बार हम सब मिल कर बुलंद आवाज़ से सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और उन की आल व अस्हाब पर दुरूद व सलाम की डालियां निछावर करें।

☆☆☆

# एक ऐतराज़ और उस का जवाब

राफ़ज़ी कहते हैं कि सब से पहले ख़िलाफत के हक़दार हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु थे मगर लोगों ने उन के हक़ को ग़सब कर लिया, पहले (हज़रत) अबू बकर फिर (हज़रत) हज़रत उमर और फिर (हज़रत) उस्मान को ख़लीफा बनाया (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम) इस तरह मुसलसल हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की हक़ तल्फी की गई।

फिर राफ़ज़ी इसी पर इक्तिफा नहीं करते बल्कि हज़राते खुलफाए सलासा और दीगर सहाबए किराम को जिन्हों ने उन को ख़लीफा मुन्तख़ब किया उन सब से बुग़ज़ व अ़दावत रखते हैं और उन को बुरा भला कहते हैं।

इस ऐतराज़ का जवाब यह है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से पहले जो लोग ख़लीफा हुए और जिन्हों ने उन को ख़लीफा बनाया यह वह लोग जिन की खुदाए तआला ने मदह फरमाई है और उन की तारीफ व तौसीफ में कुरआन मजीद की बहुत सी आयाते करीमा नाज़िल हुई हैं। मसलन पाराः 27, रुकूअ़:17 में हैः لَا يَسْتَوِي مِنْكُمْ مَنْ أَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقَاتَلَ أُولَٰئِكَ أَعْظَمُ دَرَجَةً مِنَ الَّذِينَ أَنْفَقُوا مِنْ بَعْدُ وَقَاتَلُوا وَكُلًّا وَعَدَ اللَّهُ الْحُسْنَىٰ यानी तुम में बराबर नहीं वह जिन्हों ने फत्हे मक्का से पहले ख़र्च और जिहाद किया, वह मर्तबा में उन से बड़े हैं, जिन्हों ने फत्हे मक्का के बाद ख़र्च और जिहाद किया, और उन सब से अल्लाह जन्नत का वादा फरमा चुका।

और पारा:11, रुकूअ़:2 में है: وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ यानी और सब में अगले पहले मुहाजिरीन और अंसार और जो भलाई के साथ उन की इत्तिबाअ़ किये अल्लाह उन से राज़ी हुआ और वह अल्लाह से राज़ी हुए।

और पारा:28, रुकूअ़:4 में हैं: لِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا وَّيَنْصُرُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ यानी हिज्रत करने वाले फकीरों के लिये जो अपने घरों और मालों से निकाले गए, अल्लाह का फ़ज़्ल और उस की रज़ा चाहते हैं और अल्लाह व रसूल की मदद करते हैं, वही लोग सच्चे हैं।

फिर इसी पारा:28, रुकूअ़:4 में हैं: وَالَّذِيْنَ تَبَوَّؤُ الدَّارَ وَالْاِيْمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ اِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ فِيْ صُدُوْرِهِمْ حَاجَةً مِّمَّا اُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ यानी और जिन लोगों ने पहले से इस (मदीना मुनव्वरा) शहर में और ईमान में घर बना लिया, वह दोस्त रखते हैं उन लोगों को जो उन की तरफ हिज्रत कर गए। और वह लोग अपने दिलों में कोई हाजत नहीं पाते, उस चीज़ की जो (मुहाजिरीन और माले ग़नीमत) दिये गए हैं और (अंसार) अपनी जानों पर उन को तरजीह देते हैं अगर्चे उन्हें शदीद मोहताजी हो और जो अपने नफ्स के लालच से बचाया गया तो वही कामयाब है।

और पारा:4, रुकूअ़:8 में हैं: لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ यानी बेशक अल्लाह का मुसलमानों पर बड़ा ऐहसान हुआ कि उन में उन्हीं में से एक रसूल भेजा जो उन पर ख़ुदाए तआ़ला की आयतें पढ़ता है और उन्हें पाक करता है।

हज़रात! इस किस्म की और भी बहुत सी आयाते करीमा हैं जिन में ख़ुदाए अ़ज़्ज़ व जल्ल ने अपने प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के अस्हाब की वाज़ेह लफ्ज़ों में तारीफ व तौसीफ फरमाई है मगर हम बर वक़्त इन्हीं चन्द आयात पर इक्तिफा करते हैं।

अब आप लोग ग़ौर कीजिये! पहली आयते करीमा जो हम ने

तिलावत की उस में फरमाया गया है: وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى यानी फत्हे मक्का से पहले और उस के बाद अल्लाह की राह में ख़र्च करने और लड़ाई करने वाले हर एक सक अल्लाह तआ़ला ने भलाई का वादा फरमाया है। और दूसरी आयते मुबारका में है: رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ यानी अल्लाह तआ़ला उन से राज़ी हुआ और वह अल्लाह तआ़ला से राज़ी हैं।

और तीसरी आयते करीमा में फरमाया गया: اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ यानी वही लोग सच्चे हैं।

और चौथी आयते मुबारका में है: فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ यानी वह लोग फलाह याफ्ता और कामयाब हैं।

और पांचवीं आयते करीमा में फरमाया गया: وَيُزَكِّيْهِمْ नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम उनका तज़्किया फरमाते हैं, यानी ना पसंदीदा ख़स्लतों और बुरी बातों से उन को पाक व साफ करते हैं और सालेह बनाते हैं।

अल्लाह तआ़ला ने इस आयते मुबारका में ख़बर दी कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम मुज़क्की हैं तो इस बात पर ईमान लाना ज़रूरी है कि सहाबए किराम के कुलूब का उन्हों ने तज़्किया फरमाया इस लिये कि अगर उनके कुलूब का तज़्किया नहीं फरमाया तो वह मुज़क्की नहीं हो सकते। और जब हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने उन के कुलूब का तज़्किया फरमाया तो मानना पड़ेगा कि वह नेकोकार और सालेह हैं। उन के अख़्लाक़ बुलंद हैं और औसाफ़े हमीदा वाले हैं, उन की नियतें सहीह हैं और उन का अ़मल हमारे लिये मश्अ़ले राह है।

लिहाज़ा सहाबए किराम कि जिन से अल्लाह तआ़ला ने भलाई का वादा फरमाया, अल्लाह तआ़ला उन से राज़ी और वह अल्लाह तआ़ला से राज़ी। और ऐसे लोग जो फलाह याफ्ता और सच्चे हैं और जिन के कुलूब मज़क्का व मुजल्ला हैं उनके बारे में यह फासिद ऐतिक़ाद रखना कि उन्हों ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के हक़ को ग़सब

कर लिया, इन्तिहाई बद नसीबी और बद बख़्ती है बल्कि कुरआन शरीफ को झुठलाना है। *अल्-इयाज़ु बिल्लाहि तआला।*

बादशाह जिस जमाअत से राज़ी हो और उन की तारीफ व तौसीफ बयान करता हो उस जमाअत से बुग़्ज़ व अदावत रखना और उन की बुराई करना बादशाह की नाराज़गी का सबब होगा। तो खुदाए जुल जलाल जो सहाबा से राज़ी है और अपनी किताब कुरआने मजीद में जगह जगह उन की तारीफ व तौसीफ बयान फरमाता है उस मुबारक जमाअत से बुग़्ज़ व अदावत रखना और उन की बुराई करना खुदाए तआला की सख़्त नाराज़गी का सबब है।

हज़रत अल्लामा अबू ज़ुरआ राज़ी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो तबए ताबिईन में से हैं उन्हों ने इस सिलसिले में निहायत ही उम्दा बात फरमाई है, फरमाते हैं: إِذَا رَأَيْتَ الرَّجُلَ أَنَّهُ يَنْتَقِصُ أَحَدًا مِّنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللّٰهِ صلى الله عليه وسلم فَاعْلَمْ أَنَّهُ زِنْدِيقٌ, यानी जब तुम किसी शख़्स को देखो कि वह रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के अस्हाब में से किसी की तन्क़ीस करता है, उन में नक़्स निकालता है तो जान लो कि वह ज़िन्दीक़ और बे दीन है। इस लिये कि कुरआन और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का हर फरमान हमें सहाबा ही के वास्ते से मिला है तो उन की ज़ात में बुराई साबित करना और उन का ग़लत ठहराना कुरआन व हदीस को बातिल क़रार देना है, *अल्-इयाज़ु बिल्लाहि तआला।* (अल-इसाबा:1/11)

एक बार आप सब लोग मिल कर सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की बारगाह में दुरूद शरीफ की डालियां पेश करें।

صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ وَآلِهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَاةً وَّسَلَامًا عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللّٰهِ

*सल्लल्लाहु अलन् नबिय्यिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सलातुवं व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।*

## आप का पहला खुत्बा

तारीखुल खुलफा में इब्ने सअद के हवाले से है कि ख़लीफा मुन्तख़ब होने के बाद जब हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु खुत्बा देने के लिये खड़े हुए तो आप कुछ बयान न कर सके। सिर्फ इतना फरमाया कि ऐ लोगो! पहली मर्तबा घोड़े पर सवार होना बड़ा मुश्किल होता है, आज के बाद बहुत से दिन आयेंगे अगर मैं ज़िंदा रहा तो इन्शाअल्लाह आप लोगों के सामने ज़रूर खुत्बा दूंगा। हमारे ख़ानदान में लोग ख़तीब नहीं हुए हैं। खुदाए तआला से उम्मीद है कि वह अन्क़रीब हमें खुत्बा देने पर कुद्रत अता फरमाएगा।

अअ्ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फाज़िल बरैलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि: मिम्बर के तीन ज़ीने थे, अलावा ऊपर के तख़्ते के कि जिस पर बैठते हैं। हुज़ूर सैयिदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम दर्जए बाला पर खुत्बा फरमाया करते। सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने दूसरे पर पढ़ा। फारूक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने तीसरे पर। जब ज़माना जुन्नूरैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का आया, फिर अव्वल पर खुत्बा फरमाया, सबब पूछा गया, फरमाया अगर दूसरे पर पढ़ता तो लोग गुमान करते कि में सिद्दीक़ का हमसर हूं और तीसरे पर तो वहम होता कि फारूक़ के बराबर हूं। लिहाज़ा वहां पढ़ा जहां यह ऐहतमाल मुतसव्वर ही नहीं। (फतवा रज़्वियह:3/700)

हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के जुम्ले क़ाबिले ग़ौर हैं, वह फरमाते हैं कि अगर दूसरे पर पढ़ता तो लोग गुमान करते कि मैं सिद्दीक़ का हमसर हूं। सवाल यह पैदा होता है कि अगर लोग उन को हज़रत सिद्दीक़ का हमसर गुमान करते तो क्या उस में कोई ख़राबी थी? हां बेशक ख़राबी थी। इस लिये कि हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को यह हरगिज़ मन्ज़ूर नहीं था कि लोग उन को सिद्दीक़ का हमसर गुमान करें। इसी तरह उन को यह भी गवारा

नहीं था कि लोग उन के बारे में वहम करें कि वह फारूके आज़म के बराबर हैं। इसी लिये फरमाया कि अगर तीसरे पर पढ़ता तो वहम होता कि फारूक़ के बराबर हूं।

मालूम हुआ कि हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ व हज़रत उमर फारूक़ से बराबरी का दावा करना तो बहुत दूर की बात है उन को इतना भी गवारा नहीं था कि उन के बारे में कोई यह वहम व गुमान करे कि वह हज़राते शेख़ैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा के हमसर व बराबर हैं। इसी लिये वह सब से ऊपर वाले दर्जे पर खुत्बा पढ़े।

फिर हज़रत उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का यह जुम्ला भी क़ाबिले तवज्जोह है कि मैं ने वहां खुत्बा पढ़ा जहां यह (यानी हमसरी व बरारबी का) ऐहतिमाल मुतसव्वर ही नहीं। मतलब यह हुआ कि सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम अज्मईन में से कोई भी यह तसव्वुर कर ही नहीं सकता था कि हज़रत उस्माने ग़नी हुज़ूर से बराबरी व हमसरी का दावा कर सकते हैं।

साबित हुआ कि अगर कोई आक़ाए दो आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम से बराबरी व हमसरी का दावा करे तो वह गुस्ताख़ व बेअदब है और सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम अज्मईन के रास्ते से अलग है। और हदीस शरीफ مَا اَنَا عَلَيْهِ وَاَصْحَابِى के मुताबिक़ उन्हीं के रास्ते पर चलने वाले जन्नती हैं, बाक़ी सब जहन्नमी।

## आप के ज़मानए ख़िलाफत की फुतूहात

हज़रत उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के ज़मानए ख़िलाफत में भी इस्लामी फुतूहात का दाइरा बराबर वसीअ् होता रहा। चुनांचे आप के ज़मानए ख़िलाफत के पहले साल यानी 24 हिजरी में ''रय'' फतह हुआ। रय ख़ुरासान का एक शहर है जो आज कल ईरान का दारुस सल्तनत है और उसे तेहरान कहते हैं। 26 हिजरी में शहर

साबूर फतह हुआ।

हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो हज़रत उमर फारूक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दौरे ख़िलाफत में मुल्के शाम के गवर्नर थे उन्हों ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से कई बार यह दरख़्वास्त पेश की थी कि बहरी बेड़ा के ज़रिये क़ब्रस पर हम्ला की इजाज़त दी जाए मगर आप ने इजाज़त न दी लेकिन जब हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का इस्रार बहुत ज़्यादा हुआ तो आप ने हज़रत अम्र बिन अल-आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को लिखा कि आप समन्दर और बादबानी जहाज़ों की कैफियत मुफस्सल तरीक़े से लिख कर मुझे रवाना करें। उन्हों ने लिखा कि मैं ने बादबानी जहाज़ों को देखा है जो एक बड़ी मख़्लूक़ है और उस पर छोटी मख़्लूक़ सवार होती है, जब वह जहाज़ ठहर जाता है तो लोगों के दिल फटने लगते हैं और जब वह चलता है तो अक़्लमंद लोग भी ख़ौफ ज़दा हो जाते हैं, उस में अच्छाइयां कम और ख़राबियां ज़्यादा हैं। उस में सफर करने वालों की हैसियत कीड़े मकोड़ों जैसी है, अगर यह सवारी किसी तरफ झुक जाए तो उमूमन लोग डूब जाते हैं और अगर बच जाते हैं तो इस हाल में साहिल तक पहुंचते हैं कि कांपते रहते हैं।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने जब हज़रत अम्र बिन अल-आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का ख़त इस मज़्मून का पढ़ा तो हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को लिखा कि: والله لا احمل فيه مسلما ابدا यानी क़सम है खुदाए तआला की मैं ऐसी सवारी पर मुसलमानों को कभी सवार नहीं कर सकता। (तारीखुल खुलफा:106)

इस तरह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दौरे ख़िलाफत में क़ब्रस पर मुसलमानों का हम्ला नहीं हो सका। लेकिन जब हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का ज़मानए ख़िलाफत आया तो उन के हुक्म से 27 हिजरी में जहाज़ के ज़रिये हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने लश्कर ले जा कर क़ब्रस पर हम्ला किया,

उस को फतह कर लिया और जिज़या लेने की शर्त मन्ज़ूर कर ली।

जिस लश्कर ने बहरी रास्ते से जाकर क़ब्रस पर हम्ला किया था उस लश्कर में मशहूर व मारूफ सहाबी हज़रत उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपनी अहलिया मोहतरमा हज़रत उम्मे हराम बिन्ते मिल्हान अंसारिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के साथ मौजूद थे, आप की बीवी जानवर से गिर कर इन्तेक़ाल कर गईं तो उन को वहीं क़ब्रस में दफन कर दिया गया। उस लश्कर के मुतअल्लिक़ अल्लाह के महबूब दानाए ख़िफा व गुयूब जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने पेशीन गोई फरमाई थी कि उबादा बिन सामित की बीवी भी उस लश्कर में होगी और क़ब्रस ही में उस की क़ब्र बनेगी। चुनांचे यह पेशीन गोई हर्फ बहर्फ सहीह हुई। और क्यों न हो कि नदी का बहता हुआ धारा रुक सकता है, दरख़्त अपनी जगह से हट सकता है बल्कि बड़ा से बड़ा पहाड़ भी अपनी जगह से टल सकता है मगर अल्लाह के महबूब प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का फरमान नहीं टल सकता।

صلی اللہ علی النبی الامی والہ صلی اللہ علیہ وسلم صلاۃ وسلاما علیک یارسول اللہ

*सल्लल्लाहु अलन् नबिय्यिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि*

*व सल्लम सलातुवं व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।*

और इसी 27 हिजरी में जुर्जान और दारे बजर्रर फतह हुए। और इसी साल जब हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन सअद बिन अबी सरह को मिस्र का गवर्नर बनाया तो उन्हों ने मिस्र पहुंच कर हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हुक्म से अफ्रीक़ा पर हम्ला किया और उस को फतह करके सारी सल्तनतों को हुकूमते इस्लामिया में शामिल कर लिया। इस जंग में इस क़द्र माले ग़नीमत मुसलमानों को हासिल हुआ कि हर सिपाही को एक एक हज़ार दीनार और बाज़ रिवायात के मुताबिक़ तीन तीन हज़ार दीनार मिले। दीनार साढ़े चार माशा सोने का एक सिक्का होता है। इस

फ़त्हे अज़ीम के बाद इसी 27 हिजरी में स्पेन यानी हस्पानिया भी फतह हो गया और 29 हिजरी में हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के हुक्म से उस्तुख़र, क़सा और इन के अलावा बाज़ दूसरे ममालिक भी फतह हुए।

और 30 हिजरी में जौर, ख़ुरासान और नेशापूर सुलह के ज़रिये फतह हुए। इसी तरह मुल्के ईरान के दूसरे शहर तूस, सरख़्स, मर्व और बैहक़ भी सुलह के फतह हुए। इस क़द्र फुतूहात से जब बेशुमार माले ग़नीमत हर तरफ से दारुल ख़िलाफत में पहुंचने लगा तो हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को इन मालों की हिफाज़त के लिये कई महफूज़ ख़ज़ाने बनवाने पड़े और लोगों में इस फराख़ दिली से माल तक़्सीम फरमाया कि एक-एक शख़्स को एक-एक लाख बदरे मिले जबकि एक बदरा दस हज़ार दिरहम का होता है। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा:106)

## आप की करामतें

हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से कई करामतों को ज़ुहूर हुआ जिन में चन्द करामतें आप हज़रात के सामने पेश की जाती हैं।

अल्लामा ताजुद्दीन सुबकी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह ने अपनी किताब "तबक़ात" में तहरीर फरमाया है कि एक शख़्स ने रास्ता चलते हुए एक अज्नबी औरत को घूर-घूर कर ग़लत निगाहों से देखा, उस के बाद यह शख़्स अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुआ, उस शख़्स को देख कर हज़रत अमीरुल मोमिनीन ने निहायत ही पुर जलाल लहजे में फरमाया कि तुम लोग ऐसी हालत में मेरे सामने आते हो कि तुम्हारी आंखों में ज़िना के असरात होते हैं, शख़्से मज़्कूर ने जल भुन कर कहा कि क्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के बाद आप पर वह़ी उतरने लगी है? आप को यह कैसे मालूम हो गया कि मेरी आंखों में ज़िना के असरात हैं?

अमीरुल मोमिनीन ने इरशाद फरमाया कि मेरी ऊपर वह़ी तो

नाज़िल नहीं होती है लेकिन मैं ने जो कुछ कहा है यह बिल्कुल ही क़ौले हक़ और सच्ची बात है और ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस ने मुझे एक ऐसी फ़रासत (नूरानी बसीरत) अता फरमाई है जिस से मैं लोगों के दिलों के हालात व ख़्यालात को मालूम कर लेता हूं।

(करामाते सहाबा बहवाला हुज्जतुल्लाहि आलमीन:2/862)

और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा रावी हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मस्जिदे नबवी शरीफ के मिम्बरे अक़्दस पर ख़ुत्बा पढ़ रहे थे कि बिल्कुल ही अचानक एक बद नसीब और ख़बीसुन नफ़्स इंसान जिस का नाम "जहजाह ग़िफ़ारी" था खड़ा हो गया और आप के दस्ते मुबारक असा छीन कर उस को तोड़ डाला, आप पे अपने हिल्मो-हया की वजह से उस से कोई मवाख़ज़ा नहीं फ़रमाया लेकिन ख़ुदाए तआला की क़ह्हारी व जब्बारी ने इस बे अदबी और गुस्ताख़ी पर उस मर्दूद को यह सज़ा दी कि उस के हाथ में कैंसर का मर्ज़ हो गया और उस का हाथ गल सड़ कर गिर पड़ा और वह यह सज़ा पा कर एक साल के अन्दर ही मर गया।

(करामाते सहाबा बहवाला हुज्जतुल्लाहि अल-आलमीन:2/862)

और हज़रत अबू क़िलाबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का बयान है कि मैं मुल्के शाम की सर ज़मीन में था, मैं ने एक शख़्स को बार-बार यह सदा लगाते हुए सुना, हाए अफ्सोस! मेरे लिये जहन्नम है, मैं उठ का उस के पास गया तो यह देख कर हैरान रह गया कि उस शख़्स के दोनों हाथ और पांव कटे हुए हैं और वह दोनों आंखों से अंधा है, और अपने चेहरे के बल ज़मीन पर औन्धा पड़ा हुआ बार-बार लगातार यही कह रहा है कि "हाए अफ्सोस मेरे लिये जहन्नम है" यह मन्ज़र देख कर मुझ से रहा न गया और मैं ने उस से पूछा कि ऐ शख़्स तेरा क्या हाल है? और क्यों और किस बिना पर तुझे अपने जहन्नमी होने का यक़ीन है? यह सुन कर उस ने यह कहा कि ऐ शख़्स! मेरा हाल न पूछ, मैं उन बद नसीब लोगों में से हूं जो अमीरुल मोमिनीन हज़रत

उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को क़त्ल करने के लिये उन के मकान में घुस पड़े थे, मैं जब तल्वार लेकर उन के क़रीब पहुंचा तो उन की बीवी साहिबा ने मुझे डांट कर शोर मचाना शुरू किया तो मैं ने उन की बीवी साहिबा को एक थप्पड़ मार दिया, यह देख कर अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने दुआ़ मांगी कि "अल्लाह तआ़ला तेरे दोनों हाथों और पांव को काट डाले और तेरी दोनों आंखों को अंधी कर दे और तुझ को जहन्नम में झोंक दे ऐ शख़्स! मैं अमीरुल मोमिनीन के पुर जलाल चेहरे को दख कर और उन की इस क़ाहिराना दुआ़ को सुन कर कांप उठा और मेरे बदन का एक-एक रोंगटा खड़ा हो गया और मैं ख़ौफ व दहशत से कांपते हुए वहां से भाग निकला।

अमीरुल मोमिनीन की चार दुआ़ओं में से तीन दुआ़ओं की ज़द में तो आ चुका हूं, तुम देख रहे हो कि मेरे दोनों पांव कट चुके हैं, दोनों आंखें अंधी हो चुकीं, अब सिर्फ चौथी दुआ़ यानी मेरा जहन्नम में दाख़िल होना बाक़ी रह गया है और मुझे यक़ीन है कि यह मामला भी यक़ीनन होकर रहेगा। चुनांच अब मैं उसी का इन्तिज़ार कर रहा हूं और अपने जुर्म को बार-बार याद करके नादिम व शर्मसार हो रहा हूं और अपने जहन्नमी होने का इक़रार करता हूं।

(करामाते सहाबा बहवाला इज़ालतुल ख़िफा मक़्दसः2, पेजः227)

मज़्कूरा बाला तीनों वाक़िआत अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की अज़ीम करामतें हैं जो उन की जलालते शान और बारगाहे ख़ुदावन्दी में उन की मक़्बूलियत और विलायत की वाज़ेह निशानियां हैं।

## आप की शहादत

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु का दौरे ख़िलाफत कुल 12 साल रहा, शुरू के छः बरसों में लोगों को आप से कोई शिकायत नहीं हुई, बल्कि इन बरसों में वह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु

से भी ज़्यादा लोगों में मक़्बूल व महबूब रहे, इस लिये कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मिज़ाज़ कुछ सख़्ती थी और हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मिज़ाज में सख़्ती का वजूद न था, आप बहुत बा मुरव्वत थे, लेकिन आख़िरी छः बरसों में बाज़ गवर्नरों के सबब लोगों को आप से शिकायत हो गई, आप ने अब्दुल्लाह बिन अबी सरह को मिस्र का गवर्नर मुक़र्रर किया, अभी अब्दुल्लाह के तक़र्रुर को सिर्फ दो साल गुज़रे थे कि मिस्र के लोगों को उन से शिकायतें पैदा हो गईं, उन्हों ने हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से दादरसी चाही, आप ने बज़रिये तहरीर अब्दुल्लाह को सख़्त तंबीह फरमाई और ताकीद की कि ख़बरदार! आइन्दा तुम्हारी शिकायत मेरे पास न पहुंचे, मगर अब्दुल्लाह ने आप के ख़त की कुछ परवाह न की बल्कि मिस्र के जो लोग दारुल ख़िलाफत मदीना शरीफ में शिकायत लेकर आए थे उन को क़त्ल कर दिया, इस से मिस्र की हालत और ज़्यादा ख़राब हो गई, यहां तक कि वहां से 700 अफराद मदीना शरीफ आए, हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से अब्दुल्लाह की ज़्यादतियां बयान कीं और दूसरे सहाबए किराम से भी शिकायतें कीं, तो बाज़ सहाबा ने हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से सख़्त कलामी की और उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने आप के पास कहला भेजा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के सहाबा आप के पास आए हैं और अब्दुल्लाह बिन अबी सरह जिस पर क़त्ल का इल्ज़ाम है उस की माज़ूली और बर तरफी का आप से मुतालेबा करते हैं, मगर आप उन की बातों पर तवज्जोह नहीं करते, आप को चाहिये कि ऐसे शख़्स को मुनासिब सज़ा दें।

और हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तशरीफ लाए, उन्हों ने भी हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से कहा कि यंह लोगा क़त्ले नाहक़ के सबब मिस्र के गवर्नर की माज़ूली चाहते हैं, आप इस मामले में इंसाफ कीजिये, अब्दुल्लाह बिन अबी सरह की जगह पर किसी दूसरे को गवर्नर मुक़र्रर कर दीजिये, आप ने मिस्र के लोगों से

फरमाया कि: إِخْتَارُوْا رَجُلًا أُوَلِّيْهِ عَلَيْكُمْ مَكَانَهُ यानी आप लोग खुद ही किसी को गवर्नर चुन लीजिये, मैं अब्दुल्लाह बिन अबी सरह को माज़ूल करके आप लोगों के चुने हुए गवर्नर को मुक़र्रर कर दूंगा, उन लोगों ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साहिबज़ादे यानी मुहम्मद बिन अबू बकर को मुन्तख़ब किया रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा। अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उन लोगों के इन्तेख़बा को मन्ज़ूर फरमा लिया और हज़रत मुहम्मद बिन अबू बकर के लिये परवाना तक़र्रुरी अब्दुल्लाह बिन अबी सरह के बारे में माज़ूली की तहरीर लिख दी। मुहम्मद बिन अबू बकर मिस्र से आए हुए 700 अफराद और कुछ अंसार व मुहाजिरीन के साथ मिस्र के लिये रवाना हुए।

मदीना मुनव्वरा से अभी यह क़ाफिला तीसरी ही मंज़िल पर था, उन को एक हबशी गुलाम सांडनी पर बैठा हुआ निहायत तेज़ी के साथ मिस्र की तरफ जाता हुआ नज़र आया, उस के रंग ढंग और उस की तेज़ रफ्तारी से मालूम होता था कि यह गुलाम या तो अपने मालिक से भागा हुआ है, या तो किसी का क़ासिद है, क़ाफिला वालों ने उसे बढ़ कर पकड़ लिया और पूछा कि तू कौन है? तू कहीं से भागा है या तुझे किसी की तलाश है? उस ने कहा में अमीरुल मोमिनीन उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का गुलाम हूं, फिर कहा कि मैं मरवान का गुलाम हूं। एक शख़्स ने उसे पहचान लिया और बताया कि यह अमीरुल मोमिनीन ही का गुलाम है। हज़रत मुहम्मद बिन अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने उस से दरियाफ्त फरमाया कि तुम्हें कहा भेजा गया? उस ने कहा मुझे मिस्र के गवर्नर अब्दुल्लाह बिन अबी सरह के पास भेजा गया है, उस की तलाशी ली गई तो उस के खुश्क मश्कीज़ा से एक ख़त निकला जो अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तरफ से आमिले मिस्र अब्दुल्लाह बिन अबी सरह के नाम था। मुहम्मद बिन अबू बकर ने सब लोगों को जमा किया और उन के सामने ख़त खोला जिस में लिखा हुआ था कि

यानी إِذَا أَتَاكَ مُحَمَّدٌ وَفُلَانٌ وَفُلَانٌ فَاحْتَلْ فِيْ قَتْلِهِمْ وَأَبْطِلْ كِتَابَهُ وَقِرَّ عَلَى عَمَلِكَ حَتَّى يَأْتِيَكَ رَأْيِيْ जब मुहम्मद बिन अबू बकर और फुलां फुलां तुम्हारे पास पहुंचें तो उन को किसी हीले से क़त्ल कर दो और ख़त को कलअ़दम क़रार दो और जब तक कि मेरा दूसरा हुक्म नामा न पहुंचे अपने उहदा पर बरक़रार रहो।

इस ख़त को पढ़ कर क़ाफ़िले वाले सब लोग दंग रह गए। मुहम्मद बिन अबू बकर ने इस ख़त पर साथ के चन्द ज़िम्मेदार लोगों की मोहरें लगवा दीं और उसे एक शख़्स की तहवील में दे दिया और सब लोग वहीं से मदीना मुनव्वरा वापस हो गए, जब वहां पहुंचे तो हज़रत अली, हज़रत तल्हा, हज़रत ज़ुबैर, हज़रत सअ़द और दीगर सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम अज्मईन को इकट्ठा करके उन के सामने ख़त खोल कर सब को पढ़वाया और उस हबशी गुलाम का सारा वाक़िआ़ सुनाया, इस पर सब लोग बहुत सख़्त बरहम हुए और तमाम सहाबए किराम ग़ैज़ व ग़ज़ब में भरे हुए अपने घरों को वापस हो गए। मगर मुहम्मद बिन अबू बकर अपने क़बीला बनू तमीम और मिस्रियों के साथ हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के घर को घेर लिया।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने जब यह सूरते हाल देखी तो हज़रत तल्हा, हज़रत ज़ुबैर, हज़रत सअ़द, हज़रत अम्मार और दीगर अकाबिर सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम अज्मईन के साथ अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के मकान पर तशरीफ़ ले गए, उन के साथ वह ख़त, गुलाम और ऊंटनी भी थी, जो रास्ते में पकड़ी गई थी। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से दरियाफ़्त फ़रमाया क्या यह गुलाम आप का है? उन्हों ने फ़रमाया हां यह गुलाम मेरा है। फिर उन्हों ने पूछा क्या यह ऊंटनी भी आप ही की है? उन्हों ने जवाब में फ़रमाया हां, यह ऊंटनी भी हमारी है। फिर हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने वह ख़त पेश फ़रमाया और पूछा क्या यह ख़त आप ने लिखा है? उन्हों ने फ़रमाया नहीं और ख़ुदाए तआ़ला की

क़सम खा के कहा कि न मैं ने इस ख़त को लिखा है, न किसी को लिखने का हुक्म दिया है और न मुझे इस के बारे में कोई इल्म है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु नें फरमाया बड़े तअ़ज्जुब की बात है कि ऊंटनी भी आप की, और ख़त पर मोहर भी आप की, जिसे आप का ही गुलाम यहां से लेकर जा रहा था, मगर आप को कोई इल्म नहीं। फिर हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने अल्लाह तआ़ला की क़सम खा के फरमाया कि न मैं ने इस ख़त को लिखा है, न किसी से लिखवाया है, न मैं ने गुलाम को यह ख़त देकर मिस्र की तरफ रवाना किया है।

जब हज़रत उस्मानें ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने क़सम खा कर अपनी बराअत ज़ाहिर फरमाई तो हर शख़्स को यक़ीन हो गया कि इनका दामन इस जुर्म से पाक है। लोगों ने तहरीर को बग़ौर देखा, यह ख़्याल क़ाइम किया कि तहरीर मरवान की है और सारी शरारत उसी की ज़ात से है। मरवान उस वक़्त अमीरुल मोमिनीन के मकान में मौजूद था, लोगों ने उन से कहा कि आप उसे हमारे हवाले कर दीजिये, आप ने इनकार कर दिया, इस लिये कि वह लोग ग़ैज़ व ग़ज़ब में भरे हुए थे। मरवान को सज़ा देते और उसे क़त्ल कर देते। हालांकि तहरीर से यक़ीने कामिल नहीं होता इस लिये कि: الخط يشبه الخط यानी एक तहरीर दूसरी तहरीर के मुशाबह होती है, तो उन्हें मरवान की तहरीर होने का सिर्फ शुब्हा था और शुब्हा का फाइदा हमेशा मुल्ज़िम को पहुंचता है, इस लिये हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने मरवान के उन के सपुर्द नहीं किया। अलावा इस के सपुर्द करने में बहुत बड़े फित्ने का अंदेशा भी था।

बहर हाल जब हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने मरवान को लोगों के हवाले करने से इनकार कर दिया तो सहाबए किराम उन के यहां से उठ कर चले गए और आपस में यह कह रहे थे कि हज़रत उस्मान कभी झूठी क़सम नहीं खा सकते, मगर कुछ लोग

यह भी कह रहे थे कि वह शक से बरी नहीं हो सकते, जब तक मरवान को हमारे सपुर्द न कर दें और हम उस से तहक़ीक़ न कर लें और यह मालूम न हो जाए कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के सहाबियों को क़त्ल करने का हुक्म क्यों दिया गया? अगर यह बात साबित हो गई कि ख़त उन्हों ने ही लिखा है तो हम उन्हें ख़िलाफ़त से अलग कर देंगे और अगर यह बात पाए सुबूत को पहुंची कि हज़रत उस्मान की तरफ से मरवान ने खत लिखा है तो हम उसे सज़ा देंगे।

## मुहासरा में सख़्ती

जब अकाबिरे सहाबा अपने-अपने घर चले गए तो बलवाइयों ने मुहासरा में और सख़्ती पैदा कर दी, यहां तक कि उन पर पानी को बन्द कर दिया। हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने ऊपर से झांक कर मजमा से दरियाफ़्त फरमाया क्या तुम में अली हैं? लोगों ने कहा नहीं, फिर आप ने पूछा क्या तुम में सअ़द मौजूद हैं, जवाब दिया गया कि सअ़द भी नहीं मौजूद हैं, यह जवाब सुन आप थोड़ी देर ख़ामोश रहे, उस के बाद फरमाया कोई शख़्स अली को यह ख़बर पहुंचा दे कि वह हमारे लिये पानी मुहैया कर दें, जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को यह ख़बर पहुंच गई तो उन्हों ने आप के लिये पानी से भरे हुए तीन मश्कीज़े भिजवा दिये, मगर वह पानी बमुश्किले तमाम आप तक पहुंचा कि उस के सबब बनी हाशिम और बनी उमैया के कई गुलाम ज़ख़्मी हो गए। इस वाक़िआ़ से हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को इस बात का अंदाज़ा हुआ कि लोग हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को क़त्ल करना चाहते हैं तो आप ने अपने दोनों साहिब ज़ादगान यानी हज़रत इमामे हसन और इमामे हुसैन से फरमाया कि तुम दोनों अपनी-अपनी तल्वारें लेकर हज़रत उस्माने ग़नी के दरवाज़े पर जाओ, पहरे दारों की तरह होशियार खड़े रहो और ख़बरदार किसी भी बलवाई को अन्दर हरगिज़ न जाने

दे। इसी तरह हज़रत तल्हा, हज़रत ज़ुबैर और दीगर अकाबिरे सहाबा ने अपने-अपने साहिब ज़ादगान को अमीरुल मोमिनीन के दरवाज़ा पर भेज दिया जो बराबर निहायत मुस्तइद्दी के साथ उन की हिफाज़त करते रहे।

(तारीखुल खुलफा)

हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब मोहद्दिसे देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि जब बलवाइयों ने मुहासरा सख़्त कर दिया तो अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा चन्द मुहाजिरीन के साथ हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दौलत ख़ाना पर तशरीफ लाए और उन से कहने लगे कि यह जिस क़द्र बलवाई आप पर चढ़ आए हैं, यह वही हैं जो हमारी तलवारों से मुसलमान हुए हैं और अब भी डर के मारे कपड़े ही में पाख़ाना किये देते हैं, यह सब शेख़ियां और ऊंची-ऊंची उड़ानें इस सबब हैं कि कलिमा पढ़ते हैं और आप कलिमा की हुर्मत का पास व लिहाज़ करते हैं, अगर आप हुक्म दें तो हम इन को इन की हक़ीक़त मालूम करा दें और इनकी भूली हुई बात फिर इन को याद दिला दें। हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया, ख़ुदा की क़सम! ऐसी बात न कहो, सिर्फ मेरी जान की ख़ातिर इस्लाम में हरगिज़ फूट न पैदा करो।

फिर आप के सारे गुलाम जो एक फौज के बराबर थे, अस्बाब व हथियार से तैयार होकर आप के सामने आए और बड़ी बेचैनी व बेक़रारी के साथ आप से कहने लगे, हम वही तो हैं जिन की तलवारों की ताब ख़ुरासान से अफ़्रीक़ा तक कोई न ला सका, अगर आप इजाज़त फरमाएं तो हम मग़रूरों को उन के काम का तमाशा दिखा दें। गुफ़्तगू और बात चीत से उन की दुरुस्तगी नहीं हो सकती। वह लोग जानते हैं कि कलिमा की हुर्मत के सबब हमें कोई नहीं छेड़ेगा इसी लिये वह राहे रास्त पर नहीं आते और आप की नेज़ दीगर सहाबए किराम की बातों को ज़र्रा बराबर अहमियत नहीं देते। लिहाज़ा आप हमें इन से लड़ने की इजाज़त दीजिये।

हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने गुलामों से फरमाया कि अगर तुम लोग मेरी राज़ा और खुश्नूदी चाहते हो और मेरी नेअ़्मत का हक़ अदा करना चाहते हो तो हथियार खोल दो और अपनी-अपनी जगहों पर जा कर बैठो और सुन लो कि तुम लोगों में से जो गुलाम भी हथियार खोल दे उस को मैं ने आज़ाद कर दिया। وَاللّٰهِ لَاَنْ اُقْتَلَ قَبْلَ الدِّمَاءِ اَحَبُّ اِلَیَّ مِنْ اَنْ اُقْتَلَ بَعْدَ الدِّمَاءِ यानी अल्लाह की क़सम, ख़ून्रेज़ी से पहले मेरा क़त्ल हो जाना मुझे ज़्यादा महबूब है इस से कि मैं ख़ून्रेज़ी के बाद क़त्ल किया जाऊं। मतलब यह है कि मेरी शहादत लिख दी गई है और अल्लाह के रसूल प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने इस की बशारत मुझ को दे दी है। अगर तुम लोगों ने बलवाइयों से जंग भी की तो भी मैं ज़रूर क़त्ल कर दिया जाउंगा। लिहाज़ा इनसे लड़ने में कोई फाइदा नहीं है। (तोहफए इस्ना अशरिया)

## बल्वाइयों का आप को शहीद कर देना

मुहम्मद बिन अबू बकर ने जब देखा कि दरवाज़े पर ऐसा सख़्त पहेरा है कि अन्दर पहुंचना बहुत मुश्किल है तो उन्हों ने हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु पर तीर चलाना शुरू किया, जिस में से एक तीर हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को लग गया, आप ज़ख़्मी हो गए, एक तीर मरवान को भी लगा। मुहम्मद बिन तल्हा भी ज़ख़्मी हो गए। और एक तीर से हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के गुलाम क़म्बर भी ज़ख़्मी हो गए। मुहम्मद बिन अबू बकर ने जब इन लोगों को ज़ख़्मी देखा तो उन को ख़ौफ लाहिक़ हुआ कि बनी हाशिम अगर हज़रत हसन और दूसरे लोगों को ज़ख़्मी देख लेंगे तो वह बिगड़ जायेंगे इस तरह एक नई मुसीबत पैदा हो जाएगी। लिहाज़ा उन्हों ने दो आदमियों के हाथ पकड़ कर उनसे कहा कि अगर बनी हाशिम इस वक़्त आ गए और उन्हों ने हज़रत हसन को ज़ख़्मी हालत में देख लिया तो हम से उलझ पड़ेंगे और हमारा सारा मन्सबूा ख़ाक में मिल

जाएगा। लिहाज़ा हमारे साथ चलो, हम पड़ोस के मकान में पहुंच कर (हज़रत) उस्मान के घर में कूद पड़ेंगे और उन्हें क़त्ल कर देंगे। इस गुफ्तगू के बाद मुहम्मद बिन अबू बकर अपने दो साथियों के हमराह एक अंसारी के मकान में घुस गए और वहां से छत फांद कर हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मकान में पहुंच गए, इन लोगों के पहुंचने की दूसरे लोगों को ख़बर न हुई इस लिये कि जो लोग घर पर मौजूद थे वह छत पर थे, नीचे अमीरुल मोमिनीन के पास सिर्फ उन की अहलिया हज़रत नाइला रज़ियल्लाहु तआला अन्हा बैठी हुई थीं, सब से पहले मुहम्मद बिन अबू बकर ने हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास पहुंच कर उन की दाढ़ी पकड़ ली तो अमीरुल मोमिनीन ने उन से फरमाया अगर तुम्हारे बाप हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तुझे मेरे साथ ऐसी गुस्ताख़ी करते हुए देखते तो वह क्या कहते, इस बात को सुन कर मुहम्मद बिन अबू बकर ने उन की दाढ़ी छोड़ दी लेकिन उसी दरमियान में उन के दो साथी आ गए जो अमीरुल मोमिनीन पर झपट पड़े और उन को निहायत बेदर्दी के साथ शहीद कर दिया। انا للہ وانا الیہ راجعون *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।*

जब हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर हम्ला हुआ और दुश्मन उन को शहीद कर रहे थे, उस वक़्त आप की अहलिया मोहतरमा हज़रत नाइला रज़ियल्लाहु तआला अन्हा बहुत चीख़ीं, चिल्लाईं, लेकिन बल्वाइयों ने चूंकि बड़ा शोरो-ग़ोग़ा कर रखा था इसी लिये आप की चीख़ व पुकार को किसी ने नहीं सुना। आप की शहादत के बाद वह कोठे पर गईं और लोगों को बताया कि अमीरुल मोमिनीन शहीद कर दिये गए। लोगों ने नीचे उतर कर देखा तो हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का पूरा जिस्म ख़ून आलूद था और उन की रूह परवाज़ कर चुकी थी।

बाज़ रिवायतों में है कि शहादत के वक़्त हज़रत उस्माने ग़नी

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कुरआन मजीद की तिलावत फरमा रहे थे जब तल्वार लगी तो आयते करीमाः فَسَيَكْفِيكَهُمُ اللّٰهُ पर चन्द खून के कत्रे पड़े और आप की बीवी साहिबा हज़रत नाइला रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने तलवार के वार को जब अपने हाथों से रोका तो उन की उंगलियां कट गई।

## हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बरहमी

जब हज़रत अली, हज़रत तल्हा, हज़रत ज़ुबैर, हज़रत सअ़द और दीगर सहाबा व अहले मदीना रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अज्मईन को आप की शहादत की खबर मिली तो सब के होश उड़ गए, आप के मकान पर आए, आप को शहीद देख कर सब ने *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन* पढ़ा और हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को इस सूरते हाल से इतना गुस्सा पैदा हुआ कि हज़रत इमाम हसन को एक तमांचा और हज़रत इमाम हुसैन ने सीने पर एक घूंसा मारा और फरमाया किः كَيْفَ قُتِلَ اَمِيْرُالْمُؤْمِنِيْنَ وَاَنْتُمْ عَلَى الْبَابِ यानी जबकि तुम दोनों दरवाज़ा पर मौजूद थे तो अमीरुल मोमिनीन कैसे शहीद कर दिये गए। फिर आप ने हज़रत तल्हा के साहिब ज़ादे मुहम्मद और हज़रत ज़ुबैर के साहिब ज़ाद अब्दुल्लाह को भी सख़्त सुस्त और बुरा-भला कहा।

जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को मालूम हुआ कि क़ातिल दरवाज़े से नहीं दाख़िल हुए थे बल्कि पड़ोस के मकान से कूद कर आए थे तो आप ने हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की अहलिया मोहतरमा से दरियाफ्त फरमाया कि अमीरुल मोमिनीन को किस ने शहीद किया? उन्हों ने कहा कि मैं उन लोगों को तो नहीं जानती जिन्हों ने अमीरुल मोमिनीन को शहीद किया अल्बत्ता उन के साथ मुहम्मद बिन अबू बकर थे जिन्हों ने अमीरुल मोमिनीन की दाढ़ी पकड़ी थी, हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मुहम्मद बिन अबू बकर को बुला कर क़त्ल के बारे में उन से दरियाफ्त फ़रमाया तो उन्हों

ने कहा हज़रत नाइला सच कहती हैं, बेशक मैं घर के अन्दर ज़रूर दाख़िल हुआ था और क़त्ल का इरादा भी किया था लेकिन जब उन्हों ने मेरे बाप हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु का तज़्किरा किया तो मैं उन को छोड़ कर हट गया, मैं अपने फ़ेअ़्ल पर नादिम व शर्मिन्दा हूं और अल्लाह तआला से तौबा व इस्तिग़फार करता हूं। खुदा की क़सम मैं ने उन को क़त्ल नहीं किया है। इब्ने असाकिर ने कनाना वग़ैरा से रिवायत किया है कि हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु को जिस ने शहीद किया वह मिस्र का रहने वाला था, उस की आंखें नीली थीं, उस का नाम "हिमार" था।

(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा)

बाज़ मोअर्रिख़ीन ने लिखा है कि आप के क़ातिल का नाम 'अस्वद' था। बहुत मुम्किन है कि मुहम्मद बिन अबू बकर के साथ दो बलवाई जो आप के मकान में कूदे थे उस में से एक का नाम 'हिमार' और दूसरे का नाम 'अस्वद' रहा हो। والله تعالی اعلم

हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु 35 हिजरी माहे ज़िल-हिज्जा के अय्यामे तशरीक़ में शहीद हुए जबकि आप की 82 साल की थी। आप के जनाज़े की नमाज़ हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु ने पढ़ाई और हशे कौकब के मक़ाम पर जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़्न किये गए।

*दुर्रे मन्सूर कुरआं की सत्क भी*
*ज़ौज दो नूरे इफ़्फ़त पे लाखों सलाम*
*यानी उस्मान साहिबे क़मीसे हुदा*
*हुल्ला पोशे शहादत पे लाखों सलाम*

وصلی اللہ تعالی علی النبی الکریم سیدنا محمد وعلی الہ واصحابہ اجمعین۔

*व सल्लल्लाहु तआला अ़लन् नबिय्यिल् करीम सैय्यिदिना मुहम्मदिंव् व अ़ला आलिही व अस्हाबिही अज्मईन*

☆☆☆

# अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली मुरतज़ा

## कर्रमल्लाहु तआ़ला वज्हहुल् करीम

الحمدللّٰه رب العالمين والصلوة والسلام على سيدالمرسلين وعلى اله واصحابه وازواجه وذرياته واهل بيته اجمعين اما بعد، فقد قال اللّٰه تعالى فى القرآن المجيد والفرقان الحميد اعوذ باللّٰه من الشيطن الرجيم بسم اللّٰه الرحمن الرحيم۔ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ تَرٰهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا (پ:۲٦،ع:۱۲)صَدَقَ اللّٰه مولينا العظيم وصدق رسوله النبى الكريم الامين۔ عليه وعلىٰ اله افضل الصلوات واكمل التسليم۔

एक बार हम सब मिल कर सारी काइनात के आक़ा व मौला जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के दरबारे गुहर बार में बुलंद आवाज़ से झूम-झूम कर दुरूद शरीफ का नज़्राना और हदिया पेश करें।

صلى اللّٰه على النبى الامى واله صلى اللّٰه عليه وسلم صلاة وسلاما عليك يارسول اللّٰه

*सल्लल्लाहु अ़लन् नबिय्यिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सलातुवं व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।*

**हज़रात!** दुनिया में बेशुमार इंसान पैदा हुए जिन में से अक्सर ऐसे हुए कि उन में कोई कमाल व ख़ूबी नहीं और बाज़ लोग ऐसे हुए जो सिर्फ चन्द ख़ूबियां रखते थे मगर हज़रत अली मुरतज़ा कर्रमल्लाहु तआ़ला वज्हहुल करीम की वह ज़ाते गरामी है जो बहुत से कमाल और ख़ूबियों की जामेअ़ है कि आप शेरे खुदा भी हैं और दामादे मुस्तफा भी, हैदरे कर्रार भी और साहिबे ज़ुल फिक़ार भी। हज़रत फातिमा ज़हरा के शौहरे नामदार भी और हसनैन करीमैन के वालिदे बुज़ुर्गवार भी। साहिबे सख़ावत भी और साहिबे शुजाअ़त भी। इबादत व रियाज़त वाले भी और फसाहत व बलाग़त वाले भी। इल्म वाले भी और हिल्म वाले भी। फातिहे ख़ैबर भी और मैदाने ख़िताबत के शहसवार भी। ग़रज़े कि

आप बहुत से कमाल व ख़ूबियों के जामेअ् हैं और हर एक में मुम्ताज़ व यगानए रोज़गार हैं। इसी लिये दुनिया आप को मज़हरुल अजाइब वल-ग़राइब से याद करती है और क़ियामत तक इसी तरह याद करती रहेगी।

*मुरतज़ा शेरे हक़ अश्जउल अश्जईन*
*बाबे फ़ज़्लो-विलायत पे लाखों सलाम*
*शेरे शमशीरे ज़न् शाहे ख़ैबर शिकन*
*परतवे दस्ते कुद्रत पे लाखों सलाम*

## नाम व नसब

आप का नामे नामी "अली बिन अबी तालिब" और कुन्नियत "अबुल हसन व अबू तुराब" है। आप सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के चचा अबू तालिब के साहिब ज़ादे हैं यानी हुज़ूर के चचा ज़ाद भाई हैं। आप की वालिदा मोहतरमा का इस्मे गरामी फातिमा बिन्ते असद बिन हाशिम है। और यह पहली हाशमी ख़ातून हैं जिन्हों ने इस्लाम कबूल किया और हिज्रत फरमाई।

(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा:113)

आप का सिलसिलए नसब इस तरह हैः अली बिन अबू तालिब बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम बिन अब्दे मनाफ। आप 30 आम्मुल फील में पैदा हुए और ऐलाने नुबुव्वत से पहले ही मौलाए कुल जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की परवरिश में आए कि जब कुरैश कहत में मुब्तला हुए थे तो हुज़ूर ने अबू तालिब पर अयाल का बोझ हल्का करने के लिये हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल करीम को ले लिया था इस तरह हुज़ूर के साये में आप ने परवरिश पाई और उन्हीं की गोद में होश संभाला, आंख खुलते ही हुज़ूर का जमाले जहां आरा देखा, उन्हीं की बातें सुनीं और उन्हीं की आदतें सीखीं, इस लिये बुतों की नजासत से आप का दामन कभी आलूदा न हुआ। यानी आप ने कभी बुत परस्ती न की

और इसी लिये कर्रमल्लाहु तआ़ला वज्हहुल करीम आप का लक़ब हुआ। (तन्ज़ीहुल मकानतुल हैदरिया वग़ैरा)

## आप का क़बूले इस्लाम

हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआ़ला वज्हहुल करीम नौ उम्र लोगों में सब से पहले इस्लाम से मुशर्रफ हुए। तारीखुल ख़ुलफा में है कि जब आप ईमान लाए उस वक़्त आप की उम्रे मुबारक दस साल थी बल्कि बाज़ लोगों के क़ौल के मुताबिक़ नौ साल और बाज़ कहते हैं कि आठ साल और कुछ लोग इस से भी कम बताते हैं। और अअ़्ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह तन्ज़ीहुल मकानतुल हैदरिया में तहरीर फरमाते हैं कि बवक़्त इस्लाम आप की उम्र आठ दस साल थी।

आप के इस्लाम क़बूल करने की तफ्सील मुहम्मद बिन इस्हाक़ ने इस तरह बयान किया है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम को और हज़रत ख़दीजतुल कुबरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा को रात में नमाज़ पढ़ते हुए देखा, जब यह लोग नमाज़ से फारिग़ हो गए तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम से पूछा कि आप लोग यह क्या कर रहे थे? हुज़ूर ने फरमाया कि यह अल्लाह तआ़ला का ऐसा दीन है कि जिस को उस ने अपने लिये मुन्तख़ब किया है और उसी की तब्लीग़ व इशाअ़त के लिये अपने रसूल को भेजा है लिहाज़ा मैं तुमको भी ऐसे माबूद की तरफ बुलाता हूं जो अकेला है उस का कोई शरीक नहीं। और मैं तुम को उसी की इबादत का हुक्म देता हूं। हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआ़ला वज्हहुल करीम ने कहा कि जब तक मैं अपने बाप अबू तालिब से दरियाफ्त न कर लूं इस के बारे में कोई फैसला नहीं कर सकता। चूंकि उस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम को राज़ फाश होना मनज़ूर न था इस लिये आप ने फरमाया ऐ अली! अगर तुम इस्लाम नहीं लाते हो तो अभी इस मामले

को पोशीदा रखो किसी पर ज़ाहिर न करो।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु अगर्चे उस वक़्त रात में ईमान नहीं लाए मगर अल्लाह तआ़ला ने आप के क़ल्ब में ईमान को रासिख़ कर दिया था, दूसरे रोज़ सुबह होते ही हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आप की पेश की हुई सारी बातों को क़बूल कर लिया और इस्लाम ले आए।

## आप की हिज्रत

सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने जब ख़ुदाए तआ़ला के हुक्म के मुताबिक़ मक्का मुअ़ज़्ज़मा से मदीना तैयिबा की हिज्रत का इरादा फरमाया तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को बुला कर फरमाया कि मुझे ख़ुदाए तआ़ला की तरफ से हिज्रत का हुक्म हो चुका है लिहाज़ा मैं आज मदीना रवाना हो जाउंगा तुम मेरे बिस्तर पर मेरी सब्ज़ रंग की चादर ओढ़ कर सो रहो, तुम्हें कोई तक्लीफ न होगी, कुरैश की सारी अमानतें जो मेरे पास रखी हुई हैं उनके मालिकों को देकर तुम भी मदीना चले आना।

यह मौक़ा बड़ा ही ख़ौफनाक और निहायत ख़तरे का था। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को मालूम था कि कुफ्फारे कुरैश सोने की हालत में हुज़ूर के क़त्ल का इरादा कर चुके हैं, इसी लिये ख़ुदाए तआ़ला ने आप को अपने बिस्तर पर सोने से मना फरमा दिया है। आज हुज़ूर का बिस्तर क़त्ल गाह है लेकिन अल्लाह के महबूब दानाए ख़िफाया व ग़ुयूब जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहिं व सल्लम के इस फरमान से कि "तुम्हें कोई तक्लीफ न होगी, कुरैश की अमानतें देकर तुम भी मदीने चले आना" हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को पूरा यक़ीन था कि दुश्मन मुझे कोई तक्लीफ नहीं पहुंचा सकेंगे, मैं ज़िंदा रहूंगा और मदीना ज़रूर पहुंचूंगा। लिहाज़ा सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम का बिस्तर जो बज़ाहिर आज कांटों का बिछौना था वह हज़रत अली रज़ियल्लाहु

तआला अन्हु के लिये फूलों की सेज बन गया, इस लिये कि उन का अक़ीदा था कि सूरज पूरब के बजाए पच्छिम से निकल सकता है मगर हुज़ूर के फरमान के ख़िलाफ नहीं हो सकता है।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि मैं रात भर आराम से सोया, सुबह उठ कर लोगों की अमानतें उन के मालिकों को सौंपना शुरू किया और किसी से नहीं छुपा। इसी तरह मक्का में तीन दिन रहा फिर अमानतों के अदा करने के बाद मैं भी मदीना की तरफ चल पड़ा। रास्ते में भी किसी ने मुझ से कोई तआरुज़ न किया यहां तक कि मैं क़ुबा में पहुंचा हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के मकान में तशरीफ फरमा थे, मैं भी वहीं ठहर गया।

एक बार फिर हम और आप सब मिल कर मक्का के सरकार मदीना के ताजदार दोनों आलम के मुख़्तार जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की बारगाहे बेकस पनाह में बुलंद आवाज़ से दुरूद शरीफ की डालियां पेश करें।

صلی اللہ علی النبی الامی والہ صلی اللہ علیہ وسلم صلاۃ وسلاما علیک یارسول اللہ

*सल्लल्लाहु अलन् नबिय्यिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सलातुवं व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।*

## उख़ुव्वते रसूल

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बहुत सी ख़ुसूसियात में से एक ख़ुसूसियत यह भी है कि आप सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के दामाद और चचाज़ाद भाई होने के साथ "अक़्दे मुवाख़ात" में भी आप के भाई हैं जैसा कि तिर्मिज़ी शरीफ में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने जब मदीना तैयिबा में उख़ुव्वत यानी भाई चारा क़ाइम किया कि दो-दो सहाबा को भाई-भाई बनाया तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रोते हुए

बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! आप ने सारे सहाबा के दरमियान उखुव्वत क़ाइम की। एक सहाबी को दूसरे सहाबी का भाई बनाया मगर मुझ को किसी का भाई न बनाया, मैं यूं ही रह गया, तो सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने फरमायाः اَنْتَ اَخِیْ فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةِ यानी तुम दुनिया व आख़िरत दोनों में मेरे भाई हो। (मिश्कात शरीफ़:564)

## आप की शुजाअ़त

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की शुजाअ़त और बहादुरी शोहरए आफाक़ (मशहूरे ज़माना) है, अरब व अजम में आप की कुव्वते बाज़ू के सिक्के बैठे हुए हैं। आप के रुअ़ब व दबदबे से आज भी बड़े-बड़े पहलवानों के दिल कांप जाते हैं। जंगे तबूक के मौक़े पर सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने आप को मदीना तैयिबा पर अपना नाइब मुक़र्रर फरमा दिया था इस लिये उस में हाज़िर न हो सके बाक़ी तमाम ग़ज़वात व जिहाद में शरीक होकर बड़ी जांबाज़ी के साथ कुफ्फार का मुक़ाबला किया और बड़े-बड़े बहादुरों को अपनी तल्वार से मौत के घाट उतार दिया।

जंगे बद्र में जब हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने अस्वद बिन अल-असद मख़्ज़ूमी को काट कर जहन्नम में पहुंचाया तो उसके बाद काफिरों के लश्कर का सरदार उत्बा बिन रबीआ़ अपने भाई शैबा बिन रबीआ़ और अपने बेटे वलीद बिन उत्बा को साथ लेकर मैदान में निकला और चिल्ला कर कहा कि ऐ मुहम्मद! (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम) अशराफे कुरैश में से हमारे जोड़ के आदमी भेजिये। हुज़ूर ने यह सुन कर फरमाया ऐ बनी हाशिम! उठो और हक़ की हिमायत में लड़ो जिस के साथ अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे नबी को भेजा है। हुज़ूर के इस फरमान को सुन कर हज़रत हम्ज़ा, हज़रत अली और हज़रत उबैदा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम दुश्मन की तरफ बढ़े, लश्कर का सरदार उत्बा, हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के मुक़ाबिल

हुआ और ज़िल्लत के साथ मारा गया। वलीद जिसे अपनी बहादुरी पर बड़ा नाज़ था वह हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मुक़ाबले के लिये मस्त हाथी की तरह झूमता हुआ आगे बढ़ा और डींगें मारता हुआ आप पर हम्ला किया मगर शेरे ख़ुदा अली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने थोड़ी ही देर में उसे मार गिराया और ज़ुलफिक़ारे हैदरी ने उस के घमंड को ख़ाक व ख़ून में मिला दिया। इस के बाद आप ने देखा कि उत्बा के भाई शैबा ने हज़रत उबैदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को ज़ख़्मी कर दिया है तो आप ने झपट कर उस पर हम्ला किया और उसे भी जहन्नम में पहुंचा दिया।

और जंगे उहुद में जबकि मुसलमान आगे और पीछे से कुफ्फार के बीच में आ गए जिस के सबब बहुत से लोग शहीद हुए तो उस वक़्त सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व सल्लम भी काफिरों के घेरे में आ गए और उन्हों ने ऐलान कर दिया कि ऐ मुसलमानो! तुम्हारे नबी क़त्ल कर दिये गए, इस ऐलान को सुन कर मुसलमान बहुत परेशान हो गए यहां तक कि इधर उधर तितर बितर हो गए बल्कि उन में से बहुत से लोग भाग भी गए। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि जब काफिरों ने मुसलमानों को आगे पीछे से घेर लिया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व सल्लम मेरी निगाह से ओझल हो गए तो पहले मैं ने हुज़ूर को ज़िन्दों में तलाश किया मगर नहीं पाया फिर शहीदों में तलाश किया वहां भी नहीं पाया तो मैं ने अपने दिल में कहा कि ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता कि हुज़ूर मैदाने जंग से भाग जाएं, लिहाज़ा अल्लाह तआला ने अपने रसूले पाक को आसमान पर उठा लिया। इस लिये अब बेहतर यही है कि मैं भी तल्वार लेकर काफिरों में घुस जाऊं यहां तक कि लड़ते-लड़ते शहीद हो जाऊं। फरमाते हैं कि मैं ने तल्वार लेकर ऐसा सख़्त हम्ला किया कि कुफ्फार बीच में से हटते गए और मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व सल्लम को देख लिया तो मुझे बेइन्तिहा ख़ुशी हुई और मैं ने

यक़ीन किया कि अल्लाह तआ़ला ने फ़िरिश्तों के ज़रिये अपने हबीब की हिफ़ाज़त फ़रमाई। मैं दौड़ कर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के पास जा कर खड़ा हुआ, कुफ़्फ़ार गिरोह दर गिरोह हुज़ूर पर हम्ला करने के लिये आने लगे, आप ने फ़रमाया अली इन को रोको, तो मैं ने तन्हा उन सब का मुक़ाबला किया और उन के मुंह फेर दिये और कई एक का क़त्ल भी किया। उस के बाद फिर एक गिरोह और हुज़ूर पर हम्ला करने की नियत से बढ़ा आप ने फिर मेरी तरफ़ इशारा फ़रमाया तो मैं ने फिर उस गिरोह का अकेले मुक़ाबला किया। उस के बाद हज़रत जिब्रील ने आकर हुज़ूर से मेरी बहादुरी और मदद की तारीफ़ की तो आप ने फ़रमायाः إِنَّهُ مِنِّي وَأَنَا مِنْهُ यानी बेशक अली मुझ से है और मैं अली से हूं। मतलब यह है कि अली को मुझ से कमाले क़ुर्ब हासिल है। नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के इस फ़रमान को सुन कर हज़रत जिब्रील ने अ़र्ज़ किया: وَأَنَا مِنْكُمَا यानी मैं तुम दोनों से हूं।

सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम को न पा कर हज़रत अली का शहीद हो जाने की नियत से काफ़िरों के जत्थे में घुस जाना और हुज़ूर पर हम्ला करने वाले गिरोह दर गिरोह से अकेले मुक़ाबला करना आप की बेमिसाल बहादुरी और इन्तिहाई दिलेरी की ख़बर देता है साथ ही हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम से आप के इश्क़ और सच्ची मुहब्बत का भी पता चलता है। رضی اللہ تعالی عنہ وارضاہ عنا *रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु व अर्ज़ाहु अन्ना।*

हज़रत कअ़्ब बिन मालिक अंसारी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है वह फ़रमाते हैं कि जंगे ख़न्दक़ के रोज़ अम्र बिन अब्दे वुद (जो एक हज़ार सवार के बराबर माना जाता था) एक झण्डा लिये हुए निकला ताकि वह मैदाने जंग को देखे, जब वह और उस के साथ सवार एक मक़ाम पर खड़े हुए तो उस से हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फ़रमाया कि ऐ अम्र! तू क़ुरैश से अल्लाह की क़सम

देकर कहा करता था कि जब कभी मुझ को कोई शख़्स दो अच्छे कामों की तरफ बुलाता है तो मैं उस में एक को ज़रूर इख़्तियार करता हूं, उस ने कहा हां मैं ने ऐसा कहा था और अब भी कहता हूं, आप ने फरमाया कि मैं तुझे अल्लाह व रसूल (जल्ल जलालहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) और इस्लाम की तरफ बुलाता हूं, अम्र ने कहा मुझे इन में से किसी की हाजत नहीं, हज़रत अली ने फरमाया तो अब मैं तुझ को मुक़ाबले की दावत देता हूं और इस्लाम की तरफ बुलाता हूं। अम्र ने कहा ऐ मेरे भाई के बेटे! किस लिये मुक़ाबले की दावत देता है, ख़ुदा की क़सम मैं तुझ को क़त्ल करना पसंद नहीं करता। हज़रत अली ने फरमाया लेकिन ख़ुदा की क़सम मैं तुझ को क़त्ल करना पसंद करता हूं, यह सुन कर अम्र का ख़ून गर्म हो गया और हज़रत अली की तरफ मुतवज्जह हुआ, दोनों मैदान में आ गए और थोड़ी देर मुक़ाबला होने के बाद शेर ख़ुदा ने उसे मौत के घाट उतार कर जहन्नम में पहुंचा दिया।

और मुहम्मद बिन इस्हाक़ कहते हैं कि अम्र बिन अब्दे वुद मैदान में इस तरह पर निकला कि लोहे की ज़िरहें पहने हुए था और उस ने बुलंद आवाज़ से कहा, है कोई जो मेरे मुक़ाबले में आए, इस आवाज़ को सुन कर हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु खड़े हुए और मुक़ाबला के लिये हुज़ूर से इजाज़त तलब की, आप ने फरमाया बैठ जाओ, यह अम्र बिन अब्दे वुद है। दूसरी बार अम्र ने फिर आवाज़ दी कि मेरे मुक़ाबले के लिये कौन आता है? और मुसलमानों को मलामत करनी शुरू की, कहने लगा तुम्हारी वह जन्नत कहा हैं जिस के बारे में तुम दावा करते हो कि जो भी तुम में से मारा जाता है वह सीधे उस में दाख़िल हो जाता है, मेरे मुक़ाबले के लिये किसी को क्यों नहीं खड़ा करते हो, दोबारा फिर हज़रत अली ने खड़े हो कर हुज़ूर से इजाज़त तलब की मगर आप ने फिर वही फरमाया बैठ जाओ। तीसरी बार अम्र ने फिर वही आवाज़ दी और कुछ अश्आर भी पढ़े। रावी का बयान है

कि तीसरी बार हज़रत अली ने खड़े हो कर हुज़ूर से अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! मैं इस के मुक़ाबला के लिये निकलूंगा आप ने फरमाया कि यह अम्र है। हज़रत अली ने अर्ज़ किया चाहे अम्र ही क्यों न हो। तीसरी बार हुज़ूर ने आप को इजाज़त दे दी, हज़रत अली चल कर उसके पास पहुंचे और चन्द अश्आर पढ़े जिनका मतलब यह है:

ऐ अम्र! जल्दी न कर, जो आजिज़ नहीं है वह तेरे पास तेरी आवाज़ का जवाब देने वाला सच्ची नियत और बसीरत के साथ आ गया और हर कामियाब होने वाले को सच्चाई ही निजात देती है, मुझे पूरी उम्मीद है कि मैं तेरे जनाज़े पर ऐसी ज़र्बे वसीअ् से नौहा करने वालियों को क़ाइम करूंगा कि जिस का ज़िक्र लोगों में बाक़ी रहेगा।

अम्र ने पूछा कि तू कौन है? आप ने फरमाया कि मैं अली हूं, उस ने कहा अब्दे मनाफ के बेटे हो? आप ने फरमाया कि मैं अली बिन अबी तालिब हूं, उस ने कहा ऐ मेरे भाई के बेटे! तेरे चचाओं में से ऐसे तो भी हैं जो उम्र में तुझ से ज़्यादा हैं, मैं तेरा ख़ून बहाने को बुरा समझता हूं। हज़रत अली ने फरमाया मगर खुदा की क़सम मैं तेरा ख़ून बहाने को क़तअ़न बुरा नहीं समझता, यह सुन कर वह गुस्से से तिलमिला उठा, घोड़े से उतर कर आग के शोला जैसी तलवार सौंत ली, हज़रत अली की तरफ लप्का और ऐसा ज़बर्दस्त वार किया कि आपने ढाल पर रोका तो तल्वार उसे फाड़ कर घुस गई यहां तक कि आप के सर पर लगी और ज़ख़्मी कर दिया, अब शेरे खुदा ने संभल कर उसके कंधे की रग पर ऐसी तल्वार मारी कि वह गिर पड़ा और गुबार उड़ा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने नारए तक्बीर सुना जिस से मालूम हुआ कि हज़रत अली ने उसे जहन्नम में पहुंचा दिया। शेरे खुदा की इस बहादुरी और शुजाअ़त को देख कर मैदाने जंग का एक-एक ज़र्रा ज़बाने हाल से पुकार उठा:

*शाहे मरदां शेरे यज़्दां कुव्वते परवरदिगार*

لَا فَتٰی اِلَّا عَلِیٌ لَا سَیْفَ اِلَّا ذُوالْفِقَار

यानी हज़रत अली बहादुरों के बादशाह, ख़ुदा के शेर और कुव्वते परवरदिगार हैं। उन के सिवा कोई जवान नहीं और ज़ुलफ़िक़ार के अलावा कोई तल्वार नहीं।

एक बार हम सब लोग मिल कर बुलंद आवाज़ से सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की बारगाह में दुरूद शरीफ़ का नज़्राना पेश करें।

صلی اللہ علی النبی الامی والہ صلی اللہ علیہ وسلم صلاۃ وسلاما علیک یارسول اللہ

*सल्लल्लाहु अ़लन् नबिय्यिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सलातुवं व सलामन् अ़लैक या रसूलल्लाह।*

इसी तरह जंगे ख़ैबर के मौक़ा पर भी हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने शुजाअ़त और बहादुरी के वह जौहर दिखाए हैं जिस का ज़िक्र हमेशा बाक़ी रहेगा और लोगों के दिलों में जोश व वलवला पैदा करता रहेगा।

ख़ैबर का वह क़िला जो मुरह्हब का पाए तख़्त था उस का फ़त्ह करना आसान न था, उस क़िला को सर करने के लिये सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने एक दिन हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को झण्डा इनायत फ़रमाया और दूसरे दिन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को अता फ़रमाया लेकिन फ़ातिहे ख़ैबर होना तो किसी और के लिये मुक़द्दर हो चुका था इस लिये इन हज़रात से वह फ़त्ह न हुआ, जब इस मुहिम में बहुत ज़्यादा देर हुई तो एक दिन सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मैं यह झण्डा कल एक ऐसे शख़्स को दूंगा जिस के हाथ ख़ुदाए तआ़ला फ़त्ह अता फ़रमाएगा, वह शख़्स अल्लाह व रसूल को दोस्त रखता है और अल्लाह व रसूल (जल्ल जलालुहू व सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम) उस को दोस्त रखते हैं।

हुज़ूर की इस ख़ुश्ख़बरी को सुन कर सहाबए किराम ने वह रात बड़ी बेक़रारी में काटी, इस लिये कि हर सहाबी की यह तमन्ना थी ऐ

काश! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम कल सुब्ह हमें झण्डा इनायत फरमा दें तो इस बात की सनद हो जाती कि हम अल्लाह व रसूल को महबूब रखते हैं और अल्लाह व रसूल हमें चाहते हैं और इस नेअ्मते उज़्मा व सआ़दते कुब्रा (आला नेअ्मत व बड़ी खुश्ख़बरी) से भी सरफराज़ हो जाते कि फातिहे ख़ैबर बन जाते इस लिये कि वह सहाबी थे, वहाबी नहीं थे, उन का यह अक़ीदा हरगिज़ नहीं था कि कल क्या होने वाला है, हुज़ूर को उस की क्या ख़बर? बल्कि उन का अक़ीदा यह था कि अल्लाह के महबूब दानाए ख़िफाया व ग़ुयूब जनाबे अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने जो कुछ फरमाया है वह कल होकर रहेगा, उस में ज़र्रा बराबर फर्क़ नहीं हो सकता।

जब सुब्ह हुई तो तमाम सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुम ने उम्मीदें लिये हुए बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुए और अदब के साथ देखने लगे कि नबीए करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम आज किस को सरफराज़ फरमाते हैं। सब की अरमान भरी निगाहें हुज़ूर के लबे मुबाकर की जुंबिश पर कुर्बान हो रही थीं कि सरकार ने फरमायाः أَيْنَ عَلِيُّ بِنْ أَبِي طَالِب यानी अली बिन अबी तालिब कहां हैं? लोगों ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! वह आशोबे चश्म में मुब्तला हैं, उन की आंखें दुखती हैं, आप ने फरमाया कोई जाकर उन को बुला लाए, जब हज़रत रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु अली लाए गए तो रहमते आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने उन की आंखों पर लुआ़बे दहन लगा दिया तो वह बिल्कुल ठीक हो गईं। हदीस शरीफ के अस्ल अल्फाज़ यह हैं: فَبَصَقَ رسول اللّٰه صلى الله تعالى عليه وسلم فِىْ عَيْنَيْهِ فَبَرَأَ और उन की आंखें इस तरह अच्छी हो गईं गोया दुंखती ही न थीं। फिर हुज़ूर ने उन को झण्डा इनायत फरमाया, हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या मैं उन लोगों से उस वक़्त तक लड़ूं जब तक कि वह हमारी तरह मुसलमान न हो जाएं, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि

व सल्लम ने फरमाया कि नर्मी से काम लो, पहले उन्हें इस्लाम की तरफ बुलाओ और फिर बतलाओ कि इस्लाम क़बूल करने के बाद उन पर क्या हुक़ूक़ हैं, ख़ुदा की क़सम अगर तुम्हारी कोशिश से एक शख़्स को भी हिदायत मिल गई तो तुम्हारे लिये सुर्ख़ ऊंटों से भी बेहतर होगा। (बुख़ारी, मुस्लिम, मिश्कात:564)

इस्लाम क़बूल करने या सुलह करने के बजाए हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मुक़ाबला करने के लिये मुरह्हब यह रज्ज़ (जंगी अश्आ़र) पढ़ता हुआ क़िला से बाहर निकलाः

قَدْ عَلِمَتْ خَيْبَرُ اَنِّیْ مُرَحَّبُ

شَاكِی السِّلَاحِ بَطَلٌ مُجَرَّبٌ

यानी बेशक ख़ैबर जानता है कि मैं मुरह्हब हूं, हथियारों से लैस बहादुर और तजुर्बेकार हूं। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने उस के जवाब में रज्ज़ का यह शअ़्र पढ़ाः

اَنَا الَّذِیْ سَمَّتْنِیْ اُمِّیْ حَيْدَرَةْ

كَلَيْثِ غَابَاتٍ كَرِيْهِ الْمَنْظَرَةْ

यानी मैं वह शख़्स हूं कि मेरी मां ने मेरा नाम "शेर" रखा है, मेरी सूरत झाड़ियों में रहने वाले शेर की तरह ख़ौफनाक है।

मुरह्हब बड़े घमंड से आया था लेकिन शेरे ख़ुदा अली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने इस ज़ोर से तल्वार मारी कि उस के सर को काटती हुई दांतों तक पहुंच गई और वह ज़मीन पर ढेर हो गया। उस के बाद आप ने फ़त्ह का ऐलान फरमा दिया।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है उस रोज़ आप ने ख़ैबर का दरवाज़ा अपनी पीठ पर उठा लिया था और उस पर मुसलमानों ने चढ़ कर क़िला को फतह कर लिया था, आप ने वह दरवाज़ा फेंक दिया, जब लोगों ने उसे घसीट कर दूसरी जगह डालना चाहा तो चालीस आदमियों से कम उसे उठा न सके।

(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा:114)

और इब्ने असाकिर ने अबू राफ़ेअ् से रिवायत की है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने जंगे ख़ैबर में क़िला का फाटक हाथ में लेकर उस को ढाल बना लिया, वह फाटक बराबर उन के हाथ में रहा और वह लड़ते रहे यहां तक कि अल्लाह तआ़ला ने उन के हाथों ख़ैबर को फ़त्ह फरमाया। उस के बाद फाटक आप ने फेंक दिया। लड़ाई से फ़ारिग़ होने के बाद हमारे साथ कई आदमियों ने मिल कर उसे पलटना चाहा मगर वह नहीं पलटा। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा:114)

एक बार आप हज़रात फिर बुलंद आवाज़ से दुरूद शरीफ पढ़ें।

صلى الله على النبى الامى واله صلى الله عليه وسلم صلاة وسلاما عليك يارسول الله

*सल्लल्लाहु अ़लन् नबिय्यिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सलातुवं व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।*

## आप का हुलिया

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु जिस्म के फर्बा थे। अक्सर ख़ोद (लोहे की टोपी) इस्तेमाल करने की वजह से सर के बाल उड़े हुए थे। आप निहायत क़वी और मियाना क़द माइल ब-पस्ती थे। आप का पेट दीगर अअ्ज़ा के ऐतबार से किसी क़दर भारी था, मूंढों के दरमियान का गोश्त भरा हुआ था। पेट से नीचे का जिस्म भारी था। रंग गंदुमी था। तमाम जिस्म पर लम्बे-लम्बे बाल आप की रीश मुबारक घनी और दराज़ थी।

मश्हूर है कि एक यहूदी की दाढ़ी बहुत मुख़्तसर थी, ठोढ़ी पर सिर्फ चन्द गिन्ती के बाल थे। और हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की दाढ़ी मुबारक बड़ी घनी और लम्बी थी, एक दिन वह यहूदी हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से कहने लगा ऐ अली! तुम्हारा यह दावा है कि क़ुरआन में सारे उलूम हैं और तुम बाबे मदीनतुल इल्म हो तो बताओ क़ुरआन में तुम्हारी घनी दाढ़ी और मेरी मुख़्तसर दाढ़ी का भी ज़िक्र है, हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फरमाया हां, सूरए अअ्राफ में है: وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهُ بِإِذْنِ رَبِّهِ وَالَّذِي خَبُثَ لَا يَخْرُجُ إِلَّا نَكِدًا यानी

जो अच्छी ज़मीन है उस की हरियाली अल्लाह के हुक्म से ख़ूब निकलती है और जो ख़राब है उस में से नहीं निकलती मगर थोड़ी बमुश्किल। (पारा:8 रुकूअ़:14)

तो ऐ यहूदी! वह अच्छी ज़मीन हमारी ठोढ़ी है और ख़राब ज़मीन तेरी ठोढ़ी।

मालूम हुआ कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का इल्म बहुत वसीअ़ था कि अपनी घनी दाढ़ी और यहूदी की मुख़्तसर दाढ़ी का ज़िक्र आप ने कुरआन मजीद में साबित कर दिखाया और यह भी साबित हुआ कि सारे उलूम का ख़ज़ाना है। मगर लोगों की अक़्लें उस के समझने से क़ासिर हैं। एक शाइर ने बहुत ख़ूब कहा है:

جَمِيْعُ الْعِلْمِ فِى الْقُرْاٰنِ لٰكِنْ
تَقَاصَرَ عَنْهُ اَفْهَامُ الرِّجَالِ

## हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु और अहादीसे करीमा

हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआ़ला वज्हहुल करीम की फज़ीलत में बहुत सी हदीसें वारिद हैं बल्कि इमाम अहमद रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह फरमाते हैं कि जितनी हदीसें आप की फज़ीलत में हैं किसी और सहाबी की फज़ीलत में इतनी हदीसें नहीं हैं। बुख़ारी और मुस्लिम में हज़रत सअ़द बिन वक़्क़ास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि ग़ज़्वए तबूक के मौक़ा पर जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को मदीना तैयिबा में रहने का हुक्म फरमाया और अपने साथ नहीं लिया तो उन्हों ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! आप मुझे यहां औरतों और बच्चों पर अपना ख़लीफा बना कर छोड़े जाते हैं तो सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: اَمَا تَرْضٰى اَنْ تَكُوْنَ مِنِّىْ بِمَنْزِلَةِ هَارُوْنَ مِنْ مُّوْسٰى यानी क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं हो कि मैं तुम्हें इस तरह छोड़े जाता हूं कि जिस तरह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने हज़रत हारून

अलैहिस्सलाम को छोड़ गए। अल्बत्ता फर्क सिर्फ इतना है कि मेरे बाद कोई नबी नहीं होगा।

मतलब यह है कि जिस तरह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने कोहे तूर पर जाने के वक़्त चालीस दिन के लिये अपने भाई हज़रत हारून अलैहिस् सलाम को बनी इस्राईल पर अपना ख़लीफा बनाया था, इस तरह जंगे तबूक की रवानगी के वक़्त में तुम को अपना ख़लीफा और नाइब बना कर जा रहा हूं लिहाज़ा जो मर्तबा हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के नज़्दीक हज़रत हारून अलैहिस्सलाम का था वही मर्तबा हमारी बारगाह में तुम्हारा है। इस लिये ऐ अली! तुम्हें खुश होना चाहिये। तो ऐसा ही हुआ कि इस खुश्ख़बरी से हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को तसल्ली हो गई।

राफज़ी इस हदीस शरीफ से हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के लिये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का ख़लीफए बिला फस्ल होने का इस्तिदलाल करते हैं जो सहीह नहीं, इस लिये कि हुज़ूर ने उन को ख़लीफए मुत्लक़ नहीं बनाया था बल्कि उनकी ख़िलाफत महेज़ ख़ानगी उमूर की निगरानी और अहलो-अयाल की देख-भाल के लिये थी। इसी सबब से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा को मदीना तैयिबा का सूबादार, हज़रत सिबाअ् अरफता को मदीना मुनव्वरा का कोतवाल और हज़रत इब्ने उम्मे मक्तूम को अपनी मस्जिद का इमाम बनाया था।

(रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम)

मज़ीद जवाबात के लिये तोहफए इस्ना अशरिया का मुतालिआ करें।

और हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: अली से मुनाफिक़ मुहब्बत नहीं करता और मोमिन अली से बुग़्ज़ व अदावत नहीं रखता। (तिर्मिज़ी)

सुब्हानल्ला! हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की क्या ही बुलंद व बाला शान है कि सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने आप से मुहब्बत न करने को मुनाफ़िक़ होने की अलामत ठहराय और आप से बुग़ज़ व अदावत रखने को मोमिन न होने का मेअ्यार क़रार दिया यानी जो हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मुहब्बत न करे वह मुनाफ़िक़ है और जो उन से बुग़ज़ व अदावत रखे वह मोमिन नहीं।

और हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमायाः مَنْ سَبَّ عَلِيًّا فَقَدْ سَبَّنِيْ यानी जिस ने अली को बुरा भला कहा तो तहक़ीक़ उस ने मुझ को बुरा भला कहा। (मिश्कात)

यानी हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से इतना कुर्ब और नज़्दीकी हासिल है कि जिस ने उन की शान में गुस्ताख़ी व बेअदबी की तो गोया कि उस ने हुज़ूर की शान में गुस्ताख़ी व बेअदबी की। खुलासा यह है कि उन की तौहीन करना हुज़ूर की तौहीन करना है। العياذ بالله تعالى *अलइयाज़ु बिल्लाहि तआला*

और हज़रत अबुत तुफ़ैल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि एक दिन हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने एक खुले हुए मैदान में बहुत से लोगों को जमा करके फरमाया कि मैं अल्लाह की क़सम देकर तुम लोगों से पूछता हूं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने यौमे ग़दीर खुम में मेरे मुतअ़ल्लिक़ क्या इरशाद फरमाया था? तो उस मज्मअ़ से तीस आदमी खड़े हुए और उन लोगों ने गवाही दी कि हुज़ूर ने उस रोज़ फरमाया थाः مَنْ كُنْتُ مَوْلَاهُ فَعَلِيٌّ مَوْلَاهُ اَللّٰهُمَّ وَالِ مَنْ وَالَاهُ وَعَادِ مَنْ عَادَاهُ यानी मैं जिस का मौला हूं अली भी उस के मौला हैं। या इलाहल आलमीन! जो शख़्स अली से मुहब्बत रखे तू भी उस से मुहब्बत रख और जो शख़्स अली से अदावत रखे तू भी उस से अदावत रख। (तारीखुल खुलफ़ा)

और तबरानी व बज़्ज़ार हज़रत जाबिर से और तिर्मिज़ी व हाकिम हज़रत अली से[1] रिवायत करते हैं कि रसूले अक्रम ने फरमायाः اَنَا مَدِيْنَةُ الْعِلْمِ وَعَلِيٌّ بَابُهَا यानी मैं इल्म का शहर हूं और अली उस के दरवाज़ा हैं। अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि यह हदीस हसन है और जिन्हों ने इस को मौज़ूअ् कहा है उन्हों ने ग़लती की है। (तारीखुल खुलफाः116)

और हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमायाः مَنْ اَحَبَّ عَلِيًّا فَقَدْ اَحَبَّنِىْ यानी जिस ने अली से मुहब्बत की उस ने मुझ से मुहब्बत की وَمَنْ اَحَبَّنِىْ فَقَدْ اَحَبَّ اللّٰه और जिस ने मुझ से मुहब्बत की उस ने अल्लाह तआला से मुहब्बत की وَمَنْ اَبْغَضَ عَلِيًّا فَقَدْ اَبْغَضَنِىْ وَمَنْ اَبْغَضَنِىْ فَقَدْ اَبْغَضَ اللّٰه यानी जिस ने अली से दुश्मनी की उस ने मुझ से दुश्मनी की और जिस ने मुझ से दुश्मनी की उस ने अल्लाह से दुश्मनी की।

(तारीखुल खुलफा, बहवाला तबरानी)

और बज़्ज़ार, अबू यअ्ला और हाकिम हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत करते हैं उन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मुझे बुलाया और फरमाया कि तुम्हारी हालत हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जैसी है कि यहूदियों ने उस ने यहां तक दुश्मनी की कि उन की वालिदा हज़रत मरयम रज़ियल्लाहु तआला अन्हा पर तोहमत लगाई और नसारा ने उन से मुहब्बत की तो इस क़द्र हद से बढ़ गए कि उन को अल्लाह या अल्लाह का बेटा कह दिया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया तो कान खोल कर सुन लो, मेरे बारे में भी दो गिरोह हलाक होंगे, एक मेरी मुहब्बत में हद से तजावुज़ करेगा और मेरी ज़ात से उन बातों को मन्सूब करेगा जो मुझ में नहीं हैं। और दूसरा गिरोह इस क़द्र बुग़ज़ व अदावत रखेगा

---

[1] فيحصل علم رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم بوسيلة على رضى الله عنه وبغيره لان مدينة يكون لها فى العادة ابواب ولاتوجد مدينة لها باب واحد فمدينة العلم اوسع المدائن ينبغى ان يكون لها ابواب كثيرة۔ (حاشيه تاريخ الخلفاء:١١٦)

कि मुझ पर बोहतान लगाएगा। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा)

इस हदीस शरीफ की पेशीन गोई हर्फ बहर्फ सहीह हुई। बेशक हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के बारे में दो फिरक़े गुमराह होकर हलाक हुए, एक राफ़िज़ी और दूसरे ख़ारिजी। राफ़िज़ी इस लिये हलाक हुए कि उन्हों ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को हद से बढ़ाया, यहां तक कि उन को ख़ुदा कह दिया। (देखिये तोह्फ़ए इस्ना अशरिया बाबे अव्वल) और ख़ारिजियों ने उन से इस क़द्र बुग़्ज़ व अदावत रखा कि उन को काफिर कह दिया। معاذالله رب العالمين

*मआ़ज़ल्लाहि रब्बल आलमीन*

## अबू तुराब

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की एक कुन्नियत अबू तुराब भी है जैसा कि शुरू में बताया जा चुका है। जब कोई शख़्स आप को अबू तुराब कह कर पुकारता तो आप बहुत ख़ुश होते थे और रहमते आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के लुत्फो- करम के मज़े लेते थे इस लिये कि यह कुन्नियत आप को हुज़ूर ही से इनायत हुई थी, इस का वाक़िआ़ यह है कि एक रोज़ आप मस्जिद में आ कर लेटे हुए थे और आप के जिस्म पर कुछ मिट्टी लग गई थी कि इतने में रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम मस्जिद में तशरीफ़ लाए और अपने मुबारक हाथों से आप के बदन की मिट्टी झाड़ते हुए फरमाया: قُمْ يَا اَبَا تُرَابٍ यानी ऐ मिट्टी वाले! उठो, उस रोज़ से आप की कुन्नियत अबू तुराब हो गई। (रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु)

## ख़ुलफ़ाए सलासा और हज़रत अली
### रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने ख़ुलफ़ाए सलासा में से हर एक की ख़िलाफत को बख़ुशी मंज़ूर फरमाया है और किसी की ख़िलाफत से इनकार नहीं किया है। जैसा कि इब्ने असाकिर ने हज़रत

हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हवाले से लिखा है कि जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बसरा तशरीफ लाए तो इब्नुल कव्वा और कैस बिन उबादा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने खड़े होकर आप से पूछा कि आप हमें यह बतलाइये कि बाज़ लोग कहते हैं कि रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने आप से वादा फरमाया था कि मेरे बाद तुम ख़लीफा होगे तो यह बात कहां तक सच है, इस लिये कि आप से ज़्यादा इस मामले में सहीह बात और कौन कह सकता है, आप ने फरमाया यह ग़लत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मुझ से कोई वादा फरमाया था जब मैं ने सब से पहले आप की नुबुव्वत की तस्दीक़ की तो अब मैं ग़लत बात आप की तरफ मन्सूब नहीं कर सकता। अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इस तरह का कोई वादा मुझ से किया होता तो मैं हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ व हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा को हुज़ूर के मिम्बर पर न खड़ा होने देता, मैं उन दोनों को इन्हीं हाथों से क़त्ल कर डालता चाहे मेरा साथ देने वाला कोई न होता। यह तो सब लोग जानते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को अचानक किसी ने क़त्ल नहीं किया और न आप का यका यक विसाल हुआ बल्कि कई दिन तक आप की तबीअत नासाज़ रही और जब आप की बीमारी ने ज़ोर पकड़ा और मोअज़्ज़िन ने आप को नमाज़ के लिये बुलाया तो आपने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को नमाज़ पढ़ाने का हुक्म फरमाया और मुशाहेदा फरमाते रहे। मोअज़्ज़िन ने फिर आप को नमाज़ के लिये बुलाया, हुज़ूर ने फिर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ को नमाज़ पढ़ाने के लिये फरमाया। आप की अज़्वाजे मुतह्हरात में से एक ने (यानी हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने) हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को इमामत से बाज़ रखना चाहा तो आप ने नाराज़गी ज़ाहिर की और फरमाया कि तुम लोग तो यूसुफ़ अलैहिस् सलाम के ज़माने की

औरतें हो, अबू बकर से कहो कि वह लोगों को नमाज़ पढ़ाएं।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का विसाल हो गया तो हम ने ख़िलाफत के मुतअल्लिक़ ग़ौर करने के बाद फिर उन्हीं को अपनी दुनिया के लिये इख़्तियार कर लिया जिस को प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हमारे दीन यानी नमाज़ के लिये मुन्तख़ब फरमाया था, चूंकि नमाज़ दीन की अस्ल है और हुज़ूर दीन व दुनिया दोनों के क़ाइम फरमाने वाले थे इस लिये हम सब ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हाथ पर बैअ़त कर ली। और सच्ची बात यही है कि वही उसके अहल भी थे। इसी लिये किसी ने आप की ख़िलाफत में इख़्तिलाफ़ नहीं किया और न किसी ने किसी को नुक़्सान पहुंचाने का इरादा किया और न किसी ने आपकी ख़िलाफत से रू-गर्दानी की, इसी बिना पर मैंने भी आपका हक़ अदा किया और आपकी इताअ़त की। मैं ने आप के लश्कर में शरीक होकर काफिरों से जंग की। माले ग़नीमत या बैतुल माल से जो आपने दिया वह हमने बखुशी क़बूल किया और जहां कहीं आप मुझे जंग के लिये भेजा मैं गया और दिल खोल कर लड़ा यहां तक कि उन के हुक्म से शरई सज़ाएं भी दीं यानी हुदूद जारी किये।

फिर हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि जब हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के विसाल का वक़्त क़रीब आया तो उन्हों ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अपना ख़लीफा बनाया और वह हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ के बेहतरीन जानशीन और सुन्नते नबवी पर अमल करने वाले थे, तो हम ने उन के हाथ पर बैअ़त कर ली। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को ख़लीफा बनाने पर भी किसी शख़्स ने बिल्कुल इख़्तिलाफ नहीं किया और न कोई किसी को नुक़्सान पहुंचाने के दरपै हुआ और एक फर्द भी आपकी ख़िलाफत से बेज़ार नहीं हुआ। मैं ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु

तआ़ला अ़न्हु के हुकूक़ भी अदा किये और पूरे तौर उनकी इताअ़त की और उनके लश्कर में भी शरीक होकर दुश्मनों से जंग की और उन्होंने जो कुछ मुझे दिया मैं ने ख़ुशी से ले लिया। उन्हों ने मुझे लड़ाइयों पर भेजा, मैं ने दिल खोल कर काफ़िरों से मुक़ाबला किया और आप के ज़मानए ख़िलाफ़त में भी अपने कोड़ों से मुजिर्मों को सज़ाएं दी।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने अपना बयान जारी रखते हुए फ़रमाया कि फिर जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के विसाल का वक़्त क़रीब आया तो मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के साथ अपनी क़राबत, इस्लाम लाने में सबक़त और अपनी दूसरी फ़ज़ीलतों की जानिब दिल में ग़ौर किया तो मुझे यह ख़्याल ज़रूर पैदा हुआ कि अब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को मेरी ख़िलाफ़त के बारे में कोई ऐतराज़ न होगा, लेकिन ग़ालिबन हज़रत उमर को यह ख़ौफ़ हुआ कि वह कहीं ऐसा ख़लीफ़ा नामज़द न कर दें कि जिस के आमाल का ख़ुद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को क़ब्र में जवाब देना पड़े, इस ख़्याल के पेशे नज़र उन्हों ने अपनी औलाद को भी ख़िलाफ़त के लिये नामज़द नहीं फ़रमाया बल्कि ख़लीफ़ा मुक़र्रर करने का फ़ैसला 6 क़ुरैशियों के सुपुर्द किया जिन में से एक मैं भी था, जब उन 6 मिम्बरों ने इन्तिख़ाबे ख़लीफ़ा के लिये कमेटी तलब की तो मुझे ख़्याल पैदा हुआ कि अब ख़िलाफ़त मेरे सुपुर्द कर दी जाएगी, यह कमेटी मेरे बराबर किसी दूसरे को हैसियत नहीं देगी और मुझी को ख़लीफ़ा मुन्तख़ब करेगी, जब कमेटी के सब अफ़राद जमा हो गए तो हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ़ ने हम लोगों से वादा लिया कि अल्लाह तआ़ला हम में से जिस को ख़लीफ़ा मुक़र्रर फ़रमा दे हम सब उस की इताअ़त करेंगे और उस के अह्काम को ख़ुशी से बजा लायेंगे। इस के बाद हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के हाथ पर बैअ़त की, उस वक़्त मैं ने सोचा कि मेरी इताअ़त मेरी बैअ़त पर

ग़ालिब आ गई और मुझ से जो वादा लिया गया था वह अस्ल में दूसरे की बैअ़त के लिये था। बहर हाल मैं ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के हाथ पर भी बैअ़त कर ली और ख़लीफ़ए अव्वल व दोम की तरह उन की इताअ़त भी क़बूल कर ली, उन के हुक़ूक़ अदा किये, उनकी सर-कर्दगी में जंगें लड़ीं, उनके अतियात को क़बूल किया और मुर्जिमों को शरई सज़ाएं भी दीं।

फिर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की शहादत के बाद मुझे ख़्याल पैदा हुआ कि वह दोनों ख़लीफ़ा जिन से मैं ने नमाज़ के सबब बैअ़त की थी, विसाल फ़रमा चुके और जिन के लिये मुझ से वादा लिया गया था वह भी रुख़्सत हो गए, लिहाज़ा यह सोच कर मैं ने बैअ़त लेनी शुरू कर दी, मक्का मुअ़ज़्ज़मा व मदीना तैयिबा के बाशिंदों ने और कूफ़ा व बसरा के रहने वालों ने मेरी बैअ़त कर ली, अब ख़िलाफ़त के लिये मेरे मुक़ाबिल वह शख़्स खड़ा हुआ है (यानी हज़रत अमीर मुआ़विया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) जो क़राबत, इल्म और सबक़ते इस्लाम में मेरे बराबर नहीं, इस लिये मैं उस शख़्स के मुक़ाबिला में ख़िलाफ़त का ज़्यादा मुस्तहिक़ हूं। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा:121)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के इस तफ़्सीली बयान से वाज़ेह तौर पर मालूम हुआ कि सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने अपने बाद उन को ख़िलाफ़त के लिये नामज़द नहीं फ़रमाया था और न उन से इस क़िसम का कोई वादा फ़रमाया था, इसी लिये आप ने ख़ुलफ़ाए सलासा की बैअ़त से इनकार नहीं किया और न उन की मुख़ालफ़त की बल्कि हर तरह से उन का तआ़वुन किया और उनके अतियात को क़बूल फ़रमाया।

दर अस्ल राज़ यह है कि अगर हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की वफ़ात के बाद बिला फ़स्ल ख़लीफ़ा मुन्तख़ब हो जाते तो ख़ुलफ़ाए सलासा (तीनों ख़लीफ़ा) महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की

ख़िलाफ़त व नियाबत की नेअ्मत से सरफ़राज़ न हो पाते, सब हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के अह्द ही में इन्तेक़ाल कर कर जाते, हालां कि इल्मे इलाही में यह मुक़द्दर हो चुका था कि वह तीनों हज़रात भी हुज़ूर की नियाबत से सरफ़राज़ होंगे। तो ख़ुदाए तआ़ला ने सहाबए किराम के दिलों में यह बात डाल दी कि उसी तरतीब से ख़लीफ़ा मुन्तख़ब करें कि जिस तरतीब के साथ वह दुनिया से रुख़सत होने वाले हैं ताकि उन में से कोई हुज़ूर की नियाबत से महरूम न रहे।

*रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम अज्मईन*

## आप का इल्म

हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआ़ला वज्हहुल करीम इल्म के ऐतबार से उलमाए सहाबा में बहुत ऊंचा मक़ाम रखते हैं। सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की बहुत सी हदीसें आप से मरवी हैं। आप के फ़तावा और फ़ैसले इस्लामी उलूम के अन्मोल जवाहिर पारे हैं। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा फ़रमाते हैं कि हम ने जब भी आप से किसी मस्अला को दरियाफ़्त किया तो हमेशा दुरुस्त ही जवाब पाया। हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा के सामने जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का ज़िक्र हुआ तो आप ने फ़रमाया कि अली से ज़्यादा मसाइले शरइय्या का जानने वाला कोई और नहीं है। और हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि मदीना तैयिबा में इल्मे फ़राइज़ और मुक़द्दमात के फ़ैसले करने में हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से ज़्यादा इल्म रखने वाला कोई दूसरा नहीं था। और हज़रत सईद बिन मुसैय्यिब रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के सहाबा में सिवाए हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के कोई यह कहने वाला नहीं था कि जो कुछ पूछना हो मुझ से पूछ लो। और हज़रत सईद बिन मुसैय्यिब रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से यह भी मरवी है कि जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की ख़िदमत में कोई

मुश्किल मुक़द्दमा पेश होता और हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु मौजूद न होते तो अल्लाह तआ़ला की पनाह मांगा करते थे कि मुक़द्दमा का फैसला कहीं ग़लत न हो जाए। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा)

मशहूर है कि हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के सामने एक ऐसी औरत पेश की गई कि जिसे ज़िना का हमल था, सबूते शरई के बाद आप ने उस के संगसार (पत्थर मारने) का हुक्म फ़रमाया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने याद दिलाया कि हुज़ूर सैयिदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम का फ़रमान है कि हामिला औरत को बच्चा पैदा होने के बाद संगसार किया जाए। इस लिये ज़िना करने वाली औरत अगर्चे गुनहगार होती है मगर उस के पेट का बच्चा बेक़ुसूर होता है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की याद देहानी के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने अपने फ़ैसले से रुजूअ़ कर लिया और फ़रमाया: لَوْلَا عَلِيٌّ لَهَلَكَ عُمَرُ अगर अली न होते तो उमर हलाक हो जाता। अली की मौजूदगी ने उमर को हलाकत से बचा लिया। (रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा)।

## आप के फैसले

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के फैसले ऐसे अजीब व ग़रीब और नादिरे रोज़गार हैं कि जिन्हें पढ़ कर बड़े-बड़े अक़्ल मन्दों और दानिश्वरों की अक़्लें हैरान हैं। और यह सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के दस्ते मुबारक और उन की दुआ़ की बरकत है। ख़ुद हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि नबीए करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने मुझे यमन की जानिब क़ाज़ी बना कर भेजना चाहा तो मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैं अभी नातजुर्बे कार जवान हूं, मामलात तय करना नहीं जानता हूं और आप मुझे यमन भेजते हैं। यह सुन कर हुज़ूर ने मेरे सीने पर हाथ मारा और फ़रमाया: इलाहल आलमीन! इस के क़ल्ब को रौशन फ़रमा दे। और इस की ज़बान में तासीर अ़ता फ़रमा दे, क़सम है उस ज़ात

की जो छोटे बीज से बड़ा दरख़्त पैदा करता है, इस दुआ के बाद से फिर कभी मुझे किसी मुक़द्दमा के फैसले में कोई तरद्दुद नहीं रहा, बग़ैर किसी शक व शुब्हा के मैं ने हर मुक़द्दमे का तस्फ़िया कर दिया।

अब आप हज़रात सैयिदना हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के चन्द फैसले मुलाहेज़ा फरमाएं।

## आक़ा और गुलाम

हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि यमन के एक शख़्स ने अपने गुलाम को अपने लड़के के साथ कूफा भेजा, इत्तिफाक़ से रास्ते में दोनों ने झगड़ा किया, लड़के ने गुलाम को मारा और गुलाम ने उसे गालियां दीं, कूफा पहुंच कर गुलाम ने दावा किया कि यह लड़का मेरा गुलाम है और उसे बेचना चाहा, यह मुक़द्दमा हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की अदालत में पहुंचा, आप ने ख़ादिम क़म्बर से फरमाया कि इस कमरे की दीवार में दो बड़े-बड़े सूराख़ बनाओ और इन दोनों से कहो कि अपने-अपने सर इन सूराख़ों से बाहर निकालें। जब यह सब हो गया तो आपने फरमाया ऐ क़ुंबुर, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की तल्वार लाओ, हज़रत क़म्बर तलवार ले आए तो आप ने फरमाया फौरन गुलाम का सर काट लो, इतना सुनता ही गुलाम ने फौरन अपना सर अन्दर खींच लिया और दूसरा नौजवान अपनी हालत पर क़ाइम रहा, इस तरह आप के इजलास में बग़ैर किसी गवाह व शहादत के फैसला हो गया कि आक़ा कौन है और गुलाम कौन है, आपने गुलाम को सज़ा दी और उसे यमन भेज दिया। (अश्रए मुबश्शरा)

## हक़ीक़ी मां

हज़रत सहल बिन सअ़द रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि एक मर्तबा दो औरतें एक लड़के के मुतअ़ल्लिक़ झगड़ा करती हुई हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास आईं, दोनों का कहना था कि यह लड़का हमारा है, आप ने पहले उन दोनों को बहुत

समझाया लेकिन जब उन की हंगामा आराई जारी रही तो आप ने हुक्म दिया कि आरा लाओ, उन्हों ने पूछा कि आरा किस लिये मंगा रहे हैं? आप ने फरमाया कि इस लड़के के दो टुक्ड़े करके दोनों को आधा-आधा दूंगा, हक़ीक़त में उस लड़के की जो मां थी, यह सुन कर बेक़रार हो गई और उसके चेहरे से ग़मग़ीनी ज़ाहिर हुई, उस ने निहायत आजिज़ी से अर्ज़ किया, ऐ अमीरुल मोमिनीन मैं इस लड़के को नहीं लेना चाहती, यह इसी औरत का है, आप इसी को दे दीजिये मगर ख़ुदा के वास्ते इस को क़त्ल न कीजिये, आप ने वह लड़का उसी बेक़रार औरत को दे दिया और जो औरत ख़ामोश खड़ी रही आप ने उससे फरमाया कि तुम को शर्म आनी चाहिये कि तुम ने मेरे इजलास में झूठा बयान दिया, यहां तक कि उस औरत ने अपने जुर्म का इक़रार कर लिया। (अशरए मुबश्शरा)

## एक शख़्स की वसिय्यत

हज़रत ज़ैद बिन अर्क़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि एक मर्तबा एक शख़्स ने मरते वक़्त अपने एक दोस्त को दस हज़ार दिरहम दिये और वसिय्यत की कि जब तुमसे और मेरे लड़के से मुलाक़ात हो तो इसमें से जो तुम चाहो वह उसको दे दना। इत्तिफ़ाक़ से कुछ रोज़ बाद उस का लड़का वतन में आ गया, इस मौक़े पर हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उस शख़्स से पूछा कि बताओ तुम मरहूम के लड़के को कितना दोगे? उस ने कहा एक हज़ार दिरहम, आप ने फरमाया कि अब तुम उस को नौ हज़ार दो, इस लिये कि जो तुम ने चाहा वह नौ हज़ार हैं और मरहूम ने यह वसिय्यत की है कि जो तुम चाहो वह उस को दे देना। (अशरए मुबश्शरा)

## सत्तरा (17) ऊंट

हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल करीम की ख़िदमत तीन शख़्स आए, उन के पास 17 ऊंट थे, उन लोगों ने आप से अर्ज़ किया कि इन ऊंटों को आप हमारे दरमियान तक़्सीम कर दें। हम में एक

शख़्स आधे का हिस्सेदार है, दूसरा तिहाई का और तीसरा नवें हिस्से का। मगर शर्त यह है कि पूरे पूरे ऊंट हर शख़्स को मिलें, काट कर तक़्सीम न करें और न किसी से कुछ पैसा दिलाएं।

बड़े-बड़े दानिश्वर जो आप के पास बैठे हुए थे उन्हों ने आपस में कहा यह कैसे हो सकता है कि पूरे-पूरे ऊंट हर शख़्स को मिलें और वह काटे न जाएं, न किसी से कुछ पैसे दिलाए जायें। इस लिये कि जो शख़्स आधे का हिस्सेदार है उसे 17 में से साढ़े आठ (8-1/2) मिलेगा और जो शख़्स तिहाई का हक़दार है वह 5-2/3 ऊंट पाएगा। 17 में से पूरा 6 उसे भी नहीं मिलेगा और जिस का हिस्सा नवां है, 17 में से वह भी दो से कम ही पाएगा। तो एक दो नहीं बल्कि तीन ऊंटों को ज़िब्ह किये बग़ैर 17 ऊंटों की तक़्सीम इन लोगों के दरमियान हरगिज़ नहीं हो सकती।

मगर क़ुर्बान जाइये हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की अक़्ल व दानाई और उन की क़ुव्वते फ़ैसला पर कि आप ने बिला तअम्मुल फ़ौरन उन के ऊंटों को एक लाइन में खड़ा करवा दिया और अपने ख़ादिम से फ़रमाया कि हमारा एक ऊंट इसी लाइन के आख़िर में लाकर खड़ा कर दो, जब आप के ऊंट को मिला कर कुल 18 ऊंट हो गए, तो जो शख़्स आधे का हिस्सेदार था आप ने उसे 18 में से 9 दिया और तिहाई हिस्से वाले को 18 में से 6, फिर नवें के हिस्सेदार को 18 में से दो दिया अपने ऊंट को फिर अपनी जगह पर भिजवा दिया।

इस तरह आप ने न तो कोई ऊंट काटा और न ही किसी को कुछ नक़्द पैसा दिलवाया और 17 ऊंटों को उन की शर्त के मुताबिक़ तक़्सीम फ़रमा दिया जिस पर किसी शख़्स को कोई ऐतराज़ नहीं हुआ।

आप के इस फ़ैसले को देख कर सारे हाज़िरीन दंग हो गए और सब बयक ज़बान पुकार उठे बेशक आप का सीना फ़ज़्ल व कमाल का ख़ज़ीना, हिक्मतो-अदालत का सफ़ीना और इल्मे नुबुव्वत का मदीना है।

كرم الله تعالى وجهه الكريم

# आठ रोटियां

दो आदमी सफर में एक साथ खाना खाने के लिये बैठे, उन में से एक की पांच रोटियां थीं, दूसरे की तीन, इतने में एक शख़्स उधर से गुज़रा, उस ने उन दोनों से सलाम किया, उन्हों ने उस को भी अपने साथ खाने पर बिठा लिया और तीनों ने मिल कर वह सब रोटियां खाईं। खाने से फारिग़ होकर उस तीसरे शख़्स ने आठ दिरहम दिये और कहा कि आपस में बांट लेना, जब वह शख़्स चला गया तो पांच रोटियों वाले ने कहा कि मैं पांच दिरहम लूंगा कि मेरी पांच रोटियां थीं और तुम तीन दिरहम लो कि तुम्हारी तीन ही थीं, तीन रोटी वाले ने कहा नहीं बल्कि आधे दिरहम हमारे हैं और आधे तुम्हारे इस लिये कि हम दोनों ने मिल कर रोटियां खाई हैं लिहाज़ा का दोनों का हिस्सा बराबर चार-चार दिरहम होगा। जब दोनों में मामला तय न हुआ तो इस झगड़े का फैसला कराने के लिये दोनों हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के इज्लास में पहुंचे, आप ने सारा वाक़िआ सुनने के बाद तीन रोटी वाले से फरमाया कि तुम्हारा साथी जो तीन दिरहम तुम को दे रहा है ले लो, इस लिये कि तुम्हारी रोटियां कम थीं, तीन रोटियों वाले ने कहा कि मैं इस ग़ैर मुन्सिफाना फैसले पर राज़ी नहीं हूं। आप ने फरमाया यह ग़ैर मुन्सिफाना फैसला नहीं है, हिसाब से तो तुम्हारा एक ही दिरहम होता है, उस ने कहा आप हिसाब हमें समझा दीजिये तो हम एक ही दिरहम ले लेंगे।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कान खोल कर सुनो! तुम्हारी तीन रोटियां थीं और उस की पांच। कुल आठ रोटियां हुईं। और खाने वाले कुल तीन थे तो उन आठ रोटियों के तीन-तीन टुक्ड़े करो तो कुल 24 टुक्ड़े हुए, अब उन 24 टुक्ड़ों को तीन खाने वालों पर तक़्सीम करो तो आठ-आठ टुक्ड़े सब के हिस्से में आए, यानी आठ टुक्ड़े तुम ने खाए, आठ तुम्हारे साथी ने और आठ उस तीसरे शख़्स ने। अब ग़ौर से सुनो! तुम्हारी तीन रोटियों के तीन-तीन टुक्ड़े

करें तो नौ टुक्ड़े बनते हैं और तुम्हारे साथी की पांच रोटियों तीन-तीन टुक्ड़े करें तो 15 टुक्ड़े बनते हैं, तो तुम ने अपने 9 टुक्ड़ों में से 8 टुक्ड़े खुद खाए और तुम्हारा सिर्फ एक टुक्ड़ा बचा जो उस तीसरे शख़्स ने खाया लिहाज़ा तुम्हारा सिर्फ एक दिरहम हुआ। और तुम्हारे साथी ने अपने 15 टुक्ड़ों में से 8 खुद खाए और उस के 7 टुक्ड़े उस तीसरे शख़्स ने खाए लिहाज़ा 7 हिरहम उस के हुए। यह फैसला सुन कर तीन रोटी वाला हैरान हो गया, मजबूरन उसे ही एक दिरहम लेना पड़ा और दिल में कहने लगा ऐ काश! मैं ने तीन दिरहम ले लिया होता तो अच्छा होता।

एक मर्तबा आप हज़रात फिर बुलंद आवाज़ से दुरूद शरीफ का नज़्राना और हदिया पेश करें।

صلى الله على النبى الامى واله صلى الله عليه وسلم صلاة وسلاما عليك يارسول الله

*सल्लल्लाहु अ़लन् नबिय्यिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि*
*व सल्लम सलातुवं व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।*

## आप की करामतें

अमीरुल मोमिनीन हज़रत सैयिदना अली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से बहुत सी करामतों का ज़ुहूर हुआ है, जिन में से चन्द करामतों को ज़िक्र आप लोगों के सामने किया जाता है।

हज़रत अब्दुर रहमान अल्लामा जामी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि कूफा में एक रोज़ हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने सुब्ह की नमाज़ पढ़ने के बाद एक शख़्स से फरमाया कि फुलां मक़ाम पर जाओ, वहां एक मस्जिद है जिस के पहलू में एक मकान वाक़ा है उस में एक मर्द एक औरत आपस में लड़ते हुए मिलेंगे, उन्हें हमारे पास ले आओ, वह शख़्स वहां पहुंचा तो देखा वाक़ई वह दोनों आपस में झगड़ा कर रहे हैं, आप के हुक्म के मुताबिक़ उन दोनों को साथ ले आया, हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने फरमाया, आज रात तुम दोनों में बहुत लड़ाई हुई नौजवान ने कहा ऐ अमीरुल

मोमिनीन! मैं ने इस औरत से निकाह किया लेकिन जब मैं इसके पास आया तो इस की सूरत से मुझे सख़्त नफ्रत हो गई, अगर मेरा बस चलता तो इस औरत को मैं उसी वक़्त अपने पास से दूर कर देता, इस ने मुझ से झगड़ना शुरू कर दिया और सुब्ह तक लड़ाई होती रही, यहां तक कि आप का भेजा हुआ आदमी हमें बुलाने के लिये पहुंचा, हाज़िरीन को आप ने जाने का इशारा फरमाया, वह चले गए, उसके बाद आप ने उस औरत से पूछा, तुम इस जवान को पहचानती हो? उस ने कहा नहीं, सिर्फ इतना जानती हूं कि यह कल से मेरा शौहर है, आप ने फरमाया अब तू अच्छी तरह जान लेगी, मगर सच सच कहना, झूठ क़तई नहीं बोलना, उस ने कहा कि मैं वादा करती हूं झूठ हरगिज़ नहीं बोलूंगी, आप ने फरमाया कि तुम फुलां की बेटी फुलां हो? उस ने कहा हां हुज़ूर! मैं वही हूं, फिर आप ने फरमाया तुम्हारा चचाज़ाद भाई था जो तुमपर आशिक़ था और तू भी उस से बहुत मुहब्बत करती थी, उस ने इस बात का भी इक़रार किया, फिर आप ने फरमाया तू एक दिन किसी ज़रूरत से रात के वक़्त घर से बाहर निकली तो उसने तुझे पकड़ कर तुझसे ज़िना किया और तू हामिला हो गई, इस बात को तू ने अपने बाप से छुपा रखा, उस ने कहा बेशक ऐसा ही हुआ था, आप ने फरमाया मगर तेरी मां सारा वाक़िआ जानती थी और जब बच्चा पैदा होने का वक़्त आया तो रात थी, तेरी मां तुझे घर से बाहर ले गई, तुझे लड़का पैदा हुआ, तू ने उसे एक कपड़े में लपेट कर दीवार के पीछे डाल दिया, इत्तिफाक़ से वहां एक कुत्ता पहुंच गया, जिस ने उसे सूंघा, तू ने उस कुत्ते को एक पत्थर मारा, जो बच्चे के सर पर लगा जिस से वह ज़ख़्मी हो गया, तेरी मां ने अपने इज़ार बन्द से कुछ कपड़ा फाड़ कर उस के सर को बांध दिया फिर तुम दोनों वापस चली आईं और तुम्हें उस लड़के का कोई पता न चला, उस औरत ने जवाब दिया हां हुज़ूर ऐसा ही हुआ था, मगर ऐ अमीरुल मोमिनीन! इस वाक़िआ को मैं और मेरी मां के अलावा कोई तीसरा नहीं जानता था।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया जब सुबह हुई

तो फुलां क़बीला उस लड़के को उठा कर ले गया और उस की परवरिश की यहां तक कि वह जवान हो गया, कूफ़ा शहर में आया और अब तुझ से शादी कर ली, फिर आप ने उस नौजवान से कहा अपना सर खोलो, उस ने अपना सर खोला तो ज़ख़्म का असर ज़ाहिर था, आप ने फरमाया यह तुम्हारा लड़का है, ख़ुदाए अज़्ज़ व जल्ल ने इसे हराम चीज़ से महफ़ूज़ रखा, फरमाया ले, इसे अपने साथ ले जा, तू इस की बीवी नहीं मां है और यह तेरा शौहर नहीं बेटा है।

(शवाहिदुन नुबुव्वत)

इस वाक़िआ से साफ ज़ाहिर है कि अल्लाह के महबूब बन्दे आम इंसानों की तरह नहीं होते बल्कि उन के अन्दर ऐसा कमाल होता है कि वह लोगों के सारे हालात जानते हैं। मौलाना रूम रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह फरमाते हैं: <u>हाले तू दानंद यक-यक मू-बमू-जांकि पुर हस्तंद अज़ असरारे हू</u>। यानी अल्लाह के महबूब तुम्हारे हाल से ज़र्रा-ज़र्रा आगाह हैं इस लिये कि उन के अन्दर असरारे रब्बानी भरे हुए हैं।

## फ़ुरात में तुग़यानी

कूफ़ा वालों ने आप से अर्ज़ किया ऐ अमीरुल मोमिनीन! इस साल दरियाए फ़ुरात में तुग़यानी के सबब हमारी खेतियां बरबाद हो रही हैं, क्या ही अच्छा हो अगर आप अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करें कि दरिया का पानी कम हो जाए, आप उठ कर मकान के अन्दर तशरीफ ले गए, लोग घर के दरवाज़े पर आपका इन्तिज़ार कर रहे थे कि अचानक आप सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम का जुब्बा पहने, इमामा सर पर बांधे और असाए मुबारक हाथ में लिये हुए बाहर तशरीफ लाए, एक घोड़ा मंगा कर उस पर सवार हुए और फ़ुरात की तरफ रवाना हुए, अवाम व ख़्वास में से बहुत से लोग आप के पीछे-पीछे चले, जब आप फ़ुरात के किनारे पहुंचे तो घोड़े से उतर कर दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी, फिर उठ कर असाए मुबारक हाथ में लिया और फ़ुरात के पुल पर आ गए, उस वक़्त हसनैन करीमैन रज़ियल्लाहु

तआ़ला अन्हुमा उनके साथ थे, आप ने असा से पानी की तरफ इशारा किया तो पानी की सतह एक हाथ कम हो गई, आप ने फरमाया क्या इतना काफी है? लोगों ने कहा नहीं, आप ने फिर असा से पानी की तरफ इशारा किया, पानी एक हाथ फिर कम हो गया, इस तरह जब तीन फिट पानी की सतह नीचे हो गई तो लोगों ने कहा या अमीरुल मोमिनीन! बस इतना काफी है। (शवाहिदुन नुबुव्वत)

सच फरमाया मौलाना रूम रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह ने किः

*यादे ऊ गर मोनिस जानत बुवद*

*हर दो आलम ज़ेरे फरमानत बुवद*

यानी खुदाए तआ़ला की याद अगर तुम्हारी जान की साथी बन जाए तो दोनों आलम तुम्हारे पैरूकार हो जाएं।

## पानी का चश्मा

जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु जंगे सिफ्फीन में मश्गूल थे, आप के साथियों को पानी की सख़्त ज़रूरत पड़ी, लोगों ने बहुत दौड़ धूप की मगर पानी दस्तयाब न हुआ, आप ने फरमाया और आगे चलो, कुछ दूर चले तो एक गिरजा नज़र आया, आप ने उस गिरजा में रहने वाले से पानी के मुतअल्लिक़ दरियाफ्त किया, उस ने कहा यहां से छेः मील के फासले पर पानी मौजूद है, आप के साथियों ने कहा ऐ अमीरुल मोमिनीन! आप हमें इजाज़त दीजिये शायद हम अपनी कुव्वत के ख़त्म होने से पहले पानी तक पहुंच जाएं, आप ने फरमाया इस की हाजत नहीं, फिर अपनी सवारी को पच्छिम की तरफ मोड़ा और एक तरफ इशारा करते हुए फरमाया, यहां से ज़मीन खोदो, अभी थोड़ी ही ज़मीन खोदी गई थी कि नीचे एक बड़ा पत्थर ज़ाहिर हुआ जिसे हटाने के लिये कोई हथियार भी कारगर न हो सका, हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने फरमाया कि यह पत्थर पानी पर वाक़े है, किसी तरह इसे हटाओ, आप के साथियों ने बहुत कोशिश की

मगर उसे अपनी जगह से हिला न सके, अब शेरे ख़ुदा ने अपनी आस्तीन चढ़ा कर, उंगलियां उस पत्थर के नीचे रख कर ज़ोर लगाया तो पत्थर हट गया और उस के नीचे निहायत ठंडा, मीठा और साफ पानी ज़ाहिर हुआ जो इतना अच्छा था कि पूरे सफर में उन्हों ने ऐसा पानी न पिया था, सब ने शिकम सैर होकर पिया और जितना चाहा भर लिया, फिर आप ने उस पत्थर को उठा कर चश्मह पर रख दिया और फरमाया इस पर मिट्टी डाल दो, जब राहिब ने यह देखा तो आप की ख़िदमत में खड़े होकर निहायत अदब से पूछा क्या आप पैग़म्बर हैं? फ़रमाया नहीं, पूछा क्या आप फिरिश्तए मुक़र्रब हैं? फरमाया नहीं, पूछा तो फिर आप कौन हैं? फरमाया कि मैं सैयिदना मुहम्मदुर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम का दामाद और उन का ख़लीफा हूं, राहिब ने कहा कि हाथ बढ़ाइये ताकि मैं आप के हाथ पर इस्लाम क़बूल करूं, आप ने हाथ बढ़ाया तो राहिब ने कहा: اشهد ان لا اله الا الله واشهد ان محمدا رسول الله

आप ने राहिब से दरियाफ्त फ़रमाया क्या वजह है कि तुम मुद्दत से अपने दीन पर क़ाइम थे और अब तुम ने इस्लाम क़बूल कर लिया, उस ने कहा हुज़ूर! यह गिरजा उसी हाथ पर फतह होना था जो इस चटान को हटा कर चश्मह निकाले। और हमारी किताबों में लिखा हुआ है कि इस चटान के हटाने वाला या तो पैग़म्बर होगा और या तो पैग़म्बर का दामाद. जब मैंने देखा कि आप ने इस पत्थर को हटा दिया तो मेरी मुराद पूरी हो गई और मुझे जिस चीज़ का इन्तिज़ार था वह मिल गई। जब राहिब से आप ने यह बात सुनी तो इतना रोए कि आप की दाढ़ी के बाल तर हो गए, फिर फरमाया सब तारीफ ख़ुदाए तआ़ला के लिये है कि मैं उस के यहां भूला बिसरा नहीं हूं बल्कि मेरा ज़िक्र उस की किताबों में मौजूद है। (शवाहिदुन नुबुव्वत)

अल्लाह तआ़ला के महबूब बन्दों को मालूम होता है कि ज़मीन में कहां क्या चीज़ है और यह दर हक़ीक़त इल्मे ग़ैब है जो सरकारे

अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के सदके व तुफ़ैल में उन्हें हासिल होता है।

## आप की ख़िलाफ़त

हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत के बाद दूसरे रोज़ हज़रत तल्हा और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के अलावा मदीना तैयिबा के सब रहने वालों ने आप के हाथ पर बैअत की, आप अमीरुल मोमिनीन हो गए। हज़रत तल्हा, हज़रत ज़ुबैर और हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने बसरा पहुंच कर क़ातिलीने हज़रत उस्माने ग़नी से क़िसास लेने का मुतालेबा आप से शुरू किया और बहुत से लोग इस मुतालेबा में शरीक हो गए, हज़रत अली को इस बात की इत्तिला मिली तो आप भी इराक़ तशरीफ़ ले गए, बसरा रास्ते ही में पड़ता था, यहां "जंगे जुमल" हुई जिस में हज़रत तल्हा और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा शहीद हो गए, इन के अलावा और भी दोनों तरफ़ के आदमी काम आए। बसरा में आप ने 15 रोज़ क़ियाम फ़रमाया और फिर कूफ़ा तशरीफ़ ले गए।

आप के कूफ़ा पहुंचने के बाद हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आप पर ख़ुरूज किया, उन के साथ शामी लश्कर था, कूफ़ा से हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु भी बढ़े और सिफ़्फ़ीन के मक़ाम पर कई रोज़ तक लड़ाई का सिलसिला जारी रहा, फिर यह जंग एक मुआहेदा पर ख़त्म हुई, तरफ़ैन के लोग अपने-अपने मक़ाम को वापस हो गए। हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु शाम को और हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कूफ़ा वापस चले गए।

जब आप कूफ़ा तशरीफ़ लाए तो एक जमाअत जिस को "ख़ारजी" कहा जाता है आप का साथ छोड़ कर अलग हो गई और आप की ख़िलाफ़त से इनकार करके لَا حُكْمَ إِلَّا لِلّٰهِ का नारा बुलंद किया, यहां तक कि आप से जंग करने के लिये लश्कर तैयार कर लिया, हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उनका सर कुचलने के लिये

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा की सर करदगी में एक लश्कर रवाना फरमाया, तरफैन (दोनों गिरोह) में जंग हुई, ख़ारजी शिकस्त खा कर कुछ तो अली मुरतज़ा के लश्कर में शामिल हो गए और कुछ भाग कर नहरवान चले गए और वहां पहुंच कर लूट मार शुरू कर दी, आख़िर शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने वहां पहुंच कर उन को तहे तेग़ (क़त्ल) किया। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा)

## ख़ारजियों की साज़िश

तीन ख़ारजी यानी अब्दुर रहमान बिन मुल्जिम, बरक बिन अब्दुल्लाह और अम्र बिन बुकैर मक्का मुअ़ज़्ज़मा में जमा हुए और आपस में यह फैसला किया कि हम तीनो आदमी तीन अफराद हज़रत अली बिन अबी तालिब, मुआविया बिन अबी सुफियान और अम्र बिन आ़स को क़त्ल कर दें। चुनांचे इब्ने बल्जम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को, बरक ने हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को और अम्र बिन बुकैर ने हज़रत अम्र बिन अल-आ़स रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को एक ही मुअ़य्यन तारीख़ पर क़त्ल करने का अ़हेद किया और यह तीनों बद बख़्त उन शहरों को रवाना हो गए जहां-जहां इन को अपने नामज़द करदा (किये हुए) शख़्स को क़त्ल करना था। उन में सब से पहले इब्ने मुल्जिम कूफा पहुंचा, वहां ख़ारजियों से राब्ता क़ाइम करके अपना इरादा ज़ाहिर किया कि 17 रमज़ान 40 हिजरी की रात में हज़रत अली (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) को शहीद कर देगा।

इमाम सुद्दी फरमाते हैं कि इब्ने मुल्जिम एक ख़ारजिया औरत पर आशिक़ हो गया था जिस का नाम क़ताम था उस ने अपना महर तीन हज़ार दिरहम, एक गुलाम एक बांदी और हज़रत अली (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) का क़त्ल रखा था। फरज़क शाइर ने अपने इन अश्आर में इस की तरफ इशारा किया है।

فَلَمْ اَرَ مَهْرًا سَاقَهٗ ذُوْ سَمَاحَةٍ　　كَمَهْرِ قَطَامٍ بَيِّنٍ غَيْرِ مُعْجَمِ

ثَلٰثَةُ الَافٍ وَّ عَبْـدٌ وَّ قَيْنَةٌ　　وَضَرْبُ عَلِيٍّ بِالْحُسَامِ الْمُصَمَّمِ

فَلَا مَهْرَ اَغْلٰى مِنْ عَلِيٍّ وَّاِنْ غَلَا　　وَلَا فَتْكَ اِلَّا دُوْنَ فَتْكِ ابْنِ مُلْجَمِ

यानी मैं ने किसी सख़ावत करने वाले को ऐसा मह्र देते नहीं देखा जैसा मह्र क़ताम का मुक़र्रर हुआ, तीन हज़ार दिरहम, एक ग़ुलाम, एक बांदी और हज़रते अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का क़त्ल, तो आप के क़त्ल से बढ़कर कोई मह्र नहीं हो सकता। और इब्ने मुल्जिम ने जो आप को धोके से क़त्ल किया तो इस से बढ़ कर कोई क़त्ल नहीं हो सकता।

## आप की शहादत

हज़रत अली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने 17 रमज़ानुल मुबाकर 40 हिजरी को अ़लस्-सुब्ह (सुबह के वक़्त) बेदार होकर अपने बड़े साहिबज़ादे हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से फरमाया आज रात ख़्वाब में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की ज़ियारत हुई, तो मैं ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! आप की उम्मत ने मेरे साथ कजरवी इख़्तियार की है और सख़्त नज़ाअ़ (झगड़ा) बरपा कर दिया है, हुज़ूर ने फरमाया कि तुम ज़ालिमों के लिये दुआ़ करो, तो मैं ने इस तरह दुआ़ की या इलाहल आलमीन! तू मुझे इन लोगों से बेहतर लोगों में पहुंचा दे और मेरी जगह इन लोगों पर ऐसा शख़्स मुसल्लत कर दे जो बुरा हो। अभी आप यह बयान ही फरमा रहे थे कि इब्ने नबाह मोअज़्ज़िन आवाज़ दी *अस्सलातु अस्सलातु*, हज़रत अली नमाज़ पढ़ाने के लिये घर से चले, रास्ते में लोगों को नमाज़ के लिये आवाज़ दे देकर आप जगाते जाते थे कि इतने में इब्ने मुल्जिम आप के सामने आ गया और उस ने अचानक आप पर तल्वार का भर पूर वार किया, वार इतना सख़्त था कि आप की पेशानी कनपटी तक कट गई और तल्वार दिमाग़ पर जाकर ठहरी, शमशीर लगते ही आप ने फरमाया: فُزْتُ بِرَبِّ الْكَعْبَةِ यानी रब्बे कअ़्बा की क़सम मैं कामयाब हो गया।

आप के ज़ख़्मी होते ही चारों तरफ से लोग दौड़ पड़े और कातिल को पकड़ लिया। (तारीखुल खुलफा)

## आप की वसिय्यत

हज़रत उक्बा बिन अबी सहबा कहते हैं कि जब बदबख़्त इब्ने मुलजिम ने आप पर तल्वार का वार किया यानी आप ज़ख़्मी हो गए तो हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रोते हुए आप की ख़िदमत में आए, आप ने उन को तसल्ली दी और फरमाया बेटे! मेरी चार बातों के साथ चार बातें याद रखना, हज़रत इमाम हसन ने अर्ज़ किया वह क्या हैं, फरमाइये, हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इरशाद फरमायाः अव्वल सब से बड़ी तवंगरी (मालदारी) अक्ल की तवानाई है। दूसरे बेवकूफी से ज़्यादा कोई मुफ्लिसी और तंगदस्ती नहीं। तीसरे गुरूर और घमंड सब से सख़्त वहशत है। चौथे सब से अज़ीम खुल्क (आदत) करम है।

हज़रत इमाम हसन ने अर्ज़ किया कि दूसरी चार बातें भी बयान फरमाएं। आप ने इरशाद फरमाया कि अव्वल अहमक की सोहबत से बचो। इस लिये कि नफा पहुंचाने का इरादा करता है लेकिन नुक्सान पहुंच जाता है। दूसरे झूटे से परहेज़ करो, इस लिये कि वह दूर को नज़्दीक और नज़्दीक को दूर कर देता है। तीसरे बख़ील से दूर रहो, इस लिये कि वह तुम से उन चीज़ों को छुड़ा देगा जिन की तुम को हाजत है। चौथे फाजिर से किनारा कश रहो, इस लिये कि वह तुम्हें थोड़ी सी चीज़ के बदले में फरोख़्त कर डालेगा। (तारीखुल खुलफा)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ज़ख़्मी होने के बावजूद जुमा व सनीचर तक बकैदे हयात रहे लेकिन इतवार के रोज़ आप की रूह बारगाहे अक्दस में परवाज़ कर गई। और यह भी रिवायत है कि 19 रमज़ान जुमा की शब में आप ज़ख़्मी हुए और 21 रमज़ान शबे यक्शंबा (इतवार की रात) 40 हिजरी में आप की वफात हुई। إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।*

चार बरस, आठ माह, नौ दिन आप ने उमूरे ख़िलाफत को अंजाम दिया और 63 साल की उम्र में आप का विसाल हुआ। हज़रत इमाम हसन, हज़रत इमाम हुसैन और हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने आप को गुस्ल दिया और आप की नमाज़े जनाज़ा हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने पढ़ाई। आप के दफ़न से फ़ारिग़ होने के बाद अमीरुल मोमिनीन के क़ातिल अब्दुर रहमान बिन मुल्जिम को हज़रत इमाम हसन ने क़त्ल कर दिया फिर उस के हाथ पैर काट कर एक टोकरे में डाल दिया और उस में आग लगा दी जिस से उस की लाश जल कर राख हो गई।

## आप का मज़ारे मुबारक

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को रात के वक़्त दफ़्न किया गया और एक मस्लहत से आप का मज़ार लोगों पर ज़ाहिर नहीं किया गया, इस लिये वह कहां है इस में अक़्वाल मुख़्तलिफ हैं। अबू बकर बिन अयाश कहते हैं कि आप की क़ब्र शरीफ को इस लिये नहीं ज़ाहिर किया गया था कि ख़ारजी बद बख़्त कहीं उस की भी बेहुर्मती न करें। शरीक कहते हैं कि आप के फर्ज़न्द हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आप के जिस्मे मुबारक को दारुल अमारत कूफ़ा से मदीना तैयिबा की तरफ मुन्तक़िल कर दिया था। मुबर्रद ने मुहम्मद बिन हबीब के हवाले से लिखा है कि एक क़ब्र से दूसरी क़ब्र में मुन्तक़िल की जाने वाली पहली नअ़श हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की थी। और इब्ने असाकिर सईद बिन अब्दुल अज़ीज़ से रिवायत करते हैं कि जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु शहीद हो गए तो आप के जिस्मे मुबारक को मदीना मुनव्वरा ले जाने लगे ताकि वहां रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के पहलू मुबारक में दफ़्न करें, नअ़श एक ऊंट पर रखी हुई थी, रात का वक़्त था वह ऊंट रास्ते में किसी तरफ को भाग गया और उस का पता नहीं चला, इसी लिये अहले इराक़ कहते हैं कि आप बादलों में तशरीफ

फरमा हैं। बाज़ लोग कहते हैं कि तलाश व जुस्तुजू के बाद वह ऊंट सर ज़मीने तय में मिल गया और आप के जिस्मे मुबारक को उसी सर ज़मीन में दफ्न कर दिया गया। (तारीखुल खुलफा:120)

## आप की बीवियां और औलाद

हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की वफात के बाद हज़रत अली ने मुख़्तलिफ वक़्तों में आठ औरतों से निकाह किया इस तरह आप की कुल नौ बीवियां हुईं जिन से 15 साहिब ज़ादगान और 17 साहिब ज़ादियां पैदा हुईं, उन सब के अस्माए मुबारका यह हैं:

**बीवियां:** हज़रत सैय्यिदा फातिमा, ख़ौला, लैला, उम्मुल बनीन, उम्मे वलद, अस्मा, उम्मे हबीब, उमामा, उम्मे सअद।

**साहिब ज़ादगान:** हसन, हुसैन, मोहसिन, मुहम्मद अकबर (अलमारूफ मुहम्मद बिन हनफिय्या), अब्दुल्लह अकबर, अबू बकर, अब्बास अकबर, उस्मान, जाफर, अब्दुल्लाह असग़र, मुहम्मद औसत, यहया, औन, उमर अकबर, मुहम्मद असग़र।

**साहिब ज़ादियां:** उम्मे कुल्सूम, ज़ैनबुल कुबरा, रुकैया, उम्मुल हसन, रमलतुल कुबरा, उम्मे हानी, मैमूना, रमलतुस सुग़रा, उम्मे कुल्सूम सुग़रा, फातिमा, उमामा, ख़दीजा, उम्मुल ख़ैर, उम्मे सलमा, उम्मे जाफर, जुमाना, तक़िया। *रिज़्वानुल्लाहि तआला अलैहि अज्मईन।*

## आप के अक़्वाले ज़र्रीं

आप के बहुत से अक़्वाल हैं जो आबे ज़र से लिखने के क़ाबिल हैं, उन में से चन्द यहां पेश किये जाते हैं।

① इल्म माल से बेहतर है। इल्म तेरी हिफाज़त करता है और तू माल की। इल्म हाकिम है और माल महकूम। माल ख़र्च करने से घटता है और इल्म ख़र्च करने से बढ़ता है।

② आलिम वही शख़्स है जो इल्म पर अमल भी करे और अपने अमल

को इल्म के मुताबिक़ बनाए।

③ हलाल की ख़्वाहिश उसी शख़्स में पैदा होती है जो हराम कमाई छोड़ने की मुकम्मल कोशिश करता है।

④ तक़्दीर बहुत गहरा समन्दर है उस में ग़ोता न लगाओ।

⑤ खुश अख़्लाक़ी बेहतरीन दोस्त है और अदब बेहतरीन मीरास है।

⑥ जाहिलों की दोस्ती से बचो कि बहुत से अक़्लमंदों को उन्हों ने तबाह कर दिया।

⑦ अपना राज़ किसी पर ज़ाहिर न करो कि हर खै़र ख़्वाह के लिये कोई खै़र ख़्वाह होता है।

⑧ इन्साफ करने वाले को चाहिये जो अपने लिये पसंद करे वही दूसरों के लिये भी पसंद करे।

صلی اللہ علی النبی الامی والہ صلی اللہ علیہ وسلم صلاۃ وسلاما علیک یارسول اللہ

*सल्लल्लाहु अ़लन् नबिय्यिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सलातुवं व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।*

☆☆☆

# फज़ाइले अहले बैत

## रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम

الحمدلله رب العالمين والصلوة والسلام على سيدالمرسلين وعلىٰ اله الطيبين الطاهرين ۔ فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم بسم الله الرحمن الرحيم۔ إِنَّمَا يُرِيْدُاللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْراً۔ (پ:۲۲،ع:۱) صَدَقَ اللّٰه مولانا العظيم وصدق رسوله النبى الكريم ونحن على ذالك لمن الشاهدين والشاكرين والحمدلله رب العالمين۔

एक मर्तबा हम और आप सब लोग मिल कर बुलंद आवाज़ से मक्का के सरकार मदीना के ताजदार दोनों आलम के मालिक व मुख़्तार जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के दरबारे दुरर बार में दुरूदो-सलाम का नज़्राना और हदिया पेश करें।

صلى الله على النبى الامى واله صلى الله عليه وسلم صلاة وسلاما عليك يارسول الله

*सल्लल्लाहु अलन् नबिय्यिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि*
*व सल्लम सलातुवं व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।*

आज हम अहले बैत किराम अला नबिय्यिना अलैहिमुस सलातु वस्सलाम के मुतअल्लिक़ बयान करने की सआदत हासिल करना चाहते हैं। लिहाज़ा हम्द व सलात और आयते करीमा व दुरूद शरीफ पढ़ने की बरकत हासिल करने के बाद हम आप के सामने अहले बैत की शान में अअ्ला हज़रत इमाम अहले सुन्नत फाज़िले बरैलवी अलैहिर रहमत वर्रिज़्वान के भाई हज़रत हसन ख़ां साहब रहमतुल्लाहि अलैहि की लिखी हुई एक मन्क़बत पेश करते हैं उसे समाअ़त फरमाएं मगर इस से पहले एक मर्तबा और बुलंद आवाज़ से दुरूद शरीफ पढ़ें.........

*किस ज़बान से हो मदह ख़्वाने अहले बैत*
*मदह गोए मुस्तफा है मदह ख़्वाने अहले बैत*

*उन की पाकी का खुदाए पाक करता है बयां*
*"आयए ततहीर" से ज़ाहिर है शाने अहले बैत*

*उन के घर में बे इजाज़त जिब्रील आते नहीं*
*कद्र वाले जानते हैं इज़्ज़ो-शाने अहले बैत*

*रज़्म का मैदां बना है जल्वागाहे हुस्नो-इश्क़*
*करबला में हो रहा है इम्तिहाने अहले बैत*

*फूल ज़ख़्मों के खिलाए हैं हवाए दोस्त ने*
*ख़ून से सींचा गया है गुलिस्ताने अहले बैत*

*हूरें करती हैं उरूसाने शहादत का सिंगार*
*ख़ूब रू दुल्हा बना है हर जवाने अहले बैत*

*ऐ शबाबे फ़स्ले गुल यह चल गई कैसी हवा*
*कट रहा है लहलहाता बोस्ताने अहले बैत*

*किस शकी है हुकूमत हाए क्या अंधेर है*
*दिन दहाड़े लुट रहा है कारवाने अहले बैत*

*फातिमा के लाडले का आख़िरी दीदार है*
*हश्र का हंगामा बरपा है मियाने अहले बैत*

*वक़्ते रुख़्सत कह रहा है ख़ाक में मिलता सुहाग*
*लो सलाम आख़िरी ऐ बेवग़ाने अहले बैत*

*घर लुटाना सर कटाना कोई तुझ से सीख जाए*
*जाने आलम हो फ़िदा ऐ ख़ानदाने अहले बैत*

*बे अदब गुस्ताख़ फ़िरक़े को सुना दे ऐ 'हसन'*
*यूं कहा करते हैं सुन्नी दास्ताने अहले बैत*

एक मर्तबा फिर बुलंद आवाज़ से दुरूद शरीफ पढ़े: اللهم صل على سيدنا ومولانا محمد واله واصحابه وبارك وسلم *अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिवं व आलिही व अस्हाबिही व बारिक व सल्लिम।*

बिरादराने मिल्लत! शुरू में जिस आयते करीमा के पढ़ने का शर्फ हम ने हासिल किया है यानी: إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيرًا इस का तर्जमा यह है: ऐ अहले बैत यानी ऐ नबी के घर वालो! अल्लाह तआला तो यही चाहता है कि तुम से हर नापाकी दूर फरमा दे और तुम्हें पाक करके ख़ूब सुथरा कर दे।

इस आयते करीमा में सरकारे आज़म सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के अहले बैत किराम की अज़मत व फज़ीलत और उन के दर्जात और मरातिब का वाज़ेह तौर पर बयान है।

हज़रत इमाम अबू जाफर मुहम्मद बिन जरीर तबरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इस आयते करीमा की तफ्सीर में फरमाते हैं कि ऐ आले मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) अल्लाह तआला चाहता है कि तुम से बुरी बातों और फुहश चीज़ों को दूर रखे और तुम्हें गुनाहों के मैल कुचैल से साफ रखे। (बरकाते आले रसूल तर्जमा अश्शर्फुल मोवब्बद लिआलि मुहम्मद लिल-अल्लामा अन-नबहानी रहमतुल्लाहि अलैहि:31)

और सईद बिन कतादा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है उन्हों ने फरमाया कि इस आयते करीमा से अहले बैत मुराद हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने हर बुराई से पाक रखा और अपनी मख़्सूस रहमत से नवाज़े।

(बरकाते आले रसूल:31)

हज़रत अल्लामा इब्ने अतिया फरमाते हैं कि इस आयते मुबारका में जो रिज्स का लफ्ज़ है वह गुनाह, अज़ाब, निजासतों और नकाइस के मआनी पर बोला जाता है। तो अल्लाह तआला ने यह सारी चीज़ें अपने प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के अहले बैत से दूर फरमा दीं।

(बरकाते आले रसूल:32)

और इमाम ज़ुहरी ने फरमाया कि रिज्स नापसंदीदा चीज़ को कहते हैं, चाहे वह अमल हो या ग़ैर अमल। तो मतलब यह हुआ कि अल्लाह तआला ने अहले बैत किराम से हर किस्म की ना पसंदीदा चीज़ें दूर फरमा दीं।

(बरकाते आले रसूल:32)

اَللّٰهُمَّ هٰؤُلَاءِ اَهْلُ بَيْتِىْ فَاَذْهِبْ عَنْهُمُ الرِّجْسَ وَطَهِّرْهُمْ تَطْهِيْرًا۔ यानी या इलाही! यह मेरे अहले बैत हैं, इन से हर नापाकी दूर फ़रमा और इन्हें पाक करके ख़ूब सुथरा कर दे। हज़रत उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने चादर उठाई ताकि वह भी उन के साथ दाख़िल हो जायें तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उन के हाथ से चादर खींच ली, उन्हों ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैं भी आप लोगों के साथ हूं हुज़ूर ने फरमायाः اِنَّكِ مِنْ اَزْوَاجِ النَّبِىِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلٰى خَيْرٍ यानी तुम नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की अज़्वाज में से हो भलाई पर हो। (बरकाते आले रसूलः34)

जो लोग कि अहले बैत से पंजतन पाक मुराद लेते हैं वह अपने दावे की दलील में यह भी पेश करते हैं कि हसन और सहीह तरीक़ों से मरवी है। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम इस आयते मुबारका के नाज़िल होने के बाद जब फज्र की नमाज़ के लिये तशरीफ ले जाते तो हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के मकान के पास से गुज़रते हुए फरमातेः اَلصَّلٰوةُ يَا اَهْلَ الْبَيْتِ यानी ऐ अहले बैत! नमाज़ पढ़ो, फिर आयते करीमाः اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ आख़िर तक तिलावत फरमाते। हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है, वह फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम इस आयत के नाज़िल होने के बाद चालीस रोज़ तक सुब्ह के वक़्त हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के दरवाज़े पर तशरीफ लाए और फरमायाः اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الْبَيْتِ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ۔ اَلصَّلٰوةُ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ यानी ऐ अहले बैत! तुम पर खुदाए तआला की सलामती रहमत और बरकत हो। नमाज़ पढ़ो तुम लोगों पर अल्लाह तआला रहम फरमाए। फिर आयते करीमाः اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ तिलवात फरमाई। और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि हुज़ूर का यह तरीक़ा सात महीने तक जारी रहा और एक रिवायत में हैं कि आठ महीने तक। और यह हुज़ूर

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की जानिब से तसरीह हो गई कि आयते मुबारका में अहले बैत से मुराद पंजतन पाक हैं।

(बरकाते आले रसूल:35)

बहर हाल अहले बैत से उम्महातुल मोमिनीन मुराद लेने वाले और पंजतन पाक मुराद लेने वाले दोनों गिरोह के पास दलाइल हैं लिहाज़ा जुमहूर उलमाए उम्मत ने फरमाया कि आयते मुबारका में अहले बैत से उम्महातुल मोमिनीन और पंजतन पाक दोनों मुराद हैं। और यह उन्हों ने इस लिये फरमाया ताकि सारे दलाइल पर अमल हो जाए।

इस सिलसिले में हज़रत सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना सैय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन साहब मुरादाबादी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने सवानेहे कर्बला में बहुत ख़ूब लिखा है, वह फरमाते हैं कि दौलत सराए अक़्दस में सुकूनत रखने वाले इस में दाख़िल हैं क्यों कि वहीं इसके मुख़ातब हैं, चूंकि अहले बैत नसब का मुराद होना मख़्फ़ी था इस लिये आं सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अपने इस फेअ्ले मुबारक से (यानी चादर में लिप्टा कर) बयान फरमा दिया कि मुराद अहले बैत से आम हैं, ख़्वाह बैते मस्कन के अहल हों जैसे कि अज़्वाज या बैते नसब के अहल बनी हाशिम व मुत्तलिब।

चुनांचे इमाम सअ्लबी ने फरमाया कि बाज़ हज़रात ने कहा अहले बैत से मुराद बनी हाशिम हैं। इस लिये कि बैत से मुराद नसब है। लिहाज़ा हज़रत अब्बास, हुज़ूर के दूसरे मुसलमान चचा और चचा ज़ाद भाई सब अहले बैत में से होंगे। यह हज़रत ज़ैद बिन अर्क़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का क़ौल है। जैसा कि तफ्सीरे ख़ाज़िन वग़ैरा में है।

(बरकाते आले रसूल:41)

और अल्लामा ख़तीब ने अपनी तफ्सीर में इस से भी ज़्यादा आम फरमाया। वह लिखते हैं कि अहले बैत में इख़्तिलाफ़ है और बेहतर वह है जो इमाम बक़ाई ने फरमाया कि अहले बैत वह सब हज़रात हैं जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से ख़ास वाबस्तगी

रखते हैं। मर्द, औरतें अज़्वाजे मुतह्हरात, कनीज़ें और क़रीबी रिश्तेदार। इन में से जो शख़्स ज़्यादा क़रीब होगा और रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से ख़ास तअल्लुक़ रखने वाला होगा, वह मुराद होने के ज़्यादा लाइक़ है। (बरकाते आले रसूल:41)

हज़रत इमाम बक़ाई के क़ौल की ताईद हदीस शरीफ से भी होती है कि तबरानी वग़ैरा कई मोहद्दिसीन की रिवायत में यूं हैं कि हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने चादर उठा कर अपना सर अन्दर दाख़िल कर लिया और अर्ज़ किया या रसूल्लाह! मैं भी आप लोगों के साथ हूं तो हुज़ूर ने दो मर्तबा फरमायाः إنكِ على خير यानी तुम भलाई पर हो। (बरकाते आले रसूल:38)

और बैहक़ी वग़ैरा की रिवायत में है कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली, हज़रत फातिमा और हसनैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम को अपनी काली कमली में लिप्टाया और आयते तत्हीर तिलावत फरमाई तो हज़रत वासिला बिन अल-अस्क़अ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो अस्हाबे सुफ्फा में से हैं, उन्हों ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैं भी आप के अहल में से हूं तो हुज़ूर रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमायाः وانت من اهلي यानी हां तुम भी मेरे अहल में से हो। और एक रिवायत में है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमायाः سلمان منا اهل البيت यानी सलमान हम में से अहले बैत में से हैं। (बरकाते आले रसूल:42)

इसी लिये इमामुल आरिफीन शेख़े अक्बर मुहीउद्दीन बिन अरबी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फुतूहाते मक्किया के उन्नीसवें बाब में तहरीर फरमाते हैं कि क़ियामत तक सादाते किराम, हज़रत फातिमतुज़ ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की औलाद और जो अहले बैत में से हैं मसलन हज़रत सलमान फारसी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सब इस आयत के हुकम में दाख़िल हैं।

हज़रत अल्लामा नब्बहानी रहमतुल्लाहि अलैह तहरीर फरमाते हैं कि

शेखे अक्बर सूफिया के इमाम हैं, उन का इरशाद हुज्जत की हैसियत रखता है। (अशरफुल मोअब्बद लिआलि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमः13)

एक बार हम सब मिल कर बुलंद आवाज़ से रहमते आलम नबीए अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की बारगाहे बेकस पनाह में दुरूदो-सलाम का नज़्राना और हदिया पेश करें।

صلی اللہ علی النبی الامی وآلہ صلی اللہ علیہ وسلم صلاۃ وسلاما علیک یارسول اللہ

*सल्लल्लाहु अलन् नबिय्यिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सलातुवं व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।*

सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के सारे अहले बैत चाहे अहले बैत नसब हों या अहले बैत सुक्ना या अहले बैत विलादत या और किसी और को अहले बैत में शामिल कर लिया गया हो सब इज़्ज़त व अज़्मत वाले हैं लेकिन हुज़ूर जिन को हर ख़ास मौक़ा पर अलाहेदा करके फरमाते हैं वह यही चार नुफूसे कुदसिया हज़रत अली, हज़रत फातिमा, हज़रत हसन, और हज़रत हुसैन हैं रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम इसी लिये अहले बैत का लफ्ज़ इन्हीं चार हज़रात के लिये शाए व मश्हूर है। अश्अतुल लमआतः4/681 में हैः *"इतलाके अहले बैत बरीं चहार तने पाक शाए व मश्हूर अस्त"*।

अब आप हज़रात एक आयते करीमा और मुलाहेज़ा फरमा लें जिस से अहले बैते किराम की फज़ीलत व मंज़िलत ज़ाहिर होती है। पारा3 रुकूअ् 13 में हैः فَمَنْ حَاجَّكَ فِيهِ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ أَبْنَاءَنَا وَأَبْنَاءَكُمْ وَنِسَاءَنَا وَنِسَاءَكُمْ وَأَنْفُسَنَا وَأَنْفُسَكُمْ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَعْنَتَ اللَّهِ عَلَى الْكَاذِبِينَ यानी ऐ महबूब! फिर जो लोग तुम से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में झगड़ा करें बाद इसके कि तुम्हारे पास उस का इल्म आ चुका है तो उन से फरमा दो कि आओ हम बुलाएं अपने बेटों को और तुम्हारे बेटों को और अपनी औरतों और तुम्हारी औरतों को और अपनी जांनों और तुम्हारी जानों,को फिर हम मुबाहला करें यानी गिड़ गिड़ा कर दुआ मांगें तो झूठों पर अल्लाह की लअ्नत डालें।

इस आयते मुबारका का शाने नुज़ूल यह है कि नज्रान के ईसाइयों का एक वफ्द रसूले काइनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से मुनाज़रा करने के लिये मदीना तैयिबा आया और हुज़ूर से कहा कि आप गुमान करते हैं कि ईसा अलैहिस्सलाम अल्लाह के बन्दे हैं, आप ने फरमाया हां, बेशक वह अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल और उस के कलिमा हैं जो कुंवारी मरयम की तरफ इल्क़ा किये गए, यह सुन कर ईसाई बहुत गुस्से में हुए और कहने लगे कि ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम)! क्या आप ने कभी बे बाप इंसान देखा है? इस से उन का मतलब यह था कि हज़रत ईसा अल्लाह के बेटे हैं (मआज़ल्लाह) हुज़ूर अलैहिस् सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि हज़रत ईसा तो सिर्फ बग़ैर बाप ही के पैदा किये गए और हज़रत आदम अलैहिस् सलातु वस्सलाम तो मां और बाप दोनों के बग़ैर पैदा किये गए तो जब उन्हें अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का बन्दा मानते हो तो हज़रत ईसा अलैहिस् सलाम को अल्लाह का बन्दा मानने में क्या तअज्जुब है?

सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने वाज़ेह दलील के साथ हक़ को बयान फरमाया मगर ईसाई बराबर झगड़ते रहे और अपनी मुआनिदाना रविश से बाज़ न आए तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने यह आयते करीमा नाज़िल फरमाई और नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को हुक्म फरमाया कि ईसाइयों को मुबाहला की दावत दो।

जब रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के फरमान के मुताबिक़ नज्रान के ईसाइयों को मुबाहला की दावत दी और आयते करीमा पढ़ कर सुनाई तो ईसाई कहने लगे कि हम ग़ौर और मश्वरा कर लें फिर कल आप को जवाब देंगे, जब वह लोग जमा हुए तो उन्हों ने अपने सब से बड़े पादरी और साहिबुर राय शख़्स आक़िब से कहा कि ऐ अब्दुल मसीह! इस मामले में आप की क्या राय है? उस ने कहा ऐ जमाअते नसारा! तुम पहचान चुके हो

कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम) नबीए मुर्सल ज़रूर हैं तो अगर तुम ने उन से मुबाहला किया तो सब हलाक हो जाओगे, अब अगर ईसाइयत पर क़ाइम रहना चाहते हो तो उन्हें छोड़ दो और घर को लौट चलो।

यह मश्वरा करने के बाद ईसाई हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो उन्हों ने देखा कि हुज़ूर की गोद में इमाम हुसैन हैं और दस्ते मुबारक में इमाम हसन का हाथ है और हज़रत अली व हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा हुज़ूर के पीछे हैं और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम इन लोगों से फ़रमा रहे हैं कि जब मैं दुआ़ करूं तो तुम सब आमीन कहना, नज्रान के सब से बड़े पादरी अब्दुल मसीह ने जब इन हज़रात को देखा तो कहने लगा ऐ जमाअ़ते नसारा! اِنِّی لَاَرٰی وُجُوْهًا لَوْ سَاَلُوا اللّٰهَ اَنْ یُّزِیْلَ جَبَلًا مِّنْ مَّکَانِهٖ لَاَزَالَهٗ यानी बेशक मैं ऐसे चेहरे देख रहा हूं कि अगर यह लोग अल्लाह तआ़ला से पहाड़ को हटाने की दुआ़ करें तो अल्लाह तआ़ला पहाड़ को उस की जगह से हटा दे। (तफ्सीरे ख़ाज़िन:1/360)

फिर पादरी ने कहा कि अगर इन से मुबाहला करोगे तो हलाक हो जाओगे और क़ियामत तक रूए ज़मीन पर कोई ईसाई बाक़ी न रहेगा।

ईसाइयों ने पादरी की बात मान ली और जिज़्या देना मन्ज़ूर कर लिया मगर मुबाहला के लिये हरगिज़ तैयार न हुए। रसूले काइनात सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया क़सम है उस ज़ात की कि जिस के क़ब्ज़ए क़ुद्रत में मेरी जान है कि नज्रान वालों पर अज़ाब बिल्कुल क़रीब आ चुका था, अगर वह हम से मुबाहला करते तो बन्दरों और सुवरों की सूरत में मस्ख़ कर दिये जाते और अज़ाबे इलाही की आग से जंगल जल जाते। नज्रान और वहां के रहने वाले चरिन्द व परिन्द तक नेस्त व नाबूद हो जाते और एक साल की मुद्दत में तमाम रूए ज़मीन के ईसाई हलाक व बरबाद हो जाते। (तफ्सीर ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

ग़ौर कीजिये कि फ़रमाने ख़ुदावन्दी के मुताबिक़ ईसाइयों से तय

यह हुआ था कि तुम अपने बेटों को लेकर निकलो और हम अपने बेटों को। तुम अपनी औरतों को लेकर मैदान में आओ और हम अपनी औरतों को और तुम खुद भी आओ और हम भी आएं। इस मौके पर सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने पूरी दुनियाए इस्लाम में से जिन पाक और बरगुज़ीदा हस्तियों का इन्तिख़ाब फरमाया वह हज़रत अली, हज़रत फातिमा, हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन हैं रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम।

तिर्मिज़ी शरीफ की हदीस है हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के बारे में इरशाद फरमायाः هٰذَانِ اِبْنَایَ यानी यह दोनों मेरे बेटे हैं। (मिश्कात शरीफ:570)

यही वजह है कि जब मुबाहला के लिये अपने बेटों को लेकर मैदान में निकलना हुआ तो हसनैन करीमैन को लेकर आए और इस सबब से हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा आज तक इब्ने रसूलुल्लाह कहे जाते हैं और कियामत तक ऐसे ही कहे जायेंगे।

मुस्लिम शरीफ की हदीस है हज़रत सअ़द बिन वक़्क़ास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो अशरए मुबश्शरा में हैं उन का बयान है कि रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जब इन हज़रात को हमराह लेकर मुबाहला के लिये मकान से बाहर निकले तो यह फरमायाः اَللّٰهُمَّ هٰؤُلَاءِ اَهْلُ بَیْتِیْ यानी ऐ अल्लाह! यह लोग मेरे अहले बैत हैं।

(मिश्कात शरीफ:568)

एक मर्तबा फिर आप हज़रात निहायत खुलूस व मुहब्बत के साथ सरककारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और उन की आल व अस्हाब और अहले बैते किराम पर बुलंद आवाज़ से दुरूदो-सलाम का नज़राना पेश करें।

صلی اللہ علی النبی الامی والہ صلی اللہ علیہ وسلم صلاۃ وسلاما علیک یارسول اللہ

*सल्लल्लाहु अ़लन् नबिय्यिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सलातुवं व सलामन् अ़लैक या रसूलल्लाह।*

अहले बैते किराम की शान में और भी आयाते मुबारका नाज़िल हुई हैं। तफ्सीरे ख़ाज़िन और मआ़लिमुत तंज़ील वग़ैरा में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा से रिवायत है कि हसनैन करीमैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा बीमार हुए तो सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम और सहाबए किराम अ़यादत के लिये गए, किसी ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को यह मश्वरा दिया कि आप नज़्र मानें, अगर ख़ुदाए तआ़ला उन को शिफा अता फरमाए तो नज़्र पूरी कर दें। हज़रत अली ने तीन रोज़े रखने की मिन्नत मानी। इसी तरह हज़रत सैय्यिदा फातिमा और आप की कनीज़ फिज़्ज़ा ने भी तीन-तीन रोज़े रखने की नज़्र मानी, रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुम। ख़ुदाए अ़ज़्ज़ व जल्ल ने हज़राते हसनैन को शिफा अता फरमाई, अब नज़्र पूरी करने का वक़्त आया, सब लोगों ने रोज़े रखे, मगर काशानए हैदरी में कोई चीज़ रोज़ा इफ्तार करने के लिये न थी, हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु एक यहूदी के यहां से थोड़ा जौ क़र्ज़ के तौर पर बिलऐवज़ उज्रत लाए, जौ का एक तिहाई हिस्सा पीसा गया और शाम के वक़्त रोटियां तैयार की गईं। जब इफ्तार का वक़्त आया और रोटियां खाने के लिये सामने रखी गईं तो अचानक दरवाज़े पर एक शख़्स ने आवाज़ दी कि ऐ अहले बैते रसूलुल्लाह! मैं मिस्कीन हूं, भूका हूं, कुछ अल्लाह के नाम पर दीजिये। तो सब रोटियां उसे दे दी गईं और ख़ुद सादा पानी पी-पी कर सब लोगों ने रोज़ा इफ्तार किया। फिर दूसरे दिन एक तिहाई जौ की रोटियां बनाई गईं और जब अहले बैते किराम इफ्तार के लिये बैठे तो फिर दरवाज़े पर दस्तक हुई, आवाज़ आई कि ऐ रसूलुल्लाह के घराने वालो! मैं भूका हूं, यतीम हूं तो दूसरे रोज़ भी सब रोटियां उठा कर उसे दे दी गईं और सिर्फ पानी से रोज़ा

इफ्तार कर लिया गया। तीसरे दिन फिर रोज़ा रखा गया और मा बक़िया तिहाई जौ की रोटियां बनाई गईं और जब इफ्तार के वक़्त सब लोग खाने के लिये बैठे तो फिर एक साइल ने आवाज़ दी कि ऐ अहले बैते किराम! मैं असीर हूं, भूका हूं, तो तीसरे दिन भी जब कुल रोटियां उसे दे दी गईं और सादा पानी पी-पी कर रोज़ा इफ्तार किया गया तो अहले बैते रसूलुल्लाह की शान में यह आयाते मुबारका नाज़िल हुईं: وَيُطْعِمُونَ الطَّعَامَ عَلَىٰ حُبِّهِ مِسْكِينًا وَيَتِيمًا وَأَسِيرًا إِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللَّهِ لَا نُرِيدُ مِنكُمْ جَزَاءً وَلَا شُكُورًا यानी और वह लोग खाना खिलाते हैं उस की मुहब्बत पर मिस्कीन, यतीम और क़ैदी को। और उन से कहते हैं कि हम तुम्हें अल्लाह की रज़ा व खुश्नूदी के लिये खिलाते हैं। न हम तुम से कोई बदला चाहते हैं और न शुक्रिया। (पारा:29, रुकूअ़:18)

अल्लाह! अल्लाह! यह है सख़ावत अहले बैते रसूलुल्लाह की जिस की मिसाल दुनिया में नहीं मिलती कि तीन दिन मुसलसल सिर्फ पानी पी-पी कर रोज़ा इफ्तार करते हैं मगर साइलों को अपने दरवाज़े से महरूम नहीं फरमाते और उन पर यह बात भी वाज़ेह कर देते हैं कि इस भलाई का वह उन से कोई बदला नहीं तलब करेंगे बल्कि वह यह भी नहीं चाहते कि उन का शुक्रिया अदा किया जाए और लोगों के सामने उन की सख़ावत का चर्चा किया जाए इस लिये कि यह काम उन्हों ने ख़ालिसन लि-वज्हिल्लाह सिर्फ अपने रब्बे करीम की रज़ा और खुश्नूदी हासिल करने के लिये किया है।

## अहले बैत और अहादीसे करीमा

अहले बैते किराम की तारीफ व तौसीफ और उन की मदह व सताइश में सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की बहुत सी अहादीस वारिद हैं, मुस्लिम शरीफ में है, सहाबिए रसूल हज़रत ज़ैद बिन अर्क़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु फरमाते हैं कि एक रोज़ रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने मक्का मुअज़्ज़मा

और मदीना तैय्यिबा के दरमियान (मक़ामे जोहफा में) ग़दीरे ख़ुम के पास खड़े होकर खुत्बा फरमाया तो पहले आप ने अल्लाह तआ़ला की हम्दो-सना बयान की फिर आप ने हम लोगों को वअ़ज़ो-नसीहत फरमाई उस के बाद आप ने इरशाद फरमाया। (अश्अ़तुल लमूआ़त:4/685 में है कि *ग़दीर हौज़ आब व ख़ुम नामे आं मौज़अ़ अस्त।*)

ऐ लोगो! मैं इंसान हूं, क़रीब है कि मेरे रब का भेजा हुआ फिरिश्ता यानी मलकुल मौत मेरे पास आए तो मैं खुदाए तआ़ला के हुक्म को कबूल करूं وَاَنَا تَارِكٌ فِيكُمُ الثَّقَلَيْنِ और मैं तुम में दो नफीस और गरां क़द्र चीज़ें छोड़े जा रहा हूं اَوَّلُهُمَا كِتَابُ اللّٰهِ فِيهِ الْهُدٰى وَالنُّوْرُ उन में से पहली चीज़ अल्लाह की किताब यानी कुरआन मजीद है जिस में हिदायत और नूर है तो खुदाए तआ़ला की किताब पर अमल करो और उसे मज़बूती से थाम लो।

रावीए हदीस हज़रत ज़ैद बिन अर्क़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु फरमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने कुरआने पाक के बारे में लोगों को उभारा और रग़बत दिलाई फिर उस के बाद आप ने इरशाद फरमाया: وَاَهْلُ بَيْتِىْ اُذَكِّرُكُمُ اللّٰهَ فِىْ اَهْلِ بَيْتِىْ اُذَكِّرُكُمُ اللّٰهَ فِىْ اَهْلِ بَيْتِىْ यानी और दूसरी गरां क़द्र चीज़ मेरे अहले बैत हैं, मैं तुम्हें अहले बैत के बारे में अल्लाह की याद दिलाता हूं और उस से डराता हूं। और इस जुम्ला को हुज़ूर ने दो बार फरमाया। मतलब यह है कि मैं ताकीद के साथ तुम लोगों को वसिय्यत करता हूं कि मेरे अहले बैत के बारे में अल्लाह तआ़ला से डरो उन के हक़ की अदाइगी में हरगिज़ कोताही न करो। (मिश्कात शरीफ:568)

और तिर्मिज़ी शरीफ में है हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु फरमाते हैं कि मैं ने हज्जतुल विदाअ़ में अरफा के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को इस हाल में देखा कि आप ऊंटनी पर सवार थे और खुत्बा दे रहे थे, मैं ने सुना आप यह फ़रमा रहे थे: يَا اَيُّهَا النَّاسُ اِنِّىْ تَرَكْتُ فِيكُمْ مَا اِنْ اَخَذْتُمْ بِهٖ لَنْ تَضِلُّوْا كِتَابَ اللّٰهِ وَعِتْرَتِىْ اَهْلَ بَيْتِىْ यानी ऐ लोगो! मैं

ने तुम्हारे दरमियान वह चीज़ छोड़ी है कि अगर तुम उस को पकड़े रहोगे तो कभी गुमराह न होगे और वह चीज़ एक तो अल्लाह की किताब है और दूसरे मेरी औलाद व ज़ुर्रियत मेरे अहले बैत।

(मिश्कात शरीफ़:569)

और तबरानी शरीफ में रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने फरमायाः لَا يُؤْمِنُ عَبْدٌ حَتّٰى اَكُوْنَ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِنْ نَّفْسِهٖ وَتَكُوْنَ عِتْرَتِىْ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِنْ عِتْرَتِهٖ وَاَهْلِىْ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِنْ اَهْلِهٖ وَذَاتِىْ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِنْ ذَاتِهٖ यानी कोई बन्दा मोमिने कामिल नहीं हो सकता जब तक कि मुझे अपनी जान से, मेरी औलाद (हसनैन वग़ैरा) को अपनी औलाद से, मेरे अहल को अपने अहल से और मेरी ज़ात को अपनी ज़ात से ज़्यादा महबूब न रखे। (अश्शर्फ़ुल मोअब्बद:85)

और इमामे अहमद रिवायत करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा के हाथों को पकड़ कर फरमायाः مَنْ اَحَبَّنِىْ وَاَحَبَّ هٰذَيْنِ وَاُمَّهُمَا وَاَبَاهُمَا كَانَ مَعِىْ فِىْ دَرَجَتِىْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ यानी जिस ने मुझ से मुहब्बत रखी और इन दोनों से और इन के वालिदैन से मुहब्बत रखी तो वह क़ियामत के दिन मेरे साथ मेरे दर्जा में होगा। (अश्शर्फ़ुल मोअब्बद:86)

यानी पंजतन पाक से मुहब्बत रखने वाला बसूरते ख़िदमतगार हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के दर्जा में दिखाई देगा, यह मतलब नहीं कि उसका मक़ाम भी वही होगा।

और हज़रत अबू ज़र्र रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने कअ़्बा शरीफ का दरवाज़ा पकड़ कर फरमाया कि मैं ने नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम को फरमाते हुए यह सुना है किः اَلَا اِنَّ مَثَلَ اَهْلِ بَيْتِىْ فِيْكُمْ مَثَلُ سَفِيْنَةِ نُوْحٍ مَنْ رَكِبَهَا نَجَا وَمَنْ تَخَلَّفَ عَنْهَا هَلَكَ यानी आगाह हो जाओ कि मेरे अहले बैत तुम लोगों के लिये नूह (अलैहिस्सलाम) की कश्ती के मानिन्द हैं, जो शख़्स कश्ती में सवार हुआ उस ने नजात पाई और जो कश्ती में सवार होने से पीछे रह गया वह हलाक हुआ।

(मिश्कात शरीफ़:573)

और हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः أَصْحَابِي كَالنُّجُومِ فَبِأَيِّهِمْ اقْتَدَيْتُمْ اهْتَدَيْتُمْ यानी मेरे सहाबा सितारों के मानिन्द हैं, तो उन में से तुम जिस की इक़्तिदा करोगे हिदायत पाओगे। (मिश्कात शरीफ़:554)

हज़रत अल्लामा फ़ख़रुद्दीन राज़ी अलैहिर रहमत वर-रिज़्वान फ़रमाते हैं कि बिहम्‌-दिल्लाहि तआला हम अहले सुन्नत व जमाअ़त मुहब्बते अहले बैत की कश्ती पर सवार हैं और हिदायत के चमकते हुए सितारे सहाबए किराम रिज़्वानुल्लाहि तआला अलैहिम अज्मईन से हिदायत पाए। लिहाज़ा हम लोग क़ियामत की हवल नाकियों से और जहन्नम के अज़ाब से महफ़ूज़ रहेंगे। (मिर्क़ात शरह मिश्कात शरीफ़:5/610)

मतलब यह है कि जो लोग मुहब्बते अहले बैत की कश्ती में सवार नहीं हुए जैसे ख़ारजी कि उन्हों ने मुहब्बत के बजाए अहले बैत से दुश्मनी की तो वह हलाक हो गए और राफ़ज़ी जो उस कश्ती में सवार तो हुए मगर हिदायत के सितारे सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम से हिदायत नहीं हासिल किये तो वह भी कुफ्र व ज़लालत (गुमराही) की तारीकी में खो गए।

और हदीसे सहीह में है जिसे बहुत से अहले सुनन ने रिवायत किया है कि जब अबू लहब की साहिब ज़ादी मक्का मुअ़ज़्ज़मा से हिज्रत करके मदीना तैयिबा तशरीफ़ लाईं तो कुछ लोगों ने उन से कहा कि तुम्हारी हिज्रत तुम्हें बेनयाज़ नहीं करेगी इस लिये कि तुम जहन्नम के ईंधन की बेटी हो, उन्हों ने यह बात रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से बयान की तो आप बहुत सख़्त नाराज़ हुए फिर मिम्बर पर रौनक़ अफ़रोज़ हुए और फ़रमायाः مَا بَالُ أَقْوَامٍ يُؤْذُونَنِي فِي نَسَبِي وَذَوِي رَحِمِي أَلَا وَمَنْ آذَى نَسَبِي وَذَوِي رَحِمِي فَقَدْ آذَانِي وَمَنْ آذَانِي فَقَدْ آذَى اللّٰهَ यानी उन लोगों का क्या हाल है जो मुझे मेरे नसब और मेरे रिश्तेदारों के बारे में अज़िय्यत (तक्लीफ़) देते हैं, ख़बरदार! जिस ने मेरे नसब और रिश्तेदारों

को अज़िय्यत दी उस ने मुझे अज़िय्यत दी और जिस ने मुझे अज़िय्यत दी उस ने अल्लाह तआला को अज़िय्यत दी। (बरकाते आले रसूल:257)

और तबरानी व हाकिम हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत करते हैं कि रसले काइनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: لَوْ اَنَّ رَجُلًا صَعِدَ بَيْنَ الرُّكْنِ وَالْمَقَامِ فَصَلّٰى وَصَامَ ثُمَّ مَاتَ وَهُوَ مُبْغِضٌ لِاَهْلِ بَيْتِ مُحَمَّدٍ (صلّى الله تعالى عليه وسلّم) دَخَلَ النَّارَ यानी अगर कोई शख़्स बैतुल्लाह शरीफ के एक गोशे और मकामे इब्राहीम के दरमियान चला जाए और नमाज़ पढ़े और रोज़े रखे फिर वह अहले बैत की दुश्मनी पर मर जाए तो वह जहन्नम में जाएगा। (अश्शर्फुल मोअब्बद:92)

अहले बैत की दुश्मनी से खुदा की पनाह कि बैतुल्लाह शरीफ के साय में मकामे इब्राहीम जैसी मुतबर्रक जगह पर नमाज़ें पढ़ने वाला और रोज़े रखने वाला भी अगर अहले बैते रसूलुल्लाह से दुश्मनी रखता है तो वह भी जहन्नम का ईंधन बनेगा और कोई भी नेक अमल उसे खुदा के अज़ाब से नहीं बचा सकेगा। *अल्-इयाज़ु बिल्लाह*

एक मर्तबा फिर आप हज़रात निहायत अकीदत व मुहब्बत के साथ आकाए दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और उन की आल व अस्हाब व अहले बैत पर दुरूदो-सलाम की डालियां निछावर करें

صلى الله على النبى الامى واله صلى الله عليه وسلم صلاة وسلاما عليك يارسول الله

*सल्लल्लाहु अलन् नबिय्यिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सलातवं व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।*

## अहले बैत और अकाबिरीन सलफ व ख़लफ के इरशादात

अकाबिरीन सलफ व ख़लफ रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अज्मईन अहले बैत रसूल की तारीफ व तौसीफ में हमेशा रुतबुल लिसान रहे, लोगों को उन से मुहब्बत रखने की ताकीद फरमाते रहे और खुद उन से बेइन्तिहा मुहब्बत रखते थे।

इस उम्मत के सैयिदुल अकाबिरीन हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इरशाद फरमाते हैं कि: صِلَةُ قَرَابَةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى

عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ صِلَةِ قَرَابَتِي यानी रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के रिश्तेदारों की ख़िदमत करना मुझे अपने रिश्ते दारों की सिला रहमी से ज़्यादा महबूब है। (अश्शर्फुल मोअब्बद:87)

और अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो जलीलुल क़द्र सहाबी और साबिक़ीनल अव्वलीन में से हैं वह फरमाते हैं: حُبُّ آلِ مُحَمَّدٍ صلى الله تعالى عليه وسلم خَيْرٌ مِنْ عِبَادَةِ سَنَةٍ यानी आले रसूल की एक दिन की मुहब्बत एक साल की इबादत से बेहतर है। (अश्शर्फुल मोअब्बद:85)

सहाबिए रसूल के इस क़ौल से मालूम हुआ कि जो शख़्स पूरी ज़िंदगी अहले बैत की मुहब्बत में गुज़ारेगा वह क़ियामत के दिन अज़ीम ख़ूबियों वाला होगा।

हज़रत अल्लामा यूसुफ इस्माईल बिन नब्बहानी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हज़रत इब्राहीम बिन अब्दुल्लाह महज़ बिन हसन बिन मुसन्ना बिन हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम की हिमायत की और लोगों को फत्वा दिया कि लाज़मी तौर पर उन के साथ और उन के भाई मुहम्मद के साथ रहें। कहते हैं कि इमामे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की क़ैदो-बन्द अस्ल में इसी बिना पर थी अगर्चे ज़ाहिर में सबब यह था कि उन्हों ने क़ाज़ी का मन्सब क़बूल करने से इनकार कर दिया था। (अश्शर्फुल मोअब्बद:88)

और रिवायत है कि जाफर बिन सुलैमान ने जब इमामे मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को कोड़े लगवाए और जो सज़ा देनी थी दी और उन्हें बेहोशी की हालत में उठा कर ले जाया गया, लोग आप के पास आए, जब इफाक़ा हुआ तो फरमाया: मैं आप लोगों को गवाह बनाता हूं कि मैं ने मारने वाले को माफ कर दिया। बाद में आप से इस का सबब पूछा गया, तो फरमाया मुझे ख़ौफ है कि मरने के बाद बारगाहे रिसालत में हाज़िरी होगी तो मुझे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से हया आएगी कि मेरी वजह से आप की आल के एक फर्द से मुवाख़ज़ा हो।

कहते हैं कि ख़लीफ़ा मन्सूर ने हज़रत इमामे मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से कहा कि मैं जाफर से आप का बदला दिलवाता हूं। तो इमाम ने फरमाया ख़ुदा की पनाह, ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता। ख़ुदा की क़सम जब चाबुक मेरे जिस्म से उठता था तो मैं उन्हें नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की वजह से माफ कर देता था।

(बरकाते आले रसूल:262)

और हज़रत अल्लामा नब्बहानी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि हज़रत इमामे शाफई रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की आले पाक से बहुत मुहब्बत करने के सबब इस हाल में बग़दाद में ले जाए गए कि उन के पैरों में बेड़ियां पड़ी थीं। बल्कि अहले बैते रसूलुल्लाह से उन की मुहब्बत यहां तक पहुंची कि कुछ लोगों ने उन्हें राफज़ी कह दिया तो आप ने उन को जवाब देते हुए फरमायाः

لَوْ كَانَ رِفْضًا حُبُّ آلِ مُحَمَّدٍ

فَلْيَشْهَدِ الثَّقَلَانِ أَنِّيْ رَافِضِيْ

यानी अगर आले रसूल की मुहब्बत ही का नाम राफज़ी होता है तो जिन्न व इंसान गवाह हो जाएं कि इस मअ्ना में बेशक मैं "राफज़ी" हूं।

और जोशे अक़ीदत व जज़्बए मुहब्बत में अहले बैते रिसालत को मुख़ातब करते हुए फरमाते हैं:

يَا أَهْلَ بَيْتِ رَسُوْلِ اللّٰهِ حُبُّكُمْ

فَرْضٌ مِّنَ اللّٰهِ فِى الْقُرْاٰنِ أَنْزَلَهُ

यानी ऐ रसूलुल्लाह के अहले बैत! आप लोगों की मुहब्बत अल्लाह तआला की तरफ से फर्ज़ है और यह हुक्म ख़ुदाए ज़ुल जलाल ने क़ुरआन मजीद में नाज़िल फरमा दिया है। और वह आयते करीमा यह है: قُلْ لَّا أَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا إِلَّا الْمَوَدَّةَ فِى الْقُرْبٰى यानी ऐ महबूब! तुम फरमाओ कि मैं इस पर तुम लोगों से कुछ उज्रत नहीं मांगता मगर क़राबत की

मुहब्बत। (पारा:25,रुकूअ:3)

आले रसूल की अज़मत व बुज़ुर्गी ज़ाहिर करते हुए इमामे शाफ़ई रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु फ़रमाते हैं:

يَكْفِيكُمْ مِنْ عَظِيمِ الْفَخْرِ أَنَّكُمْ
مَنْ لَمْ يُصَلِّ عَلَيْكُمْ لَا صَلَاةَ لَهُ

यानी ऐ आले रसूल! आप लोगों के लिये यह अज़ीम फख़ काफी है कि जो शख़्स आप पर दुरूद नहीं भेजता उस की नमाज़ नहीं होती।

अल्लामा सब्बान ने फरमाया कि मतलब यह है कि आले रसूल पर दुरूद न पढ़ने वाले की नमाज़ कामिल नहीं होती और इमाम शाफ़ई के मरजूह क़ौल के मुताबिक़ नमाज़ सहीह नहीं होती। (अश्शर्फुल मोअब्बद:88)

और हज़रत अब्दुल वहाब शअ़रानी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह सुनने कुबरा में फरमाते हैं कि मुझ पर अल्लाह तआ़ला के ऐहसानात में से एक यह है कि मैं सादाते किराम की बेहद ताज़ीम करता हूं, अगर्चे लोग उन के नसब में तअ़न करते हों। मैं इस ताज़ीम को अपने ऊपर हक़ तसव्वुर करता हूं। इसी तरह उलमा और औलिया की औलाद की ताज़ीम शरई तरीक़े से करता हूं। फिर मैं सादात की कम अज़ कम इतनी ताज़ीम व तक्रीम करता हूं जितनी वालिए मिस्र के किसी भी नाइब या लश्कर के क़ाज़ी की हो सकती है।

सादाते किराम के आदाब में से यह है कि हम उनसे उम्दा बिस्तर, अअ़्ला मर्तबा और बेहतर तरीक़े पर न बैठें। उन की मुतल्लक़ा या बेवा औरत से निकाह न करें। इसी तरह किसी सैय्यद ज़ादी से निकाह न करें, हां अगर हम में से कोई शख़्स यह समझता है कि हम उन की ताज़ीम का हक्क़े वाजिब अदा कर सकते हैं और उन की मरज़ी के मुताबिक़ अमल कर सकते हैं तो फिर उन से निकाह कर सकता है।

(बरकाते आले रसूल:253)

और यही हज़रत अल्लामा अब्दुल वहाब शअ़रानी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु *"अल्-बहरुल् मौरूद फिल्-मवासीक़ि वल्-उहूद"* में तहरीर

फरमाते हैं। हम से अहेद लिया गया है कि हम हरगिज़ सैय्यद ज़ादी से निकाह न करें मगर उस वक़्त कि हम अपने आप को उन का ख़ादिम तसव्वुर करें, क्योंकि वह नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की लख़्ते जिगर हैं, जो शख़्स अपने आप को उन का गुलाम तसव्वुर करे और यह अक़ीदा रखे कि अगर मैं उन की नाफरमानी करूंगा तो मैं नाफरमान गुलाम और गुनहगार हूंगा। तो वह निकाह करे वरना उसे लाइक़ नहीं है। जो शख़्स तबर्रुक के लिये उन से निकाह करे उसे कहा जाएगा कि सलामती ग़नीमत से मुक़द्दम है यानी यह ख़तरा बहर हाल बाक़ी रहेगा कि मुम्किन है उन की ताज़ीम कमा हक़्क़हू अदा न हो सके इस लिये बचना ही बेहतर है।

रही बरकत की बात तो वह निकाह किये बग़ैर उनकी ख़िदमत करने से भी हासिल हो सकती है। और फरमाते हैं कि हम से अहेद लिया गया है कि अगर हमारी बेटी या बहन का जहेज़ बेशुमार हो तो कोई ऐसे सैय्यद उस के निकाह का पैग़ाम दें जिन के पास उसके उन के महर और सुब्ह व शाम खाने के अलावा कुछ न हो तो हम उन से निकाह कर दें। और उन्हें मायूस न करें, क्यों कि फक़्र ऐब नहीं है जिस की बिना पर पैग़ामे निकाह रद कर दिया जाए बल्कि यह तो शराफत है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम इस की आरज़ू की है बल्कि अपने रब्बे करीम जल्ला मजदुहू से दुआ़ की है कि आप को क़ियामत के दिन फुक़रा व मसाकीन के गिरोह में उठाए। और दुआ़ की है कि ऐ अल्लाह! मेरे अहल का कूत बना यानी इतना खाना अता फरमा कि सुब्ह व शाम उस से कुछ न बचे।

तो जिस चीज़ को नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने अपनी औलाद और अहले बैत के लिये पसंद फ़रमाया वह इन्तिहाई फज़ीलत वाली है। लिहाज़ा जो शख़्स नादार सैय्यद को अपनी बेटी का रिश्ता देने से इनकार करे उस पर ख़ुदाए अ़ज़्ज़ व जल्ल की नाराज़गी का ख़ौफ है।

और अल्लामा शअ्रानी फरमाते हैं कि इसी तरह हम से अहेद लिया गया है कि जब हम रास्ते में किसी सैय्यद या सैय्यदा के पास से गुज़रें जो लोगों से सवाल कर रहे हों तो हम उन्हें अपनी ताक़त के मुताबिक़ 'पैसे, खाना या कपड़े पेश करें। या उन से अर्ज़ करें कि हमारे पास क़ियाम कीजिये ताकि हस्बे इस्तेताअ़त आप की ज़रूरियाते शरइय्या पूरी की जाएं। जो शख़्स रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की मुहब्बत का दावा रखता है उस के लिये यह बात किस क़द्र बुरी है कि वह आप की औलाद के पास से गुज़रे और वह रास्ते में सवाल कर रहे हों मगर यह शख़्स उन्हें कुछ पेश न करे।

(बरकाते आले रसूलः256)

एक मर्तबा आप हज़रात फिर बुलंद आवाज़ से तमाम आलम के मोहसिने आज़म, रहमते आलम, नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम और उन की आल व अस्हाब और अहले बैत पर दुरूदो-सलाम की डालियां पेश करें।

صلی اللہ علی النبی الامی والہ صلی اللہ علیہ وسلم صلاۃ وسلاما علیک یارسول اللہ

*सल्लल्लाहु अ़लन् नबिय्यिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि*

*व सल्लम सलातुवं व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।*

# खुसूसियात अहले बैत

अब आप हज़रात अहले बैते रसूलुल्लाह की वह खुसूसियात मुलाहेज़ा फरमाएं जो उन के अलावा किसी दूसरे में हरगिज़ नहीं पाई जाती हैं।

## पहली खुसूसियत

पहली खुसूसियत है ज़कात का हराम होना। यानी अहले बैते किराम को ज़कात और सदक़ए वाजिबा देना और लेना हराम है, अगर्चे वह मालिके निसाब न हों। मुस्लिम शरीफ में हज़रत मुत्तलिब बिन रबीआ़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमायाः إِنَّ هٰذِهِ الصَّدَقَاتِ إِنَّمَا هِيَ أَوْسَاخُ النَّاسِ وَإِنَّهَا لَا تَحِلُّ لِمُحَمَّدٍ وَلَا لِآلِ مُحَمَّدٍ यानी ज़कात के माल लोगों के मैल हैं और वह मुहम्मद और आले मुहम्मद बनी हाशिम के लिये जाइज़ नहीं। *सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम व रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम*। (मिश्कात शरीफ़:161)

हुज़ूर के इस कलाम में बेहतरीन तश्बीह है कि आप ने ज़कात को *औसाखुन नास* यानी लोगों की मैल इस लिये फरमाया कि वह उन की आलूदगियों को पाक करती है और उन के अम्वाल व नुफूस को पाक करती है। खुदावन्दे कुद्दूस का इरशाद है: خُذْ مِنْ أَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيهِمْ بِهَا यानी ऐ महबूब! उन के माल में से ज़कात लो, उस ज़कात के ज़रिये उन को पाक व साफ करो। (पारा:11,रुकूअ्:2)

और बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है कि एक दिन हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने ज़कात की एक खुजूर उठाई और मुंह में रख ली तो रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमायाः كَخْ كَخْ यानी छी छी, इसे फेंक दो, इस के बाद फरमायाः أَمَا شَعَرْتَ أَنَّا لَا نَأْكُلُ الصَّدَقَةَ क्या तुम्हें मालूम नहीं कि हम लोग ज़कात नहीं खाया करते।

(मिश्कात शरीफ़:161)

और वलीए कबीर अब्दुल वहाब शअ्रानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु "अल्-बहरुल् मौरूद" में तहरीर फरमाते हैं कि हज़रत फ़ज़्ल बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया कि मुझे ज़कात वुसूल करने पर मुक़र्रर फरमा दें तो हुज़ूर ने उन से फरमायाः مَعَاذَ اللهِ أَنْ أَسْتَعْمِلَكَ عَلَىٰ غُسَالَةِ ذُنُوبِ النَّاسِ यानी खुदा की पनाह कि मैं तुम्हें लोगों के गुनाहों के धोवन वसूल करने पर मुक़र्रर कर दूं। (अश्शर्फुल मोअब्बदः35)

और तिर्मिज़ी और अबू दाऊद में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के आज़ाद करदा गुलाम हज़रत अबू राफेअ् रज़ियल्लाहु

तआला अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर ने बनू मख़्ज़ूम के एक शख़्स को ज़कात वसूल करने के लिये मुक़र्रर फ़रमा के भेजा तो उन्हों ने अबू राफ़ेअ् से कहा कि आप भी मेरे साथ चलें ताकि आप को भी ज़कात में से कुछ हिस्सा हक़्कुल मेहनत मिल जाए। हज़रत अबू राफ़ेअ् रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि जब तक मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम क ख़िदमत में हाज़िर होकर उन से दरियाफ़्त न कर लूंगा आप के हम्राह इस काम के लिये न जाऊंगा।

इस गुफ़्तगू के बाद हज़रत अबू राफ़ेअ् रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उस शख़्स के साथ ज़कात वसूल करने के लिये जाने की इजाज़त तलब की तो हुज़ूर ने फरमायाः إنَّ الصَّدَقَةَ لَاتَحِلُّ لَنَا وَإنَّ مَوَالِيَ الْقَوْمِ مِنْ أنْفُسِهِمْ यानी ज़कात हम बनी हाशिम के लिये जाइज़ नहीं। और बनी हाशिम का आज़ाद करदा गुलाम बनी हाशिम ही हुक्म में हैं। जब हमारे लिये ज़कात जाइज़ नहीं तो हमारे आज़ाद करदा गुलाम के लिये भी जाइज़ नहीं। (मिश्कात शरीफ़:161)

इसी लिय फ़िक़्हे हनफी की किताबों में है कि बनी हाशिम को ज़कात नहीं दे सकते। न दूसरा कोई शख़्स उन्हें दे सकता है, न एक हाशिमी दूसरे हाशिमी को, यहां तक कि बनी हाशिम के आज़ाद किये हुए गुलाम को भी नहीं दे सकते। बनी हाशिम से मुराद हैं हज़रत अली, हज़रत जाफर, हज़रत अक़ील और हज़रत अब्बास व हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब की औलाद। यानी इन सब की औलाद को ज़कात और सदक़ए वाजिबा देना जाइज़ नहीं। अल्बत्ता सदक़ए नाफिला और औक़ाफ की आमदनी इन को देना जाइज़ है।

## दूसरी खुसूसियत

दूसरी खुसूसियत यह है कि अहले बैत हसब व नसब में सारे इंसानों से अफज़ल व अअ्ला हैं हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से मरवी है कि रसूले करीम अलैहिस् सलातु वत्तस्लीम

ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की औलाद में से क़बीलए कनाना को मुन्तख़ब फ़रमाया, कनाना में से क़ुरैश को और क़ुरैश में से बनी हाशिम को और बनी हाशिम में से मुझे मुन्तख़ब फ़रमाया। (बरकाते आले रसूल:91)

और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा से मरफ़ूअ़न रिवायत है कि अल्लाह तआ़ला ने मख़्लूक़ पैदा फ़रमाई तो उस में से बनी आदम को मुन्तख़ब फ़रमाया फिर बनी आदम में से अरब को, अरब में से मुज़र को, मुज़र में से क़ुरैश को, क़ुरैश में से बनी हाशिम को फिर बनी हाशिम में से मुझे मुन्तख़ब फ़रमाया। तो मैं बेहतरीन लोगों से बेहतरीन लोगों की तरफ़ मुन्तक़िल होता रहा।

(बरकाते आले रसूल:91)

और इमामे अहमद उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जिब्रीले अमीन ने मुझ से कहा कि मैं ने ज़मीन के मशिरक़ व मग़रिब (पूरब पच्छिम) उलट डाले लेकिन मैं ने मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम से अफ़ज़ल किसी को न पाया। अअ़्ला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी अलैहिर रहमत फ़रमाते हैं:

*यही बोले सिदरा वाले चमने जहां के थाले*
*सभी मैं ने छान डाले तेरे पाए का न पाया*

*तुझे यक ने यक बनाया*

और हज़रत जिब्रील ने कहा कि मैं ने ज़मीन के मशिरक़ व मग़रिब छान डाले मगर मुझे बनी हाशिम से ज़्यादा फ़ज़ीलत वाले किसी बाप के बेटे नहीं मिले। (बरकाते आले रसूल:91)

और हज़रत जाफ़र सादिक़ अपने वालिदे माजिद हज़रत मुहम्मद बिन बाक़र रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा से रिवायत करते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मेरे पास जिब्रीले

अमीन आए और कहा या रसूलल्लाह! मुझे अल्लाह तआला ने भेजा, मैं ने ज़मीन के मश्रिक़ व मग़रिब, नर्म ज़मीन और पहाड़ों में फिरा तो मैं ने अरब से अफ्ज़ल कोई ख़ानदान नहीं पाया। फिर मुझे हुक्म फरमाया तो मैं अरब में फिरा मुझे मुज़र से अफ्ज़ल कोई क़बीला नहीं मिला। फिर मुझे हुक्म दिया मैं मुज़र में फिरा तो मैं कनाना से अफ्ज़ल कोई क़बीला नहीं पाया। फिर मुझे हुक्म फरमाया तो मैं कनाना में फिरा तो मैं ने कुरैश से बेहतर कोई क़बीला न पाया। फिर मुझे हुक्म दिया मैं कुरैश में फिरा तो मैं ने बनी हाशिम से अफ्ज़ल कोई क़बीला न पाया। फिर मुझे उन में से किसी के मुन्तख़ब करने का हुक्म दिया तो मैं ने आप से अफ्ज़ल किसी को न पाया। (बरकाते आले रसूल:92)

और तबरानी व दारे कुत्नी में है, सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि क़ियामत के दिन मैं अपनी उम्मत में सब से पहले अपने अहले बैत की शफाअ़त करूंगा फिर दूसरे लोगों की। और मैं जिस की पहले शफाअ़त करूंगा वह ज़्यादा फज़ीलत वाला है। مَنْ اَشْفَعُ لَهُ اَوَّلًا فَهُوَ اَفْضَلُ (अश्शर्फुल मोअब्बद:39)

यह तमाम हदीसें वाज़ेह तौर पर दलालत करती हैं कि अहले बैते किराम हसब व नसब में सब से अफ्ज़ल व आला हैं। और इसी लिये दूसरे लोग निकाह में उन के कुफ्व् नहीं। हज़रत अल्लामा सुयूती रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ख़साइसे कुबरा में तहरीर फरमाते हैं कि नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की एक ख़ुसूसियत यह है कि कोई मख़्लूक़ निकाह में आप के अहले बैत का हमसर (बराबर) नहीं है। (बरकाते आले रसूल:93)

## तीसरी ख़ुसूसियत

तीसरी ख़ुसूसियत यह है कि सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की रिश्तेदारी और नसब के आलवा क़ियामत के दिन हर रिश्तेदारी और नसब मुन्क़तअ़ (ख़त्म) हो जाएगा। हदीस शरीफ है:

كُلُّ سَبَبٍ وَّ نَسَبٍ يَنْقَطِعُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ اِلَّا سَبَبِيْ وَنَسَبِيْ (अशर्फुल मोअब्बद:22)

रिवायते सहीहा से साबित है कि हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने लिये हज़रत अली मुरतज़ा कर्रमल्लाहु तआला वज्हहु को हज़रत उम्मे कुल्सूम बिन्ते हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के निकाह का पैग़ाम दिया। हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहु ने उन की कम सिनी का उज़्र पेश किया और यह फरमाया कि मैं उन का निकाह अपने भाई हज़रत जाफर के साहिब ज़ादे के साथ करना चाहता हूं। हज़रत फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इस्रार किया, फिर मिम्बर पर रौनक़ अफरोज़ हुए और फरमायाः

ऐ लोगो! मैं ने हज़रत अली से उनकी साहिब ज़ादी के बारे में इस लिये इस्रार किया है कि मैं ने नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से सुना है वह फरमाते थेः كُلُّ سَبَبٍ وَّ نَسَبٍ وَّ صِهْرٍ يَنْقَطِعُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ اِلَّا سَبَبِيْ وَنَسَبِيْ وَصِهْرِيْ यानी कियामत के दिन मेरे तअल्लुक़, नसब और रिश्ते के अलावा हर तअल्लुक़, नसब और रिश्ता मुन्क़तअ् हो जाएगा।

तो हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहु ने हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का निकाह हज़रत फारूके आज़म से कर दिया, उन से हज़रत ज़ैद पैदा हुए जो जवान होकर इन्तेक़ाल किये। रज़ियल्लाहु तआला अन्हु। (अशर्फुल मोअब्बद:39)

इस हदीस और इसी तरह दूसरी हदीसों से मालूम हुआ कि रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के अहले बैत से रिश्ता क़ाइम करने में बहुत फाइदा है।

## एक शुब्ह और उसका जवाब

अगर कोई शख़्स कहे कि बुखारी व मुस्लिम की हदीस है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अपने चचा हज़रत अब्बास, अपनी फूफी हज़रत सफिया और दीगर अज़ीज़ व अक़ारिब से

फरमायाः لَا اُغْنِىْ عَنْكُمْ مِنَ اللّٰهِ شَيْئًا यानी मैं तुम्हें खुदा के अज़ाब से कुछ बेनयाज़ नहीं कर सकता, यहां तक कि अपनी लख़्ते जिगर नूरे नज़र हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा से फ़रमायाः يَا فَاطِمَةُ بِنْتَ مُحَمَّدٍ سَلِيْنِىْ مَا شِئْتَ مِنْ مَالِىْ لَا اُغْنِىْ عَنْكِ مِنَ اللّٰهِ شَيْئًا यानी ऐ फातिमा बिन्ते मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम) मेरे माल में से जो तुम चाहो मांग लो लेकिन खुदाए तआ़ला का अज़ाब और उस की गिरफ्त हो तो मैं तुम को कोई फाइदा नहीं पहुंचा सकता। (मिश्कात शरीफ़:460)

इस हदीस शरीफ का खुलासा यह हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम अपने अहले बैत के काम नहीं आ सकते। और जब हुज़ूर अपने अहले बैत के काम नहीं आ सकते तो अहले बैत की रिश्तेदारी दूसरों के क्या काम आ सकती है?

इस शुब्हा के जवाब में हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मोहद्दिस देहलवी बुख़ारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि तहरीर फरमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम का यह कलाम खुदाए तआ़ला से ख़ौफ दिलाने और डराने में इन्तिहाई मुबालग़ा है इस लिये कि अहले बैत की फज़ीलत व बुज़ुर्गी, उन के लिये हुज़ूर की शफाअ़त और उनका जन्नती होना अहादीसे सहीहा से साबित है। (अश्अ़तुल् लम्आ़त:4/272)

और मुहिब्बे तबरी ने यह जवाब दिया है कि हुज़ूर पुर नूर शाफिए यौमुन्-नुशूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम अज़ खुद किसी के नफा व ज़रर (नुक़सान) के मालिक नहीं लेकिन अल्लाह तआ़ला आप को अहले बैत और अज़ीज़ व अक़ारिब बल्कि तमाम उम्मत को शफाअ़त आम्मा और ख़ास्सा से नफा पहुंचाने का मालिक बना देगा।

और बाज़ उलमा ने फरमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम का यह ख़िताब उस वक़्त का है जबकि अल्लाह तआ़ला ने आप को भी इस बात से आगाह नहीं फरमाया था कि आप की निस्बत फाइदा देने वाली है।

एक मर्तबा फिर आप लोग हुज़ूर पुर नूर शाफिए यौमुन्-नुशूर

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और उन की आल व अस्हाब और अहले बैते किराम पर निहायत अक़ीदत व मुहब्बत के साथ बुलंद आवाज़ से दुरूदो-सलाम की डालियां पेश करें।

اللّٰهم صَلِّ علىٰ سيّدنا مُحمّدٍ وعلىٰ اٰله واَصحابه وَاَهلِ بيته وبارك وسلّم

*अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला सैय्यिदिना मुहम्मदिंव् व अ़ला आलिही व अस्हाबिही व अहलि बैतिही व बारिक व सल्लिम्।*

हज़रत अल्लामा नब्बहानी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के नसब और उन की रिश्तेदारी का फ़ाइदा बयान करने के बाद तहरीर फ़रमाते हैं कि जो शख़्स नबीए करीम अलैहिस्-सलातु वत्तस्लीम की तरफ मन्सूब हो उसे मुनासिब नहीं कि जो कुछ ज़िक्र हो उस पर कुल्ली ऐतमाद करे और इल्म व अमल की ज़रूरत महसूस न करे। इस लिये कि यह सारी बातें उस के लिये हैं जो वाक़ई रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से तअ़ल्लुक़ रखता हो और आप के अहले बैत में से हो और इसका यक़ीन कैसे हो सकता है? इस लिये कि मुम्किन है कुछ औरतों से लग़ज़िश हुई हो। और यह भी हो सकता है कि आबा व अजदाद (बाप-दादा) में से किसी शख़्स ने मन्सूब होने में ग़लत बयानी की हो अगर्चे यह ऐहतमाल ज़ाहिर के ख़िलाफ है लेकिन इसे बिल्कुल नज़र अंदाज़ भी नहीं किया जा सकता। अलावा अज़ीं अहले बैत के अकाबिर से मन्क़ूल है कि वह अल्लाह तआला की शदीद ख़शिय्यत, उसके अज़ाब के अज़ीम ख़ौफ और मामूली कोताही पर बहुत ज़्यादा अफ्सोस करने के ख़ूगर (आदी) थें। (अश्शर्फुल मोअब्बद:40)

और अल्लामा इब्ने हजर मक्की रहमतुल्लाहि तआला अलैह फरमाते हैं कि तमाम लोगों पर उमूमन और अहले बैत पर ख़ुसूसन चन्द उमूर की रिआयत लाज़िम है। अव्वल उलूमे शरइय्या के हासिल करने का ऐहतमाम करना इस लिये कि इल्म के बग़ैर नसब का कामिल फाइदा नहीं है। दोम बाप दादा पर फख़्र न करना और तक़्वा व

परहेज़गारी के बग़ैर महेज़ उन पर ऐतमाद न करना इस लिये कि अल्लाह तआ़ला ने फरमाया है: إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ أَتْقٰكُمْ यानी तुम में से बारगाहे इलाही में ज़्यादा मुअ़ज़्ज़ज़ वह है जो ज़्यादा मुत्तक़ी हो।
(पारा:26,रुकूअ़:14) (बरकाते आले रसूल, बहवाला अस्-सवाइकुल मुहर्रक़ा:181)

## चौथी ख़ुसूसियत

चौथी ख़ुसूसियत यह है कि सहाबए किराम रिज़्वानुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि अजमईन के ज़माने में इस्तिलाह यह थी कि अशराफ का लफ्ज़ सिर्फ अहले बैत पर बोला जाता था, दूसरों पर नहीं। फिर यह लक़ब हसनी और हुसैनी सादात के लिये मख़्सूस हो गया। हज़रत अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह रिसालए ज़ैनबिय्यह में तहरीर फरमाते हैं कि सहाबए किराम के ज़माने में शरीफ (सैय्यद) का लफ्ज़ हर उस फर्द पर बोला जाता था जो अहले बैते रिसालत से हो, चाहे वह हसनी हो, हुसैनी या अ़ल्वी। हज़रत मुहम्मद बिन हनफिया रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा की औलाद में से हो या हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआ़ला वज्हहु की दीगर औलाद से और हज़रत जाफर या हज़रत अक़ील की औलाद से हो या हज़रत अब्बास की। रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुम। फिर जब मिस्र में फातमी हज़रात तख़्त व ख़िलाफत के मालिक हुए तो उन्हों ने शरीफ यानी (सैय्यद) का लफ्ज़ हज़रते हसन व हज़रते हुसैन की औलाद के साथ ख़ास कर दिया और मिस्र में आज तक यह इस्तिलाह जारी है। (अश्शर्फुल मोअब्बद:40)

हज़रत अल्लामा नब्बहानी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि इस वक़्त यह इस्तिलाह मश्रिक़ व मग़रिब के इस्लामी शहरों में मशहूर है, जब अरबी में शरीफ का लफ्ज़ बोला जाएगा तो इस से हसनी या हुसैनी सैय्यद मुराद होंगे। बहुत से शहरों में यह इस्तिलाह भी आम है कि सैय्यद का लफ्ज़ सिर्फ हसनी और हुसैनी सादात पर बोला जाता है। जब यह लफ्ज़ बोला जाएगा तो इन के

सिवा कोई दूसरा मुराद नहीं होगा। यह अहले हिजाज़ के मा सिवा की इस्तिलाह है। अहले हिजाज़ की इस्तिलाह यह है कि शरीफ का इस्तेमाल हसनी सादात के लिये और सैय्यद का इस्तेमाल हुसैनी सादात के लिये करते हैं ताकि दोनों में वाज़ेह फर्क़ हो जाए। (अश्शर्फुल मोअब्बदः41)

हज़रत अल्लामा इब्ने हजर मक्की रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि अगर कोई चीज़ अशराफ के लिये वक्फ की गई या उनके लिये वसिय्यत की गई तो हज़राते हसनैन करीमैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा की औलाद के अलावा दूसरा कोई उन में दाख़िल न होगा। इस लिये कि वक्फ और वसिय्यत का दारो-मदार शहर के उर्फ पर है। (अश्शर्फुल मोअब्बदः41)

हज़रत अल्लामा इब्ने हजर मक्की रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह का यह बयान हक़ है मगर अब शहरों का उर्फ बदल रहा है। हज़रत अल्लामा नब्बहानी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह तहरीर फरमाते हैं कि कुस्तुंतुनिया में सैय्यद का लफ्ज़ अशराफ के साथ ख़ास नहीं है। इस शहर के सर्राफा बाज़ार में जाकर देखिये तो शायद ही कोई ऐसी मोहर नज़र आए कि जिस पर सैय्यद न लिखा हो सिवाए उस शख़्स के जो सैय्यद सहीहुन् नसब हो या दीनदार व बा हया अदामी हो। अशराफ अपनी मोहरों में लफ्ज़ सैय्यद नहीं लिखते इस ख़ौफ से कि उन के नसब में लोगों को शुब्ह न हो जाए। (अश्शर्फुल मोअब्बदः43)

यही हाल अन्क़रीब इस मुल्क में होने वाला है कि जो सैय्यद सहीहुन् नसब होगा वह अपने नाम के साथ सैय्यद नहीं लिखेगा, इस लिये कि अब बहुत से दूसरे लोग अपने को सैय्यद लिखने लगे हैं। तो वह अपने नसब को इश्तिबाह से बचाने के लिये अपने नाम के साथ सैय्यद लिखने से परहेज़ करेंगे, जैसे कि बहुत से लोगों ने जब अपने नाम के साथ अंसारी लिखना शुरू कर दिया तो मदीना तैयिबा का अंसारी ख़ानदान जो इस मुल्क में है उस ने अंसारी लिखना छोड़ दिया।

जो लोग अपना नसब ग़लत बताते हैं वह इस हदीस शरीफ से

नसीहत हासिल करें जो बुख़ारी, मुस्लिम, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी और नसई वग़ैरहुम ने हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल करीम से रिवायत की है कि सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया: مَنِ ادَّعٰی اِلٰی غَیْرِ اَبِیْهِ فَعَلَیْهِ لَعْنَةُ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِکَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِیْنَ لَایَقْبَلُ اللّٰهُ مِنْهُ فَرْضًا وَّلَا نَفْلًا यानी जो अपने बाप के अलावा दूसरे की तरफ अपने आप को मन्सूब करे, उस पर ख़ुदा और सब फिरिश्तों और सब आदमियों की लअ्नत है। अल्लाह तआला क़ियामत के दिन उस का न फ़र्ज़ क़बूल करेगा और नफ़्ल। (फतावा रज़विय्यह:5/667)

# पांचवीं ख़ुसूसियत

**पांचवीं ख़ुसूसियत** यह है कि अहले बैत में से जो बेअमल हों उन **की ताज़ीम** का हुक्म है। मुफ्तिए आज़म हिन्द हज़रत अल्लामा मुस्तफा रज़ा ख़ां अलैहिर रहमतु वर-रिज़्वान तहरीर फरमाते हैं कि "सैय्यद से जब तक कुफ्र न सादिर हो वाजिबुत तअ्ज़ीम है।" (हुज्जते दाहिरा:11)

और यह इस लिये कि उन का गुनाह बख़्शा जाएगा और ख़ुदाए अज़्ज़ व जल्ल उन की ग़लतियों से दरगुज़र फरमाएगा अगर्चे इस तरह कि उन्हें मौत से पहले तौबा की तौफीक़ अता फरमाए। इरशादे ख़ुदावन्दी है: اِنَّمَا یُرِیْدُ اللّٰهُ لِیُذْهِبَ عَنْکُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَیْتِ وَیُطَهِّرَکُمْ تَطْهِیْرًا ऐ अहले बैत! अल्लाह तआला तो यही चाहता है कि तुम से हर नापाकी को दूर फरमा दे और तुम्हें पाक करके ख़ूब सुथरा कर दे। (पारा:22, रुकूअ़:1)

और सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: اِنَّ فَاطِمَةَ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَحَرَّمَهَا اللّٰهُ وَذُرِّیَّتَهَا عَلَی النَّارِ यानी बेशक फातिमा ने अपनी पाक दामनी की हिफाज़त की तो अल्लाह तबारक व तआला ने उन्हें और उन की औलाद को जहन्नम पर हराम फरमा दिया। (अश्शर्फुल मोअब्बद:45)

अहले बैत के फासिक़ की इज़्ज़त उन के फिस्क़ और बेअमली की वजह से नहीं है बल्कि उन की मुबारक निस्बत की बिना पर है। और यह ख़ूबी जैसे कि उनके नेक लोगों में है वैसे ही उनके फासिक़ में

मौजूद है। यानी किसी का फासिक़ होना उसे अहले बैते नुबुव्वत से ख़ारिज नहीं कर देगा। इस लिये कि अहले बैत के लिये मासूम होना शर्त नहीं। लिहाज़ा फिस्क़ उनके नसब में ख़लल अंदाज़ नहीं होगा अल्बत्ता सालेहीन के दरमियान उनके मक़ाम को कम कर देता है।

हज़रत अबू मुहम्मद फासी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह बयान फरमाते हैं कि मैं मदीना तैयिबा के बाज़ हुसैनी सैय्यिदों से बुग़्ज़ रखता था क्यों कि मुझे मालूम था कि वह ख़िलाफे सुन्नत अफआ़ल के मुरतकिब (काम करते) हैं, मैं एक दिन मस्जिदे नबवी में रौज़ए मुबारका के सामने सो गया, मुझे नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की ज़ियारत हुई, हुज़ूर ने मुझ से मेरा नाम लेकर फरमाया क्या बात है मैं देखता हूं कि मेरी औलाद से बुग़्ज़ रखते हो? मैं ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! खुदा की पनाह! मैं उन्हें नापसंद नहीं रखता, मुझे सुन्नत के ख़िलाफ उनका अमल ना पसंद है। हुज़ूर ने फरमाया क्या यह फिक़्ही मस्अला नहीं है कि ना फरमान औलाद नसब से वाबस्ता रहती है? मैं ने अर्ज़ किया हां, फरमाया यह ना फरमान औलाद है। हज़रत अबू मुहम्मद फासी फरमाते हैं कि जब मैं बेदार हुआ तो मेरे दिल से उन की अदावत दूर हो चुकी थी, फिर तो मैं उन में से जिस किसी से भी मिलता उन की ख़ूब ताज़ीम व तक्रीम करता।

(बरकाते आले रसूल:104)

सैय्यद हज़रात मुलाहेज़ा फरमाएं कि रहमते आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने सुन्नत के ख़िलाफ अमल करने वाले को ना फरमान औलाद फरमाया और जबक़ि आम वालिदैन की ना फरमानी गुनाहे कबीरा है तो सादात का अपने जद्दे करीम अलैहिस् सलातु वत्-तस्लीम की ना फरमानी पर क्या हाल होगा।

हज़रत अल्लामा इब्ने हजर मक्की रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह अपने फतावा के ख़ातिमा में तहरीर फरमाते हैं कि जिस शख़्स की निस्बत नबीए अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के अहले

बैत और हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के ख़ानवादे से क़ाइम हो उस का बड़ा जुर्म और दयानत व परहेज़गारी से आरी (ख़ाली) होना उसे नसबे आली से ख़ारिज नहीं कर देगा। इसी लिये बाज़ मुहक़्क़िक़ीन ने फरमाया कि (खुदा ना ख़्वास्ता) अगर किसी सैय्यिद से ज़िना, शराब नौशी या चोरी सरज़द हो जाए और हम उस पर हद जारी करें तो उस की मिसाल ऐसी ही है जैसे किसी अमीर या बादशाह के पांव को ग़िलाज़त लग जाए और उस का कोई ख़ादिम उसे धो डाले।

(बरकाते आले रसूलः105)

खुलासा यह है कि जिस शख़्स की सियादत यक़ीनी हो और उसका नसब साबित हो तो सियादत के पेशे नज़र उसकी ताज़ीम व तक्रीम की जाएगी और उसके ग़लत कामों पर ना पसंदीदगी ज़ाहिर की जाएगी। और अगर उसका नसब साबित नहीं है मगर वह उस नसब का दावेदार है और उस का झूठा होना मालूम नहीं है तो उस की तक्ज़ीब में तवक्कुफ किया जाएगा कि हर शख़्स अपने नसब का ज़िम्मेदार है अगर झूठ बोलता है तो मुस्तिहक़्क़े लअ़नत है, मगर दूसरे लोग उसे बग़ैर सुबूत झूठा नहीं कह सकते।

## छठी खुसूसियत

छठी खुसूसियत यह है कि वह हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा की औलाद होने के बा वजूद रसूले करीम अलैहिस् सलातु वत्तस्लीम की औलाद कहलाते हैं और सहीहुन नसब के साथ आप ही की तरफ मन्सूब हैं। इमाम तबरानी ने हदीस बयान की है कि सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने फरमायाः إِنَّ اللّٰهَ عَزَّوَجَلَّ جَعَلَ ذُرِّيَّةَ كُلِّ نَبِيٍّ فِيْ صُلْبِهٖ وَإِنَّ اللّٰهَ تَعَالٰى جَعَلَ ذُرِّيَّتِيْ فِيْ صُلْبِ عَلِيِّ بْنِ أَبِيْ طَالِبٍ यानी अल्लाह तआ़ला ने हर नबी की औलाद उन की पुश्त में रखी और मेरी औलाद अली बिन अबी तालिब की पुश्त में रखी। (अश्शर्फुल मोअब्बदः48)

और नबीए करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने इरशाद

फरमाया कि हर मां की औलाद अपने पिद्री रिश्तेदारों की तरफ मन्सूब होती है, मा सिवा औलादे फ़ातिमा के कि मैं उन का वली हूं और उन का असबा हूं। (बरकाते आले रसूलः110)

अस्आफ़ुर राग़िबीन में है कि यह खुसूसियत सिर्फ हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा की औलाद के लिये है। दूसरी साहिब ज़ादियों की औलाद के लिये नहीं है (यानी अगर उन की औलाद ज़िंदा रहती तो) उन के बारे में यह नहीं कहा जा सकता कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम उन के बाप हैं और वह आप के बेटे हैं जिस तरह कि यह बात हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा की औलाद के लिये कही जाती है। (बरकाते आले रसूलः110)

# सात्वीं खुसूसियत

सात्वीं खुसूसियत यह है कि अहले बैत का ज़मीन में मौजूद होना ज़मीन वालों के लिये बाइसे अम्न है जैसा कि हदीस शरीफ में है कि सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमायाः اَلنُّجُوْمُ اَمَانٌ لِاَهْلِ السَّمَاءِ وَاَهْلُ بَيْتِیْ اَمَانٌ لِاَهْلِ الْاَرْضِ यानी सितारे आसमान वालों के लिये बाइसे अम्न हैं और मेरे अहले बैत ज़मीन वालों के लिये बाइसे अम्न हैं। और एक रिवायत में हैं: امان لامتی यानी मेरे अहले बैत मेरी उम्मत के लिये बाइसे अम्न हैं। (अश्शर्फुल मोअब्बदः46)

# आठवीं खुसूसियत

आठवीं खुसूसियत यह है कि वह पहले जन्नत में दाख़िल होंगे। इमाम सअ़लबी हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से रिवायत करते हैं उन्हों ने फरमाया कि मैं ने बारगाहे रिसालत में लोगों के हसद की शिकायत की तो हुज़ूर सैय्यिदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने फरमाया "क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं कि तुम चार में से चौथे हो? सब से पहले जन्नत में, मैं, तुम और हसनैन करीमैन दाख़िल होंगे। हमारी अज़्वाजे मुतह्हरात (पाक बीवियां) हमारे बाएं

और दाएं होंगी और हमारी औलाद हमारी अज़्वाज के पीछे होगी।
(बरकाते आले रसूल:109)

# नवीं खुसूसियत

अल्लामा सब्बान ने उन की यह खुसूसियत शुमार की है कि जो शख़्स उन में से किसी पर ऐहसान करेगा नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम क़ियामत के दिन उसे बदला अता फरमाएंगे जैसा कि हुज़ूर ने इरशाद फरमाया कि जो शख़्स वसीला हासिल करना चाहता है और यह चाहता है कि मेरी बारगाह में उस की कोई ख़िदमत हो जिस के सबब मैं क़ियमात के दिन उस की शफाअ़त करूं उसे चाहिये कि मेरे अहले बैत की ख़िदमत करे और उन्हें खुश करे।
(बरकाते आले रसूल:111, सवाइक़े मोहर्रक़ा:107)

# दस्वीं खुसूसियत

अल्लामा सब्बान ने फरमाया कि उन की खुसूसियत यह है कि उन की मुहब्बत दराज़िए उम्र और क़ियामत के दिन चेहरा सफेद होने का सबब है। और उन का बुग़ज़ इस के बरअक्स असर रखता है। जैसा कि सवाइक़े मोहर्रक़ा में हदीस शरीफ़ नक़ल की है कि नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने फरमायाः "जो शख़्स पसंद करता हो कि उस की उम्र दराज़ हो और अपनी आरज़ुओं से बहरावर हो, उसे मेरे बाद मेरे अहले बैत से अच्छी तरह पेश आना चाहिये। और जो मेरे बाद उन से अच्छी तरह पेश नहीं आएगा उस की उम्र क़तअ़ (कम) कर दी जाएगी। और क़ियामत के दिन इस हालत में मेरे पास आएगा कि उसका चेहरा सियाह होगा। (बरकाते आले रसूल:111)

दुआ़ है कि खुदाए अज़्ज़ व जल्ल हम सब लोगों को मुहिब्बीने अहले बैत के गिरोह में शामिल फरमाए और उनके जद्दे करीम अलैहि अफ्ज़लुस् सलातु व अक्मलुत्-तस्लीम की शफाअ़त नसीब फरमाए। आमीन।

पारा हाए सुहुफ गुंचहाए कुदुस
अहले बैते नुबुव्वत पे लाखों सलाम

आबे ततहीर से जिस में पौदे जमे
उस रियाज़े नजाबत पे लाखों सलाम

ख़ूने ख़ैरुर रुसुल से है जिन का ख़मीर
उन की बैलौस तीनत पे लाखों सलाम

وصلى الله تبارك وتعالى وسلم على النبي الكريم وعلى اله واصحابه واهل بيته اجمعين

برحمتك يا ارحم الراحمين

वसल्लल्लाहु तबारक व तआला व सल्लम अलन्नबिय्यिल् करीमि व अला आलिही व अस्हाबिही व अहलि बैतिही अज्मईन।
बिरहमतिक या अर्हमर राहिमीन।

# मनाकिबे अहले बैत

## रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुम

الحمدلله وكفىٰ وسلام على عباده الذين اصطفىٰ خصوصاً على سيّدالورىٰ نبينا محمدن المجتبىٰ وعلى اله واصحابه ذوى الدرجات العلىٰ۔ امابعد فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ قُلْ لَّآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْراً اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِى الْقُرْبٰى۔(پ:٢٥،ع:٤) صَدَقَ اللّٰه العلى العظيم وصدق رسوله الامين الكريم ونحن على ذالك لمن الشاهدين والشاكرين والحمدللّٰه رب العالمين۔

एक मर्तबा हम और आप सब लोग मिल कर इन्तिहाई खुसूल व मुहब्बत के साथ तमाम आलम के मोहसिने आज़म, रहमते आलम, नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के दरबारे गुहर बार में दुरूदो-सलाम की डालियां पेश करें।

صلى الله على النبى الامى واله صلى الله عليه وسلم صلاة وسلاماً عليك يارسول الله

*सल्लल्लाहु अ़लन् नबिय्यिल् उम्मियी व आलिही सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सलातंव् व सलामन् अ़लैक या रसूलल्लाह।*

खुत्बा के बाद जिस आयते मुबारका को पढ़ने का शर्फ हमने हासिल किया है आप हज़रात पहले उस का तर्जमा सिमाअ़त फ़रमाएं। खुदावन्दे कुद्दूस का इरशाद है ऐ महबूब! قُلْ لَّآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْراً तुम फरमाओ कि मैं इस पर यानी तब्लीगे रिसालत और इरशाद व हिदायत पर तुम से कुछ अज्र नहीं मांगता اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِى الْقُرْبٰى मगर क़राबत की मुहब्बत। यानी मैं तुम से क़राबत की मुहब्बत का मुतालेबा करता हूं।

(पारा:25,रुकूअ़:4)

हज़रत सदरुल अफाज़िल मौलाना मुहम्मद नईमुद्दीन साहब मुरादाबादी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि इस आयते करीमा का शाने नुज़ूल हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा से इस तरह मरवी है कि जब नबीए करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम मदीना तैयिबा में रौनक़ अफ्रोज़ हुए और अंसार ने देखा कि

हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के ज़िम्मे मसारिफ बहुत हैं, माल कुछ भी नहीं, उन्होंने आपस में मश्वरा किया और हुज़ूर के हुकूक़ व ऐहसानात याद करके आप की ख़िदमत में पेश करने के लिये बहुत सा माल जमा किया और उस को लेकर ख़िदमते अक्दस में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि हुज़ूर की बदौलत हमें हिदायत हुई और हम ने गुमराही से नजात पाई। हम देखते हैं कि हुज़ूर के मसारिफ बहुत ज़्यादा हैं इस लिये हम यह माल ख़ुद्दामे अस्ताना की ख़िदमत में नज़्र के लिये लाए हैं, क़बूल फरमा कर हमारी इज़्ज़त अफ्ज़ाई की जाए। इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई। और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने वह अमवाल वापस फरमा दीये। (तफ्सीर ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

और हज़रत अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि की मशहूर तस्नीफ दुर्रे मन्सूर में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा से यूं मरवी है, अंसारी सहाबा फरमाते हैं कि अहले बैते नबुव्वत ने हम लोगों के क़ौलो-फेअ्ल से फख़्र महसूस किया तो हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने फरमाया कि हमें तुम लोगों पर फज़ीलत हासिल है। जब यह बात रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम को पहुंची तो आप उन लोगों की मज्लिस में तशरीफ ले गए और फरमाया ऐ गिरोहे अंसार! क्या तुम लोग बेइज़्ज़त नहीं थे, तो अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें मेरे ज़रिया इज़्ज़त अता फरमाई? अंसार ने अर्ज़ किया हां, या रसूलल्लाह! हुज़ूर ने फरमाया, क्या तुम मुझे जवाब नहीं देते? अंसार ने अर्ज़ किया हुज़ूर हम क्या कहें? फरमाया क्या तुम लोग यह नहीं कहते कि क्या आप की क़ौम ने आप को नहीं निकाल दिया था, तो हम ने आप को पनाह दी? क्या उन्हों ने आप को नहीं झुठलाया था, तो हम ने आप की तस्दीक़ की? क्या उन्हों ने आप को नहीं छोड़ दिया था तो हम ने आप की इमदाद की? हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम इस तरह फरमाते रहे, यहां तक कि अंसार घुटने के बल खड़े हो गए और अर्ज़ किया: اَمْوَالُنَا وَمَا فِىْ اَيْدِيْنَا لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ यानी

हमारे माल और हमारी सब मिल्कियत अल्लाह और उसके रसूल के लिये हैं तो यह आयते मुबारका नाज़िल हुई قُلْ لَّآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِى الْقُرْبٰى (अश्शर्फुल मोअब्बद:72)

हज़रत ताऊस फरमाते हैं कि इसके बारे में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से पूछा गया उन्हों ने फरमाया इस से नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के रिश्तेदार मुराद हैं। और मुक़रिज़ी ने फरमाया मुफस्सिरीन की एक जमाअत ने इस आयत की तफ्सीर में फरमायाः ऐ हबीब! अपने पैरौकार मोमिनों को फरमा दो मैं तब्लीगे दीन पर तुम से कोई अज्र नहीं मांगता सिवाए इस के कि तुम मेरे रिश्तेदारों से मुहब्बत रखो। हज़रत अबुल आलिया और हज़रत सईद बिन जुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत करते हैं कि اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِى الْقُرْبٰى यह नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के रिश्तेदार हैं। और अबू इस्हाक़ फरमाते हैं कि मैं ने हज़रत अम्र बिन शुऐब से इस आयते करीमा के बारे में पूछा उन्हों ने फरमाया "कुर्बा से मुराद नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के रिश्तेदार हैं।" (बरकाते आले रसूलः220)

रहा यह सवाल कि रिश्तेदार से कौन से रिश्तेदार मुराद हैं तो अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती ने दुर्रे मन्सूर में और बहुत से दीगर मुफस्सिरीन ने इस आयते मुबारका की तफ्सीर करते हुए हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से नक़ल किया कि सहाबए किराम ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! आप के कौन से रिश्तेदार हैं जिन की मुहब्बत हम पर वाजिब है? फरमाया, अली, फातिमा और उन की औलाद रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम (अश्शर्फुल मोअब्बद:72)

## एक ऐतराज़ और उसका जवाब

अगर कोई शख़्स कहे कि तब्लीगे वही पर क़ौम से मुआवज़ा तलब करना जाइज़ नहीं इसी लिये पाराः19 सूरए शुअ़रा में कई जगहों पर

मुख़्तलिफ अंबियाए किराम अलैहिमुस् सलातु वस्सलाम का यह ऐलान मज़कूर है किः مَا اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ यानी उन्हों ने अपनी क़ौमों से फरमाया कि मैं तब्लीग़े वह़ी और इरशादो-हिदायत पर तुम से कोई अज्र नहीं मांगता और जब दीगर अंबियाए किराम अलैहिमुस् सलातु वस्सलाम ने अपनी क़ौमों से किसी उज्रत का मुतालेबा नहीं किया और न किसी फाइदे की ख़्वाहिश की तो सैयिदुल अंबिया जनाबे अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम जो तमाम नबियों और रसूलों से अफ्ज़ल हैं उन्हें तब्लीग़े दीन पर बदर्जए औला उज्रत नहीं तलब करनी चाहिये।

और फिर तब्लीग़ आप पर वाजिब थी जैसा कि अल्लाह तआ़ला का इरशाद हैः بَلِّغْ مَا اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ यानी जो कुछ तुम्हारे रब की तरफ से तुम पर नाज़िल किया गया उसकी तब्लीग़ करो। (पाराः6 रुकूअ़ः14) और वाजिब के अदा करने पर उज्रत का तलब करना मुनासिब नहीं।

और फिर यहूदी और ईसाई वग़ैरा हमें तअ़ना दे सकते हैं कि हमारे रहनुमाओं ने यह ऐलान किया مَا اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ मैं तब्लीग़े दीन पर तुम से कोई अज्र नहीं मांगता और तुम्हारे रसूल ने रिश्तेदारों की मुहब्बत का मुतालेबा करके अपनी मेहनत व मशक़्क़त का मुआ़वज़ा तलब किया जैसा कि आयते करीमा قُلْ لَّا اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِى الْقُرْبٰى से ज़ाहिर होता है।

इस ऐतराज़ का जवाब यह है कि बेशक तब्लीग़े वह़ी पर अज्र तलब करना जाइज़ नहीं और हमारे नबी सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने भी इरशादो-हिदायत पर अपनी क़ौम से किसी मुआ़वज़ा को तलब नहीं किया और न उनसे किसी फाइदे की ख़्वाहिश की। जैसा कि पाराः23 रुकूअ़ः14 की आयते मुबारका है قُلْ مَا اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ وَّمَا اَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِيْنَ यानी तुम फरमा दो कि मैं तब्लीग़े दीन पर तुम से कोई अज्र नहीं मांगता और न मैं तकल्लुफ करने वालों में से हूं। रहा आयते मुबारका में اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِى الْقُرْبٰى तो हज़रत अल्लामा इमामे राज़ी रहमतुल्लाहि

तआ़ला अलैहि फरमाते हैं कि यह उस कबील से है जो किसी कहने वाले ने कहा है:

لَاعَيْبَ فِيهِمْ غَيْرَ اَنَّ سُيُوْفَهُمْ
بِهَا مِنْ قِرَاعِ الدَّارِعِيْنَ فُلُوْلُ

यानी उन लोगों में अलावा इसके और कोई ऐब नहीं है कि उन की तल्वारों में ज़िरापोश दुश्मनों से टकराने के सबब दंदाने हैं। (यानी जबकि यह उन का ऐब है तो ऐब नहीं है, बल्कि ख़ूबी है) इसी तरह आयते मुबारका का मतलब यह है कि मैं तुम से इस के सिवा कुछ अज्र नहीं चाहता और यह हकीकत में अज्र नहीं है। इस लिये मुसलमानों के दरमियान मुहब्बत वाजिब है जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फरमाया: وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَاءُ بَعْضٍ यानी ईमान वाले मर्द और ईमान वाली औरतें एक दसूरे के दोस्त हैं। (पारा:10,रुकूअ़:15) और सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की हदीस शरीफ है: وَالْمُؤْمِنُوْنَ كَالْبُنْيَانِ يَشُدُّ بَعْضُهُمْ بَعْضًا यानी मुसलमान एक इमारत की तरह हैं जिस का हर एक हिस्सा दूसरे हिस्सा को ताक़त व कुव्वत देता है और मदद पहुंचाता है। और जब मुसलमानों में बाहमी मुहब्बत वाजिब हुई तो अशरफुल मुस्लिमीन और उनके अकाबिर यानी अहले बैते किराम रिज़वानुल्लाहि तआ़ला अलैहि अजमईन की मुहब्बत बदर्जए औला वाजिब है। (तफ्सीरे इब्ने कसीर:7/390)

खुलासा यह हुआ कि मैं हिदायत व इरशाद पर कोई मुआ़वज़ा तलब नहीं करता लेकिन मेरे रिश्तेदारों की मुहब्बत जो तुम पर वाजिब है उस का ख़्याल रखना।

और दूसरा जवाब यह है कि इस आयते करीमा में इस्तिस्ना मुन्कतिअ़ है यानी قُلْ لَّا اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا पर कलाम पूरा हो गया, उस के बाद फरमाय اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبٰى लेकिन मैं तुम्हें हुक्म देता हूं कि मेरे रिश्तेदारों से मुहब्बत करो। (तफ्सीरे ख़ाज़िन:6/122)

इमाम सुद्दी अबुद्द दैलम से रिवायत करते हैं कि जब हज़रत इमाम

ज़ैनुल आबिदीन अली बिन हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा को गिरफ्तार करके लाया गया और उन्हें दमिश्क़ के रास्ते में खड़ा किया गया तो वहां का एक बाशिन्दा आया और कहने लगा, खुदा का शुक्र है जिसने तुम्हें क़त्ल किया, तुम्हारा इस्तीसालो-ख़ातिमा किया और फित्ने की सींग काट दी। हज़रत इमाम ज़ैनुल आबिदीन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने उस से फरमाया कि तू ने क़ुरआन पाक पढ़ा है? उस ने कहा हां, आप ने फरमाया, तू ने आले हा मीम पढ़ी है? उस ने कहा मैं ने क़ुरआन पढ़ा है लेकिन आले हा मीम नहीं पढ़ी, आप ने फरमाया तुम ने आयत قُلْ لَّآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِى الْقُرْبٰى नहीं पढ़ी? उस ने कहा वह लोग आप ही हैं? आप ने फरमाया हां।

हज़रत अल्लामा नब्बहानी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि इस वाक़िआ़ को लिखने के बाद तहरीर फरमाते हैं कि मैं उस शख़्स को ईमान वाला नहीं समझता हां, उस का ईमान बुतों और मस्नूई ख़ुदाओं पर था इस लिये कि अल्लाह और उस के रसूल जल्ल जलालुहू व सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम पर ईमान रखने वालों की ज़बान से ऐसी बकवास सादिर नहीं हो सकती। उस शख़्स के दिल में ईमान कैसे ठहर सकता है जो अहले बैते मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के शहीद किये जाने पर खुदा का शुक्र अदा करे। मैं अल्लाह व रसूल का उस मुल्हिद से ज़्यादा दुश्मन अबू जहेल को नहीं समझता।

(अश्शर्फुल मोअब्बद:74)

हम कहते हैं इस ज़माने में भी ऐसे लोग बहुत हैं जो अहले बैते नुबुव्वत और ख़ानदाने रिसालत से नफरत करते हैं, उन के फज़ाइल व मनाक़िब नहीं सुन सकते, अगर कोई मुहब्बत वाला इन हज़रात की तारीफ व तौसीफ बयान करता है तो उन की पेशानी में बल पड़ जाते हैं, चेहरे का रंग बदल जाता है और फौरन यज़ीद ख़बीस की हिमायत के लिये खड़े हो जाते हैं, उसे हक़ पर बताते हैं और अमीरुल मोमिनीन व रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के साथ उसे याद करते हैं और नवासए

रसूल हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर इक्तिदार की हवस का इल्ज़ाम लगाते हैं और उन्हें बाग़ी क़रार देते हैं।

*(अल्-इयाज़ु बिल्लाहि तआला)*

और वह लोग ऐसे हैं जो अल्लाह के प्यारे महबूब दानाए ख़िफ़ाया व गुयूब जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की शान में गुस्ताख़ियां व बेअदबी करते है, उन के इल्म को बच्चों, पागलों और जानवरों के इल्म के बराबर बताते हैं।

(हिफ्ज़ुल ईमानः8)

और शैतान व मलकुल मौत से हुज़ूर का इल्म कम ठहराते हैं।

(बराहीने क़ातिआः51)

तो ऐसे लोग अगर हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर इक्तिदार की हवस का इल्ज़ाम लगाएं और उन को बाग़ी क़रार दें तो कोई तअज्जुब नहीं कि अल्लाह के प्यारों की तौहीन व गुस्ताख़ी यही उन का मज़हब है। हुज़ूर और उन के अहले बैत की मुहब्बत जो मदारे ईमान है, इस से उन के कुलूब (दिल) ख़ाली हैं, उन के दिलों में ईमान नहीं कि ईमान वाले कभी ऐसी बकवास नहीं कर सकते।

खुदाए अज़्ज़ व जल्ल उन को ईमान अता फरमाए, यज़ीद पलीद जैसे फासिक़ व फाजिर की मुहब्बत और हज़रत इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बुग़ज़ व अदावत से उन के दिलों को पाक फरमाए और इमामे आली मक़ाम की मुहब्बत उन को नसीब फरमाए ताकि उन की समझ में आ जाए किः

*तेग़ बहरे इज़्ज़ते दीन अस्त व बस*
*मक़्सदे ऊ हिफ्ज़े आईन अस्त व बस*

*बहरे हक़ दर ख़ाको-ख़ूं ग़ल्तीदा अस्त*
*पस बिनाए ला इलाह गरदीदा अस्त*

(डॉ0 इक़बाल)

एक मर्तबा फिर आप हज़रात बुलंद आवाज़ से रहमते आलम, नूरे

मुजस्सम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की आल व अस्हाब पर दुरूदो-सलाम का नज़राना पेश करें।

اللهم صل علی سیدنا محمد وعلی اله واصحابه وبارك وسلم

*अल्लाहुम्म सल्लि अला सैय्यिदिना मुहम्मदिंव व अला आलिही व अस्हाबिही व बारिक् व सल्लिम।*

आयते करीमा قُلْ لَا اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِى الْقُرْبٰى की तफ्सीर में हज़रत अल्लामा इमामे राज़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि तफ्सीर कश्शाफ से एक तवील हदीस नक़ल करते हैं कि सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमायाः مَنْ مَاتَ عَلٰى حُبِّ اٰلِ مُحَمَّدٍ مَاتَ شَهِيْدًا जो अहले बैत की मुहब्बत पर फौत हुआ उस ने शहादत की मौत पाई। और फरमायाः اَلَاوَمَنْ مَاتَ عَلٰى حُبِّ اٰلِ مُحَمَّدٍ مَاتَ مَغْفُوْرًا لَّهٗ आगाह हो जाओ! जो शख़्स अहले बैत की मुहब्बत में फौत हुआ वह इस हाल में फौत हुआ कि उस के गुनाह बख़्श दिये गए। फिर फरमायाः اَلَاوَمَنْ مَاتَ عَلٰى حُبِّ اٰلِ مُحَمَّدٍ مَاتَ تَائِبًا सुन लो! जो शख़्स अहले बैत की मुहब्बत पर फौत हुआ वह ताइब हो कर फौत हुआ। और फरमायाः اَلَاوَمَنْ مَاتَ عَلٰى حُبِّ اٰلِ مُحَمَّدٍ مَاتَ مُؤْمِنًا مُسْتَكْمِلَ الْاِيْمَانِ ख़बरदार होकर सुन लो! जो शख़्स अहले बैत की मुहब्बत पर फौत होगा वह मुकम्मल ईमान के साथ फौत होगा। फिर फरमायाः اَلَاوَمَنْ مَاتَ عَلٰى حُبِّ اٰلِ مُحَمَّدٍ بَشَّرَهٗ مَلَكُ الْمَوْتِ بِالْجَنَّةِ ثُمَّ مُنْكَرٌ وَّنَكِيْرٌ कान खोल कर सुन लो! जो शख़्स अहले बैत की मुहब्बत पर फौत हुआ उसे हज़रत इज़्राईल अलैहिस् सलाम और फिर मुन्कर नकीर जन्नत की बशारत देते हैं। और फरमायाः اَلَاوَمَنْ مَاتَ عَلٰى حُبِّ اٰلِ مُحَمَّدٍ يُزَفُّ اِلَى الْجَنَّةِ كَمَا تُزَفُّ الْعَرُوْسُ اِلٰى بَيْتِ زَوْجِهَا आगाह हो जाओ! जो शख़्स अहले बैत की मुहब्बत पर फौत हुआ उसे ऐसी इज़्ज़त के साथ जन्नत रवाना किया जाता है जैसे दुल्हन दुल्हा के घर भेजी जाती है। फिर फ़रमायाः اَلَاوَمَنْ مَاتَ عَلٰى حُبِّ اٰلِ مُحَمَّدٍ فُتِحَ لَهٗ فِىْ قَبْرِهٖ بَابَانِ اِلَى الْجَنَّةِ जान लो! जो शख़्स अहले बैत की मुहब्बत पर फौत हुआ उस की क़ब्र में जन्नत के दो दरवाज़े खोल दिये जाते हैं। और फरमायाः اَلَاوَمَنْ مَاتَ عَلٰى حُبِّ اٰلِ مُحَمَّدٍ جَعَلَ اللّٰهُ قَبْرَهٗ مَزَارَ

مَلَائِكَةِ الرَّحْمَةِ आगाह हो जाओ! जो शख़्स अहले बैत की मुहब्बत पर फौत हुआ अल्लाह तआला उस की क़ब्र को मलाइकए रहमत की ज़ियारत गाह बना देता है। फिर उस के बाद आक़ाए दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमायाः اَلَاوَمَنْ مَّاتَ عَلٰى حُبِّ اٰلِ مُحَمَّدٍ مَاتَ عَلَى السُّنَّةِ وَالْجَمَاعَةِ ख़बरदार होकर सुन लो! जो शख़्स अहले बैत की मुहब्बत पर फौत हुआ वह मस्लके अहले सुन्नत व जमाअत पर फौत हुआ। (तफ्सीरे कबीर:7/390)

यह सारी ख़ूबियां और बशारतें उन लोगों के लिये हैं जो अहले बैते नुबुव्वत व ख़ानदाने रिसालत से मुहब्बत रखते हैं। और जो लोग कि इन हज़रात से दुश्मनी और बुग़ज़ व अदावत रखते हैं उन का हाल क्या होगा इस के बारे में सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं: اَلَاوَمَنْ مَّاتَ عَلٰى بُغْضِ اٰلِ مُحَمَّدٍ جَاءَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَكْتُوْبًا بَيْنَ عَيْنَيْهِ اٰيِسٌ مِّنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ، اَلَاوَمَنْ مَّاتَ عَلٰى بُغْضِ اٰلِ مُحَمَّدٍ مَاتَ كَافِرًا اَلَاوَمَنْ مَّاتَ عَلٰى بُغْضِ اٰلِ مُحَمَّدٍ لَمْ يَشُمَّ رَائِحَةَ الْجَنَّةِ यानी ख़बरदार होकर सुन लो! जो शख़्स अहले बैत की बुग़ज़ व अदावत पर मरा, वह क़ियामत के दिन इस हाल में आएगा कि उस की दोनों आंखों के दरमियान लिखा होगा "अल्लाह तआला की रहमत से ना उम्मीद" और आगाह हो जाओ! जो शख़्स अहले बैत के बुग़ज़ व अदावत पर मरा वह काफिर मरा। और कान खोल कर सुन लो! जो शख़्स अहले बैत की बुग़ज़ व अदावत पर मरा वह जन्नत की ख़ुश्बू से महरूम कर दिया जाएगा। (तफ्सीरे कबीर:7/39)

पूरी हदीस शरीफ में आले मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) का तर्जमा अहले बैत इस लिये किया गया कि अहले बैत के आले रसूल होने में किसी का इख़्तिलाफ नहीं और दूसरों का आले रसूल होना इख़्तिलाफी है।

हज़रत अल्लामा इमाम राज़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं, बाज़ लोगों ने कहा कि आल से मुराद आप के क़रीबी रिश्तेदार हैं और बाज़ लोगों ने कहा कि वह आप की उम्मत हैं। अगर

हम आल को क़रीबी रिश्तेदारों पर महमूल करें तो अहले बैत ही आले रसूल हैं और अगर उस उम्मत पर महूमल करें जिस ने आप की दअ़्वत व तब्लीग़ को क़बूल किया तो भी अहले बैत आले रसूल में दाख़िल हैं। साबित हुआ कि वह बहर सूरत आले रसूल हैं। और दूसरों का हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की आल में दाख़िल होना इख़्तिलाफी है। (तफ्सीरे कबीर:7/39)

ख़ुलासए कलाम यह है कि अहले बैते किराम की मुहब्बत में फौत होने वाला अल्लाह व रसूल का प्यारा है और उन की दुश्मनी में मरने वाला अल्लाह व रसूल का दुश्मन है। जल्ल जलालुहू व सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम।

अहले बैते नुबुव्वत में से हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआ़ला वज्हहुल करीम का मुफस्सल बयान हो चुका है। अब हज़रत फातिमा ज़हरा और हज़राते हसनैन करीमैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुम के कुछ फज़ाइल और हालात अलग-अलग मुलाहेज़ा फरमाएं।

# हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा

## नाम व लक़ब और साले पैदाइश

आप का नाम "फातिमा" और लकब "ज़हरा" व "बतूल" है। सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की साहिब ज़ादियों में सब से छोटी लेकिन सब से ज़्यादा प्यारी और लाडली हैं। आप की पैदाइश के साल में इख़्तिलाफ है, बाज़ लोगों ने कहा कि जब नबीए करीम अलैहि अफज़लुस् सलवाति व अक्मलुत तस्लीम की उम्र शरीफ 41 बरस की थी, आप पैदा हुईं। और कुछ लोगों नें लिखा है कि ऐलाने नुबुव्वत से एक साल क़ब्ल उन की विलादत हुंई। और अल्लामा इब्ने जौज़ी ने तहरीर फरमाया है कि ऐलाने नुबुव्वत से पांच साल पहले जब ख़ानाए कअ़्बा की तामीर हो रही थी, आप पैदा हुईं।

## आप का निकाह

मशहूर रिवायत के मुताबिक़ 18 साल और बाज़ रिवायतों के मुताबिक़ साढ़े पन्द्रह साल की उम्र सन् दो हिजरी में उन का निकाह शेरे खुदा अली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साथ हुआ।

इमामे नसई की रिवायत है कि पहले हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से निकाह करने के बारे में पैग़ाम भेजा। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मन्ज़ूर नहीं फरमाया। फिर हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल करीम ने प्याम भेजा तो हुज़ूर ने उनका निकाह हज़रत अली से कर दिया। (मिश्कात शरीफ़:565)

महर कि जिस पर अक़्दे अक़्दस हुआ, चार सौ मिस्क़ाल चांदी थी यानी पूरे एक सौ साठ रुपये भर। (फतावा रज़वियय्हः5/325)

## आप का जहेज़

शहंशाहे कौनैन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अपनी प्यारी और लाडली बेटी को जो जहेज़ दिया वह बान की एक चारपाई थी और चमड़े का एक गद्दा जिस में रूई की जगह पर खजूर के पत्ते भरे हुए थे और एक छागल, एक मश्क, दो चक्कियां और मिट्टी के दो घड़े। (सियरुस् सहाबियात:100)

अब तक हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के पास रहते थे, शादी के बाद अलग घर की ज़रूरत हुई तो हज़रत हारिसा बिन नोमान अंसारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपना एक मकान उन को दे दिया।

जब हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा उस नए घर में गईं तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम उन के यहां तशरीफ ले गए, दरवाज़ा पर खड़े होकर इजाज़त तलब की फिर अन्दर गए। एक बरतन में पानी मंगवा कर दोनों हाथ उस में डाला और वह पानी

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के सीने और बाज़ू पर छिड़का फिर हज़रत फातिमा ज़ुहरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को बुला कर उनपर छिड़का और फरमाया कि मेरे ख़ानदान में जो शख़्स सब से बेहतर है मैं ने उस के साथ तुम्हारा निकाह किया है। (ज़रक़ानी वग़ैरा)

## आप की घरेलू ज़िंदगी

शहंशाहे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व सल्लम की साहिब ज़ादी होने के बावजूद हज़रते फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा अपने घर का कारोबार ख़ुद करती थीं, झाड़ू अपने हाथ से देती थीं, ख़ुद खाना पकाती थीं बल्कि चक्की भी अपने हाथ से पीसती थीं और मश्क में पानी भर कर लाया करती थीं जिस से हाथ पर छाले और बदन पर गट्टे पड़ गए थे। एक बार माले ग़नीमत में कुछ बांदी व ग़ुलाम आए हुए थे, आप ने डरते डरते हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम से घरेलू कारोबार के लिये एक लौंडी मांगी और हाथ के छाले दिखाए तो हुज़ूर ने फरमाया जाने पिदर! बद्र के यतीम बच्चे तुम से पहले इस के मुस्तहिक़ हैं। (सियरुस सहाबियात)

और एक रिवायत में यूं है कि आप ने ग़ुलाम तलब किया तो हुज़ूर ने फरमाया बख़ुदा ऐसा नहीं हो सकता कि मैं तुम्हें ग़ुलाम अता कर दूं और अहले सुफ्फ़ा भूक के सबब पेट पर पत्थर बांध रहे हों।

(बरकाते आले रसूल)

## आप के फज़ाइल

हज़रत सैयिदा फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा के फज़ाइल में बेशुमार हदीसें वारिद हैं जिन में से चन्द रिवायतें मुलाहेज़ा हों।

बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायत है कि सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने फरमायाः فَاطِمَةُ بِضْعَةٌ مِّنِّیْ فَمَنْ اَغْضَبَهَا اَغْضَبَنِیْ، وَفِیْ رِوَایَۃٍ یُرِیْبُنِیْ مَا اَرَابَهَا وَیُؤْذِیْنِیْ مَا اٰذَاهَا यानी फातिमा मेरे गोश्त का एक टुकड़ा है

तो जिस शख़्स ने उसे ग़ज़बनाक किया उस ने मुझे ग़ज़बनाक किया। और एक रिवायत में है कि नाराज़ करती है मुझ को वह चीज़ जो फातिमा को नाराज़ करती है और अज़िय्यत (तक्लीफ) देती है मुझ को वह चीज़ जो फातिमा को अज़िय्यत देती है। (मिश्कात शरीफ:568)

लिहाज़ा जिस ने हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को ज़हेर दिया और जिन लोगों ने हज़रत इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को करबला के रेगिस्तान में शहीद किया उन लोगों ने बेशक हज़रत फातिमा को और हुज़ूर को अज़िय्यत दी। और हुज़ूर को अज़िय्यत देना अल्लाह को अज़िय्यत देना है। और अल्लाह व रसूल को अज़िय्यत (तक्लीफ) देने वाले पर दुनिया व आख़िरत में अल्लाह की लअ़नत है। इरशादे खुदावंदी है: إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِينًا यानी बेशक जो लोग अल्लाह और उस के रसूल को अज़िय्यत देते हैं दुनिया व आख़िरत में उन लोगों पर अल्लाह की लअ़नत है और उन के लिये ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है। (पारा:22,रुकूअ़:4)

और नबीए करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम इरशाद फरमाते हैं: فَاطِمَةُ سَيِّدَةُ نِسَاءِ أَهْلِ الْجَنَّةِ यानी हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा जन्नती औरतों की सरादर हैं। (बुख़ारी शरीफ:1/532)

और इब्ने अ़ब्दुल बर रिवायत करते हैं रसूले करीम अफ्ज़लुस् सलात व अकमलुत् तस्लीम ने हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा से फरमाया: يَا بُنَيَّةُ أَلَا تَرْضَيْنَ أَنَّكِ سَيِّدَةُ نِسَاءِ الْعَالَمِينَ यानी ऐ बेटी! तुम इस बात पर राज़ी नहीं हो कि तुम जहान की औरतों की सरदार हो? हज़रत फातिमा ने अर्ज़ किया: يَا أَبَتِ فَأَيْنَ مَرْيَمُ अब्बा जान! फिर हज़रत मरयम का क्या मक़ाम है? हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: تِلْكَ سَيِّدَةُ نِسَاءِ عَالَمِهَا वह अपने ज़माने की सरदार हैं। (अश्शर्फुल मोअब्बद:54)

अल्लामा नब्बहानी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह तहरीर फ़रमाते हैं

कि बहुत से मुहक़्क़िक़ीन जिन में अल्लामा तक़ीउद्दीन सुबुकी, अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती, अल्लामा बदरुद्दीन ज़रकशी और अल्लामा तक़ीउद्दीन मक़्रेज़ी शामिल हैं, तसरीह फरमाते हैं कि हज़रत फातिमा जहान की तमाम औरतों से यहां तक कि हज़रत मरयम से भी अफ्ज़ल हैं।

(अश्शर्फुल मोअब्बद:54)

और अल्लामा इब्ने दाऊद से जब इसके बारे में सवाल किया गया तो उन्हों ने फरमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को अपने जिस्म का टुक्ड़ा फरमाया तो मैं किसी को हुज़ूर के पारए ज़िस्म के बराबर नहीं क़रार दे सकता। (बरकाते आले रसूल:122)

डॉ0 इक़बाल ने बहुत ख़ूब कहा है:

*मरयम अज़ यक निस्बते ईसा अज़ीज़*
*व ज़ सेह निस्बत हज़रते ज़हरा अज़ीज़*
*नूर चश्मे रहमतुल् लिल् आलमीं*
*आं इमामे अव्वलीं व आख़िरीं*
*बानवे आं ताजदारे हल् अता*
*मुरतज़ा, मुश्किल् कुशा, शेरे ख़ुदा*
*मादरे आं मरकज़े परकारे इश्क़*
*मादने आं फातिमा सालारे इश्क़*

और हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल करीम ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! أَيُّنَا أَحَبُّ إِلَيْكَ أَنَا أَمْ فَاطِمَةُ हम में कौन आप को ज़्यादा महबूब है मैं या फातिमा? हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: فَاطِمَةُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْكَ وَأَنْتَ أَعَزُّ عَلَيَّ مِنْهَا फातिमा मुझे तुम से ज़्यादा महबूब है और तुम मेरे नज़दीक उन से ज़्यादा इज़्ज़त वाले हो। (अश्शर्फुल मोअब्बद:53)

और हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि क़ियामत के दिन एक निदा करने वाला बातिने अर्श से

निदा करेगाः يَا اَهْلَ الْجَمْعِ نَكِّسُوْا رُؤُسَكُمْ وَغُضُّوْا اَبْصَارَكُمْ حَتّٰى تَمُرَّ فَاطِمَةُ بِنْتُ مُحَمَّدٍ عَلَى الصِّرَاطِ यानी ऐ महशर वालो! अपने सरों को झुका लो और अपनी आंखों को बन्द कर लो ताकि फातिमा बिन्ते मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम पुल सिरात से गुज़र जाएं, فَتَمُرُّ مَعَ سَبْعِيْنَ اَلْفَ جَارِيَةٍ مِنَ الْحُوْرِ الْعِيْنِ كَمَرِّ الْبَرْقِ तो हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा सत्तर हज़ार हूरों के झुरमुट में बिजली की कौन्द की तरह पुल सिरात से गुज़र जाएंगी। (सवाइके मुहर्रका:116)

और इमामे नसई फरमाते हैं कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फरमायाः اِنَّ ابْنَتِىْ فَاطِمَةَ حَوْرَاءُ اٰدَمِيَّةٌ لَمْ تَحِضْ وَلَمْ تَطْمَثْ यानी मेरी बेटी फातिमा इंसानी हूर है जिसे कभी हैज़ नहीं आया। (अश्शर्फुल मोअब्बद:54)

हज़रत अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह ख़साइसे कुबरा में तहरीर फरमाते हैं कि हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा की खुसूसियत यह है कि उन्हें कभी हैज़ नहीं आता था। जब उन के यहां बच्चा पैदा होता था तो एक घड़ी के बाद निफास से पाक हो जातीं यहां तक कि उन की नमाज़ क़ज़ा न होती, इसी लिये उन का नाम ज़हरा रखा गया। और जब उन्हें भूक महसूस हुई तो नबीए अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने उन के सीने पर दस्ते मुबारक रखा तो उस के बाद उन्हें भूक कभी महसूस नहीं हुई। जब उन के विसाल का वक़्त क़रीब आया तो उन्हों ने खुद गुस्ल किया और वसिय्यत की कि कोई उन्हें मुन्कशिफ न करे। चुनांचे हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने उन्हें उसी गुस्ल के साथ दफन कर दिया। (लेकिन फतावा रज़वियह:4/4 पर है कि आपको गुस्ल दिया गया)। (बरकाते आले रसूल:123)

## आप की वफात

सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के विसाल फरमाने का आप को ऐसा सख़्त सदमा हुआ कि इस वाक़िआ के बाद

कभी आप हंसती हुई नहीं देखी गईं, यहां तक कि छेः माह बाद 3 रमज़ानुल मुबारक 11 हिजरी मंगल की रात में आप ने वफ़ात पाई इस तरह अल्लाह के महबूब दानाए ख़िफ़ा व गुयूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की पेशीन गोई पूरी हुई कि मेरे ख़ानदान में सब से पहले तुम ही आकर मुझ से मिलोगी।

हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की तज्हीज़ व तक्फ़ीन (कफ़न-दफ़न) में एक ख़ास क़िस्म की जिद्दत की गई, इस लिये कि उस ज़माने में रेवाज यह था कि मर्दों की तरह औरतों का जनाज़ा भी बेपर्दा निकाला जाता था मगर हज़रत सैयिदा के मिज़ाजे अक़्दस में चूंकि इन्तिहाई शर्म व हया थी इस लिये उन्हों ने क़ब्ले वफ़ात हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बीवी हज़रत अस्मा बिन्ते कैस रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से फ़रमाया कि खुले हुए जनाज़े में औरतों की बेपर्दगी होती है जिसे मैं नापसंद करती हूं, तो उन्हों ने हज़रत सैयिदा के लिये लकड़ियों का एक गहवारा बनाया जिसे देख कर आप बहुत ख़ुश हुईं। औरतों के जनाज़े पर आज कल जो पर्दा लगाने का दस्तूर है इसकी इब्तिदा आप ही से हुई। हज़रत अली या हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने आप की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और सहीह व मुख़्तार क़ौल यही है कि आप जन्नतुल बक़ीअ् में मदफ़ून हुईं। (मदारिजुन् नुबुव्वत वग़ैरा)

## आप की औलाद

हज़रत फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के छः औलाद हुईं। तीन साहिब ज़ादे, हज़रत हसन, हज़रत हुसैन और हज़रत मोहसिन और तीन साहिब ज़ादियां, हज़रत उम्मे कुल्सूम, हज़रत ज़ैनब और हज़रत रुक़ैय्या रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम। हज़रत मोहसिन और हज़रत रुक़ैय्या तो बचपन ही में इन्तिक़ाल कर गए। हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का निकाह अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से हुआ जिन से एक साहिब ज़ादे हज़रत ज़ैद

और एक साहिब ज़ादी हज़रत रुकैय्या पैदा हुईं। रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा। और तीसरी साहिब ज़ादी जो हज़रत ज़ैनब थीं उन का निकाह हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफर से हुआ। रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा।

सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की औलाद का सिलसिला कियामत तक हज़रत सैयिदा फातिमा ही के साहिब ज़ादगान से जारी रहेगा। रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुम।

*उस बतूले जिगर पारए मुस्तफा*
*हुजला आराए इफ्फत पे लाखों सलाम*
*जिस का आंचल न देखा महो-महर ने*
*उस रिदाए नज़ाहत पे लाखों सलाम*
*सैय्यिदा ज़हरा तैय्यिबा ताहिरा*
*जाने अहमद की राहत पे लाखों सलाम*

अब कब्ल इसके कि मैं निवासए रसूल हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु का ज़िक्रे जमील करूं आप सब हज़रात सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम और उन की आल व अस्हाब और अहले बैते किराम पर निहायत अकीदत व मुहब्बत के साथ एक बार बुलंद आवाज़ से दुरूद शरीफ का नज़्राना पेश करें।

اللهم صل على سيدنا ومولانا محمد وعلى اله
واصحابه واهل بيته وبارك وسلم

*अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला सैय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिंव व अ़ला आलिही व अस्हाबिही व अहलि बैतिही व बारिक् व सल्लिम।*

☆☆☆

# अमीरुल मोमिनीन हज़रत इमामे हसन

## रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

आप 15 रमज़ानुल मुबारक 3 हिजरी में पैदा हुए। रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फरमाया कि इस बच्चे का नाम रखो। उन्हों ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! इस का नाम आप रखें। हुज़ूर ने फरमाया मैं इस बच्चे का नाम वह रखूंगा जो खुदाए तआला फरमाएगा, तो हज़रते जिब्रील अलैहिस् सलाम नाज़िल हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! खुदाए अज़्ज़ व जल इस साहिब ज़ादा की पैदाइश पर आप को मुबारकबाद पेश करता है और फरमाता है कि इस का नाम हज़रत हारून अलैहिस्सलाम के साहिब ज़ादे शब्बर का नाम रखो जिस के मअ्ना हैं हसन। तो हुज़ूर ने आप का नाम हसन रखा और कुन्नियत अबू मुहम्मद। फिर पैदाइश के सात्वें दिन आप का अक़ीक़ा किया, बाल मुंडवाए और हुक्म फरमाया कि बालों के वज़न बराबर चांदी सदक़ा की जाए। (नुज़्हतुल मजालिस वग़ैरा)

जब हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का विसाल हुआ तो उस वक़्त आप की उम्र सिर्फ साढ़े सात साल की थी, इसके बा वजूद आप से बहुत सी हदीसें मरवी हैं। साहिबे तल्क़ीह ने आप का ज़िक्र उन सहाबा में किया है कि जिन से तेरह हदीसें रिवायत की गई हैं। साढ़े सात साल की उम्र ही क्या होती है, उस वक़्त इतनी हदीसों का याद रखना और नक़ल करना आप के हाफिज़े का कमाल है।

आप शक्ल व सूरत में अपने नाना जान प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से बहुत मुशाबह थे। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं: اَلْحَسَنُ اَشْبَهُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم مَا بَیْنَ الصَّدْرِ اِلَى الرَّاسِ यानी हज़रत हसन (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) सर से लेकर सीने तक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से बहुत मुशाबह हैं,

وَالْحُسَيْنُ اَشْبَهُ النَّبِىُّ صَلَّى اللّٰه تعالى عليه وسلّم مَا كَانَ اَسْفَلَ مِنْ ذٰلِكَ और हज़रते हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के जिस्मे अक्दस के ज़ेरीं (निचले) हिस्से से बहुत मुशाबह हैं। आला हज़रत रहमतुल्लाहि तआला अलैह फरमाते हैं:

*एक सीना तक मुशाबह एक वहां से पांव तक*
*हुस्ने सिबतैन उन के जामों में है नोशा नूर का*
*साफ शक्ले पाक है दोनों के मिलने से अयां*
*ख़ते तौ अम् में लिखा है यह दो बर्क़ा नूर का*

और इरशाद फरमाते हैं:

*मादूम न था साया-ए-शाहे सक्लैन*
*उस नूर की जल्वागाह थी ज़ाते हसनैन*
*तम्सील ने उस साए के दो हिस्से किये*
*आधे से हसन बने हैं, आधे से हुसैन*

## आप के फज़ाइल

हज़रत इमामे हसन मुज्तबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के फज़ाइल में बहुत सी हदीसें मरवी हैं जिन में कुछ पेश की जाती हैं।

हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है उन्हों ने फरमाया कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को देखा कि आप मिम्बर पर रौनक अफरोज़ हैं और हज़रत हसन आप के पहलू में हैं। आप कभी सहाबा की तरफ तवज्जोह फरमाते हैं और कभी उन की तरफ। और फरमाया: اِبْنِىْ هٰذَا سَيِّدٌ وَلَعَلَّ اللّٰهَ اَنْ يُّصْلِحَ بِهٖ بَيْنَ فِئَتَيْنِ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ मेरा बेटा यह सरदार है। उम्मीद है कि अल्लाह तआला इस के ज़रिये मुसलमानों के दो गिरोहों के दरमियान मुसालहत (सुलह) करा देगा। (बुख़ारी शरीफ:1/530)

और हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने फरमाया कि मैं ने देखा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम

सज्दे में होते और हज़रत हसन आते तो आप की गर्दने मुबारक या पुश्ते मुबारक पर सवार हो जाते तो आप उन्हें उतारते नहीं थे, वह खुद ही उतर जाते थे। और मैं ने देखा कि आप रुकूअ् की हालत में होते तो अपने पैरों के दरमियान इतना फासिला कर देते कि हज़रत हसन उनके दरमियान से दूसरी तरफ गुज़र जाते। (अश्शर्फुल मोअब्बदः60)

और हज़रत बिन बरा आज़िब रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु फरमाते हैं कि मैं ने रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम को देखा कि आप हज़रत हसन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को अपने कंधे पर बिठाए हुए हैं और दुआ़ फरमा रहे हैं: اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اُحِبُّهٗ فَاَحِبَّهٗ यानी ऐ अल्लाह! मैं इस से मुहब्बत रखता हूं तू भी इस से मुहब्बत रख।

(बुख़ारी शरीफः1/520)

और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा से रिवायत है फरमाते हैं कि रसूले करीम अलैहि अफ्ज़लुस् सलातु व अक्मलुत् तस्लीम हज़रत हसन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को अपने कंधे पर बिठाए हुए थे किसी सहाबी ने कहाः نِعْمَ الْمَرْكَبُ رَكِبْتَ يَا غُلَامُ ऐ साहिब ज़ादे! तेरी सवारी बहुत अच्छी है। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने फरमायाः وَنِعْمَ الرَّاكِبُ هُوَ और सवार भी तो बहुत अच्छा है। यानी ऐ सहाबी! यह तो तू ने देखा कि सवारी कितनी अच्छी है लेकिन यह भी तो देख कि सवार कितना अच्छा है। (मिश्कात शरीफः571)

एक दिन हज़रत अमीरे मुआ़विया रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के पास कुरैश और दीगर क़बीलों के बड़े-बड़े लोग जमा थे, उन्हों ने फरमायाः मुझे बताओ मां और बाप, चचा और फूफी, ख़ाला और मामूं नाना और नानी के ऐतबार से सब से ज़्यादा मोअ़ज़्ज़ कौन शख़्स है? हज़रत मालिक बिन अजलान रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु खड़े हुए और हज़रत हसन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की तरफ इशारा किया और फरमाया यह सब से अफ्ज़ल हैं। इनके वालिद अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली बिन तालिब हैं। इन की वालिदा सैयिदतुन्निसा हज़रत

फातिमा बिन्ते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम हैं। इनकी नानी उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा बिन्ते ख़ुवैलिद हैं और नाना नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम हैं। इनके चचा हज़रत जाफर हैं जो जन्नत में परवाज़ करते हैं और फूफी हज़रत उम्मे हानी बिन्ते अबी तालिब हैं और इनके मामूं और ख़ालाएं रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के साहिब ज़ादे और साहिब ज़ादियां हैं। फिर हज़रत मालिक बिन अजलान ने हज़रत अमीरे मुआ़विया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से पूछा क्या मैं ने सहीह कहा है? उन्हों ने फरमाया हां, ऐ अल्लाह! यह सच है। (बरकाते आले रसूलः142)

हाकिम की रिवायत है कि हज़रत हसन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने बग़ैर सवारी के पैदल 25 हज अदा फरमाए हालां कि अअ़्ला क़िस्म के ऊंट आप के हमराह होते थे लेकिन आप उन पर सवार नहीं होते थे और पा प्यादा (पैदल) रास्ता तय फरमाते थे। (तारीखुल खुलफा)

आप सख़ावत में बेमिसाल थे कि बसा औक़ात एक शख़्स को एक एक लाख दिरहम अता फरमा देते थे। इब्ने सअ़द अली बिन ज़ैद से रिवायत करते हैं कि हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने तीन बार आधा-आधा माल ख़ुदा की राह में दे दिया और दो मर्तबा अपना पूरा माल अल्लाह के रास्ते में ख़र्च कर दिया। (तारीखुल खुलफा)

आप बहुत बड़े बुर्दबार और हलीमुत् तबअ़् थे। इब्ने सअ़द रिवायत करते हैं कि मरवान जब मदीना मुनव्वरा में हाकिम था तो वह मिम्बर पर अलल् ऐलान हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को बुरा भला कहता था और हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु कमाले तहम्मुल के साथ उस की गुस्ताख़ियों को बर्दाशत कर लेते थे। और हज़रते हसन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु और मरवान के दरमियान गुफ्तुगू हो रही थी कि उस गुस्ताख़ ने आप के सामने ही आप को बुरा भला कहना शुरू कर दिया मगर आप ख़ामोश रहे। इस दरमियान मरवान ने अपने दाहिने हाथ से नाक साफ की तो हज़रत इमामे हसन

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उस से फरमाया अफ्सोस तुझे इतना भी नहीं मालूम कि दाहिना हाथ इस काम के लिये नहीं है, बाएं हाथ से नाक साफ करना चाहिये। यह सुन कर मरवान ख़ामोश रहा।

(तारीखुल खुलफ़ा)

अपनी बुराई सुन कर तो आप ख़ामोश रहे लेकिन जब ग़लत बात आप ने देखी तो फौरन तंबीह फरमाई। यह आप की हक़ गोई है, ऐब जोई नहीं। बाज़ मुद्दइयाने इल्म (इल्म का दावा करने वाले) जो तरह-तरह की बुराइयों में मुब्तला हैं इस किस्म की तंबीह को ऐब जोई क़रार देते हैं। खुदाए अज़्ज़ व जल् उन्हें हक़ गोई और ऐब जोई का फर्क़ समझने की तौफीक़े रफीक़ बख़्शे। आमीन।

## ख़िलाफत और उस से दस्तबरदारी

हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल् करीम की शहादत के बाद हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मस्नदे खिलाफत पर जल्वा अफ्रोज़ हुए। 40 हज़ार एहालियाने कूफ़ा (कूफा वालों) ने आप के दस्ते हक़ परस्त पर बैअत की। आप 6 माह तक मन्सबे ख़िलाफत पर फाइज़ रहे। उस के बाद जब हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आप के पास कूफा आए तो मन्द्रजा ज़ैल तीन शर्तों के साथ आप ने ख़िलाफत उन के सुपुर्द करना मन्ज़ूर फरमाया।

1- बर वक़्त अमीरे मुआविया ख़लीफा बनाए जाते हैं लेकिन उन के इन्तेक़ाल के बाद इमाम हसन ख़लीफतुल मुस्लिमीन होंगे।

2- मदीना शरीफ और हिजाज़ व इराक़ वग़ैरा के लोगों से हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हह के ज़माने के मुतअल्लिक़ कोई मुवाख़ज़ा और मुतालेबा नहीं किया जाएगा।

3- और हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ज़िम्मे जो दुयून (क़र्ज़) हैं उनकी सब की अदाइगी हज़रत अमीरे मुआविया करेंगे। रज़ियल्लाहु तआला अन्हु।

इन तमाम शर्तों को हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला

अन्हु ने कबूल किया तो आपस में सुलह हो गई और अल्लाह के महबूब दानाए खिफा व गुयूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का वह मोअजिज़ा ज़ाहिर हुआ जो आप ने फरमाया था कि मेरा यह फर्ज़न्दे अरजुमन्द मुसलमानों की दो जमाअतों के दरमियान सुलह कराएगा।

हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इस सुलह के बाद तख़्ते खिलाफत हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के लिये ख़ाली कर दिया। दस्त बरदारी का यह वाकिआ रबीउल् अव्वल 41 हिजरी में हुआ। (तारीखुल खुलफा)

ख़िलाफत से दस्त बरदार होना आप के बहुत से हम नवाओं (साथियों) को नागवार हुआ, उन्हों ने तरह-तरह से आप पर नाराज़गी का इज़हार किया, यहां तक कि बाज़ लोग आप को *"आरुल् मुस्लिमीन"* कह कर पुकारते तो आप उन से फरमाते *"अल्-आरु ख़ैरुम् मिन्नारि"* आर, नार से बेहतर है।

अम्रे खिलाफत हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को सुपुर्द करने के बाद आप कूफ़ा से मदीना तैयिबा चले गए और वहीं कियाम पज़ीर रहे। जुबैर बिन नुफैर कहते हैं कि एक रोज़ मैं ने हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से अर्ज़ किया कि लोग कहते हैं कि आप फिर ख़िलाफत के ख़्वास्तगार हैं, आप ने इरशाद फरमाया कि जिस वक्त अरबों के सर मेरे हाथों में थे यानी अपनी जानें कुर्बान करने के लिये वह मुझ से बैअत कर चुके थे, उस ज़माने में हम जिस से चाहते उन को लड़ा देते, लेकिन मैं उस वक्त महेज़ अल्लाह की रज़ामन्दी हासिल करने के लिये ख़िलाफत से दस्तबरदार हो गया और उम्मते मुहम्मदिया अला साहिबिहस् सलातु वत्तहिय्यह का ख़ून नहीं बहने दिया। तो जिस ख़िलाफत से मैं सिर्फ अल्लाह की रज़ामन्दी हासिल करने के लिये दस्त बरदार हो गया हूं, अब लोगों की खुशी के लिये मैं उसे दोबारा नहीं हासिल कर सकता। (तारीखुल खुलफ़ा)

# आप की करामतें

आप की बहुत सी करामतों में से एक करामत यह है कि आप हज के लिये पैदल सफर कर रहे थे कि आप के पैरों में वरम आ गया, आप के किसी गुलाम ने अर्ज़ किया, काश आप किसी सवारी पर सवार हो जाएं ताकि वरम कम हो जाए, आप ने उस की दरख़्वास्त क़बूल न की और फरमाया जब तुम मंज़िल पर पहुंचोगे तो तुम्हें एक हबशी मिलेगा जिस के पास कुछ तेल होगा, तुम उस से ख़रीद लेना।

जब मंज़िल पर पहुंचे तो हबशी दिखाई दिया, हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने गुलाम से फरमाया यह है वह हबशी जिस के मुतअल्लिक़ मैं ने बताया था, जाओ और उस से तेल ख़रीद लाओ और क़ीमत अदा कर आओ, जैसे ही वह गुलाम हबशी के पास गया और उस से तेल तलब किया तो उस ने पूछा यह तेल किस के लिये ख़रीद रहे हो? गुलाम ने कहा हज़रत हसन के लिये, रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, उस ने कहा मुझे उन के पास ले चलो, मैं उन का गुलाम हूं, जब वह हबशी आप की ख़िदमत में पहुंचा तो कहा मैं आप का गुलाम हूं, तेल की क़ीमत नहीं लूंगा, आप बस मेरी बीवी के लिये जो दर्दे-ज़ेह में मुब्तला है, दुआ फरमाएं कि अल्लाह तआला उसे एक सहीहुल अअज़ा बच्चा अता फरमाए, आप ने फरमाया अपने घर जाओ, अल्लाह तआला तुम्हें ऐसा ही बेटा अता फरमाएगा जैसा तुम चाहते हो, वह हमारा पैरूकार होगा, हबशी घर गया तो आप के फरमाने के मुताबिक़ बच्चा पैदा हुआ। (शवाहिदुन् नुबुव्वत:302)

आप की दूसरी मशहूर करामत यह है कि एक बार आप हज़रत जुबैर बिन अल्-अव्वाम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के एक फर्ज़न्द के साथ सफर कर रहे थे कि आप का गुज़र खजूरों के एक ऐसे बाग़ में हुआ कि जिस के सब दरख़्त खुश्क हो गए थे, आप ने उसी बाग़ में डेरा डाल दिया। हज़रत हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के लिये बाग़ के एक दरख़्त की जड़ में और इब्ने जुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के

लिये दूसरे दरख़्त की जड़ में फर्श बिछाया गया। हज़रत इब्ने ज़ुबैर ने फरमाया ऐ काश! इस नख़्लिस्तान में ताज़ा खुजूरें होतीं जिन्हें हम खाते। हज़रत हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया क्या ताज़ा खजूरें चाहते हो? हज़रत इब्ने ज़ुबैर ने कहा हां, आप ने दुआ के लिये हाथ उठाया और ज़ेरे लब कुछ कहा जो किसी को मालूम न हुआ, फौरन खजूर का एक दरख़्त तरो-ताज़ा और बार-आवर हो गया, उस में ताज़ा खजूरें लग गईं। उन का साथी शुतरबान बोला, वल्लाह! यह जादू है। हज़रत हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया यह जादू नहीं है बल्कि फर्ज़न्दे रसूल की दुआए मुस्तजाब का असर है, फिर लोगों ने खजूरों को दरख़्त से तोड़ा और सब ने ख़ूब शिकम सैर होकर खाया।

(शवाहिदुन् नुबुव्वत:303)

## आप की शहादत

इब्ने सअद हज़रत इमरान बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत करते हैं कि हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने ख़्वाब देखा कि उन की दोनों आंखों के दरमियान "कुल् हुवल्लाहु अहद" लिखा हुआ है, जब आप ने यह ख़्वाब बयान फरमाया तो अहले बैत बहुत खुश हुए लेकिन जब हज़रत सईद बिन मुसैय्यिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के सामने यह ख़्वाब बयान किया गया तो उन्हों ने फरमाया कि अगर आप को यह ख़्वाब सच्चा है तो आप की ज़िंदगी के सिर्फ चन्द दिन और बाक़ी रह गए हैं। यह ताबीर सहीह वाक़े हुई कि ऐसा ख़्वाब देखने के बाद आप सिर्फ चन्द रोज़ बक़ैदे हयात रहे, फिर ज़हेर देकर शहीद कर दिये गए। (तारीख़ुल खुलफा)

ज़हेर ख़ूरानी की तफ्सील यूं बयान की जाती है कि पहले आप को शहद में मिला कर ज़हेर दिया गया जिस से आप के शिकमे मुबारक में दर्द पैदा हुआ, रात भर आप माहिए बेआब (बिना पानी के मछली) की तरह तड़पते रहे, सुबह अपने जद्दे अमजद प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के रौज़ए मुनव्वरा पर हाज़िर हुए, दुआ

फ़रमाई तो ख़ुदाए अज़्ज़ व जल् ने उन्हें शिफ़ाए कुल्ली अता फ़रमाई।

दूसरी बार आप को ज़हेर आलूद खजूरें खिलाई गईं, 6-7 खुजूरें खाते ही आप को सख़्त घबराहट पैदा हुई, अपने भाई हज़रत सैयिदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मकान पर तशरीफ लाए और रात भर बेक़रार रहे, सवेरे फिर अपने नाना जान सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के रौज़ए मुक़द्दसा पर हाज़िर हुए और दुआ फरमाई तो इस बार भी ख़ुदाए तआला की रहमत और उस के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की बरकत से ज़हेर का असर जाता रहा।

बयान किया जाता है कि इस तरह आप को पांच बार ज़हरे हलाहल दिया गया मगर हर बार उस का असर ज़ाइल होता रहा। छठी बार हीरे की कन्नी पिसी हुई आप की सुराही में डाली गई, जिस का पानी पीते ही ऐसा मालूम हुआ कि हलक़ से नाफ तक फट गया और दिल टुक्ड़े-टुक्ड़े हो गया, आप बेक़रारी में मुर्गे बिस्मिल की तरह तड़पने लगे, मुसलसल क़ै होने लगी और दस्त भी जारी हुआ जिस के साथ जिगर और अंतड़ियों के टुक्ड़े कट कर गिरने लगे।

वफात के क़रीब आप के भाई हज़रत सैयिदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आप की ख़िदमत में हाज़िर हुए और पूछा कि आप को ज़हेर किस ने दिया है? आप ने फरमाया कि तुम उसे क़त्ल करोगे? हज़रत इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया बेशक मैं उसे क़त्ल करूंगा, आप ने फ़रमाया जिस के बारे में मेरा गुमान है अगर हक़ीक़त में वही ज़हेर देने वाला है तो ख़ुदाए ज़ुलजलाल मुन्तक़िमे हक़ीक़ी (सही इन्तेक़ाम लेने वाला) है और उस की गिरफ्त बहुत सख़्त है। और जिस के बारे में मेरा गुमान है अगर वह ज़हेर देने वाला नहीं है तो मैं नहीं चाहता कि मेरी वजह से कोई बेगुनाह क़त्ल किया जाए।

सुब्हानल्लाह! हज़रत इमामे आली मक़ाम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का फ़ज़्लो-कमाल कितना बुलंद व बाला है, आप सख़्त तक्लीफ में

मुब्तला हैं, इस्हाले कबदी लाहिक़ है, आंतों के टुक्ड़े कट-कट कर निकल रहे हैं और नज़अ् की हालत हैं मगर उस वक़्त भी इंसाफ का बादशाह अपने इंसाफ व अदालत का न मिटने वाला नक़्शा सफ्हए तारीख़ पर सबूत फरमाता है और उस की ऐहतियात इजाज़त नहीं देती कि जिस के बारे में गुमान है उस का नाम लेना गवारा किया जाए।

वफात के क़रीब हज़रत इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने देखा कि हज़रत इमामे हसन को बेक़रारी और घबराहट ज़्यादा है, तो आप ने उन की तसल्ली के लिये अर्ज़ किया कि ऐ बिरादरे मोहतरम! यह घबराहट और बेक़रारी कैसी है? आप तो अपने नाना सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम और अपने बाबा हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के पास जा रहे हैं, अपनी जद्दए करीमा (नानी जान) हज़रत ख़दीजतुल् कुबरा और वालिदए मोहतरमा हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से मिलेंगे और अपने मामूं हज़रत क़ासिम और हज़रत ताहिर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से भी मुलाक़ात करेंगे।

हज़रत इमामे हसन ने फरमाया बिरादरे अज़ीज़! मैं ऐसे अम्र में दाख़िल होने वाला हूं कि जिस की मिस्ल में अब तक दाख़िल नहीं हुआ था और मैं अल्लाह की मख़्लूक़ में से ऐसी मख़्लूक़ देख रहा हूं कि जिस की मिस्ल कभी नहीं देखा। (तारीख़ुल ख़ुलफा)

45 साल छः माह चन्द रोज़ की उम्र में बमक़ाम मदीना तैयिबा 5 रबीउल् अव्वल 49 हिजरी में आप ने वफात पाई और जन्नतुल बक़ीअ् में हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा के पहलू में मदफून हुए। *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।*

*वह हसन मुज्तबा सैयिदुल् अस्ख़िया*
*राकिबे दोशे इ़ज़्ज़त पे लाखों सलाम*
*शहद ख़्वारे लुआ़बे ज़बाने नबी*
*चाशनी गीर इस्मत पर लाखों सलाम*

# ज़हेर किस ने दिया

बाज़ लोगों ने लिखा है कि हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बीवी ने आप को ज़हेर दिया था मगर यह लिखना सहीह है या नहीं, इस के बारे में हज़रत सदरुल अफाज़िल मौलाना मुहम्मद नईमुद्दीन साहब मुरादाबादी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने जो मोहक़्क़िक़ाना मज़्मून तहरीर फरमाया है वह मुलाहेज़ा फरमाएं। आप लिखते हैं कि मोवर्रिख़ीन ज़हेर ख़ूरानी की निस्बत जअ्दा बिन्त अश्अस बिन क़ैस की तरफ की है और उस को हज़रत इमाम की ज़ौजा बताया है और यह भी कहा है कि कि यह ज़हेर ख़ूरानी बाग़वाए यज़ीद हुई है और यज़ीद ने उस से निकाह का वादा किया था, इस तमअ् (लालच) में आकर उस ने हज़रत इमाम को ज़हेर दिया। लेकिन इस रिवायत को कोई सहीह सनद दस्तयाब नहीं हुई और बग़ैर किसी सनदे सहीह के किसी मुसलमान पर क़त्ल का इल्ज़ाम और ऐसे अज़ीमुश्शान क़त्ल का इल्ज़ाम किस तरह जाइज़ हो सकता है। क़तुए नज़र इस बात के कि रिवायत के लिये कोई सनद नहीं है और मोवर्रिख़ीन ने बग़ैर किसी मोतबर ज़रिया या मोअ्तमद हवाले के लिख दिया है, यह ख़बर वाक़िआत के लिहाज़ से भी ना क़ाबिले इत्मीनान मालूम होती है। वाक़िआत की तहक़ीक़ खुद वाक़िआत के ज़माने में जैसी हो सकती है, मुश्किल है कि बाद को वैसी तहक़ीक़ हो, ख़ास कर जबकि वाक़िआ इतना अहम हो। मगर हैरत है कि अहले बैते अतहार के इस इमामे जलील का क़त्ल उस क़ातिल की ख़बर ग़ैर को तो क्या होती खुद हज़रत इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को पता नहीं है। यही तारीखें बताती हैं कि वह अपने बिरादरे मोअज़्ज़म से ज़हेर दहिन्दा का नाम दरियाफ्त फरमाते हैं, इस से साफ ज़ाहिर है कि हज़रत इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को ज़हेर देने वाले का इल्म न था। अब रही यह बात कि हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु किसी

का नाम लेते, उन्हों ने ऐसा नहीं किया तो अब जुअ्दा को क़ातिल होने के लिये मुअय्यन करने वाला कौन है। हज़रत इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को या इमामैन के साहिब ज़ादों में से किसी साहब को अपनी आख़िर हयात तक जुअ्दा की ज़हेर ख़ूरानी का कोई सबूत न पहुंचा न उन में से किसी ने उस पर शरई मुवाख़ज़ा किया।

एक और पहलू इस वाक़िआ का क़ाबिले लिहाज़ है वह यह है कि हज़रत इमाम की बीवी को ग़ैर के साथ साज़ बाज़ करने की शनीअ् तोहमत के साथ मुत्तहिम किया जाता है यह एक बदतरीन तबर्रा है। अ़जब नहीं कि इस हिकायत की बुनियाद ख़ारजियों के इफ्तिराआत हों जबकि सहीह और मोतबर ज़राए से यह मालूम है कि हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु कसीरुत् तज़व्वुज (ज़्यादा निकाह करने वाले) थे और आप ने सौ के क़रीब निकाह किये और तलाक़ें दीं, अक्सर एक दो शब ही बाद तलाक़ दे देते थे। और हज़रत अमीरुल मोमिनीन अली मुरतज़ा कर्रमल्लाहु तआ़ला वज्हहुल करीम बार-बार ऐलान फरमाते थे कि इमामे हसन की आदत है, यह तलाक़ दे दिया करते हैं, कोई अपनी लड़की उन के साथ न ब्याहे, मगर मुसलमान बीबियां और उन के वालिदैन यह तमन्ना करते थे कि कनीज़ होने का शर्फ हासिल हो जाए। उसी का असर थ कि हज़रत इमामे हसन जिन औरतों को तलाक़ देते थे वह अपनी बाक़ी ज़िंदगी हज़रत इमाम की मुहब्बत में शैदाना गुज़ार देती थीं और उनकी हयात का लम्हा-लम्हा हज़रत इमाम की याद और मुहब्बत में गुज़रता था, ऐसी हालत में यह बात बहुत बईद है कि इमाम की बीवी हज़रत इमाम के फैज़े सोहबत की क़दर न करे और यज़ीद पलीद की एक तमए फासिद से इमामे जलील के क़त्ल जैसे सख़्त जुर्म का इरतिकाब करे। *वल्लाहु अअ्लमु बिहक़ीक़तिल् हाल*

(सवानेह कर्बला)

# ऐब या ख़ूबी

हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु का अक्सर एक दो

शब ही के बाद तलाक़ दे देना ऐब नहीं था। अगर ऐब होता तो फिर कोई औरत उन के निकाह में आने को क़बूल न करती और न किसी औरत के ख़ानदान वाले इस पर राज़ी होते बल्कि यह हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की ख़ूबी थी कि वह लोगों को अपने ज़रिये हुज़ूर पुर नूर शाफ़िए यौमुन् नुशूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की रिश्तेदारी से मुशर्रफ़ फ़रमाते थे और मुसलमान बीवियों को ख़ातूने जन्नत हज़रत सैयिदा फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा की बहू होने की इज़्ज़त बख़्शते थे ताकि यह रिश्ता उन्हें क़ियामत के दिन काम आए और उन की बख़्शिश का ज़रिया बन जाए। चुनांचे हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ मोहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि तहरीर फ़रमाते हैं कि हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से कस्रते तज़व्वुज का सबब दरियाफ़्त किया गया तो आप ने फ़रमाया मैं चाहता हूं कि बहुत से लोगों को मेरी वजह से पैग़म्बरे ख़ुदा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम से रिश्ता हो जाए जो क़ियामत के दिन उन्हें काम आए। (फ़तावा अज़ीज़ियहः1/97)

और मुसलमान भी इसी लालच में अपनी लड़कियां उन के निकाह में देते थे। इब्ने सअ़द ने लिखा है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने ऐलान फ़रमाया कि ऐ कूफ़ा वालो! हसन के साथ अपनी बेटी की शादी मत करो कि वह तलाक़ देने के आदी हैं। यह सुनकर एक हमदानी ने कहा, ख़ुदा की क़सम हम उन से अपनी बेटियों की शादी ज़रूर करेंगे जिसे वह चाहें रखें और जिसे चाहें तलाक़ दे दें।

(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा:139)

एक मर्तबा फिर हम सब लोग मिल कर रसूले काइनात सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम और उन की आल व अस्हाब पर झूम-झूम कर दुरूदो-सलाम की डालियां निछावर करें।

اللهم صل علی سیدنا ومولانا محمد وعلی آله واصحابه وبارك وسلم

*अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला सैय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिंव*
*व अ़ला आलिही व अस्हाबिही व बारिक् व सल्लिम्।*

# ताज़ीमे अहले बैत के चन्द वाकिआत

अब हम अहले बैते नुबुव्वत के चन्द वाकिआत आप के सामने पेश करते हैं जिन से ज़ाहिर होगा कि सहाबए किराम और दीगर सल्फे सालिहीन व बुजुर्गाने दीन, अहले बैते नुबुव्वत की कैसी ताज़ीम व तक्रीम करते थे।

हाफिज़ इब्ने हजर अस्क़लानी ने इसाबा में फरमाया, यहया बिन सईद अंसारी उबैद बिन हुनैन से रिवायत करते हैं कि मुझ से हज़रत इमामे हुसैन बिन अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने बयान किया कि मैं हज़रत उमर फारूक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास गया, वह मिम्बर पर खुत्बा दे रहे थे. मैं मिम्बर पर चढ़ गया और कहा: اِنْزِلْ عَنْ مِنْبَرِ اَبِیْ وَاذْھَبْ اِلٰی مِنْبَرِ اَبِیْكَ यानी मेरे बाप के मिम्बर से उतरिये और अपने बाप के मिम्बर पर जाइये। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया: لَمْ یَكُنْ لِاَبِیْ مِنْبَرٌ मेरे बाप का मिम्बर नहीं था। और मुझे पकड़ कर अपने पास बिठा लिया, मैं अपने पास पड़ी हुई कंकरियों से खेलता रहा। जब आप मिम्बर से उतरे तो मुझे अपने घर ले गए, फिर मुझ से फरमाया कितना अच्छा हो अगर आप कभी-कभी तशरीफ़ लाते रहें।

(अशर्फुल मोअब्बद:93)

और हज़रत इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि एक दिन मैं उन के पास गया, आप हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से तंहाई में बातें कर रहे थे और अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा दरवाज़े पर खड़े थे, इब्ने उमर वापास हुए तो मैं भी उन के साथ वापस हो गया। बाद में जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मुलाक़ात हुई तो उन्हों ने फरमाया क्या बात है मैं ने आप को नहीं देखा। मैं ने कहा अमीरुल मोमिनीन ! मैं आया था, आप हज़रत मुआविया से गुफ्तगू फरमा रहे थे, तो मैं अब्दुल्लाह बिन उमर के साथ वापस आ गया। उन्हों ने फरमाया आप इब्ने उमर से ज़्यादा हक़दार हैं, हमारे सरों के बाल अल्लाह तआला ने

आप की बरकत से उगाए हैं। (बरकाते आले रसूल:260)

अबुल फरह अस्फ़हानी उबैदुल्लाह बिन उमर क़वारीरी से रिवायत है कि हम से यहया इब्ने सईद ने सईद बिन अबान क़रशी से रिवायत की कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन हसन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुम हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के पास तशरीफ ले गए वह नौ उम्र थे, उन की बड़ी-बड़ी ज़ुल्फें थीं, हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने उन्हें ऊंची जगह बिठाया, उन की तरफ मुतवज्जह हुए और उन की ज़रूरतें पूरी कीं, जब वह तशरीफ ले गए तो हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ की क़ौम ने उनकी मलामत की कि आप ने एक नौ उम्र बच्चे के साथ ऐसा-ऐसा सुलूक किया, आप ने फरमाया कि मुझ से मोतबर आदमी ने बयान किया गोया कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की ज़बान से सुन रहा हूं, आप ने फरमायाः إِنَّمَا فَاطِمَةُ بَضْعَةٌ مِنِّي يَسُرُّنِي مَا يَسُرُّهَا यानी फातिमा मेरी लख़्ते जिगर हैं, उन की ख़ुशी का सबब मेरी ख़ुशी का बाइस है। और मैं जानता हूं कि अगर हज़रत फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा तशरीफ फरमा होतीं तो मैं ने जो कुछ उन के बेटे के साथ किया है इस से वह ज़रूर ख़ुश होतीं। (बरकाते आले रसूल:261)

शैख़े अक्बर सैय्यिदी मुहीउद्दीन इब्ने अरबी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु अपनी तस्नीफ "मुसामिरातुल अख़ियार" में अपनी सनदे मुत्तसिल से हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक से रिवायत करते हैं कि बाज़ मुतक़द्दिमीन को हज की बड़ी आरज़ू थी, उन्हों ने फरमाया मुझे एक साल बताया गया कि हाजियों का एक क़ाफिला बग़दाद शरीफ में आया है। मैंने उनके साथ हज के लिये जाने का इरादा किया, पांच सौ दीनार लेकर मैं बाज़ार की तरफ निकला ताकि हज की ज़रूरियात ख़रीद लाऊं, मैं एक रास्ते पर जा रहा था कि एक औरत मेरे सामने आई, उस ने कहा कि अल्लाह तआ़ला तुम पर रहम फरमाए, मैं सैय्यद ज़ादी हूं, मेरी बच्चियों के लिये तन ढांपने का कपड़ा नहीं है और आज चौथा दिन है कि मैं ने कुछ नहीं खाया है, उस की गुफ्तगू मेरे दिल में उतर

गई, मैं ने वह पांच सौ दीनार उस के दामन में डाल दिये और उन से कहा कि आप अपने घर जाएं और इन दीनारों से अपनी ज़रूरियात पूरी करें। मैं ने अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा किया कि उस ने मुझ को एक सैय्यद ज़ादी की इमदाद की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई और वापस आ गया। मैं कई साल हज कर चुका था। अल्लाह तआ़ला ने इस बार हज पर जाने का शौक़ मेरे दिल से निकाल दिया, दूसरे लोग चले गए, हज किया और वापस चले आए। मैं ने सोचा कि दोस्तों से मुलाक़ात कर आऊं और उन्हें मुबारकबाद पेश कर दूं। चुनांचे मैं गया, जिस दोस्त से मिलता उसे सलाम करता और कहता कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारा हज क़बूल फ़रमाए और तुम्हारी कोशिश की बेहतरीन जज़ा (बदल) अता फ़रमाए तो वह मुझ से कहता कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारा भी हज क़बूल फ़रमाए। कई दोस्तों ने इसी तरह कहा और जब रात को सोया तो नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की ज़ियारत हुई, आप ने फ़रमाया लोग तुम्हें हज की जो मुबारकबाद पेश कर रहे हैं उस पर तअ़ज्जुब न करो, तुम ने मेरी एक कमज़ोर और ज़रूरतमंद बेटी की इमदाद की तो मैं ने अल्लाह तआ़ला से दुआ की, उस ने हू बहू तुझ जैसा एक फ़िरिश्ता पैदा फ़रमाया जो हर साल तुम्हारी तरफ़ से हज करता रहेगा। (बरकाते आले रसूलः263)

शैख़ अदवी ने अपनी किताब "मशारिकुल अन्वार" में इब्ने जौज़ी की तस्नीफ़ "मुल्तक़ित" से नक़ल किया कि बलख़ में एक अ़लवी क़ियाम पज़ीर (रहता) था, उस की बीवी और चन्द बेटियां थीं, क़ज़ाए इलाही से वह शख़्स फ़ौत हो गया। उन की बीवी कहती हैं कि मैं शमा़तते अअ़्दा (दुश्मनों की सख़्ती) के ख़ौफ़ से समरक़ंद चली गई, मैं वहां सख़्त सर्दी में पहुंची, मैं ने अपनी बेटियों को मस्जिद में ले जाकर बिठा दिया और ख़ुद ख़ुराक की तलाश में निकल पड़ी, मैं ने देखा कि लोग एक शख़्स के गिर्द जमा हैं, मैं ने उस के बारे में दरियाफ़्त किया तो लोगों ने बताया कि यह रईसे शहर है, मैं उस के पास पहुंची और अपना हाले ज़ार बयान किया, उस ने कहा कि अपने अलवी होने पर

गवाह पेश करो, उस ने मेरी तरफ कोई तवज्जोह नहीं की, मैं मस्जिद की तरफ वापस चल पड़ी, मैं ने रास्ते में बुलंद जगह पर एक बूढ़ा बैठा हुआ देखा जिस के गिर्द कुछ लोग जमा थे। मैं ने पूछा यह कौन है? लोगों ने कहा यह मुहाफिज़े शहर है और मजूसी है। मैं ने सोचा मुम्किन है इस से कुछ फाइदा हासिल हो जाए। चुनांचे मैं उस के पास पहुंची अपनी सरगुज़िश्त बयान की और रईसे शहर के साथ जो वाक़िआ पेश आया था उसे भी बयान किया और उसे बताया कि मेरी बच्चियां मस्जिद में हैं और उनके खाने पीने के लिये कोई चीज़ नहीं है। उसने अपने गुलाम को बुलाया और कहा अपनी मालिका (यानी मेरी बीवी) से कह कि वह कपड़े पहन कर और तैयार होकर आ जाए। चुनांचे वह आ गई और उस के साथ चन्द कनीज़ें भी थीं, बूढ़े ने अपनी बीवी से कहा इस औरत के साथ फुलां मस्जिद में चली जा और उस की बेटियों को अपने घर ले आ, वह मेरे साथ गई और बच्चियों को अपने घर ले आई; शेख़ ने अपने घर में हमारे लिये अलग रिहाइशगाह मुक़र्रर किया, गुस्ल का इन्तिज़ाम किया, हमें बेहतरीन कपड़े पहनाए और तरह-तरह के खाने खिलाए।

जब आधी रात हुई तो रईसे शहर ने ख़्वाब में देखा कि क़ियामत क़ाइम हो गई है और लिवाउल हम्द रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के सरे अन्वर पर लहरा रहा है, आप ने उस रईस से ऐराज़ फरमाया, उस ने अर्ज़ किया हुज़ूर! आप मुझ से ऐराज़ फरमा रहे हैं हालां कि मैं मुसलमान हूं। नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: اِیتِ الْبَیِّنَةَ عِنْدِی اَنَّکَ مُسْلِمٌ अपने मुसलमान होने पर गवाह पेश करो, वह शख़्स हैरतज़दा रह गया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: तू ने उस अलवी औरत से जो कुछ कहा था उसे भूल गया, यह महल जो तुम्हारी निगाहों के सामने है, यह उस शेख़ का है जिस के घर में इस वक़्त वह औरत है।

रईस बेदार हुआ तो रो रहा था और अपने मुंह पर तमांचे मार रहा था। उस ने अपने गुलामों को उस औरत की तलाश में भेजा और ख़ुद

भी तलाश में निकला, उसे बताया गया कि वह औरत मजूसी के घर में क़ियाम पज़ीर है, यह रईस उस मजूसी के पास गया और कहा वह अलवी औरत कहां है? उस ने कहा मेरे घर में है, रईस ने कहा उसे मेरे यहां भेज दो। शेख़ ने कहा यह नहीं हो सकता, रईस ने कहा मुझ से यह हज़ार दीनार ले लो और उसे मेरे यहां भेज दो। शेख़ ने कहा: لَا وَاللّٰهِ وَبِمِائَةِ أَلْفِ دِيْنَارٍ क़सम ख़ुदा की! ऐसा नहीं हो सकता, अगर्चे तुम लाख दीनार भी दो, जब रईस ने ज़्यादा इस्‌रार किया तो शेख़ ने उस से कहा जो ख़्वाब तुम ने देखा है, मैंने भी देखा है और जो महल तुम ने देखा है वह वाक़ई मेरा है, तुम इस लिये मुझ पर फख़्र कर रहे हो कि तुम मुसलमान हो, बख़ुदा वह अलवी ख़ातून जैसे ही हमारे घर में आईं, हम सब उनके हाथ पर मुसलमान हो गए, उन की बरकतें हमें हासिल हो चुकी हैं, मुझे ख़्वाब में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व सल्लम की ज़ियारत हुई, आप ने मुझ से फरमाया: هٰذَا الْقَصْرُ لَكَ وَلِاَهْلِكَ بِمَا فَعَلْتَ مَعَ الْعَلَوِيَّةِ وَاَنْتُمْ مِنْ اَهْلِ الْجَنَّةِ चूंकि तुम ने इस अलवी ख़ातून की ताज़ीम व तकरीम की है, इस लिये यह महल तुम्हारे लिये और तुम्हारे घर वालों के लिये है और तुम जन्नती हो। (बरकाते आले रसूल:267)

सैय्यिदी अब्दुल वहाब शअ़रानी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फरमाते हैं, सैय्यद शरीफ ने हज़रत ख़त्ताब रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह की ख़ान्क़ाह में बयान किया कि काशिफुल बुहैरा ने एक सैय्यद को मारा, तो उसी रात ख़्वाब में उसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की इस हाल में ज़ियारत हुई कि आप उस से ऐराज़ फरमा रहे हैं, उस ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मेरा क्या गुनाह है? फरमाया: تَضْرِبُنِىْ وَاَنَا شَفِيْعُكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ तू मुझे मारता है हालां कि मैं क़ियामत के दिन तेरा शफीअ़ हूं। उस ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मुझे याद नहीं कि मैं ने आप को मारा हो, आप ने फरमाया: اَمَا ضَرَبْتَ وَلَدِىْ क्या तू ने मेरी औलाद को नहीं मारा? उस ने अर्ज़ किया हां, फरमाया: مَا وَقَعَتْ ضَرْبَتُكَ اِلَّا عَلٰى ذِرَاعِىْ هٰذَا तेरी ज़र्ब मेरी ही कलाई पर पड़ी है। फिर आप ने अपनी

कलाई निकाल कर दिखाई, जिस पर वरम था, जैसे कि शहद की मक्खी ने डंक मारा हो। (बरकाते आले रसूल:267)

अल्लामा मुक़रेज़ी फरमाते हैं मुझ से रईस शमसुद्दीन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह उमरी ने बयान किया कि मैं एक दिन क़ाज़ी जमालुद्दीन महमूद अजमी की ख़िदमत में हाज़िर हुआ जो क़ाहेरा के गवर्नर थे, वह अपने नाइबों और ख़ादिमों के हमराह सैय्यद अब्दुर रहमान तबातिबी मोअज़्ज़िन के घर तशरीफ ले गए, उन से इजाज़त तलब की, वह अपने घर से बाहर आए, तो उन्हें गवर्नर के अपने यहां आने पर सख़्त हैरत हुई, वह उन्हें अन्दर ले गए, हम भी उन के साथ अन्दर चले गए और सैय्यद अब्दुर रहमान के सामने अपने-अपने मर्तबा के मुताबिक़ बैठे, सब लोग जब इत्मीनान से बैठ गए तो गवर्नर ने सैय्यद साहब से कहा कि हज़रत मुझे माफ फरमा दीजिये, उन्हों ने कहा जनाब! क्या चीज़ माफ कर दूं? उन्हों ने कहा कल रात मैं क़िला पर गया और बादशाह यानी मलिक ज़ाहिर बरक़ूक़ के सामने बैठा तो आप तशरीफ लाए और मुझ से बुलंद जगह पर बैठ गए, मैं ने अपने दिल में कहा यह बादशाह की मज्लिस में मुझ से ऊंचे क्यों बैठे है? रात को मैं सोया तो मुझे नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ज़ियारत हुई, आप ने मुझ से फरमायाः يَا مَحْمُوْدُ تَأنِفُ اَنْ تَجْلِسَ تَحْتَ وَلَدِىْ महमूद! तू इस बात से आर महसूस करता है कि मेरी औलाद से नीचे बैठे, यह सुन कर हज़रत सैय्यद अब्दुर रहमान रो पड़े और कहा जनाब मैं ऐसा कहां हूं कि रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मुझे याद फरमाएं, यह सुनना था कि तमाम हाज़िरीन रो पड़े और सब की आंखें अश्कबार हो गईं। (बरकाते आले रसूल:269)

ताज़ीम आले रसूल से मुतअल्लिक़ आला हज़रत पेशवाए अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह का एक ईमान अफरोज़ वाक़िआ रईसुल क़लम हज़रत अल्लामा अरशदुल क़ादिरी साहब दामत बरकातहुम के अल्फाज़ में समाअत फरमाएं।

इमाम अहले सुन्नत की सवारी के लिये पालकी दरवाज़ा के सामने लगा दी गई थी, सैकड़ों मुश्ताक़ाने दीद (दीदार के ख़्वाहिश्मन्द) इन्तेज़ार में खड़े थे, वुज़ू से फ़ारिग़ होकर कपड़े ज़ेबे तन फ़रमाए, इमामा बांधा और आलिमाना वक़ार के साथ बाहर तशरीफ़ लाए। चेहरए अनवर से फ़ज़्लो-तक़्वा की किरन फूट रही थी, शब्बेदार आंखों से फ़िरिश्तों का तक़द्दुस बरस रहा था, तलूअ़तो-जमाल की दिलकशी से मज्मअ़ पर एक रिक़्क़त अंगेज़ बेख़ुदी का आलम तारी था, गोया परवानों के हुजूम में एक शमअ़ फ़रोज़ां मुस्कुरा रही थी और अंदलीबाने शौक़ की अंजुमन में एक गुंले रअ़ना खिला हुआ था, बड़ी मुश्किल से सवारी तक पहुंचने का मौक़ा मिला, पा बोसी का सिलसिला ख़त्म होने के बाद कहारों ने पालकी उठाई, आगे पीछे, दाहिने बाएं, नियाज़मंदों की भीड़ हम्राह चल रही थी, पालकी लेकर थोड़ी ही दूर चले थे कि इमाम अहले सुन्नत ने आवाज़ दी, पालकी रोक दो।

हुक्म के मुताबिक़ पालकी रख दी गई, हम्राह चलने वाला मज्मअ़ भी वहीं रुक गया, इज़्तिराब की हालत में बाहर तशरीफ़ लाए, कहारों को अपने क़रीब बुलाया और भर्राई हुई आवाज़ में दरियाफ़्त किया आप लोगों में कोई आले रसूल तो नहीं है? अपने जद्दे आला का वास्ता, सच बताइये मेरे ईमान का ज़ौक़े लतीफ़ "तने जानां" की ख़ुश्बू महसूस कर रहा है, इस सवाल पर अचानक उन में से एक शख़्स के चेहरे का रंग फ़क़ हो गया, पेशानी पर ग़ैरतो-पशेमानी की लकीरें उभर आईं, बेनवाई, आशुफ़्ता हाली और गरदिशे अय्याम के हाथों एक पामाल ज़िंदगी के आसार उस के अंग-अंग से आशकार थे, काफ़ी देर तक ख़ामोश रहने के बाद नज़र झुकाए हुए दबी ज़बान से कहा "मज़दूर से काम लिया जाता है, ज़ात पात नहीं पूछा जाता, आह! आप ने मेरे जद्दे अअ़ला का वास्ता देकर मेरी ज़िंदगी का सरबस्ता राज़ फ़ाश कर दिया, समझ लीजिये कि मैं उसी चमन का एक मुरझाया हुआ फूल हूं, जिस की ख़ुश्बू से आप की मशामें जां मुअ़त्तर है, रगों का ख़ून नहीं बदल सकता, इस लिये आले रसूल होने से इनकार नहीं है लेकिन

अपनी खानुमा बरबाद ज़िंदगी को देख कर यह कहते हुए शर्म आती है, चन्द महीने से आप के इस शहर में आया हूं, कोई हुनर नहीं जानता कि उसे अपना ज़रियए मआश बनाऊं, पालकी उठाने वाले मज़दूरों से राब्ता क़ाइम कर लिया, हर रोज़ सवेरे उन के झुण्ड में आकर बैठ जाता हूं और शाम को अपने हिस्सा की मज़दूरी लेकर अपने बाल बच्चों में पहुंच जाता हूं।

अभी उस की बात तमाम भी न हो पाई थी कि लोगों ने पहली बार तारीख़ का यह हैरत अंगेज़ वाक़िआ देखा, आलमे इस्लाम के एक मुक़्तदर इमाम की दस्तार उस के क़दमों पर रखी हुई थी और वह बरसते हुए आंसुओं के साथ फूट-फूट कर इल्तिजा कर रहा था।

मोअज़्ज़ शहज़ादे! मेरी गुस्ताख़ी माफ कर दो, ला इल्मी में यह ख़ता सरज़द हो गई है, हाए ग़ज़ब हो गया, जिन के कफ़शे पा का ताज मेरे सर का सब से बड़ा ऐज़ाज़ है, उन के कांधों पर मैं ने सवारी की, क़ियामत के दिन अगर सरकार ने पूछ लिया ''अहमद रज़ा क्या मेरे फ़र्ज़न्दों का दोशे नाज़नीं इसी लिये था कि वह तेरी सवारी का बोझ उठाएं? तो मैं क्या जवाब दूंगा। उस वक़्त भरे मैदाने हश्र में मेरे नामूसे इश्क़ की कितनी बड़ी रुस्वाई होगी?

आह! उस हवलनाक तसव्वुर से कलेजा शक़ हुआ जा रहा है। देखने वालों का बयान है कि जिस तरह एक आशिक़े दिलगीर रूठे हुए महबूब को मनाता है, बिल्कुल उसी अंदाज़ में वक़्त का एक अज़ीमुल मर्तबत इमाम उसकी मिन्नत व समाजत करता रहा और लोग फटी आंखों से इश्क़ की नाज़ बरदारियों का यह रिक़्क़त अंगेज़ तमाशा देखते रहे।

यहां तक कि कई बार ज़बान से माफ कर देने का इक़रार करा लेने के बाद इमाम अहले सुन्नत ने फिर अपनी एक आख़िरी इल्तिजाए शौक़ पेश की। चूंकि राहे इश्क़ में ख़ूने जिगर से ज़्यादा वजाहत व नामूस की क़ुर्बानी अज़ीज़ है इस लिये ला शऊरी की इस तक़्सीर का कफ़्फ़ारा तभी अदा होगा कि तुम पालकी में बैठो और मैं उसे कांधे पर

उठाऊं।

इस इल्तिजा पर जज़्बात के तलातुम से लोगों के दिल हिल गए, वुफूरे असर से फिज़ा में चीखें बुलंद हो गईं, हज़ार इनकार के बावजूद आख़िर सैय्यद ज़ादे को इश्क़े जुनूं खेज़ की ज़िद पूरी करनी पड़ी।

आह! वह मंज़र कितना रिक़्क़त आमेज़ और दिल गुदाज़ था, जब अहले सुन्नत का जलीलुल क़दर इमाम कहारों की क़तार से लग कर अपने इल्म व फ़ज़्ल, जुब्बा व दस्तार और अपनी आलमगीर शोहरत का सारा ऐज़ाज़ ख़ुश्नूदी हबीब के लिये एक गुमनाम मज़दूर के क़दमों पर निसार कर रहा था।

शौकते इश्क़ का यह ईमान अफ्रोज़ नज़्ज़ारा देख कर पत्थरों के दिल पिघल गए, कुदूरतों का गुबार छट गया, गफ्लतों की आंख खुल गई, दुश्मनों को भी मान लेना पड़ा कि आले रसूल के साथ जिस के दिल की अक़ीदत व इख़्लास का यह आलम है, रसूल के साथ उस की वारफ्तगी का अंदाज़ा कौन लगा सकता है? अहले इंसाफ़ को इस हक़ीक़त के ऐतराफ में कोई तअम्मुल नहीं हुआ कि नज्द से लेकर सहारनपूर तक रसूले पाक के गुस्ताख़ों के ख़िलाफ अहमद रज़ा की बरहमी क़तअ़न हक़ बजानिब है।

सहराए इश्क़ के इस रूठे हुए दीवाने को अब कोई नहीं मना सकता, वफा पेशा दिल का यह ग़ैज़ ईमान का बख़्शा हुआ है, नफ्सानी हैजान की पैदावार नहीं।

*है उन की इतर बूए गरीबां से मस्ते गुल*
*कली से चमन, चमन से सबा और सबा से हम*

وصلى الله تبارك وتعالى وسلم على النبي الكريم وعلى اله واصحابه واهل بيته اجمعين برحمتك يا ارحم الراحمين

*व सल्लल्लाहु तबारक व तआला व सल्लम अलन् नबिय्यिल करीम व अला आलिही व अस्हाबिही व अहलि बैतिही अज्मईन। बिरहमतिक या अर्हमर्राहिमीन।*

☆☆☆

# अमीरुल मोमिनीन हज़रत मुआ़विया
## रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु

الحمدلله و کفیٰ والصلوۃ والسلام علی سیدنا محمدن المصطفٰے وعلی الہ المجتبیٰ و اصحابه سنن النجا۔ امابعد۔فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ۔ وَکُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰی۔(پ:۲۷،ع:۱۷) صَدَقَ اللّٰه العلی العظیم وصدق رسوله النبی الکریم ونحن علی ذالك لمن الشاهدین والشاکرین والحمدلله رب العالمین۔

एक मर्तबा हम और आप सब लोग मिल कर मक्का के सरदार, मदीना के ताजदार, दोनों आलम के मालिक व मुख़्तार जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की बारगाहे बेकस पनाह में बुलंद आवाज़ से दुरूदो-सलाम का नज़्राना और हदिया पेश करें।

صلی اللّٰه علی النبی الامی واله صلی اللّٰه علیه وسلم صلاۃ وسلاماً علیك یارسول اللّٰه

*सल्लल्लाहु अ़लन् नबिय्यिल् उम्मियी व आलिही सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सलातंव् व सलामन् अ़लैक या रसूलल्लाह।*

इंसान को अपनी जान से मुहब्बत होती है, बीवी और बच्चों से प्यार होता है, मां बाप को चाहता है, भाई और दीगर अज़ीज़ व अक़ारिब से भी मुहब्बत करता है मगर सिर्फ इसी क़िस्म की चीज़ों से मुहब्बत करने वाला इंसान हो सकता है। एम.एल.ए. और एम.पी. हो सकता है। वज़ीरे आला और वज़ीरे आज़म हो सकता है। गवर्नर और सदरे मम्लकत हो सकता है, मगर मुसलमान नहीं हो सकता। मुसलमान होने के लिये एक और ज़ाते गिरामी जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम से मुहब्बत करनी पड़ेगी, इस लिये कि:

*मुहम्मद की मुहब्बत दीने हक़ की शर्ते अव्वल है*
*इसी में हो अगर ख़ामी तो सब कुछ ना मुकम्मल है*

सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ाला अलैहि व सल्लम इरशाद फ़रमाते हैं: لَايُؤْمِنُ اَحَدُكُمْ حَتّٰى اَكُوْنَ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِنْ وَّالِدِهٖ وَوَلَدِهٖ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ यानी तुम में का कोई मोमिन नहीं होगा यहां तक मैं उस के नज़्दीक उस के बाप, उस की औलाद और सब लोगों से ज़्यादा महबूब न हो जाऊं।

(बुख़ारी, मुस्लिम, मिश्कात:12)

और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व सल्लम की मुहब्बत के लिये सारे सहाबा की मुहब्बत लाज़िम है, इस लिये कि तमाम सहाबा हुज़ूर के महबूब हैं और महबूब का महबूब, महबूब ही हुआ करता है। लिहाज़ा जो शख़्स हुज़ूर से मुहब्बत का दावा करे और उन के सहाबा से मुहब्बत न करे वह झूठा है। नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व सल्लम इरशाद फ़रमाते हैं: اَللّٰهَ اَللّٰهَ فِيْ اَصْحَابِيْ لَاتَتَّخِذُوْهُمْ غَرَضًامِّنْ بَعْدِيْ فَمَنْ اَحَبَّهُمْ فَبِحُبِّيْ اَحَبَّهُمْ وَمَنْ اَبْغَضَهُمْ فَبِبُغْضِيْ اَبْغَضَهُمْ وَمَنْ اٰذَاهُمْ فَقَدْ اٰذَانِيْ وَمَنْ اٰذَانِيْ فَقَدْ اٰذَى اللّٰهَ وَمَنْ اٰذَى اللّٰهَ يُوْشِكُ اَنْ يَّاْخُذَهٗ रवाहु तिर्मिज़ी। यानी मेरे सहाबा के बारे में अल्लाह तआ़ाला से डरो, अल्लाह तआ़ाला से डरो। मेरे बाद उन्हें निशानए ऐतराज़ न बनाना, जिस ने उन से मुहब्बत रखी उस ने मेरी मुहब्बत के सबब उन से मुहब्बत रखी और जिस ने उन से बुग़ज़ रखा उस ने मेरे साथ बुग़ज़ के सबब उन से बुग़ज़ रखा और जिस ने उन्हें अज़िय्यत दी उस ने मुझे अज़िय्यत दी और जिस ने मुझे अज़िय्यत दी उस ने अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को अज़िय्यत दी और जिस ने अल्लाह तआ़ाला को अज़िय्यत दी क़रीब है कि अल्लाह तआ़ाला उसे अपनी गिरफ्त में ले ले। (मिश्कात:554)

देखिये हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ाला अलैहि व सल्लम ने वाज़ेह लफ़्ज़ों में फ़रमा दिया कि मेरी मुहब्बत के सबब मेरे सहाबा से मुहब्बत होगी और मेरे बुग़ज़ के सबब मेरे सहाबा से बुग़ज़ होगा। यानी जो शख़्स हुज़ूर से मुहब्बत रखता है वह उन के सहाबा से ज़रूर मुहब्बत करेगा और जो शख़्स सहाबा से बुग़ज़ व अदावत रखता है वह हुज़ूर से बुग़ज़ व अदावत के सबब उन से बुग़ज़ व अदावत रखता है। लिहाज़ा हदीस शरीफ़ ने फ़ैसला कर दिया कि जो शख़्स हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ाला

अलैहि व सल्लम से मुहब्बत का दावा करता है मगर उन के सहाबा से बुग़्ज़ व अदावत रखता है वह झूठा है। इस लिये कि सहाबा से उस का बुग़्ज़ व इनाद हुज़ूर से बुग़्ज़ व इनाद के सबब है। *अल्-इयाज़ु बिल्लाहि तआ़ला*

बाज़ लोग जो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम से मुहब्बत के दावेदार हैं वह बहुत से सहाबए किराम खुसूसन अमीरुल मोमिनीन हज़रत अमीरे मुआ़विया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से बुग़्ज़ व इनाद रखते हैं, खुल्लम खुल्ला उन की शान में गुस्ताख़ी व बेअदबी करते हैं और उन को निशानए ऐतराज़ बनाते हैं। इस लिये आज की मज्लिस में हम उन की हयाते तैयिबा पर रौशनी डालेंगे, उन के फज़ाइल व मनाक़िब बयान करेंगे और उन पर किये गए ऐतराज़ात के जवाबात भी देंगे।

## नाम व नसब

आप का नाम मुआ़विया और कुन्नियत अबू अब्दुर रहमान है। बाप की तरफ से आप का सिलसिला नसब यह हैः मुआ़विया बिन अबू सुफियान सख़रा बिन हरब बिन उमैय्या बिन अब्दे शमस बिन अब्दे मनाफ। और मां की तरफ से नसब यूं हैः मुआ़विया बिन हिन्द बिन्ते उत्बा बिन रबीआ़ बिन अब्दे शमस बिन अब्दे मनाफ़। और अब्दे मनाफ नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के चौथे दादा हैं। इस लिये हुज़ूर का सिलसिलए नसब यह हैः इब्ने अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम बिन अब्दे मनाफ।

खुलासा यह हुआ कि हज़रत अमीरे मुआ़विया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु वालिद की तरफ से पांचवीं पुश्त में और मां की तरफ से भी पांचवीं पुश्त में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के नसब में आप के चौथे दादा अब्दे मनाफ से मिल जाते हैं। जिस से ज़ाहिर हुआ कि आप नसब के लिहाज़ से हुज़ूर के क़रीबी अहले क़राबत में से हैं और रिश्ते में रसूले करीम अ़लैहिस् सलातु वत्तस्लीम

के हक़ीक़ी साले हैं इस लिये कि उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे हबीबा बिन्ते अबू सुफ़ियान रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा जो हुज़ूर की ज़ौजए मुतह्हरा हैं वह हज़रत अमीरे मुआ़विया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की हक़ीक़ी बहन हैं, इस लिये आरिफ़ बिल्लाह मौलाना आरिफ़ रूमी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह ने अपनी मस्नवी शरीफ़ में आप को तमाम मोमिनों का मामूं तहरीर फ़रमाया है।

## आप का क़बूले इस्लाम

हज़रत अमीरे मुआ़विया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने कब इस्लाम क़बूल किया इस के बारे में हज़रत मुफ़्ती अहमद यार ख़ां साहब अ़लैहिर रहमा तहरीर फ़रमाते हैं, सहीह यह है कि अमीरे मुआ़विया ख़ास सुलह हुदैबिया के दिन 6 हिजरी में इस्लाम लाए मगर मक्का वालों के ख़ौफ़ से अपना इस्लाम छुपाए रहे, फिर फ़त्हे मक्का के दिन अपना इस्लाम ज़ाहिर फ़रमाया। जिन लोगों ने कहा कि वह फ़त्हे मक्का के दिन ईमान लाए उन्हों ने ज़ुहूरे ईमान के लिहाज़ से कहा है। जैसे हज़रत अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु दरे-पर्दा जंगे बद्र के दिन ही ईमान ला चुके थे मगर ऐहतियातन अपना ईमान छुपाए रहे और फ़त्हे मक्का में ज़ाहिर फ़रमाया। तो लोगों ने उन्हें भी फ़त्हे मक्का के मोमिनों में शुमार कर दिया, हालां कि आप क़दीमुल इस्लाम थे, बल्कि बद्र में भी कुफ़्फ़ारे मक्का के साथ मजबूरन तशरीफ़ लाए थे। इसी लिये नबी सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया था कि कोई मुसलमान अ़ब्बास को क़त्ल न करे, वह मजबूरन लाए गए हैं।

अमीरे मुआ़विया के हुदैबिया में ईमान लाने की दलील वह हदीस है जो इमाम अहमद ने इमाम बाक़िर बिन इमाम ज़ैनुल आबिदीन बिन इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम से रिवायत फ़रमाया कि इमाम बाक़िर से अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि उन से अमीरे मुआ़विया ने फ़रमाया कि मैं ने हुज़ूर के

एहराम से फ़ारिग़ होते वक़्त हुज़ूर के सर शरीफ़ के बाल मरवा पहाड़ के पास काटे।

नीज़ वह हदीस भी दलील है जो बुख़ारी शरीफ़ ने बरिवायत ताऊस अब्दुल्लाह बिन अब्बास से रिवायत फ़रमाई कि हुज़ूर की यह हजामत करने वाले अमीरे मुआ़विया हैं, और ज़ाहिर यह है कि हजामत उमरए क़ज़ा में वाक़ेअ् हुई जो सुलह हुदैबिया से एक साल बाद 7 हिजरी में हुआ क्यों कि हज्जतुल वदाअ् में नबी सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने क़िरान किया था और क़ारिन मरवा पर हजामत नहीं कराते बल्कि मिना में दस्वीं ज़िल हिज्जा को कराते हैं। नीज़ हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने हज्जे वदाअ् में बाल न कटवाए थे बल्कि सर मुंडाया था, अबू तल्हा ने हजामत की थी तो ला मुहाला अमीरे मुआ़विया का यह हुज़ूर के सर के बाल तराशना उमरए क़ज़ा में फ़त्हे मक्का से पहले हुआ। मालूम हुआ कि अमीरे मुआ़विया फ़त्हे मक्का से पहले ईमान ला चुके थे। (अमीरे मुआ़विया पर एक नज़र:47)

# आप की वालिदा का अजीब व ग़रीब वाक़िआ़

ख़राइती ने हवातिफ़ में हुमैद बिन वहब के हवाले से बयान किया है कि फ़ाकिहा बिन मुग़ीरा क़ुरैशी के निकाह में एक औरत हिन्द बिन्त उत्बा बिन रबीआ़ थी, फ़ाकिहा ने उठने बैठने के लिये एक नशिस्तगाह बनवा रखी थी, उस नशिस्तगाह में आने जाने की कोई रोक टोक नहीं थी। इत्तिफ़ाक़न एक रोज़ फ़ाकिहा और उस की बीवी हिन्द उस नशिस्तगाह में बैठे हुए थे, किसी ज़रूरत से कुछ देर के बाद फ़ाकिहा उठ कर बाहर चला गया और हिन्द अकेली रह गई। अचानक उस वक़्त एक शख़्स आया और बैठक में दाख़िल हुआ लेकिन जब उस ने देखा कि वहां तन्हा एक औरत बैठी हुई है तो वह फ़ौरन पलट पड़ा, उस के पलटते वक़्त फ़ाकिहा बाहर से वापस आ गया और उस ने मर्द को बाहर निकलते देख लिया तो फ़ाकिहा हिन्द के पास आया और

गुस्से से उस को ठोकरें मार कर पूछा कि तेरे पास यह कौन मर्द आया था? हिन्द ने कहा मैं ने किसी को भी नहीं देखा, हां तुम्हारे कहने से मुझे यह ख़्याल होता है कि कोई आया था लेकिन फौरन वापस हो गया। फाकिहा ने कहा कि तू मेरे घर से निकल जा और अपने मां बाप के पास चली जा कि तू मेरे लाइक़ नहीं है। हिन्द अपने मां बाप के पास चली गई लेकिन लोगों में इस बात का ख़ूब चर्चा हुआ। हिन्द के बाप ने एक रोज़ उस से कहा कि लोग तुझे हर तरफ मतऊन करते हैं, तू मुझे सच्ची बात बता दे, अगर तेरा ख़ाविन्द सच्चा है तो मैं उस को किसी शख़्स के ज़रिये क़त्ल करा दूंगा ताकि लोग इस तअ़ना ज़नी से बाज़ आ जाएं। और अगर वह झूठा है तो चलो यह मामला यमन के किसी काहिन के पास पेश करें, यह सुन कर हिन्द ने अपनी पाक दामनी पर इस तरह क़स्में खाना शुरू कर दीं जैसा कि अहदे रिसालत में दस्तूर था।

जब हिन्द के वालिद उत्बा को यक़ीन हो गया कि हिन्द सच कह रही है तो उस ने फाकिहा को मजबूर किया कि चूंकि तुम ने मेरी बेटी पर ज़िना की तोहमत लगाई है इस लिये तुम अपने क़बीले के लोगों को साथ लेकर किसी काहिन के पास चलो। चुनांचे फाकिहा बनू मख़्ज़ूम को और उत्बा बनू अब्दे मनाफ को लेकर यमन की जानिब रवाना हुए। हिन्द के साथ उस की कई सहेलियां भी मौजूद थीं। जब क़ाफिला यमन के क़रीब पहुंचा, तो हिन्द के चेहरे का रंग बदल गया, यह हाल देख कर उस के बाप ने कहा कि तेरे इस तग़य्युरे रंग से साफ ज़ाहिर है कि तू गुनहगार है। हिन्द ने कहा यह बात नहीं है बल्कि अस्ल बात यह है कि आप मुझे एक ऐसे शख़्स के पास ले जा रहे हैं जिस की बात कभी सहीह होती है और कभी ग़लत। अगर उस ने बिला वजह मुझ पर तोहमत लगा दी तो फिर मैं पूरे अरब में मुंह दिखाने के क़ाबिल नहीं रहूंगी। उत्बा ने कहा कि मैं तेरा मामला काहिन के सामने पेश करने से पहले उस का इम्तिहान लूंगा। चुनांचे काहिन की सच्चाई का इम्तिहान लेने के लिये उस ने अपने घोड़े के कान में

जानवरों की वह बोली बोली जिस से घोड़ा गर्मा गया, उस वक़्त उत्बा ने उस के ज़कर के सूराख़ में गेहूं का एक दाना रख कर ऊपर चमड़े की पट्टी बांध दी। फिर यह क़ाफ़िला काहिन के पास पहुंचा। उस ने उन को खुश आमदेद कहा और उन की तवाज़ोअ् के लिये ऊंट ज़िबह किया। दस्तरख़्वान पर उत्बा ने अपने मेज़बान काहिन से कहा कि हम आप के पास एक ज़रूरत से आए हैं लेकिन उस से पहले बग़रज़े इम्तिहान हम ने एक काम किया है पहले वह बता दीजिये, फिर हम अपना काम आप को बताएंगे। नुजूमी ने कहा "नरकल में गेहूं का दाना" उत्बा ने कहा इस की वज़ाहत कीजिये, तब काहिन ने कहा तुम ने अपने घोड़े के ज़कर के सूराख़ में गेहूं का दाना रखा है, उत्बा ने कहा आप ने बिल्कुल दुरुस्त कहा। अब असल मामला इन औरतों का है, आप इस मामले में ग़ौर कीजिये। वह एक औरत के पास आया और उस के कंधे पर हाथ रख कर कहा खड़ी हो जा, फिर इसी तरह दूसरी और तीसरी औरत के पास आया यहां तक कि हिन्द की बारी आई, काहिन ने उस के कंधे पर हाथ मार कर कहा कि तू पाक व साफ है, तू ने ज़िना का इरतिकाब नहीं किया है और तू <u>एक बादशाह जनेगी जिस का नाम मुआविया होगा</u>। यह सुन कर हिन्द के शौहर फ़ाकिहा ने हिन्द का हाथ पकड़ लिया मगर हिन्द ने उस का हाथ झटक दिया और कहा कि मुझ से दूर रहो, मैं क़सम खा कर कहती हूं कि अगर काहिन की यह बात सच है कि मेरी किस्मत में बादशाह की मां बनना है तो वह तेरे सुल्ब से नहीं होगा। अल-हासिल हिन्द ने फ़ाकिहा को छोड़ कर अबू सुफ़ियान से शादी कर ली और उन से हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पैदा हुए।

(तारीखुल खुलफा:135)

## सहाबिए रसूल

हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सहाबिए रसूल हैं। और सहाबी वह खुश्नसीब मुसलमान है जिस ने ईमान की हालत में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को देखा और फिर

ईमान पर उस का ख़ातिमा हुआ। और सहाबियत वह दर्जा है कि कोई शख़्स ख़्वाह कितना ही बड़ा वली और ग़ौस व क़ुतुब हो किसी सहाबी के दर्जा को हरगिज़ नहीं पहुंच सकता।

सहाबी की फ़ज़ीलत में बहुत सी आयाते करीमा नाज़िल हुई हैं, जिन में से चन्द आप के सामने पेश की जाती हैं। पारा 27, रुकूअ् 17 में है: وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى अल्लाह तआ़ला ने सारे सहाबा से भलाई यानी जन्नत का वादा फ़रमाया है। और पारा:11, रुकूअ्:1 में है: رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا اَبَدًا ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ अल्लाह तआ़ला सहाबए किराम से राज़ी है और वह अल्लाह तआ़ला से राज़ी हैं। ख़ुदाए तआ़ला ने उन के लिये ऐसे बाग़ात तैयार कर रखे हैं कि जिन के नीचे दरिया जारी हैं। वह लोग उन में हमेशा रहेंगे। वह बहुत बड़ी कामयाबी है। और पारा:28, रुकूअ्:4 में है: اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ वही लोग सच्चे हैं। और इसी पारा:28, रुकूअ्4 में यह भी है: فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ वही लोग कामयाब और फलाह याफ़्ता हैं। और पारा:11, रुकूअ्:6 में है: اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَّ اَجْرٌ كَرِيْمٌ वही लोग सच्चे ईमान वाले हैं। उन के लिये मग़फ़िरत और अज्रे अज़ीम है। और पारा:18, रुकूअ्:9 में है: اُولٰٓئِكَ مُبَرَّءُوْنَ مِمَّا يَقُوْلُوْنَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَّ رِزْقٌ كَرِيْمٌ वह उन इल्ज़ामों से बरी हैं जो लोग कहते हैं, उन के लिये बख़्शिश और अच्छी रोज़ी है।

यह सारी फ़ज़ीलतें जो सहाबए किराम रिज़्वानुल्लाहे तआ़ला अलैहि अज्मईन के लिये कुरआने मजीद में वारिद हैं जैसे हर सहाबिए रसूल के लिये साबित हैं वैसे ही हज़रत अमीरे मुआ़विया रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के लिये भी साबित हैं।

## सहाबा और अहादीसे करीमा

सहाबए किराम की फ़ज़ीलत में बहुत सी हदीसें वारिद हैं। उन में से चन्द आप लोग मुलाहेज़ा फ़रमाएं। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम इरशाद फ़रमाते हैं: اَكْرِمُوْا اَصْحَابِيْ فَاِنَّهُمْ خِيَارُكُمْ मेरे सहाबा

की इज़्ज़त करो इस लिये कि वह तुम सब से बेहतर हैं। (मिश्कात:554)

और नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं: اَصْحَابِیْ كَالنُّجُوْمِ فَبِاَيِّهِمْ اِقْتَدَيْتُمْ اِهْتَدَيْتُمْ मेरे अस्हाब सितारों की तरह हैं, उन में से तुम जिस की इक्तिदा करोगे हिदायत पा जाओगे। (मिश्कात:554)

और सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम इरशाद फरमाते हैं: لَا تَسُبُّوْا اَصْحَابِیْ فَلَوْ اَنَّ اَحَدَكُمْ اَنْفَقَ مِثْلَ اُحُدٍ ذَهَبًا مَا بَلَغَ مُدَّ اَحَدِهِمْ وَلَا نَصِيْفَهٗ ऐ मुसलमानों! तुम मेरे सहाबा को गाली न दो और न बुरा भला कहो। इस लिये कि तुम से अगर कोई उहद पहाड़ के बराबर सोना ख़र्च करे तो वह उनके किलो और आधा किलो गेहूं और जो ख़र्च करने के बराबर नहीं हो सकता। (बुख़ारी, मुस्लिम, मिश्कात:553)

और रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम इरशाद फरमाते हैं: لَا تَسُبُّوْهُمْ لَعَنَ اللّٰهُ مَنْ سَبَّهُمْ सहाबा को गाली न दो और न उन को बुरा भला कहो, जो शख़्स उन को गाली दे और बुरा भला कहे उस पर अल्लाह तआला की लअ्नत हो। (अश्शर्फुल मोअब्बद:102)

और हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम इरशाद फरमाते हैं, अल्लाह तआला ने मुझे मुन्तख़ब फरमाया, मेरे लिये अस्हाब मुन्तख़ब फरमाए और मेरे लिये उन में से वुज़रा, अंसार और ख़ुसर बनाए فَمَنْ سَبَّهُمْ فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللّٰهِ وَالْمَلَآئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ لَا يَقْبَلُ اللّٰهُ مِنْهُ صَرْفًا وَّلَا عَدْلًا रवाहुत्तबरानी यानी जो शख़्स उन्हें गाली दे और बुरा भला कहे, उस पर अल्लाह तआला और तमाम फिरिश्तों और सारे इंसानों की लअ्नत। अल्लाह तआला उसका न फर्ज़ कबूल फरमाएगा और न नफ्ल।.

(अश्शर्फुल मोअब्बद:102)

और रसूले काइनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम इरशाद फरमाते हैं: اِذَا رَاَيْتُمُ الَّذِيْنَ يَسُبُّوْنَ اَصْحَابِیْ فَقُوْلُوْا لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلٰى شَرِّكُمْ जब तुम उन लोगों को देखो, जो मेरे सहाबा को गालियां देते हों और उन को बुरा भला कहते हों तो कहो कि तुम्हारे शर पर ख़ुदा की लअ्नत।

(मिश्कात शरीफ़:554)

और प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं: اِذَا ذُكِرَ اَصْحَابِیْ فَاَمْسِكُوْا जब मेरे सहाबा का ज़िक्र किया जाए तो रुक जाओ यानी उन पर नुक्ता चीनी न करो। (अश्शर्फुल मोअब्बद:103)

और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फरमाते हैं कि रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के सहाबा को गाली न दो इस लिये कि उन का एक घड़ी में इबादत करना तुम्हारी तमाम ज़िंदगी की इबादत से बेहतर है।

(अश्शर्फुल मोअब्बद:102)

हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की मुहब्बत के झूठे दावेदार जो उन के महबूब सहाबा को बुरा भला कहते हैं वह इन अहादीसे करीमा से सबक़ हासिल करें, अपनी ज़बानों को रोकें। किसी सहाबी को बुरा भला कह कर रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को ईज़ा (तक्लीफ) न पहुंचाएं और न लअ्नत के मुस्तहिक़ बनें।

## सहाबा और अक्वाले अइम्मा

हज़रत अल्लामा अलक़मी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हम पर वाजिब फरमाया कि हम सहाबा के इख़्तिलाफात के बारे में अपनी ज़बान बन्द रखें, उन के दरमियान जो लड़ाइयां और इख़्तिलाफात वाक़ेअ् हुए जिन के सबब बहुत से सहाबा शहीद हुए, तो यह ऐसे ख़ून हैं जिन से अल्लाह तआला ने हमारे हाथों को महफ़ूज़ रखा, लिहाज़ा हम अपनी ज़बानों को उन से मुलव्विस नहीं करते। हमारा अक़ीदा यह है कि वह सब इस बारे में माज़ूर हैं, क्यों कि उन से जो कुछ सादिर हुआ वह उन के इज्तिहाद पर मब्नी था और ज़न्नी मस्अले पर मुज्तहिद अगर ख़ता भी करे तो मुस्तहिक़्क़े सवाब है। (बरकाते आले रसूल:279)

अल्लामा मनावी रहमतुल्लाहि तआला अलैह लिखते हैं कि अगर कोई मुल्हिद सहाबए किराम के दरपै हो और अल्लाह तआला ने उन्हें

और प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं: إِذَا ذُكِرَ أَصْحَابِي فَأَمْسِكُوا जब मेरे सहाबा का ज़िक्र किया जाए तो रुक जाओ यानी उन पर नुक्ता चीनी न करो। (अश्शर्फुल मोअब्बद:103)

और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फरमाते हैं कि रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के सहाबा को गाली न दो इस लिये कि उन का एक घड़ी में इबादत करना तुम्हारी तमाम ज़िंदगी की इबादत से बेहतर है।

(अश्शर्फुल मोअब्बद:102)

हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की मुहब्बत के झूठे दावेदार जो उन के महबूब सहाबा को बुरा भला कहते हैं वह इन अहादीसे करीमा से सबक़ हासिल करें, अपनी ज़बानों को रोकें। किसी सहाबी को बुरा भला कह कर रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को ईज़ा (तक्लीफ) न पहुंचाएं और न लअ़नत के मुस्तहिक़ बनें।

## सहाबा और अक्वाले अइम्मा

हज़रत अल्लामा अलक़मी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हम पर वाजिब फरमाया कि हम सहाबा के इख़्तिलाफात के बारे में अपनी ज़बान बन्द रखें, उन के दरमियान जो लड़ाइयां और इख़्तिलाफात वाक़ेअ़ हुए जिन के सबब बहुत से सहाबा शहीद हुए, तो यह ऐसे ख़ून हैं जिन से अल्लाह तआला ने हमारे हाथों को महफूज़ रखा, लिहाज़ा हम अपनी ज़बानों को उन से मुलव्विस नहीं करते। हमारा अक़ीदा यह है कि वह सब इस बारे में माज़ूर हैं, क्यों कि उन से जो कुछ सादिर हुआ वह उन के इज्तिहाद पर मब्नी था और ज़न्नी मस्अले पर मुज्तहिद अगर ख़ता भी करे तो मुस्तहिक़्क़े सवाब है। (बरकाते आले रसूल:279)

अल्लामा मनावी रहमतुल्लाहि तआला अ़लैह लिखते हैं कि अगर कोई मुल्हिद सहाबए किराम के दरपै हो और अल्लाह तआला ने उन्हें

जो इनआमात अता फ़रमाए हैं उन का इनकार करे तो यह उस की जहालत, महरूमियत, ना समझी और ईमान की कमी है। इस लिये कि अगर सहाबए किराम में कोई ऐब पाया जाए तो दीन की बुनियाद क़ाइम नहीं रहेगी, क्यों कि वही हम लोगों तक दीन के पहुंचाने वाले हैं। जब नाक़िलीन ही मजरूह हो गए तो आयात व अहादीस भी महल्ले तअ़न बन जायेंगी। और इस में लोगों की तबाही और दीन की बरबादी है। इस लिये कि नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के बाद वह़ी का सिलसिला मुन्क़तअ़ हो चुका है और मुबल्लिग़ की तब्लीग़ के सहीह होने के लिये उस का मुत्तक़ी, परहेज़गार और आदिल होना ज़रूरी है। (बरकाते आले रसूल:281)

और अल्लामा इब्ने हजर मक्की रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह तहरीर फ़रमाते हैं, मुसलमान पर लाज़िम है कि नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के सहाबा और अहले बैत का ऐहतराम करे, उनसे राज़ी हो, उनके फज़ाइल व हुक़ूक़ पहचाने और उन के इख़्तिलाफ से ज़ुबान रोके। इस लिये कि उन में से किसी ने भी ऐसे अम्र का इरतिकाब नहीं किया जिसे वह हराम समझते हों बल्कि उन में से हर एक मुज्तहिद है। पस वह सब ऐसे मुज्तहिद हैं कि उन के लिये सवाब है, हक़ तक पहुंचने वाले के लिये दस सवाब और ख़ता करने वाले के लिये एक सवाब है। इक़ाब, मलामत और नक़्स इन सब से मरफ़ूअ़ है। यह बात अच्छी तरह ज़ेहन नशीं कर ले वरना तू फिसल जाएगा और तेरी हलाकत व नदामत में कोई कसर न रह जाएगी।

(बरकाते आले रसूल:281)

अल्लामा लेक़ानी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह जौहरा की शरह कबीर में तहरीर फ़रमाते हैं, उन लड़ाइयों का सबब यह था कि मुआ़मलात मुश्तबह थे, उनके शदीद इश्तिबाह की बिना पर उन में इज्तिहादी इख़्तिलाफ पैदा हो गया और उन की तीन क़िस्में हो गईं। एक क़िस्म पर इज्तिहाद से यह ज़ाहिर हुआ कि हक़ इस तरफ है और

मुख़ालिफ़ बाग़ी है लिहाज़ा उन पर वाजिब था कि उन के अक़ीदे में जो हक़ पर था उस की इमदाद करते और बाग़ी से जंग करते। चुनांचे उन्हों ने ऐसा ही किया। जिस शख़्स का यह हाल हुआ हो उसे जाइज़ नहीं कि इस अक़ीदे में जो लोग बाग़ी हैं उन के साथ जंग के मौक़ा पर इमाम आदिल की इमदाद से किनारा कश हो।

दूसरी क़िस्म तमाम उमूर में पहली क़िस्म के बरअक्स थी। तीसरी क़िस्म वह थी जिन पर मुआ़मला मुश्तबह हो गया और वह हैरत में मुब्तला हो गए, उन पर किसी जानिब की तरजीह वाज़ेह न हुई तो वह दोनों फ़रीक़ों से अलग हो गए, उन के लिये यह अलाहेदगी ही वाजिब थी। इस लिये किसी मुसलमान से जंग उस वक़्त तक जाइज़ नहीं जब तक यह ज़ाहिर न हो जाए कि वह उस का मुस्तहिक़ है।

हासिले कलाम यह है कि वह सब मअ़्ज़ूर (उ़ज़्र वाले) और माजूर (सवाब पाने वाले) हैं। इसी लिये अहले हक़ और वह हज़रात जो क़ाबिले ऐतमाद हैं इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि तमाम सहाबा आदिल हैं, उन की शहादत और रिवायत मक़्बूल है। (बरकाते आले रसूल:282)

और अ़ल्लामा इब्ने सुबुकी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह जवामिउल जवामेअ़् में तहरीर फ़रमाते हैं कि सहाबए किराम को गाली देने वाला खुदाए अ़ज़्ज़ व जल् और उस के हबीबे अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम पर किस क़द्र जरी है और दीन की कितनी कम परवाह करता है, क्या उस ख़बीस ने उस पर खुदा की लअ़्नत हो, यह गुमान किया है कि ऐसे हज़रात गाली के मुस्तहिक़ हैं और वह पाक व साफ़ और तारीफ़ का मुस्तहिक़ है? हरगिज़ नहीं। बख़ुदा उस के मुंह में पत्थर होना चाहिये। बल्कि जब उसका यह गुमान हो कि यह हज़रात गाली के मुस्तहिक़ हैं तो हमारा अक़ीदा उसके बारे में यह है कि वह जलाए जाने बल्कि उस से ज़्यादा सज़ा का मुस्तहिक़ है।

(बरकाते आले रसूल:283)

हदीस शरीफ़ में है مَنْ سَبَّ اَصْحَابِیْ فَعَلَیْهِ لَعْنَةُ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِکَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِیْنَ यानी

जिस ने मेरे सहाबा को गाली दी और उन्हें बुरा भला कहा, उस पर अल्लाह तआ़ला, तमाम फिरिश्तों और तमाम इंसानों की लअ़नत है।

इस हदीस शरीफ की शरह में इमाम मनावी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि यह हुक्म उन सहाबा को भी शामिल है जो क़त्लो-क़िताल में शामिल हुए इस लिये कि वह उन लड़ाइयों में मुज्तहिद और तावील करने वाले हैं, लिहाज़ा उन्हें गाली देना गुनाहे कबीरा और उनको गुमराही या कुफ़्र की तरफ मन्सूब करना कुफ़्र है।

(बरकाते आले रसूल:283)

और क़ाज़ी अ़याज़ रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह शिफा शरीफ में तहरीर फरमाते हैं कि सहाबए किराम को गाली देना और उनकी तन्क़ीस हराम है। इस का मुरतकिब मलऊ़न है। "इमाम मालिक फरमाते हैं: जिस शख़्स ने कहा कि उन में से कोई एक गुमराही पर था उसे क़त्ल किया जाएगा और जिस ने इस के अलावा उन्हें गाली दी उसे सख़्त सज़ा दी जाएगी। (बरकाते आले रसूल:283)

यहां तक कि अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह अपने रिसाला "अल्-क़ामुल् हजर" में इस बात पर इत्तिफाक़ नक़ल किया है कि किसी सहाबी को गाली देने वाला फासिक़ है, अगर उसे वह हलाल न जाने और अगर वह हलाल जाने तो काफिर है। इस लिये कि इस तौहीन का अदना दर्जा यह है कि यह हराम और फिस्क़ है और हराम को हलाल जानना कुफ़्र है जबकि दीन में उस का हराम होना बदाहतन मालूम हो और सहाबए किराम को गाली देने की हुर्मत इसी तरह है। (बरकाते आले रसूल:282)

और हज़रत अल्लामा सअ़्दुद्दीन तफ्ताज़ानी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह तहरीर फरमाते हैं, अहले हक़ का इस बात पर इत्तिफाक़ है कि तमाम उमूर में हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु हक़ पर थे और फरमाते हैं: وَالتَّحْقِيْقُ اَنَّهُمْ كُلَّهُمْ عُدُوْلٌ यानी तहक़ीक़ यह है कि तमाम सहाबा आदिल हैं। और सारी जंगें और इख़्तिलाफात तावील पर मब्नी हैं, इन

के सबब कोई भी अदालत से ख़ारिज नहीं, इस लिये कि वह मुज्तहिद हैं। (अश्शर्फुल मोअब्बद:104)

यह अइम्मए किराम व उलमाए इज़ाम जो आसमाने हिदायत के आफताब व माहताब और दीन के सुतून हैं, इन के इरशादात और इन की नसीहतों पर अमल करो। हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु या सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के किसी दूसरे सहाबी को बुरा भला कह कर फासिक़ व फाजिर, मुरतकिबे हराम और मुस्तहिक्के सज़ा न बनो और न अपनी आक़िबत बरबाद करो।

## हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के फज़ाइल

हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के लिये हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की सहाबियत और क़राबत के अलावा और बहुत सी फज़ीलतें साबित हैं। जिन में से चन्द ज़िक्र की जाती हैं।

आप के फज़ाइल में बहुत सी अहादीसे करीमा वारिद हैं। हज़रत इरबाज़ बिन सारिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमायाः اَللّٰهُمَّ عَلِّمْ مُعَاوِيَةَ الْكِتَابَ وَالْحِسَابَ وَقِهِ الْعَذَابَ रवाहु अहमद फी मुस्नदिही। यानी ऐ अल्लाह! तू मुआविया को किताब (कुरआने करीम) और हिसाब का इल्म अता फरमा और इन्हें अज़ाब से बचा। (अन्नाहियाः14, तस्नीफ आरिफ बिल्लाह हज़रत अल्लामा अब्दुल अज़ीज़ फरहारवी, मोअल्लिफ नबरास शरह शर्हुल अक़ाइद अन्नसफी)।

और हज़रत अब्दुर रहमान बिन अबू अमीरा सहाबी मदनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूले काइनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के लिये फरमायाः اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ هَادِيًا مَّهْدِيًّا وَّاهْدِ بِهِ النَّاسَ रवाहुत्तिर्मिज़ी। ऐ अल्लाह! मुआविया को हादी और महदी बना दे यानी हिदायत याफ्ता और

हिदायत देने वाला बना दे। और इन के ज़रिये लोगों को हिदायत दे।
(मिश्कात:579)

और ख़ुदाए अज़्ज़ व जल् अपने प्यारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की दुआ़ओं को कबूल फ़रमाता है। तो साबित हुआ कि हज़रत अमीरे मुआ़विया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु हादी भी हुए और महदी भी। और उनके ज़रिये लोगों को हिदायत भी हुई तो ऐसी ज़ात को बुरा भला कहना यक़ीनन अल्लाह व रसूल की नाराज़गी का सबब होगा।

और इब्ने अबी शैबा मुसन्नफ़ में व तबरानी मोअ़जमे कबीर में अब्दुल मलिक बिन उमैर से रिवायत करते हैं, हज़रत मुआ़विया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने कहा कि मुझ से सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः يَامُعَاوِيَةُ إِذَا مَلَكْتَ فَأَحْسِنْ ऐ मुआ़विया! जब तुम बादशाह हो जाओ तो लोगों के साथ अच्छी तरह पेश आना।
(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा:132)

## इन्तिबाह

अ़वाम में जो मशहूर है कि "हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने देखा हज़रत मुआ़विया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु यज़ीद को कंधे पर लिये जा रहे हैं तो हुज़ूर ने फ़रमायाः जन्नती, जहन्नमी को ले जा रहा है" यह सहीह नहीं है। इस लिये कि यज़ीद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के विसाल फ़रमाने के तक़रीबन 15 साल बाद सन् 25 हिजरी में पैदा हुआ। (सवानेहे करबला)

**2-** हज़रत अमीरे मुआ़विया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के कातिबे वही भी रहे और कातिबे ख़ुतूत भी। इमाम मुफ़्ती हरमैन अहमद बिन अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद तबरी ख़ुलासतुस् सियर में तहरीर फ़रमाते हैं कि नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के 13 कातिब थे, ख़ुलफ़ाए अरबा, आमिर बिन फ़ुहैरा, अब्दुल्लाह बिन अर्क़म, उबैय बिन कअ़ब, साबित

बिन कैस बिन शमास, ख़ालिद बिन सईद बिन आस, हंज़ला बिन रबीअ़ अस्लमी, ज़ैद बिन साबित, शुरहबील बिन हसनह और मुआ़विया बिन अबी सुफियान। रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम। लेकिन इन लोगों में हज़रत अमीरे मुआ़विया और हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा इस ख़िदमत को ज़्यादा अंजाम देते थे।

अल्लामा कस्तलानी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह ने बुख़ारी शरीफ की शरह में फरमाया कि हज़रत अमीरे मुआ़विया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के कातिबे वही रहे।

(अन्नाहिया:16)

3- हज़रत मुल्ला अली क़ारी शरह मिश्कात में तहरीर फरमाते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु जो हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के मख़्सूस शागिरदों में से हैं उन से पूछा गया कि हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ अफ्ज़ल हैं या हज़रत मुआ़विया? रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा, तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फरमाया: غُبَارٌ دَخَلَ فِیْ اَنْفِ فَرَسِ مُعَاوِيَةَ حِيْنَ غَزَا فِیْ رِكَابِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم اَفْضَلُ مِنْ كَذَا عَمَرَبْنِ عَبْدِالْعَزِيْزِ हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के साथ जिहाद के मौक़ा पर हज़रत अमीरे मुआ़विया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के घोड़े की नाक में जो गुबार दाख़िल हुआ वह उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ से अफ्ज़ल है।

(अन्नाहिया:16)

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ वह हैं जिन को इमामुल हुदा कहा जाता है, खुलफाए राशिदीन में पांचवें ख़लीफा की हैसियत से उन को शुमार किया जाता है और जिन की ज़ियारत के लिये हज़रत ख़िज़र अलैहिस्सलाम आया करते थे मगर हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक जैसे इमामे वक़्त जब हज़रत अमीरे मुआ़विया के घोड़े की नाक के गुबार को भी उन से अफ्ज़ल बताते हैं, तो फिर हज़रत अमीरे मुआ़विया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की अज़मत व रिफअ़त (बुलंदी) का क्या

कहना, मगर अफ्सोस कि आज कल वह लोग जिन की हक़ीक़त कुछ भी नहीं वह हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से अफ्ज़ल बनते हैं बल्कि उन की ज़ात पर सब्बो शितम और लअ़्न व तअ़्न भी करते हैं। *अल्-इयाज़ु बिल्लाहि तआ़ला।*

हज़रत अल्लामा क़ाज़ी अयाज़ रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह लिखते हैं कि अल्लामा मआफी इब्ने इमरान अलैहिर रहमत वर्रिज़्वान से एक शख़्स ने कहा कि हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ हज़रत मुआविया से अफ्ज़ल हैं, यह सुनते ही हज़रत अल्लामा इब्ने इमरान ग़ज़बनाक हो गए और फरमायाः لَا يُقَاسُ اَحَدٌ بِاَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰه تعالى عَليه وسلَّم यानी नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के सहाबा पर किसी को क़ियास नहीं किया जाएगा। مُعَاوِيَةُ صَاحِبُهٗ وَصِهْرُهٗ وَكَاتِبُهٗ وَاَمِيْنُهٗ عَلٰى وَحْيِ اللّٰهِ عَزَّ وَجَلَّ हज़रत मुआविया नबीए क़रीम अलैहिस् सलातु वत्तस्लीम के सहाबी, उन के साले, उन के कातिब और खुदाए अ़ज़्ज़ व जल्ल की वह़ी पर नबीए करीम के अमीन हैं। (अन्नाहिया:17)

4- हज़रत अल्लामा शहाबुद्दीन ख़फाजी नसीमुर रियाज़ शरह शिफाए इमाम क़ाज़ी अयाज़ में तहरीर फरमाते हैं कि जो शख़्स हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु पर तअ़्न करे वह जहन्नमी कुत्तों से एक कुत्ता है। (अहकामे शरीअ़त:1/103)

5- सहाबए किराम, मुहद्दिसीने इज़ाम और उलमाए इस्लाम हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की तारीफ व तौसीफ बयान करते हैं, बा वजूदे कि वह हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआ़ला वज्हहुल करीम के फज़ाइल व मनाक़िब से ख़ूब वाक़िफ थे और उन के माबैन जो वाक़िआत रू-नुमा हुए, उन्हें अच्छी तरह जानते थे।

बुख़ारी शरीफ की हदीस है कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा से किसी शख़्स ने कहा कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के बारे में आप क्या कहते हैं जबकि फुलां मस्अले में उन्हों ने यूं किया, तो आप ने फरमायाः

أَصَابَ أَنَّهُ فَقِيهٌ उन्हों ने ठीक किया, बेशक वह फ़क़ीह हैं। (मिश्कात:112)

यानी हज़रत अमीरे मुआ़विया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु मुज्तहिद हैं वह सवाब पायेंगे अगर्चे ख़ता करेंगे। (मिर्क़ात शरह मिश्कात:2/160)

देखिये रईसुल मुफस्सिरीन हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा जो अजिल्लए (बुज़ुर्ग) सहाबा में से हैं और हज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु तआ़ला वज्हहुल करीम के ऐसे ख़ास हैं कि उन के दुश्मन पर बहुत सख़्त हैं, वह हज़रत अमीरे मुआ़विया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की तारीफ करते हैं और उन को फक़ीह व मुज्तहिद मानते हैं। तो कितने बद नसीब हैं वह लोग जो जलीलुल क़द्र सहाबिए रसूल के नक़्शे क़दम को छोड़ कर शैतान की इत्तिबाअ़ (पैरवी) करते हैं यानी हज़रत अमीरे मुआ़विया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की शान में बेजा कलिमात बोलते हैं और उनकी तौहीन व तन्क़ीस करते हैं। *अल्-इयाज़ु बिल्लाहि तआ़ला।*

और हज़रत अ़ल्लामा क़स्तलानी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह बुख़ारी शरीफ की शरह में तहरीर फरमाते हैं: مُعَاوِيَةُ ذُوالْمَنَاقِبِ الْجَمَّةِ हज़रत अमीरे मुआ़विया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु बड़े मनाक़िब और बड़ी ख़ूबियों वाले हैं। (अन्नाहियह:17)

और हज़रत मुल्ला अ़ली क़ारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह लिखते हैं: أَمَّا مُعَاوِيَةُ فَهُوَ مِنَ الْعُدُوْلِ الْفُضَلَاءِ وَالصَّحَابَةِ الْأَخْيَارِ हज़रत अमीरे मुआ़विया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु अअ़्दले फुज़ला और बेहतरीन सहाबा में से हैं। (मिर्क़ात शरह मिश्कात:2/517)

इसी लिये तमाम मोहद्दिसीने किराम हज़रत अमीरे मुआ़विया और दीगर सहाबए रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम के दरमियान कोई तफरीक़ नहीं करते, जिस तरह दूसरे सहाबा के नामों के साथ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु लिखते हैं उसी तरह हज़रत अमीरे मुआ़विया के नाम के साथ भी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु तहरीर फरमाते हैं।

**6-** हज़रत अमीरे मुआ़विया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु मुत्तक़ी,

आदिल और सिक़ह हैं इसी लिये हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर, हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर, हज़रत साइब बिन यज़ीद, हज़रत नोमान बिन बशीर और हज़रत अबू सईद ख़ुदरी जैसे फ़क़ीह व मुज्तहिद सहाबा ने आप से हदीसें रिवायत कीं। इसी तरह हज़रत ज़ुबैर, हज़रत अबू इदरीस ख़ौलानी, हज़रत सईद बिन मुसैय्यिब, हज़रत ख़ालिद बिन मअ्दान, हज़रत अबू सालेह बिन सम्मान, हज़रत हुमाम बिन उत्बा और हज़रत क़ैस बिन अबू हाज़िम जैसे जलीलुल क़द्र ताबईन फ़ुक़हा और उलमा ने आप से हदीसों की रिवायतें लीं। अगर हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु में मकर व फरेब और फ़िस्क़ व फ़ुजूर होता जैसा कि आज कल जाहिलों ने समझ रखा है तो यह बड़े-बड़े सहाबा व ताबईन हज़रात उन से हदीसों की रिवायतें हरगिज़ क़बूल न करते।

7- बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, नसई, बैहक़ी और तबूरानी वग़ैरा मुहद्दिसीने किराम ने हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की रिवायत कर्दा हदीसों को क़बूल किया और अपनी अपनी किताबों में दर्ज किया। इन में ख़ास कर इमाम बुख़ारी और इमामे मुस्लिम ऐसी मोहतात हस्तियां हैं कि अगर किसी रावी में ज़रा भी ऐब पाया तो उस की रिवायत लेने से इनकार कर दिया। तो इन बुज़ुर्गों का हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की रिवायतों का क़बूल कर लेना बबांगे दुहल (खुल्लम खुल्ला) ऐलान कर रहा है कि इन सब के नज़्दीक हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मुत्तक़ी, आदिल और सिक़ह क़ाबिले रिवायत हैं। हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल करीम से इख़्तिलाफ के सबब मर्तबए अदालत से साक़ित नहीं हैं वरना यह हज़रात उन की रिवायतें हरगिज़ क़बूल न फ़रमाते।

8- हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत अमीरे मुआविया को दमिश्क़ का हाकिम मुक़र्रर किया और माज़ूल न

फरमाया, जबकि आप हाकिमों के हालात पर कड़ी निगाह रखते थे और ज़रा सी लग़ज़िश पर माज़ूल फरमा देते थे जैसे कि मामूली शिकायत पर हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जैसी बुज़ुर्ग हस्ती को माज़ूल फरमा दिया।

तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जैसे सख़्त गीर आदमी का हज़रत अमीरे मुआविया को दमिश्क़ का हाकिम मुक़र्रर फरमाना और अपनी ज़ाहिरी हयात के आख़िरी लम्हात तक उसी अहम उहदे पर उन्हें बरक़रार रखना हज़रत अमीरे मुआविया की अज़्मत व रिफअ़त और उनकी अमानत व दियानत का खुल्लम खुल्ला इक़रार व ऐलान है।

9- हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने 6 माह उमूरे ख़िलाफत अंजाम देने के बाद हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को ख़िलाफत सुपुर्द कर दी और उन के हाथ पर बैअ़त कर ली। फिर उन के सालाना वज़ीफे और नज़्राने क़बूल फरमाए। क़सम है वह्दहू ला शरीक की अगर हज़रत अमीरे मुआविया बातिल परस्त होते तो हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सर कटा देते मगर उन के हाथ में हाथ न देते। इस लिये किः

*मर्दे हक़ बातिल से हरगिज़ ख़ौफ खा सकता नहीं*

*सर कटा सकता है लेकिन सर झुका सकता नहीं*

और फिर रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत इमाम हसन के इस फेअ़्ले मुबारक (अच्छे काम) की इन अल्फाज़ में तारीफ फरमाई: اِبْنِیْ هٰذَا سَیِّدٌ وَلَعَلَّ اللّٰهَ اَنْ یُّصْلِحَ بِهٖ بَیْنَ فِئَتَیْنِ مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ मेरा बेटा यह सरदार है। उम्मीद है कि अल्लाह तआला इस के ज़रिये मुसलमानों की दो जमाअ़तों में सुलह करा देगा। (बुख़ारी शरीफ:1/530)

अब अगर कोई बद बख़्त हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को ना अहल क़रार दे तो हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर इल्ज़ाम आ जाएगा कि आप ने ना अहल को ख़िलाफत क्यों सुपुर्द की और उम्मत की बाग डोर उन के हाथ में क्यों

दी? जबकि यह सुपुर्दगी क़िल्लत व ज़िल्लत की वजह से नहीं थी इस लिये कि 40 हज़ार सिपाही जान कुर्बान करने की बैअ़त आप के हाथ पर कर चुके थे। (हाशिया बुख़ारीः1/530)

## आप की सख़ावत

हज़रत अमीरे मुआ़विया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु में सख़ावत का वस्फ़ बहुत मुम्ताज़ था। आप लोगों को बड़े-बड़े इनाम व इक्राम से नवाज़ते थे। हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की ख़िदमते अक़्दस में गिरां क़द्र (क़ीमती) नज़्राने पेश करते थे। हज़रत मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह मिश्कात शरीफ़ की शरह में हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुरैदा से रिवायत करते हैं कि एक बार हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु हज़रत अमीरे मुआ़विया के पास तशरीफ़ ले गए, उन्हों ने आप से कहाः لَاُجِيْزَنَّكَ بِجَائِزَةٍ لَمْ اُجِزْبِهَا اَحَدًا قَبْلَكَ وَلَا اُجِيْزُبِهَا اَحَدًا بَعْدَكَ, मैं आप की ख़िदमत में इतनी नज़्राना पेश करूंगा कि इस से पहले किसी को इतनी नज़्र नहीं दी है और न आइन्दा किसी दूसरे को दूंगा। फिर उन्हों ने चार लाख दिरहम हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की ख़िदमत में पेश किया जिन्हें आप ने क़बूल फ़रमाया। (अन्नाहियाः27)

एक दिरहम साढ़े तीन माशा चांदी का होता था। चार लाख दिरहम कितनी चांदी हुई और मौजूदा भाव से उस का कितना रुपया हुआ आप लोग बआसानी जोड़ सकते हैं। इतनी बड़ी रक़म इस इफ़राते ज़र (रुपये पैसे की ज़्यादती) के ज़माना में, हो सकता है बाज़ लोग के नज़्दीक कोई ख़ास वक़्अ़त न रखती हो लेकिन उस ज़माना में जबकि एक पैसा बड़ी मेहनत करने के बाद मिलता था, चार लाख दिरहम बहुत बड़ी अहमियत रखता था।

इब्ने असाकिर की रिवायत में है कि जंगे सिफ़्फ़ीन के ज़माना में हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआ़ला वज्हहुल करीम के भाई हज़रत अक़ील ने आप से कुछ रुपया तलब किया, हज़रत अली ने नहीं दिया, उन्हों ने

कहा आप इजाज़त दीजिये कि मैं अमीरे मुआविया के पास चला जाऊं, हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया जाओ, जब हज़रत अकील हज़रत अमीरे मुआविया के पास गए, उन्हों ने आप की बड़ी इज़्ज़त की और एक लाख दिरहम नज़ाना पेश किया। (सवाइके मुहर्रिका81:)

अल्लामा मुहम्मद बिन महमूद आमली अपनी किताब नफाइसुल फुनून में तहरीर फरमाते हैं कि एक बार हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हाज़िरीने मज्लिस से फरमायाः مَنْ اَنْشَاَ شِعْرًا فِيْ مَدْحِ عَلِيٍّ كَمَا يَلِيْقُ بِهٖ اَعْطَيْتُهٗ بِكُلِّ بَيْتٍ اَلْفَ دِيْنَارٍ जो शख़्स हज़रत अली की तारीफ में उन के शान के लाइक़ शेअ्र कहेगा तो उसे मैं फी शेअ्र एक लाख दीनार दूंगा। एक दीनार साढ़े चार माशा सोने का होता है। हाज़िरीने शुअ़रा ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शान में अश्आर कहे और ख़ूब इनाम लिये। हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हर शेअ्र पर फरमाते थेः عَلِيٌّ اَفْضَلُ مِنْهُ अली इस से भी अफ्ज़ल हैं। यहां तक कि उसी मज्लिस में हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शान में हज़रत अम्र बिन आ़स शाइर का एक शेअ्र आप को इतना ज़्यादा पसंद आया कि एक ही शेअ्र पर उस को सात हज़ार दीनार दिया। (अन्नाहिया:29)

इन वाकिआ़त से हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बेमिस्ल सख़ावत के साथ यह बात भी अच्छी तरह वाज़ेह हो जाती है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और उन के ख़ानदान वालों की आप के दिल में बड़ी इज़्ज़त थी।

तुयूरियात में सुलैमान मख़ज़ूम के हवाले से लिखा है कि एक बार हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने दरबारे आम किया, जब तमाम लोग जमा हो गए तो आप ने फरमाया कि मुझे किसी अरबी शाइर के ऐसे तीन अश्आर कोई सुनाए जिन में यह ख़ूबी हो कि हर शेअ्र का मतलब उसी शेअ्र में पूरा हो जाता हो। लोग यह सुनकर ख़ामोश रहे, इतने में हज़रत अबू ख़ुबैब अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर

रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम आ गए, हज़रत अमीरे मुआ़विया ने फरमाया लीजिये अरब के बिस्यार गो और फसीह शख़्स आ गए, फिर आप ने कहा ऐ अबू ख़ुबैब! मैं इस ख़ूबी के तीन अश्आ़र सुनना चाहता हूं, हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फरमाया कि मैं सुनाऊंगा, लेकिन हर शेअ़्र के बदले एक लाख दिरहम लूंगा, आप ने फरमाया मुझे मन्ज़ूर है पढ़ो, तो अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ने यह अश्आ़र पढ़े:

بَلَوْتُ النَّاسَ قَرْنًا بَعْدَ قَرْنٍ فَلَمْ اَرَ غَيْرَ خَتَّالٍ وَّقَالٍ

मैं ने यके बाद दीगरे बहुत से लोगों से मुलाक़ातें की हैं लेकिन मैं ने सिवाए ग़द्दार व मक्कार और दुश्मनी करने वाले के किसी को नहीं देखा।

हज़रत अमीरे मुआ़विया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फरमाया, सच है। अब दूसरा शेअ़्र पढ़ो। हज़रत अबू ख़ुबैब ने दूसरा शेअ़्र यह पढ़ा:

وَلَمْ اَرَ فِى الْخُطُوْبِ اَشَدَّ وَقْعًا وَاَصْعَبَ مِنْ مُّعَادَاتِ الرِّجَالِ

मैं ने हवादिस और सऊबाते ज़माना में लोगों की दुश्मनी के सिवा और कुछ नहीं देखा, आप ने फरमाया सच है। फिर तीसरा शेअ़्र पढ़ने के लिये कहा। तीसरा यह पढ़ा:

وَذُقْتُ مَرَارَةَ الْاَشْيَاءِ طُرًّا فَمَا طَعْمٌ اَمَرُّ مِنَ السُّؤَالِ

मैं ने हर चीज़ की तल्ख़ी को चखा है मगर किसी चीज़ के मांगने की तल्ख़ी से ज़्यादा कोई चीज़ तल्ख़ नहीं है।

हज़रत अमीरे मुआ़विया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फरमाया बिल्कुल सच है। फिर वादा के मुताबिक़ हज़रत अबू ख़ुबैब अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा को तीन लाख दिरहम अ़ता फरमाया। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा:138)

## आप हाकिम कैसे बने?

हज़रत अमीरे मुआ़विया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु दमिश्क़ के हाकिम यूं हुए कि जब हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला

अ़न्हु के ज़मानए मुबारक में मुल्के शाम फ़तह हुआ तो आप ने दमिश्क़ का हाकिम हज़रत अमीरे मुआ़विया के भाई हज़रत यज़ीद बिन अबू सुफ़ियान को मुक़र्रर फ़रमाया, इत्तिफ़ाक़ से अपने भाई के साथ हज़रत अमीरे मुआ़विया भी मुल्के शाम गए थे जो उन्हीं के पास रह गए थे, जब हज़रत यज़ीद बिन अबू सुफ़ियान के इन्तेक़ाल का वक़्त क़रीब आया तो उन्हों ने अपनी जगह हज़रत अमीरे मुआ़विया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को हाकिम मुक़र्रर कर दिया। यह तक़र्रुर हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के ज़मानए ख़िलाफ़त में हुआ। आप ने उनके तक़र्रुर को बरक़रार रखा और पूरे अहदे फ़ारूक़ी में वह दमिश्क़ के हाकिम रहे। यहां तक कि हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने अपने अहदे ख़िलाफ़त में हज़रत अमीरे मुआ़विया को पूरे मुल्के शाम का हाकिम बना दिया, इस तरह आप ने अहदे फ़ारूक़ी व उस्मानी में बहैसियते हाकिम 20 साल तक हुकूमत की और फिर बाद में बहैसियते ख़लीफ़ा 20 साल हुक्मरां रहे। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा:132)

## आप की आख़िरी वसिय्यत

अल्लामा अबू इस्हाक़ अपनी किताब नूरुल ऐन फी मशहदिल हुसैन में तहरीर फ़रमाते हैं कि जब हज़रत अमीरे मुआ़विया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो यज़ीद ने पूछा अब्बा जान! आप के बाद ख़लीफ़ा कौन होगा? तो आप ने फ़रमाया ख़लीफ़ा तो तू ही बनेगा मगर जो कुछ मैं कहता हूं उसे ग़ौर से सुन, कोई काम हज़रत इमाम हुसैन के मश्वरा के बग़ैर मत करना, उन्हें खिलाए बग़ैर न खाना, उन्हें पिलाए बग़ैर न पीना। सब से पहले उन पर ख़र्च करना फिर किसी और पर। पहले उन्हें पहनाना फिर ख़ुद पहनना। मैं तुझे हज़रत इमाम हुसैन, उन के घर वालों और उन के क़ुंबे बल्कि सारे बनी हाशिम के लिये अच्छे सुलूक की वसिय्यत करता हूं।

ऐ बेटे! ख़िलाफ़त हमारा हक़ नहीं, वह इमाम हुसैन, उन के वालिद हज़रत अली और उन के अहले बैत का हक़ है, तुम चन्द रोज़

ख़लीफा रहना, फिर जब हज़रत इमाम हुसैन पूरे कमाल को पहुंच जाएं तो फिर वही ख़लीफा होंगे। या जिसे वह चाहें ताकि ख़िलाफत अपनी जगह पहुंच जाए। हम सब इमाम हुसैन और उनके नाना के गुलाम हैं, उन्हें नाराज़ न करना वरना तुझ पर अल्लाह व रसूल नाराज़ होंगे। तो फिर तेरी शफाअत कौन करेगा। (अमीरे मुआविया पर एक नज़र:94)

## आप की वफात

अल्लामा ख़तीब तबरेज़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की वफात माहे रजब सन् 60 हिजरी में लक़्वा की बीमारी से मक़ामे दमिश्क़ में हुई, जबकि आप की उम्र 78 साल थी।

(इक्माल फी अस्माइर् रिजाल)

हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मरज़े वफात में बार-बार फरमाते थे: يَالَيْتَنِىْ كُنْتُ رَجُلاً مِّنْ قُرَيْشٍ بِذِىْ طُوَى وَلَمْ اَرَ مِنْ هٰذَا الْاَمْرِ شَيْئًا यानी एक काश! मैं कुरैश का एक मामूली इंसान होता जो ज़ी तुवा गांव में रहता और इन झगड़ों में न पड़ता, जिन में पड़ गया। और बवक़्ते वफात आप ने वसिय्यत फरमाई कि मेरे पास हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की लुंगी, हुज़ूर की चादर और कुर्ता मुबारक है। कुछ उन के बाल और नाख़ूने अक़्दस के तराशे हैं, मुझे कफन में हुज़ूर का कुर्ता पहनाया जाए, हुज़ूर की चादर में लपेटा जाए, हुज़ूर की लुंगी मुझे बांध दी जाए और मेरे उन अअ्ज़ा पर जिन से सज्दा किया जाता है हुज़ूर के मुए मुबारक और तराशए नाख़ूने अक़्दस रख दिये जाएं। और मुझे अर्हमुर्रा हिमीन के रहमो-करम पर छोड़ दिया जाए।

(मिर्क़ात शरह मिश्कात:5/628)

## आप की करामतें

हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु साहिबे करामत सहाबी हैं। चुनांचे किताब ततहीरुल जिनान में फरमाया, सनद सहीह से रिवायत है कि जब हज़रत अमीरे मुआविया को हज़रत उस्माने ग़नी

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत की ख़बर पहुंची तो आप ने फरमाया कि मक्का वालों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को मक्का शरीफ से हिज्रत करने पर मजबूर किया, तो वहां कभी ख़िलाफ़त न हुई और न आइन्दा होगी। और मदीना मुनव्वरा में ख़लीफतुल मुस्लिमीन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को शहीद किया गया तो वहां से ख़िलाफत निकल गई, अब कभी वहां ख़िलाफत न होगी।

चुनांचे ऐसा ही हुआ कि इतना ज़माना गुज़र गया मगर आज तक हरमैन शरीफैन दारुल ख़िलाफत न बने। मक्का मुअज़्ज़मा में अगर्चे हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने ख़िलाफत का दावा किया था, मगर वह सिर्फ ख़िलाफत की सूरत थी हकीकत में ख़िलाफत न थी। लेकिन मदीना मुनव्वरा में आज तक सूरतन भी ख़िलाफत न हुई कि हज़रत सैय्यिदना अली मुरतज़ा कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल करीम ने कूफ़ा को अपना दारुल ख़िलाफत बनाया और उन के बाद किसी ख़लीफ़ा ने मदीना मुनव्वरा को दारुल ख़िलाफत नहीं बनाया। और यह हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की खुली हुई करामत है। (अमीरे मुआविया पर एक नज़र:72)

और आप की दूसरी करामत यह है कि जब आप ने यज़ीद को अपना वली अहद मुकर्रर किया तो दुआ फरमाई ऐ मौला तआला! अगर यज़ीद इस का अहल न हो तो इस की सल्तनत को कामिल न फरमा। चुनांचे आप की दुआ के मुताबिक़ ही हुआ कि यज़ीद पलीद हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बाद तीन साल कुछ माह ज़िंदा रहा मगर उस की सल्तनत पायए तक्मील को न पहुंच सकी। (अमीरे मुआविया पर एक नज़र:72)

और आप की एक करामत वह है जिसे आरिफ बिल्लाह मौलाना जलालुद्दीन मुहम्मद रूमी कुद्दिस सिर्रुहू ने अपनी मस्नवी शरीफ के दफ्तरे दोम में तहरीर फरमाया है।

*दर ख़बर आमद कि ख़ाले मोमिनां*
*बुवद अन्दर क़स्रे खुद ख़ुफ्तए शबां*

हदीस शरीफ में आया है कि मोमिनों के मामूं यानी हज़रत अमीरे मुआ़विया रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु रात के वक़्त अपने महल में सोए हुए थे।

*ना गहां मरदे वरा बेदार करद*
*चश्मे चूं बकुशा व पिन्हां गश्त मरद*

अचानक एक शख़्स ने उन को बेदार किया, जब आप की आंख खुली तो वह छुप गया, फिर आप ने पूरे कमरे में ग़ौर से नज़र डाली, तो देखा कोई पर्दे के पीछे छुपने की कोशिश कर रहा है।

*गुफ्त ही तू कीस्ती नामे तू चीस्त*
*गुफ्त नामम् फाश इब्लीसे शक़ी अस्त*

आप ने फरमाया ऐ छुपने वाले! तू कौन है? और तेरा नाम क्या है? उस ने कहा मेरा ज़ाहिर नाम इब्लीसे शक़ी है। आप ने फरमाया तू ने मुझे क्यों बेदार किया?

*गुफ्त हंगामे नमाज़ आख़िर रसीद*
*सूए मस्जिद ज़ूद मी बायद दवीद*

इब्लीस ने कहा कि नमाज़ का वक़्त ख़त्म हो रहा है। आप को मस्जिद में बहुत जल्द जाना चाहिये। आप ने फरमाया तू किसी मुसलमान को भलाई की तरफ हरगिज़ नहीं बुला सकता। यक़ीनन तेरी ग़रज़ कोई और होगी। उस ने कहा इसके अलावा मेरी कोई ग़रज़ नहीं है। मैं हमेशा अच्छे लोगों को भलाई की तरफ रहनुमाई करता हूं और बुरे लोगों की भी पेश्वाई करता हूं।

*बाग़ बानम शाख़े तर मी परवरम*
*शाख़ हाए ख़ुश्क रा हम मी बुरम*

मैं बाग़बान हूं, हरी शाख़ों की देख भाल करता हूं और सूखी टहनियों को काटता हूं।

*गर तुरा बेदार करदम बहरे दीं*
*ख़ूए अस्ले मन् हमीं अस्त व ह[illegible]*

अगर हम ने आप को दीन के लिये बेदार किया तो आप तअ़ज्जुब न करें, हमारी पुरानी और ख़ास आदत यही है।

आप ने फरमाया एक मक्कार! तू, और भलाई की तरफ रहनुमाई करे, यह सब फरेब की बातें हैं। सच बता कि तू ने हमें बेदार क्यों किया? जब तक तू सच्ची बात नहीं बताएगा, मैं तुझे जाने नहीं दूंगा, आख़िर इब्लीस सच्ची बात बताने पर मजबूर हो गया।

*अज़ बुने दन्दाने बगुफ़्तश ऐ फुलां*

*करद मत् बेदार मन् अज़् बहरे आं*

दबी ज़बान से उस ने कहा ऐ अमीरे मुआ़विया! बेदार करने का मक़्सद यह है कि:

*ता रसी अन्दर जमाअ़त दर् नमाज़*

*अज़् पए पैग़म्बरे दौलत फ़राज़*

आप पैग़म्बरे इस्लाम अलैहिस्सलातु वस्सलाम के पीछे नमाज़ बा जमाअ़त अदा फरमा लें।

*गर् नमाज़ फौत मी शुद् ईं ज़मां*

*मी ज़दी अज़् दूदे दिल् आहो-फग़ां*

क्यों कि उस वक़्त अगर नमाज़ क़ज़ा हो जाती तो आप दिल से आहो-बुका करते।

*आं तअस्सुफ व वां फग़ां बुआं नयाज़*

*दर गुज़श्ती अज़् दो सद् रकअ़त नमाज़*

उस अफ्सोस करने, रोने और आजिज़ी करने से आप को दो सौ रकअ़त से ज़्यादा का सवाब मिल जाता। और ज़्यादा सवाब मिलने से मुझे तक्लीफ होती। इस लिये मैं ने आप को बेदार कर दिया।

*मन् हुसूदम अज़् हसद करमद् चुनीं*

*मन् अदव्वुम कारे मन् मक्रसतो-कीं*

मैं हासिद हूं, हसद से मैं ने ऐसा काम किया ताकि सवाब ज़्यादा

न मिलने पाए, मैं आप का दुश्मन हूं, मेरा काम मक्कारी और फरेब है।

*गुफ्त अक्नूं रास्त गुफ्ती सादिक़ी*
*अज़ तू ईं आयद तू ईं रा लाइक़ी*

आप ने फरमाया अब तू ने सच कहा और अपने इस बयान में तू सच्चा है। तुझ से यही होगा और तू इसी लाइक़ है। इब्लीस जो किसी के क़ब्ज़े में नहीं आता है, वह हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की गिरफ्त से नहीं निकल सका और न उनको फरेब दे सका। यह आप की वाज़ेह करामत है।

# आप पर ऐतराज़ात के जवाबात

हज़रत अमीरे मुआवियार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ज़ात पर कुछ लोग ऐतराज़ात करते हैं, हम उन के ऐतराज़ात को नक़ल करने के बाद अपने मुदल्लल जवाबात पेश करेंगे, आप लोग बग़ौर समाअत फरमाएं।

## पहला ऐतराज़

पहला ऐतराज़ यह है कि अमीरे मुआविया ने हज़ारों को क़त्ल किया और कराया। अगर यह हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से जंग न करते तो मुसलमानों का इतना क़त्ल न होता। और मोमिन को क़त्ल करने वाला हमेशा जहन्नम में रहेगा। खुदाए तआला का इरशाद है:

وَمَنْ يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآؤُهٗ جَهَنَّمُ خَالِدًا فِيْهَا وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهٗ وَاَعَدَّ لَهٗ عَذَابًا عَظِيْمًا
(پارہ:۵، رکوع:۱۰)

जो शख़्स किसी मुसलमान को जान बूझ कर क़त्ल करे तो उस का बदला जहन्नम है जिस में वह हमेशा रहेगा। अल्लाह तआला उस पर ग़ज़ब और लअ्नत फरमाएगा और उस के लिये बड़ा अज़ाब तैयार कर रखा है। (पारा:5 रुकूअ्:10)

लिहाज़ा अमीरे मुआविया इस आयत के अहकाम में दाख़िल हैं।

## जवाब

इस ऐतराज़ के दो जवाब हैं, अव्वल इल्ज़ामी और वह यह है कि

फिर तो हज़रत आइशा सिद्दीक़ा, हज़रत तल्हा और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम पर भी यही इल्ज़ाम आइद हो सकता है, इस लिये कि इन लोगों ने भी हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से जंग की जिस में हज़ारों मुसलमान शहीद हुए। जबकि हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का जन्नती होना ऐसा ही यक़ीनी है जैसा कि जन्नत का होना, इस लिये इनके जन्नती होने पर कुरआन की आयत शाहिद है। और हज़रत तल्हा और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा भी क़तअ़न जन्नती हैं इस लिये कि यह दोनों हज़रात अशरए मुबश्शरा में से हैं।

इस ऐतराज़ का दूसरा जवाब तहक़ीक़ी है और वह यह है कि मोमिन के क़त्ल की तीन सूरतें हैं, एक तो यह कि उसके क़त्ल को हलाल समझे और यह कुफ्र है, इस लिये मोमिन का क़त्ल हरामे क़तई है और हरामे क़तई को हलाल समझना कुफ्र है और आयते करीमा में क़त्ल की यही सूरत मुराद है। इस लिये कि कुफ्र वाला ही हमेशा जहन्नम में रहेगा न कि ईमान वाला। दूसरे यह कि मोमिन के क़त्ल को हलाल नहीं समझते मगर दुनियावी झगड़े में उसे क़त्ल कर दिया। यह कुफ्र नही है बलिक फिस्क़ और गुनाहे कबीरा है, जैसे हलाल न समझते हुए शराब पीना और नमाज़ का क़स्दन तर्क करना। और तीसरी सूरत ख़ताए इज्तिहादी से एक मोमिन का दूसरे मोमिन को क़त्ल करना। यह न कुफ्र है न फ़िस्क़ और हज़रत अमीरे मुआ़विया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की जंग इसी तीसरी क़िस्म में दाख़िल है। आप मुज्तहिद थे जैसा हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हुमा के फरमान से पहले मालूम हो चुका है। और मुज्तहिद अगर अपने इज्तिहाद में ख़ता करे तो उस पर कोई मवाख़ज़ा (पकड़) नहीं।

अगर हमारा यह जवाब मोअ़तरिज़ (ऐतराज़ करने) को तस्लीम नहीं तो फिर यही ऐतराज़ हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु पर भी होगा, उन्हों ने भी हज़रत आइशा और हज़रम अमीरे मुआ़विया

रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा की जंग में बेशुमार मोमिनों को कत्ल किया और कराया। खुदाए अज़्ज़ व जल्ल समझने की तौफीक़ अता फरमाए।

## दूसरा ऐतराज़

यह कहा जाता है कि अमीरे मुआविया के दिल में अहले बैत से दुश्मनी थी, इस लिये उन्हों ने अहले बैत को सताया। और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का फरमान है जिस ने अली को सताया उस ने मुझ को सताया। और अमीरे मुआविया ने अहले बैत से जंग की और हुज़ूर ने फरमाया जिस ने उन से जंग की उस ने मुझ से जंग की और सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से जंग करने वाला मोमिन कब हो सकता है।

## जवाब

इस ऐतराज़ के भी दो जवाब हैं। अव्वल इल्ज़ामी और वह यह है कि हज़रत आइशा, हज़रत तल्हा और हज़रत जुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम पर भी यही ऐतराज़ वारिद होगा कि इन हज़रात ने भी हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से जंग की है बल्कि कोई मुख़ालिफ हज़रत अली के बारे में भी यही कह सकता है कि उन के दिल में हज़रत आइशा, हज़रत तल्हा और हज़तर जुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम से बुग़ज़ व अदावत थी। और हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने तमाम सहाबा के बारे में फरमाया है: مَنْ اَبْغَضَهُمْ فَبِبُغْضِیْ اَبْغَضَهُمْ यानी जिस ने सहाबा से बुग़ज़ रखा, उस ने मेरे बुग़ज़ के सबब उन से बुग़ज़ रखा। ग़रज़ेकि हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर इस किस्म का ऐतराज़ करने से बहुत से सहाबा और अहले बैत पर ऐतराज़ वारिद होगा। खुदाए तआला ऐसे लोगों को हिदायत नसीब फरमाए।

अब इस ऐतराज़ का दूसरा ज़वाब तहक़ीक़ी है और वह यह है कि मुख़ालिफते अहले बैत की तीन क़िस्में हैं। अव्वल हुज़र के अहले बैत

होने की बुनियाद पर उन से जलना और यह कुफ़्र है, क्यों इस बुनियाद पर उन से जलना हुज़ूर से दुश्मनी की ख़बर देता है जो कुफ़्र है। दूसरे किसी दुनियावी वजह से नाराज़ होना, अगर उस में नफ्सानियत शामिल है तो गुनाह है वरना नहीं। जैसे कि हज़रत अली व हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा के माबैन ख़ानगी (घरेलू) मामलात में बारहा शक्र रंजी हुई है। तीसरे ख़ताए इज्तिहादी की बुनियाद पर अहले बैत से ना इत्तिफाक़ी हो जाए, यह न कुफ़्र है और न गुनाह। हज़रत अमीरे मुआ़विया और हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा की तमाम जंगें इसी तीसरी क़िस्म की थीं। इन सब के सीने एक दूसरे के कीने से पाक थे।

हज़रत इमामे अहमद बिन हंबल अपनी मुस्नद में रिवायत करते हैं कि एक शख़्स ने हज़रत अमीरे मुआ़विया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से कोई मस्अला पूछा, फरमायाः إِسْأَلْ عَنْهَا عَلِيًّا فَهُوَ أَعْلَم इस मस्अले को हज़रत अली से पूछो कि वह बड़े आलिम हैं, उस ने कहा आप ही मस्अला बता दें कि आप का जवाब मुझे उन के जवाब से ज़्यादा पसंद है। हज़रत अमीरे मुआ़विया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फरमाया कि तूं ने बहुत बुरी बात कही है। क्या तू उन से नफरत करता है जिन की इज़्ज़त हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम करते थे और जिन से हुज़ूर ने फरमायाः أَنْتَ بِمَنْزِلَةِ هَارُوْنَ مِنْ مُوْسٰى إِلَّا أَنَّهُ لَا نَبِيَّ بَعْدِیْ यानी ऐ अली! तुम मेरे लिये ऐसे हो जैसे हज़रत मूसा के लिये हज़रत हारून। लेकिन मेरे बाद कोई नबी नहीं है। फिर हज़रत अमीरे मुआ़विया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फरमाया ऐ मस्अला पूछने वाले! सुन, हज़रत अली की अ़ज़्मत का यह हाल है कि जब हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को कोई मुश्किल मस्अला दरपेश होता तो वह हज़रत अली से हल कराते थे। इतना फरमाने के बाद आप ने उस से फरमायाः قُمْ لَا أَقَامَ اللّٰهُ رِجْلَيْكَ तू मेरे पास से उठ जा, अल्लाह तआ़ला तेरे पैरों को क़ियाम नसीब न फरमाए। वह शख़्स आप के यहां से वज़ीफा

पाता था मगर हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शान में इस बेअदबी के सबब उस का नाम वज़ीफा पाने वाले रजिस्टर से ख़ारिज करवा दिया। (अन्नाहिया:27)

और मुहम्मद बिन महमूद आमली ने नफाइसुल फुनून में तहरीर फरमाया है कि हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की मज्लिस में हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का ज़िक्र किया गया तो आप ने फरमाया कि अली शेर थे, अली चौदहवीं रात का चांद थे और अली रहमते खुदा की बारिश थे। हाज़िरीन में से किसी शख़्स ने पूछा कि आप अफज़ल हैं या अली? तो आप ने फरमायाः خُطُوطُ مِّنْ عَلِيٍّ خَيْرٌ مِّنْ اٰلِ اَبِيْ سُفْيَانَ अली के नक़्शे क़दम आले सुफियान से बेहतर है। (अन्नाहिया:28)

और शेख़ नूरुल हक़ बुख़ारी शरीफ के तर्जमा में तहरीर फरमाते हैं कि जंगे जमल के दिन हज़रत अली ने हज़रत तल्हा जो हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के साथ थे उन की लाश को देखा तो हज़रत अली इस क़द्र रोए कि उन की दाढ़ी आंसुओं से तर हो गई। (अन्नाहिया:12)

और अल्लामा फरहारवी मोअल्लिफ नबरास लिखते हैं कि हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जंगे जमल से अलग होकर नमाज़ पढ़ रहे थे कि उसी हालत में हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के एक सिपाही अम्र बिन जरमूज़ ने उन को शहीद कर दिया और जब उन की तलवार हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को पेश की गई तो आप ने फरमाया मुझ से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया हैः بَشِّرْ قَاتِلَ ابْنِ اَبِيْ صَفِيَّةَ بِالنَّارِ इब्ने सफिया यानी हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के क़ातिल को जहन्नम की खुशख़बरी दे दो। यह सुन कर अम्र बिन जरमूज़ ने कहा ऐ अली! आप का मामला अजीब है, अगर हम आप से लड़ें तो जहन्नमी और आप की तरफ से लड़ें तो जहन्नमी। यह कह कर गुस्से में उस ने अपने पेट में तलवार घोंप कर खुद कुशी कर ली। (अन्नाहिया:13)

इन वाकिआत से वाज़ेह तौर पर मालूम हुआ कि सहाबए किराम में इख़्तिलाफ ज़रूर हुआ मगर वह एक दूसरे की इज़्ज़त करते थे, एक दूसरे से मुहब्बत रखते थे, उन के सीने एक दूसरे के बुग़ज़ व अदावत और कीने से पाक थे जैसा कि भाई-भाई में इख़्तिलाफ हो जाता है, यहां तक कि नौबत लड़ाई तक पहुंच जाती है मगर एक दूसरे से बुग़ज़ व अदावत नहीं रखता। खुलासा यह कि इख़्तिलाफ और चीज़ है और बुग़ज़ व अदावत और चीज़ है। सहाबा का आपस में इख़्तिलाफ रहा मगर कीना और बुग़ज़ नहीं रहा।

## इख़्तिलाफ की वजह

हज़रत अली और हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा में इख़्तिलाफ की वजह यह है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के घर को मिस्र के बलवाइयों ने घेर लिया, उन पर पानी बंद कर दिया और फिर उन को निहायत बेदर्दी के साथ शहीद कर दिया। इस के बाद मोहाजिरीन व अंसार के इत्तिफ़ाके राय से जब अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मुकर्रर हुए तो उन से ख़ूने उस्मान के क़िसास (बदला लेने) का मुतालेबा किया गया, मगर वह बाज़ मस्लहतों की बिना पर क़ातिलीन से क़िसास न ले सके। जब यह ख़बर मुल्के शाम में हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को पहुंची तो उन्हों ने हज़रत अली कर्रमल्लाह तआला वज्हहुल करीम को पैग़ाम भेजा कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का मदीना तैयिबा में शहीद कर दिया जाना बहुत अहम मामला है, लिहाज़ा जल्द से जल्द क़ातिलीन को पूरी सज़ा दी जाए और उन पर क़िसास जारी किया जाए मगर हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मौजूदा हालात से मजबूर थे इस लिये वह क़ातिलीन को कोई सज़ा नहीं दे सके। अब्दुल्लाह बिन सबा का गिरोह जो इस फ़ित्ने की जड़ था और

मुसलमानों को आपस में लड़ा कर इस्लाम की ताक़त को कमज़ोर करना चाहता था, इन में से बहुत से लोगों ने मुल्के शाम पहुंच कर हज़रत अमीरे मुआ़विया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को यह यक़ीन दिलाया कि अली क़िसास लेने में कोताही कर रहे हैं, तो हज़रत अमीरे मुआ़विया ने मुसलसल कई क़ासिदों को भेज कर क़िसास का शिद्दत से मुतालेबा किया। और जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु अब भी क़ातिलीन पर क़िसास जारी न कर सके तो अब हज़रत अमीरे मुआ़विया के दिल में यह बात जम गई कि अली ख़िलाफ़त के लाइक़ नहीं क्यों कि जब ऐसे अहम ख़ून का वह क़िसास नहीं ले सकते और क़ातिलीन को कोई सज़ा नहीं दे सकते तो ख़िलाफ़त के दीगर उमूर वह क्या अंजाम दे सकते हैं। हज़रत अली से हज़रत अमीरे मुआ़विया के इख़्तिलाफ़ की अस्ल वजह यही है। और हज़रत आइशा वह हज़रत अली के माबैन भी इसी बुनियाद पर इख़्तिलाफ़ हुआ। *रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम।*

## तीसरा ऐतराज़

तीसरा ऐतराज़ जो बहुत अहम समझा जाता है वह यह है कि अमीरे मुआ़विया ने अपनी ज़िंदगी में यज़ीद को अपना ख़लीफ़ा मुक़र्रर कर दिया, इस में उन्हों ने तीन ग़लतियां कीं। अव्वल यह कि ख़लीफ़ा का इन्तिख़ाब आम लोगों की राय से होना चाहिये, उन्हों ने यज़ीद को खुद क्यों ख़लीफ़ा बना दिया। दूसरे यह कि अपने बेटे को अपना जानशीन बनाना क़ानूने इस्लाम के ख़िलाफ़ है। तीसरे यज़ीद जैसे फ़ाजिर व फ़ासिक़ के हाथ में हुकूमत की बाग डोर दे देना उन का सब से बड़ा जुर्म है। करबला के सारे वाक़िआ़त की ज़िम्मेदारी उन्हीं पर है, अगर वह यज़ीद को ख़लीफ़ा न बनाते तो करबला ऐसा दर्दनाक वाक़िआ़ न होता। और जब यज़ीद जैसे फ़ाजिर व फ़ासिक़ को नमाज़ का इमाम बनाना दुरुस्त नहीं तो उसे इमामुल मुस्लिमीन बनाना कैसे जाइज़ हो सकता है।

## जवाब

इसका जवाब यह है कि ख़लीफा का अपनी ज़िंदगी में दूसरे को ख़लीफा बनाना जाइज़ है। इस लिये हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी ज़िंदगी में हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को ख़लीफा मुक़र्रर किया था। रहा अपने बेटे को अपना जानशीन बनाना तो यह कुरआन व हदीस से मना नहीं। इसी लिये आज कल आम तौर पर सूफिया व मशाइख़ अपनी औलाद को अपना जानशीन बनाते हैं, जिन लोगों को बेटे को जानशीन बनाने पर ऐतराज़ है, वह कुरआन व हदीस से इस का ग़लत होना साबित करें। रही यह दलील कि ख़ुलफ़ाए अरबा में से किसी ने अपने बेटे को जानशीन मुक़र्रर नहीं किया, इस लिये यह ना जाइज़ है, तो यह दलील ग़लत है। इस लिये कि ख़ुलफ़ाए अरबा के न करने के सबब अगर ना जाइज़ हो जाए तो उन्हों ने बहुत सा काम नहीं किया है, जैसे कुरआन मजीद पर ऐराब लगाना, हदीस शरीफ को किताबी शक्ल में जमा करना और फिक़्ह की तदवीन वग़ैरा य सब काम ना जाइज़ हो जायेंगे।

रहा यज़ीद का फिस्क़ व फुजूर तो यह कहीं साबित नहीं कि हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ज़िंदगी में यज़ीद फासिक़ व फाजिर था और न यह साबित है कि उन्हों ने यज़ीद को फासिक़ व फाजिर जानते हुए अपना जानशीन बनाया। यज़ीद का फिस्क़ व फुजूर दर अस्ल हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की वफात के बाद ज़ाहिर हुआ। और फिस्क़ ज़ाहिर होने के बाद फासिक़ क़रार दिया जाता है न कि पहले। देखिये इब्लीसे लईन पहले मुअल्लिमुल मलकूत (फिरिश्तों को पढ़ाने वाला) और इज़्ज़त व अज़मत वाला था, फिर जब उसे से कुफ़्र ज़ाहिर हुआ तब उसे काफिर क़रार दिया गया। तो फिस्क़ ज़ाहिर होने से पहले यज़ीद को फासिक़ कैसे ठहराया जा सकता है और हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कैसे मौरिदे इल्ज़ाम हो सकते हैं।

अगर कोई रिवायत ऐसी हो जिस से यह साबित हो कि हज़रत अमीरे मुआविया को यज़ीद के फिस्क़ व फुजूर की ख़बर थी, इस के बा वजूद उन्हों ने उसे अपना वली अहेद मुक़र्रर किया तो वह रिवायत झूठी है और उस का रावी कज़्ज़ाब है, इस लिये कि वह सहाबी का फिस्क़ साबित करता है। जबकि सारे सहाबा का आदिल, मुत्तक़ी और परहेज़गार होना जम्हूर के नज़्दीक मुसल्लम है।

रही यह बात कि यज़ीद को ख़लीफा बनाने के सबब करबला के सारे वाक़िआत की ज़िम्मेदारी हज़रत अमीरे मुआविया पर है तो कोई कह सकता है, नहीं बल्कि हज़रत इमामे हसन पर है, इस लिये कि चालीस हज़ार सिपाही जिन्हों ने जान कुर्बान करने की आप के हाथ पर बैअत की थी, अगर आप उन को लेकर हज़रत अमीरे मुआविया का मुक़ाबला करते तो उसी ज़माने में उन का क़लअ् क़मअ् (ख़ात्मा) हो जाता, यज़ीद को सारे ममालिके इस्लामिया का ख़लीफा बनाने का सवाल ही नहीं रह जाता मगर इस के बजाए हज़रत इमामे हसन ने ख़िलाफत उन के सुपुर्द कर दी और उन्हों ने यज़ीद को अपना जानशीन बना दिया। तो दर अस्ल वाक़िआते करबला की सारी ज़िम्मेदारी हज़रत इमामे हसन पर है।

और फिर कोई यह कहेगा कि हुज़ूर के चचा हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बीवी हज़रत उम्मुल फज़ल रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को जब बच्चा पैदा हुआ और वह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में लेकर हाज़िर हुई तो हुज़ूर ने बच्चे का नाम अब्दुल्लाह रखा और फरमायाः إِذْهَبِىْ بِأَبِى الْخُلَفَاءِ खुलफा के बाप को ले जा। फिर फरमायाः هٰذَا أَبُو الْخُلَفَاءِ حَتّٰى يَكُوْنَ مِنْهُمُ السَّفَّاحُ حَتّٰى يَكُوْنَ مِنْهُمُ الْمَهْدِىْ यह खुलफा का बाप है, इन्हीं में सफ्फाह होगा, इन्हीं में से महदी। (दलाइलुन् नुबुव्वत बहवाला अद्दौलतुल मक्कियह:154)

देखिये हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की पीठ से कई पुश्त

के बाद पैदा होने वालों के बारे में बता दिया कि वह ख़लीफा होंगे और उन के नाम भी बता दिये। तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ख़ूब जानते थे कि हज़रत अमीरे मुआविया की पुश्त से यज़ीद पैदा होगा तो उन्हों ने हज़रत अमीरे मुआविया से क्यों नहीं वसिय्यत कर दी कि तुम यज़ीद को ख़लीफा हरगिज़ मत बनाना। और जब सारी बातों को जानते हुए हुज़ूर ने मना नहीं फरमाया तो वाक़िआते करबला की सारी ज़िम्मेदारी उन्ही पर है।

और फिर कोई बदबख़्त यह भी कहेगा कि अल्लाह तआला ने यज़ीद को पैदा ही क्यों किया था और अगर पैदा कर दिया था तो हज़रत अमीरे मुआविया ही की ज़िंदगी में उस पर मौत वाक़ेअ् कर देता, मगर उस ने ऐसा नहीं किया तो इस में किसी की कोई ख़ता नहीं है। करबला के सारे ख़ूनी वाक़िआ की सारी ज़िम्मेदारी अल्लाह तआला पर है।

देखा आप लोगों ने कि ऐतराज़ करने वाले कहां से कहां तक पहुंचे कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और ख़ुदाए तआला को भी नहीं छोड़ा और उन पर भी ऐतराज़ कर दिया। लिहाज़ा ऐ हमारे सुन्नी भाइयो! सलामती इसी में है कि सहाबए किराम के माबैन जो इख़्तिलाफात हुए हैं उन में बहस न करो, उन का मामला ख़ुदाए तआला के सुपुर्द करो कि इस में पड़ने से ईमान जाने का अंदेशा है।

गुनियतुत् तालिबीन जो शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी हुज़ूर ग़ौसे पाक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तस्नीफे मशहूर हैं, उस के पेज नं० 75 के इरशाद का तर्जमा यह है कि हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल करीम ने हज़रत तल्हा, हज़रत ज़ुबैर, हज़रत आइशा सिद्दीक़ा और हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम से जो जंग की है उस के बारे में इमामे अहमद बिन हंबल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने तसरीह फरमाई है कि इस में और सहाबा की तमाम जंगों में बहस करने से बाज़ रहना चाहिये, इस लिये अली मुरतज़ा उन सहाबा से जंग

करने में हक़ पर थे और जो कोई उन की इताअ़त से ख़ारिज हुआ और उन के मुक़ाबिल जंग आज़मा हुआ, उस ने इमामे बरहक़ से बग़ावत की लिहाज़ा उस से जंग जाइज़ हुई। और जिन लोगों ने अली मुरतज़ा से जंग की जैसे हज़रत तल्हा, हज़रत ज़ुबैर और हज़रत अमीरे मुआ़विया तो उन्हों ने हज़रत उस्मान के ख़ून के बदले का मुतालेबा किया जोकि ख़लीफ़ए बरहक़ और मज़्लूम होकर शहीद किये गए। और हज़रत उस्मान के क़ातिलीन हज़रत अली की फौज में शामिल थे। लिहाज़ा इन में से हर एक सहीह तावील की तरफ़ गए।

और इसी ग़ुनियतुत् तालिबीन के पेज नं0 178 पर है, सारे अहले सुन्नत इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि सहाबए किराम की जंगों में बहस से बाज़ रहा जाए और उन्हें बुरा कहने से परहेज़ किया जाए, उन के फ़ज़ाइल और उन की ख़ूबियां ज़ाहिर की जाएं और उन बुज़ुर्गों का मामला रब के सुपुर्द कर दिया जाए। जैसे वह इख़्तिलाफ़ात जो हज़रत अली, हज़रत आइशा, हज़रत मुआ़विया, हज़रत तल्हा और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम में वाक़ेअ़ हुए।

और हज़रत इमामे आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़िक़्हे अक्बर में फ़रमाते हैं: نَتَوَلَّاهُمْ جَمِيعًا وَلَا نَذْكُرُ الصَّحَابَةَ إِلَّا بِخَيْرٍ यानी हम अहले सुन्नत तमाम सहाबा से मुहब्बत करते हैं और उन्हें भलाई से ही याद करते हैं।

और हज़रत मुजद्दिदे अल्फ़े सानी शेख़ अहमद सरहन्दी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि जो अकाबिरीने औलिया में से हैं इरशाद फ़रमाते हैं:

*"ख़िलाफ़ व नज़ाए कि दर मियाने अस्हाब वाक़ेअ़ शुदा बूद महमूल बर हवाए नफ़्सानी नेस्त दर सोह्बते ख़ैरुल बशर नुफ़ूसे ईशां बतज़्किया रसीदा बूदंद"*

जो झगड़े और लड़ाईयां सहाबए किराम में हुईं वह नफ़्सानियत की बिना पर न थीं इस लिये कि सहाबा के नुफ़ूस हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की बरकत से पाक हो चुके थे।

(मकतूबातः1/86)

आप लोगों ने हज़रत ग़ौसे आज़म, हज़रत इमामे आज़म और हज़रत मुजद्दिदे अल्फ़े सानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम के इरशादाते मुबारका को सुन लिया। अगर वाक़ई इन बुज़ुर्गों के मानने वाले हैं और इन से मुहब्बत करने वाले हैं तो इन के फ़रमान पर अमल करें, सहाबए किराम की जंगों के मुतअ़ल्लिक़ बहस न करें, उन के मामले को अल्लाह तआला के सुपुर्द करें। हज़रत अमीरे मुआविया और किसी सहाबी से बुग़ज़ व इनाद न रखें, सब से मुहब्बत करें और सब को भलाई ही से याद करें, किसी भी सहाबी पर लअ्न तअ्न न करें कि अल्लाह व रसूल की नाराज़गी का सबब है। *जल्ल जलालहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अ़ला आलिही व अस्हाबिही अज्मईन व बारका व सल्लम।*

☆☆☆

# सय्यदुश् शुहदा हज़रत इमाम हुसैन

## रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु

الحمدلله رب المشرقين ورب المغربين والصلاة والسلام على نبيناجدالحسن والحسين وعلى اله واصحابه الذين فازوا فى الدارين۔ امابعد۔فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔قَدْ جَآءَ كُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ۔ صَدَقَ اللّٰه العلى العظيم وصدق رسوله النبى الكريم ونحن على ذالك لمن الشاهدين والشاكرين والحمدلله رب العالمين۔

एक मर्तबा हम और आप सब लोग मिल कर सारी काइनात के आक़ा व मौला जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के दरबारे दुर्रे बार में बुलंद आवाज़ से दुरूद शरीफ़ का नज़्राना और हदिया पेश करें।

صلى الله على النبى الامى واله صلى الله تعالى عليه وسلم صلاةً وسلاماً عليك يارسول الله

*सल्लल्लाहु अ़लन् नबिय्यिल् उम्मियी व आलिही सल्लल्लाह तआ़ला*
*अ़लैहि व सल्लम, सलातंव् व सलामन् अ़लैक या रसूलल्लाह।*

हम्दो-सलात के बाद कुरआने मुक़द्दस की आयते करीमा के जिस टुकड़े की तिलावत का शर्फ़ हम ने हासिल किया है। यानी: قَدْ جَآءَ كُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ उसका तर्जमा यह है: अल्लाह तआ़ला की जानिब से तुम्हारे पास नूर आ गया। इस आयते करीमा में हमारे नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम को नूर फ़रमाया गया है। और नूर वह है जो खुद रौशन और चमकदार हो और दूसरों को रौशन व चमकदार बनाए। देखिये आफ़्ताब नूर है जो रौशन व ताबनाक है और जिस पर वह अपना अक्स डालता है उसे भी रौशन व ताबनाक बना देता है। मगर वह सिर्फ़ ज़ाहिर को चमकाता है। और हमारे आक़ा व मौला प्यारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ऐसे नूर हैं जो ज़ाहिर व बातिन दोनों को चमकाते हैं, तो जो लोग कि इस नूर से चमके वह

ख़ूब चमके। फिर उन में जो नूर की गोद में खेल कर बड़े हुए यानी निवाए रसूल सय्यदुश् शुहदा हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु तो वह ऐसे चमके कि अपने तो अपने अग़ियार (ग़ैरों) की भी आंखें उन की चमक से चक्का चौंध हैं और यज़ीदियों की हज़ार मुख़ालफत के बावजूद इन्शा अल्लाहुर रहमान वह क़ियामत तक ऐसे ही चमकते रहेंगे।

صلی اللہ علی النبی الامی وآلہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم صلاۃ وسلاماً علیک یارسول اللہ

*सल्लल्लाहु अ़लन् नबिय्यिल् उम्मियी व आलिही सल्लल्लाह तआ़ला अ़लैहि व सल्लम, सलातंव् व सलामन् अ़लैक या रसूलल्लाह।*

## आप की विलादत (पैदाइश)

सैय्यदुश् शुहदा हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की विलादते मुबारका 5 शाबान 4 हिजरी को मदीना तैयिबा में हुई। सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने आप के कान में अज़ान दी, मुंह में लुआ़बे दहन (थूक मुबारक) डाला और आप के लिये दुआ़ फरमाई फिर सात्वें दिन आप का नाम हुसैन रखा और अकीक़ा किया। हज़रत इमामे हुसैन की कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह और लक़ब "सिब्ते रसूल" व "रैहानतुर रसूल" है। हदीस शरीफ में है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि हज़रत हारून अलैहिस् सलाम ने अपने बेटों का नाम शब्बर व शब्बीर रखा और मैं ने अपने बेटों का नाम उन्हीं के नाम पर हसन और हुसैन रखा। (सवाइके मुहर्रिका:118)

इसी लिये हसनैन करीमैन को शब्बर व शब्बीर के नाम से भी याद किया जाता है। सुर्यानी ज़बान में शब्बर व शब्बीर और अरबी ज़बान में हसन व हुसैन दोनों के मअ्ना एक हैं। और हदीस शरीफ में है कि: اَلْحَسَنُ وَالْحُسَيْنُ اِسْمَانِ مِنْ اَهْلِ الْجَنَّةِ हसन और हुसैन जन्नती नामों में से दो नाम हैं। अरब के ज़मानए जाहिलिय्यत में यह दोनों नाम नहीं थे।

(सवाइके मुहर्रिका:118)

इब्नुल अअ्राबी हज़रत मुफज़्ज़ल से रिवायत करते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने यह नाम मख़्फ़ी रखे यहां तक कि नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने अपने नवासों का नाम हसन और हुसैन रखा।

(अश्शर्फुल मोअब्बद:70)

हज़रत उम्मुल फज़ल बिन्तुल हारिस रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा यानी हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की चची हज़रत अब्बास बिन मुत्तलिब रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की अहलिया मोहतरमा एक दिन हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हुईं और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! आज मैं ने एक ऐसा ख़्वाब देखा है जिस से मैं डर गई हूं, हुज़ूर अलैहिस् सलाम ने फरमाया तू ने क्या देखा है? उन्हों ने अर्ज़ किया वह बहुत सख़्त है जिस के बयान करने की मैं अपने अन्दर जुर्अत नहीं पाती हूं। हुज़ूर ने फरमाया बयान करो तो उन्हों ने अर्ज़ किया मैं ने यह देखा कि हुज़ूर के जिस्मे मुबारक का एक टुक्ड़ा काट कर मेरी गोद में रखा गया है। इरशाद फरमाया तुम्हारा ख़्वाब बहुत अच्छा है। इन्शा अल्लाह तआ़ला फातिमा ज़हरा के बेटा पैदा होगा और वह तुम्हारी गोद में दिया जाएगा।

चुनांचे ऐसा ही हुआ, हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु पैदा हुए और हज़रत उम्मुल फज़ल की गोद में दिये गए। (मिश्कात:572)

## आप के फज़ाइल

हज़रत इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के फज़ाइल में बहुत सी हदीसें वारिद हैं। आप हज़रात पहले उन हदीसों को समाअ़त फरमाएं जो सिर्फ आप के मनाक़िब में हैं। फिर जो हदीसें कि दोनों शाहज़ादों के फज़ाइल को शामिल हैं वह बाद में पेश की जायेंगी।

तिर्मिज़ी शरीफ की हदीस है हज़रत याला बिन मुर्रा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर पुर नूर सैयिदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: حُسَيْنٌ مِنِّى وَاَنَا مِنَ الْحُسَيْنِ हुसैन मुझ से

हैं और मैं हुसैन से हूं। यानी हुसैन को हुज़ूर से और हुज़ूर को हुसैन से इन्तिहाई कुर्ब है गोया कि दोनों एक हैं तो हुसैन का ज़िक्र हुज़ूर का ज़िक्र है, हुसैन से दोस्ती हुज़ूर से दोस्ती है, हुसैन से दुश्मनी हुज़ूर से दुश्मनी है। और हुसैन से लड़ाई करना हुज़ूर से लड़ाई करना है। *सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम व रज़ियल्लाहु तआला अन्हु।*

और सरकारे अक्दस इरशाद फरमाते हैं: اَحَبَّ اللّٰهُ مَنْ اَحَبَّ حُسَيْنًا जिस ने हुसैन से मुहब्बत की उस ने अल्लाह तआला से मुहब्बत की।

(मिश्कातः571)

इस लिये कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मुहब्बत करना हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से मुहब्बत करना है और हुज़ूर से मुहब्बत करना अल्लाह तआला से मुहब्बत करना है। (मिर्कात शरह मिश्कातः5/605)

और हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिसे पसंद हो कि जन्नती जवानों के सरदार को देखे तो वह हुसैन बिन अली को देखे। (नूरुल अब्सारः114)

और हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मस्जिद में तशरीफ लाए और फरमाया छोटा बच्चा कहां है? हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु दौड़ते हुए आए और हुज़ूर की गोद में बैठ गए और अपनी उंगलियां दाढ़ी मुबारक में दाख़िल कर दीं, हुज़ूर ने उनका मुंह खोल कर बोसा लिया फिर फरमायाः اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اُحِبُّهٗ فَاَحِبَّهٗ وَاَحِبَّ مَنْ يُّحِبُّهٗ ऐ अल्लाह! मैं इस से मुहब्बत करता हूं तू भी इस से मुहब्बत फरमा और उस से भी मुहब्बत फरमा कि जो इस से मुहब्बत करे। (नूरुल अब्सारः114)

मालूम हुआ कि हुज़ूर आकाए दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने सिर्फ दुनिया वालों ही से नहीं चाहा कि वह हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मुहब्बत करें बल्कि खुदाए

तआला से भी अर्ज़ किया कि तू भी इस से मुहब्बत फरमा और बल्कि यह भी अर्ज़ किया कि हुसैन से मुहब्बत करने वाले से भी मुहब्बत फरमा।

और हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि मैं ने रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को देखा कि वह हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के लुआबे दहेन को इस तरह चूस्ते हैं जैसे कि आदमी खजूर चूस्ता है। يَمْتَصُّ لُعَابَ الْحُسَيْنِ كَمَا يَمْتَصُّ الرَّجُلُ التَّمْرَةَ (नूरुल अब्सार:114)

और मरवी है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा कअ्बा शरीफ के साये में तशरीफ फरमा थे, उन्हों ने हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को तशरीफ लाते हुए देखा तो फरमायाः هٰذَا اَحَبُّ اَهْلِ الْاَرْضِ اِلٰى اَهْلِ السَّمَاءِ الْيَوْمَ आज यह आसमान वालों के नज़्दीक तमाम ज़मीन वालों से ज़्यादा महबूब हैं। (अश्शर्फुल मोअब्बद:65)

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने पैदल चल कर 25 हज किये। आप बड़ी फज़ीलत के मालिक थे और कसरत से नमाज़, रोज़ा, हज, सदका और दीगर उमूरे खैर अदा फरमाते थे।

(बरकाते आले रसूल:145)

हज़रत अल्लामा जामी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि एक रोज़ सैय्यिदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अपने दाहिने और अपने साहिब ज़ादे हज़रत इब्राहीम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अपने बाएं बिठाए हुए थे कि हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! खुदाए ज़ुल जलाल इन दोनों को आप के पास जमा न रहने देगा, इन में से एक को वापस बुला लेगा, अब इन दोनों में से जिसे आप चाहें पसंद फरमाएं। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया अगर हुसैन रुख्सत हो जाएं तो उन की जुदाई में फातिमा व अली को तक्लीफ होगी और मेरी भी जान सोज़ी

होगी और अगर इब्राहीम वफात पा जाएं तो ज़्यादा ग़म मुझी को होगा, इस लिये मुझे अपना ग़म पसंद है। इस वाक़िआ के तीन रोज़ बाद हज़रत इब्राहीम रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु वफात पा गए।

इस के बाद जब भी हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आते, हुज़ूर मरहबा फरमाते, फिर उन की पेशानी को बोसा देते और लोगों से मुख़ातब होकर फरमाते मैं ने हुसैन पर अपने बेटे इब्राहीम को कुर्बान कर दिया है। (शवाहिदुन् नुबुव्वत:305)

अब वह रिवायतें मुलाहेज़ा फरमाएं जो दोनों साहिब ज़ादों के फज़ाइल पर मुश्तमिल हैं।

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: اَلْحَسَنُ وَالْحُسَيْنُ سَيِّدَا شَبَابِ اَهْلِ الْجَنَّةِ हसन और हुसैन जन्नती जवानों के सरदार हैं।

(मिश्कात:570)

(ग़यासुल् लुग़ात में है *बिज़म्मे अव्वल व तश्दीदे सानी जवाना बईं मअ़ना हम् जमअ़् शाब अस्त अज़ मुन्तख़ब व सराह।)*

और हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से रिवायत है कि रसूले अक्रम अलैहिस् सलातु वत्तस्लीम ने फरमाया: اِنَّ الْحَسَنَ وَالْحُسَيْنَ هُمَا رَيْحَانِيْ مِنَ الدُّنْيَا हसन और हुसैन दुनिया के मेरे दो फूल हैं। (मिश्कात:570)

और हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फरमाते हैं कि एक रात मैं किसी ज़रूरत से सरवरे काइनात सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, आप बाहर तशरीफ लाए तो किसी चीज़ को उठाए हुए थे जिसे मैं नहीं जान सका, जब अर्ज़े हाजत से मैं फारिग़ हुआ तो दरियाफ्त किया हुज़ूर यह क्या उठाए हुए हैं, आप ने चादरे मुबारक हटाई तो मैं ने देखा कि आप के दोनों पहलुओं में हज़रत हसन और हज़रत हुसैन हैं। आप ने फरमाया: هٰذَانِ اِبْنَایَ وَابْنَا اِبْنَتِیْ यह दोनों मेरे बेटे हैं और मेरे नवासे हैं। और फिर फरमाया:

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اُحِبُّهُمَا فَاَحِبَّهُمَا وَاَحِبَّ مَنْ يُّحِبُّهُمَا ऐ अल्लाह! मैं इन दोनों को महबूब रखता हूं, तू भी इन को महबूब रख और जो इन से मुहब्बत रखता है उन को भी महबूब रख। (मिश्कात:570)

और हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फरमाते हैं कि रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम इस हाल में बाहर तशरीफ लाए कि आप एक कंधे पर हज़रत हसन और दूसरे कंधे पर हज़रत हुसैन को उठाए हुए थे यहां तक कि हमारे क़रीब तशरीफ ले आए और फरमाया: مَنْ اَحَبَّهُمَا فَقَدْ اَحَبَّنِىْ وَمَنْ اَبْغَضَهُمَا فَقَدْ اَبْغَضَنِىْ जिस ने इन दोनों से मुहब्बत की तो उस ने मुझ से मुहब्बत की और जिस ने इन दोनों से दुश्मनी की उस ने मुझ से दुश्मनी की। (अश्शर्फुल मोअब्बद:71)

हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा फरमाती हैं कि मैं हसन और हुसैन को लेकर हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुई और अर्ज़ किया हुज़ूर! यह आप के दोनों नवासे हैं, इन्हें कुछ अता फरमाइये, तो हुज़ूर ने फरमाया: اَمَّا حَسَنٌ فَلَهٗ هَيْبَتِىْ وَسُؤْدَدِىْ وَاَمَّا حُسَيْنٌ فَلَهٗ جُرْاَتِىْ وَجُوْدِىْ हसन के लिये मेरी हैबत व सियादत है और हुसैन के लिये मेरी जुर्अत व सख़ावत है।

(अश्शर्फुल मोअब्बद:72)

हज़रत जाफर सादिक़ बिन मुहम्मद रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से रिवायत है कि सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के सामने हज़रत हसन व हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा कम सिनी के ज़माने में एक दूसरे से कुश्ती लड़ रहे थे और हुज़ूर बैठे हुए यह कुश्ती मुलाहेज़ा फरमा रहे थे, तो हज़रत हसन से हुज़ूर ने फरमाया, हुसैन को पकड़ लो, हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा ने जब यह सुना तो उन्हें तअ़ज्जुब हुआ और अर्ज़ किया अब्बा जान! आप बड़े से फरमा रहे हैं कि छोटे को पकड़ लो, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने फरमाया दूसरी तरफ जिब्रील हुसैन से कह रहे हैं कि हसन को पकड़ लो। (नूरुल अब्सार:114)

यज़ीदी आंखें खोल कर देख लें कि हज़राते हसनैन करीमैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा का वह मक़ाम है कि हज़रत जिब्रील अलैहिस् सलाम आ कर उन के दरमियान कुश्ती लड़ा रहे हैं।

और हज़रत अल्लामा नसफी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि हसनैन करीमैन ने दो तख़्तियां लिखीं, हर एक ने कहा कि हमारी तहरीर अच्छी है, तो फैसले के लिये अपने बाप हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल करीम के पास ले गए। आप बड़े-बड़े हैरत अंगेज़ फैसले फरमाते हैं, मगर यह फैसला फरमा न सके, इस लिये कि किसी साहिब ज़ादे की दिल शिकनी मनज़ूर न थी, फरमाया कि अपनी मां के पास ले जाओ, दोनों शहज़ादे हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहा कि अम्मा जान! आप फैसला फरमा दें कि हम में से किस ने अच्छा लिखा है? आप ने फरमाया कि मैं यह फैसला नहीं कर सकूंगी, इस मामले को तुम लोग अपने नाना जान के पास ले जाओ, शहज़ादे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आ गए और अर्ज़ किया कि नाना जान आप फैसला फरमा दें कि हम में से किस की तहरीर अच्छी है? सारी दुनिया का फैसला फरमाने वाले हुज़ूर ने सोचा कि अगर हसन की तहरीर को अच्छा कहूं तो हुसैन को मलाल होगा और हुसैन की तहरीर को उम्दा कहूं तो हसन को रंज़ होगा और किसी का रंजीदा होना उन्हें गवारा नहीं था, इस लिये आप ने फरमाया कि इस का फैसला जिब्रील करेंगे। हज़रत जिब्रील बहुक्मे रब्बे जलील नाज़िल हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! इस का फैसला खुदावन्दे कुद्दूस फरमाएगा, मैं उस के हुक्म से एक सेब लाया हूं, उस ने फरमाया कि मैं इस जन्नती सेब को तख़्तियों पर गिराऊं जिस तख़्ती पर यह सेब गिरेगा, फैसला हो जाएगा कि उस तख़्ती की तहरीर अच्छी है। अब दोनों तख़्तियां इकट्ठा रखी गईं और हज़रत जिब्रील अलैहिस् सलाम ने ऊपर से उन तख़्तियों पर सेब गिराया, अल्लाह तआला के हुक्म से

रास्ते ही में सेब कट कर आधा एक तख़्ती पर और दूसरा आधा दूसरी तख़्ती पर गिरा। इस तरह अहकमुल हाकिमीन जल्ल जलालुहू ने फैसला फरमा दिया कि दोनों शहज़ादों की तहरीरें अच्छी हैं और किसी एक की तहरीर को अच्छी क़रार देकर दूसरे की दिल शिक्नी गवारा न फरमाया।

(नुज़्हतुल मजालिस:2/390)

ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस की बारगाह में हसनैन करीमैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा का यह मक़ाम है मगर अफ्सोस कि मुख़ालिफ़ीन को उनकी अज़्मत व रिफ्अत नज़र नहीं आती।

## आप की शहादत की शोहरत

सैय्यिदुश् शुहदा हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की पैदाइश के साथ ही आप की शहादत की शोहरत भी आम हो गई। हज़रत अली, हज़रत फातिमा ज़हरा और दीगर सहाबए किबार व अहले बैत के जां निसार रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम सभी लोग आप के ज़मानए शीर ख़्वारगी (दूध पीने के ज़माना) ही में जान गए कि यह फर्ज़न्दे अर्जुमन्द ज़ुल्म व सितम के हाथों शहीद किया जाएगा और इन का ख़ून निहायत बेदर्दी के साथ ज़मीने करबला में बहाया जाएगा जैसा कि उन अहादीसे करीमा से साबित है जो आप की शहादत के बारे में वारिद हैं।

हज़रत उम्मुल फज़्ल बिन्त हारिस रज़ियल्लाहु तआला अन्हा यानी हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ज़ौजा फरमाती हैं कि मैं ने एक रोज़ नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को आप की गोद में दिया, फिर मैं क्या देखती हूं कि हुज़ूर की मुबारक आंखों से लगातार आंसू बह रहे हैं, मैं ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मेरे मां बाप आप पर क़ुर्बान हों यह क्या हाल है? फरमाया मेरे पास जिब्रील अलैहिस् सलाम आए और उन्हों ने यह ख़बर पहुंचाई कि: اِنَّ اُمَّتِیْ سَتَقْتُلُ اِبْنِیْ هٰذَا मेरी उम्मत मेरे इस फर्ज़न्द को शहीद करेगी। हज़रत

उम्मुल फज़ल फरमाती हैं कि मैं ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या इस फर्ज़न्द को शहीद कर देगी? हुज़ूर ने फरमाया हां, फिर जिब्रील मेरे पास उस की शहादतगाह की मिट्टी भी लाए। (मिश्कात:572)

और इब्ने सअ़द व तबरानी हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से रिवायत करते हैं उन्हों ने कहा कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जिब्रील ने मुझे ख़बर दी إِنَّ ابْنِی الْحُسَيْنَ يُقْتَلُ بَعْدِی بِأَرْضِ الطَّفِّ मेरा बेटा हुसैन मेरे बाद अरज़े तफ़ में क़त्ल किया जाएगा और जिब्रील मेरे पास वहां की यह मिट्टी भी लाए और मुझ से कहा कि यह हुसैन की ख़्वाबगाह (मक़्तल) की मिट्टी है। तफ़ क़रीब कूफ़ा उस मक़ाम का नाम है जिस को करबला कहते हैं। (सवाइक़े मुहर्रिक़ा:118)

और हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत हैं कि बारिश के फिरिश्ते ने हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िरी देने के लिये खुदावन्दे कुद्दूस से इजाज़त तलब की, जब वह फिरिश्ता इजाज़त मिलने पर बारगाहे नुबुव्वत में हाज़िर हुआ तो उस वक़्त हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु आए और हुज़ूर की गोद में बैठ गए, तो आप उनको चूमने और प्यार करने लगे, फिरिश्ते ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या आप हुसैन से प्यार करते हैं? हुज़ूर ने फरमाया हां, उस ने फरमाया إِنَّ اُمَّتَكَ سَتَقْتُلُهُ आप की उम्मत हुसैन को क़त्ल कर देगी अगर आप चाहें तो मैं उन की क़त्लगाह (की मिट्टी) आप को दिखा दूं। फिर वह फिरिश्ता सुर्ख़ मिट्टी लाया जिसे उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमह रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा ने अपने कपड़े में ले लिया। और एक रिवायत में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने फरमाया ऐ उम्मे सलमह! जब यह मिट्टी ख़ून बन जाए तो समझ लेना कि मेरा बेटा हुसैन शहीद कर दिया गया। हज़रत उम्मे सलमह रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा फरमाती हैं कि मैं ने उस मिट्टी को शीशी में बन्द कर लिया जो हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु

तआ़ला अ़न्हु की शहादत के दिन ख़ून हो गई। (सवाइके़ मुहर्रिक़ा:118)

और इब्ने सअ़द हज़रत शअ़बी से रिवायत करते हैं कि हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु जंगे सिफ्फीन के मौक़े पर करबला से गुज़र रहे थे कि ठहर गए और उस ज़मीन का नाम दरियाफ्त फरमाया, लोगों ने कहा कि इस ज़मीन का नाम करबला है, करबला का नाम सुनते ही आप इस क़द्र रोए कि ज़मीन आंसुओं से तर हो गई, फिर फरमाया कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में एक रोज़ हाज़िर हुआ तो देखा कि आप रो रहे हैं, मैं ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! आप क्यों रो रहे हैं? फरमाया अभी मेरे पास जिब्रील आए थे, उन्हों ने मुझे ख़बर दी اِنَّ وَلَدِی الْحُسَیْنَ یُقْتَلُ بِشَاطِئِ الْفُرَاتِ بِمَوْضِعٍ یُقَالُ لَهٗ كَرْبَلَاء मेरा बेटा हुसैन दरियाए फुरात के किनारे उस जगह पर शहीद किया जाएगा जिस को करबला कहते हैं। (सवाइके़ मुहर्रिक़ा:118)

अबू नईम असबग़ बिन नबाता रिवायत करते हैं उन्हों ने फरमाया कि हम हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के साथ हज़रत हुसैन की क़ब्रगाह से गुज़रे तो आप ने फरमाया कि यह शहीदों के ऊंट बिठाने की जगह है और इस मक़ाम पर उन के कजावे रखे जायेंगे और यहां उन के ख़ून बहाए जायेंगे। आले मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के बहुत से जवान इस मैदान में शहीद किये जायेंगे और ज़मीन व आसमान उन पर रोएंगे। (ख़साइसे कुबरा:2/126)

इन अहादीसे करीमा से वाज़ेह तौर पर मालूम हुआ कि हुज़ूर पुर नूर सैयिदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम को हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के शहीद होने की बार-बार इत्तिलाअ़ दी गई और हुज़ूर ने भी इस का बारहा ज़िक्र फरमाया और यह शहादत हज़रत इमाम हुसैन की अहदे तिफ्ली ही में ख़ूब मश्हूर हो चुकी थी और सब को मालूम हो गया था कि आप के शहीद होने की जगह क़रबला है बल्कि उस के चप्पे-चप्पे को पहचानते थे और उन्हें ख़ूब मालूम था कि शुहदाए करबला के ऊंट कहा बांधे जायेंगे, उन का

सामान कहां रखा जाएगा और उन के ख़ून कहा बहेंगे?

लेकिन नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम, हां वह नबी कि ख़ुदावन्दे कुद्दूस जिन की रज़ा जोई फरमाता है وَلَسَوْفَ يُعْطِيكَ رَبُّكَ فَتَرْضَىٰ जिन का हुक्म बहरो-बर में नाफिज़ है, जिन्हें शजरो-हजर सलाम करते हैं, चांदा जिन के इशारों पर चला करता है, जिन के हुक्म से डूबा हुआ सूरज पलट आता है बल्कि बहुक्मे इलाही कौनैन के ज़र्रा-ज़र्रा पर जिन की हुकूमत है, वह नबी प्यारे नवासे के शहीद होने की ख़बर पाकर आंखों से आंसू तो बहाते हैं मगर नवासे को बचाने के लिये बारगाहे इलाही में दुआ नहीं फरमाते और न हज़रत अली व हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा अर्ज़ करते हैं कि या रसूलल्लाह! हुसैन की ख़बरे शहादत ने दिलो-जिगर पारा-पारा कर दिया, आप दुआ फरमाएं कि ख़ुदाए अज़्ज़ जल्ल हुसैन को उस हादिसे से महफूज़ रखे। और अहले बैत, अज़्वाजे मुतह्हरात और सहाबए किबार सब लोग हज़रत इमाम हुसैन के शहीद होने की ख़बर सुनते हैं मगर अल्लाह के महबूब प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की बारगाह में कोई दुआ की दरख़्वास्त पेश नहीं करता जबकि आप की दुआ का हाल यह है किः

*इजाबत का सेहरा इनायत का जोड़ा*
*दुल्हन बन के निकली दुआए मुहम्मद*
*सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम*

*इजाबत ने झुक कर गले से लगाया*
*बढ़ी नाज़ से जब दुआ-ए-मुहम्मद*
*सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम*

हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को बचाने के लिये दुआ नहीं फरमाई और न हुज़ूर से इस के बारे में किसी ने दुआ की दरख़्वास्त पेश की, सिर्फ इस लिये कि हुसैन का इम्तिहान हो, उन पर तकालीफ व मसाइब

के पहाड़ टूटें और वह इम्तिहान में कामयाब होकर अल्लाह के प्यारे हों कि अब नबी कोई हो नहीं सकता तो नवासए रसूल का दर्जा इसी तरह बुलंद से बुलंद तर हो जाए और रज़ाए इलाही हासिल होने के साथ दुनिया व आख़िरत में उन की अज़्मत व रिफ्अत का बोल-बाला भी हो जाए।

## एक ऐतराज़ और उसका जवाब

बाज़ गुस्ताख़ जो ऐतराज़ करते हैं कि जब रसूलुल्लाह अपने नवासे को क़त्ल से नहीं बचा सके तो दूसरे को किसी मुसीबत से क्या बचा सकते हैं, तो इसका जवाब यह है कि अल्लाह के महबूब प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अपने नवासे हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को शहीद होने से बचाने की कोशिश ही नहीं फ़रमाई, इस लिये कि आप ने उनके लिये क़त्ल से महफ़ूज़ रहने की दुआ ही नहीं की और जब आप ने उन को शहीद होने से बचाने की कोशिश ही नहीं फरमाई तो फिर यह कहना ही सिरे से ग़लत है कि वह अपने नवासे को क़त्ल से नहीं बचा सके। जैसे कि हमारा कोई आदमी दरिया में डूब रहा हो और हमारे पास डूबने से बचाने के लिये कश्ती वग़ैरा तमाम सामान मुहैया हों मगर हम बचाने की कोशिश न करें, तो यह कहना ग़लत है कि हम बचा न सके। हां अगर हम बचाने की कोशिश करते और न बचा पाते तो अल्बत्ता यह कहना सहीह होता कि हम नहीं बचा सके। तो अल्लाह के महबूब सैयिदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अपने नवासे को बचाने की कुद्रत रखने के बावजूद उन को बचाने की कोशिश नहीं फरमाई, लिहाज़ा यह कहना ग़लत कि उन को नहीं बचा सके। ख़ुदाए तआला समझ अता फ़रमाए।

और बाज़ गुस्ताख़ जो यह कहते हैं कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो सैयिदुल अंबिया के नवासे और सहाबी हैं जिन के दर्जा को बड़े से बड़ा वली और ग़ौस व कुतब नहीं पहुंच

सकता, जब यह अपनी और अपने अज़ीज़ व अक़ारिब की जान नहीं बचा सके तो दूसरा कोई ग़ौस व कुतब किसी की क्या मदद कर सकता है, तो इस ऐतराज़ का जवाब यह है कि सैय्यिदुश् शुहदा हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मैदाने करबला में अपनी जान बचाने नहीं गए थे बल्कि अपनी जान देकर इस्लाम बचाने गए थे।

और जान बचाने का रास्ता तो आप के लिये हमेशा खुला हुआ था इस लिय कि जब जान बचाने के लिये हरामे क़तई का खाना पीना और झूठ बोलना जाइज़ हो जाता है तो आप जान बचाने की ख़ातिर थोड़ी देर के लिये यज़ीद की झूठी बैअत कर लेते और जब दुश्मन की गिरफ्त से आज़ाद हो जाते तो इनकार कर देते। लेकिन हक़ीक़त यह है कि इमामे आली मक़ाम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को जान बचाना नहीं था बल्कि जान देकर इस्लाम को बचाना था।

और रही अज़ीज़ व अक़ारिब की जान बचाने की बात तो आप के जो अज़ीज़ व अक़ारिब मैदाने करबला में शहीद हुए उन की दुनियवी ज़िंदगी बस इतनी ही थी और जिस की ज़िंदगी ख़त्म हो जाती है उसे कोई बचा नहीं सकता। इरशादे खुदावन्दी है: فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ لَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ जब उनको मौत आएगी तो एक साअत आगे पीछे नहीं होंगे।

(पारा:11,रुकूअ़:1)

और इरशाद फरमाया: وَلَنْ يُؤَخِّرَ اللّٰهُ نَفْسًا إِذَا جَاءَ أَجَلُهَا अल्लाह तआला किसी जान की मौत को हरगिज़ मोअख़्ख़र नहीं फरमाएगा जबकि उस का वक़्त आ जाएगा। (पारा:28,रुकूअ़:14)

अगर यह माकूल जवाब ऐतराज़ करने वालों की समझ में न आए तो वह दिन दूर नहीं जबकि वह यह भी कहेंगे कि अंबियाए किराम का क़त्ल किया जाना कुरआने मजीद से साबित है। और जब अल्लाह तआला अपने महबूब अंबिया को क़त्ल से नहीं बचा सका तो फिर किसी दूसरे की क्या मदद कर सकता है। (मआज़ल्लाह)

☆☆☆

# यज़ीद पलीद

यज़ीद हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का बेटा जिस की कुन्नियत अबू ख़ालिद है, उमैया ख़ानदान का वह बदबख़्त इंसान है जिस की पेशानी पर नवासए रसूल, जिगर गोशए बतूल हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के क़त्ल का सियाह दाग़ है, जिस पर हर ज़माने में लोग मलामत करते रहे और रहती दुनिया तक ऐसे ही मलामत करते रहेंगे। यह बद बातिन और नंगे ख़ानदान 25 हिजरी में पैदा हुआ, इस की मां का नाम मैसून बिन्त नजदल कलबी है। यज़ीद बहुत मोटा, बद नुमा, बद ख़ुल्क़, फासिक़ व फाजिर, शराबी, बदकार, ज़ालिम और बेअदब व गुस्ताख़ था। उस की बद कारियां और बेहूदगियां इन्तिहा को पहुंच गई थीं। हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु जो हज़रत हंज़ला ग़सीलुल् मलाइका के साहिब ज़ादे हैं वह फरमाते हैं: وَاللّٰهِ مَا خَرَجْنَا عَلٰى يَزِيْدَ حَتّٰى خِفْنَا اَنْ نُّرْمٰى بِالْحِجَارَةِ مِنَ السَّمَاءِ यज़ीद पर हम ने उस वक़्त हमले की तैयारी की जब हम लोगों को अंदेशा हो गया कि उसकी बद कारियों के सबब हम पर आसमान से पत्थरों की बारिश होगी। इस लिये कि फिस्क़ व फुजूर का यह आलम था कि लोग अपनी मां, बहनों और बेटियों से निकाह कर रहे थे, शराबें पी जा रही थीं और दीगर मन्हिय्याते शरइय्या ऐलानिया रेवाज हो गया था और लोगों ने नमाज़ तरक कर दी थी। (तारीखुल खुलफा:142)

यज़ीद ने मदीना तैयिबा और मक्का मुकर्रमा की बेहुर्मती कराई, ऐसे शख़्स की हुकूमते गरग की जो पानी से ज़्यादा ख़तरनाक थी, अरबाबे फिरासत और अस्हाबे असरार उस वक़्त से डरते थे जबकि इनाने सल्तनत उस शक़ी के हाथ में आई। इसी लिये 59 हिजरी में हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने दुआ की: اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ رَاْسِ السِّتِّيْنَ وَاِمَارَةِ الصِّبْيَانِ या रब मैं तेरी पनाह मांगता हूं 60 हिजरी के आग़ाज़ और लड़कों की हुकूमत से।

इस दुआला से मालूम होता है कि हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो हामिले असरार थे, उन्हें मालूम था कि 60 हिजरी का आगाज़ लड़कों की हुकूमत और फित्नों का वक़्त है। उन की यह दुआ क़बूल हुई और उन्हों ने 59 हिजरी में बमक़ाम मदीना तैयिबा रिहलत फरमाई। (सवानेहे करबला:81)

## यज़ीद और अहादीसे करीमा व अक़्वाले अइम्मा

रूयानी अपनी मुस्नद में सहाबिए रसूल हज़रत अबू दरदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत करते हैं, उन्हों ने फरमाया कि मैं ने रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को यह इरशाद फरमाते हुए सुनाः اَوَّلُ مَنْ يُبَدِّلُ سُنَّتِيْ رَجُلٌ مِّنْ بَنِيْ اُمَيَّةَ يُقَالُ لَهٗ يَزِيْدُ मेरी सुन्नत का पहला बदलने वाला एक शख़्स बनी उमैया का होगा जिस का नाम यज़ीद होगा। (तारीखुल खुलफा:142)

और अबू यअ़ला अपनी मुस्नद में (बसनदे ज़ईफ) हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत करते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम इरशाद फरमाते हैं कि मेरी उम्मत हमेशा अदल व इंसाफ पर क़ाइम रहेगी यहां तक कि पहला रख़्ना अंदाज़ (रुकावट बनने वाला) बनी उमैया का एक शख़्स होगा जिस का नाम यज़ीद होगा। (तारीखुल खुलफा:142)

और अल्लामा सबान तहरीर फरमाते हैं कि इमाम अहमद बिन हंबल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु यज़ीद के कुफ्र के क़ाइल हैं और तुझे उन का फरमान काफी है, उन का तक़्वा और इल्म इस अम्र का मुतक़ाज़ी (यह चाहता) है कि उन्हों ने यह बात इस लिये कही होगी कि उनके नज़्दीक ऐसे उमूरे सरीहा का यज़ीद से सादिर होना साबित होगा जो मौजिबे कुफ्र हैं। इस मामले में एक जमाअ़त नें उन की मुवाफिक़त की है मसलन इब्ने जौज़ी वग़ैरा। रहा उस का फिस्क़ तो इस पर इत्तिफाक़ है। बाज़ उलमा ने ख़ास उस के नाम से लअ़नत को जाइज़ क़रार दिया है। (बरकाते आले रसूल:155)

और हज़रत अल्लामा सअ्दुद्दीन तफ्ताज़ानी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के क़त्ल और अहले बैते नुबुव्वत की तौहीन व तज़्लील पर यज़ीद की रज़ा व खुश्नूदी तवातुर से साबित है, लिहाज़ा हम उस की ज़ात के बारे में तवक़्कुफ नहीं करेंगे (उसे बुरा भला कहेंगे) अल्बत्ता उस के ईमान के बारे में तवक़्कुफ करेंगे (न उसे काफिर कहेंगे और न मोमिन)। (शरह अक़ाइद नसफी:117)

मोहद्दिस इब्ने जौज़ी से पूछा गया कि यज़ीद को इमाम हुसैन का शहीद करने वाला कहना किस तरह सहीह है, जबकि वह करबला में शहादत के वाक़िआ के वक़्त मुल्के शाम में था, तो उन्हों ने एक शेअ्र पढ़ा जिस का तर्जमा यह है कि तीर इराक़ में था जबकि तीर मारने वाला ज़ी सलम में था, ऐ तीर मारने वाले तेरा निशाना किस ग़ज़ब का था। (अश्शर्फुल मोअब्बद:69)

नौफल बिन अबुल फ़ुरात कहते हैं कि मैं एक रोज़ उमवी ख़लीफा हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के पास बैठा हुआ था कि यज़ीद का कुछ ज़िक्र आ गया तो एक शख़्स ने यज़ीद को अमीरुल मोमिनीन यज़ीद बिन मुआ़विया कहा, हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने उस शख़्स से फरमाया कि तू उसे अमीरुल मोमिनीन कहता है। फिर आप ने हुक्म दिया कि यज़ीद को अमीरुल मोमिनीन कहने वाले इस शख़ को 20 कोड़े लगाए जायें। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा:142)

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु उमैया ख़ानदान के एक फर्द हैं यानी मरवान के पोते और ख़लीफा अब्दुल मलिक बिन मरवान के दामाद हैं, जिन के फ़ज़्लो कमाल और तक़्वा व परहेज़गारी के बारे में सिर्फ इतना बता देना काफी है कि उन को ख़ुलफाए राशिदीन में शुमार किया जाता है। उन्हों ने उस शख़्स को कि जिस ने यज़ीद बद बख़्त को अमीरुल मोमिनीन कहा, कोड़े लगवाए और सज़ा दी।

इस वाकिआ से वह लोग जो आज कल यज़ीद की हिमायत करते हैं और उस को अमीरुल मोमिनीन कहते हैं, सबक़ हासिल करें और जान लें कि वह यक़ीनन सज़ा के मुस्तहिक़ हैं। अगर आज भी कोई हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जैसा होता तो उन्हें कोड़े ज़रूर लगवाता।

और आला हज़रत पेशवाए अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िल बरेलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं: "यज़ीद पलीद अलैहि मा यस्तहिक्क़हू मिनल् अज़ीज़िल् मजीद, क़तअन यक़ीनन बइज्माए अहले सुन्नत फासिक़ व फाजिर व जरी अलल्-कबाइर था। इस क़दर पर अइम्मए अहले सुन्नत का इतबाक़ व इत्तिफाक़ है, सिर्फ उस की तक्फ़ीर व लअ्न में इख़्तिलाफ फरमाया। इमाम अहमद बिन हंबल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और उन के अत्बाअ् व मुवाफिक़ीन उसे काफिर कहते और ब तख़्सीस नाम उस पर लअ्नत करते हैं और आयते करीमा इस पर सनद लाते हैं: فَهَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ تَوَلَّيْتُمْ اَنْ تُفْسِدُوْا فِی الْاَرْضِ وَتُقَطِّعُوْا اَرْحَامَكُمْ، اُولٰٓـئِكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فَاَصَمَّهُمْ وَاَعْمٰى اَبْصَارَهُمْ क्या क़रीब है कि अगर वालिए मुल्क हो तो ज़मीन में फसाद करो और अपने नसबी रिश्ते काट दो, यह हैं वह लोग जिन पर अल्लाह ने लअ्नत फरमाई तो उन्हें बहरा कर दिया और उन की आंखें फोड़ दीं। (पारा:26, रुकूअ्:7)

शक नहीं कि यज़ीद ने वालिए मुल्क होकर ज़मीन में फसाद फैलाया, हरमैन तैय्यिबैन व खुद कअ्बा मुअज़्ज़मा व रौज़ए तैयिबा की सख़्त बेहुर्मतियां कीं, मस्जिदे करीम में घोड़े बांधे, उन की लीद और पेशाब मिम्बरे अत्हर पर पड़े, तीन दिन मस्जिदे नबवी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम बेअज़ान व नमाज़ रही। मक्का व मदीना व हिजाज़ में हज़ारों सहाबा व ताबईन बेगुनाह शहीद किये। कअ्बा मुअज़्ज़मा पर पत्थर फेंके, ग़िलाफ शरीफ फाड़ा और जलाया। मदीना तैयिबा की पाक दामन पारसाएं तीन शबाना रोज़ अपने ख़बीस लश्कर पर हलाल कर दीं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के

जिगर पारे को तीन दिन बे आबो-दाना रख कर मअ़ हमूराहियों के तेग़े जुल्म से प्यासा ज़िबह किया। मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की गोद में पाले हुए तने नाज़नीन (नाज़ुक बदन) पर बादे शहादत घोड़े दौड़ाए गए कि तमाम उस्तुख़्वाने (हड्डी) मुबारक़ चूर हो गए। सरे अनवर कि मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम का बोसागाह था, काट कर नेज़ा पर छड़ाया और मंज़िलों फिराया। हरमे मोहतरम मुख़द्दरात (पर्दा नशीन) मुश्कूए रिसालत क़ैद किये गए और बेहुर्मती के साथ उस ख़बीस के दरबार में लाए गए। इस से बढ़ कर क़तए रहम और ज़मीन में फसाद क्या होगा। मलऊन है वह जो इन मलऊन हरकात को फिस्क़ो-फुजूर न जाने। कुरआने अज़ीम पर सराहतन इस पर *"लअ़न हुमुल्लाह"* फरमाया। लिहाज़ा इमाम अहमद और उनके मुवाफिक़ीन उस पर लअ़नत फरमाते हैं। और हमारे इमामे आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु लअ़न व तक्फीर से एहतियातन सुकूत कि उस से फिस्क़ो-फुजूर मुतवातिर हैं कुफ्र मुतवातिर नहीं। और बहाले ऐहतमाल निस्बते कबीरा भी जाइज़ नहीं न कि तक्फीर और अमूसाल व वईदात मशरूत बिअ़दम तौबा हैं: *लिक़ौलिही तआ़ला* (जैसा कि अल्लाह तआ़ला का फरमान है) فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا إِلَّا مَنْ تَابَ (पाराः16, रुकूअ़:7) और तौबा ता दमे ग़रग़रा मक़्बूल है और इस के अदम पर जज़्म नहीं और यही अह्वत व अस्लम है मगर उस के फिस्क़ो-फुजूर से इनकार करना औरइ इमामे मज़्लूम पर इल्ज़ाम रखना ज़रूरियात मज़्हबे अहले सुन्नत के ख़िलाफ है और ज़लाल व बद-मज़्हबी साफ है, बल्कि इंसाफन यह उस क़ल्ब से मुतसव्वर नहीं जिस में मुहब्बते सैयिदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम का शम्मा हो। وَسَيَعْلَمُ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَيَّ مُنْقَلَبٍ يَنْقَلِبُونَ

(फतावा रज़विय्यह:6/107-108)

और तहरीर फरमाते हैं "यज़ीद बेशक पलीद था, उसे पलीद कहना और लिखना जाइज़ है और उसे रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह न कहेगा मगर नासिबी कि अहले बैते रिसालत का दुश्मन है।

(फतावा रज़विय्यह:6/114)

जलीलुल क़दर उलमाए मुहक़्क़िक़ीन के बयानात से ख़ूब अच्छी तरह वाज़ेह हो गया कि यज़ीद कैसा था और उस ने कैसे-कैसे मज़ालिम ढाए हैं। और यह भी ज़ाहिर हो गया कि हम उसे क्या कह सकते हैं और क्या नहीं कह सकते। जो लोग कि इमामुल अइम्मा हज़रत सैयिदना इमामे आज़म अबू हनीफा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मानने वाले हैं और अपने को हनफी कहते हैं उन को चाहिये कि वह अपने इमाम के तरीक़े पर चलें यानी यज़ीद के बारे में लअ्न व तक्फीर से ऐहतियातन सुकूत इख़्तियार करें कि यही अस्लम है। और जो लोग कि उस के फासिक़ व फाजिर होने से इनकार करें और उस के लिये अमीरुल मोमिनीन व रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कहें या इमामे मज़्लूम सैयिदना हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर इल्ज़ाम रखें, ऐसे लोगों को गुमराह व बद मज़्हब, अहलेबैते नुबुव्वत का दुश्मन और ख़ारजी समझें, उनका बयान सुनने से परहेज़ करें और उन की किताबें पढ़ने से बचें।

हज़रत मुल्ला अ़ली क़ारी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि बाज़ जाहिल जो कहते हैं कि इमाम हुसैन ने यज़ीद से बग़ावत की तो यह अहले सुन्नत व जमाअ़त के नज़्दीक बातिल है और इस तरह की बोली ख़ारजियों के हज़्यानात (बेहूदा बातों) में से है जो अहले सुन्नत व जमाअ़त से ख़ारिज हैं। (शरह फिक़्हे अक्बर:87)

## यज़ीद और हदीसे कुस्तुन्तुनियह

यज़ीद पलीद जिस ने मस्जिदे नबवी और बैतुल्लाह शरीफ की सख़्त बेहुर्मती की, जिस ने हज़ारों सहाबए किराम व ताबईने इज़ाम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम का बेगुनाह क़त्ले आम किया, जिस ने मदीना तैयिबा की पाक दामन ख़्वातीन को अपने लश्कर पर हलाल किया और जिस ने जिगर गोशए रसूल हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को तीन दिन बेआबो-दाना रख कर प्यासा ज़िबह किया।

ऐसे बद बख़्त और मरदूद यज़ीद को पैदाइशी जन्नती और बख़्शा बख़्शाया हुआ साबित करने के लिये आज कल कुछ लोग ऐड़ी चोटी

का ज़ोर लगा रहे हैं, ऐसे लोग चाहे अपने को सुन्नी कहें या देवबन्दी लेकिन हक़ीक़त में वह अहले बैते रिसालत के दुश्मन, ख़ारजी और यज़ीदी हैं। उस बद बख़्त की हिमायत में वह लोग बुख़ारी शरीफ की एक हदीस पेश करते हैं जो हदीसे कुस्तुन्तुनियह के नाम से याद की जाती है, इन बातिल परस्त यज़ीदियों का मक़्सद यह है कि जब यज़ीद की बख़्शिश और उस का जन्नती होना हदीस शरीफ से साबित है तो इमाम हुसैन का ऐसे शख़्स की बैअ़त न करना और उस के ख़िलाफ अलमे जिहाद बुलंद करना बग़ावत है और सारे फित्ना व फसाद की ज़िम्मेदारी इन्हीं पर है। *नऊज़ु बिल्लाहि मिन् ज़ालिक।*

यज़ीदी गिरोह जो हदीस पेश करता है वह यह है: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَوَّلُ جَيْشٍ مِّنْ أُمَّتِىْ يَغْزُوْنَ مَدِيْنَةَ قَيْصَرَ مَغْفُوْرٌ لَّهُمْ यानी नबीए अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मेरी उम्मत का पहला लश्कर जो क़ैसर के शहर (कुस्तुन्तुतियह) पर हमला करेगा वह बख़्शा हुआ है। (बुख़ारी शरीफः1/410)

और क़ैसर के शहर कुस्तुन्तिनियह पर पहला हमला करने वाला यज़ीद है लिहाज़ा वह बख़्शा बख़्शाया हुआ पैदाइशी जन्नती है।

यज़ीदी गिरोह की इस तक़रीर का जवाब यह है कि अल्लाह के महबूब दानाए ख़िफाया व ग़ुयूब जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम का फ़रमाने हक़ है लेकिन क़ैसर के शहर कुस्तुन्तुनियह पर कब हमला किया इसके बारे में चार अक़्वाल हैं: 49 हिजरी, 50 हि0, 52 हि0 और 55 हि0। देखिये कामिल इब्ने असीर:3/131, बिदाया निहाया:8/32, ऐनी शरह बुख़ारी:14/198 और इसाबा:1/405

मालूम हुआ कि यज़ीद 49 हिजरी से 55 हिजरी तक कुस्तुन्तुनियह की किसी जंग में शरीक हुआ, चाहे सिपह सालार वह रहा हो या हज़रत सुफियान बिन औफ और वह मामूली सिपाही रहा हो, मगर कुस्तुन्तुनियह पर इस से पहले हम्ला हो चुका था जिस के सिपह सालार हज़रत अब्दुर रहमान बिन ख़ालिद बिन वलीद थे और उन के साथ

हज़रत अबू अय्यूब अंसारी भी थे रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम। देखिये हदीस की मोतमद व मश्हूर किताब अबू दाऊद शरीफ पेज:340 और हज़रत अब्दुर रहमान बिन ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का इन्तेक़ाल 46 या 47 हिजरी में हुआ, जैसा कि बिदाया निहाया:8/31, कामिलब इब्ने असीर:3/229 और असदुल ग़ाबा:3/440 में है। मालूम हुआ कि आप का हम्ला कुस्तुन्तुनियह पर 46 या 47 हि० से पहले हुआ। और तारीख़ के औराक़ शाहिद हैं कि यज़ीद कुस्तुन्तुनियह की एक जंग के अलावा और किसी में शरीक नहीं हुआ, तो साबित हो गया कि हज़रत अब्दुर रहमान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कुस्तुन्तिनियह पर पहला जो हम्ला किया था, यज़ीद उस में शरीक नहीं था तो फिर हदीस *अव्वलु जैशिम् मिन् उम्मती* में यज़ीद दाख़िल नहीं। और याद रखिये कि अबू दाऊद शरीफ सिहाए सित्ता में से है, आम कुतुबे तारीख़ के मुक़ाबले में उसी की रिवायत को तरजीह दी जाएगी। रही यह बात कि हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का इन्तेक़ाल उस जंग में हुआ कि जिस का सिपह सालार यज़ीद था तो इस में कोई ख़ल्जान नहीं इस लिये कि कुस्तुन्तुनियह का पहला हम्ला जो हज़रत अब्दुर रहमान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की सरकरदगी में हुआ, आप उस में शरीक रहे और फिर बाद में जब उस लश्कर में शरीक हुए कि जिस का सिपह सालार यज़ीद था तो कुस्तुन्तुनियह में आप का इन्तेक़ाल हो गया इस लिये कि कुस्तुन्तुनियह पर मुतअद्दिद बार इस्लामी लश्कर हम्ला आवर हुआ।

अगर यह तस्लीम भी कर लिया जाए कि कुस्तुन्तुनियह पर पहला हम्ला करने वाला जो लश्कर था उस में यज़ीद मौजूद था फिर भी यह हरगिज़ साबित नहीं होगा कि उस के सारे करतूत माफ हो गए और वह जन्नती है। इस लिये कि हदीस शरीफ में यह भी है: مَا مِنْ مُسْلِمَيْنِ يَلْتَقِيَانِ فَيَتَصَافَحَانِ اِلَّا غُفِرَ لَهُمَا قَبْلَ اَنْ يَّتَفَرَّقَا यानी जब दो मुसलमान आपस में मुसाफहा करते हैं तो जुदा होने से पहले उन दोनों को बख़्श दिया जाता है। (तिर्मिज़ी:2/97)

और हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने यह भी इरशाद फरमाया: مَنْ فَطَّرَ فِيْهِ صَائِمًا كَانَ لَهُ مَغْفِرَةً لِذُنُوْبِهٖ जो माहे रमज़ान में रोज़ेदार को इफ्तार कराए उस के गुनाहों के लिये मग़फ़िरत है।

(बैहक़ी, मिश्कात:174)

और सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की हदीस यह भी है: يُغْفَرُ لِاُمَّتِهٖ فِيْ اٰخِرِ لَيْلَةٍ فِيْ رَمَضَانَ (रोज़ा वग़ैरा के सबब) माहे रमज़ान की आख़िरी रात में इस उम्मत को बख़्श दिया जाता है।

(अहमद, मिश्कात:174)

अगर यज़ीद नवाज़ों की बात मान ली जाए तो इन अहादीसे करीमा का यह मतलब होगा कि मुसलमान से मुसाफहा करने वाले, रोज़दार का इफ्तार कराने वाले और माहे रमज़ान में रोज़ा रखने वाले सब बख़्शे बख़्शाए जन्नती हैं, अब अगर वह हरमैन तैयिबैन की बेहुर्मती करें, माफ, कअ्बा शरीफ को खोद कर फेंक दें माफ, मस्जिदे नबवी में ग़लाज़त डालें माफ, हज़ारों बेगुनाह को क़त्ल कर डालें माफ, यहां तक कि अगर सैयिदुल अंबिया के जिगर पारों को तीन दिन का भूखा प्यासा रख कर ज़िबह कर डालें तो वह भी माफ और जो चाहें करें सब माफ। *नऊज़ु बिल्लाहि मिन् ज़ालिक।*

अगर किसी अमले ख़ैर से सग़ीरा, कबीरा व अगले पिछले सब गुनाह माफ हो जाएं जैसा कि आज के यज़ीदियों ने समझा है तो दुनिया का निज़ाम दर्हम बर्हम हो जाएगा इस लिये कि एक मुसलमान दूसरे मुसलमान से मुसाफहा कर लेगा और उस के बाद जो चाहेगा करेगा, अगर कोई उसे सरज़निश करेगा तो कहेगा कि एक मुसलमान से मुसाफहा के सबब हमारा अगला पिछला सब गुनाह माफ हो गया है, हमें कुछ न कहो।

ख़ुदाए अज़्ज़ व जल्ल यज़ीद नवाज़ों को सहीह समझ अता फरमाए और गुमराही व बद मज़्हबी से बचने की तौफ़ीक़े रफ़ीक़ बख़्शे। आमीन

# यज़ीद की तख़्त नशीनी और तलबे बैअ़त

हज़रत अमीरे मुआ़विया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की वफ़ात के बाद यज़ीद ने तख़्त नशीन होते ही अपनी बैअ़त के लिये हर तरफ़ ख़ुतूत व हुक्म नामे रवाना किये। मदीना मुनव्वरा के गवर्नर वलीद बिन उक़्बा थे, उन को अपने बाप की वफ़ात की इत्तिलाअ़ की और लिखा कि हर ख़ास व आम से मेरी बैअ़त लो और हुसैन बिन अली, अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर और अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) से पहले बैअ़त लो, इन सब को एक लम्हा मोहलत न दो।

मदीना मुनव्वरा के लोगों को अभी तक हज़रत अमीरे मुआ़विया के इन्तेक़ाल की ख़बर न थी, यज़ीद के हुक्म नामे से वलीद बहुत घबराया इस लिये कि इन हज़रात से बैअ़त लेना आसान नहीं था, उस ने मश्वरा के लिये मरवान बिन हिकम को बुलाया।

मरवान बिन हिकम वह शख़्स है कि जब उस की पैदाइश हुई और हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में तहनीक (कोई चीज़ चबा कर नर्म करके खिलाने) के लिये लाया गया तो हुज़ूर ने फरमायाः هُوَ الْوَزَغُ بْنُ الْوَزَغِ *(रवाहुल हाकिम फ़ी सहीहिही)* यह गिरगिट का बेटा गिरगिट है। (अन्नाहिया:45)

और बुख़ारी, नसाई और इब्ने अबी हातिम अपनी तफ़्सीर में रिवायत करते हैं कि हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा ने फरमाया لَعَنَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَبَا مَرْوَانَ وَمَرْوَانُ فِىْ صُلْبِهٖ فَمَرْوَانُ فُضَضٌ مِنْ لَعْنَةِ اللّٰهِ यानी रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने मरवान के बाप हिकम पर लअ़्नत फरमाई जबकि मरवान सुल्बे पिदर में था तो वह भी लअ़्नत से हिस्सा पाने वाला हुआ। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा:128)

वह मरवान कि उस को और उस के बाप को हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने गिरगिट फरमाया और जिस के बाप पर हुज़ूर ने लअ़्नत फरमाई बल्कि उस के बाप को शहर बदर

फ़रमा कर ताइफ़ में रहने का हुक्म फ़रमाया, ऐसे मरवान से भला ख़ैर की उम्मीद क्या हो सकती है।

मदीना मुनव्वरा के गवर्नर वलीद ने जब मरवान से मश्वरा लिया तो उस ने कहा इन तीनों को इसी वक़्त बुलाएं और बैअ़त के लिये कहें, अगर वह बैअ़त कर लें तो बेहतर वरना तीनों को क़त्ल कर दें।

इस मश्वरा के बाद गवर्नर वलीद ने तीनों हज़रात को बुला भेजा, हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु अपने चन्द जवानों को साथ लेकर गए, मकान के बाहर उन को खड़ा कर दिया और फ़रमाया कि अगर तुम लोग सुनो कि मेरी आवाज़ बुलंद हो रही है तो फ़ौरन अन्दर आ जाना और जब तक मैं बाहर न आ जाऊं, यहां से हरगिज़ न जाना।

फिर आप अन्दर तशरीफ़ ले गए, वलीद ने आप को हज़रत अमीरे मुआ़विया की वफ़ात की ख़बर सुनाई और यज़ीद की बैअ़त के लिये कहा, आप ने फ़रमाया कि मेरे जैसा आदमी इस तरह छुप कर बैअ़त नहीं कर सकता, आप बाहर निकल कर सब लोगों से बैअ़त तलब करें तो उन के साथ मुझ से भी बैअ़त के लिये कहें।

वलीद अम्न पसंद आदमी था, उस ने कहा अच्छा आप तशरीफ़ ले जाइये। जब आप चलने लगे तो मरवान ने बरहम होकर वलीद से कहा कि अगर आप ने इस वक़्त इन को जाने दिया और बैअ़त न ली तो फिर इनपर क़ाबू न पा सकेंगे। अगर यह बैअ़त कर लें तो बेहतर वरना इन को क़त्ल कर दो, यह सुन कर हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु खड़े हो गए और फ़रमाया ओ इब्नुज़् ज़रक़ा क्या तू मुझे क़त्ल करेगा या यह क़त्ल करेंगे, ख़ुदा की क़सम तू झूठा और कमीना है, यह कह कर आप बाहर तशरीफ़ ले आए।

मरवान ने वलीद से कहा कि आप से मेरी बात नहीं मानी। ख़ुदा की क़सम अब आप इन पर क़ाबू न पा सकेंगे। क़त्ल करने का यह बेहतरीन मौक़ा था जिस को आप ने ज़ाए कर दिया। वलीद ने कहा अफ़्सोस तुम मुझे ऐसा मश्वरा दे रहे हो जिस में मेरे दीन की तबाही

हैं। क्या मैं नवासए रसूल को सिर्फ इस वजह से क़त्ल कर देता कि उन्हों ने यज़ीद की बैअ़त नहीं की। खुदाए जुल जलाल की क़सम अगर मुझे सारी दुनिया का माल व मताअ़ मिल जाए तो भी मैं उन के ख़ून से अपने हाथों को आलूद हरगिज़ नहीं कर सकता। (तबरीः2/162)

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ख़ूब जानते थे कि बैअ़त के इनकार से यज़ीद बद बख़्त जान का दुश्मन और ख़ून का प्यासा हो जाएगा लेकिन आप की ग़ैरत और तक़्वा व परहेज़गारी ने इजाज़त न दी कि अपनी जान बचाने की ख़ातिर ना अहल के हाथ पर बैअ़त कर लें और नवासए रसूल होकर इस्लाम व मुसलमानों की तबाही की परवाह न करें।

अगर आप यज़ीद की बैअ़त कर लेते तो वह आप की बड़ी क़द्रो-मंज़िलत करता और दुनिया की बेशुमार दौलत आप के क़दमों में ढेर हो जाती लेकिन यज़ीद की बदकारी के जवाज़ के लिये आप की बैअ़त सनद हो जाती तो इस्लाम का निज़ाम दर्हम बर्हम हो जाता और दीन में ऐसा फसाद बरपा होता कि जिस का दूर करना बाद में ना मुम्किन हो जाता।

बहर हाल आप यज़ीद की बैअ़त के लिये तैयार न हुए। शाम के वक़्त वलीद ने फिर इमाम के पास आदमी भेजा, आप ने फरमाया इस वक़्त तो मैं नहीं आ सकता, सुबह होने दीजिये फिर देखेंगे क्या होता है। वलीद ने यह बात मान ली और आप उसी रात अपने अहलो-अ़याल और अज़ीज़ व अक़ारिब के साथ मदीना मुनव्वरा से मक्का मुअ़ज़्ज़मा का सफर करने के लिये तैयार हो गए।

## मदीना मुनव्वरा से रिहलत (रवानगी)

मदीना मुनव्वरा वह शहरे मुक़द्दस है जो हुज़ूर अनवर सैयिद आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम को सारे शहरों में सब से ज़्यादा महबूब है जैसा कि खुद हुज़ूर इरशाद फरमाते हैं: لَا يُقْبَضُ النَّبِيُّ اِلَّا فِيْ اَحَبِّ الْاَمْكِنَةِ اِلَيْهِ यानी नबी उसी जगह इन्तेक़ाल फरमाता है जा उसे सब जगहों से ज़्यादा महबूब हो। (फज़ाइले मदीनाः11)

और रसूले काइनात सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम का विसाल मदीना मुनव्वरा में हुआ। मालूम हुआ कि सारे शहरों में आप को सब से ज़्यादा प्यारा मदीना मुनव्वरा है। और जब हुज़ूर को वह सब से ज़्यादा प्यारा है तो हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को भी वही शहर सब से ज़्यादा प्यारा है। मगर हालात ने इस महबूब के छोड़ने पर आपको मजबूर कर दिया, सफर की तैयारी मुकम्मल हो गई, ऊंटों पर कजावे कसे गए और अहले बैते रिसालत का यह छोटा सा मुक़द्दस क़ाफिला मदीनतुर रसूल की जुदाई के सदमे से रोता हुआ घरों से निकल पड़ा। और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु अपने नाना जान के रौज़ए अनवर पर आख़िरी सलाम अर्ज़ करने के लिये हाज़िर हुए।

इमाम आली मक़ाम जब अपने नाना जान के आस्तानए मुक़द्दसा पर आख़िरी सलाम के लिये हाज़िर हुए होंगे, उस वक़्त आप की कैफियत क्या हुई होगी, बिला शुब्हा दीदए ख़ूंबार ने अश्के ग़म की बारिश की होगी और अर्ज़ किया होगा कि नाना जान! मैं आप का मुक़द्दस शहर छोड़ रहा हूं, वह शहर कि जो मुझे सब से ज़्यादा अज़ीज़ और प्यारा है, इस लिये छोड़ रहा हूं कि मेरा यहां रहना दुश्वार हो गया है, मैं जा रहा हूं मुझे इजाज़त दीजिये।

और आप के नान जान सैयिदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम जिन्हों ने आग़ोशे रहमत व मुहब्बत में आप की परवरिश की थी, उस वक़्त रौज़ए अनवर में उनका क्या हाल हुआ होगा, इसका तसव्वुर अहले मुहब्बत के दिलों को पाश-पाश (टुकड़े-टुकड़े) कर देता है।

आह! यह दिन कितने रंज व ग़म का दिन था कि जिगर गोशए रसूल फर्ज़न्दे अली व बतूल जिन का सब कुछ मदीना में है मगर आज वह मदीना से जा रहा है और हमेशा हमेश के लिये जा रहा है।

आप अल-विदाअ़, ऐ नाना जान! अल-विदाअ़ कह कर रोते हुए वापस हुए और डूबते हुए दिल के साथ मदीना मुनव्वरा पर हस्रत भरी निगाह डालते हुए मक्का मुअ़ज़्ज़मा की जानिब रवाना हो गए। यह

वाकिआ 4 शाबान 60 हिजरी का है।

जब आप मक्का मुअज़्ज़मा पहुंच गए और आप की तशरीफ आवुरी की लोगों को ख़बर हुई तो जूक़ दर जूक़ आप की ख़िदमत में लोग आने लगे और आप की ज़ियारत का शर्फ हासिल करने लगे।

मक्का मुअज़्ज़मा में आप एक पनाह गुज़ीं की हैसियत से मुक़ीम रहे, न आप ने यज़ीद के ख़िलाफ किसी से बैअ़त ली और न अपनी मुवाफक़त में कोई लश्करी ताक़त ही फराहम की।

## कूफियों के खुतूत

कूफा शहर की बुनिया उस वक़्त पड़ी जबकि 14 हिजरी से 16 हि0 तक क़ादसिया वग़ैरा में फुतूहात के बाद मुसलमानों की फौज ने इराक़ में सुकूनत इख़्तियार की और मदाइन की आबो-हवा उन के मुवाफिक़ न हुई तो सहाबिए रसूल हज़रत सअ़द बिन वक़्क़ास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के हुक्म से यह जगह तलाश की गई और मुसलमानों के लिये मकानात की तामीर हुई। फिर आप 17 हिजरी में अपनी फौज के साथ मदाइन से मुन्तक़िल होकर यहां मुक़ीम हुए। इस तरह कूफा शहर वुजूद में आया।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के ज़माना ही से कूफा आप के शियओं और महबूबों का मरकज़ था, वहां के लोग हज़रत अमीरे मुआ़विया के अहदे ख़िलाफत ही में हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की ख़िदमत में तशरीफ आवुरी की अरज़ियां भेज चुके थे मगर आप ने साफ इनकार कर दिया था। अब जबकि कूफा वालों को मालूम हुआ कि अमीरे मुआ़विया का इन्तेक़ाल हो गया और इमामे आली मक़ाम ने यज़ीद की बैअ़त से इनकार कर दिया तो बरिवायत तारीख़ तबरी सुलैमान बिन सुरद के मकान में वहां के शिया जमा हुए, हज़रत अमीरे मुआ़विया के इन्तेक़ाल का ज़िक्र करके सब ने ख़ुदा का शुक्र अदा किया, फिर सुलैमान ने सब से कहा कि मुआ़विया का इन्तेक़ाल हो गया है और हज़रत इमाम हुसैन ने यज़ीद की बैअ़त से

इनकार कर दिया है और मक्का चले गए हैं, आप लोग उनके और उनके बाप के शिया हैं, अगर उनके मददगार बन सकते हैं और उनके दुश्मनों से जंग कर सकते हैं तो उन को तशरीफ आवुरी के लिये ख़त लिखें और अगर कमज़ोरी या बुज़दिली का अंदेशा हो तो धोका देकर उन की जान को ख़तरे में न डालें। सब ने बयक ज़बान कहा कि हम उन को धोका न देंगे बल्कि हम उनके दुश्मनों से लड़ेंगे और अपनी जानें उन पर कुर्बान कर देंगे। (तबरीः2/176)

चुनांचे पहला ख़त जो उन लोगों की तरफ से लिखा गया उस में हज़रत अमीरे मुआविया के इन्तेक़ाल और यज़ीद की वली अहदी का ज़िक्र करने के बाद तहरीर किया गया कि हमारे सर पर कोई इमाम नहीं है, आप तशरीफ लाइये, खुदाए तआला आप की बरकत से हमें हक़ की हिमायत नसीब फरमाए। दमिश्क़ का गवर्नर नोमान बिन बशीर यहां मौजूद है मगर हम उस के साथ नमाज़े जुमा में शरीक नहीं होते और न उस के साथ ईदगाह जाते हैं। जब हमें मालूम हो जाएगा कि आप तशरीफ ला रहे हैं तो हम उस को यहां से निकाल कर मुल्के शाम जाने पर मजबूर कर देंगे। (तबरीः2/177)

यह पहला ख़त अब्दुल्लाह बिन सुबैय हमदानी और अब्दुल्लाह बिन दाल के बदस्त रवाना किया गया जो इमामे आली मक़ाम की ख़िदमत में 10 रमज़ान 60 हिजरी को मक्का मुअज़्ज़मा पहुंचा। इस ख़त की रवांगी के बाद दो ही दिन के अरसे में 53 अरज़ियां और तैयार हो गईं जो एक दो तीन और चार आदमियों के दस्तख़त से थीं, यह सारे खुतूत तीन आदमियों के हाथ इरसाल किये गए। इस के बाद फिर कुछ मख़्सूस लोगों ने अरज़ियां भेजीं और यह सब यके बाद दीगर थोड़े वक़्फे से हज़रत की ख़िदमत में पहुंच गईं। (तबरीः2/177)

## कूफा को हज़रत मुस्लिम की रवानगी

आख़िरी ख़त जो हानी बिन हानी सुबैई और सईद बिन अब्दुल्लाह हनफी के बदस्त (हाथों) हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

को पहुंचा, उस के बाद आप ने कूफ़ा वालों को लिखा कि तुम लोगों के बहुत से ख़ुतूत हम तक पहुंचे जिन के मज़ामीन से हम मुत्तला हुए, तुम लोगों के जज़्बात और अक़ीदत व मुहब्बत का लिहाज़ करते हुए बर वक़्त हम अपने भाई चचा के बेटे मख़्सूस व मोअ्तमद मुस्लिम बिन अक़ील को कूफ़ा भेज रहे हैं, अगर इन्हों ने लिखा कि कूफ़ा के हालात साज़गार हैं तो इन्शा अल्लाहु तआ़ला मैं भी तुम लोगों के पास बहुत जल्द चला आऊंगा। (तबरीः2/178)

हज़रत सदरुल अफ़ाज़िल मौलान सैयद मुहम्मद नईमुद्दीन साहब मुरादाबादी रहमतुल्लाहि अ़लैह तहरीर फ़रमाते हैं कि अगर्चे इमाम की शहादत की ख़बर मशहूर थी और कूफ़ियों की बे वफ़ाई का पहले भी तजुरिबा हो चुका था मगर जब यज़ीद बादशाह बन गया और उस की हुकूमत व सल्तनत दीन के लिये ख़तरा थी और इस लिये उस की बैअ़त ना रवा थी और वह तरह-तरह की तदबीरों और हीलों से चाहता था कि लोग उस की बैअ़त करें, इन हालात में कूफ़ियों का ब-पासे मिल्लत (समाज का लिहाज़ करते हुए) यज़ीद की बैअ़त से दस्त कशी करना और हज़रत इमाम से तालिबे बैअ़त होना इमाम पर लाज़िम करता था कि उन की दरख़्वास्त क़बूल फ़रमाएं। जब एक क़ौम ज़ालिम व फ़ासिक़ की बैअ़त पर राज़ी न हो और साहिबे इस्तिहक़ाक़ अहल से दरख़्वास्ते बैअ़त करे, उस पर अगर वह उन की इस्तिद्आ़ क़बूल न करे तो इसके मअ्ना यह होते हैं कि वह उस क़ौम को उस जाबिर ही के हवाले करना चाहता है। इमाम अगर उस वक़्त कूफ़ियों की दरख़्वास्त क़बूल न फ़रमाते तो बारगाहे इलाही में कूफ़ियों के इस मुतालेबा का इमाम के पास क्या जवाब होता कि हम हर चन्द दरपै हुए मगर इमाम बैअ़त के लिये राज़ी न हुए, बदीं वजह (इसी वजह से) हमें यज़ीद के ज़ुल्म व तशद्दुद से मजबूर होकर उस की बैअ़त करनी पड़ी। अगर इमाम हाथ बढ़ाते तो हम उनपर जानें फ़िदा करने के लिय हाज़िर थे। यह मस्अला ऐसा दर पेश आया जिस का हल बजुज़ इसके और कुछ

न था कि हज़रत इमाम उन की दावत पर लब्बैक फरमाएं। अगर्चे अकाबिर सहाबए किराम हज़रत इब्ने अब्बास, हज़रत इब्ने उमर, हज़रत जाबिर, हज़रत अबू सईद और हज़रत अबू वाक़िद लैसी वग़ैरहुम हज़रत इमाम की इस राय से मुत्तफिक़ न थे और उन्हें कूफियों के अहद व मीसाक़ का ऐतबार न था। इमाम की मुहब्बत और शहादते इमाम की शोहरत इन सब के दिलों में इख़्तिलाज पैदा कर रही थी, गो कि यह यक़ीन करने की भी कोई वजह न थी कि शहादत का यही वक़्त है और इसी सफर में यह मरहला दर पेश होगा लेकिन अंदेशा मानेअ् था। हज़रत इमाम के सामने मस्अले की यह सूरत दर पेश थी कि इस इस्तिदआ को रद करने के लिये उज़्रे शरई क्या है। इधर ऐसे जलीलुल क़दर सहाबा के शदीद इस्रार का लिहाज़, उधर अहले कूफा की इस्तिदआ रद फरमाने के लिये कोई शरई उज़्र न होना हज़रत इमाम के लिये निहायत पेचीदा मस्अला था, जिस का हल बजुज़ इसके कुछ नज़र न आया कि पहले हज़रत इमाम मुस्लिम को भेजा जाए, अगर कूफियों ने बद अ़हदी व बेवफाई की तो उज़्रे शरई मिल जाएगा और अगर वह अपने अ़हेद पर क़ाइम रहे तो सहाबा को तसल्ली दी जा सकेगी।

(सवानेहे करबला:87)

## हज़रत मुस्लिम कूफा में

हज़रत मुस्लिम के दो साहिब ज़ादे मुहम्मद और इब्राहीम जो बहुत कम उम्र थे और अपने बाप के बहुत प्यारे बेटे थे, इस सफर में अपने मेहरबान बाप के साथ हो लिये। हज़रत मुस्लिम ने कूफा पहुंच कर मुख़्तार बिन उबैद के मकान पर क़ियाम फरमाया, शियआ़ने अली हर तरफ से जूक़ दर जूक़ आकर बड़े जोशो-अकीदत और मुहब्बत के साथ आप से बैअ़त करने लगे, यहां तक कि एक हफ़्ता के अन्दर बारह हज़ार कूफियों ने आप के दस्ते मुबारक पर हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की बैअ़त की। हज़रत मुस्लिम को जब हालात खुशगवार नज़र आए तो आप ने इमाम हुसैन को ख़त लिख

दिया कि यहां के हालात साज़गार हैं और अहले कूफा अपने क़ौलो-क़रार पर क़ाइम हैं, आप जल्द तशरीफ लाइये। सहाबिए रसूल हज़रत नोमान बिन बशीर जो उस ज़माने में कूफा के गवर्नर थे जब वह हालात से बाख़बर हुए तो मिम्बर पर तशरीफ ले गए और हम्दो-सलात के बाद फरमाया कि ऐ लोगो! यह बैअ़त यज़ीद की मरज़ी के ख़िलाफ है, वह इस पर बहुत भड़केगा और फित्ना व फ़साद बरपा होगा। अब्दुल्लाह बिन मुस्लिम हज़रमी जो बनू उमैया के हवा ख़्वाहों (ख़ैर ख़्वाहों) में से था, उठ खड़ा हुआ और कहा कि आप जो देख रहे हैं सख़्तगीरी के बग़ैर उस की इस्लाह नहीं हो सकती, आप दुश्मन के मुक़ाबले में बहुत कमज़ोर साबित हो रहे हैं, आप ने फरमाया कि खुदाए तआ़ला की फरमांबरदारी के साथ मेरा शुमार कमज़ोरों में हो यह इस बात से बेहतर है कि उस की नाफरमानी के साथ मेरा शुमार इज़्ज़त वालों में हो, यह फरमा कर आप मिम्बर से उतर आए, अब्दुल्लाह हज़रमी ने वहां से उठ कर यज़ीद को ख़त लिख दिया कि मुस्लिम बिन अक़ील कूफा में आ गए हैं, शियों ने हुसैन बिन अली के नाम पर उन से बैअ़त कर ली है, अगर आप कूफा बचाना चाहते हैं तो किसी ज़बर्दस्त आदमी को हाकिम बना कर भेजिये जो आप के फरमान के मुताबिक़ अमल कर सके। नोमान बिन बशीर या तो कमज़ोर हैं और या तो जान बूझ कर कमज़ोरी दिखा रहे हैं। (तबरी:2/181)

अम्मारा बिन उक़्बा और उमर बिन सअ़द ने भी इसी मज़्मून के खुतूत यज़ीद को लिखे, इन खुतूत के पहुंचने पर यज़ीद सख़्त ग़ज़बनाक हुआ, अपने ख़ास दोस्तों को बुला कर उस ने मश्वरा किया, उन लोगों ने कहा कि कूफा का गवर्नर उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद को मुक़र्रर किया जाए कि वह बहुत सख़्त आदमी है किसी की परवाह न करेगा, यज़ीद उन लोगों के मशवरे पर अमल किया, कूफा के साबिक़ गवर्नर हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को माज़ूल कर दिया और उबैदुल्लाह बिन ज़ियादा जो बसरा का गवर्नर था, उसे कूफा का भी गवर्नर बना दिया और हुक्म दिया वह फौरन कूफा पहुंच जाए, मुस्लिम

बिन अक़ील को गिरफ्तार करके शहर बदर कर दे या क़त्ल कर डाले। और हुसैन बिन अली आएं तो उन से भी मेरी बैअत तलब करे, अगर वह बैअत कर लें तो बेहतर वरना उन को भी क़त्ल कर दे।

# इब्ने ज़ियाद का कूफा आना

यज़ीद का हुक्म नामा पाते ही उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद ने अपने भाई उस्मान बिन ज़ियाद को बसरा में अपना जा नशीन मुक़र्रर किया और दूसरे दिन कूफा के लिये रवाना हो गया, क़ादसिया पहुंच कर अपने सिपाहियों को वहीं छोड़ दिया और अज़ राहे फरेब हिजाज़ी लिबास पहन कर ऊंट पर सवार हुआ और बीस आदमियों को अपने हमराह लेकर हिजाज़ी रास्ते से मग़रिब और इशा के दरमियान कूफा में दाख़िल हुआ, रात के अंधेरे में इस मक्रो-फरेब के साथ पहुंचने से उस का मतलब यह था कि इस वक़्त कूफियों में यज़ीद के ख़िलाफ एक लहेर दौड़ी हुई है लिहाज़ा ऐसे तौर पर दाख़िल होना चाहिये कि वह इब्ने ज़ियाद को पहचान न सकें और यह समझें कि हज़रत इमाम हुसैन तशरीफ ले आए ताकि अम्न व आफियत के साथ वह कूफा में दाख़िल हो जाए। चुनांचे ऐसा ही हुआ अहले कूफा जिन को हज़रत इमाम आली मक़ाम की आमद का इन्तिज़ार था, हिजाज़ी लिबास में हिजाज़ी रास्ते से साज़ो- सामान के साथ आता देख कर रात की तारीकी में हर शख़्स ने यही समझा कि हज़रत हुसैन बिन अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा तशरीफ ले आए, सब ने नारा हाए मसर्रत बुलंद किया مَرْحَبًا بِكَ يَا اِبْنَ رَسُوْلِ اللّٰهِ और قَدِمْتَ خَيْرَ مَقْدَمٍ कहते हुए उस के आगे पीछे चले, इब्ने ज़ियाद बद निहाद किसी को कुछ जवाब न देता था बल्कि आवाज़ों को सुनता और चेहरों को बग़ौर देखता हुआ चला जा रहा था, शोर सुन कर और भी लोग घरों से निकल आए और हर शख़्स फर्ज़न्दे रसूल समझ कर आगे बढ़ने लगा, जब मजमा बहुत ज़्यादा हो गया और नौबत यहां तक पहुंची कि राह चलने में रुकावट होने लगी, उस वक़्त मुस्लिम बिन अम्र बाहली जो इब्ने ज़ियाद के साथ था उस ने पुकार

कर कहा "रास्ता छोड़ दो" यह अमीर उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद हैं, इन अल्फाज़ को सुन कर लोगों को बड़ा रंज हुआ, अफ्सोस करते हुए सब अपने घरों को वापस हो गए और सिर्फ दस बीस आदमियों के साथ इब्ने ज़ियादा गवर्नर हाउस में दाख़िल हुआ। (तबरीः2/184)

सुबह इब्ने ज़ियाद ने लोगों को जमा किया और उन के सामने यह तक़रीर की। ऐ लोगो! अमीरुल मोमिनीन यज़ीद ने मुझे कूफा का गवर्नर बनाया है और मुझे हुक्म दिया है कि मुतीअ् और फरमांबरदार लोगों के साथ भलाई करूं और नाफरमानों के साथ सख़्ती करूं। कान खोल कर सुन लो, मैं अमीरुल मोमिनीन के इस हुक्म पर सख़्ती से अमल करूंगा। फरमांबरदारों के साथ मेहरबानी से पेश आऊंगा और नाफरमानों के लिये मेरी तलवार है, तुम लोग अपने और अपने अहलो-अयाल की जानों पर रहम करो।

इस तक़रीर के बाद इब्ने ज़ियाद ने हर क़बीले के बड़े-बड़े लोगों को गिरफ्तार कर लिया और उन से तहरीरी ज़मानत ली कि तुम और तुम्हारे क़बीले के लोग किसी मुख़ालिफ को अपने यहां पनाह नहीं देंगे, अगर किसी ने पनाह दे रखी है तो उसे पेश करेगा, जो ऐसा नहीं करेगा हम उसे क़त्ल करके उसी के दरवाज़े पर लटका देंगे और उस के अहलो- अयाल को भी नहीं छोड़ेंगे।

इब्ने ज़ियाद की इस काररवाई के बाद कूफा वालों पर ख़ौफ व हिरास छा गया और उन के ख़्यालात में तेज़ी के साथ तबदीली पैदा होने लगी।

कूफा शहर में चूंकि यह मशहूर हो चुका था कि हज़रत मुस्लिम मुख़्तार बिन अबू उबैदा के मकान पर ठहरे हुए हैं इस लिये अब आप ने वहां क़ियाम फरमाना मुनासिब न समझा और रात की तारीकी में मुहिब्बे अहले बैत हानी बिन उर्वा के मकान पर मुन्तक़िल हो गए जो क़बीलए मज़हज के सरदार थे। हानी ने आप को एक महफूज़ कमरा में छुपा के रखा और सिवाए मख़्सूस और मोअ्तमद लोगों के दूसरों इस राज़ से मुत्तला न किया।

# जांसूस की जासूसी

इब्ने ज़ियाद को हज़रत मुस्लिम की तलाश थी मगर कोशिश के बावजूद वह उन की कियाम गाह का पता न लगा सका। आख़िर उस ने अपने शामी गुलाम मअकल को तीन हज़ार दिरहम देकर सुराग़ के लिये मुक़र्रर किया कि वह खुफिया तौर पर किसी न किसी तरह मुस्लिम का पता चलाए। गुलाम सीधा जामा मस्जिद पहुंचा, इत्तिफाक़ से उस वक़्त एक मुहिब्बे अहले बैत मुस्लिम बिन औसजा असदी मस्जिद के एक गोशे में नमाज़ पढ़ रहे थे, यह देर तक उनको देखता रहा, जब वह नमाज़ से फारिग़ हुए तो यह गुलाम उनके पास गया और कहा कि मैं मुल्के शाम का रहने वाला हूं और अल्लाह के फ़ज़्लो-करम से अहले बैते नुबुव्वत का दोस्त हूं। मालूम हुआ है कि इस ख़ानदान के कोई बुज़ुर्ग कूफा तशरीफ लाए हैं, यह तीन हज़ार दिरहम मेरे पास हैं, क्या आप उनका पता बता सकते हैं ताकि यह रक़म मैं उनकी ख़िदमत में नज़्र कर दूं। मुस्लिम असदी ने कहा मस्जिद में और भी बहुत से लोग हैं, तुम मुझी से क्यों उनके बारे में दरियाफ्त कर रहे हो? गुलाम ने कहा कि आप के चेहरे पर जो ख़ैर व बरकत के आसार हैं उन से ज़ाहिर होता है कि आप ज़रूर अहले बैते रसूल के दोस्तों में से हैं, मुस्लिम असदी उसके फ़रेब में आ गए और कहा तुम ने ख़ूब पहचाना, मैं भी तुम्हारे भाइयों में से एक हूं, मेरा नाम मुस्लिम बिन औसजा है। फिर उसे हज़रत मुस्लिम बिन अक़ील के पास ले गए, उस ने आप से बैअ़त की और तीन हज़ार दिरहम जो लाया था वह आपकी ख़िदमत में पेश किया। बैअ़त के बाद वह गुलाम रोज़ाना आप की ख़िदमत में सब से पहले आता, दिन भर रहता, हालात मालूम करता और जो कुछ देखता, सुनता रात के वक़्त उस की पूरी रिपोर्ट इब्ने ज़ियाद को पहुंचा देता।

हानी के इब्ने ज़ियाद से पुराने तअ़ल्लुक़ात थे मगर कहीं इब्ने ज़ियाद को भनक न मिल गई हो कि हज़रत मुस्लिम हमारे यहां मुक़ीम हैं, इस डर से वह उस की मुलाक़ात को जाने से परहेज़ करते थे और

बीमारी के उज़्र से घर बैठ गए थे। इब्ने ज़ियाद ने हानी के पास मुलाक़ात का पैग़ाम भेजा। हानी ने कोई ख़तरा नहीं महसूस किया, इस लिये वह तन्हा इब्ने ज़ियाद के पास चले गए, वहां पहुंचे तो इब्ने ज़ियाद का रंग बदला हुआ पाया। आप ने सलाम किया तो उस ने जवाब नहीं दिया, कुछ देर आप खड़े रहे, उस के बाद उस ने बड़े गुस्से से कहा हानी तुम अमीरुल मोमिनीन यज़ीद के ख़िलाफ अपने घर को साज़िशों का अड्डा बनाए हो, तुम मुस्लिम बिन अक़ील को बुला कर अपने घर में छुपाए हो, उन के लिये हथिार जमा करते हो, अपने मोहल्ले में उन की मदद के लिये आदमी इकट्ठा कर रहे हो और समझते हो कि यह सारी बातें मुझ से छुपी रहेंगी।

हानी ने पहले तो इन बातों से इनकार किया मगर जब इब्ने ज़ियाद ने मअ्क़ल गुलाम को बुला कर खड़ा कर दिया तो उन के होश उड़ गए, अब इनकार की गुंजाइश न रही तो उन्हों ने कहा अस्ल हक़ीक़त यह है कि मैं ने मुस्लिम बिन अक़ील को नहीं बुलाया बल्कि वह ख़ुद मेरे यहां तशरीफ लाए तो मैं इनकार नहीं कर सका। इस तरह मैंने उन्हें मेहमान बना लिया और पनाह दे दी। मैं आप से पक्का वादा करता हूं कि मैं उन्हें अपने घर से निकाल दूंगा, आप मुझे इतनी मोहलत दीजिये कि मैं जाकर उन से कह के आ जाऊं कि आप मेरे घर से निकल कर जहां चाहें चले जाएं ताकि मैं पनाह देने की ज़िम्मेदारी से सुबुकदोश हो जाऊं। इब्ने ज़ियाद ने कहा ख़ुदा की क़सम जब तक तुम मेरे पास उनको हाज़िर न कर दो तुम यहां से नहीं जा सकते, हानी ने कहा ख़ुदा की क़सम मैं अपने मेहमान को क़त्ल करने के लिये तुम्हारे सुपुर्द कर दूं यह हरगिज़ नहीं हो सकता।

यहां तक कि बात और बढ़ी तो इब्ने ज़ियाद ने कहा तुम उन्हें सुपुर्द नहीं करोगे तो हम तुम्हारा सर क़लम कर देंगे। हानी ने कहा ऐसा हुआ तो तुम्हारे इर्द गिर्द भी तलवारें चमकेंगी, यह सुन कर इब्ने ज़ियाद आग बगोला हो गया और कहा अच्छा! तुम मुझे धमकी देते हो, फिर हानी के सर और मुंह पर डंडे मारना शुरू कर दिया, यहां

तकि उनका सर और चेहरा ज़ख़्मी हो गया और सारा कपड़ा ख़ून में लत-पत हो गया। एक सिपाही जो क़रीब में खड़ा था, हानी ने उस की तलवार पर हाथ डाला कि छीन लें मगर उस ने छुड़ा लिया, इब्ने ज़ियाद ने कहा अब तो अपना ख़ून तुम ने मेरे लिये हलाल कर दिया, फिर सिपाहियों को हुक्म दिया कि इसे खींच कर ले जाओ और एक कमरे में बन्द कर दो। (तबरी:2/192)

शहर में यह अफ्वाह फैल गई कि हानी क़त्ल कर दिये गए, इस अफ्वाह के सुनते ही अम्र बिन हज्जाज जो हानी के निस्बती भाई थे कई हज़ार हथियार बन्द सवारों को लेकर गवर्नर हाउस का घेराव किया। अम्र बिन हज्जाज ने पुकार कर कहा कि मैं अम्र बिन हज्जाज हूं और मेरे साथ क़बीलए मज़हज के हज़ारों सवार हैं, हम ने इताअ़त से रू-गर्दानी नहीं की है, हमारे सरदार को क़त्ल कर दिया गया है, हम उस का इन्तिक़ाम लेंगे, फिर इन्तिक़ाम-इन्तिक़ाम का शोर बुलंद हुआ, इब्ने ज़ियाद इस सूरते हाल से बहुत घबरा गया, उस ने क़ाज़ी शुरैह से कहा कि आप पहले हानी को देख लीजिये फिर उस के क़बीले वालों से कहिये कि हानी ज़िंदा हैं, उन के क़त्ल की अफ्वाह ग़लत है। हानी अपने क़बीले के लोगों की आवाज़ें सुन रहे थे। क़ाज़ी शुरैह जब उन के पास गए तो हानी ने उन से कहा कि मेरे क़बीले वालों से मेरा हाल बता कर कह दीजिये कि इस वक़्त अगर दस आदमी भी अन्दर आ जाएं तो मैं यक़ीनन छूट जाऊंगा। क़ाज़ी साहब जब बाहर निकले तो इब्ने ज़ियाद का जासूस हुमैद बिन बकर असदी उन के साथ हो गया, इस लिये मजबूरन क़ाज़ी साहब ने हानी का पूरा हाल उन के क़बीले से नहीं बताया बल्कि सिर्फ इतना कहा कि वह ज़िंदा हैं और बाज़ मस्लहतों की बिना पर नज़र बन्द कर दिये गए हैं। हानी के क़बीले वालों को क़ाज़ी साहब की शहादत से जब मालूम हुआ कि हानी ज़िंदा हैं और उन के क़त्ल की अफ्वाह ग़लत है तो वह सब मुत्मइन होकर वापस चले गए। (तबरी:2/194)

# गवर्नर हाउस का घिराव

हज़रत सदरुल अफाज़िल मौलाना मुहम्मद नईमुद्दीन साहब मुरादाबादी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि हज़रत मुस्लिम यह ख़बर पाकर बर आमद हुए और आप ने अपने मुतवस्सिलीन को निदा की, जूक़ दर जूक़ (गिरोह दर गिरोह) आदमी आने शुरू हुए और चालीस हज़ार की जमूइय्यत ने आप के साथ क़सरे शाही का एहाता कर लिया, सूरत बन आई थी, हमूला करने की देर थी, अगर हज़रत मुस्लि हमूला करने का हुक्म देते तो उसी वक़्त क़िला फतह पाता। और इब्ने ज़ियाद और उस के हमूराही हज़रत मुस्लिम के हाथ में गिरफ्तार होते। और यही लश्कर सैलाब की तरह उमंड कर शामियों को तख़्तो-ताराज (तबाहो-बर्बाद) कर डालता और यज़ीद को जान बचाने की कोई राह न मिलती, नक़्शा तो यही जमा था मगर *कार बदस्त, कार कुनान क़द्रस्त,* बंदों का सोचा क्या होता है, हज़रत मुस्लिम ने क़िला को एहाता तो कर लिया और बा वजूदे कि कूफियों की बद अ़हदी और इब्ने ज़ियाद की फरेब कारी और यज़ीद की अदावत पूरे तौर पर साबित हो चुकी थी। फिर भी आप ने अपने लश्कर को हमूले का हुक्म न दिया और एक बादशाहे दाद गुस्तर (इंसाफ करने वाले बादशाह) के नाइब की हैसियत से आप ने इन्तिज़ार फरमाया कि पहले गुफ्तगू से क़तए हुज्जत कर लिया जाए और सुलह का सूरत पैदा हो सके, तो मुसलमानों में ख़ूं रेज़ी न होने दी जाए, आप अपने इस पाक इरादे से इन्तिज़ार में रहे और अपनी एहतियात को हाथ से जाने न दिया, दुश्मन ने इस वक़्फा से फाइदा उठाया और कूफा के रुअसा व अ़म्राइद (बड़े-बड़े लोग) जिन को इब्ने ज़ियाद ने पहले से क़िला बन्द कर रखा था, उन्हें मजबूर किया कि वह अपने रिश्तेदारों और ज़ेरे असर लोगों को मजबूर करके हज़रत मुस्लिम की जमाअ़त से अलाहेदा कर दें। यह लोग इब्ने ज़ियाद के हाथ में क़ैद थे और जानते थे कि अगर इब्ने ज़ियाद को शिकस्त भी हुई तो वह क़िला फतह होने तक

उनका ख़ातिमा कर देगा। इस ख़ौफ से वह घबरा उठे और उन्हों ने दीवारे क़िला पर चढ़ कर अपने मुतअ़ल्लिक़ीन व मुतवस्सिलीन से गुफ्तुगू की और उन्हें हज़रत मुस्लिम की रिफाक़त छोड़ देने पर इन्तिहा दर्जे का ज़ोर दिया और बताया कि अलावा इस बात के कि हुकूमत तुम्हारी दुश्मन हो जाएगी, यज़ीद नापाक तीनत तुम्हारे बच्चे-बच्चे को क़त्ल कर डालेगा, तुम्हारे माल लुटवा देगा, तुम्हारी जागीरें और मकान ज़ब्त हो जायेंगे। यह और मुसीबत है कि अगर तुम इमाम मुस्लिम के साथ रहे तो हम जो इब्ने ज़ियाद के हाथ में क़ैद हैं, क़िला के अन्दर मारे जायेंगे। अपने अंजाम पर नज़र डालो, हमारे हाल पर रहम करो, अपने घरों को चले जाओ। यह हीला कामयाब हुआ और हज़रत मुस्लिम का लश्कर मुन्तशिर होने लगा, यहां तक कि ता ब वक़्ते शाम हज़रत मुस्लिम ने मस्जिदे कूफा में जिस वक़्त मग़रिब की नमाज़ शुरू की तो आप के साथ पांच सौ आदमी थे और जब आप नमाज़ से फारिग़ हुए तो आप के साथ एक भी न था। तमन्नाओं के इज़हार और इल्तिजाओं के तूमार (खुतूत) से जिस अज़ीज़ मेहमान को बुलाया था, उन के साथ यह वफा की कि वह तन्हा हैं और उन की रिफाक़त के लिये कोई एक भी मौजूद नहीं। कूफा वालों ने हज़रत मुस्लिम को छोड़ने से पहले ग़ैरत व हमिय्यत से क़तअ़् तअ़ल्लुक़ किया और उन्हें ज़रा परवाह न हुई कि क़ियामत तक तमाम आलम में उनकी बेहिम्मती का शोहरा रहेगा और इस बुज़दिलाना बेमुरव्वती और ना मर्दी से वह रुस्वाए आलम होंगे। हज़रत मुस्लिम इस ग़ुर्बत व मुसाफिरत में तन्हा रह गए, किधर जायें, कहां क़ियाम करें, हैरत है कि कूफा तमाम मेहमान ख़ानों के दरवाज़े मुक़फ्फल थे, जहां से ऐसे मोहतरम मेहमानों को मदऊ करने के लिये रुसुल व रसाइल का तांता बंध गया था, कूफा के वसीअ़् ख़ित्ते में दो चार गज़ ज़मीन हज़रत मुस्लिम के शब गुज़ारने के लिये नज़र नहीं आती, उस वक़्त हज़रत मुस्लिम को इमाम हुसैन की याद आती है और दिल तड़पा देती है, वह सोचते हैं कि मैं ने इमाम की जनाब में ख़त लिखा, तशरीफ आवुरी की इल्तिजा की है और इस

बद अहद कौम के इख़्लास व अक़ीदत का एक दिलकश नक्शा इमामे आली मक़ाम के हुज़ूर पेश किया है और तशरीफ आवुरी पर ज़ोर दिया है, यक़ीनन हज़रत इमाम मेरी इल्तिजा रद न फरमायेंगे और यहां के हालात से मुत्मईन होकर मअ़ अहलो-अ़याल चल पड़े होंगे। यहां उन्हें क्या मसाइब पहुंचेगे और चमने ज़हरा के जन्नती फूलों को इस बेमेहरी (बेरहमी) की तपिश कैसी गज़ंद (तक्लीफ) पहुंचाएगी, यह ग़म अलग दिल को घायल कर रहा था और अपनी तहरीर पर शर्मिन्दगी व इन्फेआ़ल और हज़रत इमाम के लिये ख़तरात अलाहेदा बेचैन कर रहे थे और मौजूदा परेशानी जुदा दामनगीर थी। (सवानेहे करबला:92)

# हज़रत मुस्लिम तौआ़ के घर में

हज़रत मुस्लिम अपनी इसी परेशानी के आलम में इधर उधर फिरने लगे, रात के अंधेरे में यूं ही चले जा रहे थे कि एक औरत जिस का नाम तौआ़ था, अपने दरवाज़े पर बैठी हुई नज़र आई जो अपने बेटे का इन्तिज़ार कर रही थी, आप ने उस से पीने के लिये पानी मांगा, औरत नेक ख़स्लत थी, वह गई और पानी लाई, आप बैठ गए और पानी पिया, वह बरतन रखने के लिये घर में गई और जब वापस आई तो देखा कि आप बैठे हैं, उस ने कहा आप तो पानी पी चुके, अब अपने घर जाइये, आप ने कोई जवाब नहीं दिया और बैठे रहे। जब उस ने दूसरी और तीसरी बार वही बात कही तो आप ने फरमाया कि ऐ अल्लाह की बन्दी! मेरा इस शहर में कोई घर नहीं है, मैं एक मुसाफिर हूं और सख़्त मुसीबत में मुब्तला हूं, क्या तुम मुझे पनाह दे सकती हो? शायद मैं कभी इसका बदला दे सकूं वरना अल्लाह व रसूल जल्ल जलालुहू व सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम तुम्हें इस का बेहतरीन अज्र अता फरमाएंगे। औरत ने हैरान होकर दरियाफ्त किया आप हैं कौन? और वाक़िआ़ क्या है? फरमाया मैं मुस्लिम बिन अक़ील हूं, कूफा वालों ने मेरे साथ ग़द्दारी की, मुझ से मदद का वादा किया और अब सब ने मेरा साथ छोड़ दिया, उस ने कहा मुस्लिम आप ही हैं?

फरमाया हां मैं वही हूं, इतना सुनना कि वह आप को मकान के अन्दर ले गई और अपने ख़ास कमरे में आप के लिये फर्श बिछा दिया, फिर खाना लाई मगर आप ने तनावुल नहीं फरमाया।

थोड़ी देर बाद उस का लड़का आया, जब उस ने मां को उस के ख़ास कमरे बार-बार आते जाते देखा तो वजह दरियाफ़्त की, तौआ ने पहले छुपाने की कोशिश की लेकिन बेटे ने जब बहुत इसूरार किया तो उस को ज़ाहिर करना पड़ा मगर उस ने ताकीद कर दी कि ख़बर दार! यह राज़ किसी से ज़ाहिर मत करना। वह सुनकर चुप हो गया और रात गुज़रने का इन्तिज़ार करने लगा, लड़का शराबी और आवारा क़िस्म का था। (तबरी:2/198)

सुबह हुई तो उस लड़के ने मुहम्मद बिन अश्अ़स के बेटे से जाकर बता दिया कि मुस्लिम बिन अक़ील हमारे घर में हैं, उस ने फौरन अपने बाप के ज़रिये इब्ने ज़ियाद को मुत्तलअ् कर दिया, इब्ने ज़ियाद ने मुहम्मद बिन अश्अ़स की सरकरदगी में फौज का एक दस्ता मुस्लिम की गिरफ्तारी के लिये रवाना कर दिया, हज़रत मुस्लिम ने जब घोड़े के टापों की आवाज़ सुनी तो समझ गए कि फौज मेरी गिरफ्तारी के लिये आ गई। आप तलवार लेकर फौरन कमरे से बाहर निकल पड़े, इतने में फौज घर के अन्दर पहुंच गई, आप ने ऐसा सख़्त हमूला किया कि सब को निकाल कर घर से बाहर कर दिया, वह लोग फिर अन्दर घुस आए, आप ने बड़ी बहादुरी से उन का मुक़ाबला किया, आप में और बुकैर बिन हुमरान अहमरी में तलवार चलने लगी, उस् ने आप के चेहरे पर ऐसी तलवार मारी कि ऊपर का होंट कट गया, नीचे का होंट भी ज़ख़्मी हुआ और सामने के दो दांत भी गिर गए और आप ने उस के सर पर ज़ख़्मे कारी लगाया, जब दुश्मनों को यक़ीन हो गया कि इस तरह उन पर क़ाबू पाना मुश्किल है तो सब भाग कर छत पर चले गए और ऊपर से पत्थर मारने लगे, इसके अलावा सेंठों मुट्ठे आग से जला कर फेंकने लगे, हज़रत मुस्लिम ने जब यह बुज़दिलाना तरीक़ए जंग देखा तो आप तलवार खींचे हुए घर से बाहर निकल आए और उन

लोगों से लड़ने लगे जो बाहर थे, मुहम्मद बिन अश्अ़स ने पुकार कर कहा कि आप के लिये अमान है मगर आप ने जंग जारी रखी और रज्ज़ पढ़ने लगे जिस के आख़िरी मिस्रे का मज़्मून यह था कि "मुझे इस बात का अंदेशा है कि मुझ से झूठ बोलेंगे या मुझे धोका देंगे" मुहम्मद बिन अश्अ़स ने कहा नहीं आप से झूठ नहीं बोला जाएगा और न आप को धोका दिया जाएगा।

हज़रत मुस्लिम में अब जंग करने की ताक़त नहीं रह गई थी, ज़ख़्मों से चूर थे और हांप रहे थे, इसी लिये उसी मकान की एक दीवार से टेक लगा कर खड़े हो गए, इब्ने अश्अ़स उनके पास आकर कहने लगा कि अमान है। आप ने कहा मेरे लिये अमान है, क़हा हां अमान है। सब पुकार उठे कि हां आप के लिये अमान है, सिर्फ अम्र बिन उबैदुल्लाह सुलमी अलग हो गया और कहा मुझे इस मामले में कोई दख़ल नहीं। हज़रत मुस्लिम ने फ़रमाया कि देखो तुम लोगों ने मुझे अमान दी है, इस लिये मैं अपनी तलवार मियान में कर लेता हूं। अगर तुम लोग मुझे अमान न देते तो मैं अपने को तुम्हारे हवाले हरगिज़ नहीं करता, इतने में एक सवारी लाई गई जिस पर हज़रत मुस्लिम को बिठाया और गवर्नर हाउस की तरफ़ ले चले, रास्ते में आप की तलवार कमर से निकाल ली गई तो आप ज़िंदगी से मायूस हो गए और फरमाया यह पहली ग़द्दारी है, इब्ने अश्अ़स ने कहा मुझे उम्मीद है कि आप के साथ कोई ख़तरा नहीं पेश आएगा, आप ने फरमाया बस उम्मीद ही उम्मीद है और अमान जो तुम ने दी थी वह क्या हुई? फिर *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन* कहा और रोने लगे, अम्र बिन उबैदुल्लाह सुलमी जिस ने अमान से इत्तिफ़ाक़ नहीं किया था, वह बोला कि जिस के लिये तुम खड़े हुए थे, उसे ख़तरा देख कर रोना नहीं चाहिये, आप ने फरमाया वल्लाह मैं अपनी जान के लिये नहीं रो रहा हूं, बल्कि मैं नवासए रसूल हज़रत इमाम हुसैन और उन की औलाद के लिये रो रहा हूं। (तबरी:2/202)

# हज़रत मुस्लिम और गवर्नर हाउस

मुहम्मद बिन अश्अ़स आप को लिये हुए गवर्नर हाउस के फाटक पर पहुंचा, आप को वहां बिठा दिया और ख़ुद इजाज़त लेकर इब्ने ज़ियाद के पास गया, उस से लड़ाई की पूरी कैफियत बयान की और हज़रत मुस्लिम को अमान के साथ लाने का ज़िक्र किया, इब्ने ज़ियाद ने कहा कि तुम अमान देने वाले कौन होते हो, हम ने तुम्हें गिरफ्तार करने के लिये भेजा था, अमान देने के लिये नहीं भेजा था। अब इब्ने अश्अ़स में कुछ बोलने की जुरअ़त नहीं हुई वह चुप हो गया।

हज़रत मुस्लिम जब गवर्नर हाउस के दरवाज़े पर पहुंचे तो वहां बहुत से लोग अन्दर जाने की इजाज़त के इन्तिज़ार में मौजूद थे। और एक घड़ा ठंडे पानी से भरा हुआ दरवाज़े के क़रीब रखा हुआ था और आप बहुत प्यासे थे। फरमाया मुझे थोड़ा सा पानी पिला दो। मुस्लिम बिन अम्र बाहली ख़बीस ने कहा कि इस में से एक बूंद भी तुम को नहीं मिलेगा मगर अम्मारा बिन उक़्बा ने अपने गुलाम से कहा कि मुस्लिम को पानी पिला दो, जब वह कटोरे में पानी भर कर लाया और आप ने उसे पीना चाहा तो मुंह से ख़ून बहने लगा और पानी रंगीन हो गया, दोबारा उसी तरह हुआ, तीसरी दफा दो दांत टूट कर कटोरे में गिर गए, आप ने कटोरा रख दिया और फरमाया मालूम होता है कि अब पानी मेरी क़िस्मत से उठ चुका है।

इतनी देर में इब्ने ज़ियाद का आदमी आप को लेने के लिये आ गया, जब आप इब्ने ज़ियाद के पास पहुंचे तो दस्तूर के मुताबिक़ आप ने उस को सलाम नहीं किया, एक सिपाही ने कहा कि तुम अमीर को सलाम नहीं करते, आप ने फरमाया अगर अमीर मुझ को क़त्ल करना चाहता है तो उस को मेरा सलाम नहीं और अगर क़त्ल का इरादा नहीं है तो फिर उस को बहुत से सलाम होंगे। इब्ने ज़ियाद ने कहा अब तुम बच नहीं सकते, क़त्ल कर दिये जाओगे, आप ने फरमाया वाक़ई? उस ने कहा हां, आप ने फरमाया अच्छा मुझे इतना मौक़ा दे दो कि मैं कुछ वसिय्यत कर दूं, कहा हां वसिय्यत कर दो। मुस्लिम ने लोगों पर निगाह

डाली तो उन में इब्ने सअ्द नज़र आया, आप ने उस से फरमाया कि तुम कुरैश ख़ानदान के आदमी हो, मैं तुम से कुछ राज़ की बातें कहना चाहता हूं, इन्हें तन्हाई में सुन लो। हुकूमत का चापलूस सुनने के लिये तैयार न हुआ, इब्ने ज़ियाद ने कहा सुनने में क्या हरज है, तो इब्ने सअ्द उठा और हज़रत मुस्लिम के साथ थोड़ी दूर जाकर ऐसी जगह बैठा जहां से इब्ने ज़ियाद का भी सामना था, आप ने उस से फरमाया एक बात यह कहनी है कि मैं ने कूफा में फुलां शख़्स से सात सौ दिरहम कर्ज़ लिया है तुम उसे अदा कर देना और दूसरी बात यह है कि क़त्ल के बाद मेरी लाश को दफन कर देना। तीसरे हज़रत इमाम हुसैन के पास किसी को भेज कर मेरे वाक़िआ की इत्तिलाअ् कर देना ताकि वह वापस चले जाएं।

हज़रत मुस्लिम ने यह बातें इब्ने सअ्द से राज़ के तौर पर कही थीं मगर उस बद बख़्त ने यह सारी बातें इब्ने ज़ियाद से कह दीं, फिर उन वसिय्यतों के जारी करने के बारे में उस से दरियाफ्त किया, इब्ने ज़ियाद ने कहा कि कर्ज़ की अदाइगी के बारे में तुम्हे इख़्तियार है जो चाहो करो। और हुसैन के मुतअ़ल्लिक़ यह है कि अगर वह हमारी तरफ नहीं आयेंगे तो हमें उन से कोई मतलब नहीं और अगर आयेंगे तो हम उन्हें भी नहीं छोड़ेंगे और लाश के बारे में हम तुम्हारी बात नहीं सुनेंगे जिस शख़्स ने हमारी मुख़ालफत की और लोगों में इस क़दर इन्तिशार पेदा किया उस की लाश किसी रिआयत की मुस्तहिक़ नहीं। और एक रिवायत में यूं है कि लाश के मुतअ़ल्लिक़ उस ने कहा कि क़त्ल के बाद हमें उस से कोई सरोकार नहीं तुम जो चाहो करो। (तबरी:2/205)

## हज़रत मुस्लिम और इब्ने ज़ियाद

इस के बाद हज़रत मुस्लिम और इब्ने ज़ियाद में जो गुफ़्तुगू हुई वह ख़ास तौर पर तवज्जोह के क़ाबिल है। इस लिये कि इस से हज़रत मुस्लिम और उन को भेजने वाले हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के मौक़ुफ की पूरी वज़ाहत हो जाती है और साफ तौर

पर ज़ाहिर हो जाता है कि उन पर जो बग़ावत का इल्ज़ाम लगाया जाता है वह सरा सर बातिल और ग़लत है।

वसिय्यत के मुतअ़ल्लिक़ इब्ने सअ़द को जवाब देने के बाद इब्ने ज़ियाद ने हज़रत मुस्लिम से कहा इब्ने अक़ील सब लोग यहां मुत्तहिद होकर अम्न के साथ रहते थे और सब यकज़ान थे, तुम यहां इस लिये आए थे कि लोगों को परेशान करो, उन में तफ़्रिक़ा डालो और आपस में फसाद कराओ ताकि एक जमाअ़त दूसरी जमाअ़त पर हमला करे और ख़ूं रेज़ी हो।

आप ने फरमाया नहीं हरगिज़ नहीं। मैं इस लिये नहीं आया था बल्कि कूफा के लोगों ने कि तेरे बाप ने यहां के नेक लोगों को क़त्ल कया और उन का ख़ून बहाया और इस्लाम का तरीक़ा छोड़ कर उन के साथ क़ैसर व किस्रा की तरह पेश आया, तो हम इस लिये आए कि हम उनकी ग़लत आदात व अत्वार की इस्लाह करें और उन को अदल व इंसाफ और तालीमाते क़ुरआन की दावत दें। इब्ने ज़ियाद ख़बीस ने कहा ओ बदकार! तू और तेरा यह दावा, तब तू मदीना में शराब पिया करता था तब तुझे अदल व इंसाफ और तालीमाते क़ुरआन का ख़्याल न आया। आप ने फरमाया मैं शराब पीता था? वल्लाह! खुदा ख़ूब जानता है कि तू कज़्ज़ाब है और तू भी जानता है कि मैं झूठ बोल रहा हूं। शराब तो वह पियेगा जो बेगुनाह मुसलमानों का ख़ून पिया करता है, खुदाए तआ़ला ने जिस का क़त्ल हराम किया उसे क़त्ल करता है, जिस ने कोई ख़ून नहीं बहाया उस का ख़ून बहाता है, बुग़ज़ व हसद और बद गुमानी की वजह से ख़ूं रेज़ी करता है, फिर इस तरह भूल जाता है जैसे कुछ किया ही नहीं। इब्ने ज़ियाद ने कहा खुदा मुझे मारे अगर मैं तुझे इस तरह क़त्ल न करूं कि इस्लाम में आज तक काई उस तरह क़त्ल न हुआ हो। आप ने फरमाया बेशक इस्लाम में जो ज़ुल्म आज तक न हुआ हो उस के ईजाद का तुझ से ज़्यादा मुस्तहिक़ कोई नहीं। बुरी तरह क़त्ल करना और बुरी तरह मुस्ला करना तेरा ही हिस्सा है और दुनिया भर में तुझ से बढ़ कर इसका कोई सज़ावार नहीं।

इन बातों को सुनकर ज़ालिम इब्ने ज़ियाद झुल्ला उठा आपके वालिद हज़रत अक़ील और हज़रत अली व हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम को गालियां देने लगा तो आप बिल्कुल ख़ामोश हो गए। (तबरी:2/206)

## आप की शहादत

अब ज़ालिम इब्ने ज़ियाद ने हुक्म दिया कि इसे महल की छत पर ले जाओ और बुरी तरह क़त्ल करने के बाद सर को धड़ के साथ नीचे गिरा दो ताकि हड्डियां चकना चूर हो जाएं। आप ने इब्ने अश्अ़स की तरफ देख कर फरमाया कि तू ने मुझे अमान न दी होती तो ख़ुदा की क़सम मैं इस तरह अपने को हवाले न करता। अब मुझ को बचाने के लिये अपनी तलवार उठा और बरीउज़्ज़िम्मा हो मगर वह बिल्कुल ख़ामोश रहा। फिर आप ने इब्ने ज़ियाद से कहा अगर हमारे और तुम्हारे दरमियान कुछ भी क़राबत होती (यानी तेरा बाप ज़ियाद अबू सुफियान की सुल्ब से होता) तो मुझे तू क़त्ल न करता।

ज़ालिम इब्ने ज़ियाद ने बुकैर बिन हुमरान असदी को बुलाया जिस की तलवार से तौआ़ के घर में आप का होंट कटा था, जब वह आया तो इब्ने ज़ियाद ने हुक्म दिया कि कोठे पर ले जा कर इस का सर क़लम कर दो। जब हज़रत मुस्लिम को कोठे पर ले चले तो आप इन्तिहाई सब्र व सुकून के साथ तक्बीर व इस्तिग़फार और दुरूद शरीफ पढ़ रहे थे और साथ में यह भी कह रहे थे कि ख़ुदावन्द! हमारा और उन लोगों का इंसाफ तेरे हाथ है जिन्हों ने हमें धोका दिया, हम से झूठ बोले और हमें ज़लील किया। बुकैर ने आप को शहीद कर दिया और सरे मुबारक को जिस्म के साथ नीचे फेंक दिया। *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।* (तबरी:2/207)

यह वाक़िआ़ 3 ज़िल्-हिज्जा 60 हिजरी का है। (सवानेहे करबला:94)

हज़रत मुस्लिम की शहादत के बाद कूफा वालों पर इस क़द्र ख़ौफ और दहश्त छा गई कि लोग घरों से निकलना ख़तरनाक समझते थे।

हर तरफ सन्नाटा था और किसी को एक दूसरे की ख़बर न थी। यहां तक कि वही हानी बिन उर्वा जिन के क़त्ल की अफ्वाह के सबब गवर्नर हाउस खिंची हुई तलवारें के घेरे में आ गया था, जब इब्ने ज़ियाद ने हुक्म दिया इसे बाज़ार में ले जा कर क़त्ल करो और सिपाही हानी को मश्कें बांध कर ले चले तो वह पुकार-पुकार कर कहते कहां हैं मेरे क़बीलए बनी मज़हज के लोग, कहां हैं मेरे घर वाले, मेरी जान क्यों नहीं बचाते मगर एक आदमी भी नज़र नहीं आया जो हानी की मदद करता, जब उन्हें हर तरफ से मायूसी हुई तो ज़ोर लगा कर अपना हाथ रस्सी से खींच लिया और कहा अरे कोई लाठी नहीं, कोई छड़ी नहीं, कोई पत्थर नहीं, अरे क्या ऊंट की हड्डी भी नहीं कि मैं उसी को लेकर अपनी जान बचाने के लिये हाथ पांव मारूं। सिपाहियों ने फिर उन्हें रस्सी में बांध लिया और तुरकी गुलाम जिस का नाम रशीद था उसने आप को शहीद कर दिया। *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।*

(तबरी:2/208)

## शहादत फर्ज़न्दाने हज़रत मुस्लिम

हज़रत मुस्लिम ने गवर्नर हाउस के घेराव या तौआ के घर क़ियाम के वक़्त बच्चों को क़ाज़ी शुरैह के यहां पहुंचा दिया था जब इब्ने ज़ियाद को मालूम हुआ कि हज़रत मुस्लिम के साथ उन के दो बच्चे भी आए थे, तो उस ने पूरे शहर कूफा में ऐलान करवाया कि जो शख़्स मुस्लिम के बच्चों को छुपाएगा उसे सख़्त सज़ा दी जाएगी और जो उन को हमारे पास लाएगा वह इनाम व इकराम पाएगा। इब्ने ज़ियाद के इस ऐलान को सुन कर क़ाज़ी साहब घबरा गए, फौरन ज़ादे रहा तैयार करवाया और अपने बेटे असद से कहा कि आज बाबुल इराक़ीन से एक क़ाफिला मदीना मुनव्वरा की तरफ जाने वाला है, इन बच्चों को ले जा कर उसी क़ाफिला में किसी मुहिब्बे अहले बैत के सुपुर्द कर दो और ताकीद कर दो कि इनको बहिफाज़त मदीना मुनव्वरा पहुंचा दे, असद जब उन बच्चों को ले कर बाबुल इराक़ीन पहुंचा तो मालूम हुआ कि

क़ाफ़िला थोड़ी देर पहले चला गया। वह बच्चों को लेकर उसकी राह पर बड़ी तेज़ी के साथ चला और जब क़ाफ़िला की गर्द नज़र आई तो बच्चों को गर्द दिखा कर कहा देखो वह क़ाफ़िला की गर्द नज़र आ रही है, तुम लोग जल्दी जा कर उस में मिल जाओ, मैं वापस जाता हूं। यह कह कर वह वापस चला आया और बच्चे तेज़ी के साथ चलने लगे मगर थोड़ी देर बाद गर्द ग़ाइब हो गई और उन्हें क़ाफ़िला न मिला। नन्हे बच्चे उस तन्हाई में एक दूसरे से गले मिल कर रोने लगे और मां-बाप को पुकार-पुकार कर जी जान खोने लगे।

इब्ने ज़ियाद का ऐलान सुन कर मालो-ज़र की हवस रखने वाले सिपाही बच्चों की तलाश में निकले हुए थे, थोड़ी देर बाद उन्हों ने बच्चों को पा लिया, पकड़ कर इब्ने ज़ियाद के पास पहुंचा दिया, उस ने हुक्म दिया कि इन बच्चों को उस वक़्त तक जेल में रखा जाए जब तक अमीरुल मोमिनीन यज़ीद से पूछ न लूं कि इन के साथ क्या सुलूक किया जाए।

जेल का दारोग़ा मशकूर नामी मुहब्बे अहले बैत था, उसे बच्चों की बेकसी पर बहुत तरस आया। उस ने फ़ैसला कर लिया कि बच्चों की जान हर हाल में बचानी चाहिये चाहे अपनी जान चली जाए। चुनांचे उस ने रात के अंधेर में बच्चों को जेल से निकाला, अपने घर ला कर खाना खिलाया, अपनी अंगूठी बतौर निशानी दी और शहर के बाहर क़ादसिया की राह पर ला कर कहा कि तुम लोग इसी रास्ते पर चले जाओ, जब क़ादसिया पहुंच जाना तो कोतवाल से मिलना, हमारी अंगूठी दिखलाना और सारे हालात बताना, वह हमारा भाई है, तुम लोगों को बहिफ़ाज़त मदीना मुनव्वरा पहुंचा देगा। दोनों बच्चे क़ादसिया के राह पर चल पड़े मगर चूंकि उन्हें भी इस नन्हीं उम्र में शहादत से सराफ़राज़ होना था इस लिये वह रास्ता भूल गए, रात भर चलते रहे और जब सुबह हुई तो घूम फिर के उसी जगह पहुंचे कि जाहां से कूफ़ा के बाहर क़ादसिया के रास्ते पर चले थे। नन्हा सा कलेजा ख़ौफ़ से दहल गया कि कहीं फिर कोई न पकड़ कर इब्ने ज़ियाद के पास पहुंच

दे, क़रीब में एक खोखला दरख़्त नज़र आया, वहीं एक कुंआं भी था, उसी दरख़्त की आड़ में जाकर बैठ गए, थोड़ी देर बाद जब लौंडी पानी भरने आई और जब इन बच्चों को छुपे हुए बैठे देखा तो क़रीब आई और उनके नूरानी चेहरों में शाने शहज़ादगी देख कर कहा "शहज़ादो! तुम लोग कौन हो और यहां कैसे छुपे बैठे हो? उन्हों ने कहा कि हम यतीम व बेकस हैं और राह भटके हुए मुसीबत ज़दा मुसाफिर हैं। लौंडी ने कहा कि तुम्हारे बाप का क्या नाम है? बाप का लफ्ज़ सुनते ही उनकी आंखों से आंसू जारी हो गए, उस ने कहा ग़ालिबन तुम लोग मुस्लिम बिन अक़ील के फर्ज़न्द हो, अब वह फूट-फूट कर रोने लगे, उसने कहा ग़म न करो, मैं उस बीबी की लौंडी हूं जो मुहिब्बे अहले बैत है, आओ चलो मैं उस के पास ले चलती हूं। दोनों साहिब ज़ादे उस के साथ हो लिये, लौंडी उन को अपनी मालिका के पास ले गई और सारा वाक़िआ बयान किया। उसे साहिब ज़ादों की तशरीफ आवुरी पर बेइन्तिहा मसर्रत हुई, इस खुशी में उस नेक बीबी ने लौंडी को आज़ाद कर दिया और साहिब ज़ादों के साथ बड़ी मुहब्बत के साथ पेश आई, उन्हें हर तरह तसल्ली व तशफ्फी दी कि फिक्र न करो और लौंडी से कहा कि इनकी तशरीफ आवुरी का राज़ पोशीदा रखना, मेरे शौहर हारिस को न बताना।

इधर इब्ने ज़ियाद को जब मालूम हुआ कि मशकूर दारोग़ए जेल ने दोनों बच्चों को रिहा कर दिया है तो उस ने मशकूर को बुला कर पूछा कि तू ने मुस्लिम के बच्चों को क्या किया, उन्हों ने कहा कि मैं ने अल्लाह व रसूल जल्ल जलालुहू व सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की रज़ा व खुश्नूदी के लिये उनको रिहा कर दिया है, इब्ने ज़ियाद ने कहा कि तू मुझ से डरा नहीं, उन्हों ने कहा जो अल्लाह से डरता है वह किसी और से नहीं डरता। इब्ने ज़ियाद ने कहा तुझे उन बच्चों को रिहा करने में क्या मिला? उन्हों ने कहा मुझे उम्मीद है कि उन को रिहा करने के सबब हुज़ूर पुर नूर सैयिद आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम क़ियामत के दिन मेरी शफाअ़त फरमाएंगे, अल्बत्ता तू मुस्लिम

बिन अक़ील को शहीद करने के सबब इस नेअ्मत से महरूम रहेगा। इब्ने ज़ियाद इस जवाब पर ग़ज़बनाक हो गया और कहा मैं अभी तुझे सख़्त सज़ा देता हूं। उन्हों ने कहा <u>एक नहीं मशकूर की अगर हज़ार जानें हों तो सब इन पर कुर्बान हैं</u>। इब्ने ज़ियाद ने जल्लाद से कहा इसे इतने कोड़े मारो कि मर जाए और फिर इस का सर तन से जुदा कर दो, जल्लाद ने जब कोड़े मारने शुरू किये तो मशकूर ने पहले कोड़े पर कहा *बिस्मिल्लाहिर् रहमानिर्* रहीम, दूसरे पर कहा इलाहल् आलमीन! मुझे सब्र अता फरमा। तीसरे पर कहा खुदावन्द! मुझे बख़्श दे। चौथे पर कहा इलाहल् आलमीन! मुझे अहले बैते अत्हार के पास पहुंचा दे। फिर उस के बाद ख़ामोश हो गए और जल्लाद ने अपना काम तमाम कर दिया। *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।*

उधर वह नेक बीबी दिल व जान से बच्चों की ख़िदमत में दिन भर लगी रही और हर तरह से उन की दिल जोई करती रही, फिर रात में खाना खिला कर उन को अलग एक कमरे में सुला कर वापस आई थी कि उस का शौहर हारिस आ गया, औरत ने पूछा आज दिन भर आप कहां रहे, हारिस ने कहा दारोग़ए जेल मशकूर ने मुस्लिम बिन अक़ील के बच्चों को क़ैद से रिहा कर दिया तो अमीर उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद ने ऐलान किया कि जो शख़्स उन को पकड़ कर लाएगा उसे बहुत इनाम दिया जाएगा, मैं उन्हीं बच्चों की तलाश में दिन भर परेशान रहा, यहां तक कि इसी भाग दौड़ में मेरा घोड़ा भी मर गया और मुझे उन की तलाश में पैदल चलना पड़ा, औरत ने कहा अल्लाह से डरो और अहले बैते नुबुव्वत के बारे में इस तरह का ख़्याल दिल से निकाल दो, वह कहने लगा चुप रह, तुझे क्या मालूम जो शख़्स उन बच्चों को पा जाएगा, उसे इब्ने ज़ियाद इनाम व इक्राम से माला माल कर देगा, इसी लिये और भी बहुत से लोग उन बच्चों की तलाश में दिन भर लगे रहे, औरत ने कहा कितने बद नसीब हैं वह लोग जो दुनिया की ख़ातिर उन यतीम बच्चों को दुश्मन के हवाले करने के लिये तलाश में लगे हुए हैं और दुनिया के ऐवज़ अपना दीन बरबाद कर रहे हैं, कल मैदाने महशर में वह रसूले खुदा को क्या मुंह दिखाएंगे। हारिस

का दिल सियाह हो चुका था, बीवी के समझाने का उस पर कुछ असर नहीं हुआ, कहा नसीहत की ज़रूरत नहीं, नफ़ा व नुक़्सान मैं खुद समझता हूं, चल तू खाना ला, वह खाना लाई और हारिस बद बख़्त खा कर सो गया।

आधी रात के बाद बड़े भाई मुहम्मद ने ख़्वाब देखा और बेदार होकर छोटे भाई को जगाते हुए कहा उठों अब सोने का वक़्त नहीं रहा, हमारी शहादत का भी वक़्त क़रीब आ गया है, अभी मैं ने ख़्वाब में अब्बा जान को देखा कि वह हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम, हज़रत अली मुरतज़ा, हज़रत फ़ातिमा ज़हरा और हज़रत हसन मुज्तबा (रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुम) के साथ जन्नत की सैर कर रहे हैं और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम अब्बा जान से फ़रमा रहे हैं कि तुम चले आए और बच्चों को ज़ालिमों में छोड़ आए, अब्बा जान ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! वह भी अन्क़रीब आने ही वाले हैं। छोटे ने कहा भाई जान! मैं ने भी इसी तरह का ख़्वाब देखा है, क्या सच मुच हम लोग कल सुबह क़त्ल कर दिये जायेंगे, हाए! एक दूसरे को ज़िबह होते हुए हम कैसे देख सकेंगे। यह कहा कर दोनों भाई एक दूसरे के गले में बाहें डाल कर लिपट गए और फूट-फूट कर रोने लगे। उन के रोने और चिल्लाने से हारिस बद बख़्त की आंख खुल गई, ज़ालिम ने बीवी को जगा कर पूछा यह बच्चों के रोने की आवाज़ कहां से आ रही है? औरत बेचारी सहेम गई, उस ने कुछ जवाब न दिया, ज़ालिम ने खुद उठ कर चिराग़ जलाया और उस कमरे की तरफ़ गया जहां से आवाज़ आ रही थी, जब अन्दर दाख़िल हुआ तो देखा दो बच्चे रोते-रोते बेहाल हो रहे हैं, पूछा तुम कौन हो? चूंकि वह इस घर को अपनी जाए पनाह समझे हुए थे इस लिये उन्हों ने साफ़ कह दिया कि हम मुस्लिम बिन अक़ील के यतीम बच्चे हैं। ज़ालिम यह सुनते ही ग़ुस्से से बेक़ाबू हो गया और कहा कि मैं सारा दिन ढूंढते-ढूंढते परेशान हो गया और तुम लोग हमारे ही घर में ऐश का बिस्तर जमाए हुए हो, यह कहते हुए आगे बढ़ा और निहायत

बेरहमी के साथ उन को मारना शुरू कर किया, दोनों भाई शिद्दते करब से चीख़ने लगे, औरत बेतहाशा दौड़ी हुई आई और हारिस के क़दमों पर अपना सर रख कर निहायत आजिज़ी के साथ रोती हुई कहने लगी कि अरे यह फातिमा के राज दुलारे हैं, इनकी चांद जैसी सूरतों पर रहम खा, ले मेरा सर कुचल कर अपनी हवस की आग बुझा ले लेकिन फातिमा के जिगर पारों को बख़्श दे। हारिस बद बख़्त ने उसे इतने ज़ोर की ठोकर मारी कि वह बेचारी एक खम्बे से टकरा कर लहू लहान हो गई, ज़ालिम बच्चों को मारते-मारते जब थक गया तो दोनों भाइयों की मश्कें कस दीं और ज़ुल्फों को खींच कर आपस में एक दूसरे से बांध दिया, उस के बाद यह कहता हुआ कोठरी के बाहर निकल आया कि जिस क़द्र तड़पना है सुबह तक तड़प लो, दिन निकलते ही मेरी चमकती हुई तलवार तुम्हें हमेशा के लिये मौत की नींद सुला देगी।

सुबह होते ही ज़ालिम ने तलवार उठाई, ज़हेर में बुझा हुआ ख़ंजर संभाला और ख़ूं ख़्वार भेड़िये की तरह कोठरी की तरफ बढ़ा, नेक बख़्त बीवी ने दौड़ कर पीछे से उस की कमर थाम ली। हारिस ने इतने ज़ोर का उसको झटका दिया कि सर एक दीवार से टकरा गया और वह आह करके ज़मीन पर गिर पड़ी और जब वह कोठरी में दाख़िल हुआ तो हाथ में नंगी तलवार और चमकता हुआ ख़ंजर देख कर दोनों भाई कांपने लगे, बद बख़्त ने आगे बढ़ कर दोनों भाइयों की ज़ुल्फें पकड़ीं और निहायत बेदर्दी के साथ उन्हें घसीटता हुआ बाहर लाया, तक्लीफ से दोनों भाइ तिलमिला उठे, रो-रो कर फरियाद करने लगे लेकिन ज़ालिम को तरस न आया, सामान की तरह एक ख़च्चर पर लाद कर दरियाए फुरात की तरफ चल पड़ा और जब उस के किनारे पहुंचा तो उन्हें ख़च्चर से उतार कर मश्कें खोलीं और सामने खड़ा किया। फिर मियान से तलवार निकाला ही था कि इतने में उस की बीवी हांपती कांपती और गिरती पड़ती आ पहुंची। आते ही उस ने पीछे से अपने शौहर का हाथ पकड़ लिया और ख़ुशामद करते हुए कहा ख़ुदा के लिये अब भी मान जाओ, अहले बैते रिसालत के ख़ून से अपना हाथ रंगीन

मत करो। देखो बच्चों की नन्ही जान सोखी जा रही है। तलवार सामने से हटा लो।

हारिस पर शैतान पूरी तरह सवार था, ज़ालिम ने बीवी पर वार कर दिया, वह ज़ख़्मी होकर गिरी और तड़पने लगी, बच्चे यह मन्ज़र देख कर सहेम गए। अब बद बख़्त अपनी ख़ून आलूद तलवार लेकर बच्चों की तरफ बढ़ा, छोटे भाई पर वार करना ही चहाता था कि बड़ा भाई चीख़ उठा, खुदा के लिये पहले मुझे ज़िबह करो, मैं अपने भाई की तड़पती हुई लाश नहीं देख सकूंगा। और छोटे भाई ने सर झुकाते हुए कहा कि बड़े भाई के क़त्ल का मंज़र मुझ से नहीं देखा जा सकेगा, खुदा के वास्ते पहले मेरा ही सर क़लम करो।

ज़ालिम की तलवार चमकी, दो नन्ही चीख़ें बुलंद हुई और यतीम बच्चों के कटे हुए सर ख़ून में तड़पने लगे। (नक़्शे वफा वग़ैरा)

*इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।*

*फूले नौ दो दिन बहारे जांफज़ा दिखला गए*
*हसरत उन गुंचों पे है जो बिन खिले मुरझा गए*

# क़ातिल का अंजाम

हारिस बद बख़्त ने जब बच्चों को शहीद कर दिया तो उनकी लाशों को दरियाए फुरात में फेंक दिया और सरों को तोबड़े में रख कर ले गया और इब्ने ज़ियाद के सामने पेश किया, उस ने कहा इस में क्या है? हारिस ने कहा इनाम व इक्राम के लिये आप के दुश्मनों का सर काट कर लाया हूं। इब्ने ज़ियाद ने कहा यह मेरे दुश्मन कौन हैं? कहा मुस्लिम बिन अक़ील के फर्ज़न्द, इब्ने ज़ियाद यह सुनते ही ग़ज़बनाक हो गया और कहा कि तुझ को क़त्ल करने का हुक्म किस ने दिया था, कम बख़्त मैं ने अमीरुल मोमिनीन यज़ीद को लिखा है कि मुस्लिम बिन अक़ील के फर्ज़न्द गिरफ्तार कर लिये गए हैं, अगर हुक्म हो तो मैं उन्हें आप के पास ज़िंदा भेज दूं। अगर यज़ीद ने ज़िंदा भेजने का हुक्म दिया

तो फिर मैं क्या करूंगा? तू मेरे पास उन को ज़िंदा क्यों नहीं लाया? हारिस ने कहा मुझे अंदेशा था कि शहर के लोग मुझ से छीन लेंगे। इब्ने ज़ियाद ने कहा अगर तुझे छीन लेने का अंदेशा था तो किसी महफ़ूज़ जगह पर उन को ठहरा कर मुझे इत्तिलाअ् कर देता, मैं सिपाहियों के ज़रिये मंगवा लेता। तू ने मेरे हुक्म के बग़ैर उन को क़त्ल क्यों किया? फिर इब्ने ज़ियाद ने मज्मा पर निगाह डाली और एक शख़्स जिस का नाम मक़ातिल था उस से कहा कि इस बद बख़्त की गर्दन मार दे, चुनांचे हारिस की गर्दन मार दी गई और वह ख़सिरद् दुनिया वल-आख़िरत का मिस्दाक़ हुआ। (रौज़तुश् शुह्दाः150)

*न ख़ुदा ही मिला न विसाले सनम*
*न इधर के रहे न उधर के रहे*

# करबला का ख़ूनी मंज़र

## हज़रत इमाम हुसैन की मक्का शरीफ से रवानगी

### रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

الحمدللہ الذی خلق الارض والسماوات والصلاۃ والسلام علی صاحب الفضل والشفاعات وعلی الحسین ورفقائہ الذین فازوا بالشھادات ۔اما بعد۔فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ۔وَلَنَبْلُوَنَّکُمْ بِشَیْئٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوْعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْاَمْوَالِ وَالْاَنْفُسِ وَالثَّمَرَاتِ وَبَشِّرِ الصّٰبِرِیْنَ۔اَلَّذِیْنَ اِذَا اَصَابَتْھُمْ مُّصِیْبَۃٌ قَالُوْا اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ۔ صَدَقَ اللّٰہُ العلی العظیم وصدق رسولہ النبی الکریم ونحن علی ذالک لمن الشاھدین والشاکرین والحمدللہ رب العالمین۔

एक मर्तबा हम और आप सब लोग मिल कर मक्का के सरकार मदीना के ताजदार दो आलम के मुख़्तार जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और उन की आल व अस्हाब पर अक़ीदत व मुहब्बत के साथ दुरूदो-सलाम की डालियां पेश करें।

اللھم صل علی سیدنا ومولانا محمد معدن الجود والکرم وعلی الہ واصحابہ وبارک وسلم۔

*अल्लाहुम्मा सल्लि अ़ला सैय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिम् मअ्दनिल् जूदि वल्-करम व अला आलिही व अस्हाबिही व बारिक् व सल्लिम्।*

हम्दो-सलात और आयते करीमा व दुरूद शरीफ के पढ़ने की बरकत हासिल करने के बाद हम आप हज़रात के सामने पहले एक नज़्म के चन्द अश्आ़र पेश करते हैं, उन्हें बग़ौर समाअ़त फरमाएं।

*जो जवां बेटे की मैय्यित पर न रोया वो हुसैन*
*जो दहेकती रेत के बिस्तर पर सोया वो हुसैन*
*जिस ने अपने ख़ून से दुनिया को धोया वो हुसैन*
*जिसने सबकुछ खो के फिर भी कुछ न खोया वो हुसैन*

*मर्तबा इस्लाम का जिस ने दोबाला कर दिया*
*ख़ून ने जिसके दो आलम में उजाला कर दिया*

*शेर के मानिन्द जो मक़्तल में आया वो हुसैन*
*जो बहत्तर ज़ख़्म खा कर मुस्कुराया वो हुसैन*
*राहे हक़ में जिस ने अपना सर कटाया वो हुसैन*
*करबला में जिस ने अपना घर लुटाया वो हुसैन*

*ज़ेरे ख़ंजर जिस का सज्दा अज़्मते इस्लाम है*
*जिस का हर तेवर रसूले पाक का पैग़ाम है*

*अल्लाह! अल्लाह राकिबे दोशे पयम्बर वो हुसैन*
*फ़ातिमा को नूरे दीदा जाने हैदर वो हुसैन*
*अज़्मतो-इख़्लास व कुर्बानी का पैकर वो हुसैन*
*करबला के ग़ाज़ियों का मीरे लश्कर वह हुसैन*

*पर्चमे हक़ ता अबद जिस का सलामी हो गया*
*ज़िंदए जावेद जिस का नामे नामी हो गया*

*दीन की ख़ातिर थी जिस की ज़िंदगी वो हुसैन*
*कट गई इस्लाम में जिस की जवानी वो हुसैन*
*ख़ुल्द में हक़ ने की जिस की मेहमानी वो हुसैन*
*मिल गई जिस को हयाते जावेदानी वो हुसैन*

*नामे नामी जिस का लौहे दहर पर मरक़ूम है*
*फ़र्श से ता अ़र्श जिस की अज़्मतों की धूम है*

اللهم صل على سيدنا ومولانا محمد وعلى اله واصحابه وبارك وسلم۔

*अल्लाहुम्मा सल्लि अ़ला सैय्दिना व मौलाना मुहम्मदिंव व अ़ला आलिही व अस्हाबिही व बारिक् व सल्लिम्।*

इंसान के लिये जहां पर मरना या शहीद होना मुक़द्दर होता है, मिन जानिबिल्लाह ऐसे हालात व अस्बाब पैदा होते हैं कि हज़ार रुकावटों के बावजूद इंसान आख़िरी वक़्त में उसी जगह पर जाने के लिये मजबूर हो जाता है। सैयिदुश शुहदा हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का करबला में शहीद होना अज़ल में मुक़द्दर हो चुका था, उन के लिये ऐसे हालात पैदा हुए कि अब करबला की

तरफ जाना उन का ज़रूरी हो गया। हज़रत मुस्लिम बिन अकील रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ख़त के आने के बाद इमाम आली मक़ाम को कूफ़ियों की दरख़्वास्त क़बूल करने में कोई मअ्क़ूल उज़्र बाक़ी न रहा तो आप इराक़ जाने के लिये तैयार हो गए और सफर के अस्बाब दुरुस्त होने लगे।

जब मक्का वालों को आप की तैयारी का इल्म हुआ तो उन्हों ने आप का इराक़ की तरफ जाना पसंद न किया। जलीलुल क़दर सहाबा हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर, हज़रत जाबिर, हज़रत अबू सईद ख़ुदरी और हज़रत अबू वाक़िद लैसी वग़ैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम आप के आए और अर्ज़ किया कि आप कूफ़ा हरगिज़ न जाएं कि वहां के लोग दिरहम व दीनार के बन्दे हैं। उन्हों ने आप के वालिद हज़रत अली और आप के भाई हज़रत हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के साथ खुली हुई ग़द्दारी और बेवफाई की है, उन का हाकिम उन पर मुसल्लत है और उसी की हुकूमत क़ाइम है तो जान लीजिये कि कूफ़ा वाले आप को जंगो-जिदाल के लिये बुला रहे हैं। हमें अंदेशा है कि वह लोग आप को धोका देंगे, झुठलाएंगे और आप को बेयारो-मददगार छोड़ देंगे बल्कि हुकूमते वक़्त से मिल कर आप पर हम्ला करेंगे और बुलाने वाले ही आप के सब से बड़े दुश्मन साबित होंगे। हज़रत इमाम ने फरमाया कि मैं ख़ुदा से ख़ैर का तालिब हूं, देखिये क्या होता है? (तबरी:2/211)

और हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने जब आप से सफरे इराक़ को मुल्तवी करने के लिये कहा तो आप ने फरमायाः حَدَّثَنِىْ اَبِىْ اَنَّ لِمَكَّةَ كَبْشًا بِهٖ يَسْتَحِلُّ حُرْمَتَهَا فَمَا اُحِبُّ اَنْ اَكُوْنَ اَنَا ذٰلِكَ الْكَبْشُ मैं ने अपने वालिदे गिरामी हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से हदीस सुनी है कि एक मेंढा मक्का मुअज़्ज़मा की हुर्मत को हलाल कर देगा तो मैं वह मेंढा नहीं बनना चाहता। (सवाइक़े मुहर्रिक़ा:120)

और यह भी रिवायत है कि जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ने इस सफर से रोकने के लिये इस्रार किया और कहा कि आप मस्जिदे

हराम में रहिये, मैं आप की मदद के लिये लोगों को जमा करूंगा तो आप ने फरमाया कि अगर एक बालिश्त भर मैं इस मस्जिद के बाहर क़त्ल किया जाऊं तो वल्लाह मैं इस से बेहतर समझता हूं कि एक बालिश्त भर मस्जिद के अन्दर क़त्ल किया जाऊं। बख़ुदा अगर मैं हशरातुल अर्ज़ के किसी सूराख़ में भी छुपूंगा तो लोग मुझे वहां से भी निकाल लेंगे और जो सुलूक मेरे साथ करना चाहते हैं, करेंगे। (तबरी:2/213)

ग़रज़ कि बड़े-बड़े सहाबए किराम आप को इस सफर से रोकने के लिये बहुत इसरार करते रहे और आख़िर तक यही कोशिश करते रहे कि आप मक्का मोअज़्ज़मा से तशरीफ न ले जाएं मगर उन की कोशिशें कार आमद न हुईं यहां तक कि इमाम आली मक़ाम 3 ज़िल हिज्जा 60 हिजरी को अपने अहले बैत और मवाली व ख़ुद्दाम कुल 82 नुफूस के साथ मक्का शरीफ से इराक़ के लिये रवाना हो गए।

बात अस्ल में यह थी कि आप को गिरफ्तार होने का अंदेशा था और यह राज़ उस वक़्त खुला जब फरज़दक़ शाइर से आप की रास्ते में मुलाक़ात हुई और उस ने पूछा कि फर्ज़न्दे रसूल! हज के दिन बिल्कुल क़रीब आ गए तो इतनी जल्दी आप ने किस लिये फरमाई कि हज भी न हो सका? इमाम ने जवाब दिया कि अगर मैं इतनी जल्दी न करता तो वहीं गिरफ्तार कर लिया जाता। (तबरी:2/214)

हज़रत के इस जवाब से मालूम हो गया कि अय्यामे हज क़रीब होने के बा वजूद आप मक्का मोअज़्ज़मा से क्यों निकल पड़े। और यह भी वाज़ेह हो गया कि सहाबए किराम के इसरार को क़बूल न फरमाने का सबब क्या था, ज़ाहिरी वजह तो वही थी जो हज़रत इमाम ने फरज़दक़ से बयान फरमाई और हक़ीक़त में शहादत की कशिश आप को करबला की तरफ खींचे लिये जा रही थी। आप का हाल उस वक़्त वही था जो किसी शाइर ने कहा है:

*दो क़दम भी नहीं चलने की है ताक़त मुझ में*
*इश्क़ खींचे लिये जाता है मैं क्या जाता हूं*

# करबला जाने वाले अहले बैत

इस सफर में हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के तीन साहिब ज़ादे आप के हमराह थे। हज़रत अली औसत जिन को इमाम ज़ैनुल आबिदीन कहते हैं। यह हज़रत शहर बानू के बतन से थे, उस वक्त उन की उम्र 22 साल थी और बीमार थे। आप के दूसरे साहिब ज़ादे अली अकबर थे जो यअ़ला बिन्ते अबी मुर्रह के शिकम से हैं, उन की उम्र 18 बरस थी, यह करबला में शहीद हुए। इमाम आली मकाम के तीसरे फर्ज़न्द जिन्हें अली असग़र कहते हैं, इनकी वालिदा कबीलए बनी कुज़ाआ से थीं। यह शीरख़्वार बच्चे थे। आप की एक साहिब ज़ादी हज़रत सकीना भी हमराह थीं जिन की निस्बत हज़रत क़ासिम के साथ हुई थी, उस वक्त उनकी उम्र सात साल की थी। इनकी वालिदा इमरउल कैस इब्ने अदी की दुख़्तर कबीलए बनी कलब से थीं। इनका अक्द हज़रत मुस्अब बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साथ हुआ। और करबला में हज़रत क़ासिम के साथ इनके निकाह होने की जो रिवायत मशहूर है वह ग़लत है। उन के साथ सिर्फ आप की निस्बत हुई थी, अक्द नहीं हुआ था।

और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की दो बीवियां आप के हमराह थीं, एक शहर बानू दूसरी हज़रत अली असग़र की वालिदा।

और हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के चारों नौजवान साहिब ज़ादे हज़रत क़ासिम, हज़रत अब्दुल्लाह, हज़रत उमर और हज़रत अबू बकर इमाम आली मकाम के हम्राह थे जोकि करबला में शहीद हुए।

और हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल करीम के पांच फर्ज़न्द हज़रत अब्बास बिन अली, हज़रत उस्मान बिन अली, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अली, हज़रत मुहम्मद बिन अली और हज़रत जाफर बिन अली हज़रत इमाम के हमराह थे, सब ने शहादत पाई।

और हज़रत अकील के फर्ज़न्दों में से हज़रत मुस्लिम तो हज़रत इमाम के करबला पहुंचने से पहले ही कूफ़ा में शहीद हो चुके थे और तीन फर्ज़न्द हज़रत अब्दुल्लाह, हज़रत अब्दुर रहमान और हज़रत जाफ़र इमाम के हमराह करबला हाज़िर होकर शहीद हुए।

और हज़रत जाफर तय्यार के दो पोते हज़रत मुहम्मद व हज़रत औन हज़रत इमाम के हमराह हाज़िर होकर शहीद हुए। इनके वालिद का नाम अब्दुल्लाह बिन जाफर है। और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हकीकी भांजे हैं। इन की वालिदा हज़रत ज़ैनब, हज़रत इमाम की हकीकी बहन हैं।

साहिब ज़ादगाने अहले बैत में से कुल 17 हज़रात इमाम आली मक़ाम के हमराह मर्तबए शहादत से सरफराज़ हुए और हज़रत इमाम ज़ैनुल आबिदीन, उमर बिन हसन, मुहम्मद बिन उमर बिन अली और दूसरे कम उम्र साहिब ज़ादे कैदी बनाए गए। (सवानेहे करबला)

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जब मक्का शरीफ से बाहर निकले तो हाकिमे मक्का अम्र बिन सईद के हुक्म से एक फौजी दस्ते ने शहर से बाहर आके आप को रोका और चाहा कि वापस चलें। हज़रत इमाम ने वापस होने से इनकार कर किया, नतीजा यह हुआ कि दोनों तरफ के लोगों में मार-पीट हुई, आप के साथी बड़ी बहादुरी से फौजी दस्ते की मुज़ाहमत को रोकने पर तैयार थे इस लिये उन लोगों को हटने पर मजबूर होना पड़ा और क़ाफिला आगे रवाना हो गया।

(तबरी:2/312)

जब आप मक़ामे सफाह तक पहुंचे तो फरज़दक़ शाइर से मुलाक़ात हुए, आप ने उस से कूफा वालों का हाल दरियाफ्त फरमाया, कहा कि उन के दिल आप की तरफ हैं, लेकिन उन की तलवारें बनी उमैया के साथ होंगी। आप ने फरमाया तुम सच कहते हो लेकिन हर बात अल्लाह के हाथ में है वह जो चाहता है करता है। अगर अल्लाह ने हमारी ख़्वाहिशें के मुताबिक़ किया तो हम उस का शुक्र अदा करेंगे। और अगर क़ज़ाए इलाही हमारे मतलब के ख़िलाफ हुई तो इंसान के

लिये यही क्या कम है कि उस की नियत में खुलूस और उस के दिल में पारसाई हो। (तबरी:2/214)

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरज़दक़ से गुफ्तगू करने के बाद जब आगे बढ़े तो आप के भांजे हज़रत मुहम्मद व औन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा रास्ते में आकर आप से मिले और अपने वालिदे गिरामी हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफर तैय्यार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का ख़त आप की ख़िदमत में पेश किया, उस में लिखा था कि मैं आप को खुदा का वास्ता देता हूं कि आप मेरा ख़त देखते ही वापस चले आइये, इस लिये कि जहां आप जा रहे हैं वहां आप की हलाकत और आप के अहले बैत के तबाह होने का अंदेशा है, अगर खुदा नाख़्वास्ता आप हलाक हो गए तो दुनिया में अंधेरा छा जाएगा। आप हिदायत वालों के रहनुमा और मुसलमानों की उम्मीदों का मरकज़ हैं। सफर में जल्दी न कीजिये, इस ख़त के पीछे मैं भी आ रहा हूं।

(तबरी:2/216)

साहिब ज़ादों के बदस्त (हाथों) ख़त रवाना करने के बाद हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफर हाकिमे मक्का अम्र बिन सईद से जाकर मिले और उस से गुफ्तुगू करके इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के लिये अमान का परवाना हासिल किया और हज़रत के इत्मीनान के लिये अम्र बिन सईद के भाई यहया बिन सईद को साथ में लेकर आप के पास पहुंचे, यहया ने ख़त पेश किया और आप ने उसे पढ़ा मगर वापस आने से इनकार किया, उन लोगों ने कहा आख़िर क्या बात है? आप इराक़ जाने पर इस क़दर बज़िद क्यों हैं? हज़रत ने फरमाया मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ख़्वाब में ज़ियारत की है, आप ने उस ख़्वाब में मुझे जो हुक्म फरमाया है, मैं उसे ज़रूर पूरा करूंगा, चाहे उस में हमारा नुक़्सान हो या फाइदा। उन लोगों ने कहा वह ख़्वाब क्या है? आप ने फरमाया वह ख़्वाब न अब तक मैं ने किसी से बयान किया है और न बयान करूंगा यहां तक कि अपने खुदा से जा मिलूं। (तबरी:2/216)

*छूट जाए अगर दौलते कौनैन तो क्या ग़म*
*छुटे न मगर हाथ से दामाने मुहम्मद*
*सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम*

इमाम आली मक़ाम ने अम्र बिन सईद की तहरीर की जवाब लिख कर उन के सुपुर्द किया। हज़रत अब्दुल्लाह कुछ मजबूरियों के सबब इस सफ़र में आप के साथ नहीं जा सकते थे, उन्हों ने अपने साहिब ज़ादगान औन व मुहम्मद को आप के साथ रहने की हिदायत की और खुद वापस हो गए।

# हज़रत क़ैस की शहादत

जब आप मक़ामे हाजिर में पहुंचे तो अपने एक मुख़्लिस क़ैसे बिन मसुहर सैदावी को ख़त देकर कूफ़ा रवाना फरमाया। ख़त का मज़्मून यह था: हम्दे इलाही और सलाम के बाद मालूम हो कि मुस्लिम बिन अक़ील के ख़त से तुम लोगों के हालात की दुरुस्तगी और मेरी मदद पर तुम सब के मुत्तफ़िक़ होने का इल्म हुआ। मैं खुदाए तआला से दुआ करता हूं कि हम पर ऐहसान करे और तुम लोगों को इस बात पर अज्रे अज़ीम अता फरमाए। मैं मक्का मोअज़्ज़मा से रवाना हो चुका हूं, जब मेरा ख़त पहुंचे तो अपना इन्तिज़ाम तुम लोग जल्दी दुरुस्त कर लेना, इस लिये कि मैं चन्द ही रोज़ में इन्शा अल्लाह तुम्हारे यहां पहुंचने वाला हूं। *वस्सलाम* (तबरी:2/223)

हज़रत क़ैस जब इमाम का ख़त लेकर क़ादसिया पहुंचे तो हसीन बिन उमैर जो इब्ने ज़ियाद के हुक्म से एक फौज के साथ पहले से नाका बन्द किये हुए था, उस ने क़ैस को गिरिफ्तार करके इब्ने ज़ियाद के पास कूफ़ा भेज दिया, इब्ने ज़ियाद ने कहा अगर तुम अपनी जान बचाना चाहते हो तो गवर्नर हाउस की छत पर चढ़ कर हुसैन बिन अली के ख़िलाफ़ तक़रीर करो और उन को बुरा भला कहो, हज़रत क़ैस छत पर चढ़ गए और हम्दो-सलात के बाद फरमाया कि ऐ लोगो! रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के प्यारे नवासे हज़रत

हुसैन बिन अली इस वक़्त ख़ल्क़े ख़ुदा में सब से बेहतरीन शख़्स हैं, मैं उन्हीं का भेजा हुआ तुम लोगों के पास आया हूं, तुम्हारा फ़र्ज़ है कि इन की मदद के लिये क़दम आगे बढ़ाओ और इन की आवाज़ पर लब्बैक कहो। फिर हज़रत क़ैस ने इब्ने ज़ियाद और उस के बाप को बुरा भला कहा और हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के लिये दुआए ख़ैर की। इब्ने ज़ियाद आप की इस तक़रीर को सुन कर आग बगोला हो गया और हुक्म दिया कि इन्हें छत के ऊपर से ज़मीन पर गिरा दो कि इसके टुक्ड़े-टुक्ड़े हो जाएं, बेरहमों उन्हें नीचे गिरा दिया, जिस से उनकी हड्डियां चक्ना चूर हो गईं और वह इन्तेक़ाल कर गए। इस तरह हज़रत इमाम का यह सच्चा मुहिब आप पर क़ुर्बान हो गया। रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु (तबरी:2/224)

*अब्रे रहमत उनकी मरक़द पर गुहर बारी करे*
*हश्र में शाने करीमी नाज़ बरदारी करे*

जब आप इस मंज़िल से आगे बढ़े, एक कुएं आप की मुलाक़ात अब्दुल्लाह बिन मुतीअ़ से हुई, उन्हों ने अर्ज़ किया या इब्ने रसूलिल्लाह! मेरे मां-बाप आप पर फ़िदा हों, आप इधर कैसे तशरीफ़ लाए? हज़रत इमाम ने अपने आने की वजह बयान फ़रमाई, उन्हों ने कहा मैं आप को ख़ुदा की क़सम देता हूं कि आप हुर्मते इस्लाम, हुर्मते रसूल और हुर्मते अरब को ज़ाए न कीजिये, आप कूफ़ा हरगिज़ न जाइये, वहां आप यक़ीनन शहीद कर दिये जायेंगे। हज़रत ने फ़रमाया: لَنْ يُّصِيْبَنَآ اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا हमें वही मुसीबत पहुंच सकती है जो ख़ुदाए तआ़ला ने हमारे लिये मुक़द्दर फ़रमा दी है। (पारा:10, रुकूअ़:13)

## हज़रत ज़ुहैर से मुलाक़ात

हज़रत इमाम जब आगे बढ़े और मक़ामे ज़रवद में आप ने क़ियाम फ़रमाया, वहां कुएं के पास एक ख़ेमा नज़र आया, मालूम हुआ कि यह ज़ुहैर बिन क़ैन बजल्ली का ख़ेमा है जो हज से फ़ारिग़ होकर कूफ़ा जा रहे हैं, शुरू में उन को अहले बैते रिसालत से कोई अक़ीदत न थी,

आप ने उनके पास पैग़ाम भेजा कि मैं तुम से मिलना चाहता हूं, उन्हों ने मिलने से इनकार करना चाहा, तो उन की बीवी ने कहा वाह! क्या ग़ज़ब की बात है कि फर्ज़न्दे रसूल आप को बुलाएं और आप उनसे मिलने के लिये न जाएं। बीवी की बात से मुतअस्सिर हो कर वह हज़रत के पास गए और बहुत जल्द खुश-खुश वापस होकर अपना खेमा और कुल साज़ व सामान आप की तरफ भेजवा दिया। उस के बाद अपनी बीवी को तलाक़ दे दी और उस से कहा कि अपने भाई के साथ माइके चली जाओ, फिर अपने साथियों से कहा, तुम में से जो मेरे साथ रहना चाहे रहे और जो चाहे चला जाए और यह समझ कर जाए कि यह मेरी आख़िरी मुलाक़ात है। सब हैरान हो गए कि आख़िर माजरा क्या है? आप ने कहा मैं तुम लोगों से बयान करता हूं सुनो! जंगे बलंजर में खुदाए तआला ने हम को फतह अता फरमाई और बहुत सामाने ग़नीमत हाथ आया तो हज़रत सलमान फारसी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हम ये पूछा कि फतह और माले ग़नीमत से तुम को खुशी हुई? हम ने कहा हां बहुत खुशी हुई, उन्हों ने फरमाया एक वक़्त आएगा तुम रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के घर के जवानों के सरदार (हज़रत हुसैन) से मिलोगे और उन की मदद में उन के दुश्मनों से जंग करोगे, तो इस फतह और माले ग़नीमत से ज़्यादा खुशी हासिल करोगे। लिहाज़ा मैं तुम लोगों को अल्लाह के सुपुर्द करता हूं।

फिर हज़रत जुहैर इमाम आली मक़ाम के साथ रहे यहां तक कि करबला आप के दुश्मनों से लड़ कर शहादत से सरफराज़ हुए।

(तबरी:2/225)

## शहादते मुस्लिम की ख़बर

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अभी तक कूफा के हालात मालूम न हुए थे। जब आप मक़ामे सालबिया में पहुंचे तो बुकैर बिन शोबा असदी के ज़रिये आप को मालूम हुआ कि मुस्लिम बिन अक़ील और हानी बिन उर्वा दोनों शहीद कर दिये गए हैं और उन

की लाशों के पांव में रस्सियां बांध कर बाज़ारों में घसीटा गया। इस दर्दनाक ख़बर को सुनकर आप ने बार-बार *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन, रमतुल्लाहि अलैहिमा।* पढ़ा।

अब्दुल्लाह बिन सुलैम और मुज़री बिन मशअ़ल असदी जो हज से फ़ारिग़ होकर मक़ामे ज़रवद में हुसैनी क़ाफ़िला से आकर मिले थे, उन्हों ने इमाम आली मक़ाम से कहा कि ख़ुदा के वास्ते आप अपनी और अपने घर भर की जान ख़तरे में न डालें, यहीं से वापस हो जाएं, इस लिये कि कूफ़ा में आप का न कोई दोस्त है और न मददगार बल्कि हमें अंदेशा है कि जो लोग आप को बुलाने वाले हैं वही आप के दुश्मन हो जाएंगे, यह सुनकर हज़रत मुस्लिम के तीनों भाई खड़े हो गए और जोश में आकर कहा ख़ुदा की क़सम हम वापस नहीं होंगे, जब तक मुस्लिम के ख़ून का बदला नहीं ले लेंगे और यह हम भी उनकी तरह क़त्ल नहीं हो जायेंगे। हज़रत ने असदियों की तरफ़ देख कर फ़रमाया इन लोगों के बाद ज़िंदगी में कुछ लुत्फ़ नहीं। आपके साथियों में से बाज़ लोगों ने कहा आप की और मुस्लिम की बराबरी नहीं। जब आप कूफ़ा में पहुंच जायेंगे तो वहां के सब लोग आप की मदद के लिये दौड़ पड़ेंगे। हज़रत ने इस ख़्याल की ताईद नहीं फ़रमाई बल्कि ख़ामोश रहे। (तबरी:2/227)

फिर क़ाफ़िला आगे बढ़ता रहा और अभी तक सब लोगों को हज़रत मुस्लिम की शहादत की ख़बर न थी, जब आप मक़ामे ज़बाला में पहुंचे तो उसी जग पर आप ने पूरे क़ाफ़िला वालों से फ़रमाया कि हमें यह दर्द नाक ख़बर मिली है कि मुस्लिम बिन अक़ील शहीद कर दिये गए और हमारी इताअ़त के दावेदारों ने हमें छोड़ दिया। लिहाज़ा जो शख़्स तुम में से वापस जाना चाहे वह चला जाए, हमारी तरफ़ से उस पर कोई इल्ज़ाम नहीं।

बहुत से अरब जो रास्ते में आपके साथ हो गए थे, इस ऐलान के सुनते ही तक़रीबन सब दाहिने पांव रवाना हो गए और ज़्यादा तर वही लोग बाक़ी रह गए जो मदीना तैयिबा से आपके साथ आए थे। (तबरी:2/227)

# हुर की आमद

मुहर्रम 60 हिजरी की पहली तारीख़ को जबकि आप कोहे ज़ी हशम के दामन में पहुंच कर ख़ेमा-ज़न हुए, हुर बिन यज़ीद तमीमी एक हज़ार लश्कर के साथ आप को गिरिफ़्तार करने के लिये आ पहुंचा, दोपहर का वक़्त था, दुश्मन के घोड़े और सारे आदमी बहुत प्यासे थे, हज़रत इमाम हुसैन ने सब को पानी पिलवाया, ग़ालिब इस हमदर्दी के सबब हुर आप से कुछ कहने की जुर्अत न कर सका, यहां तक कि जब ज़ुहर की नमाज़ का वक़्त आ गया और अज़ान पढ़ी गई तो आप ने हम्दो-सलात के बाद हुर और उस की फौज को मुख़ातब करते हुए इरशाद फरमाया ऐ लोगो! मैं ख़ुदाए तआला की बारगाह में और तुम्हारे सामने अपनी सफाई पेश करता हूं कि मैं उस वक़्त तक तुम्हारी तरफ नहीं आया जब तक कि तुम्हारे ख़ुतूत मेरे पास नहीं गए कि आप हमारी तरफ आइये, हमारा कोई इमाम नहीं है, शायद आप के सबब हम लोगों को ख़ुदाए तआला हिदायत पर जमा फरमा दे, अब अगर तुम लोग अपनी बात पर क़ाइम हो तो मैं आ ही गया हूं, तुम मुझ से अहेद करो ताकि मुझे इत्मीनान हो जाए तो मैं तुम्हारे शहर में चलूं। और अगर मेरा आना पसंद नहीं करते हो तो मैं जहां से आया हूं वहीं वापस चला जाऊंगा।

आप की इस तक़रीर के बाद ख़ामोशी रही, किसी ने कोई जवाब नहीं दिया, आप ने हुर से पूछा तुम हमारे साथ नमाज़ पढ़ोगे या अलग पढ़ना चाहते हो? हुर ने कहा आप नमाज़ पढ़ाइये हम सब आप के पीछे पढ़ेंगे। चुनांचे ऐसा ही हुआ, दोनों तरफ के लोगों ने हज़रत के पीछे नमाज़ आद की, उसके बाद आप अपने ख़ेमे में तशरीफ ले गए।

(तबरी:2/230)

जब अस्र का वक़्त हुआ तो हज़रत इमाम आली मक़ाम ने अपने साथियों को हुक्म दिया कि रवाना होने के लिये सब तैयार हो जाएं। फिर ख़ेमे से बाहर तशरीफ लाए और उस वक़्त भी दोनों गिरोहों ने

आप के पीछे नमाज़ पढ़ी, नमाज़ के बाद फिर आप ने मज्मअ् की तरफ रुख़ किया और हम्दो-सलात के बाद फरमाया ऐ लोगो! अगर तुम तक़्वा इख़्तियार करोगे और हक़ वालों का हक़ पहचानोगे तो अल्लाह तआला की ख़ुश्नूदी हासिल करोगे। जो तुम पर ज़ुल्म व ज़्यादती के साथ हुकूमत करते हैं, हम अहले बैते नुबुव्वत उन के मुक़ाबले में ख़िलाफत के ज़्यादा मुस्तहिक़ हैं, लेकिन अगर तुम लोग हम को पसंद नहीं करते हो और हमारे हक़ को नहीं पहचानते हो और तुम्हारी राय उस के ख़िलाफ हो गई जो तुम्हारे ख़ुतूत से ज़ाहिर है तो मैं वापस चला जाऊंगा। हुर ने कहा बख़ुदा हमें नहीं मालूम कि वह कैसे ख़ुतूत हैं जिन का आप ज़िक्र फरमा रहे हैं, आप ने ख़ुतूत के थैले को मंगा कर सब के सामने उलट दिया, हुर ने कहा कि हम उन लोगों में से नहीं हैं जिन्हों ने आप को यह ख़ुतूत लिखे हैं। हम को तो यह हुक्म दिया गया है कि जहां भी आप मिल जाएं हम आप का साथ न छोड़ें यहां तक कि इब्ने ज़ियाद के पास पहुंचा दें। आप ने फरमाया इस मतलब के हासिल करने से तेरे लिये मर जाना ज़्यादा आसान है, फिर आप ने अपने साथियों को सवार होकर लौटने का हुक्म दिया, हुर ने वापस होने से रोका, आप ने फरमाया तुझ पर तेरी मां रोए, आख़िर तेरा मतलब क्या है? हुर ने कहा ख़ुदा की क़सम अगर आप के अलावा कोई दूसरा अरब यह बात कहता तो मैं उस की मां को भी ऐसे ही कहता लेकिन आप की वालिदा माजिदा का ज़िक्र मैं भलाई के साथ ही करूंगा। इमाम ने फरमाया तू क्या चाहता है? उस ने कहा मैं आप को इब्ने ज़ियाद के पास ले जाना चाहता हूं। आप ने फरमाया ख़ुदा की क़सम यह नहीं होगा, उस ने कहा ख़ुदा की क़सम मैं भी आप को नहीं छोड़ूंगा, इसी तरह तक्रार होती रही, आख़िर में हुर ने कहा मुझे आप से लड़ने का हुक्म नहीं दिया गया है, मुझे तो सिर्फ यह हुक्म है कि मैं आप के साथ-साथ रहूं यहां तक कि आप कूफा पहुंच जाएं। अगर आप कूफा जाने से इनकार करते हैं तो जब तक कि मैं इब्ने ज़ियाद की राय न मालूम कर लूं, आप ऐसा रास्ता इख़्तियार करें जो न कूफा

की तरफ जाता हो और न मदीना की तरफ। आप को उस की यह बात माकूल मालूम हुई, आप क़ादसिया और अज़ीब की राह से बाएं मुड़ कर चलने लगे, साथ-साथ हुर भी चलता रहा। (तबरी:2/232)

# बाप और बेटे की गुफ्तुगू

जब इमाम का क़ाफिला क़सर बनी मक़ातिल पहुंचा तो आप ने वहीं क़ियाम फरमाया, थोड़ी दूर पर हुर भी ठहरा, आधी रात के बाद आप ने साथियों से फरमाया कि पानी भर लो और चलो अभी थोड़ी देर चले थे कि ज़रा आंख लग गई, फिर चौंक गए और तीन बार फरमाया *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन, वल्-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन,* यह सुनकर आप के साहिब ज़ादे हज़रत इमाम ज़ैनुल आबिदीन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु आप के क़रीब आए और अर्ज़ किया अब्बा जान! इस वक़्त यह कलिमात ज़बान पर कैसे जारी हुए? फरमाया, अभी मेरी आंख लग गई थी, मैं ने देखा एक सवार कह रहा है कि यह लोग रास्ते पर चल रहे हैं और मौत इन की तरफ बढ़ रही है, मैं समझता हूं कि इस तरह हम को मौत की इत्तिलाअ् दी गई है। साहिब ज़ादे ने कहा खुदाए तआ़ला आप को हर बला से महफूज़ रखे, क्या हम हक़ पर नहीं हैं? आप ने फरमाया उस खुदाए ज़ुल जलाल की क़सम जिस की तरफ सबको लौट कर जाना है, हम हक़ पर हैं। बहादुर साहिब ज़ादे ने कहा जब हम हक़ पर हैं तो ऐसी मौत की हमें कोई परवाह नहीं, आप ने फरमाया खुदाए तआ़ला तुम्हें वह जज़ाए खैर अता फरमाए जो किसी बेटे को उस के बाप की तरफ से मिल सकती हो।

(तबरी:2/237)

जब आप का क़ाफिला नैनवा में पहुंचा तो कूफा की तरफ से एक सवार आता दिखाई दिया, सब ठहर कर उस का इन्तिज़ार करने लगे, वह आया तो इमाम आली मक़ाम की तरफ मुतवज्जह नहीं हुआ, हुर को सलाम किया और उस को इब्ने ज़ियाद का ख़त दिया, जिस में लिखा था कि हुसैन को आगे बढ़ने से रोक दो और उन्हें चटियल मैदान

में उतरने पर मजबूर करो, जहां कोई पनाह की जगह न हो और न पानी हो, मैं ने क़ासिद को हुक्म दिया है कि वह तुम्हारे साथ रहे ताकि तुम्हारी कार गुज़ारी की हमें इत्तिलाअ़ दे और तुम से अलग न हो जब तक कि हमारे हुक्म पर अमल न हो जाए। हुर ने इमाम और उन के साथियों को ख़त के मज़मून से मुत्तलअ़ किया, हज़रत ने फरमाया अच्छा हम को ज़रा आगे बढ़ कर सामने वाले गांव ग़ाज़रिया या शफिय्या में ठहरने दो, हुर ने कहा हमें तो चटियल मैदान में ठहराने का हुक्म दिया गया है और निगरां हमारे साथ है, इब्ने ज़ियाद को हमारे तरज़े अमल की इत्तिलाअ़ कर देगा। हुर के इस ज़वाब पर हज़रत इमाम के साथियों में जोश पैदा हो गया, हज़रत ज़ुहैर बिन क़ीन ने कहा या इब्न रसूलिल्लाह! इन से जंग कर लेना हमारे लिये आसान है, बनिस्बत उन लोगों के जो इन के बाद आयेंगे, इस लिये कि वह इतने होंगे कि हम को उन से मुक़ाबले की ताक़त न होगी। मगर हज़रत ने फरमाया हम अपनी तरफ से जंग की इब्तिदा नहीं करेंगे। फिर आप ने हुर से फरमाया अच्छा कुछ तो चलने दो, हुर ख़ामोश रहा और आप बायीं तरफ चल पड़े।

## ज़मीने करबला

अभी आप थोड़ा सा चले थे कि हुर के सिपाहियों ने आ कर रोक दिया और कहा बस यहीं उतर पड़िये, फुरात यहां से दूर नहीं है, आप ने पूछा इस जगह का नाम क्या है? लोगों ने कहा इस का नाम कर्बला है, इस लफ्ज़ को सुनते ही आप घोड़े से उतर पड़े और फरमाया: هٰذِهٖ كَرْبَلَاءُ مَوْضِعُ كَرْبٍ وَّبَلَاءٍ هٰذَا مَنَاخُ رِكَابِنَا وَمَحَطُّ رِحَالِنَا وَمَقْتَلُ رِجَالِنَا यह कर्बला है जो मक़ामे कर्ब व बला है, यही हमारे ऊंटों के बैठने की जगह है, यहीं हमारे माल व अस्बाब उतरेंगे और इसी मक़ाम पर हमारे साथ क़त्ल किये जाएंगे। यह मोहर्रम 61 हिजरी की दूसरी तारीख़ पंज शंबा (जुमेरात) का दिन था। (नूरुल अब्सार:117)

अब हुर ने हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को कर्बला में उतरने पर मजबूर कर दिया तो उस ने इब्ने ज़ियाद को इस

बात की इत्तिलाअ् दी, यह वक़्त वह था जबकि ईरान में बग़ावत हो गई थी जिस को फरव करने (दबाने) के लिये अम्र बिन सअ़द को चार हज़ार फौज का सरदार बनाया गया था और रैय की हुकूमत का परवाना लिख कर दिया गया था, इब्ने सअ़द अपनी फौज के साथ निकल कर अभी थोड़ी ही दूर पहुंचा था कि इब्ने ज़ियाद ने उसे वापस बुला कर हुक्म दिया कि पहले हुसैन की मोहिम सर करो, उस के बाद ईरान की तरफ रवाना हो। अम्र हज़रत सअ़द बिन वक़्क़ास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु जो सहाबिए रसूल और अशरए मुबश्शरा में से हैं उनका बेटा था, वह नवासए रसूल हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की फ़ज़ीलत से ख़ूब वाक़िफ़ था, इस लिये उस ने इब्ने ज़ियाद से कहा मुझे इस अम्र के लिये न भेजें, इब्ने ज़ियाद ने कहा अगर हुसैन के मुक़ाबले के लिये नहीं जाते हो तो रैय क़ी हुकूमत से दस्तबरदार हो जाओ, इब्ने सअ़द ने इस मामले पर ग़ौर करने के लिये एक दिन की मोहलत ली। फिर आख़िर दुनियवी हुकूमत के लालच में आ कर इमाम आली मक़ाम से मुक़ाबले के लिये तैयार हो गया और वही चार हज़ार की फौज जो मुल्के ईरान जाने के लिये तैयार थी, उन्हें साथ लेकर तीसरी मुहर्रम को कर्बला पहुंच गया और फिर बराबर कुमक (मदद) पहुंचती रही यहां तक कि इब्ने सअ़द के पास 22 हज़ार का लश्कर जमा हो गया।

कितनी हैरत की बात है कि हज़रत इमाम अ़ला जद्दिही व अलैहिस् सलाम के साथ कुल 82 आदमी हैं जिन में बीबियां और बच्चे भी हैं और फिर जंग के इरादे से भी नहीं आए थे, इसी लिये लड़ाई के सामान भी नहीं रखते थे, मगर अहले बैते नुबुव्वत की शुजाअ़त और बहादुरी का इब्ने ज़ियाद के दिल पर इतना असर था कि उन के मुक़ाबले के लिये 22 हज़ार का लश्करे जर्रार भेज दिया। दो गुनी, चौ गुनी, दस गुनी तो क्या सौ गुनी तादाद को भी काफी नहीं समझा। कूफा के तमाम क़ाबिले जंग अफ़राद को कर्बला में भेज दिया, इस के बा वजूद लोगें के दिल ख़ौफ ज़दा हैं और जंग आज़मा दिलावरों के

हौसले पस्त हैं, आख़िर मजबूरन उन को यह फैसला करना पड़ा कि लश्करे इमाम पर पानी बन्द कर दिया जाए, तब उन का मुक़ाबला किया जा सकेगा। चुनांचे इब्ने सअ़द नें अम्र बिन हज्जाज को पांच सौ सवारों के एक दस्ते के साथ दरियाए फुरात पर मुक़र्रर कर दिया ताकि इमाम और उन के साथी पानी की एक बूंद न ले सकें। यह वाक़िआ़ हज़रत इमाम अला जद्दिही अलैहिस्सलाम के शहीद होने से तीन दिन पहले का है। (तबरी:2/241)

इब्ने सअ़द ने हज़रत इमाम के आदमी भेजा कि इन से पूछो वह यहां क्यों आए हैं और क्या चाहते हैं? आप ने जवाब दिया कि तुम्हारे शहर कूफ़ा के लोगों ने ख़ुतूत लिख कर मुझे बुलाया है, अब अगर मेरा आना पसंद नहीं है तो मैं वापस चला जाऊंगा। इब्ने सअ़द ने अपना सवाल और हज़रत का जवाब लिख कर इब्ने ज़ियाद को भेज दिया, उस ने इब्ने सअ़द को जवाब में लिखा कि तुम हुसैन और उन के तमाम साथियों से कहो कि वह यज़ीद की बैअ़त करें, अगर वह बैअ़त कर लेंगे तो उस के बाद हम जो मुनासिब समझेंगे करेंगे, इब्ने सअ़द का जब यह ख़त मिला तो उस ने कहा कि मैं समझ गया इब्ने ज़ियाद का अम्न व आफियत मनज़ूर नहीं।

## इमाम और इब्ने सअ़द की मुलाक़ात

हज़रत इमाम अला जद्दिही व अलैहिस्सलाम ने इब्ने सअ़द को पैग़ाम भेजा कि आज रात में हम तुम से मिलना चाहते हैं, इब्ने सअ़द ने यह बात मान ली और रात के वक़्त बीस सवारों के साथ दोनों लश्करों के दरमियान आया, आप भी बीस सवारों के साथ तशरीफ ले गए, फिर दोनों ने अपने-अपने साथियों को अलाहेदा कर दिया और तन्हाई में देर तक गुफ्तुगू करते रहे, आख़िर में हज़रत इमाम ने फरमाया कि मैं तीन बातें पेश करता हूं, इन में से जिसे चाहो मेरे लिए मनज़ूर कर लो।

1- जहां से मैं आया हूं वहीं मुझे वापस चले जाने दो।

2- मुझे किसी सरहदी मक़ाम पर ले चलो, मैंवहीं रह कर वक़्त गुज़ार लूंगा।

3- मुझ को सीधा यज़ीद के पास दमिश्क़ की तरफ जाने दो, इत्मीनान के लिये तुम भी मेरे पीछे-पीछे चल सकते हो, मैं यज़ीद के पास जा कर उस से बराहे रास्त अपना मामला तय कर लूंगा जैसे कि मेरे हज़रते हसन ने अमीरे मुआविया से तय किया था।

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का रवैया इतना नर्म और सुलझा हुआ था कि इब्ने सअद ने इक़रार किया आप सुलह के रास्ते पर हैं, उस ने बहुत खुश होकर इब्ने ज़ियाद को लिखा कि खुदाए तआला ने आग का शोअ्ला बुझा दिया और इत्तिफाक़ की सूरत पैदा फरमा दी और उम्मत के मामले को सुलझा दिया। फिर हज़रत इमाम की पेश की हुई तीनों बातें तहरीर कीं और आख़िर में अपनी राय भी लिखी कि अब इख़्तिलाफ की कोई वजह नहीं है और अब इस मामले को ख़त्म होना चाहिये। इब्ने ज़ियाद ने ख़त पढ़ कर कहा कि यह तहरीर ऐसे शख़्स की है जो अपने अमीर का ख़ैरख़्वाह और अपनी क़ौम का शफ़ीक़ है। अच्छा मैं ने मनज़ूर कर लिया। यह सुन कर बद बख़्त शिमर ज़िल जोशन उठ खड़ा हुआ और कहा क्या आप यह बात उनकी क़बूल करते हैं जबकि वह आप की ज़मीन पर उतरे हुए हैं और आप के पहलू में हैं। वल्लाह अगर वह आप की इताअ़त के बग़ैर यहां से चले गए तो क़ुव्वत व ग़लबा उन के लिये होगा और आजिज़ी और कमज़ोरी आप के लिये। मेरी राय में उन की ख़्वाहिश कभी नहीं मनज़ूर करनी चाहिये इस लिये कि यह बहुत बड़ी ज़िल्लत और कमज़ोरी की निशानी है। होना यह चाहिये कि वह और उन के तमाम साथी आप के हुक्म पर सर झुका दें, फिर अगर आप उन्हें सज़ा दें तो आप को इसका हक़ है। और अगर माफ कर दें तो इस का भी इख़्तियार है। रही इब्ने सअ़द की बात तो खुदा की क़सम मुझे तो यह मालूम हुआ है कि हुसैन और वह रात-रात भर बैठे बातें किया करते हैं।

शिमर ख़बीस की इस फित्ना परवर तक़रीर से इब्ने ज़ियाद की राय

बदल गई, कहा तुम ने बेहतरीन मशवरा दिया है और फिर इब्ने सअ़द को लिखा कि मैं ने तुम्हें इस लिये नहीं भेजा है कि तुम हुसैन के बचाने की फ़िक्र करो और सिफ़ारिशी बन कर उन की सलामती चाहो। देखो अगर हुसैन और उन के तमाम साथी मेरे हुक्म पर सर झुका दें तो उन को मेरे पास पहुंचा दो और अगर न मानें तो सब के सर काट कर मेरे पास भेज दो और हुसैन की लाश पर घोड़े दौड़ा कर रौन्द डालो इस लिये कि वह इसी के मुस्तहिक़ हैं। अगर तुम्हें यह मनज़ूर न हो तो हमारा लश्कर शिमर के हवाले कर दो, वह हमारे हुक्म पर पूरा-पूरा अमल करेगा। यह ख़त उस ने शिमर के सुपुर्द किया और ज़बानी कह दिया कि अगर इब्ने सअ़द मेरे हुक्म पर अमल न करे तो पहले तुम उस का सर काट कर मेरे पास भेज देना। (तबरीः2/244)

इब्ने सअ़द ने जब यह ख़त पढ़ा तो शिमर से कहा कम बख़्त तुम ने यह क्या किया? ख़ुदा तुझे ग़ारत करे, तू मेरे पास यह क्या लाया है? ख़ुदा की क़सम मैं समझता हूं कि तू ने ही इब्ने ज़ियाद को मेरे मशवरे पर अमल करने से रोक दिया और इस बात का बिगाड़ दिया जिस के बनने की उम्मीद थी। ख़ुदा की क़सम हुसैन कभी इब्ने ज़ियाद के सामने सर नहीं झुका सकते। शिमर ने कहा इन बातों को छोड़ो और यह बताओ कि दुश्मन को क़त्ल करोगे या लश्कर मेरे सुपुर्द करोगे?

इब्ने सअ़द जो दुनिया पर जान देने वाला और बद बख़्ते अज़ली था उस ने कहा मैं लश्कर तुम्हारे सुपुर्द नहीं करूंगा बल्कि यह मुहिम मैं ख़ुद ही सर करूंगा। चुनांचे उस ने फ़ौरन हम्ले का हुक्म दे दिया। यह मुहर्रम की नवीं तारीख़ जुमेरात का दिन और शाम का वक़्त था। हज़रत इमाम अ़ला जद्दिही व अलैहिस्सलाम नमाज़े अस्र के बाद ख़ेमा के दरवाज़े पर तलवार का सहारा लेकर घुटनों पर सर रखे बैठे थे कि आप की आंख लग गई थी, फ़ौज के शोरो-ग़ुल की आवाज़ सुनकर आप की बहन हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा पर्दे के पास आईं और आप को जगा कर कहा देखिये दुश्मन के फ़ौज की आवाज़

बहुत नज़्दीक से आ रही है, आप ने सर उठाया और फरमाया मैं ने अभी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को ख़्वाब में देखा, हुज़ूर ने मुझ से फरमायाः إِنَّكَ تَرُوْحُ إِلَيْنَا तुम हमारे पास आने वाले हो। हज़रत ज़ैनब यह ख़्वाब सुनकर बेक़रार हो गईं और रोते हुए कहाः يَا وَيْلَتَاهُ हाए मुसीबत! आप ने फरमाया सब्र करो, ख़ामोश रहो, अल्लाह मालिक है। फिर इमाम ने हज़रत अब्बास से फरमाया पूछो इस वक़्त हम्ला का सबब क्या है? हज़रत अब्बास फौज के सामने आए और पूछा, जवाब मिला इब्ने ज़ियाद का हुक्म है कि आप लोग उस की इताअ़त करें और या तो लड़ने मरने के लिये तैयार हो जायें। हज़रत अब्बास ने उन के जवाब से इमाम आली मक़ाम को आगाह किया, आप ने फरमाया इन से कहो कि एक रात की मोहलत दें ताकि आज रात भर हम अच्छी तरह नमाज़ पढ़ लें, दुआ मांग लें और तौबा व इस्तिग़फार कर लें। खुदाए तआ़ला ख़ूब जानता है कि मैं नमाज़ और दुआ़ व इस्तिग़फार से कितनी मुहब्बत रखता हूं। जब हज़रत अब्बास ने फौज के दस्ते से कहा कि हमें एक रात की मोहलत दी जाए तो उन्हों ने यह बात मान ली। (तबरीः2/248)

# साथियों में इमाम की तक़रीर

इस के बाद हज़रत इमाम अला जद्दिही व अलैहिस्सलाम ने अपने साथियों को जमा किया और उन के सामने यह तक़रीर फरमाईः

"सब तारीफें खुदाए तआ़ला के लिये हैं, आराम व तक्लीफ हर हाल में उस का शुक्र है। ऐ अल्लाह! मैं तेरा शुक्र बजा लाता हूं, तू ने हमें (अहले बैते) नुबुव्वत की इज़्ज़त अता फरमाई, कुरआन का इल्म दिया, दीन की समझ अता फरमाई और सुनने वाले कान, देखने वाली आंखें और दिले आगाह से माला माल फरमाया। उस के बाद हज़रत ने फरमाया मैं दुनिया में किसी के साथियों को अपने साथियों से ज़्यादा वफादार व बेहतर नहीं जानता और न किसी के घर वालों को अपने घर वालों से ज़्यादा नेकूकार व सिला रहमी करने वाला देखता हूं।

खुदाए तआला तुम सब को मेरी तरफ से जज़ाए ख़ैर अता फरमाए, सुन लो! मैं यकीन रखता हूं कि इन दुश्मनों के हाथों कल हमारी शहादत है, मैं तुम को बखुशी इजाज़त देता हूं कि रात का अंधेरा छाया हुआ है, इसी में जहां तुम लोगों का जी चाहे चले जाओ, मेरी तरफ से तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं। यह लोग मेरे क़त्ल के दरपै हैं, जब मुझे क़त्ल कर लेंगे तो फिर किसी दूसरे की तरफ मुतवज्जह नहीं होंगे।''

इमाम आली मक़ाम की यह तक़रीर सुन कर सब से पहले हज़रत अब्बास फिर आप के दूसरे भाई, बेटे, भतीजे और भांजे सब ने यक ज़बान होकर कहा, क्या हम इस लिये चले जाएं कि आप के बाद ज़िंदा रहें? खुदा हमें ऐसा बुरा दिन न दिखाए।

इमाम ने पुकार कर कहा ऐ औलादे अक़ील! मुस्लिम का क़त्ल होना तुम्हारे लिये काफी है, तुम चले जाओ, मैं इजाज़त देता हूं। उन लोगों ने कहा खुदा की क़सम यह हम से हरगिज़ नहीं होगा, बल्कि हम आप के साथ दुश्मन से मुक़ाबला करेंगे यहां तक कि अपनी जानें आप पर कुर्बान कर देंगे, खुदाए तआला हमें वह ज़िंदगी न दे जो आप के बाद हो।

हज़रत मुस्लिम बिन औसजा असदी खड़े हुए और कहा हम आप को छोड़ कर चले जाएं, यह हम से हरगिज़ नहीं हो सकता। खुदा की क़सम मैं इन दुश्मनों से नेज़ा के साथ जंग करूंगा यहां तक कि मेरा नेज़ा उन के सीनों में टूट जाए और तलवार चलाऊंगा जब तक कि उस का क़ब्ज़ा मेरे हाथ में रह सकेगा। खुदा की क़सम अगर मेरे पास हथियार न होंगे तो मैं पत्थर मार-मार कर दुश्मनों से लडूंगा और इस तरह मैं अपनी जान आप पर निछावर कर दूंगा।

हज़रत सअ़द बिन अब्दुल्लाह हनफी ने कहा खुदा की क़सम आप का साथ छोड़ कर हम नहीं जायेंगे जब तक कि खुदा की बारगाह में यह साबित न कर दें कि हम ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के नवासे की कैसी हिफाज़त की है। खुदा की क़सम अगर

मुझे यह मालूम हो कि मैं क़त्ल हो जाऊंगा फिर ज़िंदा किया जाऊंगा और फिर जीते जी जला दिया जाऊंगा और मेरी राख हवा में उड़ा दी जाएगी और इसी तरह सत्तर मर्तबा मेरे साथ होगा फिर मैं आप का साथ न छोड़ूंगा और यह तो एक ही मर्तबा क़त्ल होना है फिर इसके बाद दाइमी इज़्ज़त है जो कभी ख़त्म होने-वाली नहीं है।

हज़रत ज़ुहैर बिन क़ैन ने कहा ख़ुदा की क़सम मैं तो यह चाहता हूं कि क़त्ल किया जाऊं फिर ज़िंदा किया जाऊं और फिर क़त्ल किया जाऊं ऐसे ही मेरे साथ हज़ार मर्तबा हो मगर ख़ुदाए तआ़ला आप को और आप के नौजवानों को बचा ले ----- ग़रज़ कि इसी तरह आप के तमाम साथियों ने अपनी-अपनी अक़ीदत और जां निसारी ज़ाहिर की और सब का मतलब यही था कि यह हरगिज़ नहीं हो सकता है कि हम आप से जुदा हो जाएं बल्कि हम अपने हाथों अपनी गर्दनों और पेशानियों से आप को बचाएंगे यहां तक कि अपनी जानें आप पर क़ुर्बान कर देंगे। (तबरी:2/250)

इस के बाद आप और आप के तमाम साथियों ने नमाज़ व दुआ़ और तौबा व इस्तिग़फार में सारी रात गुज़ार दी और इस के साथ ही ख़ेमों की पुश्त पर ख़न्दक खोद कर लकड़ियां भर दीं ताकि जंग के वक़्त उन में आग लगा दी जाए तो दुश्मन पीछे से हम्ला न कर सके।

☆☆☆

# कर्बला में क़ियामते सुग़रा

## दस्वीं मुहर्रम के दिल-दोज़ वाक़िआ़त

आ़शूरा की रात ख़त्म हुई और दस्वीं मुहर्रम की क़ियामत नुमा सुबह नमूदार हुई। हज़रत इमाम अला जद्दिही व अलैहिस्सलाम ने अहले बैत और अपने तमाम साथियों के हमराह फ़ज्र की नमाज़ निहायत ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ के साथ अदा फरमाई, पेशानियों ने सज्दे में ख़ूब मज़े लिये और ज़बानों ने तस्बीह व क़िराअत के ख़ूब लुत्फ उठाए। अब दस्वीं मुहर्रम का सूरज अन्क़रीब निकलने वाला है। हज़रत इमाम, उन के अहले बैत और तमाम साथी तीन दिन के भूके प्यासे हैं, एक लुक़्मा किसी की हलक़ से नीचे नहीं उतरा और न एक क़तरा पानी किसी को मयस्सर हुआ, ऐसे लोगों पर जुल्म व जफा के पहाड़ तोड़ने के लिये 22 हज़ार का ताज़ा दम लश्कर मौजूद है, जंग का नक़्क़ारा बजा दिया गया। आक़ाए दो आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के लाल और अली व फातिमा के नौ निहाल को मेहमान बना कर बुलाने वाली क़ौम ने जानों पर खेलने की दअ़्वत दी। हज़रत इमाम मैदाने कारज़ार (जंग) में तशरीफ ले गए और एक तक़रीर फरमाई। हम्दो-सलात के बाद आप ने फरमायाः ऐ लोगो! मेरे नसब पर ग़ौर करो, कि मैं कौन हूं? फिर अपने गिरेबानों में मुंह डाल कर सोचो कि तुम्हारे लिये क्या मेरा ख़ून बहाना जाइज़ है? क्या मैं तुम्हारे नबी का नवासा नहीं हूं? क्या मैं उन के चचा ज़ाद भाई अली का फर्ज़न्द नहीं हूं? जो आठ दस साल की उम्र में ईमान लाए। क्या सैय्यिदुश शुहदा हज़रत हमज़ा मेरे बाप के चचा और जाफर तैय्यार खुद मेरे ही चचा नहीं थे। क्या तुम में से किसी ने यह नहीं सुना है कि रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने मेरे और मेरे भाई के बारे में फरमाया है कि यह दोनों जन्नती जवानों के सरदार हैं। अगर तुम मेरी बात को सच समझते हो और हक़ीक़त में वह सच ही है, इस लिये कि मैं कभी झूठ

नहीं बोलता। और अगर तुम मेरी बात झूठी समझते हो तो अब भी इस्लामी दुनिया में जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी, अबू सईद ख़ुदरी और अनस बिन मालिक वग़ैरा मौजूद हैं_उन से पूछ लो —— क्या यह हदीसें तुम्हें मेरा ख़ून बहाने से रोकने के लिये काफी नहीं हैं?

शिमर बद बख़्त ने आप की तक़रीर में मुदाख़लत करते हुए कुछ बद तमीज़ी की तो हबीब बिन मज़ाहिर ने उसे सख़्त जवाब देते हुए कहा कि अल्लाह तआ़ला ने तेरे दिल पर मोहर लगा दी है इस लिये तू नहीं समझ पा रहा है कि हज़रत इमाम क्या फरमा रहे हैं —— शिमर और हबीब की गुफ्तुगू के बाद इमाम आली मक़ाम ने फिर फरमाया ऐ लोगो! अगर तुम्हें इस हदीस में शक है तो क्या इस में शुब्हा है कि मैं तुम्हारे रसूल का नवासा हूं। ख़ुदा की क़सम पूरब से लेकर पच्छिम तक पूरी दुनिया में मेरे सिवा क़ोई भी नबी का नवासा मौजूद नहीं है, न तुम में और न तुम्हारे सिवा दूसरी क़ौमों में। और मैं तो ख़ुद तुम्हारे ही नबी का नवासा हूं, ज़रा ग़ौर तो करो कि मेरे क़त्ल पर तुम कैसे आमादा हो गए? क्या मैंने किसी को क़त्ल किया है? किसी का माल हलाक किया है? या किसी को ज़ख़्मी किया है? जिस का बदला तुम मुझ से चाहते हो।

जब मुख़ालिफीन की तरफ से कोई जवाब नहीं मिला तो आप ने पुकार कर कहा ऐ शिब्बस बिन रुबई! ऐ हजार बिन अबजर! ऐ क़ैस बिन अश्अ़स! ऐ यज़ीद बिन हारिस! क्या तुम लोगों ने ख़त लिख कर मुझे नहीं बुलाया था? उन्हों ने कहा हम ने कोई ख़त आप को नहीं लिखा था। आप ने फरमाया तुम लोगों ने लिखा था और ज़रूर लिखा था। अच्छा फर्ज़ कर लो तुम ने नहीं लिखा था और तुम नहीं चाहते थे कि मैं इधर आऊं तो मुझे छोड़ दो ताकि मैं किसी ऐसी जगह चला जाऊं जहां अम्नो-अमान की ज़िंदगी बसर कर सकूं। क़ैस बिन अश्अ़स ने कहा आप अपने क़राबत दार यानी इब्ने ज़ियाद के सामने सर झुका दें फिर आप के साथ कोई ना पसंदीदा सुलूक नहीं होगा। आप ने फरमाया तुम ऐसा क्यों नहीं कहोगे, तुम मुहम्मद बिन अश्अ़स ही के भाई तो हो, क्या तुम्हारे लिये यह काफी नहीं कि मुस्लिम बिन अक़ील

के ख़ून की ज़िम्मेदारी तुम पर है। ख़ुदा की क़सम मैं ज़िल्लत के साथ तुम्हारे हाथ में अपना हाथ हरगिज़ नहीं दूंगा और न गुलामों की तरह इताअ़त का इक़रार करूंगा ---- मुख़ालिफ़ीन के मानने की पहले ही से उम्मीद न थी मगर इमाम आली मक़ाम को अपना फर्ज़ पूरा करना था वह हो गया, फिर आप ऊंटनी बिठा कर उतर पड़े और उक़्बा बिन समआ़न को हुक्म दिया कि इसे बांध दें। (तबरी:2/257)

# हुर का शौक़े शहादत

जब अम्र बिन सअ़द जंग शुरू करने के लिये आगे बढ़ा तो हुर बिन यज़ीद ने उस से कहा ख़ुदा तेरा भला करे क्या तू वाक़ई इन से जंग करेगा? इब्ने सअ़द ने कहा हां ख़ुदा की क़सम और ऐसी जंग कि जिस में सरों की बारिश होगी और हाथ क़लम होकर ज़मीन पर गिरेंगे। हुर ने कहा उन की पेश की हुई बातों में से कोई बात भी तुम लोगों को मनज़ूर नहीं, उस ने कहा ख़ुदा की क़सम अगर मुझे इख़्तियार होता तो मैं ज़रूर मनज़ूर कर लेता मगर क्या करूं? तुम्हारा हाकिम नहीं मानता। हुर यह सुन कर वहां से हट गया, नवासए रसूल से जंग के तसव्वुर ने उस के बदन पर कपकपी तारी कर दी और चेहरे पर परेशानी के आसार ज़ाहिर हुए तो मोहाजिर बिन औस उसी क़बीले का एक शख़्स कहने लगा, हुर यह तुम्हारी क्या हालत है? तुम पर इस क़दर ख़ौफ़ व हिरास क्यों ग़ालिब है? मुझ से तो जब पूछा जाता कि कूफ़ा में सब से ज़्यादा बहादुर कौन है तो मैं तुम्हारे सिवा किसी का नाम न लेता मगर इस वक़्त तुम्हारी अजीब हालत देख रहा हूं। आख़िर इस की क्या वजह है? हुर ने कहा यह नवासए रसूल से जंग है, अपनी आ़क़िबत से लड़ाई है, मैं इस वक़्त जन्नत और दोज़ख़ के दरमियान खड़ा हूं मगर मैं जन्नत को किसी चीज़ के बदले नहीं छोडूंगा, चाहे मेरा जिस्म टुक्ड़े-टुक्ड़े करके आग में जला दिया जाए। यह कहते हुए उस ने अपने घोड़े को एड़ लगाई और इमाम आली मक़ाम की ख़िदमत में पहुंच गया ---- अर्ज़ किया फ़र्ज़न्दे रसूल! मेरी जान आप पर क़ुर्बान, मैं

वही गुनहगार हूं जिस ने आप को वापस जाने से रोका, रास्ते में आप के साथ-साथ रहा और इस जगह ठहरने पर मजबूर किया। क़सम है उस ख़ुदाए पाक की जिस के सिवा कोई माबूदे बरहक़ नहीं, मैं यह हरगिज़ नहीं समझता था कि आप की पेश की हुई बातों में से यह किसी एक को भी नहीं मानेंगे और नौबत यहां तक पहुंच जायेगी। वल्लाह अगर मुझे मालूम होता कि यह लोग आप की बात नहीं क़बूल करेंगे तो मैं हरगिज़ उन का साथ न देता। अब मैं अपने किये पर शर्मिन्दा हूं, ख़ुदाए तआ़ला की बारगाह में तौबा करता हूं और अपनी जान आप के क़दमों पर क़ुर्बान करने के लिये हाज़िर हूं। क्या इस तरह मेरी तौबा क़बूल हो जाएगी। हज़रत ने फरमाया हां, अल्लाह तआ़ला तुम्हारी तौबा क़बूल फरमाएगा और तुम्हें बख़्श देगा। मुबारक हो, इन्शा अल्लाह दुनिया व आख़िरत में हुर (आज़ाद) हो, घोड़े से उतरो, अर्ज़ किया आप की मदद के लिये मेरा घोड़े पर रहना उतरने से बेहतर है। अब मैं आख़िरी वक़्त ही में (शहीद होकर) घोड़े से उतरूंगा। हज़रत ने फरमाया अच्छा जो तुम्हारा जी चाहे वही करो, ख़ुदाए तआ़ला तुम पर रहम फरमाए। (तबरी:2/260)

## कूफ़ियों से हुर का ख़िताब

हज़रत इमाम अला जद्दिही व अलैहिस्सलाम से ख़ता माफ कराने के बाद हुर फौरन मैदान में आ गया और पहले मुलायम अल्फाज़ में कूफ़ियों से कहा ऐ लोगो! हुसैन तीन बातें जो पेश करते हैं उन में किसी एक को तुम क्यों नहीं मनज़ूर कर लेते ताकि ख़ुदाए तआ़ला तुम को उन के साथ जंग में मुब्तला होने से बचा ले, कूफ़ियों ने कहा हमारे सिपह सालार अम्र बिन सअ़द मौजूद हैं, उन से बात करो। इब्ने सअ़द ने कहा अगर मुझे इख़्तियार होता तो मैं ज़रूर मनज़ूर कर लेता, यह सुन कर हुर को ग़ुस्सा आ गया और कहा ऐ कूफ़ा वालो! ख़ुदाए तआ़ला तुम को ग़ारत करे कि तुम ने नवासए रसूल को बुलाया और जब वह आ गए तो तुम ने उन्हें दुश्मन के हवाले कर दिया। तुम कहते

थे कि हम इन पर अपनी जान कुर्बान करेंगे और अब कत्ल करने के लिये इन्हीं पर हमला कर रहे हो, इन को तुम ने गिरिफ्तार कर लिया, चारों जानिब से इन को घेर लिया। तुम ने इन को खुदा की लम्बी चौड़ी ज़मीन में जिधर अम्न कर रास्ता पाएं, उधर जाने से रोक दिया और अब वह तुम्हारे हाथ में कैदी की तरह हो गए हैं। तुम ने इनको, इन के अहले हरम को, इनके बच्चों को और इन के साथियों को दरियाए फुरात के उस बहते हुए पानी से रोक दिया जिसे यहूदी, नस्रानी और मजूसी तक पीते हैं बल्कि कुत्ते और सुवर भी उस में लोटते हैं मगर उसी पानी के लिये हुसैन और उनके अहलो-अयाल तड़प रहे हैं। तुम ने रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के बाद उन की औलाद के साथ कैसा बुरा सुलूक किया है। अगर आज तुम अभी इसी दम तौबा नहीं करोगे और अपने इरादे से बाज़ नहीं आओगे तो क़ियामत के दिल खुदाए तआला तुम्हें भी प्यास से तड़पाएगा -- कूफियों के पास चूंकि इस तक़रीर का कोई जवाब न था इस लिये वह हुर पर तीर बरसाने लगे। हुर ने यह देख कर तक़रीर बन्द कर दी और चूंकि अभी जंग बाक़इदा शुरू नहीं हुई थी इस लिये वह वापस आ कर इमाम के सामने खड़े हो गए। (तबरीः2/260)

## जंग की इब्तिदा

हुर के वापस आने के बाद अम्र बिन सअ़द ने फौज को आगे बढ़ाया और अपने गुलाम जुवैद को जो अलम्बरदारे लश्कर था आवाज़ दी कि झण्डा मेरे करीब लाओ, वह उस के पास आ कर खड़ा हो गया, इब्ने सअ़द ने कमान में तीर जोड़ कर हुसैनी लश्कर की तरफ सर किया और अपनी फौज से पुकार कर कहा, गवाह रहना कि सब से पहला तीर मैं ने ही मारा है। सिपह सालार के इन अल्फाज़ को सुन कर उस के लश्कर में जोश व ख़रोश पैदा हो गया तो वह भी तीर बरसाने लगे। इस तरह जंग शुरू हो गई और अब दोनों तरफ के सिपाही निकल-निकल कर अपनी बहादुरी का जौहर दिखाने लगे। सब

से पहले यसार और सालिम जो ज़ियाद और इब्ने ज़ियाद के आज़ाद करदा गुलाम थे, कूफ़ियों की तरफ से निकल कर मैदान में आए और मुक़ाबले के लिये बुलाया, इमाम आली मक़ाम के दो जां निसार साथी हबीब बिन मज़ाहिर और बुरैर बिन हुज़ैर उठ खड़े हुए मगर इमाम ने उन को रोक दिया। यह देख कर अब्दुल्लाह बिन उमैर कलबी जो अपनी बीवी उम्मे वहब के साथ इमाम की मदद के लिये करबाल में आ गए थे, खड़े हो गए और जंग की इजाज़त तलब की, हज़रत ने सर से पैर तक उन पर निगाह डाली, देखा जवान क़वी हैकल है, फरमाया अगर तुम्हारा दिल चाहता है तो जाओ, यह तन्हा दोनों के मुक़ाबिल गए, उन्हों ने पूछा तुम कौन हो? अब्दुल्लाह ने अपना नाम व नसब बयान किया, उन्हों ने कहा हम तुम्हें नहीं जानते, हमारे मुक़ाबले में जुहैर बिन कैन, हबीब बिन मज़ाहिर या बुरैर बिन हुज़ैर को आना चाहिये था। यसार उस वक़्त सालिम से आगे बढ़ा हुआ था, अब्दुल्लाह ने कहा ओ फ़ाहिशा के बेटे! तू मुझ से लड़ने में बेइज़्ज़ती समझता है, यह कहते हुए यसार पर हमला किया और तलवार की ऐसी ज़र्ब लगाई कि वह एक ही वार में ठंडा हो गया। सालिम ने एक दम झपट कर हमला कर दिया, अब्दुल्लाह ने उस की तलवार को बाएं हाथ पर रोका, उंगलियां कट गईं मगर दाहिने हाथ से उस पर ऐसा वार किया कि उसे भी ढेर कर दिया और जोश में आ कर शेअ्र पढ़ने लगे जिस का मतलब यह है कि अगर मुझे नहीं पहचानते हो तो पहचान लो मैं ख़ानदाने कलब का एक फर्ज़न्द हूं, मेरे हसब व नसब के लिये इतना काफ़ी है कि क़बीलए उलैम मेरा घराना है, मैं बड़ी कुव्वत वाला हूं और मुसीबत के वक़्त पस्त हिम्मती से काम लेने वाला नहीं हूं।

अब्दुल्लाह की बीवी को अपने शौहर की बहादुरी देख कर जोश आ गया, ख़ेमा की एक चोब हाथ में ली और आगे बढ़ कर कहा मेरे मां बाप तुम पर कुर्बान, नवासए रसूल की तरफ से लड़ते जाओ, वह अपनी बीवी के पास आए और चाहा कि उन्हें ख़ेमा में पहुंचा दें मगर

वह मानने वाली नहीं थीं। अब्दुल्लाह के एक हाथ में तलवार थी, जिस से दुश्मन का ख़ून टपक रहा था और दूसरे हाथ की उंगलियां कट गई थीं जिन से लहू बह रहा था, फिर भी उन्हों ने पूरी कुव्वत के साथ बीवी को वापस करना चाहा मगर जोश में भरी हुई ख़ातून ने अपना हाथ अब्दुल्लाह से छुड़ा लिया और कहा मैं तुम्हारा साथ हरगिज़ नहीं छोडूंगी, तुम्हारे साथ मैं भी जान दूंगी। इमाम आली मक़ाम ने आवाज़ दी, खुदाए तआला तुम दोनों को अहले बैते रिसालत की तरफ़ से जज़ाए ख़ैर अता फरमाए, बीवी तुम वापस चली आओ कि औरतों पर क़िताल वाजिब नहीं। हज़रत के हुक्म को सुन कर वह वापस आ गईं।

(तबरी:2/262)

# करबला में हज़रत इमाम की करामतें

दुश्मनों के गिरोह में एक शख़्स घोड़ा कूदाता हुआ सामने आया जिस का नाम मालिक बिन उर्वा था, जब उस ने देखा कि लश्करे इमाम के गिर्द ख़न्दक़ में आग जल रही है और शोले बुलंद हो रहे हैं और इस तदबीर से अहले ख़ेमा की हिफाज़त की जा रही है तो उस गुस्ताख़ बद बातिन ने हज़रत इमाम से कहा ऐ हुसैन! तुम ने वहां की आग से पहले यहीं आग लगा ली है। इमाम आली मक़ाम अला जद्दिही व अलैहिस्सलाम ने फरमाया: كَذَبْتَ يَا عَدُوَّ اللّٰهِ ऐ खुदा का दुश्मन! तू झूठा है, तुझे गुमान है कि मैं दोज़ख़ में जाऊंगा। हज़रत मुस्लिम बिन औसजा को उस बद बख़्त का यह जुम्ला बहुत नागवार हुआ और उन्हों ने हज़रत इमाम से उस बद ज़बान के मुंह पर मीर मारने की इजाज़त चाही, आप ने उन्हें इजाज़त नहीं दी, मगर खुदाए तआला की बारगाह में हाथ उठा कर दुआ की या इलाहल् आलमीन! अज़ाबे नार से पहले इस गुस्ताख़ को दुनिया के अन्दर आग के अज़ाब में मुब्तला फरमा। इमाम का हाथ उठाना था कि उसके घोड़े का पांव एक सूराख़ में गया और वह घोड़े से गिरा, उस का पांव रकाब में उलझा, घोड़ा उसे लेकर भागा और आग की ख़न्दक़ में डाल दिया।

हज़रत इमाम ने सज्दए शुक्र किया, अपने परवरदिगार की हम्दो-संना की और अर्ज़ किया ऐ परवरदिगार! तेरा शुक्र है कि तू ने अहले बैते रिसालत के बद ख़्वाह को सज़ा दी, हज़रत इमाम की ज़बान से यह जुम्ला सुन कर दुश्मनों की सफ में से एक और बेबाक ने कहा आप को पैग़म्बरे ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से क्या निस्बत? यह कलिमा तो हज़रत के लिये इन्तिहाई तक्लीफ़देह था, आप ने बारगाहे ख़ुदावन्दी में अर्ज़ किया ऐ अल्लाह! इस बद ज़बान को फौरन ज़िल्लत में गिरिफ्तार कर, इमाम ने यह दुआ फरमाई और उस को कज़ाए हाजत की ज़रूरत पेश आई, वह घोड़े से उतर कर एक तरफ भागा और किसी जगह कज़ाए हाजत के लिये बरहना होकर बैठा, एक सियाह बिच्छू ने डंक मारा तो नजासत आलूदा तड़पता फिरता था, इस रुस्वाई के साथ पूरे लश्कर के सामने उस नापाक की जान निकली मगर सख़्त दिलाने बेहमिय्यत (बेशर्मों) को ग़ैरत न हुई।

और एक मुज़नी ने इमाम के सामने आ कर कहा ऐ इमाम! देखों तो दरियाए फ़ुरात कैसा मौजें मार रहा है, ख़ुदा की क़सम खा कर कहता हूं, तुम्हें इसका एक क़तरा न मिलेगा और तुम प्यासे हलाक हो जाओगे। हज़रत इमाम ने उस के हक़ में फरमायाः اَللّٰهُمَّ اَمِتْهُ عَطْشَانًا या रब! इस को प्यासा मार। इमाम का यह फरमाना था कि मुज़नी का घोड़ा चमका, मुज़नी गिरा, घोड़ा भागा और मुज़नी पकड़ने के लिये उस के पीछे दौड़ा और प्यास उस पर ऐसी शिद्दत की ग़ालिब हुई कि अल्-अ़तश-अल्-अ़तश पुकारता था और जब पानी उस के मुंह से लगाते थे तो एक क़तरा नहीं पी सकता था यहां तक कि उसी प्यास की शिद्दत में मर गया। (सवानेहे करबला:106)

*ऐ दिल बगीर दामने सुल्ताने औलिया*
*यानी हुसैन बिन अली जाने औलिया*

फर्ज़न्दे रसूल को यह बात भी दिखानी थी कि उन की मक़्बूलियत बारगाहे हक़ पर और उन के कुर्ब व मंज़िलत पर जैसे कि नूसूसे कसीरा और अहादीसे शहीरा शाहिद हैं ऐसे ही उन के ख़वारिक़ व

करामात भी गवाह हैं। अपने इस फ़ज़्ल का अमली इज़्हार भी इतमामे हुज्जत के सिलसिले की एक कड़ी थी कि अगर तुम आंख रखते हो तो देख लो जो ऐसा मुस्तजाबुद दअ़्वात है उस के मुक़ाबले में आना खुदा से जंग करना है, इस का अंजाम सोच लो और बाज़ रहो मगर शरारत के मुजस्समें इस से भी सबक़ न ले सके।

## इमाम के साथियों की शुजाअ़त और शहादत

कूफ़ी लश्कर से यज़ीद बिन मअ़्कल निकला, इमाम आली मक़ाम की तरफ से बुरैर बिन हुज़ैर ने बढ़ कर उस के सर पर ऐसी कारी ज़र्ब लगाई कि तलवार यज़ीद की ख़ोद को काटती हुई दिमाग़ तक पहुंच गई और वह ढेर हो गया, इतने में रज़ी बुरैर से लिपट गया, दोनों में कुश्ती होने लगी, आख़िर बुरैर रज़ी को गिरा कर उस के सीने पर सवार हो गए, रज़ी चिल्लाया तो कअ़ब दौड़ कर बुरैर की पीठ में नेज़ा मारा और वह शहीद हो गए --- फिर इमाम आली मक़ाम की तरफ से हुर निकले उन के लिये मुक़ाबले के लिये यज़ीद बिन सुफियान आया, हुर ने एक ही वार में उसे ढेर कर दिया। हुर के बाद नाफेअ़् बिन हिलाल आगे बढ़े, उन के मुक़ाबले में मुज़ाहिम बिन हुरैस आया, नाफेअ़् ने उसे भी मौत के घाट उतार दिया --- अभी तक लड़ाई इसी अंदाज़ में हो रही थी कि दोनों तरफ से एक-एक जवान मैदान में आता लेकिन कूफ़ियों की तरफ से जो भी आता वह बच के न जाता, यह हाल देख कर अम्र बिन हज्जाज चिल्लाया, ऐ बेवकूफ कूफ़ियो! तुम्हें नहीं मालूम तुम किन लोगों से लड़ रहे हो, अरे यह सब मौत को जान से ज़्यादा अज़ीज़ रखते हैं, इन के मुक़ाबले में एक-एक करके हरगिज़ न आओ, अम्र बिन सअ़्द ने उस की राय को पसंद किया और इस तरह लड़ाई करने से मना कर दिया। फिर अम्र बिन हज्जाज ने फौज के एक दस्ता के साथ इमाम आली मक़ाम के मैमना आम हमला कर दिया, कुछ देर तक जंग हुई जिस में हज़रत के एक जां निसार साथी मुस्लिम बिन औसजा शहीद हो गए।

उस के बाद शिमर एक बड़ी जमाअ़त के साथ इमाम के मैसरा पर हम्ला आवर हुआ, और इस हम्ला के साथ ही यज़ीदी लश्कर चारों तरफ़ से इमाम के साथियों पर टूट पड़ा, बड़ी ज़बर्दस्त जंग हुई, इमाम के साथ कुल 32 सवार थे लेकिन जिधर वह रुख़ करते थे, कूफ़ियों की सफ़ों को दरहम बरहम कर देते थे, यहां तक कि यज़ीदी लश्कर में भगदड़ मच गई। इब्ने सअ़द ने फ़ौरन पांच सौ तीर अंदाज़ों को भेजा, उन्हों ने पहुंच कर हुसैनी लश्कर पर तीरों की बारिश कर दी जिस से तमाम घोड़े ज़ख़्मी और बेकार हो गए लेकिन इमाम आली मक़ाम के जां निसार हिम्मत नहीं हारे, घोड़ों से उतर पड़े, बड़ी बहादुरी के व बेजिगरी के साथ लड़ते रहे और कूफ़ियों के छक्के छुड़ा दिये। अय्यूब बिन मश्रह कहता था ख़ुदा की क़सम हुर बिन यज़ीद के घोड़े मैने तीर मारा जो उस की हलक़ में उतर गया, बस वह गिर पड़ा और उस की पीठ पर से हुर इस तरह कूद पड़ा जैसे शेर। फिर वह तलवार खींच कर मैदान में आ गया और एक शेअ़र पढ़ा जिस का मतलब यह है कि अगर तुम ने मेरे घोड़े को बेकार कर दिया तो क्या हुआ, मैं हुर शेर बबर से ज़्यादा बहादुर और शरीफ हूं। और वही इब्ने मश्रह यह भी कहता था कि हुर की तरह तलवार चलाते हुए मैं ने किसी को नहीं देखा। (तबरी:2/267)

जब ज़ुहर का अव्वल वक़्त हो गया तो इमाम आली मक़ाम ने फरमाया कूफ़ियों से कहो हमें नमाज़ पढ़ने की मोहलत दें, इस पर बद बख़्त हसीन बिन नुमैर ने कहा तुम्हारी नमाज़ क़बूल न होगी। हबीब बिन मज़ाहिर ने जवाब दिया ओ गधे! तू समझता है कि फर्ज़न्दे रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की नमाज़ क़बूल न होगी और तेरी क़बूल होगी, यह सुन कर इब्ने नुमैर आग बगूला हो गया, उस ने हबीब पर हम्ला कर दिया, हबीब ने अपने आप को बचा लिया और झपट कर उस के घोड़े के मुंह पर तलवार का ऐसा वार किया कि वह आगे दोनों पांव उठा कर खड़ा हो गया और इब्ने नुमैर उस की पीठ से नीचे गिर गया लेकिन कूफ़ियों ने दौड़ कर उसे बचा लिया, फिर बहुत

से कूफियों ने हबीब को घेर लिया, वह देर तक उन से बड़ी बहादुरी के साथ लड़ते रहे लेकिन तन्हा एक बड़ी जमाअत का वह कब तक मुक़ाबला कर सकते थे। जब थक गए तो एक तमीमी ने आप पर नेज़ा से वार किया आप गिर गए और अभी उठ ही रहे थे कि इब्ने नुमैर ने आप पर तलवार मारी, आप फिर गिर गए और तमीमी ने घोड़े से उतर का आप का सर काट लिया।

हबीब की शहादत से इमाम आली मक़ाम के दिल पर बड़ा ज़बर्दस्त असर पड़ा, फरमाया कि मैं ने अपनी और अपने साथियों की जान को खुदाए तआला हवाले किया। हुर ने जब इमाम को बहुत रंजीदा देखा तो रज्ज़ पढ़ते हुए मैदान में निकले साथ में जुहैर बिन क़ैन भी रहे, दोनों ने बहुत सख़्त लड़ाई की, उन में से एक हमूला करता और जब वह दुश्मनों में घिर जाता तो दूसरा हमूला करके उसे बचा लेता, इसी तरह देर तक यह दोनों शमशीर ज़नी करते रहे, आख़िर में बहुत बड़ी फौज ने हुर को घेर लिया और वह शहीद कर दिये गए। अब जुहैर तन्हा रह गए लेकिन देर तक दुश्मनों का मुक़ाबला किया, फिर तलवार चलाते हुए वह भी शहीद हो गए। *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन्* (तबरीः2/271)

*करबला वालों ने रौशन कर दिया इस्लाम को*
*शमूएं गुल होती गईं और रौशनी बढ़ती गई*

☆☆☆

## हाशिमी जवानों की बेमिस्ल बहादुरी और शहादत

करबला में इमाम आली मक़ाम अला जद्दिही व अलैहिस्सलाम के साथियों की वफादारी का यह भी एक बहुत बड़ा कारनामा रहा कि जब तक उन में एक भी बाक़ी रहा, इमामे पाक के भाई और बेटे भतीज़े वग़ैरा किसी भी बनी हाशिम को उन्हों ने लड़ने के लिये मैदान में नहीं जाने दिया बल्कि उन के किसी एक फर्द को कोई गज़न्द भी नहीं पहुंचने दिया। हालां कि इस दरमियान में कूफियों की तरफ से बड़ी

ज़बर्दस्त तीरों की बारिश भी हुई मगर इसके बा वजूद एक ज़ख़्म भी किसी हाशिमी जवान या बच्चे को लगने का तारीख़ में पता नहीं चलता।

इन सब की शहादत के बाद आप असदुल्लाहिल् ग़ालिब के शेरों, फातिमा ज़हरा के दुलारों और सैय्यिदुल अंबिया सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के जिगर परों के लड़ने की बारी आई, उन के मैदान में आते ही बड़े-बड़े बहादुरों के दिल सीनों में लरज़ने लगे और उनकी असदुल्लाहि तलवारों के हमूलों से शेर दिल बहादुर भी चीख़ उठे, उन्हों ने ज़र्ब व हर्ब के वह जौहर दिखाए कि दुश्मनों के ख़ून से पूरी ज़मीने करबला रंगीन हो गई और कूफ़ियों को मानना पड़ा कि अगर इन लोगों पर तीन दिन पहले पानी बन्द न किया जाता तो हाशिमी ख़ानदान का एक-एक जवान पूरे लश्कर को तबाह व बर्बाद कर डालता।

## औलादे अक़ील की शहादत

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुस्लिम बिन अक़ील इमाम आली मक़ाम से राहे हक़ में सर कटाने की इजाज़त तलब की, आप की आंखों में आंसू आ गए, फरमाया बेटा! मैं तुम्हें कैसे इजाज़त दे दूं, अभी तुम्हारे बाप की जुदाई का दाग़ मेरे दिल से नहीं मिटा है, अर्ज़ किया मैं अपने बाप के पास जाने के लिये बेक़रार हूं। हज़रत ने उन का शौक़े शहादत देख कर इजाज़त दे दी, उस हाशिमी जवान ने मैदान में आ कर मुक़ाबला के लिये पुकारा, कूफ़ी लश्कर से कुदामा बिन असद जो बड़ा बहादुर समझा जाता था वह आपसे लड़ने के लिये निकला, थोड़ी देर तक दोनों में तलवार चलती रही, आख़िर अब्दुल्लाह ने तलवार का ऐसा ज़बर्दस्त वार किया कि वह खीरे की तरह कट कर ज़मीन पर आ गया। फिर किसी की हिम्मत न हुई कि वह तन्हा आपके मुक़ाबले में आता। आप शेरे बबर की तर उनपर हमूला आवर हुए, सफ़ों को दरहम बरहम करते हुए उन में घुस्ते चले गए, बहुतेरों को ज़ख़्मी किया और कई एक को जहन्नम में पहुंचाया, आख़िर नौफ़ल बिन मुज़ाहम हुमैरी ने आप को

नेज़ा मार कर शहीद कर दिया। रज़ियल्लाहु तआला अन्हु।

हज़रत जाफर बिन अक़ील अपने भतीजे अब्दुल्लाह बिन मुस्लिम की शहादत के बाद अशकबार आंखों के साथ मैदान में आए और यह रज्ज़ (जंगी अश्आर) पढ़ी कि मैं मक्का का रहने वाला हूं, हाशिमी नस्ल और ग़ालिब घराने का हूं। बेशक हम सारे क़बीलों के सरदार हैं और हुसैन तमाम लोगों में सब से ज़्यादा पाकीज़ा हैं। फिर आप ने लड़ना शुरू किया और बहादुरी के साथ वह जौहर दिखाए कि बहुत से यज़ीदियों को ख़ाक में मिला दिया, दुश्मन जब तलवार से उन का मुक़ाबला नहीं कर सके तो चारों तरफ से घेर कर तीरों की बारिश शुरू की, आख़िर अब्दुल्लाह बिन अज़रा के तीर से शहीद होकर आप बहिशते बरीं में जा पहुंचे ---- हज़रत अब्दुर रहमान बिन अक़ील अपने भाई को ख़ाको-ख़ून में ग़लतां देख कर बेचैन हो गए और भूके शेर की तरह कूफ़ियों पर झपट पड़े, सफों को दरहम बरहम कर दिया और दुश्मनों के ख़ून से मैदान को लाला ज़ार बना दिया। आख़िर उस्मान बिन ख़ालिद ज़ुहनी और बशर बिन सौत हमदानी ने मिल कर आप को शहीद कर दिया ---- दोनों भाईयों की शहादत के बाद हज़रत अब्दुल्लाह बिन अक़ील शेरे.बबर की तरह मैदान में कूद पड़े और शमशीर ज़नी के वह जौहर दिखाए कि बड़े-बड़े बहादुरों के दांत खट्टे कर दिये और बहुत से कूफ़ियों को जहन्नम में पहुंचा दिया। आख़िर में उस्मान बिन असीम जुहनी और बशर बिन सौत हमदानी के हाथों शहीद हुए। रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम।

*यह फ़क़रह काश नक़्शे हर दरो-दीवार हो जाए*
*जिसे जीना हो मरने के लिये तैयार हो जाए*

## फर्ज़न्दाने अली की शहादत

औलाद हज़रत अक़ील के शहादत के बाद अब हज़रत अली मुश्किल कुशा के फर्ज़न्दों की बारी आई, हज़रत मुहम्मद बिन अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा जो अस्मा बिन्त ख़स्अमिया के बतन से थे

इमाम आली मक़ाम से इजाज़त लेकर मैदान में आए, अपनी बहादुरी के जौहर दिखाए और बहुत से दुश्मनों को क़त्ल किया, आख़िर क़बीलए बनी अबान के एक शख़्स ने आप को ज़ख़्मी किया और जब आप ज़मीन पर गिर गए तो उस ने आप का सर तन से जुदा कर दिया। रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु।

अब हज़रते उस्मान बिन अली, हज़रते अब्दुल्लाह बिन अली और हज़रते जाफर बिन अली खड़े हुए। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के यह तीनों फर्ज़न्द उम्मुल बनीन के बतन से थे और इमाम आली मक़ाम अला जद्दिही व अलैहिस्सलाम के ऐसे वफादार व जां निसार थे कि जब शिमर उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद का ख़त लेकर करबला की तरफ रवाना हो रहा था तो अब्दुल्लाह बिन अबी महल जो उम्मुल बनीन का भतीजा था और जिस का शुमार कूफा के बड़े लोगों में था, इत्तिफाक़ से वह भी वहां मौजूद था, उस ने इब्ने ज़ियाद से कहा, हमारे ख़ानदान की एक लड़की के फर्ज़न्द हुसैन के साथ हैं, आप उन के लिये अमान नामा लिख दीजिये, इब्ने ज़ियाद ने उम्मुल बनीन के चारों फर्ज़न्द हज़रत अब्बास और उन तीनों हज़रात के लिये अमान नामा लिख दिया जिसे अब्दुल्लाह बिन अबी महल ने अपने आज़ाद करदा गुलाम के हाथ रवाना किया, वह अमान नामा लेकर इन हज़रात के पास पहुंचा और कहा कि आप के मामूं ज़ाद भाई ने आप लोगों के लिये इब्ने ज़ियाद से अमान नामा लिखवा कर भिजवाया है, उन चारों ग़ैय्यूर और बहादुर जवानों ने बयक ज़बान कहा हमारे भाई को हमारी तरफ से सलाम कह देना और कहना कि हम को इब्ने ज़ियाद की अमान की ज़रूरत नहीं, ख़ुदाए तआ़ला की अमान हमारे लिये काफी है — शिमर बिन जौशन उम्मुल बनीन ही के ख़ानदान का आदमी था, इब्ने ज़ियाद का ख़त अम्र बिन सअ़द को पहुंचाने के बाद उस ने भी जमाअ़ते हुसैनी की तरफ खड़े होकर आवाज़ दी कि हमारी बहन के बेटे कहां हैं? उन हज़रात ने पूछा हम से क्या कहना चाहते हो? उस ने कहा तुम लोगों के लिये अमान है, उन मुजाहिदों ने जवाब दिया कि ख़ुदा की फटकार हो तुझ

पर और तेरी अमान पर कि हमारे लिये अमान है और फर्ज़न्दे रसूल के लिये अमान नहीं। (तबरी:2:245)

फिर हज़रते अब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के यह तीनों भाई एक-एक करके मैदान में जाते हैं और हर एक सैकड़ों कूफ़ियों पर भारी पड़ते हैं। ज़ोरे यदुल्लाहि से यज़ीदी लश्कर की सफों को दरहम बरहम कर देते हैं और कुव्वते हैदरी के वह जौहर दिखाते हैं कि दुश्मनों के दांत खट्टे कर देते हैं। बिल आख़िर बहुत से यज़ीदियों को क़त्ल और ज़ख़्मी करने के बाद फर्ज़न्दे रसूल पर अपनी जानों को कुर्बान कर देते हैं। रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुम।

*वो आशिक़ाने दिलबर शहंशाहे ज़मन*
*वो कुश्तगाने ख़न्जर दर्दो-ग़म व मेहन*
*पुर ख़ून पड़े थे दश्ते मुसीबत में इस तरह*
*सेहने चमन में फूल बिखरते हैं जिस तरह*

## शहादत हज़रत क़ासिम

अब हाशिमी ख़ानदान के एक महकते हुए फूल हज़रते क़ासिम रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु जो हज़रते हसन मुज्तबा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के फर्ज़न्द हैं, उन की उम्र 19 साल है और उन की शादी का रिश्ता इमाम आली मक़ाम की साहिब ज़ादी हज़रत सकीना से तय हो चुका है, वह हज़रत की ख़िदमत में दस्त बस्ता खड़े हैं और राहे हक़ में अपनी जान कुर्बान करने के लिये इजाज़त तलब कर रहे हैं, इमाम ने फरमाया बेटा! तुम मेरे भाई हसन मुज्तबा की यादगार हो, मैं किस तरह तुम्हें तीरों से छलनी होने और तलवारों से कटते की इजाज़त दूं? अर्ज़ किया चचा जान! मुझे दुश्मनों से लड़ने की इजाज़त ज़रूर दीजिये और मुझे अपने ऊपर कुर्बान होने की सआ़दत से महरूम न कीजिये, जब हज़रत क़ासिम ने बहुत इस्रार किया तो इमामे पाक ने रोते हुए उन्हें अपने सीने से लगया और रुख़्सत कर दिया।

दुश्मन के एक सिपाही का बयान है कि जब आप मैदाने जंग में

आए तो ऐसा मालूम हुआ कि जैसे चांद का एक टुकड़ा सामने नमूदार हो गया, उन के जिस्म पर ज़िरह भी न थी बल्कि सिर्फ एक पैराहन पहने हुए शौक़े शहादत के जोश से मैदान में आ गए और यज़ीदी लश्कर से फरमाया ऐ दीन के दुश्मनो! मैं क़ासिम बिन हसन बिन अली हूं, जिसे मेरे मुक़ाबले में भेजना हो भेजो, अम्र बिन सअ़द ने मुल्के शाम के एक नामी गरामी पहलवान अरज़क़ से कहा तुम इस के मुक़ाबले में जाओ, उस ने कहा मैं हरगिज़ नहीं जा सकता कि बच्चे के मुक़ाबले में जाना हमारी तौहीन है। इब्ने सअ़द ने कहा तुम इसे बच्चा न जानो, यह हसन का बेटा और फातिहे ख़ैबर का पोता है, इस का मुक़ाबला आसान नहीं है। उस ने कहा कुछ भी हो मैं ऐसे बच्चे के मुक़ाबले में नहीं जा सकता, अल्बत्ता मेरे चार बेटे यहां मौजूद हैं, मैं उन में से एक को भेज देता हूं, अभी एक मिनट में उस का सर काट कर ले आएगा।

अरज़क़ का बड़ा बेटा ज़हेर में बुझी हुई क़ीमती तलवार चमकाता हुआ और बादल की तरह गरजता हुआ मैंदान में आया और पहुंचते ही हज़रत क़ासिम पर वार किया, आप ने उस के वार से बच कर ऐसी तलवार मारी कि वह एक ही तलवार मं ढेर हो गया, आप ने लपक कर उस की तलवार उठा ली, अब अरज़क़ का दूसरा बेटा अपने भाई को ख़ाको-ख़ून में तड़पता देख कर गुस्से में भरा हुआ सामने आया, आप ने पहले ही वार में नेज़ा मार कर उसे भी जहन्नम में पहुंचा दिया। अब तीसरा भाई ग़ैज़ो-ग़ज़ब में भरा हुआ आगे बढ़ा और गालियां बकने लगा, आप ने फरमाया हम गालियों का जवाब गालियों से नहीं देते कि यह अहले बैते नुबुव्वत की शान के ख़िलाफ़ है अल्बत्ता हम तुझे तेरे भाइयों के पास अभी जहन्नम में पहुंचा देते हैं, यह कहते हुए आप ने उसे भी खीरे की तरह काट कर दो टुकड़े कर दिया। अब अरज़क़ का चौथा बेटा शेर की तरह गरजता हुआ हज़रत क़ासिम पर हमूला आवर हुआ, आप ने उस के वार को बेकार कर दिया और उस के कंधे पर तलवार का ऐसा वार किया कि वह मुंह के बल ज़मीन पर आ गया और फिर पूरी ताक़त के साथ उठना ही चाहता था कि आप

ने उस के सर को जिस्म से अलग कर दिया।

जब हाशिमी बहादुर ने चन्द मिनटों में अरज़क के चारों बेटों को मौत के घाट उतार कर उस के सारे गुरूर को ख़ाक में मिला दिया तो वह गुस्से से कांपने लगा और जिन के मुक़ाबले में आना पहले वह अपनी तौहीन समझता था, अब उन से लड़ने के लिये बेक़रार हो गया, हाथी की तरह चिंघाड़ता और शेर की तरह दहाड़ता हुआ मैदान में आ कर हज़रते क़ासिम को ललकारा कि लड़के तैयार हो जाओ, मौत तुम्हारे सर पर आ गई, आप ने फरमाया अरज़क! होश की दवा कर, तू औरों के लिये ताक़त का पहाड़ होगा, अभी तू ने हाशिमी बहादुरों को नहीं देखा है, हमारी रगों में शेरे खुदा का ख़ून है, तू हमारे नज़्दीक मक्खी और मच्छर से ज़्यादा हैसियत नहीं रखता, अरज़क यह तअ़्ना सुन कर और भी आग बगूला हो गया और हज़रत क़ासिम पर नेज़ा से हम्ला कर दिया, आप ने उस के वार को बेकार कर दिया, फिर आप ने भी नेज़ा से वार किया जो ख़ाली गया, इस तरह दोनों तरफ से कुछ देरे नेज़ा बाज़ी हुई, उस के बाद अरज़क ने तलवार खींची तो आप ने भी तलवार निकाल ली, उस ने जब आप के हाथ में अपने बेटे की तलवार देखी तो कहा यह तलवार तो हमारे लड़के की है, तुम्हारे पास कहां से आ गई? आप ने हंस कर फ़रमाया तेरा बेटा मुझे यादगार के तौर पर यह तलवार इस लिये दे गया है ताकि मैं तुझे इसी से मौत के घाट उतार कर तेरे बेटों के पास पहुंचा दूं, यह सुन कर अरज़क गुस्से से बिफर गया और हज़रत क़ासिम पर हम्ला करना ही चाहता था कि आप ने अल्-हरबु खुदअ़तुन् के पेशे नज़र फरमाया कि अरज़क! हम तो तुझे निहायत तजुर्बाकार बहादुर समझते थे लेकिन तू निहायत अनाड़ी है कि घोड़े की ज़ीन कसने का भी सलीक़ा नहीं रखता। आप के इस तरह फरमाने पर जब वह झुक कर अपने घोड़े की ज़ीन देखने लगा तो उसी वक़्त आप ने तलवार का ऐसा भरपूर वार किया कि वह दो टुकड़े होकर ज़मीन पर आ गया।

*गिरा फौलाद का टुकड़ा ज़मीन पर सर निगूं होकर*
*तकब्बुर बह गया ज़ख़्मों के रस्ते मौजे ख़ूं होकर*

हज़रत क़ासिम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अरज़क़ के घोड़े पर सवार हो गए और ख़ेमे की तरफ आ कर हज़रत इमाम की ख़िदमत में अर्ज़ किया: يَا عَمَّاهُ الْعَطَشُ الْعَطَشُ ऐ चचा जान! प्यास प्यास, चचा जान! अगर हमें थोड़ा सा पानी पीने को मिल जाए तो अभी हम इन सब को मौत के घाट के उतार दें। इमाम आली मक़ाम ने फरमाया बेटा! थोड़ी देर और सब्र करो, अन्क़रीब तुम नाना जान सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के मुबारक हाथों से जामे कौसर पी कर सैराब हो जाओगे, उस के बाद तुम्हें कभी प्यास नहीं सताएगी। हज़रत क़ासिम फिर मैदान की तरफ पलट पड़े। इब्ने सअ़द ने कहा इस नौजवान ने हमारे कई नामी गरामी जवानों को क़त्ल कर दिया है लिहाज़ा अब इस के मुक़ाबले में तन्हा न जाओ, इसे चारों तरफ से घेर कर क़त्ल कर दो, दुश्मनों ने आप को चारों तरफ से घेरे में ले लिया और घमसान का लड़ाई शुरू हो गई, आप के जिस्म पर 27 ज़ख़्म आए, आख़िर में शीस बिन सअ़द ने आप के सीने पर ऐसा नेज़ा मारा कि आप घोड़े से गिर पड़े और يَا عَمَّاهُ اَدْرِكْنِيْ पुकारा, यानी ऐ चचा जान मेरी ख़बर गीरी फरमाइये, इमाम अपने भतीजे की दर्दनाक आवाज़ सुन कर दौड़ पड़े, देखा कि जिस्मे नाज़नीन ज़ख़्मों से चूर है, आप ने उन के सर को गोद में ले लिया और चेहरए अनवर से गर्द व गुबार साफ करने लगे, इतने में हज़रत क़ासिम ने आंखें खोल दीं और अपना सर इमामे पाक की गोद में पा कर मुस्कुराए फिर आप की रूह परवाज़ कर गई। रज़ियल्लाहु तआला अन्हु।

## शहादत हज़रते अ़ब्बास

अब वह वक़्त आ गया कि इमाम आली मक़ाम अला जद्दिही व अलैहिस्सलाम के अलम बरदार हज़रते अब्बास बिन अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा इमामे पाक से मैदान में जाने की इजाज़त तलब कर रहे हैं और अर्ज़ करते हैं कि भाई जान! सारे भाई, भतीजे और भांजे तो भूके प्यासे जामे शहादत नोश कर लिये मगर अगर नन्हें-नन्हें शीर ख़्वार बच्चों का प्यास से तड़पना और उन का बिलकना मुझ से देखा

नहीं जाता, मुझे इजाज़त दीजिये कि मैं जाकर फुरात से एक मश्कीज़ा पानी लाऊं और इन प्यासों को पिलाऊं, हज़रत की आंखें अश्कबार हो गई, फरमाया भाई अब्बास! तुम ही मेरे अलमदार हो, अगर पानी लाने में तुम शहीद हो गए तो फिर मेरा अलम कौन उठाएगा और मेरे ज़ख़्मे दिल पर मरहम कौन लगाएगा? अर्ज़ किया मेरी जान आप पर कुर्बान, मुझे पानी लाने की इजाज़त ज़रूर दीजिये कि अब नन्हें बच्चों की प्यास की तक्लीफ मेरी कुव्वते बरदाश्त से बाहर है, बस आख़िरी तमन्ना यही है कि साक़िए कौसर के जिगर पारों को चन्द घूंट पानी पिला कर मैं भी अपने भाइयों के पास पहुंच जाऊं। हज़रते इमाम ने अब्बास की तरफ से जब बहुत इसरार देखा तो उन्हें सीने से लगाया और अश्कबार आंखों के साथ उन को इजाज़त दे दी, वह एक मश्कीज़ा कांधे पर लटका कर घोड़े पर सवार हुए और फुरात की तरफ रवाना हुए।

यज़ीदी फौज ने जब हज़रते अब्बास को फुरात की तरफ आता हुआ देखा तो रोक दिया। आप ने फरमाया ऐ कूफियो! ख़ुदाए तआला से डरो और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से शर्माओ, अफ्सोस सद अफ्सोस कि तुम लोगों ने बेशुमार ख़ुतूत भेज कर नवासए रसूल को बुलाया और जब वह सफर की मशक़्क़तें उठा कर तुम्हारी ज़मीन पर जल्वा अफरोज़ हुआ तो उन के साथ तुम ने बेवफाई की, दुश्मनों से मिल कर उन के तमाम रुफक़ा (दोस्त व अहबाब) और अज़ीज़ व अक़ारिब को शहीद कर दिया, छोटे-छोटे बच्चों को एक-एक बूंद पानी के लिये तरसा रहे हो, सोचो क़ियामत के दिन नाना जान सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को क्या मुंह दिखाओगे? कूफियों ने जवाब दिया कि अगर सारी दुनिया पानी हो जाए तब भी हम तुम्हें पानी का एक क़तरा नहीं लेने देंगे, जब तक कि हुसैन यज़ीद की बैअ़त न कर लें, ज़ालिमों का यह जवाब सुन कर आप को जलाल आ गया, फरमाया हुसैन सर कटा सकते हैं लेकिन बातिल के सामने झुका नहीं सकते।

*मर्दे हक़ बातिल से हरगिज़ ख़ौफ खा सकता नहीं*
*सर कटा सकता है लेकिन सर झुका सकता नहीं*

फिर हज़रते अब्बास शेर की तरह उन पर झपट पड़े और तलवारे आबदार धुवांधार चलाने लगे यहां तक कि बहुत से दुश्मनों को मौत की नींद सुलाते हुए फुरात के करीब पहुंच गए, पानी के किनारे वाली फौज ने जब आप को देखा तो वह आहनी दीवार बन गई मगर शेरे खुदा का शेर मारते काटते और दुश्मनों की सफों को चीरते फाड़ते आगे बढ़ा और घोड़े को फुरात में दाख़िल कर दिया, मश्कीज़ा भरा और एक चुल्लू हाथ में पानी लेकर पीना चाहा कि नन्हे-नन्हे बच्चों का प्यास से तड़पना और बिलकना याद आ गया तो आप की ग़ैरते ईमानी ने यह गवारा न किया कि साकिए कौसर के दुलारे अली और फातिमा के जिगर पारे तो प्यास से तड़पें और हम सैराब हो जायें, आप ने चुल्लू का पानी डाल दिया और भरा हुआ मश्कीज़ा बाएं कांधे पर लटकाए हुए निकल पड़े, चारों तरफ से शोर हुआ, रास्ता रोक लो, मश्कीज़ा छीन लो, पानी बहा दो कि अगर हुसैन के ख़ेमे तक पानी पहुंच गया तो फिर हमारा एक सिपाही नहीं बचेगा, सब की औरतें बेवा हो जायेंगी और सारे बच्चे यतीम हो जायेंगे। और हज़रते अब्बास इस कोशिश में रहे कि किसी तरह अहले बैते नुबुव्वत के प्यासों तक यह पानी पहुंच जाए, जब दुश्मनों ने आपको चारों तरफ से घेर लिया तो आप ने बिफरे हुए शेर की तरह हम्ला करना शुरू कर दिया, लाशों पर लाश गिरने लगी और ख़ून की नाली बहने लगी और शेरे खुदा के शेर ने साबित कर दिया कि मेरे बाज़ुओं में कुव्वते हैदरी और रगों में ख़ूने अली है।

आप बराबर दुश्मनों को मारते-काटते और चीरते फाड़ते हुए ख़ेमए हुसैनी की तरफ बढ़ते चले जा रहे थे कि एक बद बख़्त जिस का नाम ज़रारा था, पीछे से धोका देकर ऐसी तलवार चलाई कि हाथ कंधे से कट कर अलग हो गया, आप ने फौरन दाहिने कंधे पर मश्कीज़ा ले लिया और उसी हाथ से तलवार भी चलाते रहे कि फिर अचानक नौफल बिन अरज़क ख़बीस ने दाहिना बाज़ू भी काट कर अलग कर दिया, अब आप ने मश्कीज़ा को दांतों से पकड़ लिया मगर मश्कीज़ा का ख़ेमए हुसैनी तक पहुंचना अल्लाह तआला को मनज़ूर न था, एक

बद बख़्त का तीर मश्कीज़े में ऐसा लगा कि पार हो गया और उस का सारा पानी बह गया, फिर ज़ालिमों ने चारों तरफ़ से घेर कर आप को ज़ख़्मों से चूर-चूर कर दिया यहां तक आप घोड़े की ज़ीन से ज़मीन पर आ गए और يا أخاه أدركني फरमाया, यानी ऐ भाई जान मेरी ख़बर-गीरी फरमाइये। इमाम आली मक़ाम दौड़ कर तशरीफ लाए, देखा कि अब्बास अलमदार ख़ून में नहाए हुए हैं और अन्क़रीब जामे शहादत नोश करने वाले हैं, शिद्दते ग़म से इमाम की ज़बान पर यह कलिमात जारी हुए الآن انكسر ظهري अब मेरी कमर टूट गई। फिर अब्बास की लाश को आप उठा कर खेमा की तरफ ला रहे थे कि उन की रूह क़फ़से उंसुरी से परवाज़ कर गई। *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।*

*लूटा अजल ने शेरे इलाही के बाग़ को*
*भाई के दिल से पूछिये भाई के दाग़ को*

## शहादत हज़रत अली अकबर

अब इमाम आली मक़ाम के सामने आप के लख़्ते जिगर नूरे नज़र शबीहे पयम्बर हज़रत अली अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु खड़े हैं और मैदाने जंग में जाने की इजाज़त तलब कर रहे हैं। आप ने मुहब्बत भरी निगाह अपने फर्ज़न्दे अर्जुमन्द पर डाली और फरमाया बेटा! मैं तुम्हें किस बात की इजाज़त दूं? क्या तीरों से छलनी होने और तलवारों से कटने की इजाज़त दूं? क्या मैं तुम्हें ख़ाको-ख़ून में ग़लतां होने (लोटने) की इजाज़त दूं? बेटा! तुम न जाओ, मैं जाता हूं कि यह लोग मेरे ख़ून के प्यासे हैं, मुझे शहीद करने के बाद यह फिर किसी से तआरुज़ न करेंगे। अली अकबर ने अर्ज़ किया बाबा जान! मैं आप के बाद ज़िंदा नहीं रहना चाहता, मुझे भी बहिश्ते बरीं में नाना जान सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के पास पहुंचा दीजिये। चहीता बेटा जिस की कभी कोई हट और ज़िद ऐसी न थी जो पूरी न की गई हो मगर आज तो वह गर्दन कटाने और ख़ाको-ख़ून में लोटने की इजाज़त तलब कर रहा है, इजाज़त दें तो किस तरह? और न दें तो उस का शीशए दिल चूर-चूर हो जाएगा और बाग़े रिसालत का गुले शादाब

रंजो-ग़म से कुमहला जाएगा। मगर जब बेटे का इस्रार बहुत ज़्यादा बढ़ा तो इमाम आली मक़ाम को चारो-नाचार इजाज़त देनी ही पड़ी।

हज़रत अली अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मैदाने जंग में जाने के लिये तैयार हुए तो इमाम आली मक़ाम ने ख़ुद अपने बेटे को घोड़े पर सवार किया, अस्लेहा अपने दस्ते मुबारक से लगाए, फ़ौलादी टोपी सर पर रखी, कमर पर पटका बांधा, तलवार हमाइल की और नेज़ा अपने दस्ते अक़्दस से उन के हाथ में दिया, बेटे ने अपने बाबा जान और ख़ेमे में खड़ी हुई दुख रसीदा बीबियों को सलाम किया और मैदाने जंग की तरफ़ चल पड़े।

18 साल का यह हसीन जवान जिस का चेहरए ज़ेबा आक़ाए दो आलम नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के जमाले जहां आरा का खुत्बा पढ़ रहा था और जिस का रूए ताबां हबीबे किब्रिया के जल्वए ज़ेबा की याद दिला रहा था, मैदाने कार ज़ार में पहुंच गया, असदुल्लाहि शेर ने सफे अअ्दा की तरफ़ नज़र की, ज़ुलफ़िक़ारे हैदरी चमकाया और यह रज्ज़ पढ़नी शुरू की:

أَنَا عَلِىُّ بْنُ حُسَيْنِ بْنِ عَلِىّ　　نَحْنُ اَهْلُ الْبَيْتِ اَوْلٰى بِالنَّبِىّ

यानी ऐ यज़ीदियो! जान लो कि मैं अली अकबर हूं, मेरे बाप का नाम हुसैन है जो फ़ातिहे ख़ैबर अली हैदर के नूरे नज़र हैं और कान खोल कर सुन लो कि हम अहले बैते रिसालत हैं, अल्लाह के प्यारे रसूल से सारी दुनिया में हम से ज़्यादा कोई क़रीबी नहीं।

शहज़ादए आली वक़ार ने जिस वक़्त यह रज्ज़ पढ़ी होगी, मैदाने करबला का एक-एक चप्पा और रेगिस्ताने कूफ़ा का एक-एक ज़र्रा कांप गया होगा मगर यज़ीदी जिन का दिल पत्थर से भी ज़्यादा सख़्त था उन्हों ने कोई असर न लिया और उन का सीना अहले बैते नुबुव्वत के कीने से पाक न हुआ।

फिर आप ने फ़रमाया ऐ ज़ालिमो! अगर तुम औलादे रसूल के ख़ून के प्यासे हो तो जो शख़्स तुम में से बहादुर हो उसे मैदान में भेजो, ज़ोरे असदुल्लाहि देखना हो तो मेरे मुक़ाबला में आओ, मगर किस की

हिम्मत थी कि आगे बढ़ता और किस के दिल में ताबो-तवां थी कि तन्हा शेरे ज़मां के सामने आता, जब बार-बार की ललकार के बावजूद कोई मुक़ाबला में नहीं आया तो आप ने खुद ही आगे बढ़ कर दुश्मनों की सफों पर हमला कर दिया, जिस तरफ का रुख़ किया यज़ीदी लश्कर काई की तरह छटता चला गया और एक-एक वार कई-कई देव पैकर जवानों को गिरा दिया। कभी लश्कर के मैमना पर चमके तो उसे मुन्तशिर कर दिया और कभी पलट कर फौज के मैसरा पर झपटे तो उस की सफों को दरहम बरहम कर डाला और कभी क़ल्बे लश्कर में ग़ोता लगा कर शमशीर ज़नी का वह जौहर दिखाया कि कुश्तों के पुश्ते लगा दिये। हर तरफ शोर बरपा हो गया, बड़े-बड़े सोरमा हिम्मत हार गए और बड़े-बड़े बहादुरों के हौसले पस्त हो गए। हाशिमी शेर का हमला न था बल्कि क़हरे इलाही का एक अज़ाबे अज़ीम था जो यज़ीदियों पर नाज़िल हो गया था।

तेज़ धूप और तपते हुए रेगिस्तान में लड़ते-लड़ते जब प्यास से बक़रार हो गए तो आप पलट कर इमाम आली मक़ाम की ख़िदमत में आए और अर्ज़ किया يَا اَبَتَاهُ اَلْعَطَشُ अब्बा जान! प्यास का बहुत ज़्यादा ग़लबा है, अगर पानी का एक प्याला मिल जाए तो मैं इन सब को मौत के धाट उतार दूं, मेहरबान बाप ने अज़ीज़ बेटे की प्यास देखी मगर यहां पानी क़हां था तो इस तिश्नए शहादत को पिलाया जाता, दस्ते शफ्क़त से चेहरए गुलगूं का गर्दो-ग़ुबार साफ किया, अपनी अंगूठी दी कि इसे मुंह में रख लो और फरमाया बेटा! अब तुम्हारी सैराबी का वक़्त बहुत नज़्दीक आ गया है, अन्क़रीब तुम साक़िए कौसर नाना जान सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के दस्ते अक़्दस से कौसर का ऐसा जाम पियोगे कि उस के बाद कभी तुम्हें प्यास नहीं सताएगी।

शफीक़ बाप की तसल्ली से कुछ तस्कीन हुई तो फिर आप मैदाने जंग में पहुंच गए और दुश्मनों के मुक़ाबिल हो कर पुकारा هَلْ مِنْ مُبَارِزٍ है कोई जो मेरे सामने आए। अम्र बिन सअ़द ने तारिक़ बिन शीस पहलवान से कहा बड़े शर्म की बात है कि एक नौजवान अकेला मैदान

में है और तुम हज़ारों की तादाद में हो, उस ने पहली मर्तबा ललकारा और जब तुम में कोई मुक़ाबला में न गया तो उस ने ख़ुद आगे बढ़ कर हमूला किया। तुम्हारी सफ़ों को दरहम बरहम कर दिया और तुम्हारे बहुत से बहादुरों को तहे तेग़ कर दिया, भूका है, प्यासा है और धूप में लड़ते-लड़ते थक गया है, इस हाल में वह तुम्हें फिर ललकार रहा है, मगर तुम में से कोई उस के मुक़ाबला की ताक़त नहीं रखता, तुफ़ है तुम्हारे दावाए शुजाअत पर। अगर कुछ ग़ैरत है तो मैदान में पहुंच कर उस का मुक़ाबला कर और सर काट कर ले आ। तुम ने यह काम अंजाम दिया तो मैं वादा करता हूं कि उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद से तुम्हें मूसिल की गवर्नरी दिला दूंगा। तारिक़ बद बख़्त गवर्नरी के लालच में फ़र्ज़न्दे रसूल का ख़ून बहाने के लिये दौड़ पड़ा और सामने पहुंचते ही शबीहे पयम्बर पर नेज़ा से हमूला कर दिया, मगर हाशिमी शेर ने कमाले हुनरमन्दी से उस के वार को बेकार करके सीने पर ऐसा नेज़ा मारा कि पीठ से निकल गया और वह घोड़े से गिर गया, शहज़ादे ने उस को रौंद डाला। तारिक़ के बेटे अम्र बिन तारिक़ ने जब इस तरह अपने बाप को क़त्ल होते देखा तो वह गुस्से से आग बगूला हो गया और दौड़ कर अली अकबर पर हमूला कर दिया। शहज़ादे ने एक ही वार में उस का काम तमाम कर दिया। अब तारिक़ का दूसरा बेटा तलहा बिन तारिक़ अपने बाप और भाई का बदला लेने के लिये शहज़ादए हुसैन पर टूट पड़ा, हज़रत अली अकबर ने उसे भी मौत के घाट उतार दिया। शहज़ादे की हैबत से पूरा यज़ीदी लश्कर थर्रा गया।

इब्ने सअ़द ने एक मशहूर बहादुर मिसरा बिन ग़ालिब को मुक़ाबला के लिये भेजा, वह नेज़ा तान कर हमूला करना ही चाहता था कि आप ने उस के नेज़ा को तलवार से क़लम कर दिया और फिर उस के सर पर ऐसी तलवार मारी कि वह दो टुकड़े होकर ज़मीन पर गिर पड़ा। अब किसी में हिम्मत न रही कि वह तन्हा हाशिमी शेर के मुक़ाबिल आता। आख़िर इब्ने सअ़द ने महकम बिन तुफ़ैल को हज़ार सवारों के साथ यक-बारगी हमूला करने के लिये भेजा, उन बद बख़्तों ने आप को

चारों तरफ से घेर कर हमले करना शुरू कर दिये, आप भी बराबर जवाबी हमले करते रहे और दुश्मनों को ख़ाको-ख़ून में मिलाते रहे लेकिन नेज़ा और तलवार की लगा तार ज़र्बों से आप का तने नाज़िनीन ज़ख़्मों से चूर-चूर हो गया और चमनिस्ताने फातिमा का यह फूल अपने ख़ून से रंगीन हो गया। बिल-आख़िर आप पुश्ते ज़ीन से रूए ज़मीन पर आ गए और पुकार कर يَا اَبَتَاهُ اَدْرِكْنِيْ ऐ अब्बा जान! मेरी ख़बर गीरी फरमाइये, इमामे आली मक़ाम घोड़ा बढ़ा कर मैदान में पहुंचे और शहज़ादे को उठा कर ख़ेमा में लाए, सर को गोद में लिया और उनके चेहरए अनवर से ख़ून आलूद गर्दो-गुबार साफ करने लगे कि इतने में अली अकबर ने आंखें खोल दीं, इमामे पाक के आख़िरी दीदार से महज़ूज़ हुए फिर आंखें बन्द हो गईं और बहिश्ते बरीं को रवाना हो गए। *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।*

*जहां भर के यज़ीदी को प्यामे मर्ग लाएगा*
*शहीदाने वफा का ख़ूने नाहक़ रंग लाएगा*

## शहादत हज़रत अली असग़र

इमामे आली मक़ाम के छोटे फर्ज़न्द हज़रत अली असग़र जो अभी बहुत कम उम्र और शीर ख़्वार हैं, प्यास से बेचैन हैं, तिश्नगी की शिद्दत से तड़प रहे हैं, भूकी प्यासी मां के सीने में दूध खुश्क हो चुका है, ख़ेमा में पानी का एक क़तरा नहीं है, छोटा बच्चा सूखी ज़बान बाहर निकालता है, बेचैनी में हाथ पांव मारता है और पेचो-ताब खा कर रह जाता है, मां से बच्चे की यह हालत देखी न गई, गोद में लिये इमामे आली मक़ाम की ख़िदमत में हाज़िर हुईं और अर्ज़ किया मेरे सरताज! अब अली असग़र की प्यास देखी नहीं जाती, इस नन्ही सी जान की बेचैनी कुव्वते बर्दाश्त से बाहर है, इस के रोने और तड़पने से कलेजा पाश-पाश हुआ जा रहा है, आप इसको गोद में लेकर जाइये और ज़ालिमों को दिखाइये, शायद उन संगदिलों को इस बच्चे की प्यास पर तरस आ जाए और पानी के चन्द घूंट इस को पिला दें।

इमामे आली मक़ाम उस नन्हे बच्चे को सीने से लगा कर सियाह दिल दुश्मनों के सामने तशरीफ ले गए और फरमाया ऐ मेरे नाना जान का कलिमा पढ़ने वालो! यह मेरा सब से छोटा बच्चा है जो प्यास से दम तोड़ रहा है, यह अपने नन्हे-नन्हे हाथों को तुम्हारी तरफ फैला कर तुम से पानी के चन्द घूंट तलब कर रहा है, अगर तुम्हारे नज़्दीक मुजरिम हूं तो मैं हूं, इस बच्चे का तो कोई जुर्म नहीं है, इस को तो पानी पिला दो। देखो प्यास की शिद्दत से इस की हालत कैसी हो रही है, अगर तुम लोगों के दिलों में कुछ भी रहम हो तो इस नन्हे बच्चे के लिये थोड़ा सा पानी दे दो।

इमामे आली मक़ाम की इस तक़रीर का ज़ालिमाने संगे दिल पर कोई असर नहीं हुआ और बेज़बान बच्चे पर उन को ज़रा भी रहम नहीं आया, पानी के बजाए एक बद बख़्त अज़ली हुरमला बिन काहिल ने तीर का ऐसा निशाना बांध कर मारा कि अली असग़र की हलक़ को छेदता हुआ इमाम के बाज़ू में पैवस्त हो गया, हज़रत इमाम ने तीर खींचा तो हज़रत अली असग़र के गले से ख़ून का फव्वारा उबलने लगा और बच्चे ने बाप के हाथों में तड़प कर जान दे दी।

*ज़ख़्मी जिगर ख़बीसों ने तोड़ा हुसैन का*
*बच्चा भी शीर ख़्वार न छोड़ा हुसैन का*

इमामे आली मक़ाम ने हसरत भरी निगाह आसमान की तरफ उठाई और बारगाहे खुदावन्दी में अर्ज़ किया इलाहल आलमीन! हुसैन की यह नन्ही कुर्बानी भी क़बूल फरमा ले, फिर नन्हे शहीद की लाश को अपने कलेजे से लगा कर आहिस्ता-आहिस्ता ख़ेमे की तरफ रवाना हुए। और जब मां की गोद में अली असग़र की लाश को दिया तो मां ने हाए मेरा लाल-कह कर लाश को कलेजे से लगा लिया और रोते हुए कहा बेटा! मेरा प्यारा बेटा! एक मर्तबा और अपनी मां के सोखे हुए पिस्तान में मुंह लगा ले, अब तुम को अपने सीने लगाना कभी नसीब न होगा। ---- हाए अफ्सोस!

*फूल तो दो दिन बहारे जां फज़ा दिखला गए*
*हस्रत उन गुंचों पे है जो बे खिले मुरझा गए*

# ताजदारे करबला इमाम आली मक़ाम की शहादत

अब जिगर पारए रसूल, शहज़ादए बतूल, अली के नूरे ऐन, मोमिनों के दिल के चैन, जन्नती नौ जवानों के सरदार, मुजाहिदों के क़ाफ़िलए सालार, इब्ने हैदरे कर्रार, शहंशाहे करबला, पैकरे सब्रो-रज़ा हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की शहादत का वक़्त आ गया, जब आप ने मैदाने जंग में जाने का इरादा फरमाया तो हज़रत ज़ैनुल आ़बिदीन अपनी बीमारी की नक़ाहत और कमज़ोरी के बावजूद नेज़ा लिये हुए हज़रत इमाम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया बाबा जान! पहले हमें मैदाने कार ज़ार में जाने और अपनी जान के निसार करने की इजाज़त दीजिये, मेरे होते हुए आप शहीद हो जाएं यह नहीं हो सकता, इमामे आली मक़ाम ने नूरे नज़र को अपनी आग़ोशे मुहब्बत में लिया, प्यार किया और फरमाया बेटा! मैं तुम्हें कैसे इजाज़त दे दूं? अली अकबर भी शहीद हो गए, क़ासिम भी दुनिया से चले गए और तमाम अज़ीज़ व अक़ारिब जो हम्राह थे सब राहे हक़ में निसार हो चुके, मैं तुम्हें इजाज़त दे दूं तो ख़्वातीन अहले बैत का कोई महरम नहीं रह जाएगा, इन बेकस ग़रीबुल वतन को मदीना कौन पहुंचाएगा? तुम्हारी माओं बहनों की निगह दाश्त व ख़बर गीरी कौन करेगा? मेरे प्यारे बेटे! तुम्हें ज़िंदा रहना है, तुम्हें शहीद नहीं होना है, वरना मेरी नस्ल किस से चलेगी? हुसैनी सादात का सिलसिला किस से जारी होगा? मेरे जद्द व पिदर की जो अमानतें मेरे पास हैं वह किस के सुपुर्द की जायेंगी? मेरे लख़्ते जिगर! यह सारी उम्मीदें तुम्हारी ज़ात से वाबस्ता हैं, देखो मेरी तरह सब्रो-इस्तिक़ामत से रहना, राहे हक़ में आनी वाली हर तक्लीफ व मुसीबत को बर्दाश्त करना और हर हालत में अपने नाना जान सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की शरीअ़त और उन की सुन्नत की पैरवी करना। मेरे बाद तुम ही मेरे जा नशीन हो,

तुम्हें मैदाने कार ज़ार में जाने की इजाज़त नहीं -- फिर इमामे आली मक़ाम ने उन को तमाम ज़िम्मेदारियों का हामिल किया (सौंपा), अपनी दस्तारे मुबारक उतार कर उन के सर पर रख दी और उन्हें बिस्तरे अलालत पर लिटा दिया।

अब इमामे पाक अपने ख़ेमा में तशरीफ लाए, संदूक़ खोला, कुबाए मिस्री ज़ेबे तन फरमाई और तबर्रुकात में से अपने नाना जान सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अमामए मुबारक सर पर बांधा, सैय्यिदुश शुहदा हज़रत अमीरे हमज़ा की ढाल पुश्त पर रखी, शेरे खुदा की तलवारे ज़ुल-फिक़ार गले में हमाइल की (लटकाई) और जाफरे तैय्यार का नेज़ा हाथ में लिया, इस तरह ताजदारे करबला, पैकरे सब्रो-रज़ा सब कुछ राहे हक़ में कुर्बान करने के बाद अब अपनी जान नज़्र करने के लिये तैयार हो गए, बीबियों ने जब इस मंज़र को देखा तो उन के चेहरों के रंग उड़ गए और आंखों से मोती टपकने लगे। हज़रते जैनब ने आंसू बहाते हुए कहा प्यारे भय्या! बीवियों ने दर्द में डूबी हुई आवाज़ से कहा हमारे सरताज! और हज़रते सकीना ने रोते हुए कहा बाबा जान! कहां जा रहे हो? इस जंगल में हमें किस के सुपुर्द करके जा रहे हो? जो दरिन्दे नन्हे अली असग़र पर रहम नहीं खाए वह हमारे साथ क्या सुलूक करेंगे, फरमाया अल्लाह तुम लोगों का हाफिज़ व निगहबान है। फिर आप ने तमाम अहले ख़ेमा को सब्रो-शुक्र की वसिय्यत फरमाई और सब को अपना आख़िरी दीदार दिखा कर घोड़े पर सवार हो गए।

*फातिमा के लाडले का आख़िरी दीदार है*
*हश्र का हंगामा बरपा है मियाने अहलेबैत*

ग़रीबुल वतन और बेकस मुसाफिरों का दुख रसीदा क़ाफिला हसरत भरी निगाहों से आप को देखता रहा। पर्दा नशीनाने हरम हसरतो-यास (हसरतो-उम्मीद) की ख़ामोश तस्वीरें बनी हुई खड़ी रहीं और सब की आंखों से अश्के ग़म के मोती टपकते रहे, मगर कोई चीज़ हज़रत इमाम के पांव की बेड़ी न बन सकी, आप ने सब को ख़ुदा के

हवाले किया और दुश्मनों के सामने पहुंच गए। कई दिन के भूके प्यासे हैं और बेटों, भाईयों, भतीजों और जां निसार साथियों के ग़म से निढाल हैं, इस के बावजूद पहाड़ों की तरह जमी हुई फौजों के मुक़ाबले में शेर की तरह डट कर खड़े हो गए और एक वलवला अंगेज़ रज्ज़ पढ़ी जो आप के नसब और ज़ाती फज़ाइल पर मुश्तमिल थी, फिर आप ने एक फसीह व बलीग़ तक़रीर की, उस में आप ने हम्दो-सलात के बाद फरमाया ऐ लोगो! तुम जिस रसूल का कलिमा पढ़ते हो उसी रसूल का इरशाद है कि जिस ने हसन व हुसैन से दुश्मनी की उस ने मुझ से दुश्मनी की और जिस ने मुझ से दुश्मनी की उस ने अल्लाह तआला से दुश्मनी की। तो ऐ यज़ीदियो! अल्लाह से डरो और मेरी दुश्मनी से बाज़ आओ, अगर वाक़ई खुदा व रसूल पर ईमान रखते हो तो सोचो उस खुदाए शहीद व बसीर को क्या जवाब दोगे? और रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को क्या मुंह दिखाओगे? बेवफाओ! तुम ने मुझे खुतूत भेज कर बुलाया और जब मैं यहां आया तो तुम ने मेरे साथ ऐसा बुरा सुलूक किया कि मज़ालिम की इन्तहा कर दी, ज़ालिमो! तुम ने मेरे बेटों, भाइयों और भतीजों को ख़ाको-ख़ून में तड़पाया चमने ज़हरा के एक-एक फूल को काट डाला, मेरे तमाम साथियों को शहीद कर दिया और अब मेरे ख़ून के प्यासे हो, अपने रसूल का घर वीरान करने वालो! अगर क़ियामत पर ईमान रखते हो तो अपने अंजाम पर ग़ौर करो और अपनी आक़िबत पर नज़र डालो, फिर यह भी सोचो कि मैं कौन हूं? किस का नवासा हूं? मेरे वालिद कौन हैं? मेरी वालिदा किस की लख़्ते जिगर हैं? मैं उन्हीं फातिमा ज़हरा का फर्ज़न्द हूं कि जिन के पुलसिरात पर गुज़रते वक़्त अर्श से निदा की जाएगी कि ऐ अहले महशर! अपने सरों को झुका लो और अपनी आंखें बन्द कर लो, हज़रत ख़ातूने जन्नत सत्तर हज़ार हूरों के साथ गुज़रने वाली हैं। बे ग़ैरतो! अब भी वक़्त है, शर्म से काम लो और मेरे ख़ून से अपने हाथों को रंगीन मत करो।

हज़रत इमाम की तक़रीर सुन कर यज़ीदी लश्कर के बहुत से लोग

मुतअस्सिर हो गए और उन की आंखों से आंसू जारी हो गए लेकिन शिमर वग़ैरा बद बख़्त ख़बीसों ने कोई असर न लिया बल्कि जब उन्हों ने लश्करियों पर हज़रत इमाम की तक़रीर का कुछ असर देखा तो शोरो-ग़ुल मचाना शुरू कर दिया कि आप या तो यज़ीद की बैअ़त कर लें और या तो जंग के लिये तैयार हो जायें, इस के अलावा हम कुछ सुनना नहीं चाहते। इमाम ने फरमाया ऐ बद बातिनो! मुझे ख़ूब मालूम है कि तुम्हारे दिलों पर शक़ावत व बद बख़्ती की मोहर लग चुकी है और तुम्हारी ग़ैरते ईमानी मुर्दा हो चुकी है लेकिन मैं ने यह तक़रीर सिर्फ इतमामे हुज्जत के लिये की है ताकि तुम यह न कह सको कि हम ने हक़ और इमामे बरहक़ को नहीं पहचाना था। अल्हम्दु लिल्लाह! मैं ने तुम्हारा यह उज़र (बहाना) ख़त्म कर दिया। अब रहा यज़ीद की बैअ़त का सवाल? तो यह मुझ से हरगिज़ नहीं हो सकता कि मैं बातिल के सामने सर झुका दूं।

*मर्दे हक़ बातिल से हरगिज़ ख़ौफ खा सकता नहीं*
*सर कटा सकता है लेकिन सर झुका सकता नहीं*

इमामे आली मक़ाम ने जब देखा कि यह बद बख़्त मेरे क़त्ल का वबाल अपनी गर्दन पर ज़रूर लेंगे और मेरा ख़ून बहाने से किसी तरह बाज़ नहीं आयेंगे तो आप ने फरमाया अब तुम लोग जो इरादा रखते हो पूरा करो और जिसे मेरे मुक़ाबला के लिये भेजना चाहते हो भेजो। बड़े बड़े मशहूर बहादुर जो शेरे ख़ुदा के शेर से मुक़ाबला के लिये महफ़ूज़ रखे गए थे, उन में से इब्ने सअ़द ने सब से पहले तमीम बिन क़हतबा को हज़रत इमाम से जंग करने के लिये भेजा, जो मुल्के शाम का नामी गरामी पहलवान था, वह ग़ुरूर व तम्किनत (घमन्ड) से हाथी की तरह झूमता हुआ और अपनी बहादुरी की डींगें मारता हुआ हज़रत के सामने आया और पहुंचते ही आप पर हम्ला करना चाहा, अभी उस का हाथ उठा ही था कि शेरे ख़ुदा के शेर ने ज़ुलफिक़ारे हैदरी से ऐसा जंचा तुला वार किया कि उस का सर जिस्म से उड़ा दिया और उसके घमन्ड को ख़ाक में मिला दिया।

फिर यज़ीद अबतही बड़े कर्रो-फ़र के साथ आगे बढ़ा और चाहा कि इमाम के मुक़ाबिल बहादुरी का जौहर दिखा कर यज़ीदियों की जमाअ़त में अपनी शाबाशी हासिल करे और इनाम व इकराम का मुस्तहिक़ बने। आप के सामने पहुंच एक नारा मारा और कहा कि शाम व इराक़ के बहादुराने कोह शिकन में मेरी बहादुरी का ग़लग़ला (चर्चा) है, मैं रूम व मिस्र में शोहरए आफ़ाक़ हूं, बड़े-बड़े बहादुरों को आंख झपकते मौत के घाट उतारता हूं, सारी दुनिया के लोग मेरी शुजाअ़त व बहादुरी का लोहा मानते हैं और मेरे सामने भेड़ बकरी की तरह भागते हैं, किसी में मुझ से मुक़ाबला की ताक़त नहीं, आज तुम मेरी कुव्वत और मेरे दाव पेच को देखो। इमामे आली मक़ाम ने फ़रमाया तू मुझे जानता नहीं, मैं अपनी रगों में हाशिमी ख़ून रखता हूं, फ़ातिहे ख़ैबर, शेरे ख़ुदा, अ़ली मुश्किल कुशा का शेरे नर हूं, तुम जैसे ना मर्दों की मेरी निगाह में कोई हक़ीक़त नहीं, मेरे नज़्दीक मक्खी और मच्छर से ज़्यादा तेरी हैसियत नहीं, शामी जवान यह सुन कर आग बगूला हो गया और फ़ौरन घोड़ा कुदा कर आप पर तलवार का वार कर दिया; हज़रत इमाम ने उस के वार को बेकार कर दिया और फिर झपट कर उस की कमर पर ऐसी तलवार मारी कि वह खीरे की तरह कट कर दो टुकड़े हो गया और मुंह के बल ज़मीन पर गिर पड़ा।

*गिरा फ़ौलाद का टुक्ड़ा ज़मीं पर सर निगूं होकर*
*तकब्बुर बह गया ज़ख़्मों के रस्ते मौजे ख़ूं होकर*

बदर बिन सुहैल यमनी इस मंज़र को देख कर गुस्से से लाल पीला हो गया और इब्ने सअ़द से कहा तुम ने किन गंवारों को हुसैन के मुक़ाबला में भेज दिया जो दो हाथ भी जम कर मुक़ाबला नहीं कर सके, मेरे चारों बेटों में से किसी एक को भेज दे, फिर देख अभी मिंटों में हुसैन का सर काट कर लाते हैं, इब्ने सअ़द ने उस के बड़े बेटे को इशारा किया वह घोड़ा कुदाता हुआ इमाम आली मक़ाम के सामने पहुंच गया, आप ने फ़रमाया बेहतर होता कि तेरा बाप मुक़ाबला में आता ताकि वह तुझे ख़ाको-ख़ून में तड़पता हुआ न देखता। फिर आप

ने ज़ुलफ़िक़ारे हैदरी से एक ही वार में उस का काम तमाम करके जहन्नम में पहुंचा दिया।

बदर ने जब अपने मशहूर शहसवार बेटे को इस तरह ज़िल्लत के साथ क़त्ल होता हुआ देखा तो ग़ैज़ो-ग़ज़ब का पुतला बन कर दांत पीसते हुए घोड़ा दौड़ा कर इमाम के सामने आया और पहुंचते ही नेज़ा से वार किया, आप ने उस के नेज़ा को क़लम कर दिया, उस ने फ़ौरन तलवार संभाली और कहा हुसैन! देखना मैं वह शमशीर मारता हूं कि अगर पहाड़ पर मारूं तो वह सुर्मा बन जाए, यह कहते हुए इमाम पर तलवार चला दी। आप ने उस के वार को ख़ाली कर दिया और उस पर ज़ुलफ़िक़ार का ऐसा भरपूर हाथ मारा कि बदर का सर कट कर गेंद की तरह दूर जाकर गिरा।

इस तरह शाम व इराक़ के एक से एक बहादुर हज़रते इमाम के मुक़ाबिल आते रहे मगर जो भी सामने आया आप ने उसे मौत के घाट उतार दिया, कोई उन में से ज़िंदा बच कर वापस नहीं गया। शेरे ख़ुदा के शेर ने तीन दिन का भूका प्यासा होने के बा वजूद शुजाअत व बहादुरी के वह जौहर दिखाए कि ज़मीने करबला में बहादुराने कूफ़ा व शाम का खेत बो दिया। किसी के सीने में नेज़ा मारा और पार निकाल दिया, किसी को नेज़ा की अनी (नोक) पर उठा कर ज़मीन पर पटक दिया, उस की हड्डियां टूट गयीं, किसी का पटका पकड़ कर ज़मीन पर गिरा दिया और घोड़े की टापों से उसको रौंद डाला, किसी की कमर पर तलवार मारी तो वह दो टुकड़े होकर ज़मीन पर गिरा, किसी की गर्दन पर ज़ुलफ़िक़ारे हैदरी चलाई तो उस का सर बेल की तरह लढ़कता हुआ चला गया और किसी के सर पर तलवारे आबदार मारी तो ज़ीन तक कट गया।

ग़रज़ कि इमामे आली मक़ाम ने दुश्मनों की लाशों का अंबार लगा दिया। बहादुराने शाम व इराक़ के ख़ूनों से करबाला के प्यासे रेगिस्तान को सैराब कर दिया। बड़े-बड़े सफ़ शिकन बहादुर काम आ गए और मशहूर जंग जू पहलवान मौत के घाट उतर गए, आप की हैबत व

शुजाअ़त से दुश्मनों के दिल थर्रा गए और बड़े-बड़े घमंडियों के छक्के छूट गए, दुश्मनों के लश्कर में शोर बरपा हो गया कि जंग का यह अंदाज़ रहा तो हमारी जमाअ़त का एक सिपाही बच कर नहीं जा सकेगा, सबकी औरतें बेवा हो जायेंगी और सारे बच्चे यतीम हो जायेंगे। लिहाज़ा अब मौक़ा मत दो और चारों तरफ से घेर कर हमूला करो।

रूबाह सिफत यज़ीदी जब दस्त बदस्त की जंग में बुरी तरह शिकस्त खाए तो उन्हों ने यही तरीक़ा इख़्तियार किया कि हज़ारों ने चारों तरफ से घेर कर हमूला करना शुरू कर दिया।

*वो गुल एज़ारे फातिमा ख़ारों में घिर गया*
*तन्हा अली का लाल हज़ारों में घिर गया*

अब सैकड़ों तलवारें बयक वक़्त चमकने लगीं, पचासों नेज़े आपस में टकराने लगे और दुश्मन बढ़-बढ़ कर इमाम पर वार करने लगे। इधर आप की तलवार जलाले हैदरी की तस्वीर और *ला सैफ़ इल्ला ज़ुलफिक़ार* की तफ्सीर बनी हुई थी, आप तेग़े आबदार (चमचमाती हुई तलवार) के जौहर दिखा रहे थे, जिस तरफ हमूला करते परे के परे काट डालते और दुश्मनों के सरों को इस तरह उड़ाते जैसे बादे ख़ज़ां के झोंके पत्ते गिराते हैं।

इब्ने सअ़्द को जब इस तरह की जंग में भी कामयाबी की उम्मीद नज़र न आई तो उस ने हुक्म दिया कि चारों तरफ से तीरों का मींह बरसाया जाए और जब ख़ूब ज़ख़्मी हो जायें तब नेज़ों से हमूला किया जाए, तीर अंदाज़ों ने आप को चारों तरफ से घेर लिया और बयक वक़्त हज़ारों तीर कमानों से छूटने लगे और तीरों की बारिश शुरू हो गई, घोड़ा इस क़दर ज़ख़्मी हो गया कि उस में काम करने की ताक़त न रही, मजबूरन हज़रत इमाम को एक जगह ठहरना पड़ा, हर तरफ से तीर आ रहे हैं और इमाम मज़लूम का जिस्मे अक़्दस तीरों का निशाना बना हुआ है, तने नाज़नीन ज़ख़्मों से चूर और लहू लुहान हो रहा है। बेवफा कूफियों ने जिगर पारए रसूल, फर्ज़न्दे बतूल को मेहमान बुला कर उन के साथ यह सुलूक किया, यहां तक कि ज़हेर में बुझा हुआ

एक तीर आप की उस मुक़द्दस पेशानी पर लगा जिसे रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने हज़ारों बार चूमा था, तीर लगते ही चेहरए अनवर पर ख़ून का धारा बह निकला, आप ग़श खा कर घोड़े की ज़ीन से फ़र्शे ज़मीन पर आ गए, अब ज़ालिमों ने नेज़ों से हमला किया, शैतान सिफ़त सनान ने एक ऐसा नेज़ा मारा जो तने अक़्दस के पार हो गया। तीर और नेज़ा व शमशीर के 72 ज़ख़्म खाने के बाद आप सज्दे में गिरे और अल्लाह का शुक्र अदा करते हुए वासिले बहक़ हो गए। 56 साल 5 माह 5 दिन की उम्र में, जुमा के दिन मुहर्रम की दस्वीं तारीख़ 61 हिजरी मुताबिक़ 680 ई० को इमामे आली मक़ाम ने इस दारे फ़ानी से रिहलत फ़रमाई। *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।*

यज़ीदियों ने समझा कि हम ने हुसैन का मार डाला और वह मर गए लेकिन ज़मीने करबला का ज़र्रा-ज़र्रा ज़बाने हाल से हमेशा यह पुकारता रहेगा कि ऐ हुसैन!

*तू ज़िंदा है वल्लाह तू ज़िंदा है वल्लाह*
*मेरी चश्मे आलम से छुप जाने वाले*

नज़र बिन ख़रशा आप के सरे मुबारक को तने अक़्दस से जुदा करने के लिये आगे बढ़ा मगर इमाम आली मक़ाम की हैबत से उस के हाथ कांप गए और तलवार छूट गई। फिर बद बख़्ते अज़ली ख़ौली बिन यज़ीद, सनान बिन अनस, शिबल बिन यज़ीद या शिमर ख़बीस ने आप के सरे अक़्दस को तने मुबारक से जुदा किया।

*शाह अस्त हुसैन बादशाह अस्त हुसैन*
*दीन अस्त हुसैन दीने पनाह अस्त हुसैन*

*सर दाद न दाद दस्त दर दस्ते यज़ीद*
*हक़्क़ा कि बिनाए ला इलाह अस्त हुसैन*

रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु

# ऐ हुसैन

**बैकल बलराम पुरी**

*कलिमए तौहीद है तेरी शहादत ऐ हुसैन*
*तू न होता तो न रह जाती सदाकत ऐ हुसैन*
*तेरी कुर्बानी ने ज़िंदा कर दिया इस्लाम को*
*वो रहेगा ता अबद तेरी बदौलत ऐ हुसैन*
*तालिबाने मंज़िल अम्नो-सुकूं के वास्ते*
*तेरी कुर्बानी हुई शम्ए हिदायत ऐ हुसैन*
*मिल्लते इस्लाम को मिलता है एक दर्से हयात*
*कैसे भूलें हम तेरा यौमे शहादत ऐ हुसैन*
*एहतमाल आने का है फिर से यज़ीदियत का दौर*
*फिर जहाने नौ को है तेरी ज़रूरत ऐ हुसैन*
*हाल मेरा कुछ भी हो मेरा अकीदा है यही*
*बख़्शवाएगी मुझे तेरी मुहब्बत ऐ हुसैन*

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

एक मर्तबा हम और आप सब लोग मिल कर मक्का के सरकार मदीना के ताजदार दो आलम के मुख़्तार जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और उन की आल व अस्हाब पर अकीदत व मुहब्बत के साथ दुरूदो-सलाम की डालियां पेश करें।

اللھم صل علی سیدنا ومولانا محمد وعلی الہ واصحابہ واھل بیتہ وبارک وسلم

*अल्लाहुम्मा सल्लि अ़ला सैय्दिना व मौलाना मुहम्मदिवं व अला आलिही व अस्हाबिही व अहलि बैतिही व बारिक् व सल्लिम्।*

☆☆☆

# रहमते आलम को सदम-ए-जानकाह

वाकिए करबला से नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर जो सदमा जांकाह गुज़रा और उन के क़ल्बे नाज़ुक को जो दुख पहुंचा वह अंदाज़ व क़ियास से बाहर है। हज़रत सलमह जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के आज़ाद कर्दा गुलाम हज़रत अबू राफेअ् रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ज़ौजा हैं, वह बयान फरमाती हैं कि मैं उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमह रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की ख़िदमत में हाज़िर हुई तो देखा कि वह रो रही हैं, मैं ने अर्ज़ किया आप रोती क्यों हैं? उन्हों ने फरमाया मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को ख़्वाब में देखा कि उन के सरे मुबारक और रीशे अक़्दस (दाढ़ी) पर गर्दो-गुबार है, मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! आप का यह क्या हाल है? फरमाया मैं अभी हुसैन की शहादतगाह पर गया था। (मिश्कात शरीफ:570)

और हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फरमाते हैं कि मैं एक रोज़ दोपहर के वक़्त ख़्वाब में हुज़ूर आक़ाए दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के जमाले जहां आरा के दीदार से मुशर्रफ हुआ, मैं ने देखा हुज़ूर के बाले मुबारक चेहरए अनवर पर बिखरे हुए गर्द आलूद हैं और दस्ते अक़्दस में ख़ून से भरी हुई एक बोतल है, मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मेरी जान आप पर फिदा और मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान हों, यह बोतल कैसी है? और इस क़द्र रंजो-माल क्यों है? इरशाद फरमाया कि इस बोतल में मेरे नूरे नज़र हुसैन और उनके जां निसार साथियों का ख़ून है, जिसे मैं आज सुबह से उठा रहा हूं और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फरमाते हैं कि मैं ने उस वक़्त और तारीख़ का याद रखा, कुछ दिनों के बाद जब ख़बर आई तो मालूम हुआ कि हज़रत हुसैन उसी वक़्त शहीद किये गए थे। (रवाहुल बैहक़ी, नूरुल अबसार:120)

# उस हुसैन इब्ने हैदर पे लाखों सलाम

ख़ास्सए रब्बे दावर पे लाखों सलाम
मालिके हौज़े कौसर पे लाखों सलाम
नूरे ऐने पयम्बर पे लाखों सलाम
तिश्नए आबे ख़ंज़र पे लाखों सलाम
उस शहीदे दिलावर पे लाखों सलाम
उस हुसैन इब्ने हैदर पे लाखों सलाम

जिस को झूला फ़िरिश्ते झुलाते रहे
लोरियां दे के नूरी सुलाते रहे
जिस को कंधों पे आक़ा बिठाते रहे
जिस पे सफ़्फ़ाक ख़ंजर चलाते रहे
उस शहीदों के अफ़्सर पे लाखों सलाम
उस हुसैन इब्ने हैदर पे लाखों सलाम

जो जवानाने जन्नत का सालार है
जिस का नाना दो आलम का सरदार है
जो सरापाए महबूबे ग़फ़्फ़ार है
जिस का सर दश्त में ज़ेरे तलवार है
उस सदाक़त के पैकर पे लाखों सलाम
उस हुसैन इब्ने हैदर पे लाखों सलाम

☆☆☆

# वाकिआत बादे शहादत

الحمدلله رب العالمين والصلوة والسلام على سيدالمرسلين وعلى اله
واصحابه الذين قاموا بنصرة الدين المتين۔اما بعد،فاعوذبالله من الشيطن الرجيم
بسم الله الرحمن الرحيم۔وَلَاتَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ۔(پ:١٣،ع:١٩)
صَدَقَ الله وصدق رسول الله صلى الله تبارك وتعالى عليه وسلم تسليما كثيراً۔

सब लोग मिल कर बआवाज़े बुलंद तमाम आलम के मोहसिने आज़म रहमते आलम नूरे मुजस्सम जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की बारगाहे बेकस पनाह में दुरूद शरीफ का नज़राना और हदिया पेश करें।

صلى الله على النبى الامى واله صلى الله عليه وسلم صلاةً وسلاماً عليك يارسول الله

*सल्लल्लाहु अलन् नबिय्यिल उम्मिय्यि व आलिही सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सलातंव् व सलामन् अ़लैक या रसूलल्लाह।*

जब इंसान को अल्लाह तआ़ला का ख़ौफ नहीं होता और हुकूमते वक़्त का अंदेशा नहीं रहता फिर अपनी नेक नामी व बद नामी की भी परवाह नहीं करता तो अज़ीम से अज़ीम तर गुनाह करने और बड़ा से बड़ा ज़ुल्म ढाने से भी वह नहीं डरता। यही हाल यज़ीदियों का हुआ कि खुदाए तआ़ला का ख़ौफ उन के दिलों में नहीं था और हुकूमते वक़्त के अंदेशा का सवाल ही नहीं पैदा होता कि उसी के हुक्म से अहले बैते रिसालत पे ज़ुल्मो-जफा का पहाड़ तोड़ने के लिये भेजे ही गए थे और उन्हें इस बात की भी परवाह नहीं थी कि दुनिया वालों की निगाह में हम ज़लील व रुस्वा हो जायेंगे। फिर उन्हें किसी तरह का ज़ुल्म का ढाने कोई चीज़ मानेअ् न हुई। ----- नवासए रसूल जिगर गोशए बतूल को सिर्फ बेदर्दी के साथ शहीद करने पर उन्हों ने इक्तिफा नहीं किया बल्कि आप के जिस्मे अक़्दस से कपड़े भी उतार लिये और घोड़ों की टापों से आप की लाशे मुबारक को पामाल करके हड्डियों को चकना चूर भी किया, फिर ख़ेमा की तरफ बढ़े, तमाम अस्बाब और सारा

सामान लूट लिया। यहां तक कि पर्दा नशीन ख़्वातीन के सरों से चादरें खींच लीं और ख़ेमों को भी जला कर राख कर दिया। (तबरी:2/286)

*जल गया ख़ेमए अत़्हर लेकिन*
*दीन पर आंच नहीं आने दी*
*मरहबा जुर्अते इब्ने हैदर*
*सर दिया, बात नहीं जाने दी*

इमामे आली मक़ाम का सरे मुबारक ख़ौली बिन यज़ीद के हाथ इब्ने-ज़ियाद के पास भेजा गया और बाक़ी शुहदा के सर क़ैस इब्ने अश्अ़स और शिमर वग़ैरा के साथ रवाना किये गए। खुद इब्ने सअ़द उस रोज़ करबला में ठहर गया और 11 मुहर्रम की सुबह को अपनी फौज के तमाम मक़्तूलीन को जमा किया, उन पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और दफ़न कर दिया मगर शुहदाए राहे हक़ की लाशों को ऐसे ही बेगोरो-कफ़न पड़ी रहने दिया फिर पर्दा नशीन ख़्वातीन जो बीमार ज़ैनुल आबिदीन और चन्द छोटे बच्चों के साथ खुले आसमान के नीचे रात भर मैदान में पड़ी रहीं उन्हें क़ैदी बना कर कूफ़ा की तरफ रवाना हुआ।

यज़ीदी फौज के एक सिपाही का बयान है कि जब हज़रत ज़ैनब अपने भाई हज़रत हुसैन की लाश से गुज़रीं तो इन्तिहाई दर्द के साथ रोते हुए कहा وامحمداه وامحمداه आप पर अल्लाह और मलाइका, मुक़र्रबीन का दुरूदो-सलाम हो, हुसैन मैदान में पड़े हुए हैं, ख़ून में डूबे हुए हैं और तमाम अअ़्ज़ा टुकड़े-टुकड़े हैं, وامحمداه आप की बेटियां क़ैद में जा रही हैं, आपकी औलाद क़त्ल की गई, हवा उनकी लाशों पर ख़ाक उड़ा रही है, हज़रत ज़ैनब के इन अल्फ़ाज़ को सुन कर दोस्त व दुश्मन सब रोने लगे। (तबरी:2/283)

फिर जब करबला से यज़ीदी लश्कर चला गया तो क़बीलए बनू असद जो क़रीब के गांव ग़ाज़िरया में रहता था, हज़रत इमाम और उन के साथियों की लाशों को आ कर दफ़न किया।

# इमाम का सरे अनवर और इब्ने ज़ियाद

इमाम आली मक़ाम का सरे अनवर जब कूफ़ा पहुंचा और भरे दरबार में इब्ने ज़ियाद के सामने एक तश्त में रखा गया, उस वक़्त ज़ालिम इब्ने ज़ियाद के हाथ में छड़ी थी जिस से वह आप के लबों और दांतों को ठोकर देने लगा। सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के बूढ़े सहाबी हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उस वक़्त वहां मौजूद थे, इस गुस्ताख़ी को देख कर तड़प उठे और रोते हुए फरमाया छड़ी को हटा ले, ख़ुदा की क़सम मैं ने अपनी आंखों से रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को देखा है कि वह इन लबों और दांतों को चूमा करते थे और फिर वह ज़ारो-क़तार रोने लगे। इब्ने ज़ियाद ने कहा ख़ुदा तुझे ख़ूब रुलाए, अगर तू बुड्ढा न होता और तेरी अक़्ल ख़राब न हो गई होती तो मैं तेरी गर्दन मार देता। हज़रत ज़ैद वहां से उठे और यह कहते हुए चले गए कि गुलाम ने गुलाम को हाकिम बना दिया, जिस ने सारे बन्दगाने ख़ुदा को अपना ख़ाना ज़ाद बना दिया। ऐ क़ौमे अरब! आज से तुम सब गुलाम हो गए, तुम ने फर्ज़न्दे रसूल को क़त्ल किया और मरजाना के बेटे को अपना हाकिम बना लिया जो अच्छों को क़त्ल कर रहा है और बुरों को गुलाम बना रहा है। तुम ने ज़िल्लत को गवारा कर लिया और जो ज़िल्लत को गवारा करे उस पर ख़ुदा की मार हो। (तबरी:2/287)

# एक जां निसार की और शहादत

ऐलान हुआ कि लोग बड़ी मस्जिद में जमा हो जाएं, जब बहुत से लोग वहां इकट्ठा हो गए तो इब्ने ज़ियाद बद निहाद मस्जिद में गया और मिम्बर पर खड़े होकर कहा, अल्लाह का शुक्र है जिस ने हक़ और अहले हक़ की मदद की, अमीरुल मोमिनीन यज़ीद बिन मुआविया और उन के साथियों को कामयाबी अता फरमाई और उन को फत्हो-नुस्रत से सरफ़राज़ किया और कज़्ज़ाब इब्ने कज़्ज़ाब हुसैन बिन अली और उन

के गिरोह को शिकस्त दी और उन को हलाक किया। (मआज़ल्लाह सुम्म मआज़ल्लाह) जब उस बद बख़्त ने हज़रत इमाम हुसैन और उन के वालिदे गरामी हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा को कज़्ज़ाब कहा तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन अफीफ अज़दी जो मुहिब्बे अहले बैत थे, दोनों आंखों से माज़ूर थे और सारा दिन ज़िक्रो-फिक्र और नमाज़ पढ़ने के लिये मस्जिद में गुज़ारते थे, वह इब्ने ज़ियाद की गुस्ताख़ी को बर्दाश्त न कर सके, बेताब होकर खड़े हो गए और फर्ते ग़ज़ब से कांपते हुए फरमाया ओ इब्ने मरजाना! तू ही कज़्ज़ाब इब्ने कज़्ज़ाब है और जिस ने तुझे हाकिम बनाया वह भी कज़्ज़ाब है। हुसैन सच्चे, उनके बाप सच्चे, उन के नाना सच्चे। तुम लोग औलादे रसूल के क़त्ल के मुजरिम हो और बातें सिद्दीक़ीन जैसी करते हो। इब्ने ज़ियाद ने कहा इसे पकड़ लो, सिपाहियों ने गिरिफ्तार कर लिया, इब्ने अफीफ की क़ौम के बहुत से लोग वहां मौजूद थे, उन्हों ने उन को छुड़ा लिया, मगर ज़ालिम इब्ने ज़ियाद को उन का ख़ून बहाए बग़ैर चैन न आया, घर से बुलवा कर उन को क़त्ल किया और शाहराहे आम पर उनकी लाश को दार (सूली) पर लटका दिया, इस तरह कौसर की साहिल पर एक जां निसार का और इज़ाफा हुआ। (तबरी:2/289)

फिर इब्ने ज़ियाद बद निहाद ने इमामे आली मक़ाम के सरे मुबारक को कूफा के कूचा व बाज़ार में फिरवाया और इस तरह अपनी बेग़ैरती व बेहयाई का मुज़ाहरा किया। उस के बाद हज़रत इमाम और उनके तमाम जां निसार शुहदाए किराम के सरों को और असीराने अहले बैत को एक जमाअ़त के हमराह शिमर वग़ैरा की सर-करदगी में यज़ीद पलीद के पास इस हालत में रवाना किया कि हज़रत ज़ैनुल आबिदीन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के हाथ पांव को ज़ंजीरों में जकड़ दिया गया था और बीबियों को ऊंटों की नंगी पीठों पर बिठाया गया था और ज़ालिम ने हुक्म दिया था कि सरों को नेज़ों पर छढ़ाए हुए आबादियों में से होकर गुज़रना ताकि लोगों को इब्रत हो और आइन्दा कोई यज़ीद की मुख़ालफत पर आमादा न हो।

# ग़ैबी शेअ्र

जब अश्क़िया की जमाअ़त इमामे आली मक़ाम के सरे मुबारक को लेकर पहली मंज़िल पर एक गिरजा घर के पास रात गुज़ारने के लिये उतरी और बरिवायत अल्लामा सब्बान शराब पी रही थी, तो एक लोहे का क़लम ग़ैब से नमूदार हुआ, जिस ने ख़ून से यह शेअ़र लिखाः

اَتَرْجُوْا اُمَّةٌ قَتَلَتْ حُسَيْنًا    شَفَاعَةَ جَدِّهٖ يَوْمَ الْحِسَابِ

यानी जिन्हों ने हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को शहीद किया है क्या वह इस बात की उम्मीद रखते हैं कि उन के नाना जान सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम क़ियामत के दिन उन की शफ़ाअ़त करेंगे?

और बाज़ रिवायतों में है कि दीवार पर यह शेअ्र पहले से लिखा हुआ था। बद बख़्तों ने जब देखा, तो बहुत मुतअज्जिब हुए और गिरजा घर के राहिब से पूछा कि यह शेअ्र किस ने लिखा है और कब का लिखा हुआ है? राहिब ने कहा किस ने लिखा है यह तो मुझे मालूम नहीं अल्बत्ता इतना जानता हूं कि तुम्हारे नबी के ज़माने से पांच सौ बरस पहले का लिखा हुआ है।

राहिब ने जब शहीदों के सरों को नेज़ों पर और चन्द बीबियों और बच्चों को बहालते असीरी देखा तो उस के दिल पर बहुत असर हुआ और दरियाफ्त करने पर जब पूरा हाल उस को मालूम हुआ तो कहा मआ़ज़ल्लाह! तुम लोग कितने बुरे आदमी हो कि अपने नबी की औलाद को क़त्ल किये हो और फिर उन के बाल बच्चों को क़ैदी बनाए हो।

# राहिब का क़बूले इस्लाम

फिर राहिब ने उन बद बख़्तों से कहा कि अगर रात भर अपने नबी के नवासे का सर हमारे पास रहने दो तो हम तुम्हें दस हज़ार दिरहम देंगे। वह लोग इस पर राज़ी हो गए, राहिब ने रक़म अदा करके हज़रत का सरे मुबारक लिया और अपने मख़्सूस कमरा में ले गया, फिर

सरे अनवर, चेहरए मुबारक और मुक़द्दस ज़ुल्फ़ों और दाढ़ी के बालों पर जो गर्दो-गुबार और ख़ून वग़ैरा जमा हुआ था, धोया और इत्रो-काफ़ूर लगाया और बड़ी ताज़ीमो-तक्रीम के साथ अपने सामने रख कर उस की ज़ियारत करने लगा। खुदाए अज़्ज़ व जल्ल उस के इस अदब से राज़ी हुआ, उस ने अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दिये, राहिब रोने लगा और उस की निगाहों से पर्दे उठ गए, उस ने देखा कि सरे अक्दस से आसमान तक नूर ही नूर है, जब उस ने सरे मुबारक की यह करामत देखी तो सिदक़ दिल से لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ला इलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह पढ़ कर मुसलमान हो गया और सुबह को सर उन के हवाले कर दिया।

बद बख़्त जब वहां से चल कर दूसरी मंज़िल पर पहुंचे और दिरहमों को तक्सीम करने के लिये थैलियों के मुंह को खोला तो देखा कि सब दिरहम ठेकरी हो गए। और उनके एक तरफ़ यह आयते करीमा लिखी हुई है: وَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ ज़ालिम जो ज़ुल्म करते हैं खुदाए तआ़ला को उस से ग़ाफ़िल हरगिज़ न जानो। (पारा:13, रुकूअ़:19)

और दूसरी तरफ़ यह आयते मुबारका तहरीर थी وَسَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا أَيَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ ज़ुल्म करने वाले अन्क़रीब जान लेंगे कि वह किस करवट पल्टा खाएंगे। (पारा:19, रुकूअ़:15)

## बाजे बजे

जब यज़ीद पलीद को मालूम हुआ कि असीराने करबला और इमाम हुसैन वग़ैरा का सर अन्क़रीब दमिश्क़ पहुंचने वाला है तो उस ने पूरे शहर को आरास्ता करने और सब को खुशी मनाने का हुक्म दिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के एक सहाबी हज़रत सहल रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु तिजारत के लिये मुल्के शाम आए हुए थे, जब वह दमिश्क़ शहर में दाख़िल हुए तो उन्हों ने देखा कि सब लोग खुशी मनाते और बाजे बजाते हैं, उन्हों ने लोगों से उस की वजह पूछी तो बताया गया कि अहले इराक़ ने हुसैन इब्ने अली के सर को

यज़ीद के पास हदिया भेजा है, तमाम अहले शहर उसी की खुशी मना रहे हैं। हज़रत सहल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने एक आह भरी और पूछा कि हज़रत हुसैन का सर कौन से दरवाज़ा से लायेंगे? कहा बाबुस साअ़त से, आप उस की तरफ तेज़ी से बढ़े और बड़ी दौड़ धूप के बाद अहले बैत तक पहुंच गए। आप ने देखा कि एक सर जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के सरे मुबारक से बहुत ज़्यादा मुशाबह है नेज़ा पर चढ़ा कर रखा गया है, उसे देख कर आप बइख़्तियार रो पड़े, अहले बैत में एक ने पूछा कि तुम हम पर क्यों रो रहे हो? हज़रत सहल ने पूछा आप का नाम क्या है? फरमाया मेरा नाम सकीना बिन्ते हुसैन है, उन्हों ने फरमाया और मैं आप के नाना जान सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का सहाबी हूं, अगर मेरे लाइक़ कोई ख़िदमत हो तो हुक्म फरमाइये, हज़रत सकीना ने फरमाया मेरे वालिद के सरे अनवर को सब से आगे करा दीजिये ताकि लोग उधर मुतवज्जह हो जाएं और हम से दूर रहें। हज़रत सहल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने चार सौ दिरहम दे कर हज़रत इमाम के सरे मुबारक को मस्तूरात से दूर करा दिया। (तज़्किरा:107)

इस वाक़िआ से मालूम हुआ कि मुहर्रम के दिनों में बाजे बजाना हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दुश्मन यज़ीदियों की सुन्नत है, आप के मुहिब्बीन का घर तो मातम कदा बना हुआ था, उन के यहां इस मौक़ा पर बाजा बजने का तो कोई सवाल ही नहीं पैदा होता। अल्बत्ता इमाम की शहादत की खुशी में यज़ीदियों ने बजाया था मगर अब इमामे आली की मुहब्बत के दावेदार बजाते हैं। खुदा तआला उन्हें समझ अता फरमाए और यज़ीदियों की सुन्नत पर अमल करने से बचाए। आमीन।

## इमाम का सरे मुबारक और यज़ीद

क़ाफिलए इराक़ में से जो शख़्स सब से पहले यज़ीद से मिला वह ज़ुहर बिन क़ैस था, जब उस ने शहादते हुसैन की ख़बर यज़ीद को

सुनाई तो वह आबदीदा हो गया और कहा कि मैं तुम्हारी इताअ़त से उस वक़्त खुश होता कि तुम ने हुसैन को क़त्ल न किया होता। (तबरी:2/290) फिर शिमर ज़िल जौशन और मुहज़्ज़र बिन सअलबा आइज़ी सब को लिये हुए यज़ीद पलीद के दरवाज़े पर पहुंचे, मुहज़्ज़र ने बुलंद आवाज़ से कहा हम अमीरुल मोमिनीन के दरबार में बद तरीन और मलामत ज़दा शख़्स का सर लेकर आए हैं *(मआज़ल्लाह सुम्म मआज़ल्लाह)* यज़ीद ने यह सुन कर कहा सब से बदतर और मलामत ज़दा वही शख़्स है जिस को मुहज़्ज़र की मां ने जना है, फिर वह अन्दर दाख़िल हुए और इमाम आली मक़ाम के सरे मुबारक को यज़ीद के सामने तश्त में रखा, यज़ीद सरे अनवर की तरफ मुतवज्जह हुआ और कहा ऐ हुसैन! वल्लाह अगर तुम्हारा मामला मेरे हाथ में पड़ता तो मैं तुम को क़त्ल न करता। मरवान का भाई यहया बिन हिकम उस वक़्त यज़ीद के पास मौजूद था उस ने दो शेअ्र पढ़े जिस का मतलब यह है कि इब्ने ज़ियाद कमीना और खोटे नसब वाले से इस लश्कर की क़राबत ज़्यादा है जो ज़मीने तुफ के पहलू में क़त्ल किया गया, सुमैया की नस्ल तो संगरेज़ों की तादाद के बराबर हो गई और बिन्ते रसूलुल्लाह की नस्ल बाक़ी न रही। यज़ीद ने यह सुन कर यहया के सीने पर हाथ मारा और कहा ख़ामोश। (तबरी:2/291)

फिर यज़ीद पलीद ने इमाम आली मक़ाम के लबों और दांतों को छड़ी लगाते हुए कहा अब हमारी और इनकी मिसाल ऐसी है जैसा कि हसीन बिन अल्-हमाम शाइर ने कहा है कि हमारी क़ौम ने तो इंसाफ करने से इनकार कर दिया था लेकिन इन तलवारों ने इंसाफ कर दिया जिन से ख़ून टपकता था।

रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के एक सहाबी हज़रत अबू बरज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु वहां मौजूद थे, उन्हों ने फरमाया ऐ यज़ीद तुम अपनी छड़ी हुसैन के दांतों और लबों से लगा रहे हो जिन को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम चूसा

करते थे, सुन लो! क़ियामत के दिन तुम्हारा हश्र इब्ने ज़ियाद के साथ होगा और हुसैन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के साथ होंगे, यह कह कर वह दरबार से उठे और चले गए। (तबरीः2/291)

पहले जो ज़िक्र किया गया कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत की ख़बर सुन कर यज़ीद रोने लगा और फिर उस ने यह कहा कि ऐ हुसैन! वल्लाह अगर तुम्हारा मामला मेरे हाथ में पड़ता तो मैं तुम को क़त्ल न करता, इन बातों से बज़ाहिर यह मालूम होता है कि वह हज़रत इमाम हुसैन के क़त्ल से राज़ी न था लेकिन हालात बताते हैं कि यह उस की सियासत थी ताकि हमारी बद नामी न हो, इस लिये कि अगर वह वाक़ई राज़ी न होता तो ज़ालिम इब्ने ज़ियाद और इब्ने सअद वग़ैरा क़ातिलीने इमाम हुसैन से ज़रूर मुवाख़ज़ा करता और उन को सज़ा देता।

## मदीना मुनव्वरा को वापसी

सहाबिए रसूल हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो हज़रत मुस्लिम बिन अक़ील के साथ कूफ़ा में सख़्ती न करने के सबब गवर्नरी से माज़ूल कर दिये गए थे, यज़ीद ने उन्हें अहले बैते रिसालत हमदर्द समझ कर बुलाया और कहा कि हुसैन के अहलो-अयाल को इज़्ज़त व ऐहतिराम के साथ मदीना पहुंचाने का इन्तिज़ाम करो और फिर अपने को क़त्ले हुसैन से बरी साबित करने के लिये हज़रत ज़ैनुल आबिदीन को तन्हाई में बुला कर कहा कि ख़ुदा इब्ने ज़ियाद पर लअ्नत करे, वल्लाह अगर बराहे रास्त आप के वालिद का और मेरा सामना हो जाता तो वह जो कुछ फ़रमाते मैं मनज़ूर कर लेता और उन को क़त्ल करना हरगिज़ गवारा न करता लेकिन जो ख़ुदा को मनज़ूर था वह हुआ, अब आप मदीना तशरीफ़ ले जाइये, मुझ को वहां से ख़त लिखते रहियेगा और जिस चीज़ की ज़रूरत होगी मुझे ख़बर कीजियेगा। (तबरीः2/293)

हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हमराह 30

आदमियों का हिफ़ाज़ती दस्ता किया गया, वह अहले बैत को लेकर मदीना मुनव्वरा रवाना हुए और रास्ता भर निहायत ताज़ीम व तक्रीम के साथ पेश आते रहे। मदीना तैयिबा के लोगों को वाक़िए करबला की ख़बर पहले ही पहुंच चुकी थी, जब यह लुटा हुआ क़ाफ़िला शहर में दाख़िल हुआ तो तमाम अहले मदीना, हज़रत मुहम्मद बिन हनफ़िय्या, उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा और ख़ानदान की दीगर औरतें सब रोती हुई निकल पड़ीं, क़ाफ़िला सीधे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के रौज़ए मुक़द्दसा पर हाज़िर हुआ। हज़रत ज़ैनुल आबिदीन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु जो अभी तक सब्रो-ज़ब्त के पैकर बने हुए ख़ामोश थे, जैसे ही उन की नज़र क़ब्रे अनवर पर पड़ी और अभी इतना ही कहा था, दादा जान! अपने नवासे का सलाम क़बूल फ़रमाइये कि उन के सब्र का पैमाना छलक उठा और वह इस तरह दर्द के साथ रोए और हालात बयान करने शुरू किये कि कोहराम बरपा हो गया और क़ियामत का नमूना क़ाइम हो गया।

सैय्यिदुश शुहदा हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु का सरे अनवर कहां दफ़न किया गया इस में इख़्तिलाफ़ है, मशहूर यह है कि असीराने करबला के साथ यज़ीद ने आप के सरे मुबारक को मदीना तैयिबा रवाना किया जो सैय्यिदा हज़रत फ़ातिमा ज़हरा या हज़रत इमाम हसन मुज्तबा के पहलू में दफ़न किया गया। *रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा।*

# करबला के बाद यज़ीद की ख़बासत

## मदीना मुनव्वरा पर चढ़ाई

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की ज़ाते मुबारका यज़ीद की आज़ादियों के लिये बहुत बड़ी रुकावट थी, आप की शहादत के बाद वह बिल्कुल ही बेलगाम हो गया, फिर तो हर क़िस्म की बुराइयों का बाज़ार गर्म हो गया। ज़िना, लेवातत, हराम कारी, भाई बहन का निकाह, सूद और शराब वग़ैरा अलानिया तौर पर राइज हो गए और नमाज़ों की पाबंदी उठ गई। फिर उस की शैतानियत यहां तक

पहुंची कि 63 हिजरी में मुस्लिम बिन उक़्बा को बारह या बीस हज़ार लश्कर के साथ मदीना मुनव्वरा और मक्का मुअज़्ज़मा पर हमला करने के लिये भेजा, उस बद बख़्त लश्कर ने मदीना मुनव्वरा में वह तूफान बरपा किया कि *अल्-अमान वल्-हफीज़*, कत्लो-ग़ारत गरी और तरह-तरह के मज़ालिम का बाज़ार गर्म किया, लोगों के घरों को लूट लिया, सात सौ सहाबा को बेगुनाह शहीद किया और ताबईन वग़ैरा को मिला कर कुल दस हज़ार से ज़्यादा शहीद किया। लड़कों को कैद कर लिया और यहां तक ज़ुल्म किया कि वहां की पाक दामन पारसा औरतों को तीन शबाना रोज़ अपने ऊपर हलाल कर लिया। सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के रौज़ए मुक़द्दसा की सख़्त बेहुरमती की, मस्जिदे नबवी में घोड़े बांधे, उन की लीद और पेशाब मिम्बरे अतहर पर पड़े, तीन रोज़ तक मस्जिदे नबवी में लोग नमाज़ से मुशर्रफ न हो सके, सिर्फ हज़रत सईद बिन मुसैय्यिब जो किबारे ताबईन में से थे पागल बन कर वहां हाज़िर रहे, आख़िर में ज़ालिमों ने उन को गिरिफ्तार कर लिया मगर फिर दीवाना समझ कर छोड़ दिया। ख़बीस लश्कर ने एक नौजवान को पकड़ लिया, उस की मां ने मुस्लिम बिन उक़्बा के पास आकर फरियाद की और उस की रिहाई के लिये बड़ी आजिज़ी मिन्नती की, मुस्लिम ने उस के लड़के को बुला कर गर्दन मार दी और सर उसकी मां के हाथ में देते हुए कहा कि तू अपने ज़िंदा रहने को ग़नीमत नहीं समझती कि बेटे को लेने आई है।

एक शख़्स को जब क़त्ल किया गया तो उसकी मां उम्मे यज़ीद बिन अब्दुल्लाह बिन रबीआ ने क़सम खाई कि अगर मैं कुद्रत पाऊंगी तो इस ज़ालिम मुस्लिम को ज़िंदा या मुर्दा जालाऊंगी। जब वह ज़ालिम मदीना मुनव्वरा में क़त्लो-ग़ारत के बाद मक्का मुअज़्ज़मा की तरफ मुतवज्जह हुआ ताकि वहां जाकर अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर और वहां के उन लोगों का भी काम तमाम करे जो यज़ीद के ख़िलाफ हैं, तो इत्तिफाक़न रास्ता में उस पर फालिज गिरा और वह मर गया। उस की जगह यज़ीद के हुक्म के मुताबिक़ हुसैन बिन नुमैर सुकूनी क़ाइदे

लश्कर बना, मुस्लिम को उन्हों ने वहीं दफ़न कर दिया। जब यह ख़बीस लश्कर आगे बढ़ गया तो उस औरत को मुस्लिम के मरने का पता चला, वह कुछ आदमियों को साथ लेकर उस की क़ब्र पर आई ताकि उस को क़ब्र से निकाल कर जलाए और अपनी क़सम पूरी करे। जब क़ब्र खोदी तो क्या देखा कि अज़दहा उस की गर्दन से लिपटा हुआ उस की नाक की हड्डी पकड़े चूस रहा है, यह देख कर सब के सब डरे और उस औरत से कहने लगे, खुदाए तआला खुद ही इसके आमाल की सज़ा इस को दे रहा है और उस ने अज़ाब का फ़िरिश्ता उस पर मुसल्लत कर दिया है अब तू इसको रहने दो, उस औरत ने कहा नहीं, खुदा की क़सम मैं अपने अहद और क़सम को पूरा करूंगी और उस को जला कर अपने दिल को ठंडा करूंगी, मजबूर होकर सब ने कहा अच्छा फिर इस को पैरों की तरफ से निकालना चाहिये, जब उधर से मिट्टी हटाई तो क्या देखा कि उसी तरह पैरों की तरफ भी एक अज़दहा लिपटा हुआ है, फिर सब ने उस औरत से कहा अब इसको छोड़ दे, इस के लिये यही अज़ाब काफी है। मगर वह औरत न मानी, वुज़ू करके दो रकअत नमाज़ अदा की और अल्लाह तआला के हुज़ूर में हाथ उठा कर दुआ मांगी इलाही! तू ख़ूब जानता है इस ज़ालिम पर मेरा गुस्सा मेहज़ तेरी रज़ा के लिये है, मुझे यह कुद्रत दे कि मैं अपनी क़सम पूरी करूं और उस को जालाऊं। यह दुआ करके उस ने एक लकड़ी सांप की दुम पर मारी, वह गर्दन से उतर कर चला गया, फिर दूसरे सांप को मारी वह भी चला गया, तब उन्हों ने मुस्लिम की लाश को क़ब्र से निकाला और जला दिया। (शामे करबला:245)

# फ़ज़ाइले मदीना मुनव्वरा

हज़रत सअ़द रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया لَا يَكِيْدُ اَهْلَ الْمَدِيْنَةِ اَحَدٌ اِلَّا انْمَاعَ كَمَا يَنْمَاعُ الْمِلْحُ فِى الْمَاءِ जो शख़्स अहले मदीना से मकरो-फरेब करे या जंग करे तो वह इस तरह पिघल जाएगा जैसे पानी में नमक

पिघलता है। (बुख़ारी शरीफ़:1/252)

हज़रत सअ्द बिन वक़्क़ास रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से मरवी है कि रसूले अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने फरमाया لَا يُرِيْدُ اَحَدٌ اَهْلَ الْمَدِيْنَةِ بِسُوْءٍ اِلَّا اَذَابَهُ اللّٰهُ فِى النَّارِ ذَوْبَ الرَّصَاصِ जो मदीना मुनव्वरा वालों के साथ बुराई का इरादा करेगा, खुदाए तआ़ला उस को दोज़ख़ की आग में रांगा की तरह पिघलाएगा। (मुस्लिम शरीफ़:1/122)

और हज़रत साइब बिन ख़ल्लाद रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से रिवायत है कि नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया कि مَنْ اَخَافَ اَهْلَ الْمَدِيْنَةِ ظَالِمًا لَهُمْ اَخَافَهُ اللّٰهُ وَكَانَتْ عَلَيْهِ لَعْنَةُ اللّٰهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ، لَا يَقْبَلُ اللّٰهُ مِنْهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ صَرْفًا وَّلَا عَدْلًا जिस ने अहले मदीना को अपने ज़ुल्म से ख़ौफ ज़दा किया, खुदाए तआ़ला उसे ख़ौफ में मुब्तला करेगा, उस पर अल्लाह, मलाइका और सब लोगों की लअ्नत है। और क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला न उस की फर्ज़ इबादत क़बूल फरमाएगा और न नफ्ल। (कंज़ुल उम्माल:13/214)

इन अहादीसे करीमा से मालूम हुआ कि जो अहले मदीना को डराए, उन से जंग करे और उन पर ज़ुल्म ढाए बल्कि उन से बुराई का इरादा भी करे तो खुदाए तआ़ला उसे जहन्नम की आग में रांगा की तरह पिघलाएगा और उस पर अल्लाह तआ़ला उस के फिरिश्तों और तमाम इंसानों की लअ्नत है। और उस की कोई इबादत चाहे वह फर्ज़ हो या नफल, खुदाए तआ़ला क़बूल नहीं फरमाएगा।

## मक्का मुअज़्ज़मा पर हमला

मस्लिम बिन उक़्बा की हलाकत के बाद हसीन बिन नुमैर जो शामी लश्कर का सिपह सालार मुक़र्रर हुआ, उस ने मक्का मुअज़्ज़मा पहुंच कर हमला कर दिया, अहले मक्का और हिजाज़ वाले यज़ीद पलीद की बैअ्त तोड़ कर हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से बैअ्त कर चुके थे, उन की फौज ने लश्करे यज़ीद का मुक़ाबला किया और सुबह से शाम तक लड़ाई जारी रही, मगर फतह व

शिकस्त का कोई फैसला न हुआ, दूसरे दिन हसीन बिन नुमैर मिन्जनीक़ जो पत्थर फेंकने की मशीन होती है, उसे कूहे अबू कुबैस पर नसब करके पत्थर बरसाना शुरू किया, संगबारी से हरम शरीफ का मुबारक सेहन पत्थरों से भर गया और उस के सद्मा से मस्जिदे हराम के सुतून टूट गए। कअ़बा शरीफ की दीवारें शिकस्ता हो गईं और छत गिर गई। शामी पत्थर बरसाने के साथ रूई, गंधक और राल के गोले भी बना-बना कर और जला-जला कर फेंकने लगे जिस से ख़ानए कअ़बा में आग लग गई, उस का ग़िलाफ जल गया, और वह दुंबा जो हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के फिदया में कुर्बान किया गया था उस की सींग तबर्रुक के तौर पर कअ़बा शरीफ में महफूज़ थी, वह भी जल गई। हरम शरीफ के बाशिंदों का घर से निकलना दुश्वार था, तक़्रीबन दो माह तक वह सख़्त मुसीबत में मुब्तला रहे, यहां शामी लश्कर कअ़बा शरीफ की बेहुर्मती में लगा हुआ था उधर शहरे हमस में पांच रबीउल अव्वल 64 हिजरी को 39 साल की उम्र में यज़ीद हलाक हो गया।

सब से पहले यह ख़बर हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर को मिली, उन्हों ने बुलंद आवाज़ से पुकार कर कहा ऐ शामी बद बख़्तो! तुम्हारा गुमराह सरदार यज़ीद हलाक हो गया, तो अब क्यों लड़ रहे हो? शामियों ने पहले इस बात को हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर के फरेब पर महमूल किया लेकिन तीसरे दिन जब उन्हें साबित बिन क़ैस नख़ई ने कूफा से आकर यज़ीद के मरने की ख़बर सुनाई तो उन्हें यक़ीन हुआ, अब उनके हौसले पस्त हो गए और हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर की फौज के हौसले बुलंद हो गए, वह शामियों पर टूट पड़े, और शामी खाइब व ख़ासिर होकर भागे इस तरह अहले मक्का को उन के शर से नजात मिली।

यज़ीद पलीद ने कुल तीन बरस सात महीने तक हुकूमत की, जब वह क़रियए हवारिय्यीन में हलाक हुआ तो उस की मौत पर इब्ने उर्वा ने चन्द अश्आर कहे जिन के मअ़्ना यह हैं ऐ बनी उमैया! तुम्हारे बादशाह की लाश हवारिय्यीन में पड़ी है, मौत ने ऐसे वक़्त में आ कर

उस को मारा जबकि उस की तकिया के पास कूज़ा और शराब का मश्कीज़ा सर बमोहर लबा लब भरा हुआ रखा था और उस के नशा से मस्त होने वाले पर एक गाने वाली सारंगी लिये रो रही थी जो कभी बैठ जाती और कभी खड़ी हो जाती थी।

## यज़ीद की मौत के बाद

हिजाज़ व यमन और इराक़ व खुरासान वालों ने यज़ीद की मौत के बाद अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दस्ते मुबारक पर बैअ़त की और शाम व मिस्र के लोगों ने यज़ीद के बेटे मुआ़विया को उस का जा नशीन मुक़र्रर किया। मुआ़विया अगर्चे यज़ीद पलीद का बेटा था मगर नेक व सालेह था और बाप के बुरे कामों से नफ़रत करता था। बीमारी की हालत में उसे तख़्त पर बिठाया गया, जो आख़िरी दम तक बीमार ही रहा, न उस ने किसी तरफ फौज कशी की और न कोई दूसरा अहम कारनामा अंजाम दिया यहां तक कि सिर्फ चालीस रोज़ या दो तीन माह की हुकूमत के बाद 21 साल की उम्र में इन्तिक़ाल कर गया। आख़िर वक़्त में लोगों ने उस से कहा कि किसी को ख़लीफा नामज़द कर दें, मुआ़विया ने जवाब दिया कि मैं ने ख़िलाफ़त में कोई हलावत नहीं पाई तो फिर इस तलख़ी में किसी दूसरे को क्यों मुब्तला करूं?

मुआ़विया बिन यज़ीद की मौत के बाद शाम व मिस्र के लोगों ने भी हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दस्ते मुबारक पर बैअ़त कर ली। कुछ दिनों बाद मरवान ने खुफिया साज़िशों के ज़रिये मिस्र व शाम पर क़ब्ज़ा जमा लिया, जब वह मरने लगा तो अपने बेटे अब्दुल मलिक को अपना जा नशीन बना दिया, जिस के बारे में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फरमाया करते थे लोग बेटे पेदा करते हैं, लेकिन मरवान ने अपना बाप पैदा किया।

अब्दुल मलिक दानिशमन्द, फक़ीह और कुरआन व हदीस का जानने वाला और तख़्त नशीं होने से पहले बहुत बड़ा आबिद व ज़ाहिद

था। और मदीना मुनव्वरा के इबादत गुज़ार लोगों में उस का शुमार होता था मगर वह बाद में बद आमाल हो गया। यहया ग़स्सानी का बयान है कि अब्दुल मलिक अक्सर हज़रत उम्मे दरदा सहाबिया रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा के पास बैठा उठा करता था। एक दिन उम्मे दरदा ने फ़रमाया ऐ अमीरुल मोमिनीन! मैं ने सुना है कि तुम इबादत गुज़ार होने के बाद शराब ख़ोर बन गए हो, उस ने जवाब दिया कि शराब ख़ोर होने के साथ साथ ख़ूं ख़्वार भी हो गया हूं। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा:146)

## क़ातिलीने इमामे हुसैन का इब्रतनाक अंजाम

अब्दुल मलिक के ज़मानए ख़िलाफ़त में कूफ़ा पर मुख़तार बिन उबैद सक़फ़ी को तसल्लुत हासिल हुआ, उस ने कहा कि मैं क़ातिलीने हुसैन में से एक को भी दुनिया में चलते फिरते नहीं रहने दूंगा। अगर मैं ऐसा न करूं तो मुझ पर अल्लाह व रसूल की लअ़नत है। फिर उस ने लोगों से कहा मुझे हर उस शख़्स का नाम व पता बताओ जो हज़रत हुसैन के मुक़ाबले में करबला गया था। लोगों ने बताना शुरू किया और मुख़्तार ने एक-एक को क़त्ल करना और सूली पर लटकाना शुरू कर दिया।

## इब्ने सअ़्द का क़त्ल

मुख़्तार ने एक दिन कहा कि मैं कल एक शख़्स को क़त्ल करूंगा कि उस से तमाम मोमिनीन और मलाइका मुक़र्रबीन भी ख़ुश होंगे। हसीम बिन अस्वद नख़ई उस वक़्त मुख़्तार के पास बैठा हुआ था, वह समझ गया अम्र बिन सअ़्द कल मारा जाएगा, मकान पर आ कर उस ने अपने बेटे को रात में इब्ने सअ़्द के पास भेज कर इत्तिलाअ़् कर दी तुम अपनी हिफ़ाज़त का इन्तिज़ाम करो, मुख़्तार कल तुम्हें क़त्ल करना चाहता है मगर मुख़्तार चूंकि अपने ख़ुरूज के इब्तिदाई ज़माने में इब्ने सअ़्द से निहायत ही अख़्लाक़ के साथ पेश आता था इस लिये उस ने कहा मुख़्तार हमें क़त्ल नहीं करेगा।

दूसरे दिन सुबह को मुख़्तार ने इब्ने सअ़्द को बुलाने के लिये आदमी भेजा, उस ने अपने बेटे हफ़स को भेज दिया, मुख़्तार ने उस से

पूछा तेरा बाप कहां है? उस ने कहा वह ख़ल्वत नशीन हो गया है, अब घर से बाहर नहीं निकलता। मुख़्तार अब वह रैय की हुकूमत कहां है जिस के लिये फर्ज़न्दे रसूल का ख़ून बहाया था, अब क्यों उस से दस्त बरदार होकर घर में बैठा है? हज़रत हुसैन की शहादत के दिन वह क्यों ख़ाना नशीन नहीं हुआ था? फिर मुख़्तार ने अपने कोतवाल अबू अम्रा को भेजा कि इब्ने सअ़द का सर काट कर ले आए, वह इब्ने सअ़द के पास गया और उसका सर काट कर अपनी कुबा के दामन में छुपा कर मुख़्तार के पास लाया और उस के सामने रख दिया, मुख़्तार ने हफस से पूछा पहचानते हो यह सर किस का है? उस ने *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन* पढ़ी, फिर कहा यह मेरे बाप का सर है, और अब इनके बाद ज़िंदगी में कोई मज़ा नहीं, मुख़्तार ने कहा तुम ठीक कहते हो, और तुम ज़िंदा भी नहीं रहोगे, फिर उसे भी क़त्ल करा दिया। और कहा बाप का सर हुसैन का बदला है और बेटे का सर अली अकबर का। अगर्चे यह दोनों उन के बराबर नहीं हो सकते, ख़ुदा की क़सम अगर मैं कुरैश के तीन दस्ते भी क़त्ल कर डालूं तब भी वह सब हुसैन की उंगलियों के बराबर नहीं हो सकते। फिर मुख़्तार ने दोनों के सर हज़रत मुहम्मद बिन हनफिय्या रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के पास भेज दिया। (तबरी:2/83)

## ख़ूली बिन यज़ीद को क़त्ल के बाद जला दिया गया

खोला वह बद बख़्त इंसान है जिस ने इमाम आली मक़ाम के सरे अनवर को जिस्मे अक़्दस से जुदा किया, मुख़तार ने अपने कोतवाल अबू उमरा को चन्द सिपाहियों के साथ उस की गिरफ्तारी के लिये भेजा, उन लोगों ने आकर ख़ूली के घर को घेर लिया, जब उस बद बख़्त को मालूम हुआ तो वह एक कोठरी में छुप गया और बीवी से कह दिया कि तुम लाइल्मी ज़ाहिर कर देना, कोतवाल ने उस के घर की तलाशी का हुक्म दिया, उस की बीवी बाहर निकल आई, उस ने पूछा कि तुम्हारा शौहर कहां है? चूंकि जिस वक़्त से ख़ूली हज़रत हुसैन का

सर लाया था वह उस की दुश्मन हो गई थी, इस लिये उस ने ज़बान से तो कहा मुझे मालूम नहीं वह कहां है मगर हाथ के इशारे से उस के छुपने की जगह बता दी, सिपाही उस के मक़ाम पर पहुंचे तो देखा कि सर पर एक टोकरा रखे हुए ज़मीन पर चपका हुआ है, उस को गिरफ्तार करके ला रहे थे कि मुख़्तार कूफ़ा की सैर के लिये निकला था, रास्ते में मिल गया उस के हुक्म से ख़ूली के घर वालों को बुला कर उन के सामने शाहराहे आम पर क़त्ल किया गया फिर उसे जलाया गया, जब तक उस की लाश जल कर राख नहीं हो गई मुख़्तार खड़ा रहा। (तबरी:2/81)

*अज़ मुकाफ़ाते अमल ग़ाफ़िल मशौ*
*गंदुम अज़ गंदुम बरूयद जौ ज़ जौ*

## शिमर क़त्ल के बाद कुत्तों के हवाले किया गया

मुस्लिम बिन अब्दुल्लाह ज़ियाबी का बयान है कि जब हज़रत हुसैन के मुक़ाबले में करबला जाने वालों को पकड़-पकड़ कर मुख़्तार क़त्ल करने लगा तो हम और शिमर ज़िल जौशन तेज़ रफ्तार घोड़ों पर बैठ कर कूफ़ा से भाग निकले, मुख़्तार के ग़ुलाम ज़रबी ने हमारा पीछा किया, हम ने अपने घोड़ों को बहुत तेज़ी से दौड़ाया लेकिन ज़रबी हमारे क़रीब आ गया, शिमर ने हमसे कहा तुम घोड़े को ऐड़ देकर हम से दूर हो जाओ, शायद यह ग़ुलाम मेरी ताक में आ रहा है, हम अपने घोड़े को ख़ूब तेज़ी से भगा कर शिमर से अलग हो गए, ग़ुलाम ने पहुंचते ही उस पर हम्ला कर दिया, पहले तो शिमर उस के वार से बचने के लिये घोड़े को कावा देता (घुमाता) रहा और जब ज़रबी अपने साथियों से दूर हो गया तो शिमर ने एक ही वार में उस की कमर तोड़ दी, जब मुख़तार के सामने ज़रबी लाया गया और उस को वाक़िआ मालूम हुआ तो उस ने अगर यह मुझ से मशवरा करता तो मैं कभी इसे शिमर पर हम्ला करने का हुक्म न देता।

ज़रबी को क़त्ल करने के बाद शिमर कलतानिया गांव में पहुंचा जो

दरिया के किनारे वाक़ा था, उस ने गांव के एक किसान को बुला कर मारा पीटा और उसे मजबूर किया कि मेरा यह ख़त मुस्अ़ब बिन ज़ुबैर के पास पहुंचाओ। उस ख़त पर यह पता लिखा था। शिमर ज़िल जौशन की तरफ़ से अमीर मुस्अ़ब बिन ज़ुबैर के नाम। किसान उस के ख़त को लेकर रवाना हुआ, रास्ते में एक बड़ा गांव आबाद था, जहां कोतवाल अबू उमरा चन्द सिपाहियों के हम्राह जंगी चौकी क़ाइम करने के लिये आया हुआ था, यह किसान उस गांव के किसान से मिल कर शिमर ने जो उस के साथ ज़्यादती की थी उस को बयान कर रहा था कि एक सिपाही उन के पास से गुज़रा, उस ने शिमर के ख़त और उसके पता को देखा, पूछा कि शिमर कहां है? उस ने बता दिया, मालूम हुआ कि 15 किलो मीटर के फ़ासिला पर है, अबू उमरा फ़ौरन अपने सिपाहियों को लिये हुए शिमर की तरफ़ चल पड़ा।

मुस्लिम बिन अब्दुल्लाह का बयान है कि मैं रात में शिमर के हम्राह था, मैं ने उस से कहा बेहतर है कि हम लोग इस जगह से रवाना हो जायें, इस लिये कि हमें यहां डर मालूम होता है, उस ने कहा कि मैं तीन दिन के पहले यहां से नहीं जाऊंगा। और तुम्हें ख़ौफ़ ग़ालिबन मुख़्तार कज़्ज़ाब की वजह से है, तुम उस से मरऊब हो गए हो, हम जहां ठहरे थे वहां रीछ बहुत ज़्यादा थे, अभी ज़्यादा रात नहीं गुज़री थी और मुझे बराबर नींद नहीं आई थी कि घोड़ों की टापों की आवाज़ आई, मैं ने अपने दिल में कहा कि रीछ होंगे, मगर जब आवाज़ तेज़ हो गई तो मैं उठ कर बैठ गया, अपनी आंखों को मलने लगा और कहा यह रीछों की आवाज़ हरगिज़ नहीं हो सकती, इतने में उन्हों ने पहुंच कर तक्बीर कही और हमारी झोपड़ियों को घेरे में ले लिया, हम अपने घोड़े छोड़ कर पैदल ही भागे, वह लोग शिमर पर टूट पड़े, जो पुरानी चादर ओढ़े हुए था और उस के बरस की सफ़ेदी चादर के ऊपर से नज़र आ रही थी, वह कपड़े और ज़िरह वग़ैरा भी नहीं पहन सका, उसी चादर को ओढ़े हुए नेज़े से उन का मुक़ाबला करने लगा, अभी हम थोड़ी ही दूर गए थे कि तक्बीर की आवाज़ के बाद हम ने सुना कि

अल्लाह ने ख़बीस को क़त्ल कर दिया। फिर उन लोगों ने उस के सर को काट कर लाशों को कुत्तों के लिये फेंक दिया। (तबरी:2/75)

## हाथ पांव काट कर तड़पने के लिये छोड़ दिया गया

अब्दुल्लाह बिन दयास जिस ने मुहम्मद बिन अम्मार बिन यासिर को क़त्ल किया था, उस ने इमाम आली मक़ाम के क़ातिलीन में से मुख़्तार को चन्द आदमियों के नाम बता दिये, जिन में अब्दुल्लाह बिन उसैद जुहनी, मालिक बिन नुसैर बद्दी और हमल बिन मालिक महारबी भी थे, यह सब उस ज़माने में क़ादसिया में रहते थे। मुख़्तार ने अपने सरदारों में से एक सरदार मालिक बिन अम्र नहदी को उन की गिरफ्तारी के लिये चन्द सिपाहियों के साथ भेजा, उस ने जाकर उन सब को गिरफ्तार कर लिया और इशा वक़्त लेकर मुख़्तार के पास पहुंचा। मुख़्तार ने उन लोगों से कहा कि ऐ अल्लाह व रसूल व आले रसूल के दुश्मनो! हुसैन बिन अली कहां हैं? मुझे हुसैन की ज़ियारत कराओ ज़ालिमो! तुम ने उस मुक़द्दस ज़ात को क़त्ल किया जिन पर नमाज़ में तुम्हें दुरूद भेजने का हुक्म दिया गया है, उन्हों ने कहा अल्लाह आप पर रहम करे, हमें उन के मुक़ाबले में ज़बर्दस्ती भेजा गया था, हम जाने के लिये राज़ी नहीं थे, आप हम पर ऐहसान करें और छोड़ दें। मुख़्तार ने कहा तुम ने नवासए रसूल पर ऐहसान नहीं किया, उन पर तुम्हें रहम नहीं आया, तुम ने उन्हें और उनके बच्चों को प्यासा रखा, पानी नहीं पीने दिया और आज हम से ऐहसान तलब करते हो। फिर बद्दी से कहा तुम ने हज़रत इमाम हुसैन की टोपी उतारी थी? अब्दुल्लाह बिन कामिल ने कहा जी हां, यही वह शख़्स है जिस ने उनकी टोपी के उतारी थी। मुख़्तार ने हुक्म दिया दोनों हाथ पांव काट कर इसको छोड़ दिया जाए ताकि इसी तरह तड़प तड़प कर यह मर जाए, चुनांचे उस के हुक्म पर अमल किया गया, बद्दी के हाथों और पैरों से ख़ून का धारा बहता रहा यहां तक कि वह मर गया, उसके बाद जुहनी और महारबी को भी क़त्ल करा दिया। (तबरी:2/79)

# हकीम बरहना करके तीरों का निशाना बनाया गया

हकीम बिन तुफैल ताई वह बद नसीब इंसान है जिस ने करबला में हज़रत अब्बास अलमदार के लिबास व अस्लेहा पर क़ब्ज़ा किया था और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को तीर मारा था। मुख़्तार ने अब्दुल्लाह बिन कामिल को उस की गिरफ्तारी के लिये चन्द सिपाहियों के साथ भेजा, वह पकड़ कर उसे मुख़्तार की तरफ चला, हीकम के घर वाले अदी बिन हाकिम के पास फरियादी हुए कि आप मुख़्तार से सिफारिश करके उस को छुड़ा दें, मुख़्तार अदी की बहुत क़दर किया करता था, वह सिफारिश के लिये मुख़्तार के पास पहुंच गए, वह अदी के साथ इज़्ज़त से पेश आया और उन्हें अपने पास बिठाया, अदी ने अपने आने की ग़रज़ बयान की, मुख़्तार ने कहा ऐ अबू ज़रीफ! क्या आप क़ातिलीने हुसैन के लिये भी सिफारिश करते हैं? उन्हों ने कहा कि हकीम पर झूठा इल्ज़ाम लगाया गया है। मुख़्तार ने कहा अच्छा तो हम उसे छोड़ देंगे।

सिपाहियों को रास्ते में मालूम हुआ कि अदी मुख़्तार के पास हकीम की सिफारिश के लिये गए हैं, उन्हों ने अपने सरदार इब्ने कामिल से कहा कि मुख़्तार अदी की सिफारिश क़बूल कर लेंगे। और यह ख़बीस बच जाएगा। हालां कि आप इसके जुर्म से बख़ूबी वाक़िफ हैं। लिहाज़ा बेहतर है कि हम ही उसको क़त्ल कर दें, इब्ने कामिल ने उन्हें इजाज़त दे दी, वह लोग हकीम को एक घर में ले गए, उस की मश्के बंधी हुई थीं, उसे एक जगह खड़ा किया और कहा तू ने हज़रत अब्बास बिन अली के कपड़े उतारे थे, हम तेरी ज़िंदगी ही में तेरे सारे लिबास उतारते हैं, चुनांचे उन लोगों ने उसे बिल्कु नंगा कर दिया, फिर कहा तू ने हुसैन को तीर मारा था, हम भी तुझे तीरों का निशाना बनाते हैं, यह कह कर उन्हों ने तीरों से मार-मार उसे हलाक कर दिया।

इब्ने कामिल ने आकर मुख़्तार को हकीम के क़त्ल की इत्तिलाअ् दी, मुख़्तार ने कहा मेरे पाए लाए बग़ैर तुम ने उसे क्यों क़त्ल कर

दिया? देखो यह अदी उस की सिफारिश के लिये आए हैं। और यह इस बात के अहल हैं कि इन की सिफारिश कुबूल की जाए, इब्ने कामिल आप के शियिए मेरी बात नहीं मानी तो मैं मजबूर हो गया, अदी ने कहा एक दुश्मने खुदा! तू झूठ बोलता है, तू ने जाना कि मुख़्तार मेरी सिफारिश कुबूल कर लेंगे, इस लिये तू ने उसे रास्ता ही में कृत्ल कर दिया। इस के अलावा और तुझे कोई ख़तरा नहीं था, इब्ने कामिल भी अदी को जवाब में बुरा-भला कहना चाहता था मगर मुख़्तार ने उंगली अपने मुंह पर रख कर उसे ख़ामोश रहने की हिदायत की, अदी मुख़्तार से खुश और इब्ने कामिल से नाराज़ हो कर चले आए।

(तबरी:2/86)

## नेज़ों से छेद-छेद कर मारा गया

बनी सदा का एक बद बख़्त जिस का नाम अम्र बिन सुबैह था वह कहा करता था, मैं ने हुसैन के साथियों को तीर से ज़ख़्मी किया है मगर किसी को कृत्ल नहीं किया है, सब लोगों के सो जाने के बाद मुख़्तार ने उस की गिरफ्तारी के लिये सिपाहियों को रवाना किया, जब वह इब्ने सुबैह के मकान पर पहुंचे तो वह अपनी छत पर बेख़बर सो रहा था, उस की तलवार उस के सरहाने रखी थी, सिपाहियों ने उसे गिरफ्तार कर लिया और उस की तलवार पर कब्ज़ा कर लिया, वह कहने लगा अल्लाह इस तलवार का बुरा करे कि यह मुझ से किस कृद्र करीब थी, और अब कितनी दूर हो गई, सिपाहियों ने रात ही में उसे मुख़्तार के सामने पेश किया, मुख़्तार ने हुक्म दिया कि सुबह तक इसे कैद में रखो, फिर सुबह को दरबारे आम किया, जब बहुत से लोग जमा हो गए और इब्ने सुबैह उस के सामने लाया गया, तो निहायत दिलेरी से भरे दरबार में कहने लगा ऐ गिरोहे कुफ्फारो-फुज्जार! अगर इस वक्त मेरे हाथ में तलवार होती तो तुम को मालूम हो जाता कि मैं बुज़दिल और कमज़ोर नहीं हूं, अगर मैं तुम्हारे अलावा किसी और के हाथ से कृत्ल किया जाता तो यह बात मेरे लिये बाइसे मसर्रत होती। इस लिये कि मैं तुम को बद तरीन मख़्लूक़ समझता हूं, ऐ काश! इस

वक़्त मेरे हाथ में तलवार होती तो मैं थोड़ी देर तुम्हारा मुक़ाबला करता, इस के बाद इब्ने सुबैह ने इब्ने कामिल की आंख पर एक घूंसा मारा, इब्ने कामिल हंसा और उस का हाथ पकड़ कर कहने लगा कि यह शख़्स कहता है कि मैं ने अहले बैते रिसालत को तीरों से ज़ख़्मी किया है तो अब इसके बारे में आप हमें क्या हुक्म देते हैं? मुख़तार ने कहा नेज़े लाओ और इसे नेज़ों से छेद-छेद कर मारो, चुनांचे नेज़ों से छेद-छेद कर उसे हलाक किया गया। (तबरी:2/88)

# क़ातिल को ज़िंदा जला दिया गया

बनी जुनुब का एक शख़्स जिस का नाम ज़ैद इब्ने रक़ाद था, उस बद बख़्त ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुस्लिम बिन अकील को तीर मारा था जो उन की पेशानी में लगा था, उन्हों ने पेशानी को बचाने के लिये उस पर अपना हाथ रख लिया मगर तीर ऐसा लगा कि हाथ भी पेशानी के साथ पैवस्त हो गया और जब कोशिश के बा वजूद उन का हाथ पेशानी से जुदा नहीं हो सका तो उन्हों ने बारगाहे इलाही में दुआ की या इलाहल आलमीन! हमारे दुश्मनों ने जैसा हमें ज़लील किया है तू भी उन को ऐसे ही ज़लील कर, और जिस तरह उन्हों ने मुझे क़त्ल किया है तू भी उन को क़त्ल कर। ज़ैद इब्ने रक़ाद ने उन के पेट में एक तीर मारी जिस से वह शहीद हो गए। वह कहा करता था कि उन के पेट का तीर तो मैं ने आसानी से निकाल लिया मगर जो तीर पेशानी पर लगा कोशिश के बा वजूद वह नहीं निकल सका।

मुख़्तार ने अब्दुल्लाह बिन कामिल को उस की गिरफ्तारी के लिये रवाना किया, इब्ने कामिल सिपाहियों के साथ पहुंच कर उस पर टूट पड़ा, वह भी एक बड़ा बहादुर आदमी था, तलवार लेकर उन का मुक़ाबला किया, इब्ने कामिल ने अपने सिपाहियों से कहा इसे नेज़ा और तलवार से हलाक न करो बल्कि तीर और पत्थर से मारो, सिपाहियों ने इस क़द्र तीर और पत्थर मारा कि वह गिर गया। इब्ने कामिल ने कहा देखो अगर जान बाक़ी हो तो इसे बाहर लाओ, चूंकि अभी जान बाक़ी

थी तो उसे बाहर निकाला गया, इब्ने कामिल ने आग लगा कर उसे ज़िंदा जला दिया। (तबरी:2/87)

## इब्ने ज़ियादा बद निहाद का इब्रतनाक अंजाम

अब्दुल्लाह बिन ज़ियाद वह बद निहाद इंसान है जो यज़ीद की तरफ से कूफा का गवर्नर मुक़र्रर किया गया था, उसी बद बख़्त के हुक्म से हज़रत इमाम और आप के अहले बैत को तमाम ईज़ाएं (तक्लीफें) पहुंचाई गईं। यही इब्ने ज़ियाद मूसिल में तीस हज़ार फौज के साथ उतरा। मुख़्तार ने इब्राहीम बिन मलिक उश्तुर उस के मुक़ाबला के लिये एक फौज को लेकर भेजा, मूसिल से तक़रीबन 25 किलो मीटर के फासला पर दरियाए फुरात के किनारे दोनों लश्करों में मुक़ाबला हुआ और सुबह से शाम तक ख़ूब जंग रही, जब दिन ख़त्म होने वाला था और आफताब क़रीबे गुरूब था उस वक़्त इब्राहीम की फौज ग़ालिब आई, इब्ने ज़ियाद को शिकस्त हुई और उस के हमराही भागे, इब्राहीम ने हुक्म दिया कि फौजे मुख़ालिफ में से जो हाथ आए उसे ज़िंदा न छोड़ा जाए। चुनांचे बहुत से लोग हलाक किये गए, इसी हंगामे में इब्ने ज़ियाद भी फुरात के किनारे मुहर्रम की दस्वीं तारीख़ 67 हिजरी में मारा गया और उस का सर काट कर इब्राहीम के पास भेजा गया। इब्राहीम ने मुख़्तार के पास कूफा में भिजवाया, मुख़्तार ने दारुल अमारत कूफा को आरास्ता किया और अहले कूफा को जमा करके इब्ने ज़ियाद का सरे नापाक उसी जगह रखवाया जिस जगह उस मग़रूरे हुकूमत और बन्दए दुनिया ने हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का सरे मुबारक रखा था। मुख़्तार ने अहले कूफा को ख़िताब करके कहा ऐ अहले कूफा! देख लो कि हज़रत इमाम हुसैन के ख़ूने नाहक़ ने इब्ने ज़ियाद को न छोड़ा, आज इस ना मुराद का सर इस ज़िल्लत व रुस्वाई के साथ यहां रखा हुआ है, छः साल हुए हैं, वही तारीख़ है, वही जगह है, ख़ुदावन्दे आलम ने इस मग़रूर फिरऔन ख़िसाल को ऐसी ज़िल्लत व रुस्वाई के साथ हलाक किया। इसी कूफा और इसी दारुल अमारत

में इस बेदेन के क़त्ल व हलाक पर जश्न मनाया जा रहा है।

(सवानेह करबला:151)

तिर्मिज़ी शरीफ की हदीस में है कि जिस वक़्त इब्ने ज़ियाद और उस के सरदारों के सर मुख़्तार के सामने ला कर रखे गए तो एक बड़ा सांप नमूदार हुआ, उस की हैबत से लोग डर गए, वह तमाम सरों में फिरा, जब उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद के सर के पास पहुंचा तो उस के नथने में घुस गया और थोड़ी देर ठहर कर उस के मुंह से निकला, इस तरह तीन बार सांप उस के सर के अन्दर दाख़िल हुआ और ग़ाइब हो गया। (नूरुल अबूसार:124)

*ज़ुल्म की टहनी कभी फलती नहीं*
*नाव काग़ज़ की कभी चलती नही*

## मुख़्तार का दअ़्वए नुबुव्वत

मुख़्तार ने हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के क़ातिलीन के बारे में बड़ा शानदार कारनामा अंजाम दिया लेकिन आख़िर में वह दअ़्वए नुबुव्वत करके मुरतद हो गया (*अल्-इयाज़ु बिल्लाहि तआ़ला*) कहने लगा कि मेरे पास जिब्रीले अमीन आता है और मुझ पर खुदाए तआ़ला की तरफ से वही लाता है, मैं बतौर नबी मबऊस हुआ हूं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को जब उस के दअ़्वए नुबुव्वत की ख़बर मिली तो आप ने उस की सर कूबी (सर कुचलने) के लिये लश्कर रवाना फरमाया जो मुख़्तार पर ग़ालिब हुआ और माहे रमज़ान 67 हिजरी में उस बद बख़्त को क़त्ल किया। (तारीख़ुल खुलफा:146)

## क़ातिलीने इमामे हुसैन पर तरह-तरह के अज़ाब

जो लोग हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के मुक़ाबले में करबला गए और उन के क़त्ल में शरीक हुए उन में से तक़रीबन छेः हज़ार कूफी तो मुख़्तार के हाथों हलाक हुए और दूसरे लोग तरह-तहर के अज़ाब में मुबतला हुए। उलमाए किराम फरमाते हैं कि उन में से

कोई नहीं बचा कि जो आख़िरत के अज़ाब से पहले इस दुनिया में सज़ा न पाई हो, उनमें से कुछ तो बुरी तरह क़त्ल किये गए, कुछ अंधे और कोढ़ी हुए और कुछ लोग सख़्त क़िस्म की आफतों में मुब्तला हो कर हलाक हुए।

हज़रत अबुश शैख़ फरमाते हैं कि एक मजलिस में कुछ बैठे हुए आपस में यह बातें कर रहे थे कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की क़त्ल में जिस ने भी किसी तरह की कोई मदद की वह मरने से पहले किसी न किसी अज़ाब में ज़रूर मुब्तला हुआ, एक बुड्ढा जो उसी मज्लिस में था उसने कहा मैं ने भी तो मदद की थी मगर मैं किसी अज़ाब में नहीं मुब्तला हुआ, इतना कहने के बाद वह चिराग़ दुरुस्त करने के लिये खड़ा हुआ तो उस की आग ने बुड्ढे को पकड़ लिया, उस का पूरा बदन जलने लगा, वह आग-आग चिल्लाता रहा, यहां तक कि दरियाए फुरात में कूद पड़ा मगर आग बुझी नहीं और वह उसी में जल कर हलाक हो गया। इसी क़िस्म का एक वाक़िआ इमाम सुद्दी से भी मन्कूल है, उन्होंने फरमायाः واللّٰہ لقد رأیتہ کأنہ حممۃ खुदा की क़सम मैं ने उस को देखा वह इस तरह जल रहा था जैसे कोयला। (सवाइक़े मुहर्रक़ाः120)

और इमाम वाक़दी से रिवायत है कि एक शख़्स जो लश्करे यज़ीद के साथ था मगर उस ने किसी को क़त्ल नहीं किया था, वाक़िए करबला के बाद वह अंधा हो गया, उस से उस का सबब दरियाफ़्त किया गया, उस ने कहा मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को ख़्वाब में देखा कि वह आस्तीने मुबारक चढ़ाए हुए और हाथ में नंगी तलवार लिये हुए खड़े हैं, हुज़ूर के सामने एक चमड़ा बिछा हुआ है और दस क़ातिलीने हुसेन ज़िबह किये हुए पड़े हैं, जब आप की निगाह मुझ पर पड़ी तो बहुत लअ़नत मलामत की और ख़ून में डुबा कर एक सलाई मेरी आंखों में फेर दी उसी वक़्त से मैं अंधा हो गया। (सवाइक़े मुहर्रक़ाः120)

और हज़रत अल्लामा इब्ने हजर मक्की रहमतुल्लाहि तआला अलैह

तहरीर फरमाते हैं कि यज़ीद के लश्कर का वह सिपाही कि जिस ने हज़रत इमाम हुसैन के सरे मुबारक को अपने घोड़े की गर्दन में लटकाया था, कुछ दिनों के बाद लोगों ने देखा कि उस को चेहरा बहुत ज़्यादा काला हो गया है, तो उस से पूछा कि तेरा चेहरा तो बहुत ज़्यादा ख़ूबसूरत था फिर इतना ज़्यादा काला कैसे हो गया? उस ने कहा जिस रोज़ मैं ने हज़रते हुसैन के सर को अपने घोड़े की गर्दन में लटकाया उसी रोज़ से हर रात को दो आदमी मेरे पास आते हैं और मुझे पकड़ कर ऐसी जगह पर ले जाते हैं, जहां बहुत सी आग होती है, मुझे मुंह के बल उस आग में डाल कर निकालते हैं, इस वजह से मेरा मुंह इतना ज़्यादा काला हो गया है। रावी का बयान है कि वह शख़्स बहुत बुरी मौत मरा। (सवाइके मुहर्रका:120)

## मुंह सुवर जैसा हो गया

अल्लामा बारज़ी हज़रत मन्सूर से रिवायत करते हैं कि उन्हों ने मुल्के शाम में एक ऐसे शख़्स को देखा जिस का मुंह सुवर जैसा था, उन्हों ने उस से उस की वजह दरियाफ्त की तो उस ने बताया कि वह रोज़ाना हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु पर एक हज़ार मर्तबा और जुमा के दिन चार हज़ार मर्तबा उन पर और उन की औलाद पर लअ़नत भेजा करता था। तो एक रात उस ने ख़्वाब में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम को देखा और उस ने लम्बा ख़्वाब बयान किया, उस में एक बात यह भी थी कि हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु उसके लअ़नत भेजने की हुज़ूर की ख़िदमत में शिकायत की तो आप ने उस पर लअ़नत फरमाई और उस के मुंह पर थूक दिया, तो उस का मुंह सुवर (ख़िन्ज़ीर) जैसा हो गया और वह लोगों के लिये नसीहत बन गया। (सवाइके मुहर्रका:120)

*गर ख़ुदा ख़्वाहद कि पर्दा कस दर्द*
*मैलश अन्दर तअ़नए नेकां बुरद*

और अल्लामा इब्ने हजर मक्की रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह नक़ल

फ़रमाते हैं कि एक बुड्ढे ने बयान किया कि मैं ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम को ख़्वाब में देखा कि आप के सामने एक तश्त रखा हुआ है जो ख़ून से भरा है, लोग आप के सामने लाए जा रहे हैं और उस ख़ून से उन की आंखों में लगा रहे हैं, यहां तक कि मैं भी हाज़िर किया गया तो मैं ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैं उन के मुक़ाबले में नहीं गया था, हुज़ूर ने फ़रमाया तू उस की तमन्ना तो रखता था, फिर आप ने मेरी तरफ उंगली से इशारा फ़रमाया तो उस वक़्त से मैं अंधा हो गया। (सवाइक़े मुहर्रक़ा:120)

और मरवी है वह बद बख़्त जिस ने कि हज़रत अली असग़र रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के हलक़ में तीर मारा था वह इस मुसीबत में गिरफ़्तार हुआ कि उस के पेट की तरफ ऐसी सख़्त गर्मी पैदा हुई कि गोया आग लगी है और पीठ की तरफ़ ऐसी सर्दी कि ख़ुदा की पनाह। इस हालत में उस के पेट पर पानी छिड़कते, बरफ रखते और पंखा झलते मगर ठंडक पैदा न होती और पीठ की तरफ आग जला कर गर्मी पहुंचाने की कोशिश करते मगर कुछ फ़ाइदा न होता और वह प्यास-प्यास चिल्लाता तो उस के लिये सत्तू, पानी और दूध लाया जाता लेकिन पांच घढ़ा भी उस को पिलाया जाता तो वह पी लेता और फिर भी-प्यास-प्यास चिल्लाता ही रहता, यहां तक कि इसी तरह पीते-पीते उस का पेट फट गया। (सवाइक़े मुहर्रक़ा:121)

और हज़रत अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह मुहाज़रात व मुहावरात में तहरीर फ़रमाते हैं कि कूफ़ा में चेचक की बीमारी एक साल ऐसी हुई कि जो लोग हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को क़त्ल करने के लिये गए थे, डेढ़ हज़ार औलाद उन की चेचक से अंधी हो गई। (नूरुल अब्सार:124)

हाकिम हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से रिवायत करते हैं कि: أَوْحَى اللّٰهُ إِلَى مُحَمَّدٍ صلى الله تعالى عليه وسلم إِنِّى قَتَلْتُ بِيَحْيَى ابْنِ زَكَرِيَّا سَبْعِيْنَ أَلْفًا وَإِنِّى قَاتِلٌ بِابْنِ بِنْتِكَ سَبْعِيْنَ أَلْفًا وَسَبْعِيْنَ أَلْفًا यानी ख़ुदा तआ़ला ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के पास वही भेजी कि मैं ने यहया

बिन ज़करिया के ऐवज़ सत्तर हज़ार को मारा और ऐ महबूब तुम्हारे नवासे के ऐवज़ सत्तर हज़ार और सत्तर हज़ार यानी एक लाख चालीस हज़ार को मारूंगा। (ख़साइसे कुब्रा:126)

चुनांचे बहुत से लोगों को मुख़्तार के हाथों मारा और बेशुमार लोगों को तरह-तरह की मुसीबतों और आफतों से हलाक किया। और फिर कई हज़ार अब्बासी सल्तनत के बानी अब्दुल्लाह सफ्फाह के हाथों मारे गए इस तरह वादए इलाही पुरा हुआ और कुल एक लाख चालीस हज़ार मारे गए।

## एक ऐतराज़ और उस का जवाब

इमाम आली मक़ाम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मुक़ाबले में सिर्फ 22 हज़ार का लश्कर मैदाने करबला गया था तो एक लाख चालीस हज़ार क्यों मारे गए, इतने लोगों ने क्या गुनाह क्या था?

इस ऐतराज़ का जवाब यह है जो लोग हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के क़त्ल में शरीक हुए उन के मुज़रिम होने के साथ वह लोग भी मुजरिम हुए जो क़त्ले हुसैन पर राज़ी थे लिहाज़ा क़ातिलीने हुसैन के साथ वह मारे गए। अगर्चे उनके हमराह करबला नहीं गए थे। अबू दाऊद शरीफ की हदीस है सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: إِذَا عُمِلَتِ الْخَطِيْئَةُ فِي الْأَرْضِ مَنْ شَهِدَهَا فَكَرِهَهَا كَانَ كَمَنْ غَابَ عَنْهَا وَمَنْ غَابَ عَنْهَا فَرَضِيَهَا كَانَ كَمَنْ شَهِدَهَا यानी जब किसी जगह कोई गुनाह किया जाए तो जो शख़्स वहां हाज़िर हो मगर उसे बुरा समझता हो तो वह उस आदमी के मिस्ल है जो वहां मौजूद नहीं और जो शख़्स वहां मौजूद न हो लेकिन उस पर राज़ी हो तो वह उस आदमी के मिस्ल है जो वहां मौजूद हो। (मिश्कात शरीफ:436)

## मजालिसे मुहर्रम के फाइदे

मजालिसे मुहर्रम से कई फाइदे हासिल होते हैं, अव्वल यह कि हदीस शरीफ में है عِنْدَ ذِكْرِ الصَّالِحِيْنَ تَنَزَّلُ الرَّحْمَةُ सालिहीन के ज़िक्र के वक़्त रहमते इलाही का नुज़ूल होता है। और खुलफाए राशिदीन और इमामैन

करीमैन हज़रात हसन व हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम जो सालिहीन के इमाम व पेश्वा हैं उन के ज़िक्र के वक़्त तो कसीर रहमतें नाज़िल होंगी। जिन से इन मज्लिसों में शिरकत करने वाले ख़ास तौर पर फैज़याब होते हैं। और दूसरा फाइदा यह है कि इन के ज़िक्र को सुन कर अल्लाह के महबूब सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की मुहब्बत और उन की इताअ़तो-फरमां बरदारी का जज़्बा पैदा होता है। और तीसरा फाइदा यह है कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का तज़्किरा दीनो-मज़्हब की हुर्मत क़ाइम रखने के लिये मैदान में निकलना और ऐलाए कलिमतुल हक़ (हक़ की आवाज़ बुलंद) करना तरह-तरह की मुसीबतों को बर्दाश्त करना और सब्रो-तहम्मुल का दामन न छोड़ना, तीन दिन का भूका प्यासा रहने और छोटे-छोटे बच्चों के रोने बिलकने के बा वजूद हक़ की हिमायत करना और बातिल के सामने न झुकना अज़ीज़ों की लाशें ख़ाको-ख़ून में तड़पती हुई देख कर भी हर्फ़े शिकायत ज़बान पर न लाना, हर हाल में राज़ी बरज़ाए इलाही रहना और मक़ामे सिदक़ो-सफा में साबित क़दम रहना, इन बातों के सुनने से दिल में इमामे आली मक़ाम की अज़्मतो-मुहब्बत पैदा होती है और दीनो-मज़्हब की इज़्ज़तो-हुर्मत बाक़ी रखने के लिये जान व माल की कुर्बानी देने का जज़्बा पैदा होता है। --- और चौथा फाइदा यह है कि दुनिया के लिये कूफियों का अपनी आक़िबत बर्बाद करना अहले बैते रिसालत की तौहीन करना, उन को सताना और ईज़ा पहुंचाना, फिर तरह-तरह की आफतों और मुसीबतों में मुब्तला होना और क़त्ले हुसैन के ऐवज़ एक लाख चालीस हज़ार का मारा जाना इन बातों के सुनने से इब्रतो-नसीहत हासिल होती है। और अल्लाह वालों की शान में गुस्ताख़ी व बेअदबी करने से बचने की तौफीक़ होती है। ---- और पांचवां फाइदा यह भी है कि अशरए मुहर्रम में इमाम से झूठी मुहब्बत का दावा रखने वालों ने जो तरह-तरह की खुराफात और ना जाइज़ बातें राइज कर रखी हैं, मज्लिसों की बरकत से लोग उन में शामिल होने से बच जाते हैं।

दुआ है कि खुदाए अज़्ज़ व जल्ल हमें और आप को इसी तरह हर साल मजालिसे मुहर्रम मुन्अक़िद करने, बुजुर्गों का ज़िक्रे जमील सुनने सुनाने और उन से इब्रतो-नसीहत हासिल करने की तौफीक़े रफीक़ बख़्शे और अल्लाह के महबूब बन्दों को सताने, उन की शान में गुस्ताख़ी व बेअदबी करने से महफूज़ रखे। और क़ियामत के दिन नबिय्यीन, सिद्दीक़ीन, शुहदा और सालिहीन के दामने करम के साय में हम लोगों का हश्र फरमाए। आमीन

بحرمة النبی الکریم الامین علیه وعلی اله وافضل الصلوۃ واکمل التسلیم

*बिहुर्मतिन् नबिय्यिल् करीमिल् अमीनि अ़लैहि व अ़ला आहिली व अफ्ज़लुस् सलवाति व अक्मलुत्तस्लीमि।*

## फज़ाइले आशूरा

आशूरा यानी मुहर्रम की दस्वीं तारीख़ बड़ी अज़्मतो-बुजुर्गी वाली और फ़ज़्लो-शर्फ वाली है। इस लिये बहुत से अहम वाक़िआत इस तारीख़ से मुतअल्लिक़ हैं। हज़रत शैख़ अब्दुर रहमान सफूरी रहमतुल्लाहि तआ़ाला अलैह अपनी मशहूर किताब नुज़्हतुल मजालिस में तहरीर फरमाते हैं कि इसी रोज़ आसमानो-ज़मीन और क़लम की तख़्लीक़ हुई। हज़रत आदम व हव्वा अला निबिय्यना व अलैहिमस् सलातु वस्सलाम पैदा हुए और आदम अलैहिस्सलाम की तौबा क़बूल हुई। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की कश्ती जूदी पहाड़ पर लगी। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम मर्तबए खुल्लत से सरफराज़ किये गए। चालीस साल बाद हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम से हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम मिले। हज़रत इद्रीस अलैहिस्सलाम आसमान पर उठाए गए। हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम सेहत याब हुए। हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम मछली के पेट से निकले। हज़रत दाऊद अलैहिस् सलाम की तौबा क़बूल हुई। हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम को सल्तनत अ़ता हुई। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आसमान पर उठाए गए। हमारे नबी सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम का अ़क्द हज़रत ख़दीजा

रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा से हुआ और इसी रोज़ क़ियामत भी क़ाइम होगी। (नुज़्हतुल मजालिसः1/181)

साबित हुआ कि मुहर्रम की दस्वीं तारीख़ खुदाए तआ़ला के नज़्दीक बड़ी अज़्मत व फज़ीलत वाली है। इसी लिये आप ने अपने प्यारे हबीब जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की महबूब नवासे के लिये भी इसी तारीख़ को मुन्तख़ब फरमाया।

## आशूरा के आमाल

आशूरा के दिन रोज़ा रखना सुन्नत है और बहुत फज़ीलत रखता है। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम मदीना तशरीफ लाए तो यहूदियों को देखा कि वह आशूरा के दिन रोज़ा रखते हैं, आप ने उन से फरमाया यह कैसा दिन है जिस में तुम लोग रोज़ा रखते हो? उन्हों ने कहा यह वह अज़्मत वाला दिन है जिस में अल्लाह ने मूसा अलैहिस् सलाम और उन की क़ौम को नजात दी और फिरऔन को उस की क़ौम के साथ डुबो दिया, मूसा अलैहिस्सलाम ने शुक्रिया में रोज़ा रखा, हम भी रखते हैं। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने फरमाया हम मूसा अलैहिस्सलाम के तुम से ज़्यादा हक़दार हैं। तो आशूरा का रोज़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने भी रखा है और इस रोज़ा का हुक्म भी फरमाया है। (बुख़ारीः1/268, मुस्लिमः1/359)

और हज़रत अबू क़तादा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने फरमाया صِيَامُ يَوْمِ عَاشُوْرَاءَ اَحْتَسِبُ عَلَى اللّٰهِ اَنْ يُّكَفِّرَ السَّنَةَ الَّتِيْ قَبْلَهٗ मुझे अल्लाह से उम्मीद है कि वह आशूरा के रोज़ा को पिछले साल भर के गुनाह का कफ्फारा बना दे। (मुस्लिम, मिश्कातः179)

और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा से मरवी है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने आशूरा के दिन का रोज़ा रखा और इस के रोज़ा का हुक्म फरमाया तो सहाबा ने

अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! यह वह दिन है कि जिस की यहूद और ईसाई ताज़ीम करते हैं, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया لَئِنْ بَقِيْتُ إِلَى قَابِلٍ لَأَصُوْمَنَّ التَّاسِعَ अगर मैं साले आइन्दा दुनिया में बाक़ी रहा तो नवीं मुहर्रम का भी रोज़ा रखूंगा। (मुस्लिम, मिश्कातः179)

इसी लिये फुक़हाए किराम फरमाते हैं कि सुन्नत यह है कि मुहर्रम की नवीं और दस्वीं दोनों तारीख़ को रोज़ा रखें।

और सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम इरशाद फरमाते हैं कि مَنْ صَلَّى يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ أَرْبَعَ رَكَعَاتٍ يَقْرَأُ فِي كُلِّ رَكْعَةٍ فَاتِحَةَ الْكِتَابِ وَقُلْ هُوَ اللّٰهُ أَحَدٌ إِحْدٰى عَشَرَةَ مَرَّةً غَفَرَ اللّٰهُ لَهُ ذُنُوْبَ خَمْسِيْنَ عَامًا وَبَنَى لَهُ مِنْبَرًا مِنَ النُّوْرِ यानी जो शख़्स आशूरा के दिन चार रकअतें इस तरह पढ़े कि हर रकअत में सूरए फातिहा के बाद कुल हुवल्लाहु अहद पूरी सूरत 11 मर्तबा पढ़े तो अल्लाह तआला उस के पचास बरस के गुनाह माफ फरमा देगा और उस के लिये नूर का मिम्बर बनाएगा। (नुज़्हतुल मजालिसः1/181)

और हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम इरशाद फरमाते हैं: مَنْ وَسَّعَ عَلٰى عِيَالِهِ يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ لَمْ يَزَلْ فِيْ سِعَةٍ سَائِرَةَ سَنَتِهِ जो शख़्स आशूरा के दिन अपने घर वालों पर खाने पीने में कुशादगी करेगा, साल भर तक बराबर कुशादगी में रहेगा। (मा सबत बिस्सुन्नहः10)

## हूर और हुलए बहिश्ती

हज़रत शैख़ अब्दुर रहमान सफूरी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि मिस्र में एक शख़्स रहता था जिस के पास सिर्फ एक कपड़ा था जो उस के बदन पर था, उस ने आशूरे के दिन हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की मस्जिद में फज्र की नमाज़ पढ़ी, वहां का दस्तूर यह था कि औरतें आशूरा के दिन उस मस्जिद में दुआ के लिये जाया करती थीं, एक औरत ने उस शख़्स से कहा अल्लाह के नाम पर मुझे कुछ मेरे बाल बच्चों के लिये दे दीजिये, उस शख़्स ने कहा अच्छा मेरे साथ चलो, घर पहुंच कर उस ने अपने बदन

से कपड़ा उतारा और दरवाज़ा की दराज़ से उस औरत को दे दिया। औरत ने दुआ दी أَلْبَسَكَ اللّٰهُ مِنْ حُلَلِ الْجَنَّةِ ख़ुदाए तआ़ला तुम्हें जन्नत की हूले पहनाए।

उस शख़्स ने उसी रात एक निहायत ख़ूबसूरत हूर देखी जिस के हाथ में एक उम्दा ख़ुश्बूदार सेब था, हूर ने उस सेब को तोड़ा तो उस में एक हूला निकला, उस शख़्स ने हूर से पूछा कि तू कौन है? उस ने कहा मैं तेरी जन्नत की बीवी आशूरा हूं, फिर वह शख़्स नींद से बेदार हो गया, और सारे घर को ख़ुश्बू से महकता हुआ पाया। वुज़ू करके दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी और बारगाहे इलाही में दुआ की اَللّٰهُمَّ إِنْ كَانَتْ زَوْجَتِيْ حَقًّا فِي الْجَنَّةِ فَاقْبِضْنِيْ إِلَيْكَ या इलाहल आलमीन! अगर वाक़ई वह जन्नत में मेरी बीवी है तो मेरी रूह को क़ब्ज़ कर ले और मुझे उस के पास पहुंचा दे। ख़ुदाए तआ़ला ने उस की दुआ क़बूल फरमाई और उसी वक़्त मर गया। (नुज़्हतुल मजालिस:1/182)

## इमामे आली मक़ाम की नज़्रो-नियाज़ करना सबील लगाना, उनके लिये खिचड़ा पकाना और शर्बत वग़ैरा पिलाना बाइसे सवाब व बरकत है

हज़रत सअ़द बिन उबादा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से रिवायत है कि वह सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मेरी मां का इन्तेक़ाल हो गया है तो उन के लिये कौन सा सदक़ा अफ़्ज़ल है? قَالَ الْمَاءُ فَحَفَرَ بِئْرًا وَقَالَ هٰذِهٖ لِأُمِّ سَعْدٍ हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने फरमाया पानी (बेहतरीन सदक़ा है, तो हुज़ूर के इरशाद के मुताबिक़) हज़रत सअ़द ने कुआं खुदवाया और (अपनी मां की तरफ मन्सूब करते हुए) कहा यह कुआं सअ़द की मां के लिये है (यानी इस का सवाब उन की रूह को मिले)। (मिश्कात शरीफ़:169)

इस हदीस शरीफ से वाज़ेह तौर पर साबित हुआ कि हज़रत इमाम

हुसैन और दीगर शुहदाए करबला रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम को सवाब पहुंचाने की ग़रज़ से सबील लगाना और खिचड़ा वग़ैरा पकाना, फिर यह कहना कि खिचड़ा और सबील इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की है, शरअन कोई क़बाहत नहीं। जैसा कि जलीलुल क़द्र सहाबी हज़रत सअ़द रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने कुंआं खुदवाने के बाद फरमाया कि यह कुआं सअ़द की मां के लिये है।

और शाह अब्दुल अज़ीज़ मोहिद्दसे देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि जो खाना कि हज़राते हसनैन करीमैन को नियाज़ करें, उस पर फातेहा, कुल और दुरूद शरीफ पढ़ने से तबर्रुक हो जाता है और इस का खाना बहुत अच्छा है। (फतावा अज़ीज़िया:1/78)

और इरशाद फरमाते हैं अगर मालीदा और चावलों की खीर किसी बुज़ुर्ग के लिये फातेहा कि लिये ईसाले सवाब की नियत से पका कर खिलाएं तो कोई मुज़ायक़ा (हरज) नहीं जाइज़ है। (फतावा अज़ीज़िया:1/50)

फिर चन्द सतर बाद फरमाते हैं अगर फातेहा किसी बुज़ुर्ग के नाम से किया गया, तो मालदारों को भी उस में से खाना जाइज़ है।

अल्बत्ता ताज़िया का चढ़ा हुआ खाना और मिठाई वग़ैरा नहीं खानी चाहिये। अअ़्ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह तहरीर फरमाते हैं:

हज़रत इमाम के नाम की नियाज़ खानी चाहिये और ताज़िया का चढ़ा हुआ न खाना चाहिये। फिर दो सतर बाद तहरीर फरमाते हैं: ताज़िया पर चढ़ाने से हज़रत इमाम रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की नियाज़ नहीं हो जाती और अगर नियाज़ देकर चढ़ाएं या चढ़ा कर नियाज़ दिलाएं तो उस के खाने से ऐहतराज़ चाहिये।

(रिसाला ताज़िया दारी:5)

☆☆☆

# ताज़िया दारी उलमाए अहले सुन्नत की नज़र में

## हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ मोहद्दिसे देहलवी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह

*"ताज़िया दारी दर अशरए मुहर्रम व साख़्तन ज़राइह व सूरत वग़ैरा दुरुस्त नीस्त।"* (फ़तावा अज़ीज़िया:1/75)

अशरए मुहर्रम में ताज़िया दारी और क़ब्र व सूरत वग़ैरा बनाना जाइज़ नहीं।

फिर चन्द सतर के बाद तहरीर फरमाते हैं:

*"ताज़िया दारी कि हम्चू मुब्त दिआं मी कुनंद बिद्अ़त अस्त व हम्चुनीं साख़्तन् ज़राइह व सूरते कुबूर व अलम वग़ैरा ईं हम् बिद् अ़त अस्त व ज़ाहिर अस्त कि बिद् अ़ते सैय्यिह अस्त।"*(फतावा अज़ीज़िया:1/75)

ताज़िया दारी जैसा कि बद् मज़्हब करते हैं बिदअत है। और ऐसें ही ताबूत, क़ब्रों की सूरत और अलम वग़ैरा यह भी बिदअ़त है और ज़ाहिर है कि बिदअ़ते सैय्यिह है।

और तहरीर फरमाते हैं:

*"ईं चोबहा कि साख़्ता ऊस्त क़ाबिले ज़ियारत नेस्तंद बल्कि क़ाबिले इज़ाला अंद चुनांचे दर हदीस शरीफ आमदा:*

من رای منکم منکرافلیغیره بیده فان لم یستطع فبلسانه فان لم یستطع فبقلبه وذالك اضعف الایمان۔رواه مسلم

(फतावा अज़ीज़िया:1/76)

यह ताज़िया जोकि बनाया जाता है ज़ियारत के क़ाबिल नहीं है बल्कि इस क़ाबिल है कि इसे नीस्त व नाबूद किया जाए जैसा कि हदीस शरीफ में आया है कि तुम में से जो शख़्स कोई बात ख़िलाफे शरअ़ देखे तो उसे अपने हाथ से ख़त्म करे और अगर हाथ से ख़त्म करने की कुद्रत न हो तो ज़बान से मना करे और अगर ज़बान से भी मना करने की कुद्रत न हो तो दिल से बुरा जाने और यह सब से कमज़ोर ईमान है।

किसी तरह ताज़िया दारी की मदद करना कैसा है?

इस सवाल के जवाब में तहरीर फरमाते हैं:

*"ईं हम जाइज़ नीस्त चिरा कि इआनत बर मअ्सियत मी शवद व इआनत बर मअ्सियत ग़ैर जाइज़।"*

(फतावा अज़ीज़िया:1/77)

यह भी जाइज़ नहीं है इस लिये कि गुनाह पर मदद है और गुनाह पर मदद करना ना जाइज़ है।

## आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी

### रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह

ताज़िया की असल इस क़द्र थी कि रौज़ए पूर नूर हुज़ूर शहज़ादए गुलगूं कुबा हुसैन शहीदे ज़ुल्मो-जफा सलवातुल्लाहि तआ़ला व सलामहू अला जद्दिहिल् करीम व अलैहि की सहीह नक़ल बना कर ब नियते तबर्रुक मकान में रखना, इस में शरअ़न कोई हरज न था। कि तस्वीर मकानात वग़ैरहा हर ग़ैर जानदार की बना कर रखना सब जाइज़ और ऐसी चीज़ें कि मुअज़्ज़िमाने दीन की तरफ मंसूब हो कर अज़मत पैदा करें, उन की तमूसाल ब नियते तबर्रुक पास रखना क़तअ़न जाइज़ जैसे सदूहा साल से तबक़न् फतबक़न् अइम्मए दीन व उलमाए मोअ्तमदीन नअ्लैन शरीफैन हुज़ूर सैयिदुल कौनैन सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के नक़्शे बनाते और उन के फवइदे जलीला व मनाफेए जज़ीला में मुस्तक़िल रिसाले तस्नीफ फरमाते हैं। इश्तिबाह हो इमाम अल्लामा तिलमसानी की फत्हुल मुतआ़ल वग़ैरा मुतालेआ़ करे। मगर जहां बेख़िरद ने इस अस्ले जाइज़ को बिल्कुल नीस्त व नाबूद करके सदूहा खुराफात तराशीं कि शरीअ़ते मुतह्हरा से अल्-अमान वल्-हफीज़ की सदाएं आईं। अव्वत तो नक़्शे तअ्ज़िया में रौज़ए मुबारक की नक़ल मलहूज़ न रही, हर जगह नई तराश नई गढ़त जिसे उस नक़ल से कुछ इलाक़ा न निस्बत। फिर किसी में परियां किसी में बुराक़ किसी में और बेहूदा तमतराक़, फिर कूचा बकूचा व दस्त बदस्त इशाअ़ते ग़म के लिये उन का गश्त और उन के गिर्द सीना ज़नी और मातम साज़ी की शोर

अफ्गानी, कोई उन तस्वीरों को झुक-झुक कर सलाम कर रहा है, कोई मश्गूले तवाफ़, कोई सज्दा में गिरा है, कोई इन मायए बिद्आत को मआज़ल्लाह जल्वागाहे हज़रत इमाम अ़ला जद्दिही व अलैहिस्सलातु वस्सलाम समझ कर उस अबरक पन्नी से मुरादें मांगता, मन्नतें मानता है, हाजत रवा जानता है। फिर बाक़ी तमाशे बाजे ताशे मर्दो, औरतों का रातों को मेल और तरह-तरह के बेहूदा खेल इन सब पर तुर्रा हैं।

ग़रज़ अशरए मुहर्रमुल हराम कि अगली शरीअ़तों से इस शरीअ़ते पाक तक निहायत बा बरकत व महल्ले इबादत ठहरा हुआ था, इन बेहूदा रुसूमात ने जाहिलाना और फासिक़ाना मेलों का ज़माना कर दिया। फिर वबाले इब्तिदाअ् का वह जोश हुआ कि ख़ैरात को भी बतौर ख़ैरात न रखा, रिया व तफाख़ुर अलानिया होता है। फिर वह भी यह नहीं कि सीधी तरह मोहताजों को दें बल्कि छतों पर बैठ कर फेंकेंगे। रोटियां ज़मीन पर गिर रही हैं, रिज़्क़े इलाही की बेअदबी होती है। पैसे रेते में गिर कर ग़ाइब होते हैं, माल की इज़ाअ़त हो रही है मगर नाम तो हो गया कि फ़ुलां साहब लंगर लुटा रहे हैं।

अब बहारे अशरा के फूल खिले, ताशे, बाजे बजते चले, तरह-तरह के खेलों की धूम बाज़ारी, औरतों का हर तरफ हुजूम, शहवानी मेलों की पूरी रुसूम, जशन यह कुछ और इस के साथ ख़्याल वह कुछ कि गोया यह साख़्ता तस्वीरें बिऐनिहा हज़राते शुहदा रिज़्वानुल्लाहि तआ़ला अलैहिम के जनाज़े हैं। कुछ नोचा उतार बाक़ी तोड़ ताड़ दफन कर दिये। यह हर साल इज़ाअ़ते माल के जुर्म व वबाले जुदागाना रहे। अल्लाह तआ़ला सदक़ा हज़रात शुहदाए करबला अलैहिमुर् रिज़्वान वस्सना का हमारे भाइयों को नेकियों की तौफीक़ बख़्शे और बुरी बातों से तौबा अता फरमाए। आमीन

अब कि ताज़िया दारी इस तरीक़ए ना मरज़िय्या का नाम है क़तअ़न बिद्अ़त व ना जाइज़ व हराम है। हां अगर अहले इस्लाम जाइज़ तौर पर हज़रात शुहदाए किराम अलैहिमुर् रिज़्वान की अरवाहे

तैयिबा को ईसाले सवाब की सआदत पर इख़्तिसार करते तो किस क़द्र ख़ूब व महबूब था। और अगर नज़रे शौक़े व मुहब्बत में नक़ल रौज़ए अनवर की भी हाजत थी तो उसी क़द्र जाइज़ पर क़नाअत करते कि सहीह नक़ल बग़रज़ तबर्रुक व ज़ियारत अपने मकानों में रखते और इशाअते ग़म व तसन्नुअ् अलम व नौहा व मातम कुनी व दीगर उमूरे शनीआ व बिद्आते क़तइय्या से बचते, इस क़द्र में भी कोई हरज न था। मगर अब इस नक़ल में भी अहले बिदअत से एक मुशाबहत और तअ्ज़िया दारी की तोहमत का ख़दशा और आइन्दा अपनी औलाद या अहले ऐतिक़ाद के लिये इब्तिलाए बिद्आत का अंदेशा है और हदीस में आया है: اتقوا مواضع التهم और वारिद हुआ من كان يومن بالله واليوم الاخر فلايقفن مواقف التهم

लिहाज़ा रौज़ए अक़्दस हुज़ूर सैयिदुश शुहदा की ऐसी तस्वीर भी न बनाएं बल्कि सिर्फ़ काग़ज़ के सहीह नक़्शे पर क़नाअत करे। और उसे बक़स्दे तबर्रुक बे आमेज़िश मन्हिय्यात अपने पास रखे। जिस तरह हरमैन मोहतरमैन से कअ्बए मोअज़्ज़मा और रौज़ए आलिया के नक़्शे आते हैं। या दलाइलुल ख़ैरात शरीफ में क़ुबूर पुर नूर के नक़्शे लिखे हैं। والسلام على من اتبع الهدى والله تعالى وسبحانه اعلم۔

(इआलियल इफादतु फी तअ्ज़ियतिल हिन्द व बयानिश शहादतः3)

और तहरीर फरमाते हैं:

तअ्ज़िया मम्नूअ् है, शरअ् में कुछ अस्ल नहीं। और जो कुछ बिद्आत इन के साथ की जाती हैं सख़्त ना जाइज़ हैं। तअ्ज़िया पर जो मिठाई चढ़ाई जाती है अगर्चे हराम नहीं हो जाती मगर उस के खाने में जाहिलों की नज़र में एक अम्र ना जाइज़ की वक़अत बढ़ाने और उस के तरक में उस से नफरत दिलानी है। लिहाज़ा न खाई जाए। ढोल बजाना हराम है। तअ्ज़िया की तअ्ज़ीम बिद्अत। तअ्ज़िया बनाना ना जाइज़ है। (फतवा रज़विय्यहः10/189, 3/258, 6/186)

## हज़रत सदरुश शरीआ़ अल्लामा अमजद अली साहब रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह, मुसन्निफ बहारे शरीअ़त

ताज़िया दारी के वाक़िआ़त करबला के सिलसिले में तरह-तरह के ढांचे बनाते हैं और उन को हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के रौज़ए पाक की शबीह कहते हैं, कहीं तख़्त बनाए जाते हैं, कहीं ज़रीह बनती है और अलम और शद्दे (झण्डे) निकाले जाते हैं, ढोल, तोशे, क़िस्म-क़िस्म के बाजे बजाए जाते हैं। तअ़्ज़ियों का बहुत धूम धाम से गश्त होता है। आगे पीछे होने में जाहिलिय्यत के से झगड़े होते हैं, कभी दरख़्त की शाख़ें की शाख़ें काटी जाती हैं, कभी चबूतरे खुदवाए जाते हैं। तअ़्ज़ियों से मिन्नतें मानी जाती हैं, सोने चांदी के अलम चढ़ाए जाते हैं। हार फूल नारियल चढ़ाए जाते हैं। वहां जूते पहन कर जाने को गुनाह जानते हैं बल्कि इस शिद्दत से मना करते हैं कि गुनाह पर भी ऐसी मुमानअ़त नहीं करते। छतरी लगाने को बहुत बुरा जानते हैं। तअ़्ज़ियों के अन्दर दो मस्नूई क़ब्रें बनाते हैं, एक पर सब्ज़ ग़िलाफ, और दूसरी पर सुर्ख़ ग़िलाफ डालते हैं, सब्ज़ ग़िलाफ वाली को हज़रत सैयिदना इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की क़ब्र और सुर्ख़ ग़िलाफ वाली को हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की क़ब्र या शबीहे क़ब्र बताते हैं और वहां शर्बत मालीदा वग़ैरा पर फातेहा दिलवाते हैं। यह तसव्वुर करके कि हज़रत इमाम आली मक़ाम के रौज़ा और मुवाजहे अक़्दस फातेहा दिला रहे हैं।

फिर यह ताज़िये दस्वीं तारीख़ को मस्नूई करबला में जा कर दफन करते हैं। गोया यह जनाज़ा था जिसे दफन कर आए, फिर तीजा, दसवां, चालीसवां सब कुछ किया जाता है और हर एक खुराफात पर मुश्तमिल होता है। हज़रत क़ासिम रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की मेहन्दी निकालते हैं गोया उन की शादी हो रही है और मेहन्दी रचाई जाएगी। और इसी ताज़िया दारी के सिलसिले में कोई पैक बनता है जिस के कमर से घुंघरू बंधे हुए होते हैं गोया यह हज़रत इमाम आली मक़ाम

का क़ासिद और हरकारा है जो यहां से ख़त लेकर इब्ने ज़ियाद या यज़ीद के पास जायेगा और वह हरकारों की तरह भागा फिरता है। किसी बच्चा को फक़ीर बनाया जाता है, उस के गले में झोली डालते और घर-घर उस से भीक मंगवाते हैं, कोई सक़्क़ा (पानी पिलाने वाला) बनाया जाता है, छोटी सी मश्क उस के कंधे से लटकती है, गोया यह दरियाए फुरात से पानी भर लाएगा। किसी अलम पर मश्क लटकती है और उस पर तीर लगा हुआ होता है, गोया कि यह हज़रत अब्बास अलमदार हैं कि फुरात से पानी ला रहे हैं, और यज़ीदियों ने मश्क को तीर से छेद दिया है। इसी क़िस्म की बहुत सी बातें की जाती हैं। यह सब लग्व व खुराफात हैं। इन से हरगिज़ हज़रत सैयिदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु खुश नहीं। यह तुम खुद ग़ौर करो कि उन्हों ने ऐहयाए दीन व सुन्नत के लिये यह जबर्दस्त कुर्बानियां कीं और तुम ने मआज़ल्लाह इस को बिद्अत का ज़रिया बना लिया।

बाज़ जगाह इसी तअ्ज़िया दारी के सिलसिले में बुराक़ बनाया जाता है जो अजब क़िसम का मुजस्समा होता है कि कुछ हिस्सा इंसानी शक्ल का होता है और कुछ हिस्सा जानवर का सा। शायद यह हज़रत इमाम आली मक़ाम की सवारी के लिये एक जानवर होगा। कहीं दुलदुल बनता है, कहीं बड़ी-बड़ी क़ब्रें बनती हैं। बाज़ जगह आदमी रीछ बंदर लंगूर बनते हैं। और कूदते फिरते हैं, जिन को इस्लाम तो इस्लाम इंसानी तहज़ीब भी जाइज़ नहीं रखती। ऐसी बुरी हरकत इस्लाम हरगिज़ जाइज़ नहीं रखता। अफ्सोस कि मुहब्बत अहले बैते किराम का दावा और ऐसी बेजा हरकतें। यह वाक़िआ तुम्हारे लिये नसीहत था और तुम ने उस को खेल तमाशा बना लिया।

इसी सिलसिले में नौहा व मातम भी होता है और सीना कोबी होती है, इतने ज़ोर-ज़ोर से सीना कूटते हैं कि वर्म हो जाता है, सीना सुर्ख़ हो जाता है बल्कि बाज़ ज़ंजीरों और छुरियों से मामत करते हैं कि सीने से ख़ून बहने लगता है। तअ्ज़ियों के पास मरसिया पढ़ा जाता है और तअ्ज़िया जब गश्त को निकलता है, उस वक़्त भी उस के आगे

मरसिया पढ़ा जाता है, मरसिया में ग़लत वाक़िआत नज़्म किये जाते हैं। अहले बैत किराम की बेहुर्मती और बेसब्री और जज़अ़ व फज़अ़ का ज़िक्र किया जाता है और चूंकि अक्सर मरसिया राफ़ज़ियों ही के हैं, बाद में तबर्रा भी होता है मगर इस रौ में सुन्नी भी इसे बेतकल्लुफ पढ़ जाते हैं और उन्हें इस का ख़्याल भी नहीं होता कि क्या पढ़ रहे हैं। यह सब नाजाइज़ और गुनाह के काम हैं। (बहारे शरीअ़त:16/247-248)

# एक फतावा मअ़ तस्दीक़ाते उलमाए अहले सुन्नत

(यह फतावा मअ़ तस्दीक़ात 1388 में बशकल पोस्टर शाए हो चुके हैं)

**सवाल नं0 1-** (अलिफ): मुरव्वजा ताज़िया दारी जाइज़ है या ना जाइज़? (बा): अलम और शद्दे (झण्डे) निकालना नीज़ ताज़िया को शबे आशूरा गली कूचा में गश्त कराना फिर उसे दसवीं मुहर्रम को मस्नूई (बनावटी) करबला में ले जाकर दफन करना, पहली मुहर्रम से ढोल व ताशा बजाना फिर आशूरा के दिन ताज़िया के आगे-आगे बाजा बजाते हुए उसे मस्नूई करबला तक ले जाना शरअ़न कैसा है? नीज़ ताजिया दारी, अलम और शद्दे (झण्डे) की अस्ल क्या है?

**सवाल नं0 2-** ढोल, ताशे और शुद्दे वग़ैरा को मस्जिद या फिनाए मस्जिद में रखना शरअ़न कैसा है? नीज़ मस्जिद या फिनाए मस्जिद में रखे हुए ढोल, ताशे, अलम और शुद्दे को बाहर निकाल कर फेंक देने वाला शरअ़न मुजरिम होगा या नहीं? بینوا توجروا *बय्यिनू तूजरू*

**जवाब नं0 1:-** (अलिफ) ताज़िया दारी मुरव्वजा हिन्द ना जाइज़ व बिद्अ़ते सैय्यिअह व हराम है। والتفصیل فی اعالی الافادة واللہ تعالی اعلم

(बा) यह सब ना जाइज़ व हराम, क़ातिले अहले इस्लाम और जब यह ना जाइज़ और हराम हैं तो इन की अस्ल क्या हो सकती है? हां अगर साइल की मुराद यह हो कि यह किस की नक़ल है, जिस की नक़ल हो उस की अस्ल क़रार दी जाए तो नज़रे ग़ाइर में ऐसा मालूम होता है कि अलम और शुद्दे जो नेज़ों और झण्डों की शकल में होते हैं ग़ालिबन यज़ीदी फौज के उस फेअ़्ल की नक़ल है जो उन्हों ने करबला

में जुल्मो- जफा के पहाड़ तोड़ने के बाद इमाम आली मक़ाम का सरे मुबारक नेज़ों पर कूफा की गलियों में बतौरे शादियाना व मुबारकबादी घुमाया था। واللہ تعالی اعلم, *वल्लाहु तआला अअ्लम।*

**जवाब नं0 2:-** यह वाहियात व ख़ुराफात चीज़ें सब ना जाइज़ हैं तो जहां भी रखें ना जाइज़ ही हैं। और मस्जिद या फिनाए मस्जिद में बदर्जए औला ना जाइज़ और इन चीज़ों को मस्जिद से निकाल कर फेंकने वाला सवाब पाएगा, क्यों कि उस ने ना जाइज़ चीज़ को दफअ् किया और हदीस من رای منکم منکرا الخ पर अमल किया। واللہ تعالی اعلم ثم رسولہ صلی اللہ علیہ وسلم

**मुहम्मद अहमद जहांगीर ख़ां** गुफिर लहू व लिअबवैहिल मन्नान

मुफ्ती मरकज़ अहले सुन्नत, मंज़रे इस्लाम, बरेली शरीफ

## तस्दीक़ात मज़हरे इस्लाम बरेली शरीफ

1- *अल्-जवाबु सहीहुन* --मुहम्मद मुस्तफा रज़ा ख़ां (मुफ्तिए आज़म हिन्द)

2- *लक़द असाब मन अजाब* -- क़ाज़ी मुहम्मद अब्दुर रहीम बस्तवी

3- *सह्हल् जवाब* -- तहसीन रज़ा गुफिर लह

4- *अल्-जवाबु सहीहुन* -- मुहम्मद आज़म

5- *अल्-जवाबु सहीहुन* -- मुज़फ्फर हुसैन गुफिर लहू

## मंज़रे इस्लाम बरेली शरीफ

6- *अल्-जवाबु सहीहुन* -- मुफ्ती सैयद मुहम्मद अफज़ल हुसैन गुफिर लहू

7- *सह्हल् जवाब* -- मुहम्मद एहसान अली उफिया अन्हु मुज़फ्फर पुरी

8- *अल्-जवाबु सवाब* -- गुलाम मुज्तबा अशरफी

9- *अल्-जवाब हुवल् जवाब* -- सैयद मुहम्मद आरिफ रज़वी नानपारवी

10- *अल्-जवाबु सहीहुन वल्-मुजीबु नजीहुन्* -- ख़लीलुर रहमान रज़वी

11- *अल्-जवाबु सहीहुन* -- मुहम्मद फैज़ अहमद उफिय अन्हु सिद्दीक़ी

12- *अल्-जवाबु सहीहुन* -- मुहम्मद उमर क़ादरी ओझा गंजवी बस्तवी

## जबल पुर

13- हिन्दुस्तान की मुरव्वजा ताज़िया दारी बिला शुब्हा बिद्अ़त व

मम्नूआत का एक ऐसा मजमूआ है कि उस की जितनी मज़म्मत की जाए कम है। उलमाए वाइज़ीन मुक़र्रिरीन, मशाइख़े तरीक़त और सज्जादा नशीन हज़रात को अमली तौर पर अपने-अपने हलक़ए असर में ادع الى سبيل ربك بالحكمة والموعظة الحسنة وجادلهم بالتى هى احسن और ادفع بالتى هى احسن السيئة के तरीक़े से काम लेकर आहिस्ता-आहिस्ता मुरव्वजा तअ्ज़ियादारी की बिद्आत व ममनूआत व मुहर्रमाते शरइय्यह को मिटाने की कोशिश करे। मुफ्ती साहब का यह जवाब बिल्कुल हक़ व सवाब और वाजिबुल अमल बिला इरतियाब है। *वहुव तआ़ला अअ्लम*

**कतबहू फक़ीर अब्दुल बाक़ी मुहम्मद बुरहानुल**

*अल्-क़ादरी अर-रज़वी अस्सलामी गुफिर लहू*

## मुम्बई

14- *अल्-जवाबु सहीहुन व सवाबुन् वल्-फाज़िलुल मुजीब मुसीबुन् व मसाबुन्*------ फक़ीर अबुल हसनैन आले मुस्तफा

अल्क़ादरी अल्बरकाती अन्नूरी गुफिर लहू

15- *अल्-जवाबु सहीहुन्* -- अस्सैयद हामिद अशरफ

अल्-अशरफी अल्-जीलाी (कछौछवी)

16- *अल्-जवाबु सहीहुन्* -- मुईनुद्दीन दानिश अमीन गुफिर लहू टोंकी

17- *अल्-जवाबु हक़्कुन* -- ख़ादिम मुहम्मद सलीम गुफिर लहू रज़वी

## मुल्तान - पाकिस्तान

18- *अल्-जवाबु सहीहुन्* -- फकीर मुहम्मद हसन अली अर-रज़वी अल्-क़ादरी गुफिर लहू ख़ामिद मदरसा ग़ौसिया अनवारे रज़ा मेलसी मुल्तान

## जावरा - ज़िला रतलाम

19- *अल्-जवाबु सहीहुन व सवाबुन -- वल्लाहु व रसूलुहू अअ्लम जल्ल जलालहू व सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम*

फक़ीर अबुत ताहिर मुहम्मद तय्यब अली क़ादरी गुफिर लहू मुफ्तिए शहर जावरा (रतलाम)

## मुरादाबा

20- ताज़िया, अलम और शुद्दे की अस्ल के मुतअ़ल्लिक़ अ़दमे तहक़ीक़

की बिना पर मैं ख़ामोश व साकित हूं और *वल्लाहु तआला अअ्लम बिस् सवाब* कहर कर गुज़र जाता हूं। इस के अलावा जवाब में तहरीर करदा उमूर के साथ मुझे पूरा-पूरा इत्तिफाक़ है। जवाबात सहीह हैं।
अल्-अब्दुल मुज़निब मुहम्मद हबीबुल्लाह गुफिर लहू नईमी अल्-अशरफी

21- *अल्-जवाबु सहीहुन* -- मुहम्मद यूनुस उफिय अन्हु
(मोहतमिम जामिआ नईमिया)

22- *मा अजाबल मुजीब फहुस् सहीह* -- अल्-फक़ीर मुहम्मद अय्यूब ख़ां
अल्-हबीबी अन्-नईमी

23- *अल्-जवाबु सहीहुन्*-- मुहम्मद तरीकुल्लाह ख़ादिम जामिआ नईमिया

24- *अल्-जवाबु सहीहुन्*-- अल्-अब्द मुहम्मद हाशिम गुफिर लहू।

25- *अल्-जवाबु सहीहुन् व सवाबुन्* -- अब्दुल हकीम मुहम्मदी
क़ादरी नईमी गुफिर लहू

## मालवा - इन्दौर

26- *लक़द असाब मन् अजाब--वल्लाहु सुब्हानहू तआला अअ्लम बिस्सवाब*-- मुहम्मद रिज़वानुर रहमान अल्-फारूक़ी मुफ्ती मालवा

## मुज़फ्फर पुर - बिहार

27- *अल्-जवाबु सहीहुन्* -- मुहम्मद मुतीउर रहमान नूरी
मदरसा नूरुल हुदा पुखरेरा

28- *अल्-जवाबु सहीहुन् बिला इरतियाब* --
मुहम्मद मुशताक़ अहमद गुफिर लहू बाथवी

29- *अल्-जवाबु सहीहुन् व सवाबुन्* -- मुहम्मद अतहर हुसैन बाथवी

## नागपुर

30- *अल्-जवाबु मुसीबुन्* -- मुहम्मद अब्दुर रशीद गुफिर लहू (मुफ्तिए जामिआ)

31- *अल्-जवाबु सहीहुन्* -- मुहम्मद अब्दुल हफीज़ गुफिर लहू

32- *अल्-जवाबु व सवाबुन्*-- अबुल मजद मुहम्मद ज़ैनुल आबिदीन गुफिर लहू

33- *अल्-जवाबु सहीहुन्* -- मुहम्मद अब्दुल हकीम रज़वी अशरफी

34- *अल्-जवाबु सहीहुन्* -- मुहम्मद शफी रज़वी गुफिर लहू

## मुबारक पुर - ज़िला आज़मगढ़

35- *अल्-जवाबु सहीहुन्* -- अब्दुल अज़ीज़ उफिय अन्हु सदरुल मुदर्रिसीन अशरफिया

36- *अल्-जवाबु सहीहुन्* -- अब्दुर रऊफ गुफिर लहू मुदर्रिस अशरफिया

37- *अल्-जवाबु सहीहुन्* -- अब्दुल मन्नान आज़मी (मुफ्ती अशरफिया)

38- *सहहल् जवाब* -- मुहम्मद यहया गुफिर लहू ख़ादिम दारुल उलूम अशरफिया

## अमरोहा - ज़िला मुरादाबाद

39- *अल्-जवाबु सहीहुन् मअ़ साइरि फुरूइहा वल्-मुजीबु मुसाबुन्*--
फक़ीर मुहम्मद ख़लील काज़मी उफिय अन्हु अमरोहवी

## राय बरेली

40- *अल्-जवाबु सहीहुन्* -- अब्दुत तव्वाब सिद्दीक़ी पक्सरावां, राय बरेली

## कछौछा शरीफ

41- अहले सुन्नत व जमाअ़त के नज़दीक ताज़िया दारी कह कर जिन मरासिम को मुराद लिया जाता है उन के मुन्करात अम्रे मुन्कर ही हैं, मसलन इज़ाअ़त माले मुस्लिम व अस्बाबे तअ़य्युश व तफ्रीह ब बयान मक्ज़ूबात व औहामें फासिदा वग़ैर ज़ालिक और यह वह मुन्करात हैं जिन का मुन्कर होना मन्सूस है। नीज़ मस्जिद व फिनाए मस्जिद को हर तरह के तअय्युश व तफ्रीह से पाक रखना ज़रूरी है।

*वल्लाहु अअ़्लम बिस्सवाब।*

सैयद मुहम्मद मुख़्तार अशरफ सज्जादा नशीन कछौछा शरीफ

42- *अल्-जवाबु सहीहुन्* -- सैयद मुज़फ्फर हुसैन कछौछवी।

## टांडा - ज़िला फैज़ाबाद

43- *अल्-जवाबु सहीहुन्* -- अब्दुल अज़ीज़ अशरफी उफिय अन्हु

44- *अल्-जवाबु सहीहुन्* -- फक़ीर मुहम्मद तय्यब ख़ां गुफिर लहू
मुदर्रिस मदरसा मंज़रे हक़

45- *अल्-जवाबु सहीहुन्* -- मुहम्मद अय्यूब क़ादरी उफ़िय अन्हु

46- *अल्-जवाबु सहीहुन् व सवाबुन्* — मुहम्मद कुदरतुल्लाह आरिफ रज़वी

## इलतेफात गंज - ज़िला फैज़ाबाद

47- *अल्-जवाबु सहीहुन्* -- अब्दुर रऊफ अशरफी

48- *अल्-जवाबु सहीहुन्* -- अहक़र अब्दुल मतीन दुलमौवी

49- *अल्-जवाबु सहीहुन्* -- मुहम्मद जमील अहमद अलयार अलवी शमीम बस्तवी

50- *अल्-जवाबु सहीहुन्* -- मुहम्मद समीअ् क़ादरी अलयार अलवी

## बलराम पुर - ज़िला गोंडा

51- *अल्-जवाबु सहीहुन् वल्लाहु तआला अअ्लम* -- मुहम्मद शरीफुल हक़ अमजदी जामिआ अरबिया अनवारुल कुरआन बलराम पुर।

## अमरडोभा - बस्डेला ज़िला बस्ती

52- *अल्-जवाबु सहीहुन्* -- अल्अब्द सख़ावत अली उफ़िय अन्हु
तनवीरुल इस्लाम

53- *अल्-जवाबु सहीहुन्* -- निज़ामुद्दीन उफिय अन्हु

54- *अल्-जवाबु सहीहुन्* -- मुहम्मद अबुल लैस उफिय अन्हु

55- *अल्-जवाबु सहीहुन्* -- मुहम्मद ज़हूर अहमद रज़वी उफिय अन्हु

56- *अल्-जवाबु सहीहुन्* -- अब्दुश शकूर मुदर्रिस तदरीसुल इस्लाम बस्डेला

57- *अल्-जवाबु हक़्कुन* -- मुहम्मद इस्माईल अतहर बस्तवी

## बराउं शरीफ - ज़िला बस्ती

58- *अल्-जवाबु सहीहुन्* -- मुहम्मद सिद्दीक़ अहमद सज्जादा नशीन
आस्ताना आलिया यार अलविया

59- *अल्-जवाबु सहीहुन्* -- गुलाम जीलानी उफिय अन्हु
(शैखुल हदीस फैजुर रसूल)

60- *अल्-जवाबु सहीहुन्* -- बदरुद्दीन अहमद अल्क़ादरी रज़वी

61- *अल्-जवाबु सहीहुन्* -- मुहम्मद यूनुस नईमी अशरफी

62- *क़द सह्हल् जवाब* -- अबुल बरकात अल्-अब्द मुहम्मद नईमुद्दीन अहमद उफ़िय अन्हु

63- *लक़द असाब मन् अजाब* -- जलालुद्दीन अहमद अमजदी

64- *अल्-जवाबु हक़्क़ुन व सवाबुन* -- मुहम्मद साबिर क़ादरी नसीम बस्तवी

65- *अल्-जवाबु सहीहुन्* -- अली हसन नईमी अशरफी

66- *अल्-जवाबु सहीहुन्* -- मुहम्मद हनीफ क़ादरी

67- *अल्-जवाबु सहीहुन्* -- मुहम्मद मोहसिन चिश्ती यारअलवी

68- *अल्-जवाबु सहीहुन्* -- नूर मुहम्मद क़ादरी औझा गंजी

69- जवाब सहीह है -- मुहम्मद नूरुल हक़ ख़ादिम हज़रत शाह साहब क़िब्ला

## भाव पुर - ज़िला बस्ती

70- *अल्-जवाबु सहीहुन्* -- अल्अब्द मुहम्मद हलीम क़ादरी यारअलवी

71- *अल्-जवाबु हक़्क़ुन* -- मुहम्मद समीउल्लाह क़ादरी

72- *अल्-जवाबु सहीहुन्* -- अब्दुल जब्बार क़ादरी

73- *अल्-जवाबु सहीहुन्* -- अब्दुल जब्बार क़ादरी चरखवी

## बढ़या - ज़िला बस्ती

74- *अल्-जवाबु सहीहुन्* -- मुहम्मद सिद्दीक़ क़ादरी नेपाली

75- *अल्-जवाबु सहीहुन्* -- अब्दुल जब्बार अशरफी मवी

---

खुदाए अज़्ज़ व जल्ल मुसलमानों को हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मक़्सदे शहादत को समझने और मुहर्रम की जुमला बिद्आत व खुराफात से बचने की तौफीक़े रफीक़ बख़्शे आमीन

وصلی اللہ تعالی وسلم علی النبی الکریم وعلی الہ واصحابہ وازواجہ واھل بیتہ اجمعین

برحمتك یاارحم الراحمین۔

*वसल्लल्लाहु तआला व सल्लम अलन्नबिय्यिल करीमि व अला आलिही व अस्हाबिही व अज़्वाजिही व अहलि बैतिही अज्मईन, बिरह मतिक या अरहमर राहिमीन।*

# हालाते मुसन्निफ (बक़लम ख़ुद)

**पैदाइशः**- 1352 हि0 मुताबिक़ 1933 ई0 में ज़िला बस्ती (यू0पी0) की मशहूर आबादी ओझा गंज में मेरी पैदाइश हुई जो शहरे बस्ती से 20 किलो मीटर पच्छिम फैज़ाबाद रोड पर महराज गंज से 3 किलो मीटर दक्खिन है।

**नाम व नसबः**-जलालुद्दीन अहमद बिन जान मुहम्मद बिन अब्दुर रहीम बिन ग़ुलाम रसूल बिन ज़ियाउद्दीन अहमद बिन मुहम्मद सालिक बिन मुहम्मद सादिक़ बिन अब्दुल क़ादिर बिन मुराद अली। *ग़फरल्लाहु तआला लहुम् वलि साइरिल मुस्लिमीन।*

**ख़ानदानी हालातः**-आख़िरुज़ ज़िक ज़िला फैज़ाबाद कछौछा मुक़द्दसा के क़रीब बड़हड़ इलाक़ा के मशहूर व मारूफ राजपूत ख़ानदान के एक फर्द थे जो मुराद सिंह के नाम से याद किये जाते थे, वह इस्लाम की ख़ूबियों से मुतअस्सिर होकर ईमान की दौलत से सरफ़राज़ हुए तो मुराद अली कहलाए। ख़ानदान वालों ने दबाव डाल कर इस्लाम से बरगश्ता करना चाहा तो आबाई वतन छोड़ कर ज़िला फैज़ाबाद अकबर पुर के क़रीब क़स्बा शहज़ाद पुर में सुकूनत इख़्तियार कर ली। उन की औलाद में से ज़ियाउद्दीन मरहूम शहज़ाद पुर छोड़ कर ओझा गंज ज़िला बस्ती में आकर आबाद हो गए।

मेरे वालिद जान मुहम्मद मरहूम अरसए दराज़ तक अपने घर फी सबीलिल्लाह बच्चों को मज़्हबी तालीम देते रहे। ज़िंदगी भर बिला तंख़्वाह जामा मस्जिद में नमाज़े पंजगाना और जुमा व ईदैन की इमामत फरमाते रहे, बड़े मुत्तक़ी व परहेज़गार थे। आज भी आबादी के लोग उन के तक़्वा व परहेज़गारी को याद करते हैं और उन का तज़्किरा बड़े ऐहतिराम से करते हैं। 20 ज़िल हिज्जा 1370 हि0 मुताबिक़ 1951 ई0 को मेरे आलिम होने से 8 माह क़ब्ल उन का इन्तेक़ाल हो गया।

वालिदए मोहतरमा बीबी रहमतुन निसा एक दीन दार घराने की

लड़की थीं। नमाज़ और सुबह तिलावते कुरआन मजीद की बहुत पाबंद थीं। दुआए गंजुल अर्श उन को ज़बानी याद थी जिसे वह रोज़ाना पढ़ा करती थीं। 14 जुमादल ऊला 1399 हि0 मुताबिक़ 12 अप्रैल 1979 ई0 को मैं उन के भी ज़ाहिरी साये से महरूम हो गया --- ख़ुदाए अज़्ज़ व जल्ल उन की क़ब्रों पर रहमतो-अनवार के फूल बरसाए।

इन लोगों ने मेरी तालीम के बारे में जो आला किरदार पेश किया है इस ज़माने में उस की मिसाल मिलनी मुश्किल है कि मैं इन लोगों के बुढ़ापे का अकलौता बेटा था मगर पहली बार जब में नागपूर गया तो ढाई साल के बाद आया, इस दरमियान में इन लोगों ने मेरे पास घर आने के बारे में ख़त लिखना तो बड़ी बात है संदेसा तक न भेजा ताकि मेरी तामील का नुक़्सान न हो। *फजज़ाहुमल्लाहु तआला ख़ैरल् जज़ा।*

इस तसव्वुर से मेरी आंखें अश्कबार हो जाती हैं कि मेरे चार बेटे बक़ैदे हयात हैं मगर उन में से किसी की ढाई माह तक की जुदाई भी मेरे लिये शाक़ है तो मेरे वालिदैन ने बुढ़ापे के अकलौते बेटे की ढाई साल तक जुदाई किस दिल व जिगर के साथ बर्दाशत की होगी।

**<u>तहसीले इल्मः</u>**-नाज़िरा और हिफ्ज़े कुरआन की तालीम अपने वालिद के शागिर्द मक़ामी मौलवी मुहम्मद ज़करिया साहब मरहूम से हासिल की। सात साल की उम्र में कुरआन मजीद नाज़िरा ख़त्म किया। और 1363 हि0 मुताबिक़ 1944 ई0 यानी साढ़े दस साल की उम्र में हिफ्ज़ मुकम्मल कर लिया। फारसी आमद नामा ज़िला फैज़ाबाद इलतेफ़ात गंज के मौलाना अब्दुर रऊफ साहब से पढ़ी और फारसी की छोटी बड़ी बारह किताबों की तालीम शुऐबुल औलिया हज़रत शाह मुहम्मद यार अली साहब क़िब्ला रहमतुल्लाहि तआला अलैह के पीर ज़ादा मौलाना अब्दुल बारी साहब मरहूम से हासिल की और अरबी की इब्तिदाई किताबें उन्हीं से पढ़ीं।

1366 हि0 मुताबिक़ 1947 ई0 हंगामे के फौरन बाद मैं तहसीले इल्म के लिये नागपूर चला गया। दिन भर काम करता जिस से 25-30

रुपये माहाना अपने वालिदैन की ख़िदमत करता और अपने खाने पीने का इन्तेज़ाम भी करता और बाद मग़रिब अपने दस साथियों के हमराह तक़रीबन 12 बजे रात तक हज़रत अल्लामा अरशदुल क़ादरी साहब क़िब्ला दामत बरकातहुमुल आलिया से मदरसा इस्लामिया शमसुल उलूम बकरा मंडी मोमिन पुरा में दर्से निज़ामिया की तालीम हासिल करता और बाद नमाज़े फ़ज्र व अस्र एक क़ारी से क़िराअत पढ़ता रहा। इस तरह नागपूर में मेरी तालीम का सिलसिला जारी रहा।

24 शाबान 1371 हि0 मुताबिक़ 19 मई 1952 ई0 को 18 साल की उम्र में हज़रत अल्लामा अरशदुल क़ादरी साहब क़िब्ला दामत बरकातहुमुल कुदसिया ने दस साथियों के हमराह मुझे भी सनदे फ़राग़त अता फ़रमाई। इस तरह ओझा गंज की तारीख़ में हम सब से पहले क़ारी और फ़ारिगुत् तहसील आलिम हुए।

## ज़मानए तालिब इल्मी का एक अहम वाक़िआ

फ़ारिगुत् तहसील होने से दो साल क़ब्ल माहे रमज़ानुल मुबारक 1369 हि0 मुताबिक़ 1950 ई0 में हम नागपूर से तरावीह में कुरआन मजीद सुनाने के लिये डीसाई गंज वारसा ज़िला चांदा गए, वहां एक साहब जिन का नाम इस्माईल उमर सिपाही था, एक फ़र्म के मुलाज़िम थे, नमाज़ वग़ैरा के पाबंद थे और गुलसितां बोस्तां तक फ़ारसी पढ़े हुए थे, वह हमारी बड़ी क़दर करते थे। रमज़ानुल मुबारक के बाद वह अपने वतन धौरा जी (गुजरात) जाने वाले थे।

चूंकि उस ज़माने में नागपूर की कारोबारी हालत ठीक नहीं थी। दिन भर मेहनत से काम करने के बावजूद अपने इख़राजात के साथ वालिदैन की माहाना ख़िदमत करने में हमें दुश्वारी पेश आ रही थी, मैं बहुत परेशान था इस लिये इस्माईल उमर सिपाही के साथ अहमदाबाद जाने के लिये इस ख़्याल से तैयार हो गया कि मेरे यहां के बहुत से लोग वहां मिलों में काम करते हैं, मैं भी जा के किसी मिल में काम करूंगा।

ईद हो गई, हम अहमदाबाद का सफर करने के लिये निकल पड़े, नागपूर पहुंच कर हम ने अपना तमाम सामान अपने रफीक़े सफर इस्माईल उमर सिपाही के सुपुर्द करते हुए कहा कि आप स्टेशन चलें मैं अपने उस्तादे गिरामी हज़रत अल्लामा अरशुदल क़ादरी साहब क़िब्ला से मुलाक़ात करके आता हूं।

जब मैं हज़रत अल्लामा की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और उन को अपने इरादे से आगाह किया तो उन्हों ने फरमाया कि अहमदाबाद मत जाओ, जिस तरह भी हो सके यहीं रहो। पहले ज़माने में लोगों ने तहसीले इल्म के लिये बड़ी-बड़ी मशक़्क़तें झेली हैं और मुसीबतें बर्दाश्त की हैं अगर तुम मिल में जाकर काम करोगे तो जो कुछ तुम ने अब तक पढ़ा है सब बरबाद हो जाएगा, मिल मज़दूर और सिर्फ हाफिज जी होकर रह जाओगे। यह वाक़िआ उस ज़माने का है जबकि अहमदाबाद में दारुल उलूम शाह आलम क़ाइम नहीं हुआ था।

मैं ने हज़रत अल्लामा की नसीहत मान ली, अहमदाबाद जाने का इरादा दिल से बिल्कुल निकाल दिया और स्टेशन जाकर इस्माईल उमर सिपाही साहब से कहा आप जाइये मैं नहीं जाऊंगा। और फिर अपना सामान लेकर मैं वापस आ गया।

खुदावन्दे कुद्दूस का मैं लाख-लाख शुक्र अदा करता हूं कि उस ने मेरे दिल में उस्ताद का ऐसा ऐहतिराम बख़्शा कि मैं ने उन की इजाज़त के बग़ैर अहमदाबाद का सफर करना मुनासिब न समझा और फिर जो कुछ उन्हों ने इरशाद फरमाया उसे तस्लीम कर लिया। अगर मेरे दिल में उस्ताद का ऐसा ऐहतिराम न होता तो उन से मिले बग़ैर मैं चला जाता या अगर मुलाक़ात भी कर लेता तो जबकि मैं पूरा सामान स्टेशन पहुंचा चुका था उन की नसीहत पर अमल न करता तो बेशक आज मैं मिल मज़दूर होता, इस तरह मेरी ज़िंदगी तबाह व बरबाद हो जाती और वह हाल होता कि जिस के तसव्वुर से मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं और मैं कांप जाता हूं।

और अल्हम्दु लिल्लाह मैं उन लोगों में से नहीं हूं कि जब तक उस्ताद का मोहताज रहे उन की इज़्ज़त करे और जब किसी क़ाबिल हो जाए तो ग़द्दारी और बेवफाई पर उतर आए और अज़िय्यत पहुंचाए बल्कि आज भी मैं अपने असातिज़ा की बहुत इज़्ज़त करता हूं और उस्ताज़ी व शागिर्दी के रिश्ते को अहसन तरीक़े से निभाने की कोशिश करता हूं। हज़रत अल्लामा अरशदुल क़ादरी साहब क़िब्ला दामत बरकातहुमुल आलिया 17 सफरुल मुज़फ्फ़र 1401 हि0 मुताबिक़ 26 दिसम्बर 1980 ई0 के एक मक्तूब में ख़ादिम को मुख़ातब करते हुए तहरीर फरमाते हैं

> "कई सौ उलमा में सिर्फ तन्हा आप की ज़ात है जिस ने शागिर्दी और उस्ताज़ी का रिश्ता निभाया है और अब तक निभाह रहा है और नई नस्ल की खुद्र सरी, सरकशी और ऐहसान फरामोशी से खुदा की पनाह!"

**शर्फ़े बैअतः**- चूंकि मुझे शुरू ही से मसाइले शरइय्या जानने का बड़ा शौक़ था इस लिये इब्तिदा ही से बहारे शरीअत और उस के मुसन्निफ हज़रत सदरुश् शरीआ रहमतुल्लाहि तआला अलैह से मैं बड़ी अक़ीदत रखता था, फिर जब हज़रत अल्लामा अरशदुल क़ादरी साहब क़िब्ला दामत बरकातहुमुल कुद्दसिया से मालूम हुआ कि हज़रत सद्रुश् शरीआ अअ्ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ख़लीफा हैं तो 29 जुमादल ऊला 1367 हि0 मुताबिक़ 1948 ई0 में हज़रत से शर्फ़े बैअत हासिल किया और सिलसिलए रज़विया में दाख़िल हो गया। अल्बत्ता बाज़ मसालेह के पेशे नज़र मैं ने अब तक किसी से ख़िलाफत नहीं ली वरना साजिद अली ख़ां साहब किसी मक़सद से हुज़ूर मुफ्तिए आज़मे हिन्द क़िब्ला रहमतुल्लाहि तआला अलैह की जब ख़िलाफत आम तौर पर तक़सीम कर रहे थे मैं भी आसानी के साथ उन से हासिल कर लेता।

**आला हज़रत से अक़ीदतः**- आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा

और अल्हम्दु लिल्लाह मैं उन लोगों में से नहीं हूं कि जब तक उस्ताद का मोहताज रहे उन की इज़्ज़त करे और जब किसी क़ाबिल हो जाए तो ग़द्दारी और बेवफाई पर उतर आए और अज़िय्यत पहुंचाए बल्कि आज भी मैं अपने असातिज़ा की बहुत इज़्ज़त करता हूं और उस्ताज़ी व शागिर्दी के रिश्ते को अहसन तरीक़े से निभाने की कोशिश करता हूं। हज़रत अल्लामा अरशदुल क़ादरी साहब क़िब्ला दामत बरकातहुमुल आलिया 17 सफरुल मुज़फ्फ़र 1401 हि0 मुताबिक़ 26 दिसम्बर 1980 ई0 के एक मक्तूब में ख़ादिम को मुख़ातब करते हुए तहरीर फरमाते हैं

> "कई सौ उलमा में सिर्फ तन्हा आप की ज़ात है जिस ने शागिर्दी और उस्ताज़ी का रिश्ता निभाया है और अब तक निभाह रहा है और नई नस्ल की खुद सरी, सरकशी और ऐहसान फरामोशी से खुदा की पनाह!"

**शर्फे बैअतः-** चूंकि मुझे शुरू ही से मसाइले शरइय्या जानने का बड़ा शौक़ था इस लिये इब्तिदा ही से बहारे शरीअत और उस के मुसन्निफ हज़रत सदरुश् शरीआ रहमतुल्लाहि तआला अलैह से मैं बड़ी अक़ीदत रखता था, फिर जब हज़रत अल्लामा अरशदुल क़ादरी साहब क़िब्ला दामत बरकातहुमुल कुद्दसिया से मालूम हुआ कि हज़रत सद्रुश् शरीआ अअ्ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ख़लीफा हैं तो 29 जुमादल ऊला 1367 हि0 मुताबिक़ 1948 ई0 में हज़रत से शर्फे बैअत हासिल किया और सिलसिलए रज़विया में दाख़िल हो गया। अल्बत्ता बाज़ मसालेह के पेशे नज़र मैं ने अब तक किसी से ख़िलाफत नहीं ली वरना साजिद अली ख़ां साहब किसी मक़सद से हुज़ूर मुफ्तिए आज़मे हिन्द क़िब्ला रहमतुल्लाहि तआला अलैह की जब ख़िलाफत आम तौर पर तक़सीम कर रहे थे मैं भी आसानी के साथ उन से हासिल कर लेता।

**आला हज़रत से अक़ीदतः-** आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा

बरेलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह अगर्चे बहुत से उलूम व फ़ुनून के माहिर थे लेकिन उन में फक़ाहत का वस्फ़ सब से मुम्ताज़ है और मुझे फ़िक़ह से ज़्यादा शग़फ़ है इस लिये मैं आप से बहुत ज़्यादा अक़ीदत रखता हूं और आप के तहक़ीक़ी फ़तावा के मुतालिआ से रोज़ बरोज़ मेरी अक़ीदत बढ़ती जा रही है यहां तक कि मैं फ़ाज़िलीने फ़ैज़ुर रसूल और दीगर नौ जवान उलमा को नसीहत करता रहता हूं कि अपने ईमान व अमल को संवारने और हक़ीक़त में आलिमे दीन बनने के लिये आला हज़रत की तस्नीफ़ात का ज़्यादा से ज़्यादा मुतालेआ करें।

बहुत से लोग ऐसे भी हैं जो उन की अक़ीदत का दम भरते हैं लेकिन हिन्दुस्तान की मुरव्वजा तअ्ज़िया दारी हराम होने के मुतअल्लिक़ उन का फ़त्वा नहीं मानते। कुछ मज़ामीर के साथ क़व्वाली हराम होने के बारे में उनकी तहक़ीक़ नहीं तस्लीम करते और बाज़ वह हैं जो बात-बात पर अअ्ला हज़रत का नाम लेते हैं लेकिन ओझड़ी ना जाइज़ होने के मुतअल्लिक़ उनका फ़त्वा मानने से इनकार करते हैं मगर अल्हम्दु लिल्लाह मैं उन लोगों में से हूं कि उन की हर तहक़ीक़ को मानता हूं और उन के हर फ़त्वा पर सरे तस्लीम ख़म करता हूं। अल्बत्ता मैं इस दर्जे का अक़ीदत मन्द नहीं हूं कि सिर्फ़ उन्ही की लिखी हुई नअ्त शरीफ़ पसंद करूं बल्कि मैं हर उस नअ्त को पढ़ना और सुनना पसंद करता हूं कि जिस में कोई शरई ख़राबी न हो।

<u>तदरीस</u>:-फ़ारिग़ुत् तहसील होने से चन्द माह क़ब्ल हमने दुबोलिया बाज़ार जो ओझा गंज से दक्खिन पांच किलो मीटर पर है एक दीनी मदरसा क़ाइम कर दिया था। दस्तार बन्दी के बाद फिर इसी मदरसा में तदरीसी ख़िदमात अंजाम देने लगा और जब मुझे वहां अपनी तरक़्क़ी की राहें मस्दूद नज़र आईं तो ज़िल क़अ्दा 1373 हि0 मुताबिक़ 1954 ई0 में मुस्तअ्फ़ी होकर हज़रत अल्लामा अरशदुल क़ादरी साहब क़िब्ला की तलब पर मैं जमशेद पुर (बिहार) चला गया मगर चूंकि जामिआ फ़ैज़ुल उलूम में बर वक़्त किसी मुदर्रिस की ज़रूरत न थी इस लिये

मुझे एक मक्तब मे पढ़ाने के लिये मुक़र्रर किया गया तो मैं दिल बरदाश्ता हो कर तक़रीबन पांच माह बाद हज़रत अल्लामा की इजाज़त से घर चला आया।

जुमादल ऊला 1374 हि0 मुताबिक़ जनवरी 1955 ई0 में शुऐबुल औलिया हज़रत शाह मुहम्मद यार अली साहब क़िब्ला और शेर बेशए सुन्नत हज़रत मौलाना हशमत अली ख़ां साहब क़िब्ला अलैहिमुर् रहमत वर्-रिज़्वान की इजाज़त से मदरसा क़ादरिया रज़विया भाव पुर ज़िला बस्ती का मुदर्रिस मुक़र्रर हुआ मगर डेढ़ साल बाद वहां के इख़्तिलाफ़ात से आजिज़ होकर इस्तिअ्फ़ा दे दिया। इसी दरमियान शुऐबुल औलिया हज़रत शाह साहब क़िब्ला ने मक्तब फ़ैज़ुर रसूल को दारुल उलूम बना दिया तो मैं हज़रत की तलब पर बराऊं शरीफ़ चला आया। और यकुम ज़िल हिज्जा 1375 हि0 मुताबिक़ 10 जुलाई 1956 ई0 से दारुल उलूम फ़ैज़ुर रसूल का मुदर्रिस हो गया और ता दमे तहरीर तक़रीबन 33 साल हो गए इसी इदारे में दीनी ख़िदमात अंजाम दे रहा हूं। दरमियान में दूर व नज़्दीक के बहुत से बड़े-बड़े इदारों ने ऊंचा दर्जा और बहुत ज़्यादा मुशाहरा पेश किया मगर हम ने शुऐबुल औलिया जैसे मोहसिन का आस्ताना छोड़ना किसी क़ीमत पर गवारा न किया।

<u>तरीक़ए तदरीसः</u>-मक्तब के छोटे बच्चों के बारे में हमारा तरीक़ए तदरीस यह रहा कि क़ाइदा पढ़ने वाले को ذ ज़ाल, ز ज़ा और ظ ज़ा को ج जीम की आवाज़ से हम हरगिज़ नहीं पढ़ने देते थे। शुरू ही में दुरुस्त करा देते थे, उर्दू के ऐतबार से जब तक हरफ़ों की अदाइगी सही न हो जाती आगे नहीं पढ़ने देते थे। इसका फ़ाइदा यह होता कि फिर हरफ़ों को सहीह आवाज़ से पढ़ने के लिये कभी टोकना नहीं पड़ता था।

मुदर्रिसीन का यह समझना सहीह नहीं कि आगे चल कर ख़ुद बख़ुद ठीक हो जाएगा इस लिये कि ग़लत बुनियाद पड़ जाने के बाद फिर उस की दुरुस्तगी में सख़्त दुश्वारी होती है। तजर्बा शाहिद है कि मकातिब से जो लड़के ذ ज़ाल, ز ज़ा और ظ ज़ा को ج जीम की

आवाज़ से पढ़ कर आते हैं, बार-बार टोके जाने और फिर मुसलसल सज़ा पाने के बावजूद कई-कई साल तक दुरुस्त नहीं कर पाते और बाज़ तो फारिगुत् तहसील आलिम भी हो जाते हैं मगर उन के हुरूफ की अदाइगी सहीह नहीं हो पाती और हज़रत शैख़ सअ्दी रहमतुल्लाहि तआला अलैह का यह शेअ्र उन के ऊपर पूरे तौर पर सादिक़ आता हैः

*ख़िश्ते अव्वल चूं नहद मेअ्मार कज*

*ता सुरैय्या मी रवद दीवार कज*

और मुदर्रिसीन का यह उज़्र भी ग़लत है कि छोटे बच्चे ज़ा वग़ैरा की अदाइगी पर क़ादिर नहीं हो पाते। इस लिये कि मैं ने एक मदरसा के छोटे बच्चों का इम्तिहान लिया, सारे लड़के ذ ज़ाल, ز ज़ा और ظ ज़ा को ج जीम ही की आवाज़ से पढ़ते रहे। मुदर्रिसीन ने वही उज़्र बयान किया कि कोशिश के बावजूद उन को सहीह पढ़ना नहीं आता, हम ने कहा आप लोगों का यह उज़्र वही लोग सहीह मान सकते हैं जिन्हों ने कभी मक्तब नहीं पढ़ाया है, हम नहीं तस्लीम कर सकते। आइन्दा साल अगर लड़कों ने ऐसा ही पढ़ा तो हम सब को फेल कर देंगे। नतीजा यह हुआ कि दूसरे साल सब सहीह हो गए।

बच्चों को रटा कर पढ़ाना भी ग़लत है, जब तक कि बच्चे हरफों को पहचान न लें, सबक़ पढ़ाने से पहले मुरक्कब अल्फ़ाज़ के एक-एक हर्फ को अलग-अलग उन से पूछना चाहिये, हम ऐसा ही किया करते थे। इस का फाइदा यह होता है कि बच्चों का पिछला भूलता नहीं और पढ़े हुए को फिर से सबक़न् सबक़न् पढ़ने का सवाल ही नहीं पैदा होता।

और मक्तब के छोटे बच्चों को हम रोज़-मर्रा पेश आने वाले मसाइल ज़बानी बता दिया करते थे, दाहिने हाथ से खाने पीने, बायें हाथ से नाक साफ करने, इस्तिंजा के ढेला सुखाने और उसी हाथ से आबदस्त लेने की ताकीद करते थे। और खड़े होकर पानी पीने और क़िब्ला की तरफ मुंह या पीठ करके पाख़ाना पेशाब करने से सख़्ती के

साथ मना करते थे। और लड़कों में ऐलान करते रहते थे कि अगर कोई बच्चा इस के ख़िलाफ करे तो हमें बताओ उस का नतीजा यह होता था कि लड़के बचपन ही से इस्लामी तौर तरीक़े के पाबंद और आदी हो जाते थे।

ऐ काश! सारे मुदर्रिसीन ऐसे ही करते तो आज सिर्फ मक्तब का पढ़ा हुआ मुसलमान भी दाहिने हाथ से इस्तिंजा का ढेला सुखाता हुआ और क़िब्ला की तरफ मुंह या पीठ करके पाख़ाना या पेशाब करता हुआ नज़र न आता। बल्कि इस्लामी तौर व तरीक़ा से दुरुस्त व आरास्ता होता लेकिन आज कल बहुत से मुदर्रिसीन सिर्फ नौकरी करते हैं, इस्लाम की बातों को फैलाने का जज़्बा नहीं रखते। यहां तक कि अक्सर मुदर्रिसीन जो दीनी मदरसा में पढ़ाते तो हैं मगर लड़कों को दीनियात की तालीम नहीं देते, सिर्फ उर्दू और हिसाब व किताब वग़ैरा पढ़ा कर पास कर देते हैं और ग़लत सलत क़ुरआन मजीद पढ़ा कर बच्चों के घर वालों से इनाम पा जाने को बहुत बड़ी कामयाबी समझते हैं।

ख़ुदाए अज़्ज़ व जल्ल उन्हें इस्लाम का सहीह जज़्बा अता फरमाए और अपनी तंख़्वाहों को हलाल करने की तौफीक़े रफीक़ बख़्शे। आमीन

<u>बड़े तलबा</u>:- दारुल उलूम के तलबा को हमारे पढ़ाने का तरीक़ा यह है कि तस्हीलुल मसादिर, नहवमीर और मीज़ान बल्कि सर्फ में पंज-गंज, इल्मुस् सीग़ा और फुसूले अक्बरी तक के लड़कों का पिछला सबक़ सुनने के बाद ही आगे पढ़ाते हैं और जो याद नहीं करता उसे मुनासिब सज़ा देते हैं जिस का फाइदा यह होता है कि दूसरे रोज़ वह सबक़ याद करके लाता है।

हम छोटी किताबें पढ़ने वाले तलबा को भी चालीस पचास मिनट की पूरी घंटी पढ़ाते हैं, सिर्फ चन्द मिनट नहीं पढ़ाते बल्कि घंटी के ख़त्म होने तक पूछते रहते हैं और मुख़्तलिफ मसादिर से फेअ्लों की गर्दान कराते हैं अल्बत्ता नहवमीर पढ़ने वालों को काफिया व शर्हे जामी की बहेस और मंतिक़ के इब्तिदाई बच्चों को क़ुत्बी व मुल्ला हसन की

बातें नहीं बताते, जिस दर्जा का तालिब इल्म होता है उसी ऐतबार से उस के सामने मसाइल पेश करते हैं अपनी मालूमात नहीं बल्कि तलबा की मालूमात के लिहाज़ से उन के सामने तक़रीरें करते हैं।

मुतवस्सित और मुन्तही किताबें पढ़ने वालों की जमाअ़त में अक्सर ऐसे तलबा होते हैं जो तालीम के नाम पर मदरसों में खाते और घूमते हैं, किताबों को मुतालिआ़ करना तो बड़ी बात है उसे हाथ भी नहीं लगाते। फिर बज़ाहिर आलिम की लेकिन हक़ीक़त में आठ दस साल मदरसा में खाने की दस्तार लेते हैं और काम का नहीं सिर्फ नाम का मौलाना होकर क़ौम के लिय बोझ बनते हैं।

इस ख़राबी को दूर करने के लिये हम ने यह तरीक़ा ईजाद कर रख़ा था कि पूरी जमाअ़त के हर तालिब इल्म को कम ज़्यादा तादाद के ऐतबार से दो-दो या एक-एक सतर इबारत रोज़ाना पढ़नी पड़ेगी और अव्वल व आख़िर या दरमियान में जहां जिस से चाहेंगे पढ़वायेंगे। इस सूरत में हर लड़के को इबारत पढ़ने के लिये रोज़ाना मेहनत करनी पड़ती इस लिये कि जो ऐसा न करता वह बहुत बुरा भला कहा जाता और सज़ा भी पाता।

यह तरीक़ा बेइन्तिहा मुफीद साबित हुआ लेकिन तलबा ने हमारी सख़्ती के बहुत से फरज़ी क़िस्सों का परचार किया और हमें बहुत बदनाम किया तो इस तरह इबारत पढ़वाना हम ने बन्द कर दिया। अब यह दस्तूर है कि हर तालिब इल्म से एक-एक रोज़ नम्बरवार इबारत पढ़वाते हैं और दरमियान में एक दो सर्फी नहवी मस्अला भी पूछ लिया करते हैं। यह सूरत भी औसतन मुफीद है कि हर तालिब इल्म को कुछ रोज़ बाद इबारत पढ़नी पड़ती है। सिर्फ चन्द मख़्सूस तालिब इल्मों से हमेशा इबारत पढ़वाना दूसरों को नाम का आलिम बनाना और उनकी ज़िंदगी बरबाद करना है।

और आम तौर पर जो यह दस्तूर है कि इबारत पढ़ने में अगर लड़का ग़लती करता है तो फौरन उसे बता दिया जाता है, यह तरीक़ा

भी सहीह नहीं। मेरा दस्तूर यह है कि बताता नहीं हूं बल्कि सिर्फ आगे पढ़ने से रोक देता हूं, फिर अगर वह दुरुस्त कर लेता है तो उस को वजह भी बतानी पड़ती है कि ऐसा क्यों पढ़ा इस लिये कि बसा औक़ात (बग़ैर समझे हुए) सिर्फ अंदाज़े से इबारत सहीह कर लेता है या ज़म्मा से रोक दिया तो फत्हा पढ़ देता है और वह भी सहीह नहीं हुआ तो कस्रा पढ़ देता है और जब वजह बतानी पड़ती है तो उस के ज़ेहन को काम करना पड़ता है जिस से इस्तिअ्दाद बढ़ती है और मसाइल हल करने की सलाहियत पैदा होती है।

बाज़ लोगों का ख़्याल है कि गवर्नमेन्ट के इम्तिहान में तलबा को जो नक़ल कराके पास कराया जाता है इस सबब से वह ज़ी इस्तिअ्दाद बनने की कोशिश नहीं करते कि मेहनत के बग़ैर वह आलिम व फाज़िल हो जाते हैं।

अगर्चे नक़ल कराने का भी मैं सख़्त मुख़ालिफ हूं लेकिन तलबा के ज़ी इस्तिअ्दाद होने की यह वजह सहीह नहीं, इस लिये कि देवबंदी वग़ैरा भी गवर्नमेन्ट के इम्तिहान में यही तरीक़ा इख़्तियार करते हैं और उन के लड़के हमारे तलबा की बनिस्बत ज़ी इस्तिअ्दाद होते हैं।

मेरे नज़्दीक इस ख़राबी की अस्ल वजह यह है कि तलबा पर सख़्ती नहीं की जाती इसी लिये सुन्नियों के वह मदारिस जो इल्हाक़ नहीं हैं और उन के तलबा गवर्नमेन्ट के इम्तिहान से आलिम व फाज़िल नहीं होते वह भी बा सलाहियत नहीं बनते। शहर बस्ती के बस स्टेशन पर एक देवबंदी तालिब इल्म मिला जो दरमियान साल पूरे सामान के साथ अपने घर जा रहा था, उस ने बताया कि शशमाई इम्तिहान में सिर्फ एक किताब के अन्दर फेल हो जाने के सबब मुझे मदरसा से ख़ारिज कर दिया गया जबकि मैं ख़ुराकी भी दिया करता था।

और हमारे यहां हाल यह है कि सालाना इम्तिहान में फेल होने के बावजूद तालिब इल्म को ख़ारिज कर देना तो बहुत बड़ी बात है मामूली सज़ा भी नहीं दी जाती और न उन को ज़ी इस्तिअ्दाद बनाने की कमा

हक्कहू कोशिश की जाती है, आम तौर पर सिर्फ तंख़्वाह बनाने के लिये नौकरी की जाती है।

__इफ्ता__:- 24 सफरुल मुज़फ्फर 1377 हि0 मुताबिक़ 1957 ई0 को 24 साल की उम्र में पहला फत्वा लिखा फिर 25 साल तक मुल्क और बैरूने मुल्क पाकिस्तान और हालेंड वग़ैरा से आए हुए हज़ारों सवालात के जवाबात बड़ी मेहनत से लिखे जो फैज़ुर रसूल के अलावा दूसरे मोवक्कर माहनामों में भी अर्सए दराज़ तक शाए होते रहे और क़द्र की निगाहों से देखे गए।

यह हमारे लिये निहायत मसर्रत की बात है कि मदीना मुनव्वरा जो मज़्हबे इस्लाम का मंबअ् व मरकज़ है वहां के बाज़ लोगों ने भी फ़त्वा के लिये हमारी तरफ रुजूअ् किया जिन का मुदल्लल जवाब लिख कर रवाना किया।

रबीउल अव्वल 1403 हि0 मुताबिक़ 1983 ई0 में दिमाग़ी कमज़ोरी के सबब फत्वा नवीसी से मुस्तअ्फी होकर अब दारुल उलूम फैज़ुर रसूल के सिर्फ शोबए तालीम की ख़िदमत अंजाम दे रहा हूं।

फतावा फैज़ुर रसूल की तरतीब का काम जारी है, कोशिश है कि मेरी ज़िंदगी में छप कर मंज़रे आम पर आ जाए ताकि मेरी दिमाग़ी काविशें ज़ाए न हों इस लिये कि जो क़ौम अअ्ला हज़रत पेशवाए अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी और सद्रुश शरीआ़ हज़रत अल्लामा मुहम्मद अमजद अली आज़मी रहमतुल्लाहि अलैहिमा जैसी अहम शख़्सियतों के सारे फतावे छपवा कर अब तक मंज़रे आम पर न ला सकी, उस क़ौम से हम जैसे लोगों के फतावा छपवाने की उम्मीद रखना ग़लत है।

☆☆☆

__फतावा नवीसी की ज़िंदगी के चन्द वाक़िआत__:-मुफ्ती का काम है फत्वा देना और तहक़ीक़े वाक़िआ के बाद फैसला करना क़ाज़ी का काम है। लेकिन चूंकि आज कल फत्वा को आम तौर पर फैसला समझा जाता है और बहुत से लोग अज़ राहे फरेब ग़लत सवाल बना

कर अपने मतलब के मुवाफिक् फत्वा लेने की कोशिश करते हैं इसलिये मैं हत्तल इम्कान वाकिआ की तहक़ीक़ भी कर लिया करता था।

ज़िला गोंडा क़स्बत उतरौला के इलाक़ा से एक शख़्स आया, उस ने बयान दिया कि लोग कहते हैं कि तुम ने अपनी बीवी को तीन तलाक़ दी है मगर मुझे नहीं मालूम कि मैं ने ऐसा किया है, इस लिये कि मैं गुस्सा में होश व हवास खो बैठा था तो इस सूरत में मेरी बीवी पर तलाक़ पड़ी या नहीं? हम ने कहा क़सम के बग़ैर तुम्हारा ऐसा हैरत अंगेज़ बयान कि तुम ने तलाक़ दी और तुम्हें ख़बर ही नहीं हम हरगिज़ नहीं तस्लीम कर सकते। इस लिये कि हम बहुत से मक्कार देख चुके हैं। उसने बड़ी बेबाकी से कहा एक नहीं सात कुरआन शरीफ अपने सर पर रख कर भी हम क़सम खा सकते हैं कि हमारा बयान सहीह है।

हम ने जान लिया कि यह आदमी कुरआन मजीद उठा कर झूठी क़सम खा लेगा लेकिन किसी बुजुर्ग के मज़ार पर हाथ रख कर अग़लब यह है कि यह झूठी क़सम खाने की जुर्अत नहीं कर सकेगा। हम ने कहा शुऐबुल औलिया हज़रत शाह मुहम्मद यार अली साहब किब्ला रहमतुल्लाहि तआला अलैह के मज़ार पर हाथ रख कर तू क़सम के साथ अपना यह बयान दे सकता है, उस ने कहा हां बिल्कुल दे सकता हूं।

मैं ने उसको वुज़ू करने का हुक्म दिया, वुज़ू के बाद उस को मज़ार शरीफ के पास ले जा कर पहले बाहर ही खड़ा किया और कहा सोच लो, अब भी वक़्त है, अगर तुम झूठी क़सम खाए और कोढ़ी या अंधे हो गए तो ज़िंदगी तुम्हारी तबाह हो जाएगी, उस ने कहा मेरा बयान सहीह है मैं क़सम खाने के सबब कोढ़ी या अंधा नहीं हूंगा। आप जिस तरह चाहें मुझ से क़सम खिला सकते हैं।

अब मैं उसे अन्दर ले गया और कहा कि मज़ार शरीफ पर हाथ रख कर कहो कि मैं क़सम खा कर बयान देता हूं कि मैं ने होश व हवास की दुरुस्तगी में तलाक़ नहीं दी है अगर मेरा यह बयान ग़लत हो तो मैं कोढ़ी और अंधा हो जाऊं।

अब उस के चेहरा से घबराहट ज़ाहिर हुई, यहां तक कि वह कांपने लगा और मज़ार शरीफ पर हाथ रख कर झूठा बयान देने की हिम्मत नहीं कर सका। देर तक ख़ामोश खड़ा रहा।

मैं ने कहा तुझे क्या हो गया, अब मज़ार शरीफ पर हाथ रख कर बयान क्यों नहीं देता, मगर वह चुप हज़ार चुप, आख़िर जब मैं उसे बाहर लाया तो उस नें इक़रार कर लिया कि मैं ने होश व हवास की दुरुस्तगी में तलाक़ दी है।

ज़िला गोंडा का एक शख़्स जो बराऊं शरीफ का मुरीद था वह हमारे साथ भी बड़ा हुस्ने ऐतिक़ाद रखता था, जब कभी मैं उस की आबादी में जाता तो एक ख़ादिम की तरह मेरे साथ रहता और नज़्राना वग़ैरा से हर मुम्किन ख़िदमत करता।

तुलसी पुर के इलाक़े से वह एक औरत को भगा लाया और मुझ से कहा कि इस का शौहर वहाबी मुरतद है। इस का निकाह आप मेरे साथ पढ़ दीजिये। मैं ने इनकार किया, उस ने कहा किसी दूसरे ही को पढ़ाने की इजाज़त दे दीजिये। मैं ने इजाज़त देने से भी इनकार किया और कहा कि मैं कैसे यक़ीन कर लूं कि इस का शौहर वहाबी मुरतद है? उस ने कहा आप आदमी भेज कर तहक़ीक़ कर लीजिये।

अब दो आदमी जो बज़ाहिर परहेज़गार थे, तहक़ीक़े हाल के लिये भेजे गए, वापस आकर उन्हों नें बयान दिया कि हम दोनों ने उस की आबादी के बहुत लोगों से मालूम किया तो यही तहक़ीक़ हुआ कि उस का शौहर वहाबी मुरतद है ----- मगर मैं ने अब भी निकाह की इजाज़त न दी और यह कह कर चला आया कि मैं फैज़ुर रसूल के दीगर उलमा से मशवरा करने के बाद ही कोई फैसला कर सकूंगा।

इत्तिफाक़ से मेरे वहां से आने के चन्द रोज़ बाद आस्तानए यार अलविया बराऊं शरीफ के सज्जादा नशीन उस आबादी में तशरीफ ले गए जिस की बीवी अग़वा की गई थी, उसे मालूम हुआ कि जो शख़्स मेरी बीवी को भगा कर ले गया है उस के पीर उस की आबादी में

आए हुए हैं, तो वह आकर सज्जादा नशीन से मिला और अपना मामला पेश किया और सज्जादा नशीन ने शख़्से मज़कूर को बुला कर बहुत डांटा फटकारा और हुक्म दिया कि फौरन उस की बीवी उस के सुपुर्द कर दो और अलानिया तौबा व इस्तिग़फार करो।

शख़्से मज़कूर ने कहा कि यह वहाबी मुरतद है, इस के साथ इस औरत का निकाह मुन्अक़िद ही नहीं हुआ, उसने कहा मैं अल्हम्दु लिल्लाह अहले सुन्नत व जमाअत से हूं, वहाबी मुरतद नहीं हूं, तमाम ज़रूरियाते अहले सुन्नत को मानता हूं। जिस बात के मुतअ़ल्लिक़ आप चाहें मुझ से इक़रार ले सकते हैं। मगर मैं अब इस औरत को नहीं ले जाऊंगा और फिर वह तलाक़ देकर चला गया।

हमारी आबादी ओझा गंज के क़रीब एक गांव है। वहां का एक शख़्स कानपुर से एक शादी शुदा औरत को भगा कर लाया, ईदे अज़हा के मौक़ा पर जब ओझा गंज के लोगों को मालूम हुआ तो उस का बाइकाट किया गया, वह अपनी ज़िल्लत मिटाने के लिये कानपुर गया और भगाई हुई औरत के शौहर व गवाहान के दस्तख़ के साथ तलाक़ नामा लाकर पेश किया। मेरे दिल ने फैसला किया कि यह तलाक़ नामा फरज़ी है, शख़्से मज़कूर के भाई जो मौलवी कहे जाते हैं उन्हों ने कहा आप इस तहरीर को सहीह क्यों नहीं मानते? हम ने कहा जो आदमी दूसरे की औरत को भगा सकता है वह फरज़ी तलाक़ नामा भी बना सकता है, हम ऐसे शख़्स की लाई हुई तहरीर बिला तहक़ीक़ नहीं मान सकते।

चन्द रोज़ बाद मौलाना मुहम्मद अलाउद्दीन ओझा गंजवी कानपुर जाने लगे तो हम ने उन से तलाक़ नामा की तहक़ीक़ के लिये कहा, उन्हों ने मज़कूरा औरत के शौहर से मुलाक़ात की उस ने बताया कि न मैं ने तलाक़ नामा लिखा है न किसी से लिखवाया है, न मुझे उस का कुछ इल्म है। अल्बत्ता एक शख़्स ने मुझ से सादा काग़ज़ पर यह कह कर दस्तख़ लिया है कि तुम को मिल में मुलाज़मत दिलवाई जाएगी, हो सकता है कि उसी काग़ज़ को तलाक़ नामा बना लिया गया हो।

ज़िला बस्ती तहसील डोमरिया गंज का एक शख़्स आया और कमरा में दाख़िल होते ही मुसाफहा के साथ पांच रुपये नज़राना पेश किया हम ने कहा आज यह नज़्राना कैसा? उस ने कहा बस ऐसे ही दिल में आया कि आज आप को नज़्राना पेश करूं, ख़ैर हम ने क़बूल कर लिया।

ज़ब वह खाना वग़ैरा से फ़ारिग़ हुआ तो एक सवाल पर भावपुर ज़िला बस्ती और तुलसीपुर ज़िला गोंडा के मुफ्तियों का फत्वा दिखाया, सवाल यह था कि हालते जुनून में ज़ैद ने तलाक़ दी, वाक़ेअ् हुई या नहीं? जवाबात का ख़ुलासा यह था कि जब जुनून की हालत में तलाक़ दी है तो नहीं वाक़ेअ् हुई, कि हालते जुनून के किसी फेअ्ल पर शरई हुक्म नहीं लगता यहां तक कि इस हालत के कलिमाते कुफ़्र पर भी आदमी काफिर नहीं होता।

शख़्से मज़कूर ने बताया कि वह मामला हमारा ही है, दरमियान में हम पागल हो गए थे, फिर उस ने अपने पागल होने के बारे में गोरखपुर के एक मशहूर डाक्टर का सर्टीफिकेट भी दिखलाया।

हम ने कहा दो जगह के मुफ्तियों का फत्वा तो आप को मिल गया फिर यहां आने की तक्लीफ आप ने क्यों उठाई? कहा मेरी बीवी कहती है कि ज़ब तक बराऊं शरीफ का फत्वा नहीं लाओगे हम नहीं मानेंगे। हम ने कहा अगर यह बात है तो हम भी फत्वा लिख देंगे।

फिर हम ने इस तरह लिखना शुरू किया कि अगर ज़ैद ने हालते जुनून में तलाक़ दी है तो नहीं वाक़अ् हुई और अगर होश व हवास की दुरुस्तगी में दी है तो वाक़ेअ् हो गई।

उस ने कहा जबकि मैं आप को अपने पागल होने के बारे में दिमाग़ के एक मशहूर डाक्टर का सर्टीफिकेट दिखा रहा हूं तो आप को यूं लिखना चाहिये कि जब ज़ैद ने हालते जुनून में तलाक़ दी है तो नहीं वाक़अ् हुई, हम ने कहा इस तरह वह लोग लिखेंगे जिन को फत्वा नवीसी का तजर्बा नहीं है। हम ऐसा हरगिज़ नहीं लिख सकते। रही

पागल होने के बारे में सर्टीफिकेट की बात तो आप अपने पागल होने के मुतअल्लिक् एक डाक्टर का सर्टीफिकेट दिखा रहे हैं, आप जिस के बारे में कहें मैं उसके मुतअल्लिक् दस डाक्टरों के सर्टीफिकेट मंगवा कर दिखला सकता हूं।

जब उस ने देखा कि पांच रुपया नज़ाना के नाम पर रिश्वत देने के बावजूद काम नहीं बना तो उसका तीन गुना वसूल करने के लिये हम से 15 रुपये की किताबें उधार ले गया और बार-बार तकाज़ा के बावजूद कई बरस तक नहीं दिया। यहां तक कि उस के लड़के ने आजिज़ होकर अपनी तरफ से अदा किया।

जो लोग कि ज़ाहिरी परहेज़गारी के फरेब में आ जाते हैं, औरतों को इग़वा करने वालों की बातों को मान लेते हैं और उन के लाए हुए तलाक् नामा वगैरा बिला चूं चिरा सहीह तस्लीम कर लेते हैं वह इन वाकिआत से इब्रत हासिल करें। और ख़ूब याद रखें कि दुनिया बहुत मक्कार हो गई है, उन की बातों में न आएं। हत्तल इम्कान मामला की तहकीक् कर लें और तहरीर में हलाल व हराम जाइज़ व ना जाइज़ और तलाक् के वुकूअ् और अदमे वुकूअ् दोनों पहलुओं को वाज़ेह तौर पर लिखें।

<u>तस्नीफो-तालीफः</u>-दर्सो-तदरीस और फत्वा नवीसी की मस्रूफियात के बावजूद हम ने शुरू ही से तस्नीफो-तालीफ का सिलसिला भी जारी रखा है। सब से पहले गुल्दस्ता मस्नवी यानी मौलाना रूम रहमतुल्लाहि तआला अलैह की मस्नवी शरीफ का इन्तिख़ाब मअ् तर्जमा व मुख़्तसर तशरीह लिखी फिर दीगर किताबें मआरिफुल कुरआन, अनवारे शरीअत उर्फ अच्छी नमाज़, हज व ज़ियारत, मुहक्किकाना फैसला, बागे फिदक और हदीसे क़िरतास, ज़रूरी मसाइल, बच्चों के लिये दीनी तालीम का सुन्नियत अफ्रोज़ सिलसिला, नूरानी तालीम चहार हिस्से, अनवारुल हदीस और अलग़ाज़ुल फिक्ह उर्फ फिक्ही पहेलियां, फिर उसके बाद ज़ेरे नज़र किताब खुत्बाते मुहर्रम मुरत्तब की। इन तमाम तस्नीफात में अनवारुल हदीस और अलग़ाज़ुल फिक्ह सब से ज़्यादा अहम समझी

जाती है।

और हिन्दुस्तान में चूंकि उर्दू दां तबक़ा रोज़ बरोज़ कम होता जा रहा है इस लिये दूसरों ने अपनी मज़्हबी किताबें बहुत पहले हिन्दी में छपवा कर पूरे मुल्क में फैला दीं जिस से इस्लाम व सुन्नियत को ज़बर्दस्त नुक़्सान पहुंच रहा है, उन की किताबें पढ़ कर लोग गुमराह होते जा रहे हैं मगर हमारी जमाअ़त के लोगों ने इस की तरफ तवज्जोह नहीं की।

ख़ुदाए तआ़ला का शुक्र है उस ने हम को तौफीक़ अ़ता फरमाई कि अहले सुन्नत व जमाअ़त में सब से पहले हम ने 1400 हि0 मुताबिक़ 1980 ई0 में अनवारे शरीअ़त उर्फ अच्छी नमाज़ को हिन्दी में छपवाया जो बेइन्तिहा मक़्बूल हुई। उस के बाद लोगों की तवज्जोह इस तरफ हुई और बहारे शरीअ़त हिस्सा अव्वल वग़ैरा हिन्दी में छप कर मंज़रे आम पर आ गईं। और हम ने अनवारे शरीअ़त के बाद मुहक़्क़िक़ाना फैसला फिर अनवारुल हदीस को भी हिन्दी में कर दिया, जिस से अहले सुन्नत व जमाअ़त के हिन्दी दां तबक़ा को बहुत फ़ाइदा पहुंच रहा है। فالحمدلله على ذالك

दूसरों की बनिस्बत हमारी जमाअ़त में तस्नीफो-तालीफ का काम बहुत कम हो रहा है इस लिये जो लोग इस काम की सलाहियत रखते हैं वह अगर शुरू में कुछ काम करते भी हैं तो बाद में उसे छोड़ कर वज़ीफा पीरी मुरीदी और तावीज़ नवीसी में लग जाते हैं मगर मैं ने दीन की तक़्वियत और इस्लाम व सुन्नियत की तब्लीग़ के लिये किताबों की तस्नीफ और उसकी नश्रो-इशाअ़त को सब से ज़्यादा अहम समझा इस लिये कि किताबें हर सूबा और हर शहर के मुसलमानों को आसानी से पहुंच जायेंगी, जिन से वह अपने ईमान व अमल को संवारेंगे और पीरी मुरीदी से चाहे हम पक्के दुनिया दार हो जाएं लेकिन मुरीद लोग हमें वली ज़रूर बना देंगे। जिस से उर्स भी होगा, मगर इस से हम को और हमारी औलाद को फाइदा पहुंचेगा और तस्नीफो-तालीफ से पूरी क़ौम मुस्तफीद हो सकेगी।

आला हज़रत इमाम अहले सुन्नत फाज़िल बरैलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि दीन की इशाअत और बद मज़हबिय्यत की रोक थाम के लिये दिन रात कलम चलाते रहे, आज भी वहाबियत और देवबंदियत हर तरह से मज़्बूत हो रही है और पढ़ा लिखा तबका उन से मुतअस्सिर होता चला जा रहा है इस लिये हर सुन्नी आलिम दीन पर लाज़िम है कि वह अपनी सलाहियत के मुताबिक़ बद मज़हबिय्यत की रोक थाम के लिये कलम चलाए और सिर्फ पीरी मुरीदी को इस के लिये काफी न समझे। कि अअ्ला हज़रत के ज़माने में भी पीरों की कमी नहीं थी। मगर सुन्नियत का बोल बाला उन के कलम चलाने से ही हुआ।

हम ने मक्का मोअज़्ज़मा और मदीना तैयिबा के मुक़ामाते मुक़द्दसा पर यह दुआ की इलाहल आलमीन! हम को और हमारी औलाद को खुलूस के साथ दीने मतीन की बेश अज़ बेश ख़िदमत की तौफीक़े रफीक़ अता फरमा। और आज भी मुबारक मौक़ों पर यह दुआ करते रहते हैं।

खुदाए तआला का लाख लाख शुक्र है कि उस ने हमारे हक़ में यह दुआ क़बूल फरमाई कि हम ख़िदमते दीन ही के जज़्बे से किताबें लिखते और उसकी नश्रो-इशाअत करते हैं और जो लोग यह समझते हैं कि हम हुसूले ज़र के लिये ऐसा कर रहे हैं, वह बद गुमानी के गुनाहे कबीरा में मुब्तला हैं। अगर मक़सद रुपया कमाना होता तो हमारी तस्नीफ करदा किताबों का यह मिजाज़ न होता कि बद मज़्हब उसे हाथ नहीं लगाता है, और ग़लती से अगर ख़रीद लेता है तो पढ़ने के बाद अफ्सोस करता है और कभी फुहश गालियों से भरा हुआ ख़त भी लिखता है।

**कुतुब खाना अमजदिया**:-किताबों के ज़रिये मज़्हब की इशाअत बहुत ठोस और मुस्तहकम होती है इस लिये बद मज़्हब अपनी बद मज़्हबी फैलाने के लिये तक़रीबन हर शहर में कुतुब ख़ाना क़ाइम किये हुए हैं और उस के ज़रिये हर घर में अपनी किताबें पहुंचा कर लोगों को गुमराह कर रहे हैं मगर अहले सुन्नत व जमाअत के लोगों की

तवज्जोह इस तरफ़ नहीं इसी लिये पूरे मुल्क में सुन्नियों का कोई ऐसा कुतुब ख़ाना नहीं जो क़ाबिले ज़िक्र हो। सिर्फ़ चन्द मक़ामात पर छोटे-छोटे कुतुब ख़ाने हैं जो अपनी बिसात के मुताबिक़ काम कर रहे हैं। मुम्बई में भिंडी बाज़ार जैसी मैन जगह और देहली में जामा मस्जिद का ऐरिया सुन्नी कुतुब ख़ानों से ख़ाली है जिस से सुन्नियत को बहुत नुक़्सान पहुंच रहा है मगर सुन्नियों की आंख नहीं खुलती और उन्हें नज़र नहीं आता।

मुम्बई के एक रज़वी आलिम जो बहुत से ताजिरों को बतौरे मुज़ारबत बड़ी-बड़ी रक़में देते हैं, मैं ने उन से कहा कि भिंडी बाज़ार जहां हज़ारों मुसलमान रोज़ाना किताबें ख़रीदने के लिये आते हैं वहां अहले सुन्नत व जमाअ़त का कोई कुतुब ख़ाना नहीं है जिस की अशद ज़रूरत है। सुन्नी मुसलमान मुतर्जम कुरआन मजीद लेना चाहता है और बद मज़्हब अपने लोगों का तर्जमा उसे पकड़ा देते हैं बल्कि बाज़ लोग जो अअ़्ला हज़रत का तर्जमा सराहतन तलब करते हैं मगर पढ़े हुए नहीं होते हैं उन्हें भी अपने मौलवी का तर्जमा दे देते हैं। इस लिये भिंडी बाज़ार में आप एक कुतुब ख़ाना क़ाइम कर दीजिये।

मेरी इन बातों ने उन के ऊपर ऐसा असर किया जैसे किसी ज़ख़्मी शेर को छेड़ दिया जाए, उनके चेहरा का रंग बदल गया, वह गुस्सा से भरे हुए बोलने लगे, उस ज़माने में जबकि हज़ार बहुत वक़अ़त रखता था इन्हीं हाथों से मैं ने फ़ुलां मौलवी को सत्तर हज़ार रुपया प्रेस और कुतुब ख़ाना क़ाइम करने के लिये दिया, इतना रुपया कितनी परेशानियों से इकट्ठा हुआ वह मैं ही जानता हूं, मगर क़ौम का पैसा लेकर वह खा गए और कुछ नहीं किया।

मैं ने कहा मैं आप से कुछ मांगता नहीं हूं बल्कि मज़्हब की इशाअ़त और सुन्नियत को नुक़्सान पहुंचने से बचाने के लिये चाहता हूं कि आप ख़ुद भिंडी बाज़ार में सुन्नी कुतुब ख़ाना क़ाइम कर दें। मगर आज तक उन्हों ने इस की तरफ़ कोई तवज्जोह नहीं की।

और भी हम ने कई लोगों से कुतुब ख़ाना क़ाइम करने की

कोशिश करते हुए कहा कि आप लोग हर तरह का रोज़गार करते हैं, कुतुब ख़ाना क्यों नही चलाते कि इस से दीन का काम भी होगा और आप की ज़रूरियात के लिये दो पैसा मिलता भी रहेगा। और आप ख़िदमते दीन की नियत से ऐसा करेंगे तो सवाब भी मिलेगा, मगर दुनिया दार तो दुनिया दार किसी दीन दार की समझ में भी नहीं आया।

हिन्दुस्तान के एक मशहूर मुक़र्रिर जिन की तक़रीरें अक्सर मुम्बई में होती रहती हैं और कसीर मजमअ् होता है, हम ने उन से कहा कि भिंडी बाज़ार मुम्बई में एक सुन्नी कुतुब ख़ाना क़ाइम करवाने के लिये हम ने बहुत कोशिश की मगर कामयाब नहीं हुए, उन्हों ने कहा अगर हम कह दें तो हो जाएगा, हम ने कहा इसी लिये तो आप से ज़िक्र किया है आप कह देंगे तो यक़ीनन वहां एक बड़ा कुतुब ख़ाना हो जाएगा, जिस की अशद ज़रूरत है मगर न मालूम उन के पेशे नज़र क्या मस्लहत थी कि आज तक उन्हों ने इस सिलसिले में होंट हिलाना गवारा न किया।

हिन्दुस्तान के बहुत से शहरों में और खुद मुम्बई में ऐसे-ऐसे बड़े-बड़े इदारे हैं जो लाखों रुपया बैंकों में रखने को बड़ी कामयाबी समझते हैं और इस पर फख़्र करते हैं कि फुलां की सदारत व निज़ामत के ज़माने में सिर्फ इतना बैंक बैलंस रहा और हमारे वक़्त में इतना ज़्यादा हो गया।

यानी इस्ला ा के नाम पर रुपया वसूल करने के बाद बैंक को नफा पहुंचाया जाता है और इस्लाम की बातों को आम करने के लिये मुसलमानों का पैसा इस्तेमाल नहीं किया जाता, न उनके ईमान व अमल को संवारने के लिये काम में लाया जाता है। अल्बत्ता बाज़ मदरसा वाले आमदनी के लिये मार्किट और होटल वग़ैरा बनवाते हैं, प्रेस व कुतुब ख़ाना क़ाइम नहीं करते। यही वजह है कि बद मज़्हबों की अहम किताबें हिन्दुस्तान की पन्द्रह ज़बानों में शाए हो रही हैं और अहले सुन्नत व जमाअ़त की बहारे शरीअ़त जैसी अहम किताब अभी

तक सिर्फ उर्दू में भी सहीह नहीं मिल पा रही थी। खुदाए तआला क़ादरी बुक डिपो नौ महला मस्जिद बरेली शरीफ का भला करे कि उस की कोशिशों से अब सहीह बहारे शरीअ़त उर्दू में मिलने लगी।

बद मज़्हब मौलवियों के पास जब पैसा होता है तो वह प्रेस व क़ुतुब ख़ाना क़ाइम करके अपना मज़्हब फैलाता है और सुन्नी मौलवी जब खुशहाल होता है और उस के पास रक़म पस्मांद होती है तो वह समझाने के बावजूद इस तरफ तवज्जोह नहीं करता, बल्कि बैंक में जमा करके उस को फाइदा पहुंचाता है, किसी दूसरी चीज़ की दुकान दारी करता है, बस और टेक्सी चलवाता है या मुर्गी और मछली पालता है और इस तरह के क़ामों में तरक़्क़ी कर जाने को अपने लिये बहुत बड़ी कामयाबी समझता है। हालां कि आलिम की कामयाबी हक़ीक़त में यह है कि वह दीन के कामों में तरक़्क़ी करे, इस लिये कि गाए का दूध देखा जाता है उस की चाल नहीं देखी जाती, गाए की चाल कितनी ही अच्छी हो मगर दूध न दे तो बेकार है और घोड़ी की चाल देखी जाती है न कि उस का दूध। मतलब यह है कि जों चीज़ जिस काम के लिये होती है उसी में तरक़्क़ी उस की कामयाबी होती है तो आलिमे दीन जो दीनी कामों के लिये हुआ करता है, उस के बजाए दुनियवी कामों में तरक़्क़ी करे तो वह ऐसा ही जैसे कोई गाए दूध के बजाए अच्छी चाल वाली हो।

खुदाए तआ़ला का शुक्र है कि उस ने अगर हम को कुछ पैसा अता फरमाया तो अपने दीन की तक़्वियत और उस की नश्रो-इशाअ़त के लिये हमें क़ुतुब ख़ाना अमजदिया क़ाइम करने की तौफीक़ अता फरमाई जो अपनी बिसात के मुताबिक़ दीन की हर मुम्किन ख़िदमत कर रहा है कि मुल्क व बैरूने मुल्क के बेशुमार लोग इस की शाए कर्दा किताबों से फ़ाइदा उठा रहे हैं और अपने ईमान व अमल को संवार रहे हैं।

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के सदक़े व तुफैल में हमारी इस दीनी ख़िदमत को भी क़बूल फ़रमाए।

<u>एक और अहम खिदमते दीनः</u>-कुरआन मजीद के इब्तिदाए नुज़ूल से आज तक उस की किताबत व तबाअ़त की सेहत का हर अहेद में बहुत ऐहतिमाम किया गया है और उस को ग़लत छपने से बचाने के लिये हमेशा हर मुम्किन कोशिश की गई है। लेकिन इस ज़माने के चन्द दुनिया दार नाशिरीन ज़्यादा से ज़्यादा नफा ख़ोरी के लिये निहायत ग़ैर ज़िम्मेदारी व ला परवाई से कसीर ग़लतियों के साथ कुरआन मजीद छाप कर शाए कर रहे थे और मुल्क व बैरूने मुल्क जहां तक कुरआन मजीद फैलाया जा रहा था हर जगह बेशुमार उलमा व हुफ्फाज़ मौजूद रहे मगर किसी ने इस पर कोई तवज्जोह नहीं की।

और यह अजीब बात है कि ग़लतियां तर्जमा रज़विय्या ही के मतन में पाई गईं, ग़ालिबन इस लिये कि अहले सुन्नत व जमाअ़त को हिन्दुस्तान में इस तर्जमा वाला कुरआन नहीं मिल पा रहा था और पूरी क़ौम इस के लिये बहुत बेचैन थी तो नाशिरीन ने सोचा कि चाहे जैसे छपवा दिया जाएगा, सुन्नी अवाम व ख़्वास सब ले लेंगे और थोड़े ही ख़र्च में ज़्यादा नफा हासिल हो जाएगा।

सब से पहले एक कुतुब ख़ाने के मतबूआ़ कुरआन मजीद के मतन में हमें पचास ग़लतियां मिलीं। फिर इसी कुतुब ख़ाने के छपवाए हुए दूसरे नुस्ख़े में 145 ग़लतियों ज़ाहिर हुईं। उस के बाद दूसरी कम्पनी के मतबूआ़ कुरआन में 40 ग़लतियां पाई गईं। फिर तीसरे बुक डिपो के छपवाए हुए में 56 ग़लतियां मिलीं। इस के बाद चौथे कुतुब ख़ाने के मतबूआ़ में 75 ग़लतियां ज़ाहिर हुईं। फिर पांचवीं कम्पनी के शाए कर्दा कुरआन में 34 ग़लतियां पाई गईं। और फिर मेरी तस्हीह के बा वजूद उस के दूसरे एडीशन के नुस्ख़े में 23 ग़लतियां मिलीं। इस के बाद छठे इदारे के मतबूआ़ में 68 ग़लतियां ज़ाहिर हुईं, जिन की तस्हीह तफ्सील के साथ माहनामा पासबान इलाहाबाद, माहनामा अअ़्ला हज़रत बरेली शरीफ और माहनामा फैज़ुर रसूल बराऊं शरीफ के मुख़्तलिफ शुमारों में शाए की गई। साथ ही हम ने सुबूत के साथ यह भी ऐलान किया कि

तर्जमा रज़विय्या मअ़ तफ्सीर सदरुल अफाज़िल के साथ कुरआन मजीद के मज़ामीन की जो फेह्‌रिस्त शाए की जा रही है, वह खुला हुआ फरेब है। नाशिरीन को ऐसी फेह्‌रिस्त के साथ कुरआन मजीद छपवाने से मना किया जाए और न मानें तो उन का बायकाट किया जाए। लेकिन आज तक हमारे इस ऐलान पर किसी ने कोई ध्यान नहीं दिया और कुतुब ख़ाने वाले बराबर उसी झूठी फेह्‌रिस्त को शाए कर रहे हैं जो मुफीद होने के बजाए सुन्नियों के लिये बेइन्तिहा मुज़िर है कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के हाज़िर व नाज़िर होने, ग़ैरुल्लाह से मदद मांगने और इन के अलावा दीगर मुख़्तलफ फीह मसाइल के मुतअल्लिक़ फेह्‌रिस्त में जो आयाते मुबारका लिखी गई हैं, मुख़ालिफीन के सामने जब सुन्नी अवाम उन को पेश करेंगे और कुरआन मजीद के तर्जमा व तफ्सीर में फेह्‌रिस्त के मुताबिक़ उन का ज़िक्र नहीं पाएंगे तो उस के बाद उन का जो हाल होगा वह ज़ाहिर है कि सुन्नी उलमा से वह बदज़न हो जायेंगे, उन को फरेबकार और मक्कार ठहरायेंगे। और मुख़ालिफीन आसानी के साथ उन को अपनी जमाअ़त में शामिल कर लेंगे।

यह ग़लती सब से पहले बरेली शरीफ की कुरआन कम्पनी ने की है जैसा कि उस के एक ज़िम्मेदार मिम्बर ने मुझ से खुद बयान किया कि हम लोगों ने मज़ीद इफादियत के लिये कुरआन मजीद के साथ उस के मज़ामीन की फेह्‌रिस्त भी शाए की है और दूसरा सुबूत यह है कि तफ्सीर सदरुल अफाज़िल के साथ फेह्‌रिस्त होने का ऐलान सब से पहले इसी कम्पनी ने किया। देखिये माहनामा नूरी किरन बरेली शरीफ़ शुमारा नवम्बर 1972 ई0।

अस्ल वाक़िआ यह है कि वह तफ्सीर नूरुल इरफान की फेह्‌रिस्त है जो तफ्सीर ख़ज़ाइनुल इरफान के साथ ज़म कर दी गई है, इस लिये मज़ामीन उस के मुताबिक़ नहीं।

मैं ने कुतुब ख़ाना इशाअ़तुल इस्लाम देहली पर फेह्‌रिस्त की फरेब

कारी दिखाने के बाद बहुत दबाव डाला कि वह कुरआन मजीद बिला फेह्रिस्त वाला छापे, उस ने एक ऐडीशन ऐसा ही तबअ़ किया लेकिन दुनिया दार कुतुब फरोशों ने सुन्नी अवाम को बेवकूफ बनाने के लिये फिर उस कुतुब ख़ाने को उसी फेह्रिस्त के साथ कुरआन मजीद छपवाने पर मजबूर कर दिया।

तबाअ़त कुरआन मजीद के अग़लात की तस्हीह रिसालों में छपवाने के सबब अक्सर नाशिरीन से हमारे तअ़ल्लुक़ात ख़राब हो गए, इसी लिये हम ने इस मज़्मून के शुरू में उन को दुनिया दार लिखा इस लिये कि अगर वह दीनदार होते और कुरआन की ग़लत तबाअ़त के सबब उन्हें कुछ भी अपनी आक़िबत के ख़राब होने का अंदेशा होता तो शुक्र गुज़ार होने के बजाए हम से नाराज़ न होते बल्कि वह खुद हमारी तस्हीह को कसीरुल इशाअ़त माहनामों में बार-बार शाए करते यहां तक कि जितने लोगों के पास उन के शाए कर्दा नुस्ख़े हैं वह सब आगह हो जाते और कुरआन की ग़लत ख़्वानी से बच जाते। मगर उन्हों ने ऐसा इस लिये नहीं किया कि उन को अपनी नफा ख़ोरी में कमी का अंदेशा था।

<u>दुनियवी सिलाः</u>-इस तस्हीह का हमें दुनियवी सिला यह दिया गया कि जब कुतुब ख़ाना इशाअ़तुल इस्लाम देहली ने हमारी तस्हीह के मुताबिक़ कुरआन मजीद छपवाया तो साथ ही उस ने यह ऐलान भी किया कि मुफ्ती जलालुद्दीन अमजदी की तस्हीह के मुताबिक़ इसे तबअ़ करवाया गया है। मगर फिर भी उस में इम्ला की बाज़ ग़लतियां रह गई थीं, जिस पर लंदन से एक साहब ने मुहासबा करते हुए गुस्ताख़ियों से भरा हुआ ख़त लिखा कि जब आप की निगरानी में कुरआन मजीद तबअ़ हुआ तो यह ग़लतियां कैसे रह गईं? हालां कि मेरी निगरानी में नहीं छपा था, बल्कि जो ग़लतियां हमें नज़र आईं सिर्फ उनकी तस्हीह हम ने माहनामों में शाए कर दी थी।

और कुतुब ख़ाना इशाअ़तुल इस्लाम के उसी ऐलान पर कशमीर के बाज़ लोगों को यह ग़लत फ़हमी हो गई कि तफ्सीर ख़ज़ाइनुल

इरफान के साथ जो फेह्रिस्त शाए की जा रही है वह हम ने मुरत्तब की है जिस से सुन्नियत को नुक्सान पहुंच रहा है तो एक गुस्ताख़ ने बिला तहक़ीक़ बद तमीज़ियों से भरा हुआ ख़त लिखा हालां कि हम ख़ुद उस फेह्रिस्त के ग़लत होने के ऐलान माहनामों में कर चुके हैं।

और हिन्दुस्तान के एक मशहूर मुफ्ती ने कहा कि आप बिला वजह नाशिरीन के पीछे पड़े हुए हैं, यह सारी ग़लतियां तो उसी नुस्ख़े में पाई जाती हैं जो हज़रत सदरुल अफाज़िल ने छपवाया था।

इस का मतलब यह हुआ कि जब हज़रत सदरुल अफाज़िल के शाए कर्दा नुस्ख़े में यह सारी ग़लतियां पाई जा रही हैं तो उस की तस्हीह न की जाए बल्कि क़ियामत तक उसे बाक़ी रहने दिया जाए।

*बरीं अक़्लो-दानिश बबायद गिरीस्त*

और फिक़्हे हनफी की अज़ीम किताब बहारे शरीअ़त में गुमराह कुन तहरीफ की मज़मूम हरकत की गई कि उस के मुस्बत मसाइल को मन्फी और मन्फी को मुस्बत बना कर छापा गया लेकिन उस के मुतअल्लिक़ किसी ने क़लम नहीं उठाया और न कुछ लिखा, हम ने चन्द ग़लतियां बतौर सुबूत पेश करते हुए उस के ख़िलाफ मज़ामीन लिखे जो माहनामा पासबान इलाहाबाद शुमारा मार्च 1979 ई० और माहनामा फैज़ुर रसूल बराऊं शरीफ शुमारा अप्रैल 1979 ई० में शाए हुए, अगर ऐसा न किया गया होता तो कुछ दिनों बाद मुख़ालिफीन उस के मुसन्निफ फक़ीहे आज़मे हिन्द हज़रत सदरुश शरीआ़ अल्लामा हकीम अबुल ओला मुहम्मद अमजद अली साहब क़िब्ला रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह की ज़ात सतूदा सिफात पर कीचड़ उछालते और उन्हें बदनाम करने की नापाक कोशिश करते। —— ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस इस ख़िदमत को भी क़बूल फरमाए और हमें अज्रे जज़ील व जज़ाए जलील अता फरमाए। आमीन

☆☆☆

# आम हालात

## हक़ गोई व बेबाकी

*आईने जवां मरदां हक़ गोई व बेबाकी*

*अल्लाह के शेरों को आती नहीं रूबाही*

उलमाए दीन का हक़-गो और बेबाक होना ज़रूरी है, उन पर लाज़िम है कि बातिल से न डरें और बिला ख़ौफ लौमते लाइम हक़ को बयान करें। ज़िस के अन्दर यह जौहर नहीं है वह हक़ीक़त में वारिसे अंबिया कहलाने का मुस्तहिक़ नहीं।

अल्हम्दु लिल्लाह! हम ने बड़ी-बड़ी ताक़त रखने वालों, बड़े-बड़े पीरों और बड़े-बड़े दौलतमन्दों की परवा किये बगैर बहुत से मौकों पर हक़-गोई की है जिस में से चन्द अहम वाक़िआत यह हैं।

## दहरियों के मुक़ाबले में हक़-गोई

बिहम्दिल्लाहि तआला हमारा वतन ओझा गंज वहाबियों, देवबंदियों और राफज़ियों वग़ैरा से पाक है लेकिन कुछ लोग कम्यूनिज़म से मुतअस्सिर होकर दहरिया हो गए। अल्लाह व रसूल जल्ल जलालहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का इनकार किया उन की शान में गुस्ताख़ियां और बे अदबियां कीं। और यह वह लोग थे कि जिन के बाप पहले ज़मीनदार थे और हमारी हर्रय्या तहसील के सब से बड़े हकीम और डाक्टर थे, इस लिये वह लोग रुपये पैसे से बहुत मज़बूत थे और बाप की साबिक़ा ज़मीनदारी व मौजूदा डाक्टरी ` सबब पूरे इलाक़े में बड़ा असर रखते थे।

जब उन गुस्ताख़ियों की आवाज़ हमारे कानों में आई तो अगर्चे हमारी इल्मी व माली पोज़ीशन उस ज़माने में कमज़ोर थी और हमारे मुख़्लिसीन भी बहुत कम थे मगर हम ने उन के ख़िलाफ खुल्लम खुल्ला तक़रीरें करनी शुरू कर दीं और हर जुमा, हर महफिले मीलाद और

मुहर्रम शरीफ़ की हर मज्लिस में बराबर उन का रद करने लगे।

एक बार दहरियों के बड़े बाप आए उन्हों ने कहा हमारे घर वाले तो बहुत ख़राब होते चले जा रहे हैं, हमारा फुलां भतीजा कहता है कि कुरआन पुराना हो गया अब वह अमल के क़ाबिल नहीं रह गया।

*(मआज़ल्लाहि रब्बुल आलमीन)*

कुरआन मजीद की हक़्क़ानियत बयान करने के लिये उन्हों ने मीलाद शरीफ़ की महफ़िल का इन्इक़ाद किया, हम ने उस में हाज़िर होकर कुरआन मजीद के मुनज़्ज़ल मिनल्लाह होने और हमेशा के लिये उस के मश्अ़ले हिदायत होने पर अक़्ली व नक़्ली दलाइल के अंबार लगा दिये और दहरियों के दरवाज़े ही पर उन का बहुत सख़्त रद किया।

हमारी तक़रीरों के जवाब में उन्हों ने और उन के घर वालों ने मौलवियों की बुराई करनी शुरू की कि फुलां मौलवी ने यह ग़लत काम किया और फुलां मौलवी ने यह बुराई की। आबादी के लोगों ने उन को यह जवाब दिया कि मगर हमारे यहां के मौलाना साहब में तो इस क़िसम का कोई ऐब नहीं है किसी जगह के किसी मौलवी ने अगर कोई बुराई की होगी तो उस का ज़िम्मेदार वही होगा।

जब इस तरह उन को कामयाबी नज़र न आई तो उन्हों ने धमकी देनी शुरू की कि थानेदार से कह कर परेशान करायेंगे। और तरह-तरह के मुक़द्दमों में फंसा कर हालत ख़राब कर देंगे। हम ने कहा अगर वह ऐसा करेंगे तो हम हर जुमा को एक एक मुस्लिम आबादी में जाकर उनके ख़िलाफ़ तक़रीर करेंगे और उन के तमाम उयूब बयान करके तश्त अज़ बाम करेंगे और इस तरह हम उन को ज़लील करेंगे कि इलाक़ा में मुंह दिखाने के क़ाबिल न रहेंगे।

ज़िला बस्ती छावनी के रईस जनाब रियासत अली ख़ां साहब मरहूम (ख़ुदाए तआ़ला उन की क़ब्र पर रहमतों के फूल बरसाए) वह शुऐबुल औलिया हज़रत शाह मुहम्मद यार अली साहब क़िब्ला रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह के मख़्सूस मुरीद थे और मेरे मुख़्लिसीन में से थे. मैं ने उन से दहरियों की धमकी का ज़िक्र किया कि वह लोग

मुझे मुक़द्दमात में परेशान करने को कहते हैं, उन्हों ने कहा आप उन से दबियेगा नहीं, अगर ज़रूरत पड़ेगी तो हम छावनी से लेकर बस्ती तक रुपये बिछा देंगे, मगर दहरियों को ऐसा करने की जुर्अत न हुई यहां तक कि वह ओझा गंज से मुन्तक़िल होकर दूसरे मक़ामात पर चले गए और दहरियत का फ़ित्ना बिल्कुल ख़त्म हो गया।

हमारा ख़ानदान जो ओझा गंज में सब से ज़्यादा फैला हुआ है और तरह-तरह के लोगों पर मुश्तमिल है, दहरिये भी इसी ख़ानदान के अफ़राद हैं मगर सारी क़राबत और तमाम रिश्तों पर इस्लाम का रिश्ता बाला है, जब वह मुसलमान नहीं रह गए और दहरिया होकर मुरतद हो गए जो काफ़िरों की बदतरीन क़िसम है तो हम ने तक़रीबन 25 बरस से मुकम्मल उन का बायकाट कर रखा है। न उन की शादी वग़ैरा में हमारे घर का कोई फ़र्द शरीक होता है और न हम अपने घर की किसी तक़रीब में उन को मदऊ करते हैं।

*अपने अज़ीज़ वो हैं जिन्हें वो अज़ीज़ हैं*
*हम को हैं वो पसंद जिन्हें आएं वो पसंद*

*सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम*

मगर अफ़्सोस कि ओझा गंज के बाज़ मौलवी उन दहरियों से शीरो-शकर की तरह मिलते हैं और उन की शादी व ग़मी में शरीक हो कर हमारे किये हुए पर पानी फेरने की कोशिश करते हैं। ख़ुदाए अज़्ज़ व जल्ल उन्हें हुक्मे शरीअत के मुताबिक़ दहरियों से दूर रहने की तौफ़ीक़े रफ़ीक़ बख़्शे। आमीन

ओझा गंज के डाक्टर ज़मीरुल हसन मरहूम जो पुराने ज़माने के ज़मीनदार थे, यूनानी, ऐलोपैथिक, हम्यूपैथिक और आयुर्वेदिक वग़ैरा हर तरह से लोगों का इलाज करते थे, जिन की डाक्टरी और तबाबत की पूरे इलाक़ा में धूम मची हुई थी और कुर्बो-जवार के बड़े-बड़े बरहमन और ठाकुर हाज़िर होकर उन को सलाम किया करते थे। उन्हों ने बाज़ अहम अक़ाइदे इस्लामी की तज़्हीक की और मज़ाक़ उड़ाया तो अगर्चे वह हमारे ख़ानदानी चचा थे और बड़े असरात रखते थे मगर इस बुनियाद पर हम

ने उन का बाइकाट कर दिया। शादी वग़ैरा के मौक़ा पर वह बराबर हमारे घर को दअ्वत देते और मिठाई वग़ैरा भिजवाते लेकिन हम उन की दअ्वत को रद कर देते और मिठाई को बपास कर देते।

इसी तरह तक़रीबन दस साल तक वह अपनी सारी तक़रीबात में बुलाते रहे और हम जाने से इनकार करते रहे, यहां तक कि वह मरज़ुल मौत में मुब्तला हो गए, तो हमें अक्सर याद करने लगे, लोगों ने हम से कहा वह आप को बहुत याद करते हैं। हम ने कहा याद करने दो, वह मर जाएंगे मगर हम उन के क़रीब न जायेंगे।

जब उन की सेहत बहुत ज़्यादा ख़राब हुई तो लोगों ने कहा, वह आप का ज़िक्र बहुत करते हैं और आप से मिलना चाहते हैं मगर आने से माज़ूर हैं, मैं ने कहा, मैं उन से मिल सकता हूं, बशर्ते कि वह तौबा करने के लिये तैयार हों।

एक शख़्स उन के घर गया और आकर बताया कि वह तौबा करने के लिये तैयार हैं, मैं फौरन उन के पास गया, उन्हों ने बख़ुशी तौबा और तज्दीदे ईमान किया। मैं ने उन से कहा कि आप अपनी औलाद को ताकीद कर दीजिये कि वह इस्लाम के ख़िलाफ़ कुछ न बोलें और अक़ीदा सहीह रखें कि बद अमली तो किसी हद तक बर्दाश्त की जा सकती है मगर बद ऐतिक़ादी नहीं बर्दाश्त की जा सकती, तो उन्हों ने मेरी मौजूदगी ही में अपने लड़कों को इस्लामी अक़ाइद पर मज़्बूती के साथ क़ाइम रहने की वसिय्यत फ़रमाई।

उन के घर के बाज़ लोगों को उन का तौबा और तज्दीदे ईमान बुरा मालूम हुआ, जिस के ख़िलाफ़ उन से कुछ कहलवाना चाहा मगर उन्हों ने कुछ न कहा और अपनी तौबा पर क़ाइम रहे यहां तक कि इस वाक़िआ के तक़रीबन एक माह बाद रमज़ान शरीफ़ के मुबारक महीने में इन्तेक़ाल कर गए।

खुदाए अज़्ज़ व जल्ल उन्हें अपनी मग़फ़िरत से नवाज़े और क़ियामत के दिन सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के दामने करम का साया नसीब फ़रमाए। आमीन

# मुम्बई में हक़-गोई

एक साल माहे मुहर्रम में मुम्बई वालों की दअ्वत पर मैं कुरैश नगर कुरला में वअ्ज़ कह रहा था, दौराने तक़रीर मुझे ख़बर दी गई कि फौजदार सेठ का इन्तेक़ाल हो गया, शख़्से मज़कूर बस्ती ज़िला का रहने वाला था, मेरा बड़ा मुख़्लिस था और मुहर्रम कमेटी कुरैश नगर कुरला के एक ख़ास मिम्बर का चचा था। जनाज़ा गुस्ल व कफन के बाद कुरला मोहल्ला की एक मस्जिद में रखा गया और मुझे जनाज़ा की नमाज़ पढ़ाने के लिये ले जाया गया, जब मुझ से मस्जिद की तरफ मुड़ने के लिये कहा गया तो मैं ने कहा इधर कहां? लोगों ने कहा जनाज़ा इसी मस्जिद में पढ़ना है, हम ने कहा जनाज़ा मस्जिद में पढ़ना जाइज़ नहीं, हम वहां नहीं पढ़ सकते, जनाज़ा बाहर लाइये, लोगों ने कहा मुम्बई में सब मौलाना मस्जिद में नमाज़े जनाज़ा पढ़ाते हैं, इस लिये कि शहर में मस्जिद के बाहर जनाज़ा पढ़ाने के लिये जगह नहीं है।

हम ने कहा हां मुम्बई में जल्सा व क़व्वाली के लिये जगह है, यहां तक कि सनीमा व सर्कस और हर क़िसम के लहवो-लइब के लिये भी जगह है मगर नमाज़े जनाज़ा के लिये जगह नहीं है, हम मस्जिद में नहीं पढ़ा सकते, जो लोग पढ़ाते हैं वह ना जाइज़ करते हैं।

कुछ लोगों ने कहा कि हुज़ूर मुफ्तिए आज़म हिन्द क़िब्ला, सैय्यिदुल उलमा हज़रत मौलाना सैयद आले मुस्तफा साहब क़िब्ला और महबूबुल उलमा हज़रत मौलाना मुफ्ती महबूब अली ख़ां साहब क़िब्ला (रहिमहुमुल्लाह) मस्जिद में नमाज़े जनाज़ा पढ़ाते रहे और आप ना जाइज़ कहते हैं, हम ने कहा आप लोग बड़ी-बड़ी शख़्सियतों का नाम लेकर हम को दबाने की कोशिश मत कीजिये, हम कहां तहक़ीक़ करने जायें कि यह हज़रात पढ़ाते थे या नहीं। आप लोग दो बातों में से एक बात कीजिये या तो मुझ से फिक़्ह की मोतबर किताबों में ना जाइज़ देख लीजिये और या तो आप लोग जाइज़ दिखा दीजिये, बाक़ी हम कोई तीसरी बात सुनने के लिये तैयार नहीं।

कुछ लोग ज़िला बस्ती के एक बहुत बडे सेठ को लाए, जो दारुल उलूम फैज़ुर रसूल को बतौर इमदाद हर साल बड़ी रक़म दिया करते थे कि शायद उनके दबाव से मस्जिद में नमाज़े जनाज़ा पढ़ा दें, उन्हों ने कहा चलिये पढ़ा दीजिये ----- मुम्बई में सब पढ़ाते हैं। हम ने कहा जिस मुम्बई में पले हाउस के सोना पुर (क़ब्रिस्तान) को दुकान बना लिया गया और मुसलमान मुर्दों के सीनों पर रोज़ाना घन गिराया जात है मगर किसी मुसलमान के कान पर जूं नहीं रेंगती, आप उस मुम्बई का नाम लेते हैं और हम किताब की बात करते हैं। मेरे इस जवाब पर वह ख़ामोशी के साथ चले गए और हमारी हक़-गोई से वह इस क़द्र मुतअस्सिर हुए कि उस के बाद जब भी मिले पहले से ज़्यादा इज़्ज़त के साथ पेश आए।

ग़रज़े कि हम किसी तरह नमाज़े जनाज़ा मस्जिद में पढ़ाने के लिये तैयार न हुए और बराबर कहते रहे कि हमें जाने दीजिये, आप लोग किसी और से पढ़वा लीजिये, मगर हमारी इस बात के जवाब में फौजदार मरहूम का भतीजा यही कहता रहा कि हम किसी और से नहीं पढ़वायेंगे, चचा साहब आप को बहुत मानते थे, इस लिये उन की नमाज़े जनाज़ा आप ही को पढ़ानी है और जब हम कहते जनाज़ा मस्जिद के बाहर निकालिये तो वह दौड़ कर मस्जिद में जाता मगर जनाज़ा निकालने में कामयाब न होता। मालूम हुआ कि मस्जिद के मुसल्लियान यह कहते हैं कि अगर नमाज़े जनाज़ा मस्जिद में न पढ़ी गई तो न हम जनाज़ा की नमाज़ पढ़ेंगे और न मिट्टी देंगे और वह लोग ऐसा इस लिये कह रहे थे कि उन के इमाम साहब 32 साल से मस्जिद में नमाज़े जनाज़ा पढ़ रहे थे, आज जनाज़ा मस्जिद में अगर बग़ैर नमाज़ हुए उस के निकल जाने में इमाम साहब की तौहीन हो रही थी।

जब मरहूम के भतीजे ने देखा कि दोनों तरफ़ से बहुत सख़्ती पैदा हो गई है तो उस ने लोगों से हाथ जोड़ कर रोते हुए कहा कि पंचो साहिबो! हम तो जाहिल आदमी हैं, कुछ जानते नहीं, अल्बत्ता हम यह

जानते हैं कि हमारे चचा साहब हज़रत मुफ्ती साहब क़िब्ला को बहुत मानते थे अगर वह बराऊं शरीफ में होते तो हम इस मौक़ा पर उन्हें बुलाने नहीं जाते और जबकि वह यहां मौजूद हैं अगर वह जनाज़ा नहीं पढ़ाएंगे तो चचा मरहूम को तक्लीफ होगी। इस बात पर मुसल्लियाने मस्जिद नर्म पड़ गए और जनाज़ा मस्जिद के बाहर निकाला गया तो हम ने नमाज़ पढ़ाई।

## एक बड़े बाबा

मुम्बई वह शहर है कि जिस की हर गली में दादा और बाबा पाए जाते हैं। उन्हीं में से एक बाबा ऐसे हैं जिन को मुम्बई के बाज़ लोग बड़ा बाबा मानते हैं, जनाज़ा में वह भी शरीक थे, नमाज़े जनाज़ा मस्जिद में जाइज़ और ना जाइज़ होने की बात जब हो रही थी तो उस वक़्त वह कुछ नहीं बोले लेकिन सुबह सवेरे हमारी मुख़ालफत के लिये उठ खड़े हुए, हम पर फित्ना अंगेज़ी का इल्ज़ाम लगाया और हमारे ख़िलाफ फत्वा लेने की कोशिश की मगर जब उलमाए अहले सुन्नत ने भरपूर हमारी ताईद फरमाई और यह उन से मायूस हुए तो फिर कुरैश नगर कुरला की मुहर्रम कमेटी के ज़रिये हम को स्टेज से हटाने की कोशिश की और जब इस में भी कामयाब न हुए तो फौजदार मरहूम के तीजे की मज्लिस में हम को फित्ना अंगेज़ कह कर अपने मुख़्लिसीन के सामने सख़्त बरहमी ज़ाहिर की। यानी जो हुक्मे शरअ़ के ख़िलाफ कर रहे हैं वह सुलह पसंद हैं और हम ने शरीअ़त के हुक्म पर अमल किया तो हम फित्ना अंगेज़ और क़ाबिले मलामत हो गए।

ख़ुलासा यह कि नाम निहाद बाबा ने हुक्मे शरअ़ की मुख़ालिफत की और अअ़्ला हज़रत इमाम अहले सुन्नत फाज़िले बरैलवी रहम-तुल्लाहि तआ़ला अलैह फरमाते हैं कि सच्चे मज्ज़ूब की पहचान यह है कि वह शरीअ़ते मुतह्हरा का मुक़ाबला नहीं करेगा। (अल्-मलफूज़:2/80)

और जब मज्ज़ूब की यह पहचान है तो ग़ैर मज्ज़ूब वली की बदर्जए औला यही पहचान है कि वह कभी हुक्मे शरअ़ की मुख़ालिफत नहीं कर सकता।

बड़े बाबा कुल्ब मुम्बई में रहते हैं, दाढ़ी रोज़ मुंडाते हैं और दूसरों को मुंडाने का हुक्म भी देते हैं। शुऐबुल औलिया रहमतुल्लाहि तआला अलैह के एक मुरीद जो बाबा के मोअ्तक़िदीन में से हैं, उन्हों ने बयान किया कि एक डाक्टर जो हुज़ूर मुफ्तिए आज़मे हिन्द क़िब्ला रहमतुल्लाहि तआला अलैह के मुरीद हैं, उन्हों ने बाबा के इशारे पर दाढ़ी मुंडा ली और बराबर मुंडा रहे हैं, मुझ से भी बाबा ने कहा कि दाढ़ी मुंडा लो, तो मैं ने जवाब दिया कि आप अपने हाथ से उस्तुरा उठा कर मूंडने वाले को दीजिये और हुक्म कीजिये कि वह मेरी दाढ़ी मूंडे तो मैं इस सूरत में दाढ़ी मुंडा लूंगा। तम्म कलामुहू

सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने बार-बार दाढ़ी बढ़ाने का हुक्म फरमाया इसी लिये कोई मुहब्बत वाला दाढ़ी मुंडाना गवारा नहीं करता कि जब उस्ताज़ और मां बाप के हुक्म पर अमल न करने से उन को तक्लीफ होती है तो महबूबे काइनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के हुक्म पर अमल न करने से उन को भी यक़ीनन तक्लीफ होगी।

इसी लिय फ़ुक़हाए किराम ने दाढ़ी मुंडाने को हराम क़रार दिया है। दुर्रे मुख़्तार मअ् शामीः5/261 में है يحرم على الرجل قطع لحيته आदमी पर दाढ़ी काटना, मुंडाना हराम है। और अअ्ला हज़रत रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि दाढ़ी मुंडाना हराम है। (फतावा रज़विय्यहः6/168) और हज़रत सदरुश शरीआ रहमतुल्लाहि तआला अलैह लिखते हैं कि दाढ़ी बढ़ाना सुनने अंबियाए साबिक़ीन से है, मुंडाना या एक मुश्त से कम करना हराम है। (बहारे शरीअतः16/164)

मगर शख़्से मज़कूर जो अलानिया फेअ्ले हराम का इरतिकाब करता है और दूसरों को हराम पर अमल करने का हुक्म भी देता है, उस को नज़्राना वसूल करने वाले मौलवी और तिजारत के लिये रुपया पाने वाले सेठों ने मुम्बई का कुतब मशहूर कर रखा है हालां कि इरशादे खुदावन्दी हैः إِنْ أَوْلِيَاؤُهُ إِلَّا الْمُتَّقُونَ यानी अल्लाह के वली सिर्फ मुत्तक़ी लोग

हैं (पारा:9, रुकूअ्:18) और फेअ्ले हराम का मुरतकिब मुत्तक़ी नहीं हो सकता तो ऐसा शख़्स वली भी नहीं हो सकता।

यहां तक कि शुऐबुल औलिया क़िब्ला रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह फ़रमाया करते थे कि अगर कोई हवा में उड़ता जा रहा हो और बुज़ुर्गी का दावा रखता हो मगर शरीअ़त का पाबंद न हो तो मैं उसे कुछ नहीं समझता, बल्कि यहां तक फ़रमाते थे कि मेरे नज़्दीक वह इस्तिंजा के ढेले के बराबर भी वक़अ़त नहीं रखता, मगर उन के बाज़ मुरीदीन भी अपने पीर की बातों को पसे पुश्त डाल कर उस फ़ासिक़े मोअ्लिन को बहुत बड़ा वली क़रार देते हैं और दलील में यह पेश करते हैं कि हज़रत मुजाहिदे मिल्लत मौलाना हबीबुर रहमान साहब क़िब्ला रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह बाबा की ताज़ीम किया करते थे।

लेकिन हमें इस बयान का सहीह होना तस्लीम नहीं, इस लिये कि बहुत से लोग जब कोई ग़लत काम करते हैं तो ऐतराज़ करने वालों का मुंह बन्द करने के लिये झूठा बयान दे देते हैं कि फ़ुलां बुज़ुर्ग ने ऐसा किया है।

माहे रमज़ान 1368 हि0 मुताबिक़ 1949 ई0 ज़मानए तालिब इल्मी में हम नाग भेड़ ज़िला चांदा (महाराषटर) में तरावीह पढ़ाने के लिये गए जो नागपूर से साठ मील यानी 96 किलो मीटर पर है, फिर दरमियान साल किसी तातील के मौक़ा पर हम ने अपने एक साथी को लेकर बतौर तफ़रीह नाग भेड़ गए, मग़रिब की नमाज़ पढ़ाने के लिये हम ने उसी को खड़ा किया, उस ने क़स्र पढ़ाई, यानी शरई मुसाफ़िर होने के सबब मग़रिब की नमाज़ तीन रकअ़त के बजाए दो ही रकअ़त पढ़ाई, जब शोर हुआ कि मग़रिब की नमाज़ में क़स्र नहीं है तो उस ने कहा बहारे शरीअ़त के मुसन्निफ़ हज़रत सदरुश शरीआ़ रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह के साथ मैं रहा हूं, उन्हों ने हमेशा सफ़र में मग़रिब की नमाज़ दो ही रकअ़त पढ़ाई है, इस जवाब को सुन कर सब लोग ख़ामोश हो गए।

एक मौलाना जो ज़िला गोंडा के रहने वाले थे और एक बड़े मदरसे

के सदर मुदर्रिस भी हैं वह एक ग़लती में मुब्तला थे, मुम्बई कुरला ग़फ़ूर ख़ां स्टेट की ग़ौसिया मस्जिद में जब लोगों ने उन पर ऐतराज़ किया तो उन्हों ने कहा कि सैय्यिदुल उलमा हज़रत मौलाना आले मुस्तफ़ा साहब क़िब्ला इस को जाइज़ क़रार देते हैं, उस ज़माने में हज़रत सैय्यिदुल उलमा क़िब्ला रहमतुल्लाहि तआला अलैह बा हयात थे, मैं ने फ़ौरन उन की क़ियाम गाह मस्जिद खड़क पर जा कर उन से मुलाक़ात की और पूछा कि हज़रत फ़ुलां चीज़ को जाइज़ क़रार देते हैं? उन्हों ने फ़रमाया *मआज़ल्लाह ला हौला वला कुव्वत इल्ला बिल्लाह,* भला मैं ऐसी चीज़ को जाइज़ क़रार दे सकता हूं।

यहां भी ऐसा ही मामला है कि अपनी ग़लती पर पर्दा डालने के लिये लोगों ने मुजाहिदे मिल्लत क़िब्ला का नाम लेते हैं और अगर यह तस्लीम भी कर लिया जाए कि उन्हों ने उस फ़ासिक़ मोअ्लिन की ताज़ीम की है जिस से उस का बुजुर्ग होना साबित होता है तो सवाल यह पैदा होता है कि यह तो रहा उन का अमल मगर इस के बारे में उन का क़ौल क्या है? इस लिये कि क़ौल के मुक़ाबला में अमल मरजूह होता है जैसा कि उसूले हदीस का क़ाइदा है। और अगर उस के मुतअल्लिक़ हज़रत का कोई क़ौल नहीं है तो जो शरीअ़त का क़ौल है वही उन का भी क़ौल मानना पड़ेगा। इस लिये कि शरीअ़त के ख़िलाफ़ वह क़ौल कर ही नहीं सकते।

और शरीअ़त का फ़रमान यह है कि ऐसे शख़्स की ताज़ीम नहीं की जाएगी बल्कि बुराई बयान क़ी जाएगी ताकि लोग उस के फ़रेब से बचें। जैसा कि आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िल बरैलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फ़रमाते हैं कि हदीस में है नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं:

أَتَرْغَبُوْنَ عَنْ ذِكْرِ الْفَاجِرِ مَتٰى يَعْرِفُهُ النَّاسُ اُذْكُرُ الْفَاجِرَ بِمَافِيْهِ يَحْذَرُهُ النَّاسُ۔

क्या फ़ाजिर को बुरा कहने से परहेज़ करते हो लोग उसे कब पहचनेंगे, फ़ाजिर की बुराइयां बयान करो कि लोग उस से बचें। (फ़तावा रज़विय्यह:3/251)

और आला हज़रत रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह रद्दुल मोहतार से नक़ल फ़रमाते हैं اماالفاسق فقدعللوا كراهة تقديمه فانه لايهتم لامردينه وبان فى تقديمه للامامة تعظيمه وقدوجب عليهم اهانته شرعاً (फतावा रज़विय्यह:3/148)

## तबक़ए मलामतियह

बाज़ लोगों का ख़्याल है कि बाबा तबक़ए मलामतियह के बुज़ुर्ग हैं यानी दाढ़ी इस लिये मुंडाते हैं ताकि लोग उन की मलामत करें ओर उन को बुरा समझें।

हम कहते हैं कि मलामत की तीन क़िस्में हैं, जैसा कि शैख़ुल मशाइख़ सुल्तानुल आरिफ़ीन हज़रत दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह तहरीर फ़रमाते हैं कि एक यह कि वह सीधा चले, दूसरे यह कि वह क़स्द करे, तीसरे यह कि वह तर्क करे।

पहली क़िस्म की सूरत यह है कि एक शख़्स काम करता है और उमूरे दीनिया में कामिल ऐहतियात बरतता है और मोआ़मलात में मुराआ़त से काम लेता है मगर ख़ल्क़ फिर भी उस पर मलामत करती है क्यों यह लोगों की आम आदत है, मगर वह शख़्स किसी की परवाह नहीं करता।

दूसरे यह कि कोई शख़्स लोगों में साहिबे इज़्ज़तो-शर्फ होने के साथ उन में मशहूर भी हो और उस का दिल इज़्ज़त की तरफ माइल भी हो, इस के बा वजूद वह यह चाहे कि उन से जुदा होकर यादे इलाही में महव हो जाएं और क़स्दन ऐसी राह इख़्तियार करे जिस से मख़्लूक़ उस पर मलामत करे और ऐसे अमल से शरीअ़त में भी ख़लल न वाक़ेअ़ हो मगर लोग उस से नफ़रत करने लगें और उस से मुतनफ़्फ़िर होकर जुदा हो जाएं।

और तीसरी क़िस्म यह है कि दिल में तो कुफ़्रो-ज़लालत से तबई नफ़रत भरी हो, बज़ाहिर शरीअ़त की मुताबअ़त न करे और ख़्याल करे कि मलामती तरीक़ा पर ऐसा करता हूं और यह मलामत का तरीक़ा उस की आदत बन जाए इस के बा वजूद वह दीन में मज़बूत और

रास्त-रौ हो लेकिन ज़ाहिर तौर पर बग़रज़े मलामत निफ़ाक़ व रिया के तौरो-तरीक़ पर दीन की ख़िलाफ़ वरज़ी करे और मख़्लूक़ की मलामत से बेख़ौफ़ हो, वह हर हाल में अपने काम से काम रखे, ख़्वाह लोग उसे जिस नाम से चाहें पुकारें। (कशफ़ुल महजूब उर्दू:94)

हज़रत दाता के इन जुम्लों को फिर से पढ़िये कि क़स्दन ऐसी राह इख़्तियार करें जिस से मख़्लूक़ उस पर मलामत करे और ऐसे अमल से शरीअ़त में भी ख़लल न वाक़ेअ़ हो --- बज़ाहिर शरीअ़त के मुताबअ़त न करे --- ज़ाहिर तौर पर बग़रज़े मलामत निफ़ाक़ व रिया के तौरो-तरीक़ पर दीन की ख़िलाफ़ वरज़ी करे।

यानी तबक़ए मलामतियह का बुज़ुर्ग क़स्दन ऐसी राह इख़्तियार करता है जिस से मख़्लूक़ उस पर मलामत करे मगर उस के अमल से शरीअ़त में ख़लल नहीं वाक़ेअ़ होता हो, बज़ाहिर शरीअ़त की मुताबअ़त नहीं करता, सिर्फ़ लोगों के देखने में दीन की ख़िलाफ़ वरज़ी करता है लेकिन हक़ीक़त में उस का अमल शरीअ़त के ख़िलाफ़ नहीं होता।

## हज़रत बायज़ीद बुस्तामी

मशहूर बुज़ुर्ग हज़रत बायज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह रमज़ान शरीफ़ के महीने में सफ़र कर रहे थे, जब एक शहर के क़रीब पहुंचे तो वहां बड़ा शोहरा हुआ कि हज़रत बायज़ीद तशरीफ़ ला रहे हैं। शहर के बहुत से लोग इस्तिक़्बाल के लिये निकल पड़े और बड़ी ताज़ीम व तक्रीम के साथ अपने शहर में लाए। हज़रत ने जब लोगों की ख़ातिर व मदारात को मुलाहेज़ा फ़रमाया तो उन का दिल भी मशग़ूल हो गया और वह यादे इलाही से बाज़ रहने के सबब परेशान ख़ातिर हो गए, जब बाज़ार में आए तो रोटी निकाल कर वहीं खाने लगे, यह देख कर सब लोग उन से बरगश्ता हो गए और उन्हें तन्हा छोड़ कर चले गए कि यह कैसे बुज़ुर्ग हो सकते हैं जो रोज़ा भी नहीं रखते। (कशफ़ुल महजूब उर्दू:96)

मगर चूंकि हज़रत मुसाफ़िर थे और मुसाफ़िर को रोज़ा न रखने की

इजाज़त है इस लिये आप का रोटी खाना हक़ीक़त में शरीअ़त के ख़िलाफ नहीं था, सिर्फ ज़ाहिर में ख़िलाफ था, जिस के सबब लोग आप से बरगश्ता हो गए और आप का जो मक़्सद था पूरा हो गया।

हज़रत दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह इस वाक़िआ के बाद तहरीर फरमाते हैं कि इस ज़माना में मलामत की रविश इख़्तियार करने के लिये कोई ग़लत काम करने की ज़रूरत होती थी और ऐसी बात ज़ाहिर करनी पड़ती थी जो अवाम के मंशा व मिजाज़ के ख़िलाफ हो। लेकिन आज अगर कोई चाहे कि उसे मलामत की जाए तो दो रकअ़त नफल शुरू करके उसे ख़ूब तूल दे दे या दीन की मुकम्मल पैरवरी शुरू कर दे ताकि तमाम लोग उसे रियाकार और मुनाफिक़ कहने लगें।

और तहरीर फरमाते हैं कि जो शख़्स तर्क के तरीक़ा पर मलामत इख़्तियार करे और कोई काम ख़िलाफे शरीअ़त करके यह कहे कि यह अमल मैं ने हुसूले मलामत के लिये किया है तो यह खुली हुई ज़लालत व गुम्राही है और ज़ाहिरी आफत व सच्ची हवा परस्ती है।

(कशफुल महजूब उर्दू:96)

## ख़ुलासा

हज़रत दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह की तहरीरों का ख़ुलासा यह हुआ कि तबक़ए मलामतियह का दावेदार अगर कोई काम ख़िलाफे शरीअ़त करे और यह कहे कि मैं ने यह काम हुसूले मलामत के लिये किया है तो यह खुली हुई ज़लालत व गुम्राही और सच्ची नफ्स परस्ती है। अल्बत्ता उन में बाज़ बुज़ुर्ग ज़ाहिर में कुछ अमल शरीअ़त के ख़िलाफ करते हैं, लेकिन हक़ीक़त में वह ख़िलाफ नहीं होता।

और हज़रत दाता गंज बख़्श ऐसे बुज़ुर्ग हैं कि जब आप लाहौर में मस्जिद तामीर करवा रहे थे, लोगों ने कहा कि इस का क़िब्ला ग़लत है, मगर आप ख़ामोश रहे, फिर जब मस्जिद मुकम्मल हो गई तो आप ने लोगों को बुलाया और ख़ुद नमाज़ पढ़ाई, उस के बाद फरमाया देखो

कअ्बा किस तरफ है, तो लाहौर ही की ज़मीन से सब को कअ्बा नज़र आ गया। (हदाइकुल हनफिया:198)

यानी हज़रत दाता साहब रहमतुल्लाहि तआला अलैह वह बुजुर्ग है कि लाहौर से कअ्बा शरीफ को देख रहे थे, और जब ज़रूरत पड़ी तो दूसरों को भी दिखा दिया। तो हमें ऐसे बुजुर्ग का फरमान काफी है कि तबक़ए मलामतियह का कोई बुजुर्ग हक़ीक़त में ख़िलाफे शरीअ़त काम नहीं करता, सिर्फ ज़ाहिर में ख़िलाफ नज़र आता है।

## हज़रत मख़्दूम समनानी

हिन्दुस्तान के मशहूर बुजुर्ग हज़रत मख़्दूम अशरफ जहांगीर समनानी कछौछवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फरमाते हैं कि एक गरोह मलामतिया बुजुर्गों का है जो फराइज़ और वाजिबात व सुनन तो बजाए खुद अहम हैं मगर वह मुस्तहब्बात बल्कि नवाफिल तक की पाबंदी बेहद ज़रूरी जानते हैं, उन को कभी क़ज़ा नहीं करते। लेकिन इस के बा वजूद वह अपनी इबादतों को इस तरह छुपाते हैं जैसा बुरा आदमी अपनी बद किरदारी को, उन की कोशिश रहती है कि उन के हुस्ने अमल से कोई भी बाख़बर न होने पाए। (महबूबे यज़दानी:106)

इस सिलसिले में हज़रत मख़्दूम साहब ने एक वाक़िआ बयान फरमाया कि मैं सबज़्वार जा रहा था, रास्ते में मुझे एक निहायत हसीन बाग़ मिला, वस्त में शानदार ख़ेमा नसब था, जिस में एक ख़ूबसूरत नौजवान और हसीन औरत पहलू बपहलू बैठे थे, सामने गुलाबी (शराब की सुराही) रखी थीं, और हसीना जाम बकफ उस नौजवान से खुश मज़ाक़ कर रही थी, मैं ने जब उन को देखा तो बयक नज़र ख़्याल हुआ कि यह लोग नफ्स के गुलाम बन कर किस तरह अपने को तबाह कर रहे हैं, लेकिन जब मेरी और उन की निगाहें चार हुईं तो उन का हाल रौशन हुआ कि वह औरत उन की मनकूहा बीवी है, और सुराही में शराब के बजाए शर्बत है और खुद बदौलत मलामती गरोह के बुलंद मर्तबा बुजुर्ग हैं। (महबूबे यज़दानी:107)

हज़रत मख़्दूम साहब रहमतुल्लाहि तआला अलैह के फरमान से भी अच्छी तरह वाज़ेह हो गया कि तबक़ए मलामतिया का बुज़ुर्ग फराइज़ व वाजिबात को बड़ी चीज़ है, वह सुनन व मुस्तहब्बात बल्कि नवाफिल का भी सख़्त पाबंद होता है, अल्बत्ता अपनी इबादत को छुपाता है और कभी ज़ाहिर में उस का फेअ़्ल अगर्चे शरीअ़त के ख़िलाफ मालूम होता है लेकिन हक़ीक़त में वह मुत्तबए शरीअ़त होता है।

आज एक दाढ़ी मुंडाने वाले को गरोहे मलामतिया का बुज़ुर्ग तस्लीम किया जा रहा है और उस क़ी बुज़ुर्गी का ढिंढूरा पीटा जा रहा है तो वह दिन दूर नहीं जबकि बेनमाज़ी यहां तक तवाइफ के कोठों पर घूमने वाला भी तबक़ए मलामतिया के बुज़ुर्ग होने का दावा करेगा और कहेगा कि मैं भी अल्लाह के वलियों में से एक वली हूं। *अल्-इयाज़ु बिल्लाहि तआ़ला*

## ख़तरनाक ग़लती

याद रखना चाहिये कि हर ग़लत तरीक़ा की इब्तिदा बहुत मामूली होती है, मगर एक नस्ल से दूसरी नस्ल और दूसरी से तीसरी तक पहुंचते पहुंचते वही छोटी सी इब्तिदा एक ख़तरनाक ग़लती बन जाती है।

*सरे चश्मा शायद गिरिफ़्तन ब मील*
*चूं पुर शुद नशायद गुज़िश्तन ब पील*

यह एक बहुत बड़ा फित्ना है मगर बड़े-बड़े हक़-गोई का दावा रखने वाले किसी मस्लहत से ख़ामोश हैं सिर्फ मुलाक़ात न करने और सलाम न कहलवाने को काफी समझते हैं, उस के ख़िलाफ न कुछ बोलते हैं और न कुछ लिखते हैं बल्कि उस की तारीफ करते हैं हालांकि हदीस शरीफ में है:

إِذَا ظَهَرَتِ الْفِتَنُ أَوْ قَالَ الْبِدَعُ وَلَمْ يُظْهِرِ الْعَالِمُ عِلْمَهُ فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللّٰهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِيْنَ لَا يَقْبَلُ اللّٰهُ مِنْهُ صَرْفًا وَّلَا عَدْلًا۔

जब फित्ने ज़ाहिर हों और हर तरफ बे दीनी फैलने लगे और ऐसे मौक़ा पर आलिमे दीन अपना इल्म ज़ाहिर न करे और अपनी किसी मस्लहत

या मफाद के लालच में ख़ामोश रहे तो उस पर अल्लाह की और तमाम फिरिश्तों की और सारे इंसानों की लअ़नत है, अल्लाह न उस का फ़र्ज़ क़बूल करेगा और न उसकी नफल।(सवाइके मुहर्रका:2, अल्-मल्फूज़ हिस्सा:4)

और सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

إِذَا مُدِحَ الْفَاسِقُ غَضِبَ الرَّبُّ وَاهْتَزَّ لَهُ الْعَرْشُ۔

जब फासिक़ की तारीफ की जाती है तो अल्लाह तआ़ला ग़ज़ब फरमाता और अर्शे इलाही कांपने लगता है।
(बैहक़ी, अनवारुल हदीस:419)

और जबकि यह परचार किया जा रहा है कि बड़े-बड़े मुत्तक़ी परहेज़गार और हक़्-गो उलमा बाबा के ख़िलाफ कुछ नहीं बोलते बल्कि उन से खुसूसी तअ़ल्लुक़ात रखते हैं तो बाबा यक़ीनन पहुंचे हुए बुज़ुर्ग हैं अगर वह ग़लत होते तो ऐसे-ऐसे उलमा ख़ामोश न रहते — इस सूरत में शख़्से मज़कूर के मुतअ़ल्लिक़ आलिमों का हुक्म शरअ़ के ज़ाहिर न करने और उससे खुसूसी तअ़ल्लुक़ात रखने का गुनाह और भी शदीद हो जाता है।

अगर बाबा वक़ई बुज़ुर्ग हैं तो नज़्राना वसूल करने वाले मौलवी इसे शरीअ़त की रौशनी में वाज़ेह करें ताकि हम जैसे लोग जो ग़लत फहमी में मुब्तला है वह भी बाबा से कुछ फाइदा हासिल करें।

## मुद्दआ़ पूरा किया

बाबा को हमारे इस बयान से चीं-बजबीं नहीं होना चाहिये इस लिये कि जब वह गरोहे मलामतिया के बुज़ुर्ग हैं जैसा कि उन के हवा ख़्वाहों का बयान है तो मैं ने उन का मुद्दआ़ पूरा किया इस लिये कि इस तबक़ा के बुज़ुर्गों का मक़्सद ही यह होता है कि लोग उन को बुरा भला कहें और उन की मलामत करें।

और मोअ़्तक़िदीन को भी नाराज़ नहीं होना चाहिये कि मैं उन के मलामती बाबा की ऐने तमन्ना किसी हद तक पूरी कर रहा हूं। और अपने इस मज़मून को हज़रत शेख़ सअ़दी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह

के इस शेअ्र पर ख़त्म कर रहा हूं

*ख़िलाफ़े पयम्बर कसे रह गुज़ीद*
*कि हरगिज़ ब मंज़िल न ख़्वाहद रसीद*

## ऐब जोई और ग़ीबत

जब किसी के शरई ऐब की गिरिफ्त की जाती है और उस के ख़िलाफ कुछ कहा जाता है तो वह ऐब जोई और ग़ीबत का इल्ज़ाम लगाता है, हालां कि दाढ़ी मुंडाना, नमाज़ न पढ़ना, तर्के जमाअ़त का आदी होना, वहाबियों, देवबंदियों या दहरियों से दोस्ती रखना, उन से शादी ब्याह करना वग़ैरा इन बातों के ख़िलाफ बोलना और लिखना ऐब जोई नहीं है। इस लिये कि पोशीदा ऐबों को तलाश करना ऐब जोई है और जो बुराई अलानिया की जाती है, उस की मुख़ालफत करना हक़'गोई ऐब जोई नहीं ---- उन में बाज़ मुद्दइए इल्म भी होते हैं, जो हक़-गोई है और ऐब जोई का फर्क़ नहीं समझते और या तो समझते हैं मगर अज़ राहे फरेब बुराई रोकने वाले ही को गुनहगार साबित करने की नाकाम कोशिश करते हैं।

और फासिक़े मुअ्लिन या बद मज़्हब की बुराई करना जाइज़ है बल्कि अगर लोगों को उस के शर से बचाना मक़्सूद हो तो सवाब मिलने की उम्मीद है। (बहारे शरीअ़त:16 बयान ग़ीबत बहवाला रद्दुल मोहतार)

और तहरीर फरमाते हैं:

जो शख़्स अलानिया बुरा काम करता हो और उस को इस बात की कोई परवाह नहीं कि लोग उसे क्या कहेंगे तो उस शख़्स की उस बुरी हरकत का बयान करना ग़ीबत नहीं मगर उस की दूसरी बातें जो ज़ाहिर नहीं हैं उन को ज़िक्र करना ग़ीबत है। हदीस में है जिस ने हया का हिजाब अपने चेहरा से हटा दिया उस की ग़ीबत नहीं।

(बहारे शरीअ़त बहवाला रद्दुल मोहतार)

## देवबंदी घर में हक़-गोई

बस्ती ज़िला में फैज़ाबाद रोड पर एक आबादी विक्रम जोत है वहां

पर एक सख़्त क़िसम का देवबंदी बाले नाम का रहता था जो बहुत बड़ा दौलतमन्द था और किसी ज़माने में वह देवबंदी मौलवियों को इकट्ठा करके सुन्नियों से मुनाज़रा करा चुका था, जिस में सुन्नियों की तरफ से मुनाज़रा के ज़िम्मेदार बानी फैज़ुर रसूल हज़रत शाह मुहम्मद यार अली क़िब्ला रहमतुल्लाहि तआला अलैह थे।

बाले, दोबोलिया बाज़ार के हाजी रमज़ान अली सेठ के यहां लड़की का रिश्ता करना चाहता था। यह उस ज़माना की बात है जबकि मैं दोबोलिया बाज़ार में था और उस वक़्त भी मैं देवबंदियों के यहां शादी करने से लोगों को सख़्ती के साथ मना किया करता था।

बाले को मालूम हुआ कि देवबंदी होने के सबब रमज़ान सेठ हमारे यहां रिश्ता नहीं करेंगे तो उस ने अपने को सुन्नी साबित करने के लिये हमें मीलाद शरीफ पढ़ने की दअ्वत दी, मैं वक़्ते मुक़र्ररा पर विक्रम जोत पहुंच गया, वहां के हाजी अब्दुल सत्तार जो बराऊं शरीफ के मुरीद थे, उन्हों ने बताया कि बाले सख़्त क़िसम का देवबंदी है, हम ने उन्हें ताकीद की कि जितने सुन्नी हैं सब को लेकर मीलाद शरीफ में अव्वल वक़्त पहुंच जाइये, ताख़ीर हरगिज़ न कीजिये।

एक बड़े हाल में मीलाद शरीफ का इन्तेज़ाम हुआ, हाजी अब्दुल सत्तार सारे सुन्नियों को लेकर सब से पहले पहुंच गए, हम ने सामईन से दरयाफ्त किया, आप लोग ईमान के बारे में तक़रीर सुनना चाहते हैं या अमल के? सारे सुन्नियों ने बयक ज़बान कहा हम ईमान के बारे में तक़रीर सुनना चाहते हैं, और देवबंदियों ने कहा अमल के मुतअल्लिक़ बयान करें।

हम ने सूरए अस्र को मौज़ूए सुख़न बनया, लफ्ज़ *"आमनू"* पर तक़रीर करते हुए देवबंदियों के कुफ़्रियात बयान किये और उन का सख़्त रद किया। फिर आख़िर में *"व अमिलुस्-सालिहात"* के मुतअ़ल्लिक़ भी रौशनी डाली और सलातो-सलाम पर मीलाद शरीफ का इख़्तिताम हुआ।

इस वाक़िआ की ख़बर हाजी अब्दुल सत्तार ने हज़रत शुऐबुल औलिया रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह को पहुंचाई, जिस से आप बहुत ख़ुश हुए और मुलाक़ात होने पर बड़ी इज़्ज़त अफ्ज़ाई फरमाई यहां तक कि

यही हक़-गोई तीन चार साल बाद फ़ैज़ुर रसूल में आने का सबब बनी।

## शहज़ाद पुर में हक़-गोई

ज़िला फैज़ाबाद की मशहूर आबादी अकबर पुर के मुत्तसिल शहज़ाद पुर है, वहां का एक पीर ज़िंदगी भर मुरीदों से अपना सज्दा कराता रहा, और मौत के बाद वह सब क़ब्र का सज्दा करते हैं, बल्कि कअ्बा शरीफ़ की तरह हर चहार जानिब से क़ब्र की तरफ़ मुंह करके नमाज़ भी पढ़ते हैं *अल्-इयाज़ु बिल्लाहि तआला।*

यह बातें आम तौर पर मशहूर हैं लेकिन वक़्त के बड़े-बड़े शेखुल हदीस, बुलंद पाया मुफ़्ती, शख़्से मज़कूर के उर्स में शरीक होते रहे और रस्मी तक़रीरें करके नज़्राने वसूल करते रहे।

इत्तिफ़ाक़ से 1391 हि0 में मुझे भी उर्स के तक़रीरी प्रोग्राम में शिरकत की दअ्वत दी गई, मैं वहां पहुंचा तो मालूम हुआ कि ग़ाज़ीपुर के एक मशहूर आलिम, फ़ैज़ाबाद के एक बड़े ख़तीब और लखाही ज़िला गोंडा के एक मौलाना भी बहैसियत मुक़र्रिर आए हुए हैं। साथ ही वहां की खुराफ़ात का भी इल्म हुआ।

तीनों मुक़र्रिरीन ने पहले तक़रीरें कर लीं और आख़िर में हमें तन्हा स्टेज पर छोड़ कर चले आए, इस मौक़ा पर हमारी हक़-गाई का सख़्त इम्तिहान था मगर हम ने तय कर लिया था कि हक़ ज़ाहिर किये बग़ैर नहीं रहेंगे चाहे जो कुछ हो जाए। बहुत करेंगे नज़्राना नहीं देंगे, गुस्ताख़ी करेंगे या मारेंगे बल्कि क़त्ल भी कर देंगे तो कोई परवाह नहीं कि खुदाए तआला के नज़्दीक इस से हमारा दर्जा और बुलंद हो जाएगा। हम ने ताज़ीमे नबवी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को मौज़ूए सुख़न बनया, इसी ज़िम्न में ग़ैरुल्लाह के लिये सज्दए तअ़ब्बुदी का कुफ़्र होना और ताज़ीमी सज्दा का सख़्त हराम व ना जाइज़ होना वाज़ेह लफ़्ज़ों में बयान किया।

मजमअ् जिस में अक्सर मुरीदीन ही थे, उस में इन्तिशार पैदा हुआ, मैं वअ़ज़ बन्द करके क़ियाम गाह की तरफ़ चला, मेरे पीछे बहुत से मुरीदीन आए और गुस्ताख़ी के साथ इस बात पर मजबूर करने लगे

कि आप सज्दए ताज़ीमी के जाइज़ होने का ऐलान करें, हम ने कहा यह हरगिज़ नहीं हो सकता, जो चीज़ ना जाइज़ व हराम है, मैं उस के जाइज़ होने का ऐलान कभी नहीं कर सकता। कहने लगे फिर ना जाइज़ होने ही को आप साबित कर दीजिये, हम ने कहा कि यहां किताबें लेकर हम नहीं आए हैं, लिख कर भेज देंगे, कहा फुलां आलिम ने भी वादा किया था मगर बरसों गुज़र गए! उन्हों ने कुछ नहीं लिख कर भेजा। हम ने कहा कि मैं फुलां आलिम नहीं हूं, आप लोगों ने उन को देखा, अब हम को भी देख लीजियेगा। बहर हाल उन लोगों ने गुस्ताख़ियों और धमकियों ही पर इक्तिफ़ा किया, आगे नहीं बढ़े और फिर चले गए।

सुबह हम को सिर्फ वापसी किराया भर का नज़्राना दिया गया मगर हम ने ऐलाने हक़ कर दिया। पेशावर मुक़र्रिरों का तरीक़ा नहीं इख़्तियार किया और नज़्राना पाने के लालच में या मुरीदीन के ख़ौफ से किल्माने हक़ नहीं किया, इस पर ख़ुदा का शुक्र बजा लाए।

ग़ाज़ीपुरी और गोंडवी मौलवी ख़त्मे जलसा से पहले ही यह कह कर चले गए थे कि बराऊं शरीफ का मुफ्ती ख़ामोश नहीं रहेगा, इनके ख़िलाफ़ ज़रूर बोलेगा जिस से फित्ना होगा, मगर फैज़ाबाद के ख़तीब अकबर पुर से फैज़ाबाद तक हमारे साथ रहे जो बार-बार कहते रहे कि आप की वजह से इमसाल नज़्राना आधा हो गया, वरना हर साल इतना मिलता रहा।

ख़ुदाए अज़्ज़ व जल्ल ऐसे पेशावर मुक़र्रिरों को हिदायत नसीब फ़रमाए। नज़्राना की ऐसी लालच दिलों से निकाल दे और बिला ख़ौफ ऐलाने हक़ की तौफीक़े रफीक़ बख़्शे। आमीन

बराऊं शरीफ पहुंच कर हम ने फौरन हुर्मते सज्दा पर 16 सफहात का एक रिसाला बनाम "सज्दए ताज़ीम" लिखा जो आला हज़रत इमाम अहले सुन्नत फाज़िल बरैलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह के रिसालए मुबारक "अज़्ज़ुबदतुज़्ज़किया फी हुर्मति सुजूदित तहिय्यह" से माख़ूज़ रहा फिर उसे जल्द ही छपवा कर पांच सौ की तादाद में ले जा कर अकबर पुर चौराहे पर मुफ्त तक़्सीम कर दिया और शहज़ाद पुर के

गद्दी नशीन को रजिस्टरी कर दिया जो आज भी चन्द फतावा के साथ ज़रूरी मसाइल में शाए हो रहा है।

## तक़रीर और उस का नज़्राना

तक़रीर करने के लिये तो हम मुल्क के तूल व अरज़ बिहार, बंगाल, उड़ीसा, मध्यप्रदेश, आंध्राप्रदेश, गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्रा और यूपी के मुख़्तलिफ मक़ामात व रियासत नैपाल में गए मगर मक़्सद नज़्राना नहीं रहा बल्कि मुसलमानों के अक़ीदे और उन के आमाल की इस्लाह मक़्सूद रही, इसी लिये हम ने कभी किसी से नज़्राना तय नहीं किया बल्कि जो भी दिया गया हम ने उसे ख़ामोशी से रख लिया यहां तक कि बाज़ मक़ामात पर इतना कम नज़्राना दिया गया कि जिस का कभी तसव्वुर नहीं किया जा सकता था मगर हम ने फिर भी बिला ऐतराज़ क़बूल किया।

ज़िला बस्ती बांसी के पूरब एक मौज़ा कमहरिया है जो बराऊं शरीफ से तक़रीबन 25 किलो मीटर पर वाक़ा है, वहां एक हाजी साहब का इन्तेक़ाल हुआ, चूंकि उन का लड़का उस आबादी का बहुत बड़ा सेठ था, इस लिये जनाज़ा में कई वहाबी और देवबंदी मौलवी भी शरीक हुए, बाद दफन सेठ ने ऐलान किया कि जितने लोग जनाज़े में शरीक हैं, फुलां दिन सब लोगों को खाने की दावत है, इस के अलावा और भी बहुत से लोगों को शादी ब्याह की तरह मदऊ किया गया।

कमहरिया के सब लोग अपने को सुन्नी ही कहते थे मगर बद मज़्हबों का उन पर पूरा तसल्लुत था, उन में एक साहब सुन्नियत का दर्द रखते थे जिन को अब्दुल्लाह मियां कहा जाता था उन्हों ने सेठ को इस बात पर राज़ी कर लिया कि दावत के मौक़ा पर बराऊं शरीफ के किसी आलिम की तक़रीर हो जाए, इस के लिये मुझे उन्हों ने दावत दी।

यह उस ज़माने की बात है जबकि बराऊं शरीफ से बांसी जाने के लिये बस वग़ैरा की सहूलत नहीं थी, हम ने एक तालिब इल्म को किराए की साइकल लाने के लिये बांसी भेजा, वह 15 किलो मीटर पैदल जा कर साइकल लाया, हम उसी से कमहरिया गए, शादी की

तरह मैय्यित की दावत जो वाक़ई बिदअ़ते सैय्यिआ है, ऐसी दावत खाने के लिये बात-बात पर बिदअ़त की रट लगाने वाले वहाबी और देवबंदी सात मौलवी पहले से मौजूद थे।

जब मैं पहुंचा तो कुरआन ख़्वानी हो रही थी, हम ने शीरीनी मंगा कर उस के साथ तिलावते कुरआन का ईसाले सवाब किया तो उन में के दो मौलवी यह कह कर चले गए कि बराऊं के आलिम आए हैं अब यहां नियाज़ फातेहा होगा और तीन मौलवी खाने के बाद गए। बाक़ी बचे दो मौलवी। उन्हों ने हमारे पास ख़बर भिजवाई कि हम भी तक़रीर करेंगे और हम लोगों का बयान बाद में होगा, हम ने कहलवाया कि आप लोगों को खाने की दावत थी, जब खा चुके तो अपने-अपने घर जाइये, तक़रीर के लिये तो सिर्फ हम बुलाए गए हैं, मगर वह नहीं गए और आख़िर में तक़रीर क़रने पर बज़िद रहे, बड़ी गुफ्तो-शुनीद के बाद इब्तिदा ही में बयान करने पर राज़ी हुए।

मीलाद शरीफ का प्रोग्राम ज़मीन पर ही रहा, मैं सामने की एक छत पर उन लोगों की तक़रीर सुनने के लिये चला गया और उन के ख़ास- ख़ास जुमले नोट करता रहा, दोनों ने अहले सुन्नत व जमाअ़त के मोअ़्तक़िदात का सख़्त रद किया और सुन्नी कहलाने वाले सब लोग ख़ामोशी से सुनते रहे। उन में एक मौलवी अपनी तक़रीर ख़त्म करके फौरन चला गया और दूसरे ने अपने बयान को बहुत तवील किया ग़ालिबन इस लिये ताकि मजमा थक कर चला जाए और बराऊं शरीफ के आलिम की तक़रीर ही न हो सके, वह ज़िल्लत व रुस्वाई के साथ यहां से वापस हो जाएं।

अब्दुल्लाह मियां बार-बार सेठ से कहते थे कि इन की तक़रीर बंद करवाइये और जिन को आप ने वअ़ज़ ही के लिये बुलाया है अब उन का बयान करवाइये, मगर वह ऐसा न कर सका, यहां तक कि रात के 12 बज गए मगर मेरी तक़रीर नहीं शुरू हो सकी और मजमा उठता चला जा रहा था, इस लिये अब बयान होने की उम्मीद भी नहीं रह गई थी जिस के सदमा से मेरी हालत अजीबो-ग़रीब हो गई थी।

आख़िर उस मौलवी ने 12 बज कर 10 मिनट पर अपनी तक़रीर ख़तम की और कुर्सी छोड़ कर बीच की बिछी हुई चारपाई पर बच्चों की तरह पांव फैला कर बद तहज़ीबी से बैठा, मैं नीचे उतर कर कुर्सी पर आया और हम्दो-सलात के बादे ख़िलाफे आदत बुलंद आवाज़ से उन दोनों की तक़रीरों का रद करना शुरू कर किया, वह दरमियान में बोल पड़ा और अपनी ताईद में कुरआन मजीद की एक आयते करीमा तिलावत की मगर ग़लत पढ़ी, मैं ने डांट कर कहा ठीक से पढ़ो तुम ने ग़लत पढ़ा, तुम मुझ को सिर्फ मौलवी मत समझना, मैं 30 पारा का हाफिज़ भी हूं जितनी आयतें तुम ने तक़रीर में पढ़ी हैं सब ग़लत पढ़ी हैं, फिर से पढ़ो, मगर वह दोबारा पढ़ न सका और बहुत ज़लील व रुस्वा हुआ। और इस वाक़िआ का वहां के सारे मुसलमानों पर बहुत अच्छा असर पड़ा कि जब तक बराऊं शरीफ के मौलाना नहीं थे तमाम आयतें पढ़ कर सुना रहे थे और उन के सामने एक आयत भी सहीह नहीं पढ़ सके।

इतना सब कुछ होने के बा वजूद जब हम सुबह चलने लगे तो सेठ ने हमें एक रुपया नज़राना पेश किया जो साइकल के किराए को भी काफी न था मगर हम ने बिला ऐतराज़ ले लिया और फिर उस के बाद भी जब बुलाया हम इस्लाम और सुन्नियत की ख़ातिर बराबर गए, वहाबियों और देवबंदियों के यहां शादी ब्याह करने और उन के पीछे ईद वग़ैरा की नमाज़ पढ़ने से रोक दिया। कई लड़को को तालीम के लिये फैजुर रसूल बराऊं शरीफ में दाख़िला करवाया, यहां तक कि अब अल्हम्दु लिल्लाह! कमहरिया में कई सुन्नी आलिम हो गए ज़िस से वहां की सुन्नियत महफूज़ हो गई और एक अच्छा दीनी मदरसा भी क़ाइम हो गया जिस में कुर्बो-जवार और आबादी के सारे मुसलमान के बच्चे इस्लाम व सुन्नियत की तालीम हासिल कर रहे हैं।

## सण्डीला का वाक़िआ

ज़िला हरदोई का सण्डीला एक मशहूर क़स्बा है, वहां के जनाब इरशाद हुसैन साहब सिद्दीक़ी इस्लाम और सुन्नियत की ख़िदमत का

बहुत अच्छा जज़्बा रखते हैं। लखनऊ की एक इत्तिफ़ाक़ी मुलाक़ात में उन पर ज़ाहिर हुआ कि मैं सुन्नी आलिम हूं, उन्हों ने कहा कि मैं एक जलसा करना चाहता हूं क्या आप उस में तक़रीर के लिये आ सकते हैं? मैं ने जवाब दिया कि आ जाऊंगा। उन्हों ने पूछा कि नज़्राना क्या लेंगे? मैं ने कहा जो भी आप दे देंगे मुझे उस पर कोई ऐतराज़ न होगा, मगर शायद किसी पेशावर मुक़र्रिर से कभी उन को पाला पड़ा था, उन्हों ने मामला की सफ़ाई के लिये कहा कि हम किराया वग़ैरा कुछ नहीं देंगे। जब आप तशरीफ़ लायेंगे तो सौ रुपये पेश करेंगे, हम ने कहा आप बिल्कुल मुतमईन रहिये हमें कोई ऐतराज़ न होगा, आप जो कुछ पेश करेंगे हम बखुशी क़बूल कर लेंगे।

जलसा में हमारे अलावा और कोई दूसरा आलिम नहीं मदऊ किया गया, इसी तरह वह साल में तीन चार जलसा करते हैं जिस में सिर्फ़ एक आलिम को दावत देते हैं। यह तरीक़ा बहुत उम्दा है कि थोड़े ख़र्च में जलसा हो जाता है और साल में कई बार इस्लाम व सुन्नियत की तब्लीग़ हो जाती है। ऐ काश! छोटी जगहों के दूसरे लोग भी यही तरीक़ा इख़्तियार करते।

मैं तारीख़े मुअय्यना पर सण्डीला पहुंच गया और अक़ाइद व आमाल पर तक़रीबन दो घंटे तक़रीर की, वापसी के वक़्त वादा के मुताबिक़ उन्हों ने सौ रुपये पेश किये, वज़अ़ तंख़्वाह और बराऊं शरीफ़ से सण्डीला तक आमदो-रफ़्त किराए में पूरी रक़म सर्फ़ हो गई और हम यह पहले ही से जानते थे। लेकिन इस्लाम व सुन्नियत की तब्लीग़ के जज़्बे से हम ने दावत क़बूल की थी।

इसी तरह उन्हों ने हमें कई बार दावत दी और हम बराबर जाते रहे और उसी तरह नज़्राना पेश करते रहे और हम बखुशी क़बूल करते रहे यहां तक कि वह हमारे हुस्ने अख़्लाक़ से बहुत मुतअस्सिर हुए और उन्हों ने अपने मदरसे के लिये जो बहुत कमज़ोर हालत में चल रहा था हम से एक आलिम तलब किया, हम ने फ़ैज़ुर रसूल के एक होनहार फ़ाज़िल को वहां पहुंचा दिया जिन की कोशिशों ने सिद्दीक़ी साहब के

हौसले और बुलंद कर दिया, थोड़े ही अरसे में मदरसा बहुत तरक़्क़ी कर गया और जब मेरे ईसार का उनको ऐहसास हुआ तो मदरसा का पुराना नाम बदल कर मेरी ख़ुशी के लिये मुरशिदी सदरुश शरीअ़ा रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह के नाम पर उस का नाम दारुल उलूम अमजदिया रखा। अब मोहल्ला किसान टोला में उस की शानदार इमारत हो गई। कई आलिम व हाफिज़ और कसीर तलबा तालीम व तअ़ल्लुम में मस्रूफ हैं और इस्लाम व सुन्नियत क़ी ख़ूब इशाअ़त हो रही है। فالحمدلله على ذالك

☆☆☆

## ओझा गंज की ग़लत बातें और उन की इस्लाह
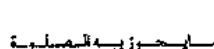
हमारी जाए पैदाइश ओझा गंज में ग़ैर मुस्लिमों की आबादी ज़्यादा है और मुसलमानों के तक़रीबन 50 घर हैं, दाइमी बाज़ार है, जहां हर वक़्त ज़रूरत की चीज़ें मिल जाती हैं। दो मस्जिदें और एक मदरसा भी अच्छी हालत में चल रहा है बर वक़्त पूरी आबादी में कुल दस फारिगुत् तहसील मौलवी हैं, जहां सब से पहले मैं सनद याफ्ता आलिम हुआ, बाक़ी मेरे शगिर्द या शागिर्द के शागिर्द हैं।

### ओझा गंज की पहली तालीमी हालत

ओझा गंज में मौलवी मुहम्मद ज़करिया साहब मरहूम अपने घर एक मकतब क़ायम किये हुए थे और ख़ालिसन लिवजहिल्लाह बड़ी तवज्जोह से पढ़ाते थे। कुरआन मजीद, नाज़ेरा और कुछ उर्दू की तालीम देते थे मगर लिखना नहीं सिखाते थे, इस लिये कि वह ख़ुद लिखना नहीं जानते थे, तीन लड़कों ने उन से कुरआन मजीद का हिफ्ज़ भी किया जिन में से एक मैं भी हूं।

उर्दू में नूर नामा, अहद नामा, शाने रहमत, शाने क़ुद्रत और दुल्हन नामा पढ़ाई जाती थीं। फिक़्ह में देवबंदियों की किताबें राहे नजात और मिफ्ताहुल जन्नह दाख़िले दर्स थीं। कुछ लोग शरअ़ मुहम्मदी मनज़ूम भी पढ़ लेते थे। बाज़ घरों में मीलाद शरीफ की कुछ किताबें क़ससुल

अंबिया और मुहर्रम की मजालिस में पढ़ने के लिये अनासिरुश शहादतैन और इसी क़िस्म की दूसरी चन्द किताबें पाई जाती थीं। मेरे आलिम होने तक फ़िक्ह की अज़ीम किताब बहारे शरीअत का एक हिस्सा भी आबादी में दाख़िल नहीं हुआ था, ग़ालिबन लोगों को इस का इल्म ही नहीं था।

कुर्बो-जवार में बल्कि हर्रय्या के पूरब तहसील में सब से ज़्यादा पढ़े लिखे ओझा गंज ही के लोग माने जाते थे। इसी लिये मुख़्तलिफ मक़ामात पर यहां के आदमी ईदैन और जुमा की नमाज़ पढ़ाने के लिये जाया करते थे मगर फ़िक्ह की इस्तिलाह में सब उम्मी थे यानी कोई उन में ما يجوز به الصلوة (जिस मिक़दार से नमाज़ दुरुस्त हो सके उतनी मिक़दार) कुरआन मजीद पढ़ने वाला नहीं था यहां तक कि किसी को ش शीन, س सीन, ق क़ाफ, ک काफ, और ف फा, ھ प्ह की तमीज़ नहीं थी, ऐसे ही हम को भी पढ़ाया गया था जिस की इस्लाह इलतेफ़ात गंज के असातेज़ा ने भी नहीं की। जब हज़रत अल्लामा अरशदुल क़ादरी साहब क़िब्ला दामत बरकात हुमुल कुदसिया की दर्सगाह में दाख़िल हुआ तो उन्हों ने इस तरफ तवज्जोह दिलाई, ग़लत बोलने पर बार-बार तंबीह करते रहे और दुरुस्तगी पर ज़ोर देते रहे। एक बार पुरानी आदत के मुताबिक़ फ़ुक़हा के बजाए मेरी ज़बान से प्हुक़हा निकला तो इस क़दर नाराज़ हुए कि मैं रोने लगा यहां तक कि क़िराअत सीख कर हम ने सहीह किया, फिर अपने उस्ताज़ मौलवी मुहम्मद ज़करिया साहब के हुरूफ को दुरुस्त कराया और अब तो अल्हम्दु लिल्लाह हमारी कोशिशों से ओझा गंज में कई क़ारी भी हो गए हैं।

## ओझा गंज में शादी की रस्में

ओझा गंज में जब किसी के यहां शादी होती थी तो एक महीना पहले उस के यहां दफाली के यहां से ढोल आ जाती थी और आबादी भर की मुस्लिम औरतें जमा हो कर 12 बजे रात तक गाती बजाती थीं, और बाज़ घरों में औरतें नाचती भी थीं। यहां तक कि हमारा घर भी

गाने बजाने से पाक नहीं था। हमारी शादी के वक़्त जब ढोल लाने की बात आई तो हम ने निहायत सख़्ती से मना किया और कहा कि ढोल आएगी तो हम उसे चाकू से फाड़ देंगे, जो लाएगा वही उस का ज़िम्मेदार होगा। फिर ढोल नहीं आई और ओझा गंज की तारीख़ में यह पहली शादी हुई जिस में गाना बजाना नहीं हुआ। फिर हम दूसरों को भी सख़्ती से मना करते रहे, यहां तक कि पूरी मुस्लिम आबादी से यह ख़राबी दूर हो गई, सिर्फ चन्द आदमी जो नीच क़िसम के हैं, उन के यहां रह गई है उम्मीद कि आहिस्ता-आहिस्ता उन के घर से भी ख़त्म हो जाएगी।

बारातों में भी तरह-तरह के बाजे ले जाते थे और दूसरों से भी मंगाए जाते थे, यहां तक कि आबादी के मुलसलमानों ने अंग्रेज़ी बाजे की एक ग़ोल बना रखी थी जो ओझा गंज में और दूसरी जगहों पर पैसा लेकर बजाने के लिये जाया करती थी। अल्हम्दु लिल्लाह! हमारी फ़ेहमाइश से यह ख़राबियों भी दूर हो गईं। और अब यह मिजाज़ बन गया है कि मुम्बई का एक सेठ जो इसी इलाक़ा का रहने वाला है वह ज़बर्दस्ती बारात में बाजा लाना चाहता था तो हम ने मुसलमानों को उस के ख़िलाफ इतना उभारा कि वह मारने के लिये तैयार हो गए यहां तक कि उस को ओझा गंज में बाजा लाने की हिम्मत नहीं हुई।

बारात वाले दुल्हन के लिये जो कपड़ा वग़ैरा लाते थे, उसे घर के अन्दर पहुंचाने के लिये नाई या दूसरा कोई ना मेहरम जाता था, औरतें पहले से कालिख वग़ैरा तैयार करके रखती थीं, सामान उतारते ही उस को लगाने के लिये टूट पड़ती थीं, जिस के जवाब में बसा औक़ात वह भी औरतों पर हाथ चला दिया करता था। *अल्इयाज़ु बिल्लाहि तआला।*

दुल्हा बारातियों के साथ दुल्हन के दरवाज़े पर सलाम करने के लिये जाया करता था जिस में दुल्हा और घर की औरतों के दरमियान दरख़्तों की टहनियों से बाक़ाइदा मार होती थी और बाज़ औरतें चना, मटर या कांटेदार फल भी दुल्हा के चेहरे पर मारती थीं, यह बेहूदा रस्में भी ख़त्म हुईं।

ओझा गंज के लोग पन पिलाई और भत पकाई के नाम पर बारातियों को पानी पिलाने और उन को खाना खिलाने की मज़दूरी दुल्हा के घर वालों से वसूल किया करते थे, हम ने बहुत ग़ैरत दिलाई और कहा कि इसे बन्द करो। और अगर इस में पंच का नुक़्सान है तो हर बारात की पन पिलाई और भत पकाई जब तक हम ज़िंदा हैं हम से वसूल कर लिया करो। अल्हम्दु लिल्लाह! यह ग़लत तरीक़ा भी ख़त्म हुआ।

और ओझा गंज के लोग दावते वलीमा जानते ही नहीं थे, अल्बत्ता बारात की रवानगी से पहले मुस्लिम आबादी के सारे मर्दों को और ख़ानदान के पूरे अफ़राद को खाना खिलाना ज़रूरी था। इसे पंच का खाना कहा जाता था और जो शख़्स इतने लोगों को खिलाने की ताक़त नहीं रखता था, उसे पंच को जमा करके माफी मांगनी पड़ती थी। हम ने शबे ज़ुफ़ाफ़ के बाद दावते वलीमा करने को बताया तो पंच का खाना बन्द हो गया और सब लोगों को खिलाने की ताक़त न होने की सूरत में माफी मांगना भी ख़त्म हो गया और अब बिफ़ज़्लिही तआला ओझा गंज में शादी वग़ैरा की सारी तक़रीबात इस्लामी तौर तरीक़े से होने लगीं। और हमारी सारी कोशिशें बार-आवर हो गईं।

## बद-मज़्हबों से रिश्ता

वहाबी और देवबंदी जो अल्लाह व रसूल जल्ल जलालहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और औलियाए किराम व बुज़ुर्गाने दीन की शान में गुस्ताख़ी व बेअदबी करते हैं वह अहले सुन्नत व जमाअत के यहां शादी ब्याह करने की ज़्यादा कोशिश करते हैं इस लिये कि इस तरह वह अपने रिश्तेदार के घर बद-मज़्हबी फैलाने में आसानी के साथ कामयाब हो जाते हैं और वह सुन्नी जो अल्लाह व रसूल और अंबियाए किराम व औलियाए इज़ाम से झूठी मुहब्बत का दावा रखते हैं उन की ज़ाहिरी नरमी को देख कर रिश्ता क़ायम करने के लिये तैयार हो जाते हैं और यह नहीं जानते कि सांप ऊपर से नर्म होता है लेकिन उस के अन्दर ज़हरे क़ातिल होता है, बल्कि बद-मज़्हब से

तअ़ल्लुक़ सांप से ज़्यादा नुक़्सान देह है इस लिये वह जान लेता है और यह ईमान पर डाका ज़नी करता है। इसी लिये सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

إِنْ مَرِضُوْا فَلَا تَعُوْدُوْهُمْ وَإِنْ مَاتُوْا فَلَا تَشْهَدُوْهُمْ وَإِنْ لَقِيْتُمُوْهُمْ فَلَا تُسَلِّمُوْا عَلَيْهِمْ وَلَا تُجَالِسُوْهُمْ وَلَا تُشَارِبُوْهُمْ وَلَا تُوَاكِلُوْهُمْ وَلَا تُنَاكِحُوْهُمْ وَلَا تُصَلُّوْا عَلَيْهِمْ وَلَا تُصَلُّوْا مَعَهُمْ ـ

अगर बद मज़्हब बीमार पड़ें तो उन की अ़यादत न करो, गर मर जायें तो उनके जनाज़े में शरीक न हो, उन से मुलाक़ात हो तो उनको सलाम न करो, उनके पास न बैठो, उनके साथ पानी न पियो, उनके साथ खाना न खाओ, उनके साथ शादी ब्याह न करो, उनके जनाज़े की नमाज़ न पढ़ो और न उनके साथ नमाज़ पढ़ो।
(मुस्लिम शरीफ़ बहवाला अनवारुल हदीसः103)

जो लोग हक़ीक़त में अल्लाह व रसूल और अंबिया व औलिया को दोस्त रखते हैं वह उन के दुश्मनों को दुश्मन ही समझते हैं और उन से सख़्त नफ्रत करते हैं इस लिये कि दोस्त का दुश्मन, दुश्मन ही होता है -- अपने और अपने बाप दादा के दुश्मन से शादी ब्याह न करना और अल्लाह व रसूल के दुश्मनों से रिश्ता क़ायम करना ईमान वाला कभी गवारा ही नहीं कर सकता।

जो लोग दुनिया कमाने के लिये मौलवी-गीरी और पीरी मुरीदी करते हैं और पैसे की फिक्र में रहते हैं, सुन्नियत की परवाह नहीं करते वह सिर्फ डरामाई और रस्में तक़रीरें करते हैं मगर ईमान के डाकू जिस रास्ते से सुन्नियों के घरों में घुस का ईमान पर डाका ज़नी कर रहे हैं और सुन्नियत को बहुत ज़बर्दस्त नुक़्सान पहुंचा रहे हैं, उस रास्ते को बन्द नहीं करते, बद मज़्हबों से नफ्रत नहीं दिलाते और न उनके यहां शादी ब्याह करने से रोकते हैं बल्कि बाज़ सुन्नी कहलवाने वाले मौलवी और पीर उस में खुद ही मुब्तला हो जाते हैं जिसे सुन्नी अवाम सनद बनाते हैं और उन के यहां रिश्ता करके गुमराह और बद मज़्हब हो जाते हैं। *अल्-इयाज़ु बिल्लाहि तआ़ला।*

ओझा गंज के बाज़ मुसलमान भी वहाबियों और देवबंदियों से शादी कर रहे थे, मैं ने होश संभालते ही उन को मना किया और फिर कुछ दिनों बाद ऐलान कर दिया कि ख़बर दार! अब कोई उन के यहां रिश्ता न करे, अगर करेगा तो उस पर सख़्ती की जाएगी। और हर तरह से उस का इस्लामी बाइकाट किया जाएगा।

इस ऐलान को अरसा गुज़र गया मगर अल्हम्दु लिल्लाह! उस वक़्त से अब तक ओझा गंज के मुसलमानों की कोई शादी किसी बद मज़्हब के यहां नहीं हुई जिस से इस आबादी सुन्नियत रोज़ बरोज़ निखरती ही चली गई। अल्बत्ता अब कुछ ना आक़िबत अंदेश जिन के लिये हमारी दुआ है कि उन्हें दीन की समझ हासिल हो वह अपनी बेवकूफी से ओझा गंज में एक ऐसे पीर को लाना चाहते हैं जिस ने अपने लड़का और लड़की दोनों की शादी बद मज़्हब के यहां की है जिस का नतीजा यह है कि बहुत से मुसलमान इस मामले में उस पीर की इत्तिबाअ् करके अपने घरों में बद मज़्हबी का बीज बो रहे हैं, अगर ओझा गंज के लोग भी उन से बैअ़त हुए और अपने पीर के नक़्शे क़दम पर चलते हुए बद मज़्हबों से रिश्ते क़ायम किये तो मेरी ज़िंदगी भर का कमाया हुआ दीनी मिज़ाज मलिया-मेट हो जाएगा। और आहिस्ता-आहिस्ता ओझा गंज से सुन्नियत का जनाज़ा निकल जाएगा।

उस पीर के बाज़ हवा ख़्वाह कहते हैं कि उन्हों ने अपने रिश्तेदारों को सुन्नी बना लिया है, तो उन्हों ने अपने ही जैसा सुन्नी बनाया है कि जो बद मज़्हबों के यहां शादी ब्याह करने पर राज़ी हो गए या उस से कम? खुदाए तआ़ला ही ज़्यादा जानता है मगर यह मशहूर करना कि उन्हों ने सुन्नी बना लिया है, सुन्नियत के लिये और ज़्यादा नुक़्सान देह है इस लिये कि पहले उनके मुरीद मौलवियों को बद मज़्हबों के यहां रिश्ता करने से बआसानी रोका जा सकता था और अब तो वह यह कहेंगे कि जैसे हमारे पीर साहब ने सुन्नी बना लिया है, हम भी बना लेंगे और फिर अवाम उस मौलवी के अमल को सनद बना कर बदमज़्हबों के यहां रिश्ता करेंगे और अपने घर की सुन्नियत को तबाह

कर देंगे --- अक़्लमंदों ने कहा है कि जिस चीज़ का नतीज़ा देर में ज़ाहिर हो उस से ग़फ़लत बरतना जिहालत की निशानियों में से है।

## ओझा गंज की ताज़िया दारी

ओझा गंज में मुरव्वजा ताज़िया दारी बड़ी धूम धाम से होती थी, कई लोग अपने ज़ाती ख़र्च से तन्हा ताज़िया बनाते थे और दोनों मस्जिदों के दरवाज़ों पर भी मोहल्ले वालों के पंचायती ताज़िये रखे जाते थे जिन में हमारे वालिद क़िब्ला मरहूम के अलावा सारे मुसलमान चन्दा दिया करते थे। ताज़ियों को इमाम साहब का रौज़ा कहा जाता था हालां कि उन में कोई आप के रौज़ए मुबारका की नक़ल नहीं होता था बल्कि ग़ैर मुस्लिमों के मन्दिरों की तरह हुआ करता था।

ताज़ियों को एक माह पहले से बनाना शुरू करते थे और बाजे के साथ निहायत शान से चौक पर रखते थे। दसवीं रात को बाजा गाजा और मर्दों औरतों के मख़्लूत मजमा के साथ बाज़ार में गश्त कराते थे फिर 10 मुहर्रम को ताज़िया उठने पर बहुत बड़ा मेला हो जाता था। दूसरे मवाज़ेआत के भी ताज़िये आते थे और हर बड़ा आदमी यह चाहता था कि हमारा ताज़िया सूरज के मुक़ाबिल हो ताकि उस में चमक ज़्यादा हो और उस के लिये अय्यामे जाहेलियत जैसे झगड़े करते थे, यहां तक कि 10 वीं मुहर्रम को जब दफन करने के लिये ताज़िया उठता था तो बाज़ औरतें चौक पर पानी डाल कर उस की गीली मिट्टी अपने माथे पर लगाती थीं और फिर हाथों की चूड़िया तोड़ कर देर तक बैठ कर रोती रहती थीं।

इन खुराफात को देख कर भला मैं कब ख़ामोश रह सकता था। मैं ने उन्हें बताया कि इस तरह की ताज़िया दारी ना जाइज़ हराम और बिदअ़ते सैय्यिअह है, जिन लोगों को ताज़िया के मामले में इस क़दर ग़ुलू था, भला वह मेरे इस बयान को कैसे बर्दाश्त कर सकते थे, सब मेरे ख़िलाफ हो गए और मुझ को वहाबी कहने लगे और बहुत से फ़र्ज़ी क़िस्से बयान होने लगे कि फुलां जगह एक आदमी ने ताज़िया रखना बन्द कर दिया तो उस का जवान बेटा मर गया और फुलां जगह

ताज़िया न रखने पर ऐसा-ऐसा वाक़िआ हुआ।

मगर मैं उन लोगों के ख़ौफ दिलाने से बिल्कुल नहीं डरा, हर साल ताज़िया दारी के ख़िलाफ बराबर तक़रीरें करता रहा और उन के फर्ज़ी क़िस्सों का जवाब यूं देता रहा कि अगर ताज़िया दारी बन्द कर देने पर जवान बेटा के मरने और बड़े-बड़े नुक़्सानात होने का वाक़िआ सहीह होता तो मैं जबकि उस का सख़्त मुख़ालिफ हूं और उसे बन्द करवाता हूं मुझे मेरे बेटों के साथ ज़मीन में ज़िंदा धंस जाना चाहिये था हालां कि मैं हर लिहाज़ा से रोज़ बरोज़ तरक़्क़ी कर रहा हूं और ताज़िया दार दिन बदिन पस्ती ही में जा रहे हैं बल्कि कई एक उनमें नरबंस (मुंक़तिउन नस्ल) हो कर मिट गए और बाक़ी लोगों की हालत रोज़ बरोज़ ख़राब होती चली जा रही है।

ताज़िया, अलम और शद्दे यहां तक कि ढोल का भी इतना ऐहतराम था कि उन को मस्जिदों में रखा जाता था। एक बार छोटी मस्जिद के रखे हुए अलम व शद्दे में उस के चिराग़ से न मालूम कैसे आग लग गई कि जिस से मस्जिद भी जल गई कि उस ज़माने में वह खपरेल (सफाला पोश) थी, मगर आग बुझाने के बाद मा बक़िया अलम व शद्दे फिर उसी मस्जिद में रख दिये गए, मैं कहीं बाहर था, आने के बाद जब इस वाक़िआ की ख़बर हुई तो अलम व शद्दे मस्जिद के बाहर कीचड़ में फिंकवा दिया और ढोल निकलवा कर पैरों की ठोकरों से बहुत दूर करवा दिया।

इस वाक़िआ से पूरी आबादी के मुसलमानों में आग लग गई मगर कोई मेरे क़रीब नहीं आया। अल्बत्ता इमाम आली मक़ाम के झण्डे की तौहीन का मुझ पर इल्ज़ाम लगाया गया, मौलाना नूर मुहम्मद ने मेरे मशवरा पर बरेली शरीफ से फत्वा मंगाया, मुफ्ती साहब ने झण्डा फिंकवाने वाले को गुनहगार ठहराने के बजाए सवाब पाने वाला क़रार दिया, मैं ने उस फत्वा पर अहले सुन्नत के 75 उलमा और मशाइक़ वग़ैरा से दस्तख़त लेकर 1388 हि० में पोस्टर की शकल में शाए कर

दिया जिस की नक़्ल इस किताब में भी हालाते मुसन्निफ से पहले शामिल की जा रही है।

ओझा गंज में ताज़िया दारी अगर्चे अब भी जारी है मगर पहले वाली बातें अब नहीं रह गईं। बहुत सी जिहालतें दूर हो गईं और ज़ोर टूट चुका है। उम्मीद है कि आहेस्ता-आहेस्ता बिल्कुल ख़त्म हो जाएगी।

## ख़्वाजा ख़िज़र का तेवहार

ओझा गंज में ख़्वाजा ख़िज़र का तेवहार इस तरह होता था कि दफाली ढोल और रबाना लेकर मुस्लिम आबादी में आते और एक-एक दरवाज़ा पर गाते बजाते, फिर जब औरतें गेहूं का मीठा दलिया पकाने के बाद बन संवर कर तैयार हो जातीं तो दफाली हर घर से औरतों को दलिया सर पर रखवा कर गाते बजाते हुए मस्जिदों के दरवाज़े तक पहुंचाते, फिर जब पूरी मुस्लिम आबादी का दलिया इकट्ठा हो जाता तो नौ जवान बहू बेटियां बेपर्दा अपने-अपने सरों पर दलिया लिये हुए बाज़ार से गुज़रतीं। दफाली क़दम-क़दम पर ठहरते और ख़ूब गाते बजाते और हाथ सर से ऊपर उठा-उठा कर औरतें दफाली को पैसा देतीं जबकि पर्दा ही के लिये नमाज़ की तक्बीरे तहरीमा के वक़्त कान तक भी हाथ उठाने से उन को मना किया गया है।

यह सारी बुराइयां बीच बाज़ार में होती थीं। और ग़ैर मुस्लिम दो रोया खड़े होकर तमाशा देखते थे मगर मुस्लिम ज़िम्मेदारान जो साथ में होते थे औरतों की यह हालत देख कर इतना भी नहीं कह सकते थे कि यह मेला बाज़ार के बजाए बाहरी रास्ते से नदी तक जाए। हमारे वालिद साहब क़िब्ला मरहूम सिर्फ इतना किया करते थे कि अपने घर की औरतों को नहीं जाने देते थे इस लिये हमारे घर यह तेवहार भी नहीं होता था अल्बत्ता कभी वह और अक्सर मौलवी मुहम्मद ज़करिया साहब मरहूम साल में एक बार इसी तेवहार के रोज़ दरिया के क़रीब शहीद बाबा के मज़ार के नाम पर शीरीन के लिये चन्दा करते और अस्र की नमाज़ पढ़ कर मेले के बाद दरिया पर जाते। मगर वहां सब

को मज़ार का होना तस्लीम नहीं था।

जब मैं ने होश संभाला तो लोगों को बताया कि अगर वाक़ई वहां मज़ार हो और हम ज़ियारत के लिये न जायेंगे तो गुनहगार नहीं होंगे कि मज़ार की ज़ियारत हम पर फ़र्ज़ व वाजिब नहीं। और अगर मज़ार न हो तो हदीस शरीफ़ لَعَنَ اللّٰهُ مَنْ زَارَ بِلَا مَزَارٍ के मुताबिक़ ज़ियारत करने के सबब हम अल्लाह की लअ्नत के मुस्तहिक़ होंगे। लिहाज़ा भलाई की सूरत ज़ियारत न करने ही में है ---- मेरे इस बयान पर उस की ज़ियारत ख़त्म हो गई।

फ़ारिग़ुत् तहसील होने के बाद अपने इब्तिदाई दौर में एक साल इस तेवहार के दिन मैं घर ही पर था और नमाज़े जुमा के बाद मेला निकलने वाला था, मैं ने उस के ख़िलाफ़ नमाज़ से पहले सख़्त तक़रीर की और लोगों को ग़ैरत दिलाई कि आप की बहू बेटियां बेपर्दगी और बेहयाई के साथ बीच बाज़ार से गुज़रती हैं मगर आप लोगों को शर्म नहीं आती, बड़े अफ़्सोस की बात है। ख़्वाजा खिज़र की नियाज़ अपने घर दिलवाइये और अगर दरिया के किनारे दिलवाना चाहें तो मर्द लेकर जायें औरतें हरगिज़ न जाएं।

मेरे इस बयान को लोगों ने मान लिया और अपने-अपने घर जा कर औरतों को सख़्ती से मना कर दिया मगर पुश्तहा पुश्त की रस्म यका यक बन्द होती देख कर लीडर क़िसम की औरतें बहुत परेशान हुईं और हमारी बात को रद करने के लिये बड़ी कोशिशें कीं लेकिन अल्हम्दु लिल्लाह! वह कामयाब न हुईं और यह हयासोज़ तरीक़ा हमेशा के लिये ख़त्म हो गया।

## मां-बाप का खाना

मां-बाप के मरने पर ओझा गंज में उन का खाना शादी ब्याह की तरह बड़ी धूम धाम से किया जाता था जिस में तमाम अज़ीज़ व अक़ारिब और सारे रिश्तेदारों को जमा किया जाता था। कुछ ख़ानदानी फ़क़ीरों को और ख़ास तौर से बिरादरी को खाना खिलाया जाता था। मौत ही के दिन से लोग उस खाने का इन्तेज़ार शुरू कर देते, अगर किसी की

जानिब से खिलाने में ताख़ीर होती तो वह कहीं बोलने का हक़ नहीं रखता था। लोग उसे फ़ौरन ताना देते कि तू क्या बात करता है तेरा बाप मर गया और तू अभी तक बिरादरी को खाना नहीं खिला सका।

अगर कोई शख़्स खिलाने की ताक़त नहीं रखता तो बिरादरी के दबाव और उन की ताना ज़नी से बचने के लिये मजबूरन क़र्ज़ लेकर खाना करना पड़ता और अगर क़र्ज़ लेकर भी कोई आदमी खिलाने की ताक़त नहीं रखता तो मुसलमानों की भरी पंचायत में खड़े हो कर वह पंच से माफी मांगता, जिस पर यह कहा जाता कि माफी नहीं मिलेगी, लोगों के यहां तुम ने खाया है तो तुम्हें भी सब को खिलाना पड़ेगा। जब बहुत देर तक हाथ जोड़ कर वह पंच से आजिज़ी मन्नती करता और अपनी मजबूरियां बयान करता तो बादिले नाख़्वास्ता उसे माफ कर दिया जाता मगर वह पूरी आबादी में निहायत ज़लील व रुस्वा हो जाता।

चूंकि इस तरह मैय्यित के घर वालों से खाना वसूल करना हराम व ना जाइज़ है इस लिये मैं ने इस की सख़्त मुख़ालेफत की मगर ताना ज़नी के ख़ौफ से लोग छोड़ने की हिम्मत नहीं कर पा रहे थे। लेकिन जब मेरे वालिदैन का इन्तेक़ाल हुआ तो मैं ने खाना नहीं किया बल्कि ईसाले सवाब के लिये बड़ी मस्जिद में इलैक्टरिक लगवाई, इस तरह लोगों को बिरादरी के ज़ुल्म से नजात मिल गई। उस ने अपना हक़ ख़त्म कर दिया माफी मांगने का सवाल नहीं रह गया, ख़ुद इख़्तियारी हो गया और न खिलाने की सूरत में ताना ज़नी करने और ऐब निकालने की बात बिल्कुल ख़त्म हो गई।

अब ओझा गंज के लोग अक्सर यह खाना नहीं करते और जो करते हैं वह रिया व तफाख़ुर और नाम व नमूद के लिये करते हैं इस लिये कि अगर सवाब मक़्सूद होता तो जिस में ज़्यादा सवाब है वह काम करते, पेट भरों को खाना न खिलाते बल्कि किसी ग़रीब व लाचार बेवा की इमदाद करते, सदक़ए जारिया में ख़र्च करते, तामीरे मस्जिद में लगाते या तालिब इल्मे दीन को देते कि एक के बदले कम से कम सात सौ का सवाब है। देखिये फतावा रज़विय्यह:4/500

लिहाज़ा ओझा गंज, गुजरात व मुम्बई वग़ैरा के वह तमाम लोग जो ज़्यादा सवाब का काम छोड़ कर हज़ारों रुपया खिलाने पर ख़र्च करते हैं और कहते हैं कि हम सवाब ही की नियत से ऐसा करते हैं वह झूठ बोलते हैं, इस लिये कि अगर उनका मक्सद सिर्फ सवाब होता तो वह पेट भरों को खाना न खिलाते बल्कि जिस में ज़्यादा सवाब है वह काम करते।

## ओझा गंज की कुछ और इस्लाहें

इस आबादी में पहले कुर्बानी का गोश्त आम तौर पर काफिरों को भी दिया जाता था, जिस में नाई, धोबी और चमार भी शामिल होते थे और ओझा गंज के पुराने ज़मीनदार बरहमन जो अब भी आबादी में बाअसर है उन को ख़ास तौर से दिया जाता था, इस लिये उस के ख़िलाफ बोलना बड़ा मुश्किल काम था मगर अल्लाह व रसूल जल्ल जलालहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के भरोसे पर हम ने हुक्मे शरअ सुना ही दिया कि काफिरों को कुर्बानी का गोश्त देना जाइज़ नहीं। इस रुकावट से ग़ैर मुस्लिमों में बड़ी खलबली पैदा हुई और जब हम से पूछा गया कि आप ने रोका है तो हम ने जवाब दिया कि हम नहीं रोकते बल्कि हमारा मज़हब रोकता है और जैसा आप का धर्म जितनी इजाज़त देता है उतना ही बर्ताव आप हमारे साथ करते हैं वैसे ही हमारा मज़हब जितनी बातें जाइज़ ठहरता है उस से ज़्यादा हम आप के साथ करने से मजबूर हैं। अल्हम्दु लिल्लाह! ओझा गंज से यह ना जाइज़ तरीक़ा दूर हो गया।

और बाज़ लोग जो कहते हैं कि काफिरों को कुर्बानी का गोश्त देना जाइज़ है। फतावा आलमगीरी में लिखा है तो यह उन की ग़लत फहमी है, इस किताब में सिर्फ ज़िम्मी काफिरों को देना जाइज़ लिखा है और यहां के काफिर ज़िम्मी नहीं हरबी हैं जैसा कि रईसुल फुक़हा हज़रत मुल्ला जीवन रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने ज़मानए मुग़लिया में तफ्सीराते अहमदिया:300 पर तहरीर फरमाया है: ان هم الاحربى ومايعقلها الاالعالمون

और फतावा आलमगीरी की अस्ल इबारत यह है: يهب منها ما شاء للغنى والفقير والمسلم والذمى كذا فى الغيائية ।

जामा मस्जिद के इमाम होने की हैसियत से कुर्बानी का जानवर सिर्फ हमारे वालिद साहब ज़िबह किया करते थे और उस का सर व पाया उन का हक़ माना जाता था, चूंकि इब्तिदा ही से मेरे अन्दर इस्लाह का जज़्बा पाया जाता था तो फारिगुत् तहसील होने से बहुत पहले हम ने ऐलान कर दिया कि बेहतर है अपनी कुर्बानी का जानवर अपने हाथ से आप लोग खुद ज़िबह करें और खुद न कर सकें तो जिस से चाहें करवा सकते हैं, इमाम का ज़िबह करना ज़रूरी नहीं और कुर्बानी का सर व पाया ज़िबह करने वाले का हक़ नहीं, आप जिसे चाहें दे सकते हैं और अपने काम में भी ला सकते हैं।

इस ऐलान के बाद अब कुर्बानी का जानवर जिस से चाहते हैं लोग ज़िबह करवाते हैं और उस के सर व पाया का हक़दार ज़िबह करने वाले को नहीं ठहराते।

पूरी आबादी के मुसलमान ओझड़ी और आंतें बिला तकल्लुफ खाते थे, हम ने उस के ना जाइज़ होने का ऐलान किया और आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरेलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह व दीगर उलमाए अहले सुन्नत के फत्वे सुबूत में पेश किये तो जो लोग हुक्मे शरअ़ के पैरौ हैं, उन्हों ने खाना छोड़ दिया और कुर्बानी के जानवर की ओझड़ी और आंतें ज़मीन में दफन कर देते हैं और कोई भंगी ले जाना चाहता है तो उसे मना नहीं करते जैसा कि फतावा रज़विय्यह:6/167 पर है मगर जो लोग कि शरअ़ के बजाए अपने बाप दादा के पैरौ हैं वह अब भी पोशीदा तौर पर खाते रहते हैं।

शबेक़द्र में इशा की नमाज़ के लिये सात अज़ान कही जाती थीं और ईदैन की भी अज़ान होती थी जिस में नहीं मालूम क्या क्या अल्फाज़ कहे जाते थे। हम ने शबेक़द्र की इशा की भी एक अज़ान जारी की और ईदैन की अनोखी अज़ान को बन्द करवा के सिर्फ दो

बार *अस्सलातु जामिअ़तुन्* कहने की इजाज़त दी।

सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम और सहाबए किराम के ज़मानए मुबारका में खुत्बा की अज़ान मस्जिद के बाहर दरवाज़ा ही पर हुआ करती थी जैसा कि हदीस की मोतबर व मशहूर किताब अबू दाऊद शरीफ़:1/162 पर हदीस मौजूद है लेकिन कुछ ज़माने के बाद यह अज़ान मस्जिद के अन्दर मिम्बर के पास होने लगी। फिर इसे हदीस शरीफ़ के मुताबिक़ मस्जिद से बाहर लाने में जगह-जगह फित्ने व फसाद हुए मगर हम ने ओझा गंज में ऐसी तरकीब इख़्तियार की जिस से बग़ैर किसी ऐतराज़ व फसाद के निहायत आसानी के साथ यह अज़ान भी मस्जिद के बाहर होने लगी।

आज से 25-30 साल पहले हम ने जहां भी पूछा कि मुर्दे को लुंगी कहां से कहां तक दी जाती है तो मालूम हुआ कि नाफ से पैर तक यहां तक कि यही हाल बराऊं शरीफ में भी था। और जब हम ने फिक्ह की मोतबर किताबों के हवाले से बताया कि मुर्दा की लुंगी सर की चोटी से पैर तक होनी चाहिये तो लोग सुन कर हैरत ज़दा हो गए और फिर हम ने अनवारुल हदीस में कफन की आम ग़लतियों पर इन्तेबाह लिखा जिस से बहुत लोगों ने इस्लाह की।

ओझा गंज में भी मुर्दा को लुंगी नाफ ही से दी जाती थी और मैय्यित के दोनों हाथ करवटों में रखने के बजाए काफिरों की तरह सीने पर रखे जाते थे, इन के अलावा और बहुत सी ग़लतियां कफन व दफन के बारे में राइज थीं जिन को हम ने दुरुस्त किया। छोटे बच्चे की क़ब्र में तख़्ता की जगह पर पका हुआ खपड़ा रखा जाता था, हम ने इसे मना किया कि पक्की ईंट की तरह इस में भी आग का असर पाया जाता है और बाद दफन क़ब्र पर अज़ान कहना जारी किया।

ओझा गंज में आम तौर पर लोगों का वुज़ू और सज्दा सहीह नहीं था कि धोए जाने वाले अअ्ज़ा का कुछ हिस्सा धोते थे और कुछ सिर्फ भिगा कर छोड़ देते थे, उस पर पानी नहीं बहाते थे। और सज्दे में दोनो पांव की उंगलियों में से किसी का पेट ज़मीन पर नहीं लगता था जबकि

एक-उंगली का पेट ज़मीन पर लगना फ़र्ज़ और दोनों पांव की तीन-तीन उंगलियों का पेट लगना वाजिब है। हम ने इन ख़राबियों से लोगों को आगाह किया और सहीह तरीक़े से वुज़ू करने और नमाज़ पढ़ने का ढंग बताया। इसी लिये हमारे हिफ्ज़ व नाज़ेरा के उस्ताज़ मौलवी मुहम्मद ज़करिया मरहूम कहा करते थे कि हम आप के उस्ताज़ नहीं हैं बल्कि आप हमारे उस्ताज़ हैं कि वुज़ू और नमाज़ वग़ैरा का सहीह तरीक़ा हम ने आप ही से सीखा है।

मुल्क के बहुत से बड़े-बड़े शहर जहां साल में कई शानदार जलसे होते हैं और बेशुमार उलमा की तक़रीरें होती हैं, वहां की औरतें इस मस्अले से बेख़बर थीं कि मर्दों की तरह उन को भी बिला उज़्र सारी नमाज़ें बैठ कर पढ़ना जाइज़ नहीं है। वह हर हाल में फ़र्ज़ व वाजिब तमाम नमाज़ें बैठ ही कर पढ़ती थीं और सख़्त गुनहगार होती थीं। हम ने जगह-जगह अपनी तक़रीरों में इस मस्अला को बयान किया जिस से दीनदार तबक़ा बहुत ममनून हुआ। और फिर अनवारुल हदीस व अनवारे शरीअ़त में इस मस्अले को वज़ाहत के साथ लिखा जिस से अल्लाह की बहुत सी नेक बंदियों ने अपनी फ़र्ज़ नमाज़ों को बर्बाद होने से बचाया। दीगर मक़ामात की तरह ओझा गंज में भी यह ख़राबी पाई जाती थी, *अल्हम्दु लिल्लाह!* इस की भी दुरुस्तुगी हुई।

आझा गंज का मज़हबी मेअ़्यार बुलंद करने के लिये जो काम हम ने किये हैं उन में से दोनों मसाजिद की पुख़्ता तामीर भी है। छोटी मस्जिद अलम व शद्दे की आग से जल जाने के बाद 1385 हि0 मुताबिक़ 1965 में तामीर हुई जिस में ज़्यादा से ज़्यादा अपनी तरफ़ से रक़म लगाने और ख़ालिसन् लिवजूहिल्ला अहमदाबाद और मुम्बई व भेवंडी वग़ैरा से चन्दा फ़राहम करने की ज़िम्मेदारी हम ने ली और हिसाब व किताब, मटेरियल की फ़राहमी और मज़दूरों की निगरानी वग़ैरा का काम मुल्लाह मुहम्मद हुसैन और मुहम्मद यासीन नें अंजाम दिया।

बड़ी मस्जिद जो अभी तक खपड़ेल (सफ़ाला पोश) थी वह भी बहुत बोसीदा हो गई थी उस को भी शहीद करने से चार, पांच साल

कब्ल आबादी में चन्दे का आग़ाज़ किया और हम ने तक्मील तक हर साल एक माह की तंख़्वाह देने का वादा किया जो *अल्हम्दु लिल्लाह!* अब तक पूरा किया। मुम्बई के कुछ अहले ख़ैर हज़रात से भी इमदाद हासिल की और आबादी के लोगों ने काफी दिलचस्पी ली, छत लगने तक का इन्तेज़ाम इरफान अहमद और उन के बाप रमज़ान अली ने किया। फिर सफाई करवाने और ख़ूबसूरत मीनारा व उम्दा फर्श बनवाने का काम मौलवी सलाहुद्दीन ने अंजाम दिया। और अज़ीज़ गिरामी मौलाना सैयद मुहम्मद अनवर चिश्ती ज़ीद मज्दहुम साहिब ज़ादा सज्जादा नशीन आस्तानए आलिया फफूंद शरीफ ज़िला इटावा ने तामीरे जदीद के तारीख़ी माद्दे यह इस्तिख़राज किये:

قَالَ الْإِمَامُ الْأُمَمِ مَنْ بَنٰى لِلّٰهِ مَسْجِدًا بَنَى اللّٰهُ لَهٗ بَيْتًا فِى الْجَنَّةِ

*कालल् इमामुल् उममि मन् बना लिल्लाहि मस्जिदन् बनल्लाहु लहू बैतन् फिल् जन्नति*

14 ——————— हिज0 ——————— 5

*जामा मस्जिद ओझा गंज बसई व कोशिश मुफ्ती जलालुदीन अहमद साहब अमजदी*

19 ——————— ई0 ——————— 85

## पुरानी रस्में

बाप दादा से पुरानी रस्में जो चाली आती हैं, जाहिल अवाम को उन से बाज़ रखना और उन्हें बन्द करवाना बड़ा मुश्किल काम है। इस लिये ओझा गंज की बहुत सारी ग़लत रस्मों की इस्लाह में हमें बड़ी-बड़ी मुश्किलात का मुक़ाबला करना पड़ा। तरह-तरह की अज़िय्यतें उठानी पड़ीं और क़िस्म-क़िस्म के दिलख़राश जुमले सुनने पड़े। उन में से एक यह भी है कि मैं जब भी ओझा गंज में किसी ग़लत बात से मना करता तो पीठ पीछे यह कहा जाता कि नए-नए मौलवी और नया-नया मस्अला। पहले मेरे पास इस बात का कोई जवाब नहीं था। मैं सुनने के बाद पेचो-ताब खा के रह जाता। आख़िर में ने इस का जवाब तलाश कर लिया और तक़रीरों में बयान किया कि नए-नए मौलवी और नया-नया मस्अला, पीठ पीछे यह कहना औरतों का काम है। अगर

आप वाक़ई मर्द हैं तो टांडा यहां से क़रीब है वहां चले जाएं और जिस बात को मैं ना जाइज़ कहता हूं उस को किसी मौलवी से जाइज़ लिखवा लाएं या बरेली शरीफ से फ़त्वा मंगा लें और घर में बैठ कर औरतों की तरह बात करना छोड़ दें।

मेरे इस बयान के बाद फिर इस क़िस्म की बातें सुनने में नहीं आईं। मगर अवाम जो पुश्तहा पुश्त से ग़लतियों में मुब्तला थे, उन्हें उन बातों का छोड़ना बहुत शाक़ गुज़रा, इस लिये उन के दिलों में हमारी तरफ से तक्लीफ पैदा हो गई और मुस्लिम आबादी के ज़िम्मेदारान हमारी इस्लाह से अपनी तौहीन महसूस किये और फिर हर तरह की तरक़्क़ी देख कर हमारे हसद में मुब्तला हो गए।

## हसद

किसी की नेमत देख कर जलना और यह चाहना कि इसके बजाए यह बात मुझे हासिल हो, इसे हसद कहते हैं। हदीस शरीफ के मुताबिक़ हसद ऐसा गुनाह है जो हासिद की नेकियों को इस तरह जलाता है जैसे आग लकड़ी को اَلحَسَدُ يَاكُلُ الحَسَنَاتِ كَمَا تَاكُلُ النَّارُ الحَطَبَ (अबू दाऊद शरीफ:2/316)

अल्लाह तआला का मुझ पर कुछ ऐसा फज़ले अज़ीम हुआ कि दूर व नज़दीक के बहुत से लोग मेरे हसद में मुब्तला हुए यहां तक कि तक़्वा व परहेज़गारी का दावा रखने वाले भी इस में गिरफ्तार हो गए और तरह-तरह की अज़िय्यतें पहुंचाईं। लेकिन उन में ओझा गंज वालों को सब से ज़्यादा हसद हुआ, जिन में बदलू नाम का एक शरीफ आदमी पेश-पेश रहा, इन लोगों ने मेरे एक पड़ोसी को (जिस से उस के घर वाले भी परेशान रहते हैं) उभार दिया तो उस ने हमें ख़ूब सताया।

और हमारे मकान के बिल्कुल मुत्तसिल एक ख़ाली पड़ी हुई ज़मीन थी जिसे ग़ैर ममलूका समझ कर हम ने क़ब्ज़ा कर लिया और दीवार खड़ी करके अपने घेरे में ले लिया। फिर जब बाद में ज़ाहिर हुआ कि यह ज़मीन ओझा गंज के मशहूर ख़ानदान धाकड़ की है तो हम ने अपना क़ब्ज़ा हटाना चाहा, उन लोगों ने कहा यह हमारे कोई ख़ास

काम की नहीं है जब दीवार खड़ी हो गई तो उस को न गिराइये, हम ज़मीन की मुनासिब क़ीमत ले लेंगे।

यह उस ज़माने की बात है जबकि ज़मीन की ज़्यादा क़दर नहीं थी और ओझा गंज में पांच सौ रुपये बीघा में मज़रुआ ज़मीन फ़रोख़्त होती थी, यह भी मज़रुआ ज़मीन का छुटा हुआ हिस्सा था, हम ने कहा आप लोग हज़ार रुपया बीघा के हिसाब से पैसा ले लीजियेगा। इस लिये कि कुल एक ही बिस्वा ज़मीन थी, उन लोगों ने कहा ठीक है ले लिया जाएगा।

फिर जब हम ने क़ीमत लेने के लिये बारहा तक़ाज़ा करना शुरू किया तो उस ख़ानदान के लोगों ने जवाब दिया कि अच्छा हो जाएगा, आप परेशान न हों। आख़िर में उन को एक शख़्स ने समझा दिया कि ज़मीन की क़ीमत मत लो इस लिये कि तुम ग्यारह बारह हिस्से दार हो, थोड़ा-थोड़ा पैसा पाओगे, इस से बेहतर यही है कि आलिमे दीन हैं बग़ैर क़ीमत ऐसे ही ब़तौर नज़्राना दे दो। उन लोगों ने यही किया और हम ने उन की नज़्र क़बूल कर ली लेकिन लिखाया नहीं और यह भूल हम से इस बुनियाद पर हुई कि उन लोगों के मूरिसे आला धाकड़ हमारे वालिद साहब और दूसरे पढ़े लिखे लोगों की बड़ी इज़्ज़त करते थे और उन के साथ बड़ा हुस्ने ऐतक़ाद रखते थे, यहां तक कि उन्हों ने अपने बेटों को वसिय्यत की थी कि मैं बहुत गुनहगार आदमी हूं, मुझे क़ब्रिस्तान में रास्ता पर दफ़न करना, मुझ को यक़ीन है कि कोई अल्लाह का मुत्तक़ी परहेज़गार बन्दा मेरे ऊपर से कभी गुज़र जाएगा तो मेरी बख़्शिश हो जाएगी। मगर यह अजीब इत्तिफ़ाक़ है कि उन की क़ब्र के निशानात मिटने से पहले जिस रास्ते पर वह दफ़न किये गए थे वह रास्ता ही बन्द हो गया।

मुझे यक़ीन था कि बग़ैर क़ीमत ज़मीन दे देने के बाद उस ख़ानदान का कोई फ़र्द उस के बारे में फ़िर कोई बात नहीं करेगा। मैं ने आयते करीमा هَلْ جَزَاءُ الْإِحْسَانِ إِلَّا الْإِحْسَانُ (ऐहसान का बदला ऐहसान ही है) के मुताबिक़ उन लोगों के साथ हर मुमकिन तरीक़ा से भलाई करनी

शुरू की और बहुत दिनों तक हमारे और उन के दरमियान तअल्लुक़ात खुश्गवार रहे। लेकिन जब हम ने अपना मकान पुख़्ता बना लिया तो कुछ शरीफ़ों के तन बदन में हसद की आग भड़क उठी और उन्हों ने अपना कलेजा ठंडा करने के लिये धाकड़ ख़ानदान को बेहका दिया तो वह लोग जोकि उन में ग़लत हैं उन्हों ने कहना शुरू कर दिया हमारी ज़मीन पर ज़बर्दस्ती क़ब्ज़ा कर लिया, हम ने उन से कहा कि जब तुम अपनी कही हुई बात से फिर गए तो अब ज़मीन की क़ीमत मौजूदा भाव से ले लो मगर हासिदीन ने उन्हें लेने नहीं दिया और बने हुए पुख़्ता मकान के ढाने में हमारा बहुत नुक़्सान था, इस लिये यह मामला ऐसा ही पड़ा रह गया।

**नोटः** किताब में वाक़िआ शाए होने के बाद धाकड़ ख़ानदान ने मजबूर होकर ज़मीन की क़ीमत ले ली। *अल्-अमजदी*

लोगों के हसद की हमारे पास कोई दवा नहीं है इस का इलाज सिर्फ़ वही है जो हज़रत शेख़ सअदी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने तज्वीज़ फ़रमाया है किः

*ब मीर ता ब रही ऐ हसूद कीं रंजेस्त*
*कि अज़ मशक़्क़त ऊ जुज़ बमर्ग नतवां रस्त*

यानी ऐ हसद करने वाले तू मर जा इस लिये कि हसद ऐसी बीमारी है कि उस की तक्लीफ से मौत के बग़ैर तुम छुटकारा नहीं पा सकते। (गुलसिता)

## मिज़ाज में शिद्दत

मेरे बारे में आम तौर पर कहा जाता है कि मिज़ाज में शिद्दत है ग़ालिबन इस लिये कि मैं तलबा पर सख़्ती रखता हूं। उज़्रे माकूल के बग़ैर मकान पर ज़्यादा रोज़ ठहरने वालों को मुनासिब सज़ा देता हूं। हर तालिब इल्म को अपनी बारी पर इबारत पढ़ने पर मजबूर करता हूं और मेहनत न करने वालों को बहुत सख़्त सुस्त कहता हूं। क़िब्ला की सिमत पेशाब करने वाले, दाहिने हाथ से इस्तिंजा का ढेला सुखाने वाले, लोगों के सामने पायजामे का पायचा उठा कर पेशाब करने वाले, खड़े

होकर पानी पीने वाले, बायें हाथ से खाने पीने वाले या दाहिने हाथ से नाक साफ करने वाले किसी तालिब इल्म को दूर से भी देख लेता हूं तो उसे बुला कर तंबीह करता हूं और अगर झूठ बोलता है कि मैं ने ऐसा नहीं किया तो कुछ न कुछ उसे ज़रूर सज़ा देता हूं। ना समझ तलबा की नज़र में महबूब बनने के लिये उन की ग़लतियों से सर्फे नज़र नहीं करता हूं बल्कि पहले नर्मी से उन्हें समझाता हूं और नहीं मानते तो फिर सख़्ती करता हूं मगर इतनी नर्मी नहीं इख़्तियार करता कि जो सुस्ती से ताबीर हो और न इतनी सख़्ती करता हूं कि जिसे ज़ुल्म कहा जाए इसी लिये फैज़ुर रसूल की 32 साला तदरीसी ज़िंदगी में कभी तलबा ने मेरे ख़िलाफ महाज़ नहीं बनाया और न कभी इस्ट्राइक की, जबकि बाज़ दूसरे लोग कि जिन के मिज़ाज की शिद्दत नहीं मशहूर है उन के ख़िलाफ कई बार तलबा की इस्ट्राइक हो चुकी है।

मेरी सख़्ती से बहुत से लोगों को फाइदा पहुंचा कि अच्छी तालीम और उम्दा तरबियत से आरास्ता होकर कामयाब ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं। अगर मेरे अन्दर ज़्यादा नर्मी होती तो हमारे लड़के भी बर्बाद हो जाते, न बा सलाहियत आलिम बनते और न किसी दर्सगाह में पढ़ाने के क़ाबिल होते, सिर्फ़ नाम के मौलाना बनते।

और मेरे मिज़ाज की सख़्ती ही का नतीजा है जो ओझा गंज के मुसलमानों की इस्लाह हुई, दहरियत का ख़ातिमा हुआ और बद मज़्हबियत से महफ़ूज़ रहा, वरना इस आबादी में भी अब तक वहाबियत घुस गई होती।

## कुछ और बातें

मुल्की सियासत बल्कि ओझा गंज की सियासत से भी मेरा कोई तअल्लुक़ नहीं है यहां तक कि एम.एल.ए. एम.पी. और प्रधान वग़ैरा किसी को होश संभालने के बाद से अब तक मैं ने कभी वोट नहीं दिया और न अपने घर वालों को देने देता हूं कि उन के ग़लत कामों की ज़िम्मेदारी हमारे ऊपर भी आ जाएगी।

रेडियो ख़रीदना मेरे नज़्दीक ना जाइज़ नहीं है, उस का ग़लत इस्तेमाल ना जाइज़ है और सहीह इस्तेमाल बहुत कम लोग कर पाते हैं इस लिये आज तक मैं ने उसे अपने घर में नहीं दाख़िल होने दिया, न खुद ख़रीदा और न शादी ब्याह में लड़की वाले को देने दिया। बल्कि टेपरेकार्ड भी नहीं लिया, इस ख़ौफ से कि मैं टेपरेकार्ड ख़रीदूंगा तो मेरे लड़के रेडियो लाकर गाना सुनेंगे और मैं रेडियो ख़रीदूंगा तो मेरे लड़के टेलीवीज़न और वी.डी.ओ. लाकर अमजदी मंज़िल को सनेमा घर बना देंगे।

मैं ने खुशहाली के बावजूद अपने किसी लड़के को अंग्रेज़ी नहीं पढ़ाई और न इंशा अल्लाह तआला किसी को पढ़ाउंगा बल्कि हर एक को नाइबे रसूल ही बनाने की कोशिश करूंगा। और उन लोगों की राह कभी नहीं इख़्तियार करूंगा कि जो दस साल तक ज़कात व ख़ैरात खा कर इल्मे दीन हासिल किये और पूरे ज़मानए तालिब इल्मी में एक-एक पैसे के मोहताज रहे। फिर आलिम होने के बाद जब किसी मस्जिद या मदरसा के मुलाज़िम होकर खुशहाल हो गए तो अपने घर वालों को अंग्रेज़ी पढ़ा कर काफिरों की वज़अ् क़तअ् का दिलदादा बनाया, उन्हें फ़ासिक़ों का लिबास पहनाया और अपने घर से इस्लामी तौरो-तरीक़ा निकाल कर उसे मग़रिबी तहज़ीब का गहवारा बना दिया।

अगर कोई इस्लाम व सुन्नियत की तब्लीग़ व इशाअ़त और मज़्हबी किताबों का तर्जमा करने की नियत से अंग्रेज़ी ज़बान पढ़े तो हम उस के मुख़ालेफ नहीं हैं कि हदीस शरीफ *इन्नमल् अअ्मालु बिन्निय्यात* के मुताबिक़ इस नियत से किसी भी ज़बान को हासिल करेगा तो सवाब पाएगा।

हम मौजूदा अंग्रेज़ी कोर्स के मुख़ालिफ हैं जिस स उमूमन पढ़ने वालों को ज़ेहन ख़राब हो जाता है, मज़्हबी आज़ादी पैदा हो जाती है, माहौल बदल जाता है और बसा औक़ात नौबत यहां तक पहुंचती है कि एक दो पुश्त के बाद घर में दहरियत की बुनियाद पड़ जाती है --- जिस राह पर चलने वाले अक्सर हलाक हो जाएं ऐसा रास्ता बनाने

वाले और उस पर चलने वाले दोनों बेवकूफ़ हैं।

सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अज्मईन के ज़मानए मुबारका में रूमी और ईरानी वग़ैरा के सनह राइज थे मगर उन्हों ने उन में स किसी को नहीं इख़्तियार किया बल्कि इस्लाम और मुसलमानों की भलाई के लिये सनह हिजरी को जारी किया जिसे आज का मुसलमान मिटाने पर तुला हुआ है और उस को दुनिया से नेस्त व नाबूद कर देना चाहता है कि अवाम तो अवाम अक्सर उलमा व मशाइख़ भी अंग्रेज़ी ही तारीख़ व सनह लिखते व बोलते हैं। और सिर्फ़ गवर्नमेन्ट के कागज़ात में नहीं बल्कि अपने निजी मामलात शादी ब्याह और मख़्सूस खुतूत में भी इस्लामी तारीख़ व सनह को छोड़ कर सिर्फ़ अंग्रेज़ी पर इक्तेफा करते हैं, मैं इसे सख़्त ना पसंद करता हूं।

और मुसलमानों के वह खुतूत कि जिन के पते उर्दू से बिल्कुल ख़ाली होते हैं और वह बैजक कि जिन में अंग्रेज़ी गिन्तियां इस्तेमाल की जाती हैं उन्हें भी देख कर मुझ को तक्लीफ होती है। इसी लिये कुतुब ख़ाना अमजदिया बराऊं शरीफ और मदरसा अमजदिया अरशदुल उलूम औझा गंज का सारा हिसाब व किताब इस्लामी तारीख़ व सनह और उर्दू की गिन्तियों के साथ लिखा जाता है।

ख़ुदाए अज़्ज़ व जल्ल सारे मुसलमानों को तौफीक़ अता फरमाए कि वह तमाम बातें जो इस्लाम व मुसलमानों की इन्फेरादियत को बाक़ी रखने वाली हैं, उन्हें हमेशा जारी रखें और अपनी ग़फ्लत व लापरवाही से उन को मिटाने की कोशिश न करें। आमीन

फैज़ुर रसूल से मुझे बहुत मुहब्बत है इसी लिये मैं अक्सर बराऊं शरीफ में ही रहता हूं, बक़द्रे ज़रूरत अपने मकान पर जाता हूं और घर का इन्तेज़ाम देख कर फौरन वापस आ जाता हूं। हर 15 दिन पर जुमेरात को तदरीस से फुर्सत पा कर जाता हूं और जुमा को सुबह 9-10 बजे बराऊं शरीफ के लिये रवाना हो जाता हूं। जब कि मेरे तमाम अहलो- अयाल वतन ही में रहते हैं और 32 बरस में कभी एक

दिन के लिये भी बराऊं शरीफ नहीं आए -- और ओझा गंज से बराऊं शरीफ के लिये 5 सवारियों से 94 किलो मीटर का सफर करना पड़ता है।

मूसलाधार बारिश, लू के थपेड़े और सख़्त से सख़्त सर्दी भी हमें अब तक अपने प्रोग्राम के मुताबिक़ सफर करने से नहीं रोक सकी। मैं अपने इरादे पर बहुत सख़्ती से अमल करता हूं, यहां तक कि मेरी अहलिया बीमार थीं और हालत बहुत ज़्यादा नाज़ुक थी मगर मैं अपने प्रोग्राम के मुताबिक़ वतन से चल पड़ा और अभी रास्ता ही में था, बराऊं शरीफ नहीं पहुंचा था कि इन्तेक़ाल हो गया। और मेरी वालिदा सख़्त अलील थीं उन के दम टूटने का इन्तेज़ार किया जा रहा था मगर मैं अपने इरादे के मुताबिक़ घर से निकल पड़ा और अभी एक घंटा भी नहीं गुज़रा था कि वह दुनिया से रुख़्सत हो गईं।

और रबीउल आख़िर 1407 हि० में हमारा सब से छोटा लड़का जो मेरे ओझा गंज पहुंचने के दिन थोड़ी-थोड़ी देर पर घर से निकल कर मेरा रास्ता देखता है, वह चेचक के बुख़ार में मुब्तला था और बेहोशी जैसी कैफ़ियत तारी थी कि मेरा घर पर पहुंचना भी वह नहीं जान सका मगर मैं अपने इरादे के मुताबिक़ दूसरे दिन घर वालों को यह तसल्ली देकर चला आया कि घबराने की ज़रूरत नहीं अच्छा हो जाएगा। और जब बराऊं शरीफ पहुंच कर सख़्त उलझन हुई तो एक तालिब इल्म को ओझा गंज भेज कर ख़ैरियत मालूम की।

इसी इरादा की पुख़्तगी के सबब ज़िंदगी भर में कभी मुझ से वादा ख़िलाफी नहीं हुई, मैं ने जब भी किसी से वादा किया तो वक़्त पर किसी न किसी तरह ज़रूर पहुंच गया और बराऊं शरीफ हमेशा तातील व रुख़्सत के मुताबिक़ ही हाज़िर हुआ। 32 बरस में कभी एक दिन की ताख़ीर से नहीं पहुंचा। बहुत से लोग तातीले कलां में दो माह अपने वतन में रहने के बा वजूद वक़्त पर बराऊं शरीफ नहीं पहुंच पाते और मैं पूरे माहे रमज़ान में मुम्बई तरावीह पढ़ा कर दारुल उलूम खुलने से एक रोज़ पहले ही बराऊं शरीफ हाज़िर हो जाया करता था। एक बार

मुम्बई से रिज़र्व टिकट मिलने में दुश्वारी हुई तो ख़तमे तातील के दिन ओझा गंज पहुंचा और एक घंटा मकान पर रह कर शाम तक बराऊं शरीफ़ आ गया।

अराकीने फ़ैज़ुर रसूल का हाल यह है कि जो लोग एक हफ्ता की रुख़्सत लेकर जाते हैं अगर वह दो तीन हफ्ता पर आते हैं तो उन से भी ऐहतरामन यह मुतालेबा नहीं करते कि आप इतनी ताख़ीर से क्यों आए? तो मैं अराकीन के दबाव से वक़्त पर नहीं हाज़िर होता हूं बल्कि निगाह में वक़्त की क़द्र और उस की पाबंदी है इस लिये ऐसा करता हूं।

कभी झूठे बीमार बन कर रुख़्सते अलालत नहीं ली, इसी लिये दारुल उलूम के क़ानून के मुताबिक़ 32 साला ख़िदमात की तक़रीबन 14 माह की रुख़्सते अलालत महफ़ूज़ है। बाज़ लोगों ने बारहा समझाया कि हर साल की पूरी रुख़्सते अलालत लेकर ख़त्म कर दिया करो। लेकिन हम कभी इस की जुरअत नहीं कर सके और हमेशा ख़ुदाए तआला से डरते रहे झूठा बीमार बनने से कहीं ऐसा न हो कि वह हक़ीक़त में बीमार कर दे और आक़िबत ख़राब होने का ख़ौफ़ अलग से दामनगीर रहा। हदीस शरीफ़ में है:

لَا تَمَارَضُوا فَتَمْرَضُوا فَتَمُوتُوا فَتَدْخُلُوا النَّارَ

झूठे बीमार मत बनो कि हक़ीक़त में बीमार हो जाओगे और मर जाओगे तो जहन्नम में जाओगे। (अल्-मल्फ़ूज़:4/35)

अल्बत्ता साढ़े दस साल की उम्र से पहले हिफ़्ज़ करने के ज़माने में एक मर्तबा हम भी बीमार बने थे, इस लिये कि हमारे बाज़ साथी अक्सर दर्दे सर का बहाना बना कर घर बैठ रहते और फिर खेलते रहते, तो उन्हें देख कर हम भी एक दिन मक्तब नहीं गए और दर्दे सर का बहाना बना कर बैठ गए मगर फिर ऐसी उलझन पैदा हुई कि घर पर ही पढ़ना शुरू कर दिया और जब तक वालिद साहब को सुना कर सबक़ नहीं ले लिया चैन नहीं आया।

# नमाज़ के लिये ग़ैबी ताईदें

मैं दीनदार घराने में पैदा हुआ और मेरे वालिदैन नमाज़ के सख़्त पाबंद थे, इस लिये मैं बहुत बचपन ही से नमाज़ पढ़ने लगा था और शुऐबुल औलिया हज़रत शाम मुहम्मद यार अली साहब क़िब्ला अलैहिर रहमत वर्-रिज़्वान जिन की नमाज़ तो नमाज़, जमाअत तो जमाअत सफर व हज़र में 48 साल तक तक्बीरे ऊला भी नहीं फौत हुई, उन की चौदह साला सोहबत ने मुझ को और नमाज़ का पाबंद बना दिया। फिर 1396 हि0 में हज्जे बैतुल्लाह और सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के आस्तानए मुबारका की हाज़िरी के बाद नमाज़ का मज़ीद ऐहतमाम हो गया कि ऐहतियातन सफर में अव्वल वक़्त नमाज़ पढ़ने की कोशिश करता हूं। लोटा, मुसल्ला और कुतब नुमा हमेशा साथ रखता हूं। हत्तल मक़्दूर में नमाज़ के वक़्त में सफर करने से परहेज़ करता हूं। अगर बहालते सफर नमाज़ पढ़ने में ज़्यादा परेशानी का ख़ौफ होता है तो उसे कई टुक्ड़े कर देता हूं, कई मौक़ों पर नमाज़ पढ़ने का इमकान न रहा तो फज़्ले ख़ुदावन्दी से ग़ैबी ताईदें हुईं और हम ने वक़्त पर नमाज़ें पढ़ लीं।

फिरोज़ाबाद ज़िला आगरा हम तक़्रीर के लिये गए और वाज़ से फारिग़ होकर रात ही में वापस हो गए, जलसा वालों ने हमें ऐसी ट्रेन में बिठा दिया कि जिस में रश बहुत ज़्यादा था, फज्र का वक़्त हो गया, इटावा स्टेशन पर ट्रेन खड़ी हुई, मगर उस के अन्दर कोई सूरत नमाज़ पढ़ने की नहीं थी और न गेट से निकल कर किसी तरह बाहर पढ़ना मुम्किन था, मैं बहुत परेशान था कि अब क्या करूं, ख़ुदाए तआला से दुआ की कि नमाज़ के लिये कोई सूरत पैदा हो जाए कि ट्रेन का इंजन ख़राब हो गया और देर तक गाड़ी स्टेशन पर खड़ी रही, बहुत से लोग नीचे उतर पड़े, गेट ख़ाली हो गया, हम ने वुज़ू करके जब आराम से नमाज़ पढ़ ली तब इंजन दुरुस्त हुआ और ट्रेन वहां से रवाना हुई।

मैं एक मर्तबा अपने वतन जाने के लिये बराऊं शरीफ से रवाना हो कर बांसी पहुंचा, सर्दी का ज़माना था, मैं ने अव्वल वक्त 12-½ बजे जुहर की नमाज़ पढ़ ली मगर बस बहुत ताख़ीर से आई जिस के सबब रश बहुत ज़्यादा हुआ, 3-½ बजे वह बस बांसी से रवाना हुई और जब रुधौली पहुंची तो अस्र का वक्त आधा गुज़र चुका था और भीड़ के सबब बस से निकल कर नमाज़ पढ़ना मुमकिन न था, मैं सोचने लगा क्या करूं, यहीं बस छोड़ दूं, या कही आगे जा कर उतर जाऊं, अभी कोई फैसला नहीं कर पाया था कि बस वहां से रवाना हो गई मगर आबादी से निकल का पेंचर हो गई, हम ने खुदा का शुक्र अदा किया, सारे पैसिंजर उतर गए, हम ने वुज़ू करके नमाज़ पढ़ी, फिर दूसरी बस मिली जिस से बस्ती पहुंच कर मग़रिब की नमाज़ अदा की।

गर्मियों का ज़माना था, हमें लखनऊ से बस के ज़रिये फैज़ाबाद पहुंच कर टांडा जाना था, हम ने वक्त से पहले वुज़ू कर लिया कि भिटरया में बस खड़ी होगी तो हम नमाज़ पढ़ लेंगे। मगर वह भिटरया में खड़ी नहीं हुई और डराइवर व कन्डेक्टर दोनों साधुओं की शकल में बड़ी-बड़ी जटा रखाए हुए टीका धारी थे, उन से यह कतई उम्मीद नहीं थी कि वह कहने पर नमाज़ पढ़ने के लिये बस रोक देंगे।

मैं ने फैसला कर लिया कि अगर फैज़ाबाद पहुंचने से पहले सूरज के गुरूब होने का अंदेश हुआ तो मैं बस छोड़ दूंगा फिर नमाज़ पढ़ कर टेक्सी से चला जाऊंगा, बस चलती रही यहां तक कि अस्र का वक्त बिल्कुल आख़िर हो गया मगर फैज़ाबाद दूर रहा और अब मैं डराइवर से कहने ही वाला था कि बस रोक दो, मैं उतरूंगा कि ए.जी.एम. की कार ने बस के सामने आकर उसे रोक दिया, मेरे दिल की मुराद बर आई, अल्लाह तआला का शुक्र अदा किया, फौरन उतर कर अस्र की नमाज़ पढ़ी, बस देर तक खड़ी रही, फिर जब मग़रिब की नमाज़ भी हम ने पढ़ ली तो उस के बाद वह चल कर फैज़ाबाद पहुंची।

एक मर्तबा हमें इलाहाबाद से सुबह 4 बजे वाली पसिंजर ट्रेन के ज़रिये फैज़ाबाद आना था और ट्रेन की बोगियों में पानी नहीं था, सर्दी

का ज़माना था, हम ने वक़्त से पहले 4 बजे स्टेशन ही पर वुज़ू कर लिया, ट्रेन रवाना हुई, हम ऊपर की बर्थ पर लेट गए, आंख लग गई और फिर उस वक़्त बेदार हुए जबकि ट्रेन एक बहुत मामूली स्टेशन पर करासिंग के सबब खड़ी थी और फज्र का वक़्त आख़िर हो रहा था, मालूम हुआ कि स्टेशन पर पानी का इन्तेज़ाम नहीं है, ज़रूरत पर कुछ दूर से आता है, मैं बहुत परेशान हुआ कि अगर मैं पानी के पास वुज़ू करने के लिये आऊं तो हो सकता है ट्रेन चल पड़े और यह भी मुम्किन है कि खड़ी रहे तो अब मैं क्या करूं।

अल्लाह का फज़ल हुआ कि सामने की बर्थ पर लेटे हुए मुसाफिर ने पूछा कि आप परेशान क्यों नज़र आ रहे हैं? मैं ने उस को सूरते हाल से आगाह किया, उस ने कहा आप घबराइये नहीं मैं इंजन से पानी लाकर देता हूं, उस ने ऐसा ही किया और हम ने सूरज निकलने से पहले बड़े आराम से वुज़ू करके नमाज़ पढ़ ली फिर ट्रेन रवाना हुई।

मुम्बई के एक सफर में हम गार्ड की बोगी के क़रीब थे, ट्रेन से उतर कर जैसे ही हम ने नमाज़ की नियत बांधी उस ने सीटी लगा दी और फिर वह बार-बार सीटी बजाता और झंडी हिलाता रहा मगर ट्रेन चली नहीं, हालां कि डराइवर हमे देखता भी नहीं रहा, इस लिये कि स्टेशन की भीड़ के बाद हम ट्रेन के आख़िरी हिस्से के समाने थे, जब हम नमाज़ से फारिग़ होकर ट्रेन पर आ गए तब वह रवाना हुई।

---

शुऐबुल औलिया हज़रत शाह मुहम्मद यार अली साहब क़िब्ला रहमतुल्लाहि तआला अलैह फरमाया करते थे कि जो शख़्स नमाज़ से मुहब्बत रखता है और पाबंदी से उस को पढ़ना चाहता है तो खुदाए तआला ग़ैब से उस की मदद फरमाता है ---- हज़रत की इस बात का मुझे ज़िंदगी में बारहा तजर्बा हुआ जिन में यह चन्द वाक़िआ उन लोगों की नसीहत के लिये लिख दिये गए जो सफर में नमाज़ पढ़ने के लिये मौक़ा न मिलने का बहाना करते हैं। खुदाए तआला उन्हें हिदायत नसीब फरमाए। आमीन

# शार्गिदों को वसिय्यत

1) खुलूस के साथ ख़िदमते दीन को अपनी ज़िंदगी का मक़्सद क़रार दो। हुसूले ज़र को अपनी ज़िंदगी का मक़्सद न बनाओ।

2) मस्जिद, मदरसा की मुलाज़िमत के मअ्ना में आलिम न रहो, नाइबे रसूल के मअ्ना में आलिम बनो कि रसूल की तरह हर वक़्त इस्लाम व सुन्नियत की तब्लीग़ व इशाअ़त की फ़िक्र रखो और हर मुमकिन तरीक़े से उस के लिये कोशिश करते रहो।

3) कुरआन मजीद और हदीस शरीफ पढ़ने के साथ फ़िक़्ह का ज़्यादा से ज़्यादा मुतालेआ करो कि अल्लाह व रसूल के नज़्दीक सब से बड़ा आलिम वही होता है जो फ़िक़्ह में ज़्यादा होता है अगर्चे दूसरा हदीस व तफ्सीर से ज़्यादा इश्तेग़ाल रखता हो। (फतावा रज़विय्यह:4/572)

4) सहीह मअ्ना में आलिमे दीन बनने के लिये उलमाए अहले सुन्नत खुसूसन आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह की तस्नीफात का ज़्यादा से ज़्यादा मुतालेआ करो।

5) आलिम की सनद मिल जाने को काफी न समझो बल्कि ज़िंदगी भर तहसीले इल्म में लगे रहो और यक़ीन करो कि ज़मानए तालिब इल्मी में सिर्फ इल्म हासिल करने की सलाहियत पैदा की जाती है और हक़ीक़त में इल्म हासिल करने का ज़माना फराग़त के बाद ही है।

6) खुद भी बाअमल रहो और दूसरों को भी बाअमल बनाने की कोशिश में दिन रात लगे रहो।

7) बद मज़हब और दुनिया दार मौलवी से दूर भागो जैसे शेर से बल्कि इस से भी ज़्यादा कि वह जान लेता है और यह ईमान बर्बाद करता है।

8) इलहाक़ कि जिस से अक्सर दीनी मदारिस दुनिया दार हो गए और उन की तालीम बर्बाद हो गई, उस से बचो और मक्रो-फरेब से गवर्नमेन्ट का पैसा न हासिल करो कि ग़दर व बद अहदी मुत्लक़न सब से हराम है।

9) दीन में कभी मुदाहनत न इख़्तियार करो, हक़-गोई व बेबाकी अपनी ज़िंदगी का शिआ़र बनाओ।

10) अपने रुपये को बैंक में रखने और दूसरे कारोबार में लगाने के बजाए दीनी काम में लगाओ। किताबें तस्नीफ करो और उन्हें छपवा कर इस्लाम व सुन्नियत की ज़्यादा से ज़्यादा नश्रो-इशाअ़त करो और यक़ीन रखो कि जो लोग दीन का काम नहीं करते बल्कि जो अल्लाह व रसूल की मुख़ालफत करते हैं जब उन्हें भी खाने को मिलता है तो कभी तुम भूके न रहोगे।

11) असातिज़ा के हुक़ूक़ को तमाम मुसलमानों के हुक़ूक़ से मुक़द्दम रखो और किसी तरह की ईज़ा उन को न पहुंचाओ वरना इल्म की बरकत से महरूम हो जाओगे।

दुआ़ है कि खुदाए अ़ज़्ज़ व जल्ल हमारे शागिर्दों को इन वसिय्यतों पर अमल करने की तौफीक़े रफीक़ बख़्शे, हमारी दीनी ख़िदमात को क़बूल फरमाए, ईमान पर ख़ातिमा हो और क़ियामत के दिन हुज़ूर पुर नूर शाफेए यौमुन्नुशूर जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की शफाअ़त नसीब फरमाए। आमीन

وصلى الله تبارك وتعالى وسلم على سيدنا محمد النبى الكريم

وعلى اله واصحابه افضل الصلوات واكمل التسليم

*व सल्लल्लाहु तबारक व तआ़ला व सल्लम अ़ला सैयिदिना मुहम्मदिन् नबिय्यिल् करीम व अ़ला आलिही व अस्हाबिही अफ्ज़लुस् सलवाति व अक्मलुत्-तस्लीम।*

**जलालुद्दीन अहमद अमजदी**

**ख़ादिम दारुल उलूम फैज़ुर रसूल बराऊं शरीफ, ज़िला बस्ती**

*11 जमादिउल उख़्रा 1408 हि0*

*31 जनवरी 1988 ई0*

......................